रामायण

(वाल्मीकि) खण्ड-1

رامائن والمیکی

फ़ारसी से हिन्दी अनुवाद एवं सम्पादन

प्रो० शाह अब्दुस्सलाम
डा० वक़ारुल हसन सिद्दीक़ी

लेखक
सुमेर चन्द

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी
रामपुर - २४४ ९०१ (उ.प्र.)

رب زدنی علما

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी

ज्ञान सर्वत्र प्रभुः॥

RAMPUR RAZA LIBRARY

RAMPUR

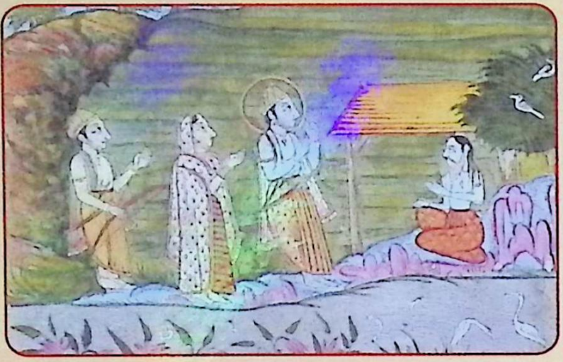

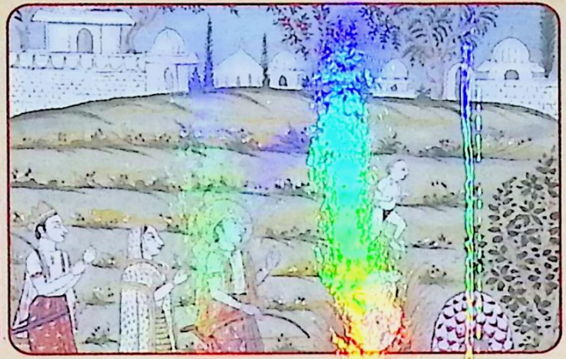

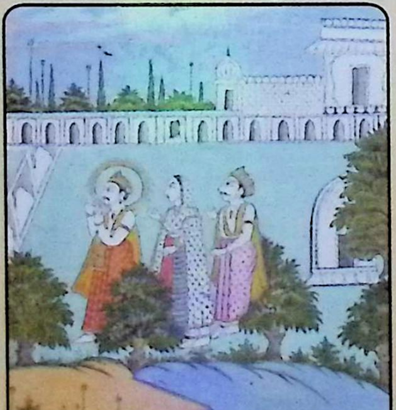

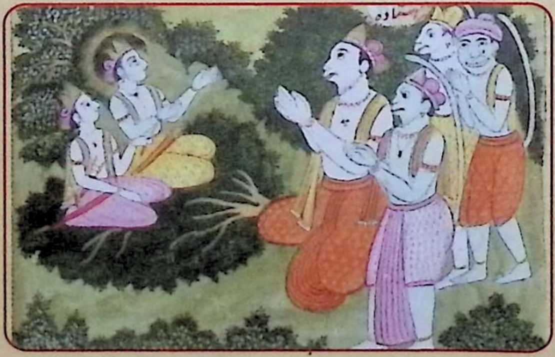

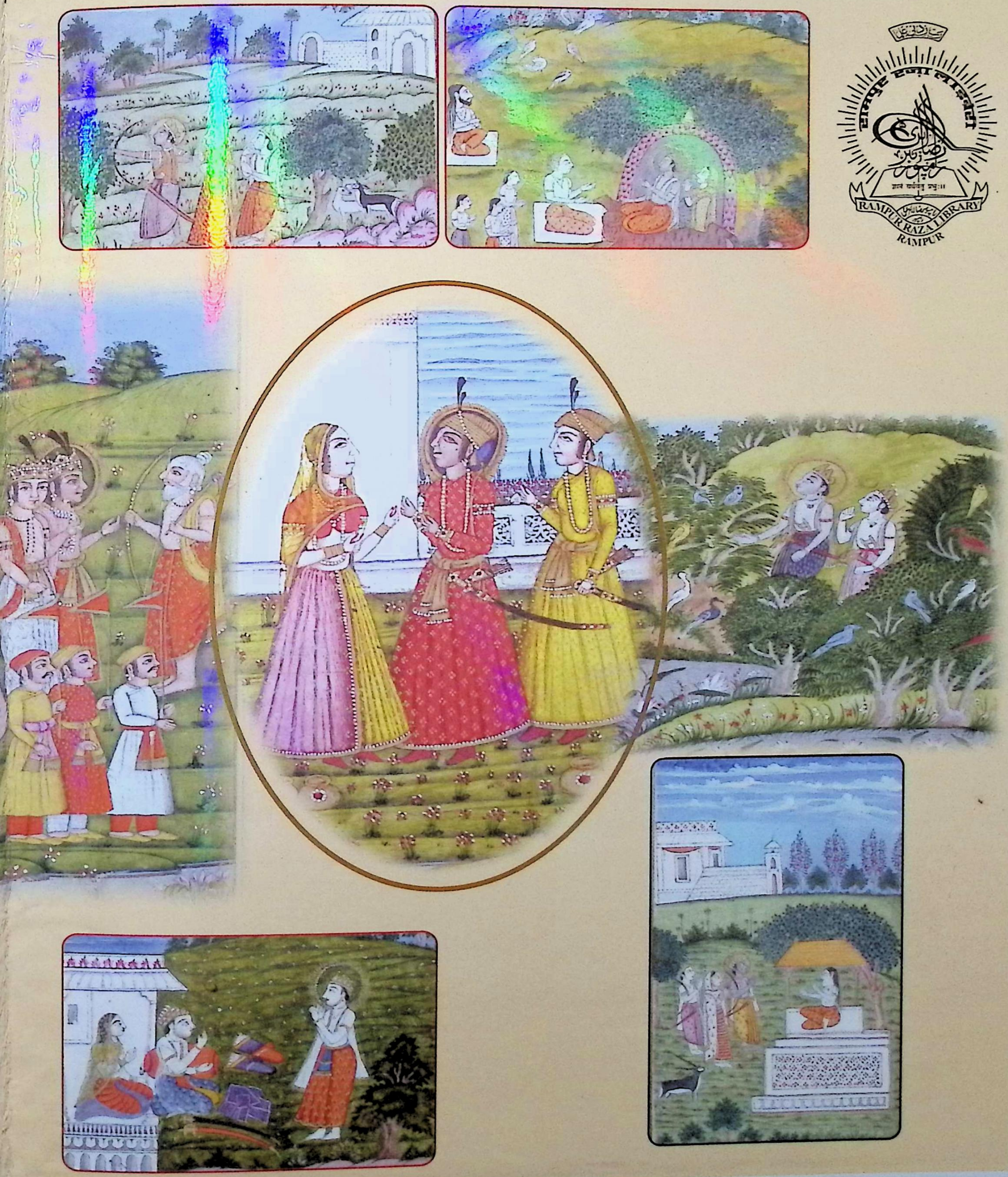

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

रामायण

(वाल्मीकि)

खण्ड प्रथम

(पृष्ठ १ से ३५३ तक)

رامائن (والمیکی)

लेखक

सुमेर चन्द

फ़ारसी से हिन्दी अनुवाद एवं सम्पादन

प्रो० शाह अब्दुस्सलाम
एवं
डा० वक़ारुल हसन सिद्दीक़ी

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी
रामपुर - २४४ ९०१ (उ.प्र.)

© रामपुर रज़ा लाइब्रेरी, (उत्तर प्रदेश)

पुस्तक का नाम : रामायण (वाल्मीकि) खण्ड प्रथम
लेखक : सुमेर चन्द
अनुवाद एवं सम्पादन : प्रो० शाह अब्दुस्सलाम
डॉ० वक़ारुल हसन सिद्दीक़ी
प्रतियाँ : 1000
मूल्य : ₹5000/- प्रति सेट (३ खण्ड)

प्रकाशक : विशेष कार्याधिकारी
रामपुर रज़ा लाइब्रेरी,
रामपुर (उत्तर प्रदेश)

मुद्रक : डायमंड प्रिंटर्स, नई दिल्ली-११०००२
फोन 9990270417

Name of the Book : **RAMAYAN (Valmiki) Vol. I**
Name of Author : **Sumair Chand**
Annotated & Translated by : Prof. Shah Abdus Salam
& (Late) Dr. W. H. Siddiqui

Published by : O.S.D. Rampur Raza Library,
Rampur (U.P.)

Printed by : Diamond Printers, New Delhi-110002
Phone 9990270417
Price : **₹5000/- per set(in 3 Vol.)**

Rampur Raza Library
Hamid Manzil, Rampur-244901 (U.P.)

Phone Library : 0595-2325045, 2327244
0595-2325346
Fax : 0595-2340548
Website : www.razalibrary.com
Email : osdrampurrazalibrary@gmail.com

विषय सूचि

मंगलाशा .... प्रो० सूर्य प्रसाद दीक्षित 4
प्रस्तावना .... प्रो० शाह अब्दुस्सलाम 5
प्रमाण पत्र .... डा० हरिशंकर मिश्र 15
रामायण (वाल्मीकि) 17
बिस्मिल्लाह 19
बाल काण्ड 27
सर्ग-१ 39
खण्ड प्रथम का भाग प्रथम 45

नोटः मूल पाण्डुलिपि में जितने पृष्ठ उप्लब्ध हैं केवल उन्हीं पृष्ठों का अनुवाद पेश है।

प्रो० सूर्य प्रसाद दीक्षित
पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

१- साहित्यिकी,
डी-५४,
निरालानगर, लखनऊ

मंगलाशा

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी द्वारा प्रकाशित यह रामायण एक अनमोल निधि है। इसके रचयिता श्री सुमेरचंद का प्रयास वन्दनीय है।

यह एक अत्यन्त प्राचीन पाण्डुलिपि की प्रस्तुति है। मूलरूप से यह फारसी भाषा एवं लिपि में लिखी गयी है। अनुवादक ने उसका हिन्दी खड़ी बोली रूपान्तरण किया है। इस ग्रन्थ में रामकथा से सम्बन्धित २५८ महत्वपूर्ण प्रकरणों को मुग़ल शैली में चित्रित किया है। यह चित्रावली निस्संदेह उच्चकोटि की है।

यह कृति वाल्मीकि कृत रामायण पर आधारित है। इस खण्ड में चार काण्ड हैं। लेखक ने दो खण्डों में इसे पूरा किया है और बड़ी सत्यनिष्ठा के साथ प्रामाणिक रामकथा प्रस्तुत की है।

इस संस्करण की एक विशेषता है इसकी द्विभाषिकता । इसमें फारसी, हिन्दी दो भाषाओं का सुन्दर समन्वय हुआ है। यह भाषायी सौहार्द तथा तुलनात्मक समीक्षा अर्थात् पाठालेचन का अद्भुत उदाहरण है। इसके गम्भीर पारायण से कई समस्याओं का समाधान सम्भावित है।

इस प्रति में जो चौखटे प्रत्येक पृष्ठ पर बनाये गये हैं, उनका लिपि विज्ञान की दृष्टि से अत्यधिक महत्व है।

रामायण का लिप्यंतरण, रूपान्तरण और संपादन करके प्रो० सलाम तथा उनके सहयोगियों ने पुस्तकालय विज्ञान में नयी अभिवृद्धि की है और २०० वर्षो से अधिक पुरानी इस सांस्कृतिक संपदा का नव संस्कार किया है। इसके लिए वे बधाई के आस्पद हैं। इसका शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशन किया जाना हम सबके वृहत्तर हित में होगा। प्रकाशनोपरान्त, मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह कृति अपनी अनन्यता तथा सार्थकता सिद्ध करेगी । साभिवादन-

(प्रो० सूर्यप्रसाद दीक्षित)

प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य में वाल्मीकि कृत 'रामायण' आदिकाव्य और महर्षि वाल्मीकि 'आदिकवि' के रूप में विख्यात हैं। 'रामायण' में राम के आदर्श चरित का वर्णन है। यह हमारी भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा का आधार ग्रन्थ है । इस कालजयी साहित्य का सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से विश्व साहित्य में अमूल्य योगदान है। इसकी प्रासंगिकता के सम्बन्ध में यह उक्ति-''यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले है । तावद् रामायण कथा लोकेषु प्रचरिष्यति।'' अर्थात् जब तक पहाड़ों और नदियों का अस्तित्व इस पृथ्वी पर रहेगा, तब तक रामायण की कथा लोक में प्रचारित रहेगी ।

इस कालजयी ग्रन्थ की प्राचीनता के सम्बन्ध में यह निर्विवाद है कि वेदों के पश्चात् जिस अनुष्टुप वाणी में काव्य का प्रवर्तन हुआ, वह 'रामायण' ही है। महर्षि वाल्मीकि ने देवर्षि नारद जी से जो राम कथा सुनी, उसी का वर्णन एवं विस्तार इस का प्रतिपाद्य है। रामायण के सृजन के सम्बन्ध में एक विलक्षण घटना है। एक बार महर्षि वाल्मीकि अपने शिष्य भरद्वाज के साथ गंगा नदी से कुछ दूर ही तमसा नदी के तट पर गये । वहाँ जाकर स्वच्छ जल को देखकर वाल्मीकि मुनि ने अपने शिष्य भरद्वाज से वृक्ष की छाल का बना वस्त्र माँग कर स्नान करने की इच्छा व्यक्त की और वृक्ष की छाल का बना वस्त्र लेकर वहाँ के रमणीय वन की शोभा के दर्शन करने लगे। इसी क्षण एक क्रौच पक्षी का जोड़ा दिखाई दिया, जिसमें से एक नर क्रौच पक्षी को किसी बहेलिये ने अपने बाण से घायल कर दिया था। वह पक्षी खून से सना, लड़खड़ाता, तड़पता हुआ जमीन पर गिरा और मर गया ।उसकी प्रिया क्रौच्ची विलाप करती हुई करूण – क्रन्दन करने लगी, ऐसे करूण क्रन्दन को सुनकर वाल्मीकि मुनि का अन्तःकरण करूणा से द्रवित हो गया और उन्होंने उस बहेलिये को शाप दे दिया कि:-

मा निषाद! प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समा ।
यत् क्रौच्चंमिथुनादेकमवधीः काम मोहितम् ।।

अर्थात् हे निषाद! तुझे नित्य, निरन्तर कदापि शान्ति न प्राप्त हो, क्योंकि तुमने इस क्रौच्च के जोड़े से एक काममोहित नर जोड़े का बिना किसी अपराध के वध किया है। ऐसा कहकर वाल्मीकि मुनि ने अपने शिष्य भरद्वाज से कहा कि करूणा के कारण जो मेरे मुख से अनायास ही यह वाक्य निकल गया है, इसका सौन्दर्य देखने लायक है क्योंकि यह चार चरणों का है, प्रत्येक चरण में आठ-आठ अक्षर हैं, यह वीणा की तान पर गाया भी जा सकता है अतः यह शलोक रूप होना चाहिए या नहीं?ऐसी बात सुनकर भरद्वाज जी को बड़ी प्रसन्नता हुई और वाल्मीकि मुनि का समर्थन करते हुए कहा कि निश्चय ही यह वाक्य शलोक रूप होना चाहिए । ऐसी वाणी सुनकर तमाम् विचार मन्थन करते हुए उस श्लोक रूप वाक्य को बारम्बार मन में स्मरण करते रहे। इसी क्षण ब्रह्मस जी उनके सम्मुख प्रकट हुए वाल्मीकि मुनि ने उनका यथोचित आदर-सत्कार किया तथा कुशल क्षेम पूछ कर उच्च आसन दिया ।

ब्रह्मा जी ने वाल्मीकि मुनि को आसन ग्रहण कराकर उस श्लोक को पुनः सुना तो वाल्मीकि का हृदय पुनः चिन्ता और शोक में डूब गया । ब्रह्मा जी अन्तर्यामी थे उनकी मनःस्थिति को समझ कर कहा कि हे ब्रह्मण तुम्हारे मुख से निकला यह वाक्य छन्दोबद्धऔर श्लोक रूप ही होगा । यह मेरी प्रेरणा और संकल्प से ही ऐसा हुआ है। तुम श्री राम के सम्पूर्ण चरित्र का प्रणयन करो जैसा कि तुमने नारद जी से सुना है। इस काव्य में आपकी वाणी कभी झूठी नहीं होगी, तुम श्री रामचन्द्र जी की मनोरम, परम-पवित्र, छन्दोबद्धकथा को श्लोक रूप में प्रस्तुत करो । ऐसा कह कर ब्रह्मा जी अर्न्तध्यान हो गये । ऐसा चमत्कार देखकर महर्षि वाल्मीकि को आश्चर्य हुआ। जिस क्रौच्च पक्षी के दुःख से दुःखी वाल्मीकि के मुख्य से अनायास, समान अक्षरों वाले, चार चरणों का गान किया, वह था तो उनके हृदय का करूणाद्र शोक, किन्तु वही छन्दोबद्धश्लोकबद्धहोकर विश्व प्रसिद्धसम्पूर्ण रामायण के रूप में सात काण्डों में प्रकट हुआः-

१. बालकाण्डम्
२. अयोध्याकाण्डम्
३. अरण्यकाण्डम्
४. किष्किन्धाकाण्डम्
५. सुन्दरकाण्डम्
६. युद्धकाण्डम्
७. उत्तरकाण्डम्

१. वाल्मीकि रामायण के 'बालकाण्डम्' में कुल सतहत्तर (७७) सर्ग हैं जिसका पहला सर्ग तो 'मूलरामायण' के नाम से प्रसिद्धहै। इसमें श्री राम की कथा वाल्मीकि मुनि नारदजी से सुनते हैं। इसके बाद अयोध्या नरेश राजा दशरथ के नगर का वर्णन, दशरथ द्वारा अश्वमेघ यज्ञ का अनुष्ठान, राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न का जन्म संस्कार वर्णन, यज्ञ की रक्षा हेतु विश्वामित्र का राम और लक्ष्मण को ले जाना, विश्वामित्र द्वारा राम को दिव्यास्त्रो की प्राप्ति कराना, देवताओं और दैत्यो द्वारा समुद्रमन्थन, राजा जनक द्वारा विश्वामित्र सहित राम-लक्ष्मण का सत्कार, धनुष भंग, श्री राम आदि चारों भ्राताओं का विवाह, राजा दशरथ का समस्त पुत्र और पुत्र वधुओं सहित अयोध्या नगर में प्रवेश तथा भरत और शत्रुघ्न का अपने ननिहाल जाने आदि की कथा वर्णित है।

२. वाल्मीकि रामायण के 'अयोध्याकाण्डम्' में कुल एक सौ उन्नीस (११९) सर्ग हैं जिसके अन्तर्गत श्री राम की महिमा, राजा दशरथ द्वारा श्री राम के राज्याभिषेक की तैयारी, मन्थरा द्वारा कैकेयी को भड़काना, कैकेयी का राजा दशरथ से वचन माँगना, राम को चौदह वर्ष के वनवास का आदेश, राम का वन गमन निश्चय, लक्ष्मण का क्रोधित होना, राजा दशरथ की रानियों का दुःखी होना, सीता का वन में राम के साथ जाने का आग्रह, राम का वनवास जाना, दशरथ का चिन्तित होना, श्री राम आदि का चित्रकूट पहुँचना, सुमन्त्र का अयोध्या लौटना, दशरथ का विलाप एवं मृत्यु, भरत आदि का ननिहाल से वापस आना, कैकेयी के षड्यन्त्र का पता चलना, कैकेयी माता को भरत द्वारा कटु वचन कहना, दशरथ का अन्तेष्टि संस्कार कर भरत द्वारा राम को मनाने के लिए चित्रकूट प्रस्थान, राम का रघुकुल रीति का दृढ़ निश्चय, भरत द्वारा राम की चरण पादुकाओं को प्रतीक रूप में लाकर राजसिंहासन पर रख कर राज कार्य का संचालन करना आदि की कथा विस्तार से प्रस्तुत की गई हैं।

३. वाल्मीकि रामायण के 'अरण्यकाण्डम्' में कुल पिचहत्तर (७५) सर्ग हैं। इसमें राम-लक्ष्मण और सीता का तपासों के आश्रम में सत्कार, विराध का तीनों पर आक्रमण, विराध वध, श्री राम आदि का अगस्त्य मुनि के आश्रम

में प्रवेश, पंचवटी मार्ग में जटायु पक्षी का मिलना, शूर्पणखां प्रसंग, खर द्वारा भेजे गये चौदह राक्षसों का नाश, त्रिशिरा वध, शूर्पनखा का रावण के पास जाना, मारीच का सुवर्णमय मृग रूप धारण करना, रावण द्वारा सीता हरण, राम-लक्ष्मण द्वारा सीता की खोज, राम का निराश होना, शबरी के आश्रम पर राम के जाने आदि की कथा चित्रित है।

४. वाल्मीकि रामायण के 'किष्किन्धाकाण्डम्' में कुल सड़सठ (६७) सर्ग हैं। जिसमें राम का पम्पा-सरोवर की शोभा का वर्णन, श्री राम की व्याकुलता, हनुमान जी का श्री राम-लक्ष्मण से मिलन तथा वन में आने का कारण पूछना, सीता हरण की कथा, राम द्वारा हनुमान जी को बतलाना, सुग्रीव द्वारा सीता खोज की प्रतिज्ञा, बालि का युद्ध, राम द्वारा बालि का वध, वानर सेना को संगठित करना, सुग्रीव का सभी दिशाओं का परिचय देते हुए वानर सेना को भेजना, सम्पाति की आत्मकथा, हनुमान जी का समुद्र लाँघने हेतु उत्साह प्रकट करना इत्यादि कथा का समायोजन है।

५. वाल्मीकि रामायण के 'सुन्दरकाण्डम्' में कुल अड़सठ (६८) सर्ग हैं। जिसके अन्तर्गत हनुमान जी का समुद्र पार कर लंकापुरी पहुँचने का वर्णन, सिंहि का वध, हनुमान जी का रावण के अन्तःपुर एवं अशोक वाटिका में प्रवेश, भंयकर राक्षसियों के साथ सीता जी का मिलना, सीता-रावण संवाद, रावण द्वारा राम को तुच्छ बताना, राक्षसियों द्वारा सीता को प्रताड़ना देकर समझाने का प्रयास, सीता द्वारा समस्त प्रस्ताव की अवहेलना, सीता का विलाप एवं प्राण त्यागने का निश्चय, शिंशपा वृक्ष से हनुमान जी का अवतरण, सीता को राम की दी अगूँठी दिखाना एवं हनुमान द्वारा अपने को राम का प्रिय दूत बताना, हनुमान जी द्वारा लंका दहन, राक्षसों का भयभीत होकर विलाप करना, हनुमान जी का श्री राम को यह सन्देश देना कि सीता जी ने कहा है कि ''मैं केवल एक मास तक जीवित रहूंगी उसके बाद प्राण त्याग दूंगी।'' आदि कथा प्रस्तुत की गई है।

६. वाल्मीकि रामायण के 'युद्धकाण्डम्' में कुल एक सौ अट्ठाईस (१२८)

सर्ग हैं। इसमें राम द्वारा वानर सेना और हनुमान जी की प्रशंसा, विभीषण द्वारा सीता जी को वापस लौटाने की रावण को नेक सलाह एवं अनुरोध करना, विभीषण का रावण द्वारा तिरस्कार, विभीषण का श्री राम की शरण में आना, श्री राम का शरणागत् की रक्षा करना, सुग्रीव और रावण युद्व, लंका पर वानर सेना का आक्रमण तथा रक्षसों के साथ भयंकर युद्व, हनुमान जी द्वारा अकम्पन का वध, श्री राम-कुम्भकरण युद्वएवं कुम्भकरण वध, कुम्भकरण की मृत्यु का समाचार पाकर रावण का शोक एवं विलाप, लक्ष्मण द्वारा अतिकाम का वध, श्री राम द्वारा राक्षस सेना का संहार, अंगद द्वारा महापार्श्व का वध, राम-रावण युद्वऔर लक्ष्मण की मूर्च्छा, श्री राम विलाप, श्री राम द्वारा रावण वध, रावण की स्त्रियों का विलाप, विभीषण का राज्याभिषेक, सीता के चरित्र पर राम का संदेह एवं ग्रहण करने से मुकरना, सीता द्वारा अपने सतीत्व की परीक्षा हेतु अग्नि में प्रविष्ट होना, राम का अयोघ्या जाने हेतु पुष्पक विमान माँगना और अयोध्या गमन, अयोध्या में श्री राम का अभूतपूर्व स्वागत और भरत द्वारा श्रीराम को गद्दी सहर्ष प्रदान करना, रामराज्य का वर्णन आदि की कथा वर्णित है।

७. वाल्मीकि रामायण के अन्तिम अर्थात् 'उत्तरकाण्डम्' में कुल एक सौ ग्यारह (१११) सर्ग हैं। जिसके अन्तर्गत श्रीराम के दरबार में कौशिकादि महर्षियों का आगमन तथा रावण वंश का वृत्तान्त सुनाना, मन्त्रियों सहित रावण का यक्षों पर आक्रमण और उनकी पराजय का वर्णन, रावण का यमलोक पर आक्रमण और उसके द्वारा यमराज के सैनिकों का संहार, नल-कूबर का रावण को शाप, मेघनाद और जयन्त का आक्रमण, हनुमान जी की उत्पत्ति, बाल्यावस्था में हनुमान जी द्वारा सूर्य, राहु और ऐरावत पर आक्रमण, लोकापवाद के कारण सीता को त्यागना, ययाति को शुक्राचार्य का शाप, श्रीराम के दरबार में च्यवन आदि ऋषियों का आगमन, सीता के दो पुत्रों का जन्म, श्रीराम द्वारा शम्बूक का वध, अश्वमेघ के अनुष्ठान से इला को पुरूषत्व की प्राप्ति, श्रीराम के दान-मान की महिमा, सीता का राम से मिलन, सीता का शपथ ग्रहण और रसातल में प्रवेश, माताओं का परलोक गमन, भरत का गन्धर्वों पर आक्रमण और उनका संहार करना, वशिष्ठ

आज्ञानुसार कुश और लव का राज्याभिषेक, दुर्वासा-राम संवाद, भाइयों सहित श्रीराम का विष्णु स्वरूप में प्रवेश तथा साथ आये हुए लोगों का संतानक लोक की प्राप्ति, रामायण काव्य का सार तत्त्व और इसकी महिमा का वर्णन आदि को विस्तार से बताया गया है।

रामायण किस काल की रचना है?इस सम्बन्ध में बड़ा मतभेद है क्योंकि तत्कालीन परिस्थितियों और तमाम् प्रक्षिप्तांशों के कारण इसका काल निर्धारण एक दुष्कर कार्य है। रामायण के बालकाण्ड और उत्तरकाण्ड का, अयोध्याकाण्ड से युद्धकाण्ड तक कोई साम्य नहीं दिखाई देता है। वेदों में भी रामकथा का कोई सूत्र नहीं दिखाई पड़ता । जैकोबी महाशय ने भाषा के आधार पर बुद्धके पूर्व काल की रचना स्वीकार कर रामायण के मूल भाग की रचना छठी शताब्दी ई० पूर्व मानी है और अनेक विद्वानों ने भी इस तिथि को मान्यता दी है। फिर भी यह इतना लोकप्रिय काव्य है कि इसे किसी काल की परिधि में नही बाँधा जा सकता, इसे तो कालजयी साहित्य कहना ही युक्तिसंगत है।

इस लोकप्रिय साहित्य अर्थात् रामायण के अनन्त संस्करण तथा कई भाषाओं में अनुवाद हो चुके हैं। इसी कड़ी में श्री सुमेर चन्द द्वारा १७१३ ई० में किया गया वाल्मीकि रामायण का अनुवाद विशेष महत्त्व का है। यद्यपि यह अनुवाद रामायण के सभी सात काण्डों का क्रमबद्धअनुवाद नहीं है, फिर भी भारतीय संस्कृति और मानव मूल्यों का आधार लेकर श्रीराम के चरित्र का वर्णन, एक विशिष्ट शैली में प्रस्तुत कर, चित्रों की सहायता से सामान्य जनता को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने का अनुपम महाकाव्य अपने में महत्त्वपूण है।

वाल्मीकि कृत 'रामायण' को 'इतिहास' की संज्ञा दी गई है जो विश्व में प्रथम राम कथा का ग्रन्थ है जिसके पश्चात् रामकथा से सम्बन्धित काव्यों का प्रणयन हुआ । यह महाकाव्य ''सनातन काव्य बीज होने के कारण परवर्ती काव्यों का उपजीव्य है''। इसलिए भी यह महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसकी

कथा सम्पूर्ण विश्व में प्रचारित और प्रसारित है। मर्यादा पुरूषोत्तम राम का आदर्श चरित्र निश्चय ही लोक मंगल करने वाला है । इस कलियुग में 'राम' का नाम उच्चारण धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति कराने वाला है। राजा का प्रजा के प्रति क्या कर्त्तव्य है तथा किस के प्रति कैसा आचरण और व्यवहार हमें करना चाहिए, इसकी शिक्षा हमें रामायण से मिलती है। इसकी प्रतिष्ठा वेद के समान है क्योंकि ऐसी मान्यता है कि वेदों के पश्चात् जिस अनुष्टुप वाणी में आर्षकाव्य का प्रवर्तन हुआ, वह वाल्मीकि कृत 'रामायण' ही है। यह इस पृथ्वी का प्रथम महाकाव्य है, इसलिए भी जन मानस के लिए समाहत है। इसकी रक्षा और प्रचार-प्रसार कर लोक का कल्याण करना अखिल ब्रह्माण्ड के प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है। वह सबके लिए संग्रह, पठन, मनन, श्रवण और चिन्तन का विषय है। इसके पारायण मात्र से दैहिक, दैविक और भौतिक तापों से मुक्ति मिलती है ऐसा जनमानस का अखण्ड विश्वास है।

भारत की संस्कृति में विभिन्न वर्गों, धर्मों, जातियों और मूल्यों का समावेश है। भारतीय सामाजिक जीवन, इतिहास, संस्कृति और दर्शन तथा कला मनुष्य के सदाचारी तथा सुखद मूल्यों का एक सुन्दर गुलदस्ता है। इसी Secular (सर्वधर्म और सर्व संभाव) की प्रवृत्ति ने ही भारतीय संस्कृति को और अधिक आकर्षक एवं सुन्दर बना दिया है। और इसी मिली-जुली संस्कृति और सभ्यता की झलक हम को भारत की वास्तुकला, चित्रकला, आचार-विचार एवं दृष्टिकोण में पूरी तरह झलकता है। भारतीय कला ने ऐशिया के अधिकतर देशों को प्रभावित करके अपना असर उन पर डाला, अरबों, ईरानियों, तुर्को और मध्य ऐशिया की जीवन शैली और सामाजिक मूल्यों को रंगारंग बनाया?अरबी फारसी तुर्की और अन्य भाषाओं में भारतीय क्लासिक और धार्मिक ग्रन्थों के अनुवाद किये। भारत में सल्तनत राज्य की स्थापना के बाद इस प्रकार की गतिविधियों में और बढ़ोत्तरी हुई। विशेषकर वेदों, रामायण, गीता, महाभारत के अनुवाद मुग़लकाल में एवं मकबूल रवायत (सुप्रसिद्धस्त्रोत) बन गये थे। मुग़ल बादशाह अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ, औरगंजेब तथा अन्य मुग़ल सम्राटों के काल में बड़ी संख्या में भारतीय ग्रन्थों,

पुस्तकों के अनुवाद अरबी, फ़ारसी तथा तुर्की भाषा में हुए। और मुग़ल कालीन चित्रकला से सुसज्जित इन पुस्तकों को जाविदाँ (जीवंत) बना दिया गया। और ये विभिन्न विषयों पर अनुवादित पाण्डुलिपियां संसार में श्रेष्ठता की पात्र बनीं !

इसी सिलसिले की एक अहम् कड़ी सुमेर चन्द की फ़ारसी में अनुवादित वाल्मीकि रामायण है जो फ़ारसी भाषा में और फ़ारसी लिपि में मुग़ल चित्रकला से सुसज्जित पाण्डुलिपि है तथा जो रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में सुरक्षित भारत की एक नायाब सांस्कृतिक धरोहर है। इसमें २५८ रंगीन चित्र कलाकृत (Miniatures) हैं इस पाण्डुलिपि की महत्ता इसलिये और भी बढ़ जाती है कि संसार की किसी भी भाषा में लिखित रामायण में इतनी बड़ी संख्या में चित्र नहीं हैं। इस पाण्डुलिपि को सुमेर चन्द ने मुग़ल सम्राट फ़र्रूखसियर के शासनकाल में (सन् ११२८ हिजरी/१७१५ ई०) में लिखा था। यह पाण्डुलिपि ६७५ पृष्ठों पर केवल चार काण्डों पर आधारित है। प्रत्येक काण्ड के आरम्भ में सोने के पानी तथा कीमती पत्थरों के रंगो से गुलबूटे और नक्शो निगार से लौह (पृष्ठ का उपरी भाग) सजाई गई है।

इस हिन्दी अनुवाद का कार्य मैंने (शाहअब्दुस्सलाम) और पूर्व विशेषकार्याधिकारी स्व. डा. वकारूल हसन सिद्दीकी के साथ आरम्भ किया था । दो वर्षों की कड़ी मेहनत के बाद यह अनुवाद संपूर्ण हुआ था । इसके प्रकाशन में कुछ कारण वश बहुत देर हो गई। दुःख की बात यह है कि डा. वकारूल हसन सिद्दीकी का अब देहान्त हो चुका है और वह इस पुस्तक को प्रकाशित रूप में न देख सके । इस महान ग्रन्थ के प्रकाशन से उनको अपार हर्ष होता किन्तु वे जहाँ भी हों जिस रूप में हों, ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति दें यही मेरी मंगल कामना है।

इस महान् ग्रन्थ के प्रकाशन में जिन-जिन महानुभावों का योगदान रहा है उनके प्रति अनुवादक का आभार प्रकट करना परम कर्त्तव्य है। इस क्रम में मैं सर्वप्रथम उत्तर प्रदेश के महामहिम् श्री राज्यपाल/अध्यक्ष

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी बोर्ड के सर्वश्री बनवारी लाल जोशी जी का तहेदिल से शुक्रिया अदा करता हूँ जिनकी वजह से मैं और हमारी रामपुर रज़ा लाइब्रेरी के प्रति विशेष अनुराग रहा है तथा समय-समय पर उनसे मार्ग दर्शन मिलता रहा है।

आदरणीय् श्री जी० पटनायक जी प्रमुख सचिव, श्री राज्यपाल का भी मैं बहुत आभारी हूं कि उनके कुशल मार्गदर्शन से ही रज़ा लाइब्रेरी के सभी कार्य कुशलतापूर्वक सम्पन्न होते हैं। उनकी विशेष रूचि इस पाण्डुलिपि के प्रकाशन में बड़ी सहायक रही है ।

आदरणीय् श्री जवाहर सिरकार जी सचिव, भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय का आर्थिक सहयोग इस ग्रन्थ के प्रकाशन में विशेष रहा है। उनके प्रति आभार प्रदर्शित कर आशा करता हूं कि आगे भी इसी प्रकार उनका सहयोग हमारी लाइब्रेरी को मिलता रहेगा ।

आदरणीय् प्रो० सूर्य प्रसाद दीक्षित जी महान् आलोचक एवं साहित्य मर्मज्ञ हैं उनकी मंगलाशा इस ग्रन्थ हेतु मिलना बहुत बड़ी बात है जिससे इस अनुवाद की महत्ता के साथ-साथ रामपुर रज़ा लाइब्रेरी का गौरव भी बढ़ा है। मैं उनके प्रति हृदय से कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

आदरणीय् प्रो० हरिशंकर मिश्र जी आचार्य हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय जो मेरे परम् आत्मीय एवं सहयोगी रहे हैं जिन्होंने मेरे निवेदन पर इस ग्रन्थ के अनुवाद का पहला प्रूफ़ पढ़ कर इसकी त्रुटियों तथा कमियों की ओर संकेत कर इसे पुस्तकाकार रूप में लाने में महती भूमिका निभाई है उनके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं ।

मेरे प्रिय डॉ० राजेश कुमार शुक्ल, अंशकालीन प्रवक्ता, राष्ट्रीय संस्थान (मातिक विश्वविद्यालय, लखनऊ परिसर) लखनऊ जिन्होंने इस ग्रन्थ की वर्तनी संशोधन तथा प्रमाणिक पठन (प्रूफ़ रीडिंग) का दो बार अवलोकन कर तमाम त्रुटियों का निराकरण कर इसे ग्रन्थाकार रूप में प्रस्तुत करने में

विशेष सहयोग दिया उनके प्रति मैं हृदय से कृतज्ञ हूं ।

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी, रामपुर के लाइब्रेरी एवं सूचना अधिकारी डा० अबुसाद इस्लाही के प्रति मैं शुक्रिया अदा करता हूं जिन्होंने प्रकाशन के पूर्व तमाम कठिनाइयों का सामना किया तथा अपने समस्त कार्यों का निर्वाह करते हुए इस ग्रन्थ के पूर्व होने में सहयोग दिया ।

इसके अलावा इस ग्रन्थ को रूपादित करने में जिन-जिन विद्वानों, आचार्यों, साहित्य मर्मज्ञों तथा रामपुर रज़ा लाइब्रेरी के अधिकारियों, कर्मचारियों तथा समाज सेवियों का येन-केन प्रकारेण सहयोग किसी भी रूप में मिला वे सब कृपा के पात्र है । उन सबका मैं शुक्रिया अदा करता हूं विशेषकर श्री अरूण कुमार सक्सेना, मोहिनी रानी और श्रीमती बिलकीस बानो फारूकी का भी शुक्रिया अदा करता हूं कि इन लोगों से भी इस कार्य को कुशलतापूर्वक सम्पन्न करने में बड़ी सहायता मिली ।

३ दिसंबर २०१०

प्रो० शाह अब्दुस्सलाम
विशेष कार्याधिकारी
रामपुर रज़ा लाइब्रेरी,
रामपुर

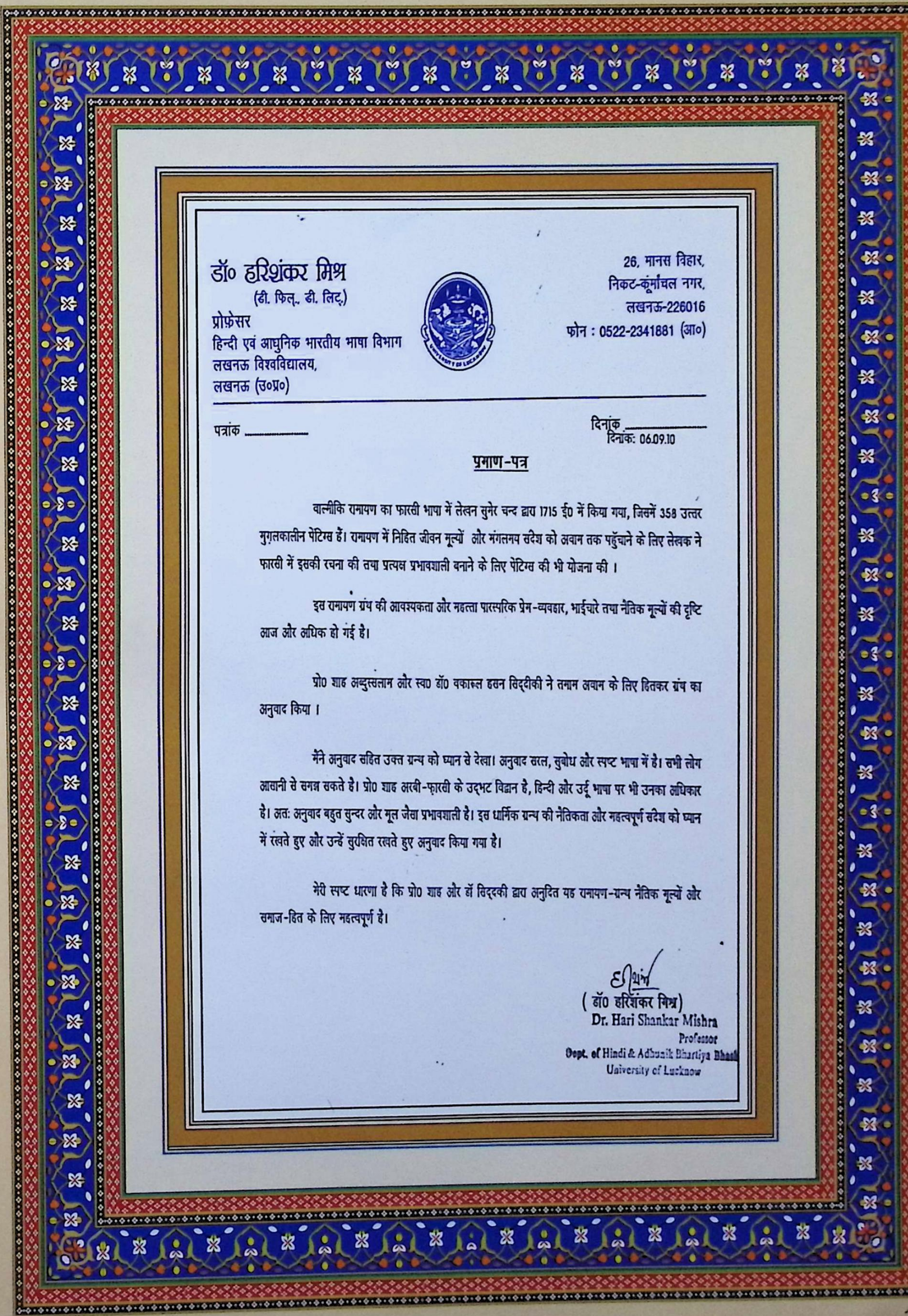

डॉ० हरिशंकर मिश्र
(डी. फिल्., डी. लिट्.)
प्रोफ़ेसर
हिन्दी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ (उ०प्र०)

26, मानस विहार,
निकट-कूर्मांचल नगर,
लखनऊ-226016
फोन : 0522-2341881 (आ०)

पत्रांक ________

दिनांक ________
दिनांक: 06.09.10

प्रमाण-पत्र

वाल्मीकि रामायण का फारसी भाषा में लेखन सुमेर चन्द द्वारा 1715 ई0 में किया गया, जिसमें 358 उत्तर मुग़लकालीन पेंटिग्स हैं। रामायण में निहित जीवन मूल्यों और मंगलमय संदेश को अवाम तक पहुँचाने के लिए लेखक ने फ़ारसी में इसकी रचना की तथा प्रत्यक्ष प्रभावशाली बनाने के लिए पेंटिग्स की भी योजना की ।

इस रामायण ग्रंथ की आवश्यकता और महत्ता पारस्परिक प्रेम-व्यवहार, भाईचारे तथा नैतिक मूल्यों की दृष्टि आज और अधिक हो गई है।

प्रो0 शाह अब्दुस्सलाम और स्व0 डॉ0 वकारुल हसन सिद्दीकी ने तमाम अवाम के लिए हितकर ग्रंथ का अनुवाद किया ।

मैंने अनुवाद सहित उक्त ग्रन्थ को ध्यान से देखा। अनुवाद सरल, सुबोध और स्पष्ट भाषा में है। सभी लोग आसानी से समझ सकते है। प्रो0 शाह अरबी-फ़ारसी के उद्भट विद्वान है, हिन्दी और उर्दू भाषा पर भी उनका अधिकार है। अतः अनुवाद बहुत सुन्दर और मूल जैसा प्रभावशाली है। इस धार्मिक ग्रन्थ की नैतिकता और महत्वपूर्ण संदेश को ध्यान में रखते हुए और उन्हें सुरक्षित रखते हुए अनुवाद किया गया है।

मेरी स्पष्ट धारणा है कि प्रो0 शाह और डॉ सिद्दकी द्वारा अनुदित यह रामायण-ग्रन्थ नैतिक मूल्यों और समाज-हित के लिए महत्वपूर्ण है।

(डॉ0 हरिशंकर मिश्र)
Dr. Hari Shankar Mishra
Professor
Dept. of Hindi & Adhunik Bhartiya Bhash
University of Lucknow

نمبر
رامائن با تصاویر قلمی (خوش خط)
مصنفه سمیر چند –
داستان فارسی

رامائن فارسی

ز رشفص

रामायण

(वाल्मीकि)

खण्ड प्रथम
(पृष्ठ १ से ३५३ तक)

رامائن (والمیکی)

लेखक
सुमेर चन्द

फ़ारसी से हिन्दी अनुवाद एवं सम्पादन

प्रो० शाह अब्दुस्सलाम
एवं
डा० वक़ारुल हसन सिद्दीक़ी

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी
रामपुर - २४४ ९०१ (उ.प्र.)

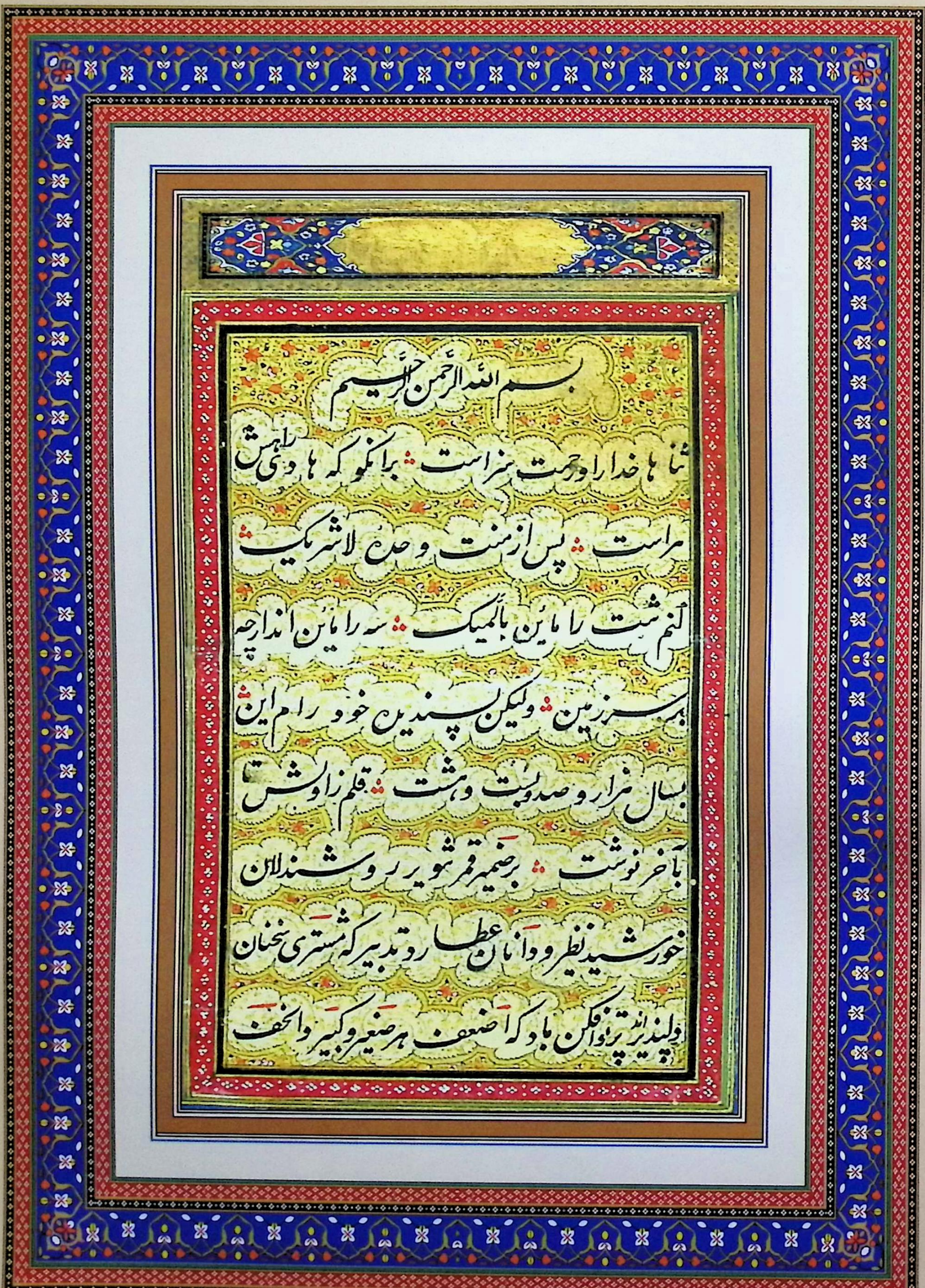

بسم الله الرحمن الرحیم

ثنا ها خدا را و رحمت سزاست ⁂ بر آنکو که هادی راه بهشت
سزاست ⁂ پس از منت وحده لا شریک
گنم شت رامائن بالمیک ⁂ سه رامائن اندر چه
بهر زمین ⁂ ولیکن پسندیدن خود رام این
بسال هزار و صد و بیست و هشت ⁂ قلم زاوش
بآخر نوشت ⁂ بر ضمیر قمر تنویر روشندلان
خورشید نظیر و دانایان عطارد تدبیر که مشتری سخنان
دلپذیر اند پرتو افکن باد که اضعف هر صغیر و کبیر و اخف

बिस्मिल्लाह-अर्रहमान-अर्रहीम

(आरंभ करता हूँ मैं उस परमात्मा के नाम से जो बड़ा दयालु और कृपालु है)

सारी प्रशंसा उस ईश्वर के लिए ही है जो मेरा पथप्रदर्शक है और कृपापात्र होना भी उसी को शोभनीय है। उस वहदहू लाशरीक (अद्वितीय, ईश्वर) के उपकार के बाद मैं यह रामायण लिख रहा हूँ। यद्यपि पृथ्वी पर तीन रामायणें पायी जाती हैं परन्तु श्रीराम की मनोनुकूल रामायण यही है। सन् ११२८ हिजरी में (१७१५ ई०) मेरी लेखनी ने इस रामायण को लिखना आरंभ किया और अन्त तक पहुँची।

सूर्य के समान उज्ज्वल हृदय, चन्द्रमा के समान ज्योतिर्मय अन्तःकरण वाले, बुध ग्रह जैसी युक्ति रखने वाले बुद्धिमान, मनोरम प्रवचन-कर्ताओं पर यह बात स्पष्ट हो कि यह लेखक जो छोटों और बड़ों में

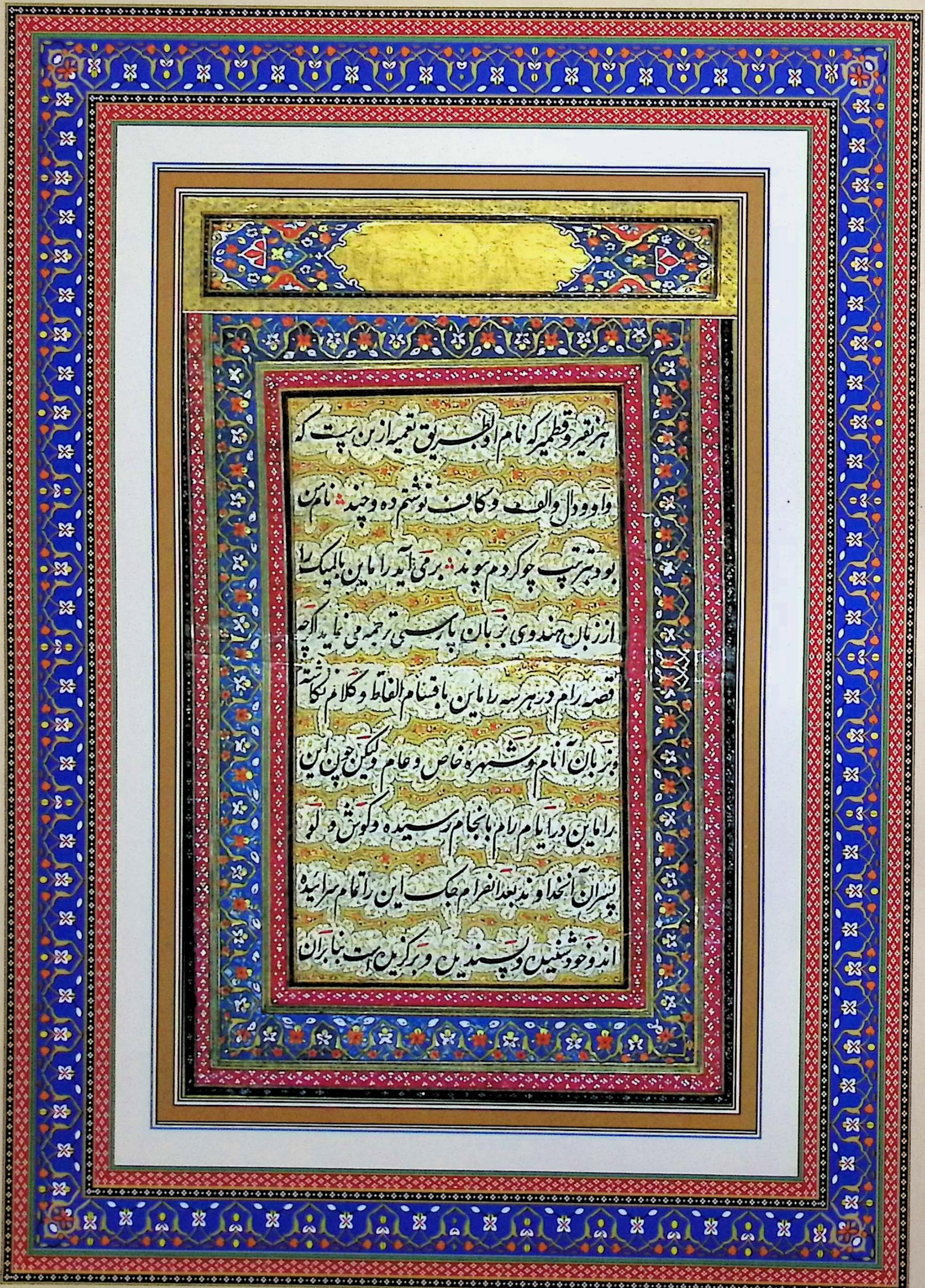

هر نقیر و قطمیر که نام او بطریق تعمیه ازین بیت که
واو و دال و الف و کاف نوشتم ده و چند ٭ نام من
بود بترتیب چو کردم پیوند ٭ بر می آید رامایین بالمیک را
از زبان هندوی بزبان پارسی ترجمه می نماید اگرچه
قصه رام در هر سه رامایین باقسام الفاظ و کلام نگاشته
و بزبان انام و شهره خاص و عام و لیکن چون این
رامایین در ایام رام بانجام رسیده و کوش و لو
پسران آنخداوند بعد انصرام جنگ این را تمام سرائیده
اند و خوش شنیدن و پسندیدن و برگزین است بنابران

सबसे तुच्छ है और जिसका नाम इस सनअते तामिया (....) के सिद्धान्त पर इस बैत (छंद) से निकलता है।

> ''वाव व दाल व अलिफ़ व काफ़ नविश्तम दह व चन्द।
> नामे मन बूद बतरतीब चू कर्दम पेवन्द।।''

अर्थ- ''(फ़ारसी वर्णमाला के अक्षर) वाव, दाल और अलिफ़ और काफ़ को दस बार एवं चन्द जब मैंने लिखा और जब मैंने इसको तरतीब से जोड़ा तो वह मेरा नाम बन गया''।[1]

वाल्मीकि रामायण को मैंने एक हिन्दवी भाषा से फारसी भाषा में प्रस्तुत किया है। यद्यपि राम की कहानी रामायण में विभिन्न छन्दों और विभिन्न शैलियों में लिखी गयी है और यह कहानी सबकी जबान पर है, परन्तु यह रामायण (वाल्मीकि रामायण) श्री राम के जीवनकाल में ही लिखी गयी और लव एवं कुश जो श्रीराम के बेटे हैं, ने इस युग के समाप्त होने के बाद इसको पूर्ण रूप से काव्यरूप में प्रस्तुत किया। स्वयं सुना एवं बहुत पसन्द किया तथा इसका संकलन किया ।

---

[1] 'सुमेर चन्द'- सनअते तामिया के अन्तर्गत

अबजद (अरबी फ़ारसी) की वर्णमाला के अक्षरों में से मैंने वाव को दस बार (जिसकी संख्या 6 है, को दस बार लिखा) अर्थात् संख्या 6 x 10 = 60, 60 की संख्या का अक्षर ''सीन'' प्राप्त हुआ) इसी प्रकार दाल की संख्या 4 को दस बार लिखने पर 4 x 10 = 40 अर्थात् अक्षर ''मीम'' प्राप्त हुआ। इसी प्रकार अलिफ़ की संख्या 1 को दस बार लिखा तो संख्या 10 हुई अर्थात् अक्षर ''ये'' मिला और फिर अक्षर ''काफ़'' को जिसकी संख्या 20 है को दस बार लिखने पर संख्या 200 प्राप्त हुई और 200 संख्या का अक्षर ''रे'' प्राप्त हुआ इस प्रकार ''सीन'' ''मीम'', ''ये'' और ''रे'' अक्षरों को लिखा फिर इसमें ''चन्द'' को जोड़ा तो नाम निकला ''सुमेर चन्द'' यही इस पुस्तक रामायण (फ़ारसी) के लेखक का नाम है

वाव	-	6 x 10 = 60	=	सीन	सु
दाल	-	4 x 10 = 40	=	मीम	मे + चन्द
अलिफ	-	1 x 10 = 10	=	''ये''	र
काफ़	-	20 x 10 = 200	=	''रे''	

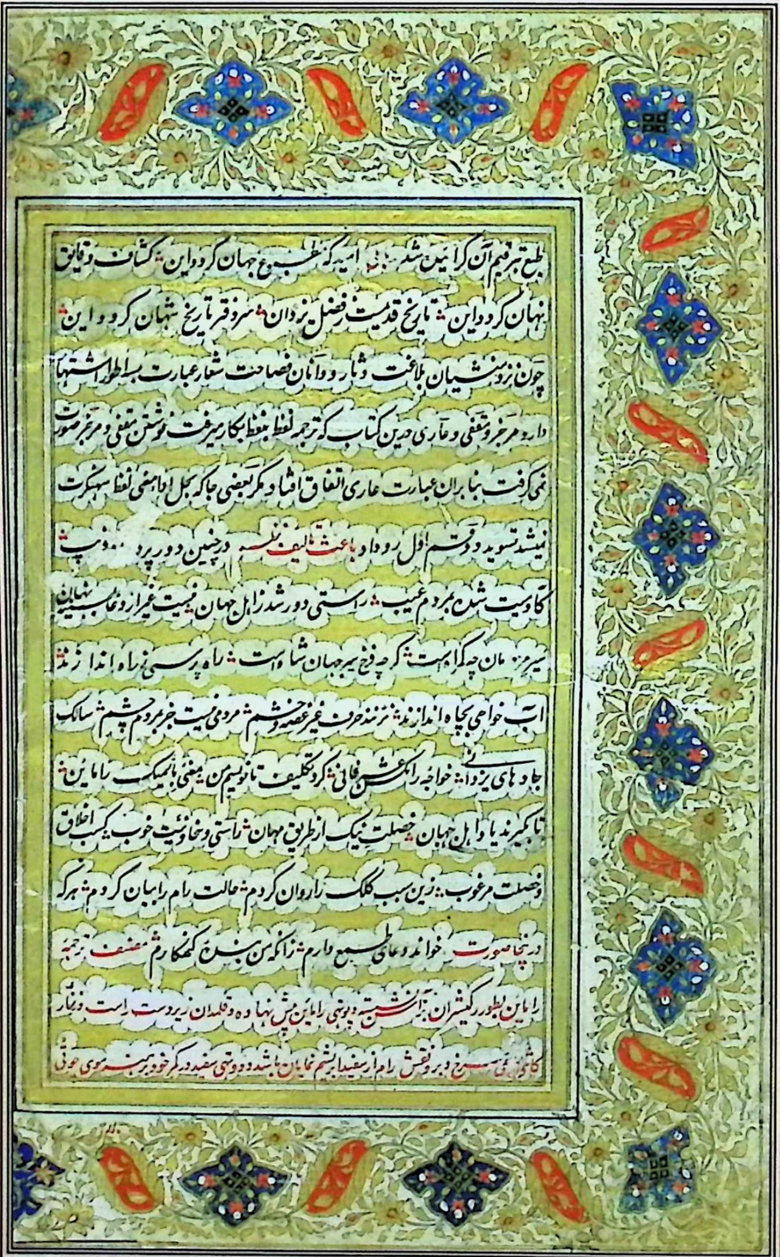

طبع تبرقیم آن گرایین شد : امید که طبع جهان گرد این : کشاف دقایق
نهان گردد این : تاریخ قدسیت ز فضل یزدان : سر دفتر تاریخ شهان گردد این :
چون ز رونشیان بلاغت دثار و دانان فصاحت شعار عبارت بسط اطراد اشتها
دار مرجز و تعقید و عاری درین کتاب که ترجمه لفظ بلفظ بکار میرفت نوشتن متقفی و مرغوب صورت
نمی گرفت بنابران عبارت عاری اتفاق افتاد مگر بعضی جا که بجز ادای معنی لفظ بهتر صورت
نیشد تسوید دو قسم اول رو داد باعث تالیف نسخه درچنین دور پرد : ذوب
گاوریت شن بر دم عیب : راستی دور شد ز اهل جهان : نیست غیر از دغا بسینه نهان
سیر : مان چه گرا بهت : گرچه فرخ سیر جهان شاه است : راه پرسی ز راه اندازند
آب خواهی بچاه اندازند : نزنند حرف غیر غصه و خشم : مردمی نیست جز بمردم چشم : سالک
جاده های یزدانی : خواجه راکش عرفانی : کرد تکلیف تا نویسم من : یعنی بالمیک رامایین :
تا بگیرند یاد اهل جهان : خصلت نیک از طریق مهان : راستی و نجات نیت خوب : کسب اخلاق
و خصلت مرغوب : زین سبب کلک را روان کردم : حالت رام را بیان کردم : هر که
درینجا صورت خواند دعای طمع دارم : زانکه من بنده گنهکارم : مصنف ترجمه
رامایین بطور رنگیشران : آن نشسته : پوتهی رامایین پیش نهاده و قلمدان زیر دست راست و زنار
کاشوزی سرخ در بر و نقش رام از سفید ابرشم نمایان باشد و دوتهی سفید در کمر خود و بر سر موی جوتی

इसी कारण इसके लिखने की ओर मेरी रुचि बढ़ी।

"आशा है कि यह रामायण संसार में सर्वस्वीकृत और मान्य होगी तथा यह गुप्त रहस्यों एवं मर्मों से परदा उठाने वाली होगी"।

ईश्वर की कृपा से इसका इतिहास बादशाहों के इतिहास से सर्वोपरि हो। चूंकि आलंकारिक शैली में लिखने वाले मुंशियों एवं कोमल शैली (लाटिका) के विद्वानों के अनुसार लेख के तीन सिद्धान्त और शैलियां प्रसिद्ध हैं। मुर्जज़ (संतुलित एवं सानुप्रास वाक्यों का गद्य) मुक़फ्फ़ा (छंद रूप) और आरी (सादी और सरल शैली)। इस पुस्तक में जो कि प्रत्येक शब्द के अनुवाद का ख़्याल रखा गया है। मुक़फ़्फ़ा और मुर्जज़ लेख में लिखना संभव न था। इसलिए इसको आरी अर्थात् सादी भाषा में लिखा गया। परन्तु जहाँ कहीं संस्कृत के शब्दों के अर्थ का स्पष्टीकरण पूर्ण रूप से संभव न था, उसे ऊपर लिखित दो शैलियों अर्थात् मुर्जज़ और मुक़फ़्फ़ा में लिख दिया गया।

वर्तमान समय में मनुष्यता और प्रेम तो लोगों के द्वारा दोष और कमी समझी जाती है। सत्यता, संसार में मनुष्यों से दूर जा चुकी है। लोगों के हृदय में छल-कपट के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। यद्यपि ये बादशाह फर्रुख सियर का शासनकाल है परन्तु सदाचार और सभ्यता लोगों में कदापि नहीं है। अगर कोई रास्ता पूछे तो लोग उसे और भटका देंगे और अगर कोई पानी माँगे तो लोग उसे कुएँ में डाल देंगे। लोग क्रोध के अतिरिक्त कोई बात नहीं करते। अब तो शील एवं संकोच केवल दिखावे के लिए लोगों की आँखों में ही बसते हैं। ईश्वर के बताये रास्ते पर चलने वाले भगत (साधक) को नश्वर के बराबर न समझो, वह कभी नश्वर नहीं होता। इस तुच्छ लेखक ने कष्ट उठाया और वाल्मीकि रामायण के अर्थ को लिखा कि सारा संसार महान लोगों के स्वभाव एवं मानसिकताओं को याद रखे सत्यता, दानशीलता, कृपा, सदाचार और व्यवहार ही सर्वोपरि है। इसी कारण मैंने अपनी लेखनी को हाथ में लिया और श्रीराम के जीवनचरित्र का व्याख्यान किया। जो भी इस रामायण को पढ़े मैं उससे दया की आशा रखता हूँ क्योंकि मैं एक पापी और तुच्छ मनुष्य हूँ।

इस अनुवादित रामायण का लेखक सिद्धासन के तरीके पर आसन पर बैठा और रामायण (वाल्मीकि) को सामने रखा, कलमदान दाहिने हाथ की तरफ रखा, काशी के लाल जनेऊ पहने और ऊपर सफ़ेद रेशम के वस्त्र पहने जिस पर राम लिखा हुआ था। उस वस्त्र का दो भाग अपने कमर के चारों तरफ लपेटा। खुले बाल और सिर पर चोटी,

۵

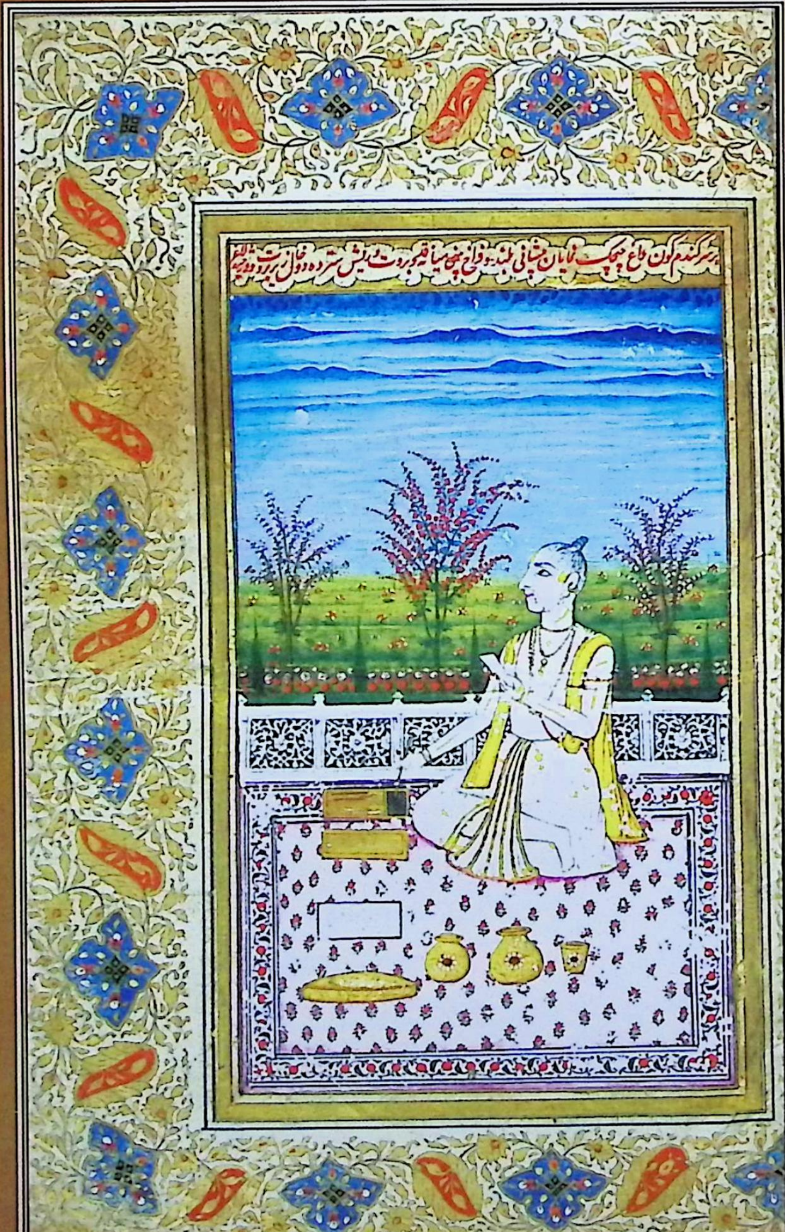
بر سر گندم گون داغ چیچک نمایان پیشانی بلند ابرو فراخ چشم سیاه قیچی بروت و ریش سترده خال بر

5

मुखमंडल पर चेचक के दाग, चौड़ा और ऊँचा ललाट, नाक चौड़ी, कद मयम, दाढ़ी, मूंछ लगाये, मूंछ के नीचे दो तिल, शरीर दुर्बल, पतला और क्षीण।

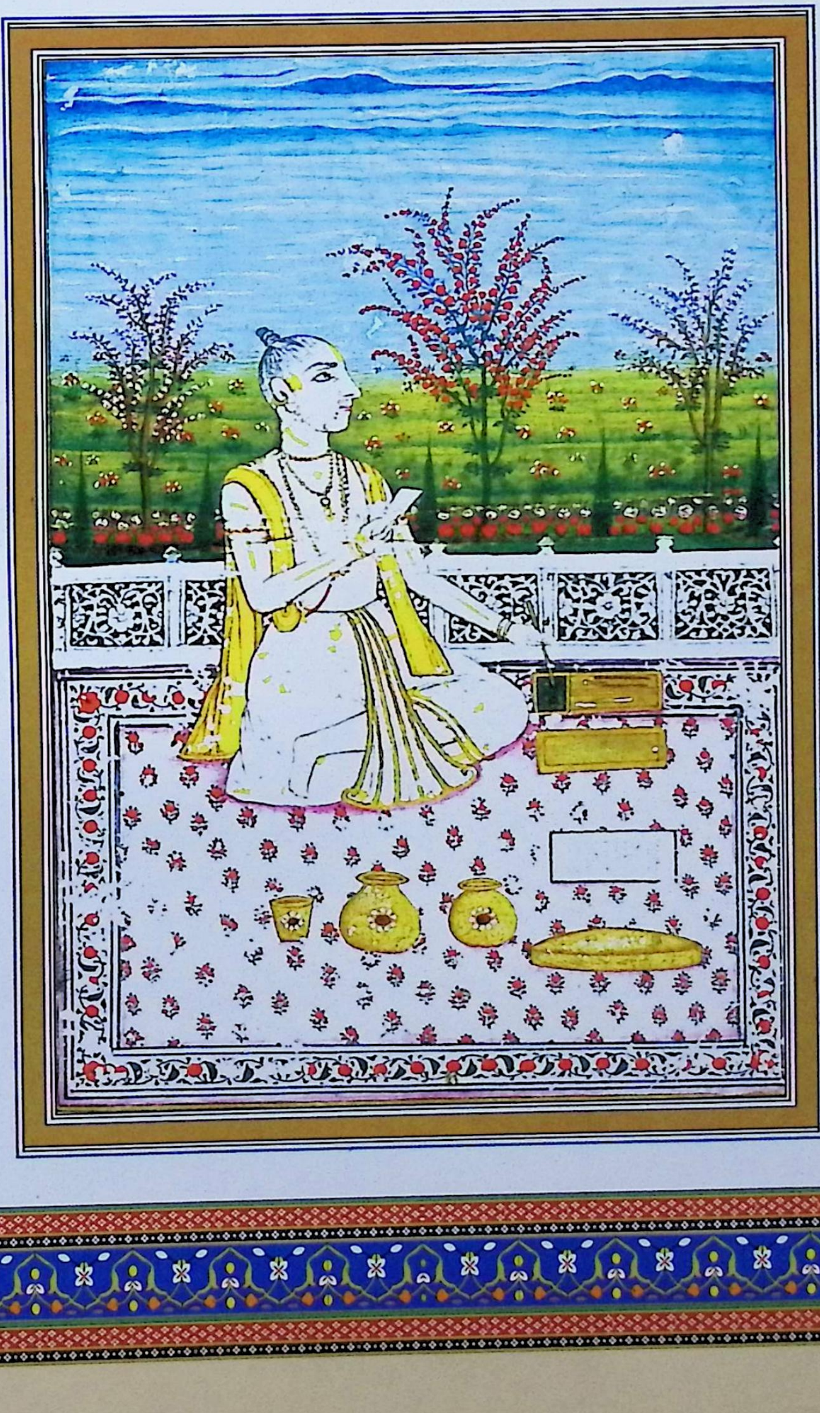

آغاز ترجمه رامائن بالمیک کانڈ اول مسمی به بال کانڈ

جی سزاست بهگوان را و هر را دارندهٔ عالم را که او را جسم نیست و تمام عالم وجود اوست و
و نرگن است و گن هم اوست و بزرگی سزاست سردارا و لادر کهو را و شاد کننده
دل کوشلا را که رام است و کشندهٔ ده سر پر و شر تهه که چشم او مثل نیلوفر است بالمیک من
که رایض و عالم و دانندهٔ گفتارهاست از نارد پرسید درین زمانه کیست که بهنرها هنرور
باشد و دهرم دان و جگ دان و راست گو و صایم استوار و در طریق نیک کامل و خواهنده
نکوئی جمیع عالمیان و قوتمند و خوش شکل و فرو کشندهٔ خشم و غضب و نکوبینندهٔ بدکسان و از
غصهٔ او دیوتا هم ترسنده و در محافظت هر [illegible] او کامل بوده دست او توانا باشد
و کن و دولت را بحر بوده و همه طریق چهی در یکی باشد و مثل باد و آتش و آفتاب و اندر
برابر باشد اینقدر شنیدن از شما خواهش دارم و تو در چنین کس گفتن و دانستن قادر هستی
نارد که هر سه کال داننده است ماضی و مستقبل و حال گفته بالمیک را شنیده جواب گفت بشنو
اینچنین خصایل که تو گفتی در یک کس بسیار دشوار است و دیوتاها هم نمی بینم اما شنیده ام که بچنین
خصایلها آراسته در نسب اچهواکو رام نام خواهد شد یعنی حالا خود نسبت مستقبل را از کمال روشن ضمیری
می فرماید بلکه ازین هنرها افزون نیک طلعت و صاحب دل و والا همت و متحمل و خوش رو و
مطیع کنندهٔ حواس خمسه و عاقل و دانندهٔ رسم عالم و سنجیده گفتار و زیب افزای دولت

وکشنده

रामायण वाल्मीकि काण्ड (प्रथम)

बालकाण्ड

समस्त प्रशंसापरक वचन भगवान के लिये हैं जो संसार का पालक है, अजन्मा है और समस्त ब्रह्माण्ड में उसी का अस्तित्व है। समस्त घटनायें उसी की इच्छा से होती हैं इसलिए महानता का व्याख्यान उसके लिये उचित है। रघुवंश के शिरोमणि, कौशल्या के हृदय को प्रसन्न करने वाले, दस शिरों (रावण) का मर्दन करने वाले और दशरथ के पुत्र राम हैं जिनकी आँखें नीलमणि जैसी हैं। मैं वाल्मीकि जो कि तप, ज्ञानयुक्त और विविध बातों का जानने वाला हूँ, मैंने नारद से पूछा कि इस काल में ऐसा कौन है ?जो समस्त कलाओं का ज्ञाता, धर्म जानने वाला, यज्ञ सम्पादन करने वाला, सत्यवादी, सन्मार्ग पर चलने वाला, अच्छे कार्यों में निपुण, सारे संसार का भला चाहने वाला शक्तिशाली, सुन्दर, क्रोधजयी, दुष्टों का भी भला चाहने वाला हो। जिसके क्रोध से देवता भी भयभीत हों, जो तीनों लोकों की, तीनों कालों में रक्षा करने में पूर्ण रूप से सक्षम हो, जिसका हाथ घुटनों तक (आजानुबाहु) हो, जो धन सम्पत्ति का समुद्र हो, लक्ष्मी के समस्त गुण उसमें एकत्र हों और वायु, अग्नि एवं सूर्य तथा चन्द्रमा के समान हो। मैं यह सब आपसे सुनने की इच्छा रखता हूँ और आप ऐसे व्यक्ति के बारे में बतलाने एवं जानने में सक्षम हैं। नारद जो तीनों लोक के भूत, भविष्य और वर्तमान को जानने वाले हैं, वाल्मीकि की बात सुनकर, उत्तर में कहा ! कि सुनो इतने गुण और अच्छाइयों का जो तुमने वर्णन किया है उनका किसी एक व्यक्ति में एकत्र होना अत्यन्त कठिन है और देवताओं को भी मैं ऐसा नहीं देखता। यद्यपि मैंने सुना है कि इन गुणों से सम्पन्न इक्ष्वाकु वंश में राम नाम का एक व्यक्ति उत्पन्न होगा अर्थात् वह अभी से भविष्य के सम्बन्ध में अपने ज्ञान से बताता है। उक्त गुणों से भी बढ़कर है, वह सुन्दर, सहृदय, साहसी, धैर्यवान, सुन्दर शरीर वाले, बुद्धिमान, सांसारिक नियमों के ज्ञाता, मृदुभाषी, राज्य को बढ़ाने वाले और शत्रुओं का वध करने वाले होंगे।

وکشندۀ دشمنان بود و قدآور و درازدست و گلو مثل سنکهه و زنخ کلان و کمان
کلان کشد و کلان تیغ و کوده زانو و دست تا زانو داشته باشد و قوی و راست قوه
و از هر عضو درست باشد و رنگ او خوش آیین باشد و چشم کلان و سینه کشاده و نیک
طرح و دهرم دان و مستقل براستی و فر و کشندۀ غصه و صاحب دل و باشعور و پاکباز و زور
آور و محفوظ دارندۀ تمام عالم و نگاهدارندۀ دهرم و داننده همه بیدانک و همه شاستر
و فهمندۀ مغز معنی شاستر باهوش و خوش آینده جمیع جهان و صادق و غریب وضع
و بسیار دان و همیشه پرور است روان مثل سمندر در دریاها و عزیز صورت رام نام شادی
افزای کوشلا خواهد بود در ژرف نگری مثل عمان یعنی سمندر و در تحمل مانند کوه همانچل و بشن و بش
بقوت و ماه وش بدیدن و مانند آتش و موت بغضب و چون زمین بحلم و چون
کُبیر بترک دنیا و براستی غیر مانند و همچنین کس را دشرتهه نام پدر او جوراج یعنی ولی عهدی
دادن بخاطر گذرانند آنرا دانسته کیکیئی نام اهلیۀ او که دختر راجه کیکه بود و دو برها را که پیشتر راجه
داده بود خواهد خواست و آن اینست که رام به بیابان برود و بهرت پسر کیکیئی راج کند
و آن راجه که بحبل المتین دهرم بسته است رام پسر عزیز را به بیابان خواهد فرستاد
و رام بجهته نگاهداشت خاطر عزیز پدر و کیکیئی مادر میرود و برادر کلان را بدانگونه دیده لچهمن نام
برادر خورد عقب می رود و بهمه خوبی و حسن کامل سیتا اهلیۀ او عقب می رود بحسن

लम्बे शरीर वाले, लम्बे हाथों वाले, कम्बुग्रीव, धनुर्धारी, सुडौल अंगों वाले, लम्बी सी माला घुटनों तक रखेंगे। शक्तिशाली, बलशाली, श्रेष्ठ वर्ण वाले विशाल नेत्रों वाले, चौड़े वक्षस्थल, उज्ज्वल चरित्र वाले होंगे, धर्म के ज्ञाता और भविष्य को जानने वाले होंगे। क्रोधजयी, सहृदय, ज्ञानी, पवित्र और बलशाली होंगे। पूरे संसार की रक्षा करने वाले और धर्म की रक्षा करने वाले होंगे। समस्त जीवों और समस्त शास्त्रों के ज्ञाता तथा शास्त्र का अर्थ व उद्देश्य समझने वाले होंगे। सारे संसार में प्रसन्नता लाने वाले, सच्चरित्र और अलग वेशभूषा वाले होंगे। बहुत बड़े ज्ञानी और दीन दुखियों के पालक होंगे, गति ऐसी जैसे नदियों में समुद्र, सुन्दर छवि वाले होंगे। उनका नाम राम होगा जो कौशल्या की प्रसन्नता में वृद्धि करेंगे। उनकी दया दृष्टि समुद्र जैसी होगी। धैर्य और शालीनता में हिमाचल पर्वत जैसे उसका हृदय और शरीर शक्तिशाली होगा। देखने में चन्द्रमा जैसे, क्रोध में अग्नि और मृत्यु जैसे, धैर्य में पृथ्वी के समान, संसार के त्याग में संन्यासी जैसे और सत्यता में उनकी बराबरी नहीं होगी। ऐसे व्यक्ति के पिता का नाम दशरथ है। जब उनको उत्तराधिकारी बनाने का विचार दशरथ के हृदय में उत्पन्न होगा तो उसे जानकर उनकी कैकेयी नामक पत्नी जिसे उन्होंने वचन दिया होगा उनसे यह वचन मांगेगी कि राम वन को चले जाएं। उनके स्थान पर कैकेयी का पुत्र भरत राज करे। और वे राजा जो बहुत दृढ़ धार्मिक व्यक्ति हैं, अपने प्रिय पुत्र राम को वन भेज देंगे। राम पिता और माता कैकेयी को प्रसन्न करने तथा उनकी बात का सम्मान करने के लिए वन चले जायेंगे। अब आगे सुनो कि अपने ज्येष्ठ भ्राता को इस स्थिति में देखकर लक्ष्मण नामक उनके कनिष्ठ भ्राता भी साथ जाते हैं और पूरे तन-मन के साथ राम की पत्नी सीता भी उनके साथ जाती हैं,

وجوانی وشیرین زبانی ونیک طوری عقب او چنانکه ماهتاب باشد ورتهبان راجه دسرته
نشان ن در شرنگ پور قصبه بکنار گنگا برده می گذارد و آن جنگل و کوه ها و دریا ها و تالاب ها
طی کرده به کوهنه نام سرزدار رکهها دمی پوندد و بعد ملاقات او رام بالچهمن و سیتا
از آمر بهردواج رکهه بکوه چترکوت می رود و آنجا جای هموار نموده بنگل و اجن را پوشیده
یعنی بهها برتره
اقامت می کند از آن هر سه چترکوت چنان می نماید که کوه سمیر از نشستن مها دیو و کبیر
و لچهمی بعد رفتن رام راجه دسرتهه از هجر پسر هلاک شده بسرگ می رود پس ازان بششت وغیره
برهمنان بهرت را جو راج می گویند او قبول نمی کند و آن خواهش سلطنت گذاشته بدیدن رام
می آید و نعلین رام که کهراون باشد گرفته بر سر بسته باز می رود و در دیه نندگرام رفته بانتظار آمدن
رامچند براج اقامت می کند و رامچند آن کوه را گذاشته بصحرای دندک می رود و در آناشی
راه برادهٔ نام راچهس را می کشد بعده شربهنگ رکهه را می بیند و سوتیچهن را و اگست را
تیر وار اگست اندر دهنک نام کمان می گیرد و ترکش که تیر او کاهی کمی نکند نیز می گیرد و در پنج
جنگل برپنج وتی راگویند
وتی اقامت می کند در آنجا سوپ نکهی نام راچهسی می آید لچهمن گوش و بینی او می برد و او رفته
کهر و دوکهن و ترسرا نام راچهسان را بکشتن رام می آرد و رام تنها آنها را با چهارده هزار راچهس
بقتل می رساند و کشتن برادران را شنیده راون نام راچهس قوی هیکل و کامروپ یعنی
هر نوع صورت که خواهد خود را بیارآید و راجه راچهسان است بغصه تمام نزد ماریچ نام راچهس

जो सुन्दर, यौवन सम्पन्न, मृदभाषी और सच्चरित्र है उनकी एड़ी ऐसी है जैसे चन्द्रमा बुर्ज में होता है। राजा रथ में बैठकर शृंगवेरपुर नगर में गंगा के किनारे सर्दियों का मौसम बिताते हैं और वह जंगलों, पहाड़ों, दरियाओं और तालाबों को पार करते हुए निषादों के गुह नामक सरदार से भेंट करते हैं। भेंट के पश्चात राम, लक्ष्मण और सीता के साथ भरद्वाज के आदेश से चित्रकूट पर्वत पर जाते हैं और वहाँ समतल भूमि देखकर वभ्रुभाजन (मृगचर्म गैरिक वस्त्र) पहनकर निवास करते हैं। इन तीनों से चित्रकूट ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि सुमेर पर्वत पर महादेव कुबेर और लक्ष्मी के बैठने से लगता है। राम के चले जाने के पश्चात् राजा दशरथ पुत्र के वियोग में परलोक सिधार जाते हैं। उसके पश्चात वशिष्ठ आदि ब्राह्मण जब भरत से राज करने के लिए कहते हैं तो वह स्वीकार नहीं करते हैं और राज्य की इच्छा को छोड़कर राम को देखने के लिए आते हैं। राम की खड़ाऊं लेकर और सिर पर रखकर वापस जाते हैं। नन्दिग्राम में जाकर रामचन्द्र के आने की प्रतीक्षा में शासन करते हैं। रामचन्द्र इस पर्वत को छोड़कर दण्डकारण्य वन में चले जाते हैं और मार्ग में बिराध नामक राक्षस का वध करते हैं। उसके पश्चात एक खड्ग, ऐन्द्र धनुष और तरकश जिसके तीर कभी नहीं चूकते थे, ले लेते हैं तथा पंचवटी में निवास करते हैं। वहाँ सूपनखा नाम की राक्षसी आती है, लक्ष्मण उसकी नाक, कान काट लेते हैं और वह घर जाकर खर, दूषण तथा त्रिशिरा नामक राक्षसों को राम का वध करने के लिए लाती है। राम इसका अन्य चौदह हज़ार राक्षसों सहित वध कर देते हैं। रावण नामक राक्षस जो अत्यन्त भीमकाय और अपना चेहरा बदलने की शक्ति रखता है, वही राक्षसों का राजा है। वह अपने भाईयों के वध का समाचार सुनकर क्रोध से क्रोधित होकर मारीच नामक राक्षस के पास सहायता के लिए जाता है।

جُثّه مرده

برای طلب مدد می رود و آواز جنگ رامچندر منع می کند راون بخاطر نیاورده بمکان رامچندر
می آید و ماریچ آهوی طلا گشته رامچندر را از آن مکان دور می برد و لچهمن هم بگفتهٔ سیتا
بیرون می رود و او سیتا را گرفته می برد و جٹایو نام گدّ را می کشد و رامچندر بعد از آن بغم
از جهان
والم با کبده رکهشی مانند ملاقات می کند و از و حقیقت را شنیده و او را سوخته کریا کرده
بعد از آن کبسنن پسر دنو را می بیند که بسنده را گشته کریا او از آتش می کند و او حقیقت شبری
و سگریو با و می گوید بعد از آن رام با لچهمن نزد شبری می رود و او پوجای رام کرده بسرگ
می رود و بعد رامچندر بکنار پنپا با هنومان بوزنه ملاقات می کند و از گفته او بسگریو ملاقی
می شود و او قوت بالی برادر خود می گوید و رامچندر پرتگیای کشتن او می کند و برای اعتبار
یعنی ذره
سگریو وجود مرده دوندوبه را چهر راه قریب صد جوجن یعنی چهار صد کروه می اندازد و هفت
درخت تاڑ او کوه را و تار ساتل را که زیر زمین است همه را بیک تیر سوراخ می کند او خوشحال شده
با ایشان دوستی می کند بعد از آن از کوههای مذکور بکشکندها نگری که بالی آنجا بود رام و لچهمن
و سگریو هر سه می روند بعد از آن سگریو شور می کند و آواز او بالی بیرون آمده با سگریو جنگ
می کند و رامچندر به تیر او را می کشد و سگریو بوزنه را سلطنت آنجا می دهد و او بوزنه ها طلبیده
برای دیدن سیتا هر سو می فرستد و از گفته سنپاتی گده هنومان بوزنه قریب صد جوجن دریا
شور لانگ زده بدان کنار می رود و در لنکا که راون بادشاه آنجا بود می در آید و آنجا سیتا را

वह उसको राम से युद्ध करने के लिए रोकता है। रावण उसके परामर्श की चिन्ता न करते हुए रामचन्द्र के निवास स्थान पर जाता है और मारीच एक स्वर्ण मृग के रूप में परिवर्तित होकर रामचन्द्र को उस स्थान से दूर ले जाता है। लक्ष्मण भी सीता के कहने से चले जाते हैं और वह (रावण) सीता को उठा ले जाता है। (मार्ग में अवरोध उत्पन्न करने वाले) जटायु नामक गिद्ध को मार डालता है। रामचन्द्र उसके बाद शोकाकुल अवस्था में गिद्ध से, जिसमें थोड़ा जीवन शेष होता है, भेंट करते हैं। उससे वास्तविकता सुनते हैं और उसके मृत शरीर को जलाकर क्रियाकर्म करते हैं। उसके पश्चात कबन्ध नामक राक्षस को देखते हैं और कबन्ध को मारकर उसका क्रियाकर्म अग्नि से करते हैं। वह शबरी और सुग्रीव का पता उनसे बताता है, इसके पश्चात राम लक्ष्मण के साथ शबरी के पास जाते हैं और वह राम की पूजा करके स्वर्ग चली जाती है। राम की भेंट वानर हनुमान से होती है और उनके कहने पर सुग्रीव से भी मिलते हैं। वह अपने भाई बालि की शक्ति उनको बताता है, रामचन्द्र उसका वध करने का उत्तरदायित्व लेते हैं। सुग्रीव के विश्वास के लिये वे बोद, मुरदा, विन्द और विभ राक्षसों को सौ योजन अर्थात् चार सौ कोस की दूरी पर फेंक देते हैं। ताड़ के सात वृक्षों में, पहाड़ में और पृथ्वी के नीचे तक सबमें एक बाण से छेद कर देते हैं। वह खुश होकर उससे मित्रता करते हैं। उसके पश्चात उक्त पहाड़ों से किष्किन्धा गुहा जहाँ बालि था, राम, लक्ष्मण और सुग्रीव तीनों जाते हैं। तब सुग्रीव शोर मचाता है और उसकी आवाज पर बालि बाहर आकर सुग्रीव से युद्ध करता है। रामचन्द्र उसे बाण से मार डालते हैं और सुग्रीव को वहाँ का शासन दे देते हैं। वह वानरों को बुलाकर सीता की खोज के लिए चारों ओर भेजता है। संपाती गिद्ध के कहने से वानर हनुमान लगभग सौ योजन के समुन्द्र को पार करके दूसरे किनारे पर जाते हैं। लंका में जहाँ का राजा रावण था पहुँचते हैं,

میجوید در آشوک بن که جائی بود می بیند و انگشتری رام داده از آنجا سن را گرفته بر می گردد
و پنج پسران وزیر راون را کشت و پنج پسر و لشکر را می کشد و آچهیه کمار را می کشد و از بهم
نام پسر راون
بنده اندرجیت به بند رفته لنکا را می سوزد و باز سیتا را دین پیش رام می آید و حقیقت
می گوید رامچندر با لشکر نیو و غیره بکنار دریای شور میرسد و از غصه به تیرها غلغله در دریا می اندزد
بعد از آن سمندر بصورتی او را نمودار می شود و از گفته دریا نل نام بوزنه پل بر سمندر می کند
بعد از آن ببهیکهن برادر راون را که با او ملاقی شده راج لنکا می دهد بعد از آن راون را با راچهسان
دیگر می کشد و از آن کار اندر و غیره دیوتاها بارکهه ها پوجا رام می کنند و از دیوتا برها
یعنی در [illegible]
گرفته و سیتا را گرفته بر پشپک بمان سوار شده باز به نندگرام می آید و آنجا با برادران
جٹاها را دور کرده راج اجودهیا می کند و با سیتا با آسودگی و راحت راج زمین می کند
در راج او مردمان را تصدیع نمی شود و آزار نمیشود و قحط نمی افتد و پسر در حیات پدر نمی
میرد و عورت بدهوا یعنی بی شوهر نمیشود و همیشه بگفتار شوهر کار می کند و نه کسی از
باد میمیرد و نه کسی در آب غرق می شود و نه کسی را از آتش تصدیع می شود چنانچه ست جگ
باشد و در راج او نه بدهوا و نه اناتهه و بد طریق و بخیل و آزارمند کسی نمی شود و صد اشومید
جگ می کند بسیار زر می بخشد و صد هزار گاو ماده بارها می بخشد و بر چهار برن را
بر دهرم خود داشته یازده هزار سال سلطنت می کند و به بشن لوک می رود تا ر گفت

वहाँ सीता की खोज करते हैं और उन्हें अशोक वाटिका में जो एक स्थान है वहाँ देखते हैं तो राम की अंगूठी उन्हें देकर वहाँ से लौटते हैं। वे रावण के मंत्री के पाँच पुत्रों और सेनापतियों को मार डालते हैं। अक्षकुमार को मारते हैं और पलीते रूपी पूँछ में आग लगाकर पूरी लंका को जला डालते हैं। फिर सीता को देखकर राम के पास आते हैं तथा उनसे सत्यता का वर्णन करते हैं।

रामचन्द्र सुग्रीव आदि के साथ समुद्र के किनारे पर पहुँचते हैं और क्रोध से बाणों के द्वारा हलचल उत्पन्न कर देते हैं। इसके बाद समुद्र मनुष्य रूप में प्रकट होता है और समुद्र के कहने से 'नल' नाम का वानर समुद्र पर पुल बनाता है। रावण तथा अन्य राक्षसों का वध करते हैं। इसके पश्चात रावण के भाई को, जिनसे भेंट हुई थी लंका का राज्य दे देते हैं।

इस कार्य से प्रसन्न होकर इन्द्र आदि देवता ऋषियों के साथ राम की पूजा करते हैं और देवताओं से वरदान लेकर सीता सहित राम पुष्पक विमान पर बैठकर पुनः नन्दिग्राम आते हैं और वहाँ भाइयों के साथ जटाओं को दूर करके अयोध्या पर शासन करते हैं। सीता के साथ प्रसन्नतापूर्वक पूरी पृथ्वी पर शासन करते हैं। उनके राज्य में लोगों को तनिक भी कठिनाई नहीं होती है और न कोई कष्ट अथवा आपदा आती है। अकाल नहीं पड़ता है, लड़का पिता के जीवन में नहीं मरता है, स्त्री विधवा नहीं होती है और सदैव पति का अनुसरण करती है। कोई न वायु से मरता है, न कोई पानी में डूबता है और न किसी को आग लगती है जैसा कि सतयुग में होता है। उनके राज्य में कोई विधवा, कोई अनाथ, चरित्रहीन, कंजूस और किसी को दुख पहुँचाने वाला कोई नहीं है। हर समय बुलबुल के चहकने की ध्वनि आती है, बहुत चावल लाती हैं। सैकड़ों बुलबुले चावलों सहित समर्पित रहती हैं। चारों वर्णों को धर्म पथ पर प्रवृत्त करते हुए ग्यारह हजार वर्ष शासन करते हुए राम विष्णु लोक में जाते हैं। नारद ने कहा

ای بالمیک رام باین گن ها اینچنین خواهد شد گفت نارد را شنین بالمیک
گفت ای دیو رکهه آنچه تو گفتی مرا هم چنین می نماید این اگهان یعنی افسانه هر که خواهد خواند از جمیع
عذاب خلاص خواهد شد و هر که این ادهیا را همیشه خواهد شنید و خواهد خواند با پسران و نبیرگان
تصدیع نخواهد کشید و همه را باین شنین راپهل خواهد یافت و از خواندن این برهمن خواهد شد
و چهتری بادشاه خواهد شد و بیس دولتمند خواهد شد و سودر از شنیدن بزرگی خواهد یافت

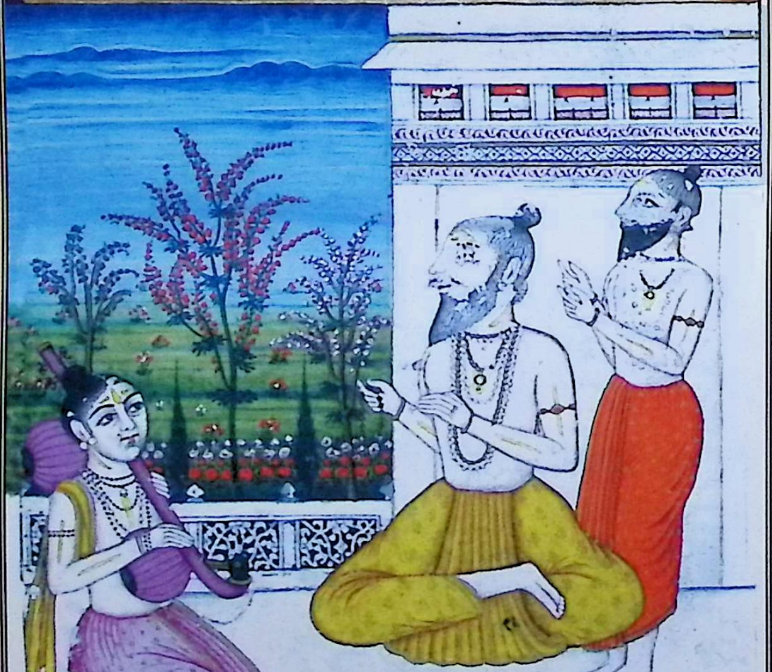

वाल्मीकि ! राम इन गुणों के साथ ऐसे ही होंगे। नारद की बात सुनकर वाल्मीकि ने कहा हे देवर्षि ! तुमने जो कहा मुझे भी ऐसा ही आभास होता है। यह कथा जो पढ़ेगा वह हर कष्ट से मुक्ति पायेगा, जो उसको सदैव सुनेगा उसे पुत्रों और पौत्रों की ओर से कोई कष्ट नहीं पहुँचेगा। इसके पढ़ने से ब्राह्मण विद्वान बन जायेगा, निर्धन क्षत्रिय राजा होगा, वैश्य धनी होगा और शूद्र इसको सुनने से महानता को प्राप्त होगा। वाल्मीकि ऋषि और नारद मुनि दोनों आसन पर बैठते हैं, वाल्मीकि प्रश्न करते हैं और नारद मुनि रामायण की कथा सुनाते हैं।

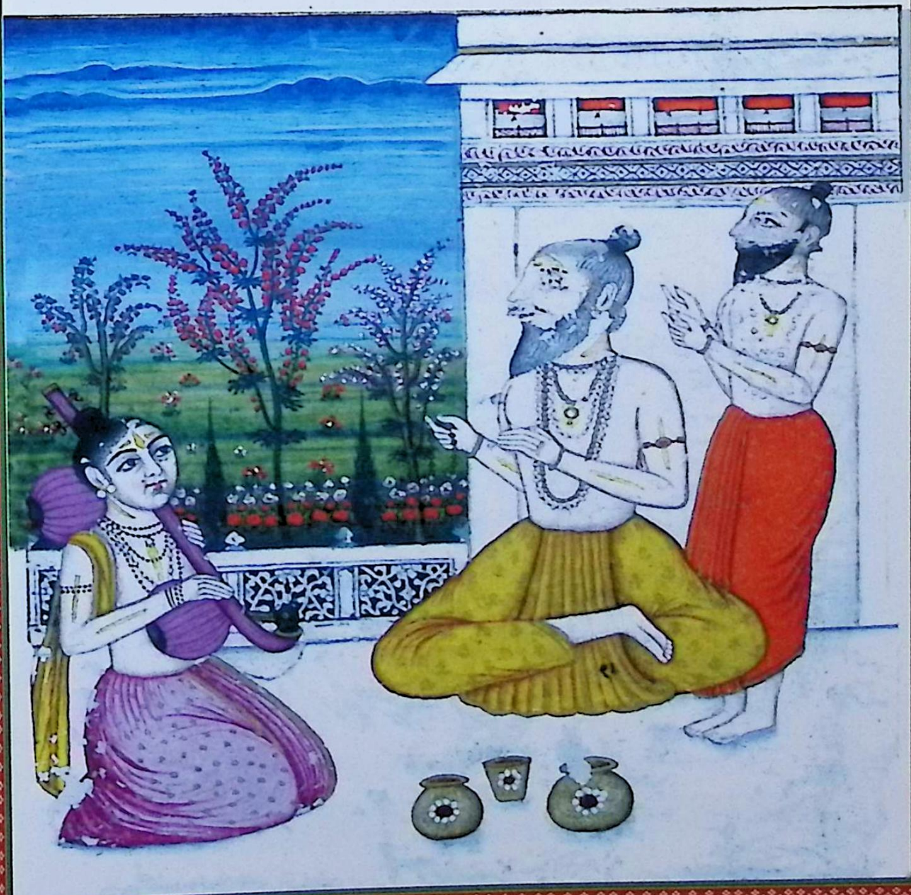

بالمیک رکهه و نارد من هر دو آن نشسته بالمیک سوال کرد و نارد قصه رامائن میگوید

سرگ اول رامائن مجمل زبانی نارد تمام شد سرگ گفته نارد را بالمیک شنین
باشاگردان خود عجب ماند و آن مهامن در دل رام را پوجا کرده باشاگردان نارد
را پرستش کرد و نارد از ایشان مرخص گشته بدیولوک رفت بعد از آن مهورتی بالمیک
بکنار تمسا نام دریا رفت و تیرتهه را صاف بی گل ولا دید با بهردواج شاگرد گفت
که دریا بی گل ولای مثل دل نیکمردان صاف و آب نیک و رنگ خورد و خوب است بالکل
پوشیدنی من بیار شتاب کن شاگرد از گفته او استاد رفته بالکل آورده داد او گرفت
در آب غسل کرد و جپ منود نجا نوشی با بث ترپن کرده و پترو دیوتا را آب داد
و همچنین تماشا می کرد که یک جفت جانور که آنرا کرونج گویند دید از آن دو یکی را صیادی
کشت ماده او وجود آن را خون آلوده دیده از غم نری و نوحه بر آسمان طیر کرد
بالمیک را از آن دل نرم شد و این اشلوک گفت اشلوک مانشاد پرتشتها تون ماکمه
شاسوتی سما؛ یت کرونج متهنا دیکهه وده کام موهته؛ معنی این آنست ای صیاد ترا بزرگی
نشود و نه بسیار سال بمانی اگر از جفت کرونج یکی را کشته از هوای شیطانی این
گفته در فکر شد که من چه گفتم لمحه فکر نمود. گفتار را فهمیده بشاگرد خود بهردواج که عقب ایستاده بود
گفت ای بهردواج با چهار پای به برابر حروف آنچه بیکر گفته ام اشلوک می شود شاگرد

گفت

सर्ग–9

नारद के द्वारा संक्षिप्त रामायण पूर्ण हुई। नारद की कही हुई कथा को सुनकर वाल्मीकि अपने शिष्यों सहित आश्चर्य में पड़ गये और इस महामुनि ने हृदय में ही राम की पूजा करके शिष्यों के साथ नारद की पूजा की तथा नारद इन लोगों से विदा होकर देवलोक चले गये। एक मुहूर्त के पश्चात वाल्मीकि तमसा नामक नदी के किनारे गये और तीर्थ को स्वच्छ देखकर अपने शिष्य भरद्वाज से कहा कि नदी बिना कीचड़ और मिट्टी वाली सज्जन पुरुष के हृदय के समान स्वच्छ है, उसका पानी और रंग बहुत अच्छा है। मेरे पहनने का वल्कलवस्त्र लाओ शीघ्रता करो। शिष्य ने उनके कहने से शीघ्रता से जाकर वल्कल वस्त्र लाकर दिया। उन्होंने उसे पहनकर स्नान किया और जप किया तथा चुप रहते हुए अबाट (हवन) और तर्पन किया। पवित्र देवता को जल दिया और अभी यही कार्य कर रहे थे कि पक्षियों का एक जोड़ा जिन्हें क्रौञ्च कहते हैं देखा। एक निषाद ने इनमें से नर को शिकार करके मार गिराया। इसकी मादा नर पक्षी को रक्तरंजित देखकर शोक से विलाप करती हुई आकाश में उड़ गयी। वाल्मीकि का हृदय उसके प्रति सहानुभूति से भर गया और उन्होंने यह श्लोक पढ़ा। श्लोक यह है–

मा निषाद ! प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ।।

इसका अर्थ यह है कि ऐ शिकारी तुझको सम्मान प्राप्त न हो और न तू अधिक जीवित रहे। अगर तूने क्रौञ्च के जोड़े में से एक को मार दिया तो वह दुष्ट कर्म है। यह कहकर वह चिन्ता में पड़ गये कि मैंने क्या कह दिया ?एक पल विचार करके और अपनी बात का अर्थ समझकर अपने शिष्य भरद्वाज से, जो पीछे खड़े थे, कहा ऐ भरद्वाज ! मैंने जो कुछ सोचकर कहा है वह श्लोक हो जाता ह

کفت درست میشود همچنین کویان کویان در همان فکر بالمیک بمکان خود رفت و از عقب او بهردواج غریب طور کلس یعنی سبوی برنجی از آب پر کرده آمد بمکان خود رسیده نشسته خاموش بمراقبه بود که برهما جد کلان جمیع مردم آمد بالمیک اورا دیده برخاست اما خاموش و هر دو دست را بسته نمسکار کرده به ارگهه و پاد و چندن پوجا نمود او با جس وجه این را خیر و عافیت پرسید براسن یعنی سلام برهما نشست و بالمیک را نیز برای نشستن آسن داد با وجود نشستن برهما بالمیک بهمان فکر جانور و اشلوک بود و می کفت که صیاد که خود را نمی فهمد عذاب کرد که آن خوبصورت جانور را ناحق کشت. برهما که دانای ضمیر کسان است تبسم نموده به بالمیک کفت ای کلان رکهه آنچه از کشتن کرونچی کفتی اشلوک درست میشود و چهند یعنی وزن بحر درست می شود و سرستی یعنی کفتار درست است و جمیع افعال رامچندر را تو بکو او دهرماتما و هنرور و متحمل جهان بود چنانچه از نارد شنیده بکو احوال رامچندر و همراهیان او را و سیتا را آنچه ترا معلوم است. بکو آنچه معلوم نیست از کفته من روشن خواهد شد و احوال راجه دشرتهه با اهلیه و مملکت او بنوعی که بود و خواهد شد همه را بکو و کفته تو هرکز دروغ نخواهد بود بطریق دلخواه افسانه رام را بکو تا آن زمان که کوه ها و دریا ها بر زمین خواهد بود افسانه رام خواهد بود و تا زمانی که افسانه رامچندر در زمانه خواهد ماند تو در لوک من با رام خواهی بود. این بکفت و برهما رفت بعد از آن بالمیک . حالردان در فکرت بوده بار بار آن اشلوک

शिष्य ने कहा उचित है इस प्रकार इसी सोच में डूबे हुए वाल्मीकि अपने घर गये और उनके पीछे बेचारा भरद्वाज एक बरनजी मटका (कलश) पानी से भरा लेकर आया। वाल्मीकि अपने घर पहुँचकर चुपचाप ध्यानमग्न बैठे थे कि समस्त मानवों के पूर्वज ब्रह्मा आए। वाल्मीकि इनको देखकर उठ गये परन्तु खामोश और दोनों हाथ जोड़कर अर्ध्य, पाद्य और वन्दन से पूजा की। उन्होंने विधिपूर्वक उनका हालचाल पूछा और ब्रह्मा ने आसन पर विराजमान होकर वाल्मीकि को भी बैठने के लिए आसन दिया। ब्रह्मा के बैठे होने के बाद भी वाल्मीकि उसी पक्षी और श्लोक की चिन्ता में थे और कह रहे थे कि जो शिकारी स्वयं को नहीं समझता उसने पाप कर्म किया है कि इस सुन्दर पक्षी को अनावश्यक मारा। ब्रह्मा जो लोगों के हृदय की बात जानने वाले हैं मुस्कुराते हुए वाल्मीकि से कहा-ऐ महामुनि ! क्रौञ्च को मारने से संबंधित जो कुछ तुमने कहा वह श्लोक ठीक है। छन्द का माप ठीक है, सरस्वती अर्थात् वाणी ठीक है और रामचन्द्र के सारे कार्यों के संबंध में कहो। वह धर्मात्मा, गुणी और धैर्य स्वभाव वाले थे। अतः नारद से सुनी हुई रामचन्द्र, उनके साथियों और सीता की जो कथा मालूम है वह कहो, कहो जो कुछ ज्ञात है, कहने से मन प्रफुल्लित होगा। राजा दशरथ उनकी पत्नी और राज्य की परिस्थितियाँ जैसी थीं और भविष्य में जैसी होगी सब कहो और तुम्हारा कहा हुआ कदापि झूठा नहीं होगा। आकर्षक ढंग से राम की कथा सुनाओ क्योंकि जब तक पृथ्वी पर पहाड़ और समुद्र रहेंगे राम की कथा उस समय तक रहेगी और जब तक राम की कथा संसार में रहेगी तुम (**वाल्मीकि**)लोगों के मन में राम के साथ रहोगे। यह कहकर ब्रह्मा चले गये। इसके पश्चात भी वाल्मीकि शिष्यों के साथ चिन्ता में डूबे रहे। बार-बार वह श्लोक

رامی گفت تا از اشلوک اشلوک دیگر گفت همچنین از نوی عقل تمام رامایین با چنان اسلوک
گفت دهرم و ارتهه دهنده بگوناگون ارتهه بتفصیل تمام مانند سمندر از جواهر پر و مانند کیمیا
بزرگ عاقلمندی بن بابیجا بهرت های خوب دلخواه بحروف دلخواه جس و کیرت را چندین بیان نمود

بالمیک سوال می کند و برهما رامایین می گوید

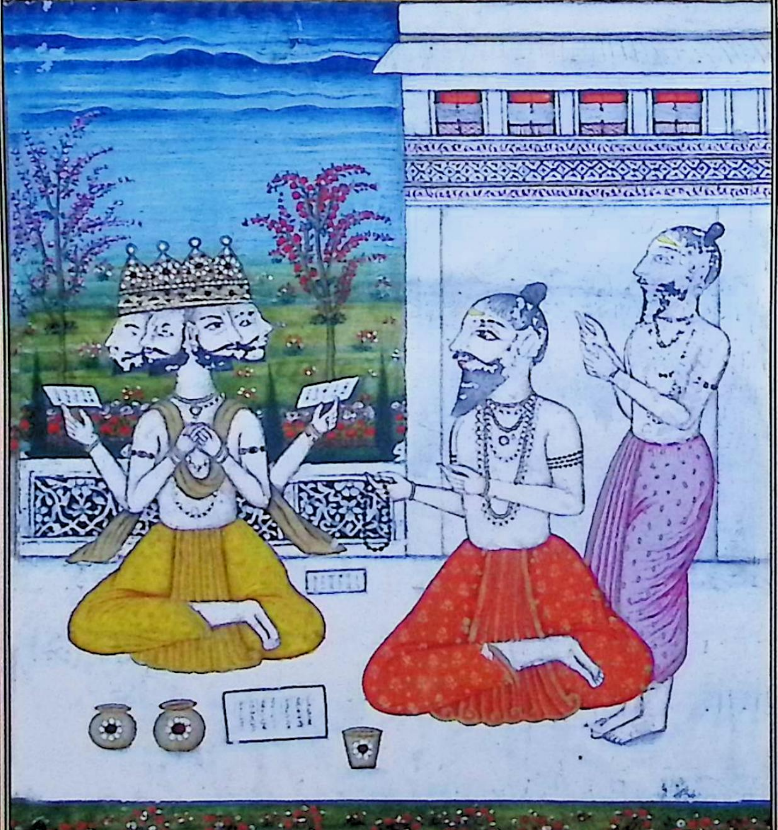

दोहराते थे। यहाँ तक कि इस श्लोक से दूसरा श्लोक कहा और इसी प्रकार बुद्धि का प्रयोग करते हुए सम्पूर्ण रामायण इसी श्लोक में कह डाली। धर्म, अर्थ और काम देने वाले तथा अर्थपूर्ण (मोक्षदायक) समस्त विवरण से विभिन्न प्रकार का अर्थ रखने वाले जैसे कि रत्नों से भरा समुद्र हो और पारस जैसा महान, बुद्धिमान, शब्द भव्य अक्षर व वार्ता प्रिय, रामचन्द्र के यश और कीर्ति का वर्णन किया।

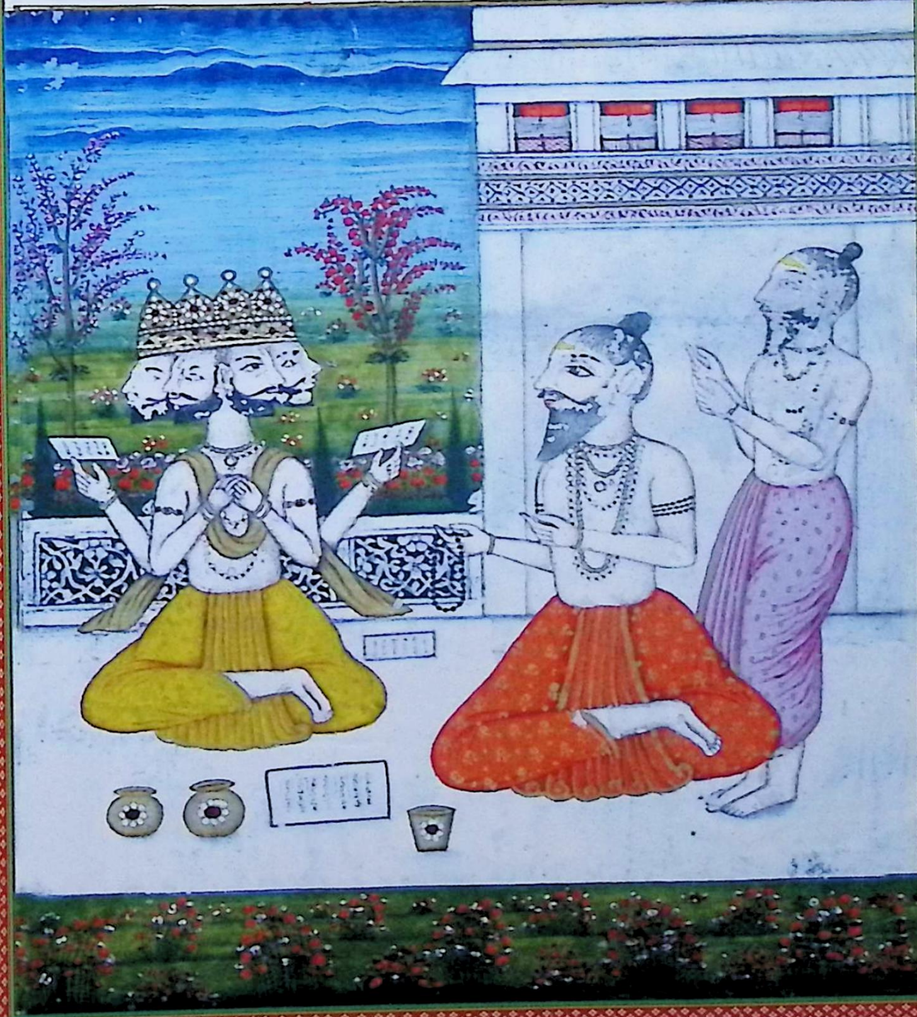

سرک از کانذ اول بر بهما حقیقت باح راچندر بالمیک بهگوان رکهه اف نه طوری کرد

یعنی آب دافضل

پاک و خوب کتها نیکو متعلق چهار بید قدیم و آنرا پیان کرد نزد برهمنان پاکروان مطلع کننده کان

حواس خمسه که آن دهوم و مانذپ وکوسکان واستهکهتان وکوشلان باشند و نیز گنش و لو

نبیره اجهوا کوکه پسران راچندر باشند چنانچه بجای خود مذکور خواهد شد ان شاء الله تعالی سرایند عجب

جش و عجب کیرت راچندر است که در همین لوک ارتهه و آمید همه می دهد و سیاست طریق

خوبی

خلافت همه مذکور است هرکه این را خواهد شنید و خواهد گفت درین زمانه راحتها خواهد دید

و در باشند کان دیولوک برابر خواهد گشت حکایت اجهوا کو و راجه جنک و پلست دیوتا رکهه

نام شخصی که از علماء راجه منو بوده

جگ و

کفته شده و هنگام اسومیده بزرگی راچندر این کتها را آغاز کشته [illegible] برم آ [illegible] گذشتند و دو کرتنده

وکام هوجیه

عذاب این آدکاند تفصیل کفته آمد سرک آ ذ کا ند نخست پرسیدن از نارد و رفتن کنار دریا

و دیدن برهما و یافتن بر گفتن اشلوک ها و مقدار اشلوک ها و بیان اجودهیا و راج دشرتهه

جگ

و مذکور وزرا و بیان کوشلا و برای اولاد گفتن راجه بوزرا و کردن اسومید و یافتن بر و آمدن

دیوتا ها برای بهاک یعنی حصه و تدبیر کشتن راون و فرود آمدن بخش ها و پیدا شدن دب شیر

یعنی تبرک

کیکین

برای تولد اولاد راجه و پیدا شدن راچندر از کوشلا و بهرت از کیکئی و پیدا شدن سومتر

نام پسران دشرتهه

و لچهمن کهن توام از سومترا و پیدا شدن جمیع بوزنه ها کفته شد و ملاقات بسوامتر با دشرتهه و دادن

علم

رام را با لچهمن برای نگاهبانی جگ او و یافتن بدیا از و و رسیدن مکان انگ و کشتن

ها دیو

खण्ड प्रथम का भाग प्रथम

इसके अतिरिक्त कुश व लव इक्ष्वाकु के पौत्र जो रामचन्द्र के पुत्र हैं, इस कारण वह अपने स्थान पर भगवान की इच्छा से स्थापित होंगे। आश्चर्यजनक गीत-अलाप वाले रामचन्द्र के गुणों से युक्त और कमाल यह है कि इस पृथ्वी पर रहते हुए सबकी आशाओं को पूरा करने वाले हैं। इनके शासन और राज्य का ढंग सब अद्भुत है। जो उन्हें सुनेगा और उनका वर्णन करेगा वह इस काल में प्रसन्नता पायेगा और देवलोक के निवासियों के समान हो जायेगा। इक्ष्वाकु, राजा जनक, पुलस्त और देवर्षि की बड़ाई का वर्णन किया गया है। रामचन्द्र की महानता और बड़ाई इसके आंरभ में वर्णित की गयी। वे काम बनाने वाले और आपदा दूर करने वाले हैं- यह सब विस्तार से वर्णन किया है। खण्ड से पूर्व नारद से पूछना, नदी के किनारे जाना, ब्रह्मा को देखना और पाना, श्लोकों को पढ़ना और श्लोकों की संख्या, अयोध्या और दशरथ के शासन का वर्णन, कौशल्या का वर्णन और सन्तान के लिए राजा (दशरथ) का यज्ञ करना और पाना, प्रसाद के लिए देवताओं का बाहर आना, रावण के वध की योजना, ज्योतिषियों का आना, राजा की सन्तान उत्पन्न होने, दसशीश का उत्पन्न होना और कौशल्या से रामचन्द्र का उत्पन्न होना, भरत का कैकेयी से और शत्रुघ्न व लक्ष्मण का सुमित्रा से जुड़वा उत्पन्न होना और समस्त वानरों का उत्पन्न होना यह सब वर्णन हो चुका। विश्वामित्र का दशरथ से भेंट करना, राम का लक्ष्मण के साथ उनके यज्ञ की रक्षा करना, दोनों का विद्या प्राप्त करना और उस स्थान तक पहुँचना,

تا زکار اچهی و یافتن اَنتر از بسوامتر و اقامت بمکان سِده و نگاهبانی جگ و کشتن
سوباهو راچهس و دور انداختن مریچ و گفتن بسوامتر نسب خود را و بیان پیدا شدن گنگا
و حمل و نب افتادن و پیدا شدن سوام کارتِگ و بیان نسب بشال راجه و خلاصی اَهلّا
از شراپ و دیدن مِتهلا نگری و جای جگ راجه مِتهل و گفتن شتانند پرُوهِت
جنگ تمام ماجرای بسوامتر و شکستن کمان جنگ و آغاز بیاه سیتا و آمدن دشرتهه در جانب
جنک و بیاه سیتا و اُورمِلا و مانڈوی و شرتکیرتی برامچندر و بهرت و لچهمن و شترگهن
و ملاقات رامچندر با پرسرام بعد از آن داخل شدن در اجودهیا اینقدر در اول کاند گفته شد
و شصت و چهار سرگ که آن را اشلوک دو هزار و هشتصد و پانزده کرده گفته این بیان
هنگام طفلی رامچندر گفته آمده است بعد از آن دوم اجودهیا کاند نام هست و در آنجا جوراج دادن
رامچندر منظور هست و منع کردن کیکئی و عزم دشرتهه و رفتن رام با لچهمن به بیابان و غم کردن
رعایا شهر و گفتگو با والی بکهها و برگشتن سوت یعنی رتهبان باز گفتگو با والی بکهها و دیدن رام
بهردواج رکهه را و افسر موده او بر چترکوت کوه اقامت گزیدن و آنجا برگشته آمدن سومنتر
نام رتهبان راجه و بیهوش شدن راجه و شراپ خود را گفتن و رفتن بعالم بقا و رسیدن
بهرت و آمدن برای رفع رنجیدگی رام و در راه بمکان بهردواج شب باش کردن و دیدن
رام را و کردن کریا و آب دادن والد و بسیار گفتن بهرت برای رفتن رام و گفتار جابال

ताड़का राक्षसी का वध करना, विश्वामित्र से अस्त्र विद्या का पाना और सिद्ध भवन में निवास करना, समस्त संसार की रक्षा करना, सहस्रबाहु राक्षस का वध करना, मरीक्ष को दूर फेंक देना, विश्वामित्र का गोत्र वर्णन करना, और गंगा के उत्पन्न होने का वर्णन, और उमा देवी का गर्भ गिरना, स्वामिकार्तिकेय का जन्म होना, राजा के विशाल वंश का वर्णन करना, अबला का अभिशाप से मुक्ति पाना और मिथिला नगरी को देखना। राजा मैथिल के यज्ञ का स्थान और शतानन्द पुरोहित का विश्वामित्र से समस्त वृतान्त कहना। धनुष का टूटना, सीता के विवाह का आरंभ, दशरथ का युद्ध गृह में आना, सीता, उर्मिला, माण्डवी और श्रुतकीर्ति का विवाह क्रमशः रामचन्द्र, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न के साथ होना और रामचन्द्र का परशुराम से भेंट करना उसके पश्चात् अयोध्या में प्रवेश करना इतना प्रथम भाग में वर्णन किया गया था। ६४ फसलें जिनके दो हजार आठ सौ पन्द्रह श्लोक का वर्णन किया गया और यह सब रामचन्द्र के बाल्यकाल के वर्णन में बीत चुका है। उसके पश्चात् दूसरा भाग जो अयोध्या के नाम से लिखित है वहाँ रामचन्द्र जी को राज्य देने और राजकुमार बनाने, कैकेयी के मना करने, दशरथ के दुखी होने, रामचन्द्र के साथ लक्ष्मण के जंगल जाने तथा प्रजा और नगरवासियों के दुखी होने का वर्णन है। निषादराज का राजा के साथ वार्तालाप सूत अर्थात् रथवान के मुकर जाने, निषादों के राजा के साथ पुनः वार्तालाप, राम के भरद्वाज की रक्षा के लिए दौड़ने और उनके कहने से चित्रकूट पर्वत पर निवास करने का वर्णन है। यहाँ राजा के प्रति रथवान से सौमित्र का क्रोधित होना, रथवान का आना, राजा का मूर्छित होना और शाप देना तथा संसार से विदा हो जाना। भरत का पहुँचना, राम का शोक कम करने के लिए उनसे मिलने जाना, मार्ग में भरद्वाज के आश्रम में रात्रि बिताना, राम से भेंट करना, पिता की क्रिया करना, जल देना और राम को चलने के लिए भरत का आग्रह करना,

وبام دینو وگفتن نسب اِچّهواکو وقبول نکردن رام ونعلین چوبین خود به بهرت دادن

ورخصت کردن ودر نندگرام بودن بهرت ووالمن ما را باشتر کهن باخود فرستادن

نام موضع در صحرا الوت کرده از جو د بیابت

اینقدر دوم است اجودها کاند نام وهشتاد که آنرا سه هزار ونهصد کرده وبازافزود

ودویست وهشتاد شلوک دیگر بعد ازین آرن کاند نام است آنجا رفتن رام بدندک

بمعنی دشت — نام جنگل

بن وداون انسویا انگراگ بسیتا ودیدن براده راچهس وکشتن رام اورا ودیدن

نام زوجه اتری — مالیدن زعفران وغیره

رکهان راو تنگو گفتاری سیتا وبمکان شربهنگ رفتن ودیدن مهیندر آنجا وبمکان

ایضا نام — نام مهمن

سوتچهن رفتن وگفتگو باسیتا وحقایق منده کرن وگفتگو ایلو بدول واقامت بمکان اگست

ودیدن پنج تتی ودیدن جتایو گده وبودن آنجا وبیان هنگام سرما ویاد کردن

نام مکانی که آنجا پنج درخت بر بوده

رامچندر بهرت وانگلیکی شکوه وگفتگو باسورپنکها همشیره راون وگوش وبینی بریدن

بمعنی انگشت — جمعی ناخن یعنی ناخن او بمچو غله افشان بوده — نام راچهس

وکشتن کهر ودوکهن وتر شرارا ورفتن سورپنکها بلنکا وتحریص راون برای سیتا و

نام راچهس — نام راچهس که درا سه بوده

رفتن راون بمکان ماریچ وکشتن او بصورت آهو وآمدن بمکان رام وتحریص

سیتا بر او ورفتن رامچندر بعقب او وکشتن او وبعد از آن رفتن لچهمن وگرفته بردن

راون سیتا را وبرای سیتا جنگ جتایو وکشتن راون اورا وگفتگو رام بالچهمن واز

رفتن سیتا غم رامچندر ودیدن جتایو وکریا کردن آخرت او وکشتن کبنده راو رفتن

نام راچهس

او بسرگ وازگفته او برای ملاقات سکریو سردار بوزنه ها رفتن ودر راه دیدن شبری را

जयपाल और बामदेव की वार्ता, इक्ष्वाकु के वंश का गौरव बताना, राम का भरत का आग्रह स्वीकार न करना और अपनी खड़ाऊ भरत को देना एवं विदा करना। नन्दिग्राम में भरत का रहना और माताओं को शत्रुघ्न के साथ अयोध्या भेजना, यह दूसरा काण्ड अयोध्याकाण्ड नामक है। इसके बाद अरण्यकाण्ड अर्थात् जंगलकाण्ड है, वहाँ राम का दण्डक वन में जाना और अनसूया द्वारा अंगराग सीता को देना, विराध राक्षस को देखना, राम द्वारा उसका वध करना, ऋषियों को देखना, सीता का मोहक वार्तालाप, शरभंग के आश्रम में जाना और वहाँ महेन्द्र को देखना। सुतीक्ष्ण के घर जाना और सीता के साथ वार्तालाप, माण्डकर्णि की सत्यता और एकवन के ददल के साथ वार्ता, अगस्त्य के आश्रम में निवास, पंचवटी और जटायु गिद्ध को देखना, वहाँ रहना और शरद ऋतु का वर्णन, रामचन्द्र का भरत और कैकेई को याद करना, रावण की बहन सूपनखा के साथ वार्ता और शिकायत तथा उसके नाक, कान काटना, खरदूषण और त्रिशिरा का वध करना, सूपनखा का लंका जाना और रावण को सीताहरण के लिए उकसाना, मारीच के स्थान पर जाना, मांरीच का हिरन के रूप में राम की पर्णकुटी में आना और सीता को लालच दिलाना, रामचन्द्र का उसके पीछे जाना और उसका वध करना। उसके पश्चात् लक्ष्मण का जाना और रावण द्वारा सीता को बन्दी बनाकर ले जाना, सीता के लिए जटायु का युद्ध करना और रावण का उसे मारना, राम की लक्ष्मण के साथ वार्ता और सीता के जाने से राम का दुखी होना, जटायु को देखना और उसका अन्तिम क्रियाकर्म करना, कबन्ध राक्षस को मारना और उसका स्वर्ग में जाना, उसके कहने से वानरों के सरदार सुग्रीव से भेंट के लिए जाना, मार्ग में शबरी को देखना

ودر کنار پنپا غم کردن انیقدر ارنک کانداست یکصد و چهار و ده سرگ که آن را
نام تالاب
چهار هزار صد و پنجاه سلوک نموده بعد ازین چهارم کشکندها کاند نام است و بکوه رکهه موک
نام کوه
رسیدن رامچندر و دیدن هنومان ایشان را و دوستی شدن با رام و سکریو و گفتن زور بالی
و سوراخ کردن هفت درخت تال وغیره را و جنگ بالی و سکریو و کشتن رام بالی را و غریبی
یعنی تاڑ
نام راجه بوزنه ها
و ماتم تارا اهلیه او و راج یعنی سلطنت دادن بسکریو و گریه رام و تسلی نمودن لچهمن و بیان
بالی
هنگام برسکال ها و بیان شرط و غصه کردن رام بر سکریو و فرستادن لچهمن نزد او و تسلی نمودن
بمعنی برسات
سکریو لچهمن را و آمدن سکریو نزد رامچندر و خوشوقت کردن رام و طلب داشتن بوزنه ها را
و بیان اراضی و ملک ها و فرستادن بوزنه ها را هر طرف و فرستادن هنومان وغیره
زمین ها
با خاتم دست رام بسمت دکهن و عبور ایشان از کوه بندهاچل و در غار سوین پربها
در آمدن و از آنجا یافتن خبر سیتا پریشان شدن هنومان وغیره و دیدن سنپاتی راجه
کده را و خبر دادن او سیتا را در لنکا نگری انیقدر چهارم کشکندها کانداست شصت
و چهار سرگ که آن دو هزار و نهصد و بست و پنج شلوک بوده بعد ازین پنجم سندر
کانداست و زغند زدن هنومان بآنطرف دریای شور و در اثنای راه و دیدن میناو
نام کوه
و دیدن مهیب ناک کوه و کشتن سنگهکا والده راهو را و رفتن او اندر لنکا و بیان لنکا و جستن
راچهسی که سایه هر که در آسمان پرد چون آن سایه را بگیرد آن طایر بر زمین افتد
سیتا را در خانهٔ راون و دیدن پشپک بمان و عورات راچهسان و دیدن سیتا
نام سریر راون

ویکرم

और पम्पा तालाब के तट पर दुख मनाना इस सीमा तक अरण्यकाण्ड है। एक सौ चौदह सर्ग के जिसके चार लाख पचास श्लोक बनते हैं उसके पश्चात चौथा किष्किन्धाकाण्ड है। ऋष्यमूक पर्वत पर रामचन्द्र का पहुँचना और हनुमान का उनको देखना, राम और सुग्रीव से मित्रता होना और कहना कि सात वृक्षों में छिद्र करना, बालि और सुग्रीव का युद्ध, राम द्वारा बालि का वध करना और उसकी पत्नी का शोक व विलाप करना, सुग्रीव को राज्य देना, राम का रोना और लक्ष्मण का सांत्वना देना, वर्षा का वर्णन, शरद् का वर्णन, राम का सुग्रीव पर क्रोध करना और लक्ष्मण का उसके पास जाना, सुग्रीव का लक्ष्मण को सांत्वना देना, हनुमान को राम के द्वारा हाथ की अँगूठी देकर दक्षिण की ओर भेजना, उनका विंध्याचल के पर्वतों से आगे जाना और स्वयंप्रभा की गुफा में प्रविष्ट होना, हनुमान आदि का सीता का समाचार न मिलने से चिन्तित होना, गृध्रराज सम्पाती के द्वारा लंका नगरी में सीता के होने का समाचार देना, इस सीमा तक चतुर्थ किष्किन्धाकाण्ड है। चौसठ सर्ग जिसके दो हजार नौ सौ पच्चीस श्लोक होते हैं। उसके पश्चात् पांचवाँ काण्ड सुन्दरकाण्ड है। सीता को खोजना, उड़नखटोला (पुष्पक विमान),राक्षस की स्त्रियों को देखना और सीता को देखना,

وتحریص راون بسیتا ونکوهیدن سیتا وخوف دادن راچهسنی ها ودیدن سیتا هنومان
را ودادن چورامن از سرخود واستیصال باغات ودهشت خوردن راچهسان وکشتن
نام زیور سر
نوکران راون وکشتن پسران وزیر راون راوکشتن سردار لشکر فرستاده راون را وکشتن
اچهه را وجنگ هنومان ومیگهناد وبستن او هنومان را به برهم استر وظاهر کردن که ایلچی
نام پسر راون نام پسر راون [illegible] منتر که [illegible]
رام است وآتش دادن راچهسان دم هنومان را وسوختن او تمام لنکا را وباز رفته
دیدن سیتا را وآمدن اینطرف دریای شور ودیدن جامبونت وغیره خرس وبوزنه ها را و
نام سردار قوم خرس
استیصال مدهبن وخوردن شیرینی آنجا وآمده انگد وهنومان وغیره رامچندر را دیدن
نام صحرا که از درختان او آب گرمی برآید شهد دارست یعنی اول
دیدن وتفصیل دیدن سیتا ودادن چورامن وبیان لنکا وغیره ماجرا به سگریو ودیگر
نام راجه بوزنه ها
بوزنه های گران لشکر رفتن رام ولچهمن بسمت دکهن وکنار سمندر نشستن اینقدر سندر
کانداست پهسل وچهار سرگ وسه که آنرا دوهزار وچهل وپنج اشلوکست بعد ازین
ششم جوده کانداست درینجا مشورت رام برفتن لنکا است وآمدن رام را شنیده
مشورت کردن راون است وبرای صلح گفتن بهبهیکهن برادر خورد راون راکه سیتا
نام برادر راون از جانب پدر
رابده وتمام شهر لنکا رانگهدار وغصه کردن راون ولگد زدن بهبهیکهن برادر راون را
گذاشته با چهار وزیر گدا در دست گرفته آمدن نزد رامچندر ودر همان زمان ابهشیک یعنی
نام هتیار
راج لنکا کردن رامچندر او را وقصد رام برای عبور سمندر وغصه کردن رام ودیدن سمندر بصورت

रावण का सीता को लालच देना और सीता का चिन्तित होना, राक्षस स्त्रियों द्वारा सीता को भयभीत करना, सीता का हनुमान को देखना और चूड़ामणि का अपने सर से उतार कर देना, रावण के सेवकों का वध करना, रावण के मंत्री और पुत्रों का वध करना, रावण की भेजी सैन्य टुकड़ी के सेनापति का वध करना, अक्ष का वध करना और हनुमान और इन्द्रजीत (मेघनाद) का युद्ध और उसके द्वारा हनुमान को ब्रह्मास्त्र से बाँधना और प्रकट करना कि यह राम का दूत है, राक्षसों का हनुमान की पूँछ में आग लगाना और उनके द्वारा समस्त लंका को जला डालना, वापस जाकर सीता को देखना और समुद्र के उस पार आना, जाम्बवान् आदि मूक बधिरों की तरह विवश वानरों को देखना, वानरों का मधुबन को जाना और वहाँ का मधु पी जाना, हनुमान आदि का रामचन्द्र को देखना, सीता को देखने का विस्तृत वर्णन और चूड़ामणि तथा लंका जाने की कथा, सुग्रीव और दूसरे वानरों के साथ भारी सेना सहित राम और लक्ष्मण का दक्षिण की ओर जाना और समुद्र के किनारे बैठना इतना सुन्दरकाण्ड है। ४४ सर्ग जिसमें दो हजार पैंतालीस श्लोक हैं। उसके बाद छठा युद्धकाण्ड है यहाॅ राम का परामर्श लंका जाने का है और राम के आगमन का समाचार सुनकर रावण के परामर्श करने का वर्णन है। रावण से उसके अनुज भ्राता विभीषण का सन्धि के लिए कहना कि सीता को दे दो और समस्त लंका को बचा लो। रावण का क्रोध करना और रावण के द्वारा अनुज भ्राता को पदाघात करना। रावण को छोड़कर उसका चार मंत्रियों तथा गदा हाथ में लेकर रामचन्द्र के पास आना और इसी समय राम द्वारा लंका का शासन उसको देने, राम का समुद्र पार करने का विचार एवं उनका क्रोध करना और समुद्र को मनुष्य के रूप में देखना।

آدمی و آن گفتهٔ سمندر نل نام بوزینه پل بستن بر سمندر و عبور رامچندر از سمندر و دیدن

فصیل قلعه پایین لنکا و جاسوسان راون که شوک و سارن نام داشتند آمده دیدن لشکر رام

را و مشورت راون و بطریق مایا که صورت دروغ بن سر رام را بریدن و گفتگو سرما

راچهسی با سیتا و گفتار مالوت و حراست لنکا و مشورت رام بتعیین بوزنه ها و انحصار

نام راچهسی فرتوت

فصیل لنکا و در آمدن گرد لنکا و آغاز جنگ و دوند جوده یعنی دو دو شخص با هم جنگ

کردن و سوپتگن و جلک کوپ را کشتن و شبخون کردن راون و بستن رام و غیره را

شکستن خفته — مقام پرستش خراب کردن

باستر ها یعنی به تیر ها و دیدن سوپرن یعنی گرڑ را و خلاصی از بستن و کشتن دهومراچهه

یعنی تیر — نام جانور خورنده مار — نام راچهس

و اکنپن و پرهست را و شکست خوردن راون و طرح درک و بیدار نمودن کونبهه کرن و دیدن

نام راچهس — نام راچهس — انداختن دیوار حصار — نام برادر راون

کونبهه کرن را و گفت و پرسید راون و بر آمدن کونبهه کرن و خوف بوزنه ها و گرفتن سگریو

را و خلاص شدن او و کشتن رامچندر کونبهه کرن را و کشتن نرانتک و دیوانتک و مهودر

نام

و ترشره و مهاپارش و آت پارش و آمدن میگهناد یعنی اندرجیت و بیهوش کردن

رام را با لشکر او و آوردن هنومان اوکهد یعنی دوا و مشعل گرفته جنگ کردن و کشتن کونبهه نکونبهه

یعنی دوا

و کشتن مکراچهه و بر آمدن راون بار دیگر و سیتا را بمایا بصورت دروغ کشتن و کشتن

لچهمن میگهناد را و غصه راون و بر آمدن راون و کشته شدن روپاچهه و کشته شدن

مناس و اتماس و گفتار رامچندر و نکوهیدن راون و رامچندر و راون با یکدیگر استر جنگ کردن

समुद्र के कहने से नल नामक वानर का समुद्र पर पुल बांधना और राम का समुन्द्र को पार करना। लंका के बाएँ किले की दीवार का देखना और रावण के जासूस शुक और सारण का आकर राम की सेना को देखना और रावण का परामर्श करना। छल से राम का शीर्ष काटने की योजना बनाना और सरमा राक्षसी की सीता के साथ वार्ता, माल्यवान की वार्ता, और लंका की रक्षा, राम का वानरों को नियुक्त करने और लंका की रक्षा दीवार का घेराव करने के संबंध में परामर्श, लंका में चारों ओर से प्रवेश करना और युद्ध का आरंभ होना, द्वन्द्वयुद्ध करना, सुप्तघन और यज्ञकोप की हत्या और रावण का रात्रि में आक्रमण, राम आदि को बाणों से बाँधना और विनितानंदन अर्थात् गरुड़ का दौड़ना और बन्धन से मुक्ति दिलाना, धूम्राक्ष अकम्पन और प्रहस्त का वध करना और रावण का पराजित होना। दीवारों का गिरना और कुम्भकर्ण को जगाना, कुम्भकर्ण को देखना और रावण से वार्ता एवं हालचाल पूछना, कुम्भकर्ण का निकलना और वानरों का भयभीत होना, सुग्रीव को बन्दी बनाना और उनका मुक्त होना, रामचन्द्र का कुम्भकर्ण का वध करना, नरान्तक, देवान्तक, महोदर त्रिशिरा, महापार्श्व और अतिकाय का वध करना, मेघनाद अर्थात् इन्द्रजीत का आगमन और राम को उनकी सेना सहित मूर्छित करना, हनुमान का औषधि लाना और मशाल लेकर युद्ध करना, कुंभ तथा मकराक्ष का वध करना, रावण का पुनः निकलना और सीता को माया के द्वारा दिखावे के लिए वध करना, लक्ष्मण के द्वारा मेघनाद का वध करना, रावण का क्रोध, रावण का निकलना और विरूपाक्ष का मारा जाना, महोदर और महापार्श्व का मारा जाना, रामचन्द्र की वार्ता और रावण की कठिनाइयों तथा रामचन्द्र और रावण का आपस में अस्त्र युद्ध करना,

و کشته شدن لچهمن و غم کردن و دوا سنجیونی آوردن هنومان و باز برخاستن
مراد از بیهوشی
لچهمن و دادن اندر رتهه را با ماتلی سارتهی و او گفتار اندر را گفتن و جنگ راون و شکست
نام رتهه بان
خوردن او و دادن سارتهی خود را نکوهیدن و جنگ دیوتا و دانوان بر آسمان و تا هفت روز
یعنی هر دو شخص‌ها هم جنگ کننده
دو رتهه جوده و کشته گردیدن راون شهور سه لوک اینقدر ششم کاند است مشتمل بر
یکصد و سی و یک سرگ که آنرا چهار هزار و پانصد شلوک است بعد ابهودی نام اوتر کاند میگوید
یعنی خوشی و ترقی راج
انجا ماتم عورات راون میگوید و راج دادن بهبهیکهن و کریا آخرت راون و رفتن هنومان
و دیدن سیتا را و آمدن سیتا نزد رامچندر و نکوهیدن سیتا را رامچندر و گذاشتن
اورا و رفتن او در آتش و نسوختن از تعجبات و آمدن برهما و غیره دیوتاها و دیدن مهادیو را
و دیدن پدر خود که دسرتهه باشد و از برهما و اندر بوزنه های مرده باز زنده گشتن و گرفتن
جوابرها از بهبیکهن و بر پشپک بمان سوار شده آمدن و رفتن بوزنه ها و راچهسان بمکان
خودها و بمکان بهردواج رسیدن و دیدن رکهه را و به نندگرام رسیدن و گوروها
یعنی استادان را دیدن و در اجودها آمده برت را تمام کردن و راج کردن رامچندر
و عیش و خوشی تمام شهر و جوراج دادن بهرت را و آمدن منیشران و بیان پیدا شدن
راچهسان و بیان بجی هر سه لوک و گفتار ابلا و گذاشتن سیتا را لچهمن و رفتن سیتا
بمکان بالمیک و پیدا شدن کوشی و لو برای افزودن نسب اچهواکو و کشتن شترگهن

और लक्ष्मण का बेहोश होना, हनुमान का दुखी होना और संजीवनी औषधि का लाना। लक्ष्मण का उठना और रथ मातलि सारथी को देना तथा उससे वार्ता करना, रावण का युद्ध और उसका पराजित होना, उसका अपने सारथी को कोसना और आसमान में देवता-दानवों का युद्ध, सात दिन तक आपस में युद्ध और रावण का मारा जाना। लोगों में इतना ही प्रसिद्ध है। छठा काण्ड है जो एक सौ-अट्ठाईस सर्ग पर आधारित है जिसमें चार हजार पाँच सौ श्लोक हैं। अभ्युदय के बाद उत्तरकाण्ड है। वहाँ रावण की रानियों का शोक और विभीषण को राज देना, रावण का अन्तिम संस्कार होना, हनुमान का जाना और सीता को देखना, सीता का रामचन्द्र के पास आना और सीता को रामचन्द्र का बुरा-भला कहना और उनको छोड़ना, उनका अग्नि में समाहित होना और न जलना चमत्कारों में से है। ब्रह्मा आदि देवताओं का आना और महादेव को देखना, अपने पिता दशरथ को देखना, ब्रह्मा और इन्द्र के द्वारा मृत बन्दरों का जीवित होना, विभीषण से जवाहरात का लेना, पुष्पक विमान पर सवार होकर आना, बन्दरों और राक्षसों का अपने अपने स्थान पर जाना, भरद्वाज के स्थान पहुंचना और ऋषि को देखना और बन्दकराम पर पहुँचना और गुरूओं अर्थात् अपने शिक्षकों को देखना और अयोध्या में आकर अपना व्रत पूरा करना और रामचन्द्र का शासन करना, पूरे नगर का खुशियाँ मनाना, भरत का राजपाट देना, राक्षसों के जन्म लेने का वर्णन, तीनों लोकों का वर्णन उर्मिला की वार्ता और लक्ष्मण का सीता को छोड़ना, सीता का वाल्मीकि के आश्रम में जाना, और वंश को बढ़ाने के लिये कुश और लवं का जन्म होना,

لون را و کشتن شنبوک را و آمدن پیش اکست و یافتن پارچه ها را و افسانه شوپت و آغاز
آشومیده و شنیدن کیت یعنی سرود و از این معلوم کردن کوشی و لو پسران خود و
آمدن سیتا و گفتار بالمیک و غم رامچندر و رفتن سیتا بر ساتل یعنی زیر هفتم زمین
و غصه رامچندر و آمدن کال و گذاشتن لچهمن را و بزرگی آشنایان و مردمان و بو
و مهاپرستهان و رفتن بسرگ انیقدر را و ترکاند هفتم میشود مشتمل بر نود سرگ که از اشلوک
شش هزار و نهصد و شصت بشود و این کلیه ششصد و بیست سرگ محتوی بیست
و چهار هزار اشلوک راماین ست دور کننده عذاب بالمیک کرده هر که در پی آن
خواهند خواند و شنید نیکو گفتار و پاک آمرزدم و بهن و جبس و نت و عمر دراز یابند
و خلف رشید شوند را یا این مجمل تهشام آغاز سرگ آغاز رامائن مفصل شنیده بود بیت کابهه
از نارد رکهه بالمیک اصل کرده دست بسته ایستاد و از قوت تب همه ماجرای را از
آغاز تولد رام خوش زمانیان و تحمل و راست کوی و آمدن رام متهلا و شکستن کمان
و گفتگوی رامچندر و پرسرام باهم و گوناگون گفتار با ستصواب بشوامتر و تیاری
رامچندر براج یعنی سلطنت و منع کردن کیکئی و بدر کردن رامچندر و غم کردن و بیهوش شدن
دسرتهه و افسوس رعایا و گفتگوی نکهاد و عبور از گنگا و دیدن بهردواج و از گفته بهردواج
برچترکوت اقامت کردن و آمدن بهرت برای بردن رامچندر و کریا آخرت دسرتهه
بود او معروف

शत्रुघ्न का लवणासुर की हत्या करना, राम के द्वारा शम्बूक की हत्या, राम का अगस्त्य मुनि के पास आना, कपड़ों का पाना, लवकुश द्वारा रामायण का गान तथा राम का उसे सुनना और वही अपने पुत्रों लव और कुश के विषय में मालूम करना, सीता का आना, वाल्मीकि की वार्ता, रामचन्द्र का दुखित होना और सीता का पृथ्वी के अन्दर प्रवेश, और रामचन्द्र का क्रोध करना, राम के यहाँ काल का आना, लक्ष्मण का सशरीर स्वर्ग जाना, (राम का) जानने वालों, पुरुषों, बन्दरों और जिनों को वरीयता और बसरक (परम धाम) का जाना। यहाँ तक छठा उत्तरकाण्ड है जो ९० सर्ग पर आधारित है जिसमें ३९६० श्लोक हैं और यह सब ६२० सर्ग रामायण के २४ हजार श्लोक पर आधारित है। यह वाल्मीकि का रामायण काव्य पाप दूर करने वाला है, जो लोग प्रेम पूर्वक पढ़ेंगे और सुनेंगे मृदुभाषा एवं पवित्रता के साथ वह लोग धन-दौलत और लम्बी आयु पायेंगे और पापरहित होंगे। संक्षिप्त रामायण समाप्त हुई। सर्ग का आरंभ, विस्तृत रामायण का आरंभ।

रामचन्द्र के शासन की व्यवस्था करना, कैकेयी का मना करना और रामचन्द्र को बाहर करना और दुखी होना, दशरथ का बेहोश होना और प्रजा का दुख प्रकट करना, निषाद की वार्ता और गंगा से पार होना और भरद्वाज का देखना और भरद्वाज के कहने से चित्रकूट पर निवास करना, भरत का रामचन्द्र को ले जाने के लिये आना, दशरथ का अन्तिम समय आना,

نام جنگل
ونعلین رام بردن به نند گرام رفتن شستن ورفتن رام بدندکارن وملاقات

با سوتیچهن وازانسویا انک را اک یافتن وبمکان شر بهنک اندر را دیدن وبمکان اگست

نام رکهه
آمدن و دیدن براده را واقامت بپنج تی وخنده برسنورپ نکها وگوش وبینی اوبریدن

نام مقام
نام ررچهس
وکشتن کهر و ترشرا وگفتن برادن وکشته شدن ماریج وبردن سیتا را وکشتن جتایو

نام رچهس
نام ررچهس
وگریه رام وگرفتن کبندهٔ رام ولچهمن را وکشتن ایشان کبنده را و دیدن شبری را و پنپا اور که

نام بهیل
نام تالاب
هوکهه رفته باسکریو ملاقات کردن و دوستی نمودن بایکدگر وجنگ بالی وسکریو

وکشتن بالی را وراج دادن بسکریو وافسوس تارا و درشب برسکال غصه رام بسکریو وفرستادن

نام شخص ومینه بوزینه بهتر گردن
بوزنه ها باطراف ومیان زمین وشب رفتن درلنکا وفکر کردن هنومان و درآیان بهوم

جای محفل
رفته دیدن اوردوده را و دراشوک بنکا دیدن سیتا را ودیدن راچهی را وزاون را

بسیار صورتانی
نام درختی باغ
وگفتگوی سیتا وداون نشانی ودادن من واستیصال اشجار وگریختن راچهی ها

وغلامان وکشتن پسران وزیر را وکشتن سیناپت را وکشتن اچهه را وبرآمدن اندرجیت

بخشه فوجهه را گویند
پسر راون
وگرفتار شدن هنومان وسوختن لنکا را وباز آمدن وخوردن مدهوبن وداد دادن برام

ورفتن بردریا شور وبستن نل پل را وعبور ازسمندر وانحصار لنکا وازاستصواب

بهبهیکهن طرح کشتن یاد کردن وکشتن کنبهکرن را وکشتن مینکنادرا وکشتن راون را

وبافتن سیتا وراج دادن ببهبهیکهن را وبرپشپک بمان سوار شدن وباجودهیا رسیده

और राम की खड़ाऊ ले जाना और नन्दिग्राम जाकर बैठना, राम का दण्डकारण्य जाना और सुतीक्ष्ण से भेंट करना, अनुसूया द्वारा वस्त्राभूषण पाना, शरभंग के आश्रम के अन्दर देखना, अगस्त मुनि के आश्रम में आना और विराध को देखना, पंचवटी में निवास करना, सूपनखा का हँसना और उसकी नाक और कान का काटा जाना, खर और त्रिशिरा का मारा जाना, और (सूपनखा का) रावण से कहना, मारीच का वध किया जाना, सीता को ले जाना, जटायु का वध करना, राम का विलाप करना, राम और लक्ष्मण को कबन्ध का पकड़ना और उन लोगों द्वारा उसका वध करना, शबरी और पम्पा (सरोवर) को देखना, ऋष्यमूक जाकर सुग्रीव से भेंट करना और एक दूसरे से मित्रता करना, बालि और सुग्रीव का युद्ध, (राम के द्वारा) बालि का वध तथा सुग्रीव को राज्य देना, तारा का दुख और बरसात की रात में सुग्रीव पर राम का क्रोध, पृथ्वी पर चारों ओर वानरों को भेजना, रात में लंका जाना और हनुमान का चिंता करना और अपान भूमि जाकर बहुत सी स्त्रियों को देखना, सीता को देखना, राक्षसी और रावण को देखना, सीता की वार्ता, निशानी देना, मनका देना और वृक्षों को उखाड़ना, राक्षसियों और दासों का भागना, मन्त्री के पुत्रों का वध करना, सेनापति का वध करना और अक्ष का वध करना, इन्द्रजीत का प्रकट होना और हनुमान का बन्दी होना, लंका को जलाना और वापस लौटकर मधुवन जाना और मनका राम को देना,राम का सिन्धु पर जाकर पुल बाँधना और समुद्र पार करके लंका का घेराव करना परामर्श से मारने की विधि जानना, कुंभकरन को मारना, मेघनाद को मारना और रावण का वध करना, सीता को पाना और पुष्पक विमान पर सवार होना,

بابهرت ملاقی شدن و راج رامچندر و بوزنه ها و خرس ها را بمکان خود ها فرستادن
و کذاشتن سیتا را و آنچه از رام برروی زمین بوقوع آمد یافتن راج رام و آمدن
رکهیشران و فرستادن شترکهن و در بیابان زائیدن سیتا و کشتن لون و آمدن آن
کال و کذاشتن لچهمن و پسران را راج داده رفتن رام بسرگ آینهمه را بالمیک دانسته
حقیقت ماضی و مستقبل و حال روشن دیده چنانچه در دست خوب خطوط اینهمه را بتفصیل
بیان نمود با دهرم ارتهه و شنیدن و خواندن پاک و کتاب سمد خوب نمود تا زمانی
در اقدام بالمیک شاگردان بالمیک کوشی و لو نام پسران سیتا اهلیه رام افتادند و او
سر آنها را بر داشته ایشان که هر دو دست بسته ایستادند بالمیک گفت این آرکهه را اما
نام کتاب من کرده ام مشتمل بر کشتن راون با پاته تهی گنی شیرین با پرمانان سته مشمول آن اشتری
و کبیت شیرین و هفت سُر مشمول و با هفت ذات سر و ترو سرت شرنکار و غیره اینقدر
گفته تمام کتاب معلوم کردانید بعد از ان گفت شما سرائید این را در مجلس رکهیشران و در مجلس
راج رکهان و در مجمع راستان آرام بالمیک آن هر دو کودکان دیو مانندان
که شیرین زبانی جبلی ایشانست و نظر رامچندر گویا از عکس رام عکسی پیدا شده
و دانندهٔ بید و انگ بید و شاشتر سرائیدند بر ایشان برهما مهربان شد و اندر مهربان شد
و گندهرب و جانوران و ماران وقتی آن هر دو در مجلس رکهان راماین را میسرائیدند

از شنیدن

अयोध्या पहुँचकर भरत से भेंट करना और रामचन्द्र का राज्य करना। वानरों और ऋृक्षों को घर भेजना, सीता को छोड़ना और जो कुछ राम की ओर से इस पृथ्वी पर घटित हुआ राम का राज्य पाना और शत्रुघ्न को भेजना, वन में सीता का बच्चों को जन्म देना और लवण का मारना, काल का आना और लक्ष्मण को छोड़ना, लड़कों को राज्य देकर राम का स्वर्ग जाना, स्वर्ग में इन सबको वाल्मीकि जानकर भूत, भविष्य, वर्तमान की सत्यता को देखा, अतः प्राप्त हुए इन सब प्रसंगों का धर्म, अर्थ की दृष्टि से विस्तार से वर्णन किया, पवित्र और काव्य- समुद्र को बहुत सुना और पढ़ा। यहां तक कि एक समय में वाल्मीकि की अगुवायी में वाल्मीकि के शिष्य कुश और लव राम की पत्नी सीता का नाम लेकर उसने उनको सर झुकाकर जो दोनों हाथ बाँधे खड़े थे, उनसे कहा आदि काव्य का नाम रामायण मैंने रखा है। रावण के वध का प्रमाण के साथ वर्णन है, इसमें मधुर गीत है और सात काण्ड हैं।

इतना कहकर समस्त काव्य बतला दिया उसके बाद कहा कि तुम राजाओं की सभाओं में गाना और राम भक्तों के समूह में पढ़ना। वाल्मीकि के कहने से देव की भाँति इन दोनों बच्चों ने जिनकी मधुर वाणी प्राकृतिक है और जो रामचन्द्र का प्रतीक हैं जैसे कि राम की छाया से पैदा हुए हैं जो वेदशास्त्र और वेदवाक के जानने वाले हैं, गाया। उन पर ब्रह्मा और इन्द्र दयालु हुए और इसी प्रकार से जीव-जन्तु उपस्थित हुए जबकि इन दोनों ने राजाओं के समूह में रामायण गाकर पढ़ी।

از شنیدنِ آن رکهان را خوشوقتی حاصل شد از مجلس آواز بر آمد که خوب خوب
از دوستی دلها با آن هر دو برادر کوشی و لو گفتند که بسرائید عجب کبت شیرین
سرائیدید با کرام چرِتر بهرت ماجرا گذشته را ظاهر نمودید بدین گونه میگفتند
باز بشیرین زبانی سرائیدند آنها از مهربانی کسی کلس یعنی سبوی برنجی داد و کسی ثمرهای
جنگل و کسی پوست درخت پوشیدن داد بدینگونه این کاب اول ستوده رکهان
کبشران و آدمیان را تخم بود و زندگی و گاهی سرائیده سرائیده نزد راج دهانی یعنی
وزیر و راجها سرائیدند ناگاه در آشومیده رامچندر آن هر دو کس را باعزاز تمام آورد
آنها بفرموده رام آن کاب را سرائیدند باخر اشومیده نزد رام و لچهمن و شترگهن و بهرت
سفید
و دیگر راجها و بحضور نشست و اتری و غیره برهم دانان سرائیدند و رامچندر بر مسند
نام رکهیه
نشسته ماجرای خود را بشنود با برادران و هزاران مردمان و آن هر دو برادر را
دیده رامچندر و لچهمن و دیگر مجلسیان گفت بشنوید گفتار مهرکهه دیو گفته با گوناگون
معانی و شیرین زبانی و این کودکان کوشی و لو این ماجرای من بدانید مهرکهه بالمیک
کرده بعد آن آنها بفرموده رام کاب میسرائیدند و همه دل را بآن داده میشنیدند
سرگ ۶ بیان شهر و آغاز آنها که تا سمدر زمین را گرفته در تصرف داشتند از مَن راجه گرفته
نام راجه
صواب کار و بلند شکوه بودند آنها که راجه سگر از بزرگان ایشان میشود که آن دریای

उसके सुनने से ऋषियों को प्रसन्नता हुई समूह से वाणी आयी कि अति सुन्दर अति सुन्दर, इन दोनों भाइयों के साथ दलों की मित्रता के कारण कुश और लव ने कहा गाओ आश्चर्यजनक मधुर गाते हो। तुमने बीती हुई घटनाओं को प्रकट किया इस प्रकार कहते जाते थे और मधुर वाणी से गाते जाते थे उनको प्रसन्न होकर किसी ने कलश अर्थात् ब्रजी मटका दिया किसी ने जंगली फल दिये और किसी ने पहनने के लिये पेड़ की छाल (वल्कल) दी। इस प्रकार प्रथम काव्य की प्रशंसा करते हुए और कभी गाते-गाते राजधानी के निकट अर्थात् मन्त्रियों और राजाओं के पास जाकर गाते थे और अचानक दुखी हो जाते थे, रामचन्द्र ने उनको पूरे सम्मानपूर्वक बुलाया, उन्होंने राम के अनुरोध पर वह काव्य गाया। अन्त में राम, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, भरत और दूसरे राजाओं के पास और वशिष्ठ मुनि, अत्रि आदि के सामने भी गाया। रामचन्द्र ने सफेद आसन पर बैठकर अपनी कथा अपने भाइयों और हजारों लोगों के साथ सुनी तथा इन दोनों भाइयों को देखकर रामचन्द्र ने लक्ष्मण व सभा के दूसरे सदस्यों से कहा कि सुनो महर्षि देव की कही हुई बात, बार-बार क्षमा और मधुर वाणी के साथ यह दोनों बच्चे कुश और लव मेरी कथा जानते हैं, महर्षि वाल्मीकि ने ही गाया है, उसके बाद वह लोग राम के कहने से काव्य गाते थे एवं सब लोग ध्यानमग्न होकर सुनते थे।

सर्ग-६

शहर का वर्णन और उसका आरंभ कि वह लोग पृथ्वी से लेकर समुद्र तक के राज्य को राजा अपने प्रयोग में रखते थे सज्जन और ऐश्वर्य वाले थे, राजा उनके पूर्वजों में से ही होता था। जिसने

شور کندیده ساگر نام کرده و شصت هزار پسر او عقب او میرفت این نسب اچهواکو
پسران ساگر بجز الکندیده
از انسو کثیرست آنرا از آغاز بشنوید گو مثل نام طاهر اراجه کلان بود بر کناره
خوبی
سرجو با حشم و دولت اقامت داشت آنجا اجودها نام شهریست مشهور که مَن نام راجه
آنرا بکمال دانائی بنا افکنده طول او بمقدار دوازده جوجن که آنرا سی و شش کروه باشد
و عرض سه جوجن که آنرا دوازده کروه باشد در آنجا اقسام عمارات نیکو و خوش آینده
کرده است دروازه های مطبوع و شاهراه منظور و دوکان داران اقسام
و جواهر آلات اقسام آراسته خانها کلان و قلعه و باغ و کیوار و بندروار استه
آنجا والی ملک راجه دسرتهه نام بود آن شهر را نگاه میداشت بر دروازه اقسام
توپ ها و انواع کاریگران و کلان دهوجاها و خانها و غرفها خوش باقسام زنان
نشان و علم
خوب شکل نمایان و سپاهیان زور آور چون دیوتاها گویا شهر
امراوتی اندرست و همیشه مردمان آنجا شاد و خرم و همیشه آواز برهم
مانند جنت
و خوب خورش و نوشش و دهوپ و مال و خوشبوی مشمول اینطور
از اولاد اچهواکو راجه دسرتهه داشت سرگ شهر اجودهیا

समुद्र को खोदकर उसका नाम सागर रखा और उसके पीछे साठ हजार पुत्र चलते थे। इक्ष्वाकु का यह परिवार सगर से उत्पन्न है उसको आरंभ से सुनो कि नाम की भांति वह वास्तव में भी बड़ा राजा था। सरयू नदी के किनारे बड़ी शान-शौकत व प्रसिद्धि के साथ रहता था, वहाँ अयोध्या नाम का शहर बहुत प्रसिद्ध है कि मनु नाम के राजा ने बड़ी बुद्धिमानी के साथ इस नगर की नींव रखी उसकी लम्बाई बारह योजन अर्थात् अड़तालीस कोस के लगभग और चौड़ाई तीन योजन जो बारह कोस होते हैं वहां पर विभिन्न प्रकार की भव्य भवनों की बहुतायत है। भव्य दरवाजे और अच्छी सड़के हैं दुकानदारों ने अपनी दुकानें कई प्रकार के सामानों और हीरे जवाहरात आदि से सुसज्जित कर रखी हैं, बड़े-बड़े घरों, किले, बाग, किवाड़ और दरवाजों को सजा रखा हैं, वहाँ दशरथ नाम का राजा था। वह नगर की सुरक्षा करता था दरवाजों पर विभिन्न प्रकार की तोपें, अनेक कारीगर बड़े-बड़े ज्ञानी, घर और अच्छे कमरे उनमें सुन्दर स्त्रियां और देव की तरह सिपाही मौजूद रहते हैं। जैसे कि नगर इन्द्र की अमरावती है वहां के लोग सदैव प्रसन्नचित्त रहते थे। वहाँ हर समय सोने-जागने और खाने-पीने की आवाजें आती रहती हैं, धन और सुगन्ध और लखलखा की भरमार है। इक्ष्वाकु राजा की सन्तानों में दशरथ का यह हाल था।

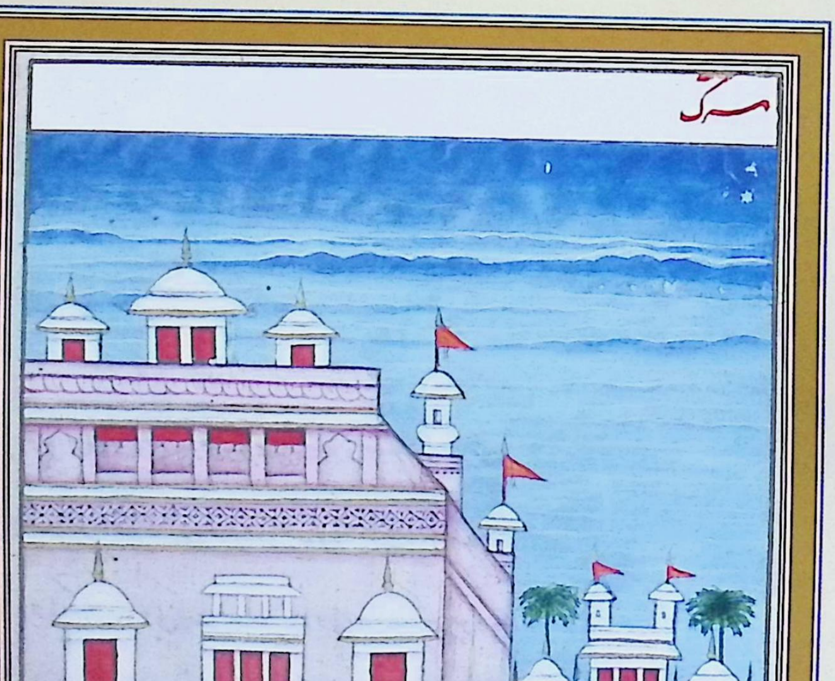
سرگ

27

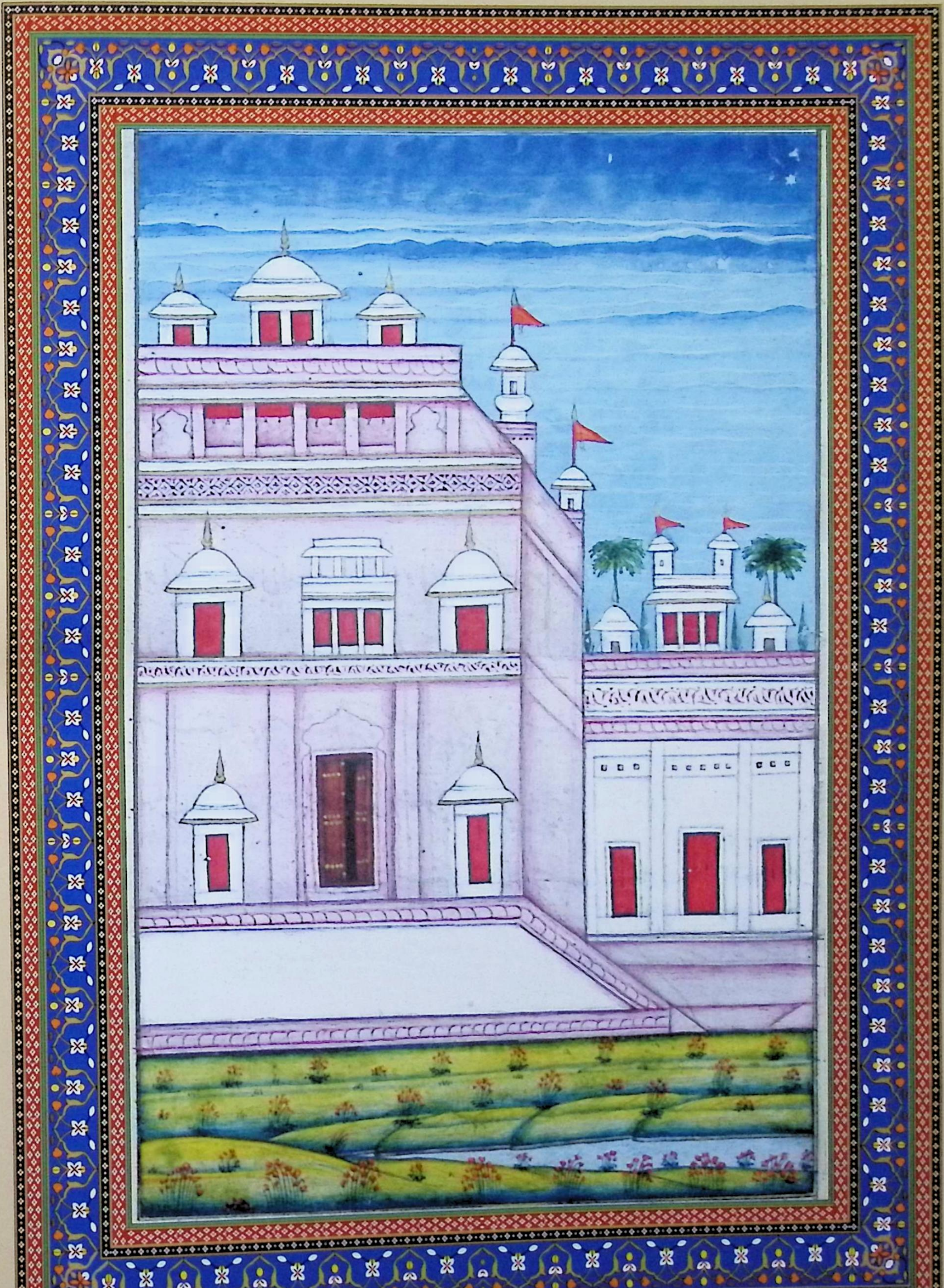

سرگ بیان قلعه در آن شهر دانندهٔ بید و انگ بید و کلان قد و بلند شکوه

و عزیز مردم و رعایا در نسب اچهواک آترتهه و جگ کننده اوتار مهر که در هر سه لوک مشهور

یعنی ستیزنده با هزاران

و قوت مند و کشندهٔ دشمن و مسخر کنندهٔ حواس خمسه مثل اندر و کبیر دارندهٔ رعیت راجه دشرتهه

نام راجه نام خزانچی

براستی حراست میکرد در آنجا هیچکس نبود که بسیار شاستر نمیدانست و دروغ گو کسی نبود

و بی قناعت کسی نبود و دغاباز نبود و ناشکر نبود و غیبت گو نبود و کسی نبود که کم از هزار

سال عمر یافته باشد و مردم با اهلیه خود صحبت داشتند و اهلیه ها بشوهر خود اخلاص داشتند

و بی کوندل و بی تلک و بی مالا و بی چندان کسی نبود و نه مفلس کسی بود و بی پیرایه طلا

کسی نبود و بی پیرایه دست کسی نبود و کم از هزار دهنده کسی نبود و همه کس بکار خود

اشتغال داشتند همه کس پیرهای خوب را پرستش میکرد همه عمر دراز بودند

چهتریان پیرو برهمنان بودند و بیشان پیرو چهتریان و شودره بندگی

یعنی بقال زیر قوم مثل کهاران و کماشتان

هر سه را بسیار میبردند نه برن سنکر بودند نه آچار سنکر میکردند و اسپان

مادر از قوم و پدر از قوم دیگر علم ها آموختن کیش خود در کسب دیگران دخل نکردن

کنبوج دیس و فیلان بنده پربت و آنجا که راجه دشرتهه میماند بمقدار

نام ملک

دو جوجن هشت کروه قلعه بهت نام مشهور بود

نام قلعه

قلعه اجودهیا

सर्ग-७

अयोध्या नगर

शहर सरक पुरी का वर्णन है। इसमें बुद्धि और ज्ञान वाले, वेदों के विद्वान्, लम्बे चौड़े शरीर वाले, ऊँचे, सज्जन एवं जनप्रिय, और प्रजापालक दशरथ इच्छाकु कुल के अतिरथी वीर थे, जिनकी तीनों लोक में प्रसिद्धि है। शासन की शक्ति के शत्रु को मारने वाले दूसरों पर विजय प्राप्त करने वाले, इन्द्र और कुबेर की भाँति, अपनी प्रजा की रक्षा करने वाले हैं। राजा दशरथ सत्यता का ध्यान रखते थे। वहाँ कोई ऐसा नहीं था जो समस्त शास्त्र न जानता हो, झूठा कोई नहीं था और लालची कोई नहीं था। धोखेबाज कोई नहीं था, रात में इधर-उधर भटकने वाला कोई नहीं था, कोई दूसरों की बुराई करने वाला न था, कोई ऐसा नहीं था जिसकी आयु एक हजार वर्ष से कम हो और लोग अपनी पत्नियों के साथ सम्पर्क रखते थे। बिना कुण्डल, बिना मुकुट, बिना माला, और बिना चन्दन कोई नहीं था, न कोई गरीब था, कोई भी नंगे पांव नहीं था, कोई बेरोजगार नहीं था और कोई हजार से कम दान देने वाला नहीं था। सब लोग अपने काम से काम रखते थे, सब लोग अच्छी बातों का आदर करते थे, सब लम्बी आयु वाले थे। क्षत्रिय ब्राह्मणों की कृपा चाहते थे, वैश्य, क्षत्रियों की आज्ञा का पालन करते थे तथा शूद्र उक्त तीनों वर्णों की सेवा में संलग्न रहते थे। न कोई दोगला था न कोई दूसरे के काम में हस्तक्षेप करता था। काम्बोज के घोड़े और विन्ध्य पर्वत के हाथी थे, जहाँ राजा दशरथ रहते थे। वहाँ दो-योजन आठ कोस के बराबर एक सतनामी किला प्रसिद्ध था।

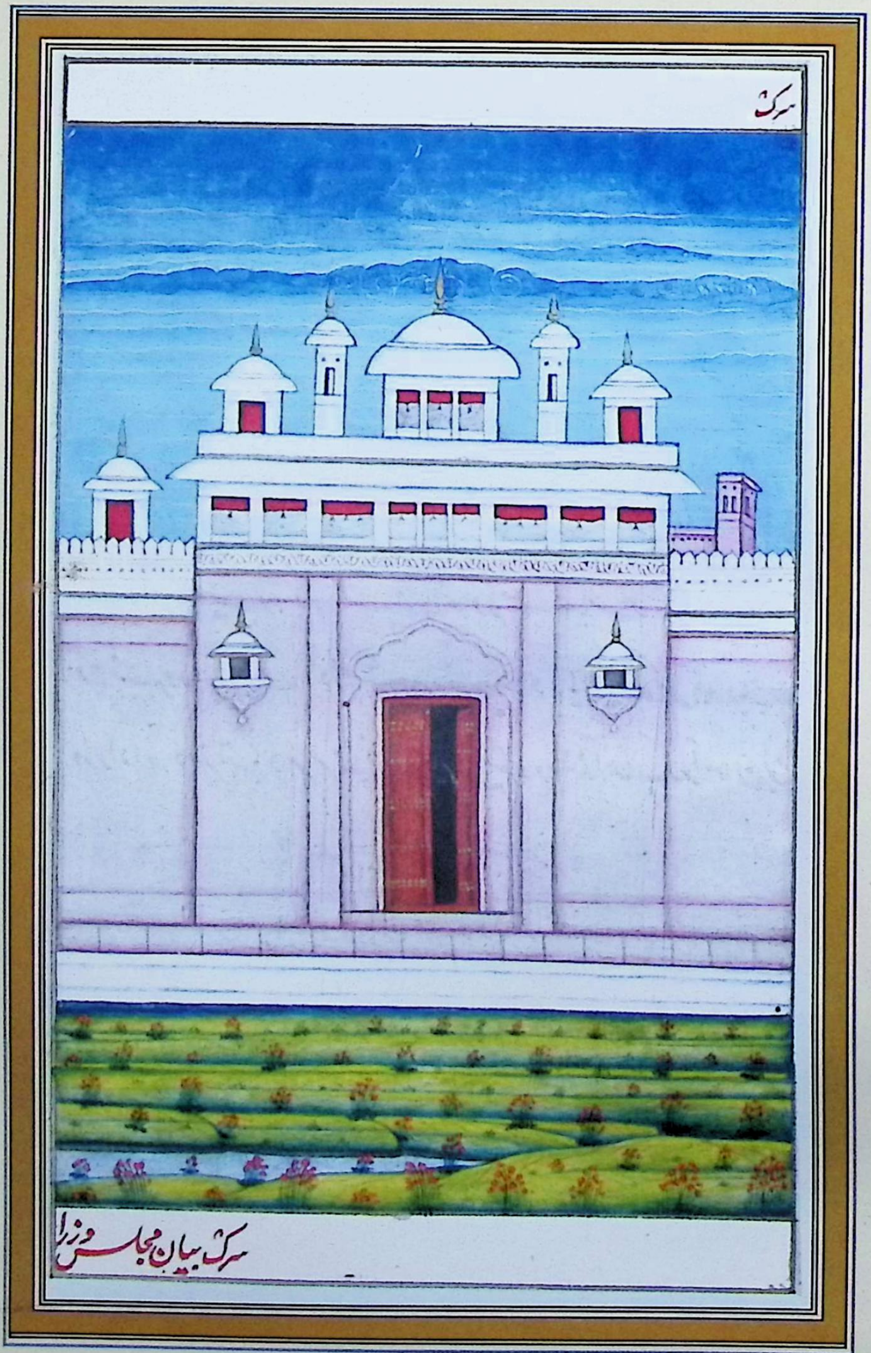
سرک
سرک بیان مجلس وزرا

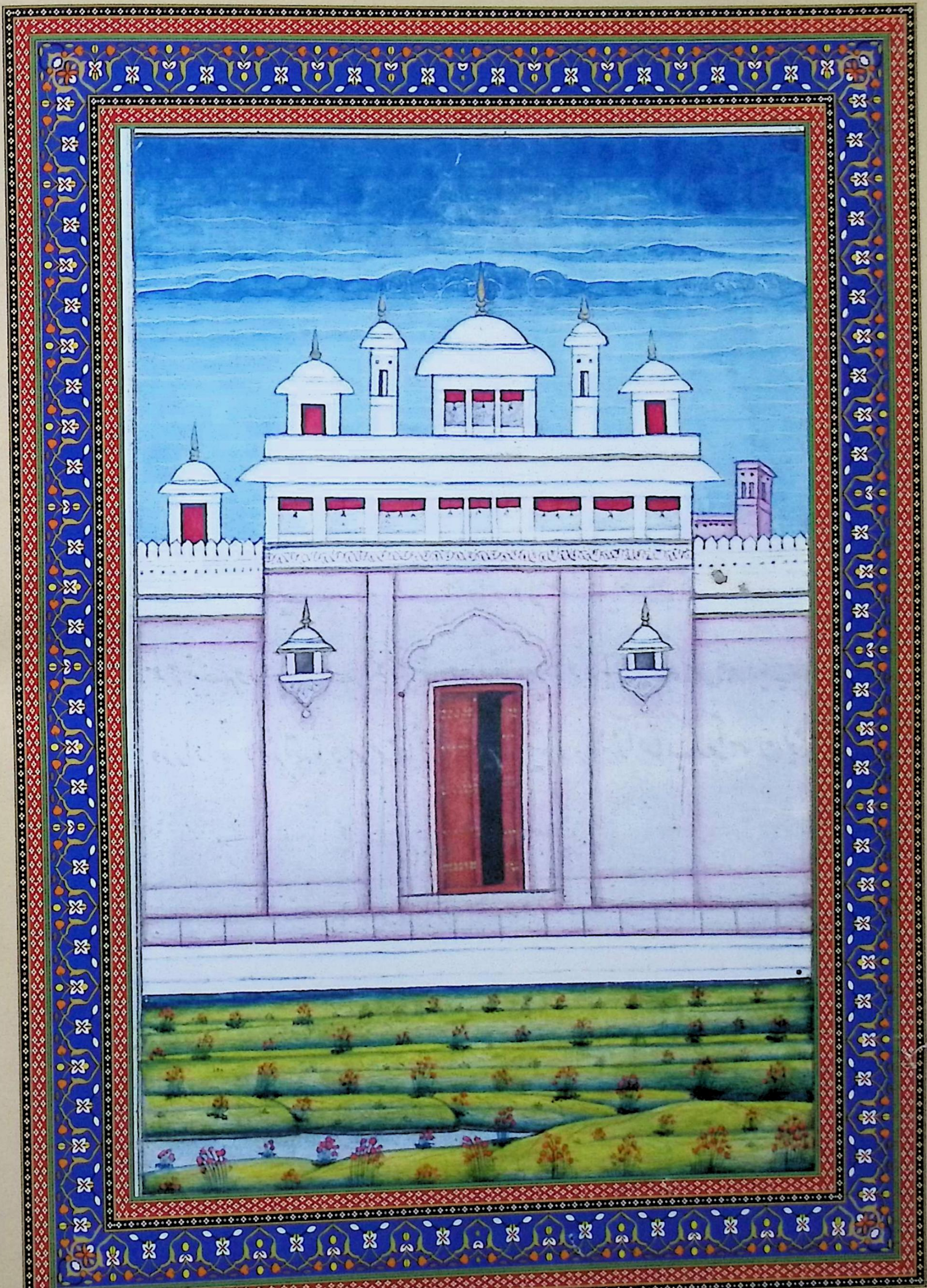

دران ست نام شهر راجه میاند و منتری یعنی وزیر وریج بشست و بامدیو
که دانندهٔ بید و بیدانگ اند بسیار داشت و هشت وزیر مصلحتی او را
بودند اول دهرشٹ دوم جینت سیوم بجی چهارم سدارتهه
پنجم ارتهه سادهک ششم اشوک هفتم دهرم پال هشتم سمنتر
همه نجب آرند حکم راجه و با شکوه و تحمل و با تبسم گوینده و نکو خواهش
و راست رو صواب کار بودند و حافظ برن ها ساکن شهر ها
و جمع خزاین مفید و دور کنندهٔ وام و کم سیاست و دور از غیبت
و هنر ور و بی تکبر و در شهر و خانه دزد و یا ناپاک کس نبود با چنین
وزرا راجه دشرتهه با دهرم محافظت ملک میکرد و مانند آفتاب که بر آسمان بود

مجلس راجه دشرتهه و بشست
و دیگر مردمان دانا و وزرا

۵

सर्ग-८

मंत्री परिषद

सतनामी किला और इस सतनामी नगर में राजा रहता था। मंत्री और ऋत्विज वशिष्ठ तथा वामदेव जो वेद के ज्ञाता थे, आठ मंत्री उसके सलाहकार थे। पहला धृष्टि, दूसरा जयन्त, तीसरा विजय, चौथा सुराष्ट्र, पाचवां राष्ट्रवर्धन, छठा अकोप, सातवां धर्मपाल और आठवां सुमन्त। सबके सब राजा का आदेश पालन करने वाले, भव्यता के साथ धैर्य वाले, मृदुभाषी, हँसमुख, लालच से दूर, सच बोलने वाले और अच्छे कार्य करने वाले थे। नागरिकों की रक्षा करने वाले और खजाने को एकत्र करने में सहायक थे। ऋण चुकाने वाले, राजनीति कम करने वाले, दूसरों की बुराई से दूर रहने वाले, कला जानने वाले, घमण्ड न करने वाले थे। नगर में और घरों में कोई चोर या अशिष्ट नहीं था। ऐसे मंत्रियों के साथ राजा दशरथ देश की रक्षा धर्म के साथ करते थे। सूर्य की भाँति जो आकाश में है, राजा दशरथ वशिष्ट और दूसरे बुद्धिमान पुरुषों और मंत्रियों से घिरे रहकर शोभा पाते थे।

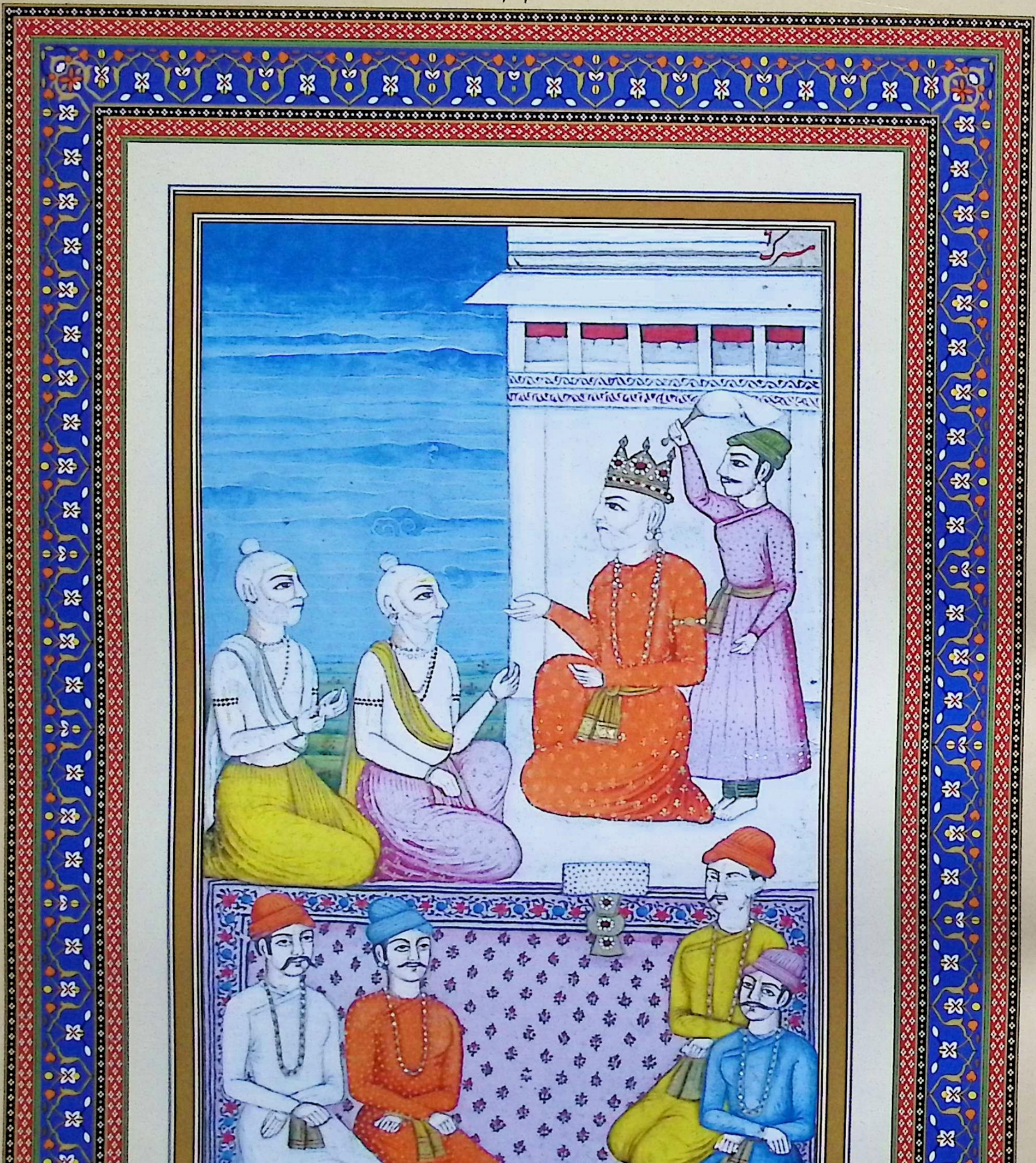

31

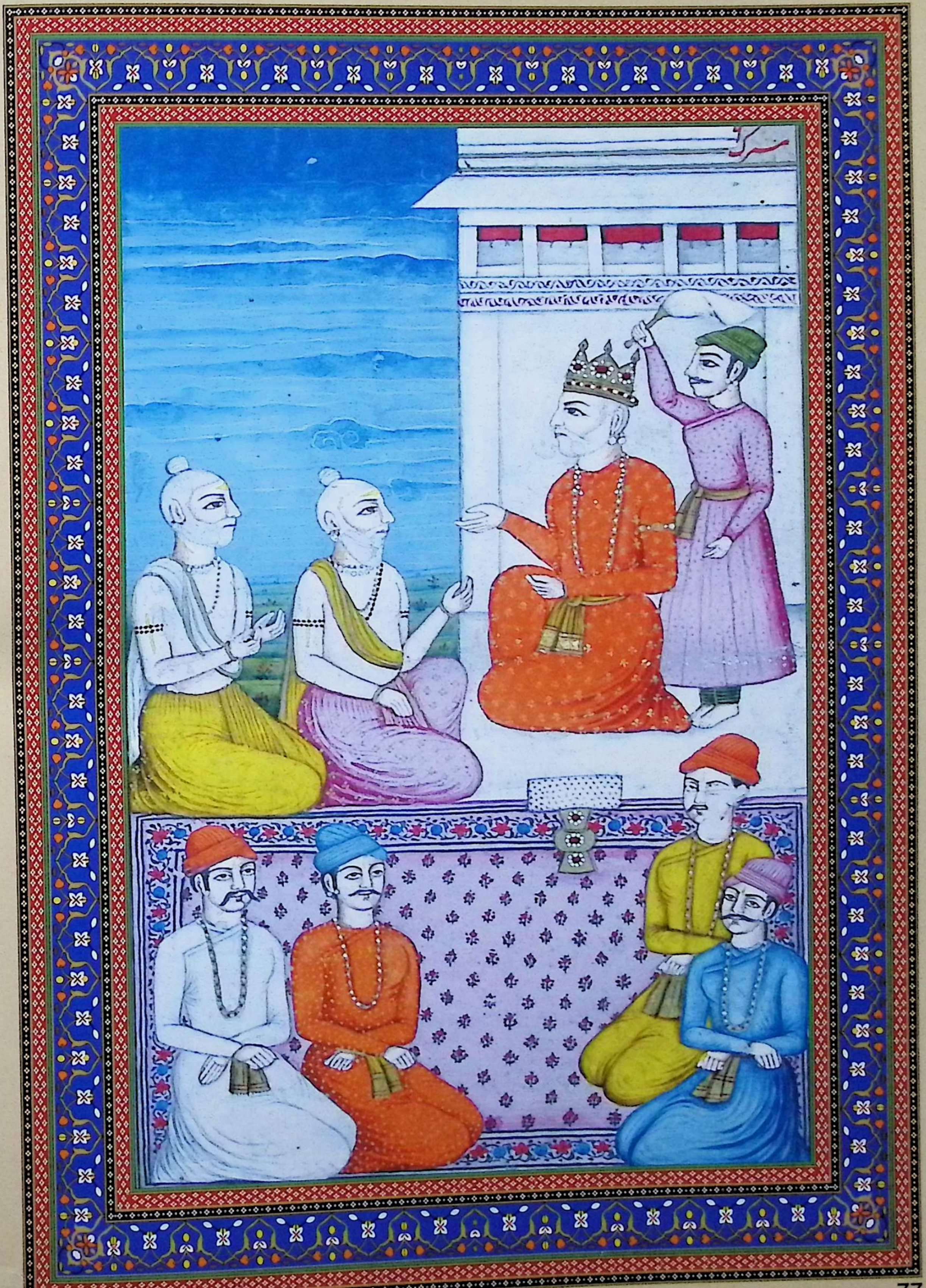

سرگ ۹ مشتمل بر احوال شرنگی رکهه و آن راجه دهرم پدهان را خلف رشید نبود و برای پسر
میطلپید در دل او گذشت که برای اولاد باج میده یعنی آشومیده جگ چرا نکنم
تشخص این دانش کرده بوزرا و غیره مشورت کرد و بسومنتر گفت که بسرعت بششت
نام وزیر
و غیره گورو یعنی اوستادان را بیار سومنتر هنگام جواب عرض کرد ای راجه بشنو
آنچه من در پوران شنیده ام سنت کمار بهگوان قبل در کتها یعنی افسانه میگفت
نام پسر برهما که همیشه در پنج سال عمر میماند
ترا پسران خواهند شد و سنت کمار چنین گفته که کشب رکهیشر را پسریست بیبهاندک نام
مشهور او را شرنگ رکهی نام پسر خواهد شد و آو پیوسته در بیابان خواهد بود و در آنجا
کلان خواهد شد و هیچکس را بغیر از پدر نخواهد شناخت و آو را برهم چرج خواهد شد و در زمانه
تپ بزرگ خواهد نمود و مدتی او را به تپ خواهد گذشت بخدمت آتش و پدر بزرگ خواهد شد
درین اثنا لوم پاد نام در ملک انگ راجه کلان پیدا خواهد گشت در ملک او قحط عظیم
بسبب عدم باران تا چند سال خواهد افتاد و برای آن راجه بعاقلان خواهد پرسید که شما
بزرگ هستید و احوال زمانه میدانید مرا بفرمائید بوجهی که این قحط برود و آو را دانایان
خواهند گفت که بهر نوع که باشد شرنگ رکهه پسر بیبهاندک را بشهر خود بیار و شانتا نام
دختر خود بدو بده و گفته آنها را شنیده راجه مذکور فکر خواهد کرد که بکدام نوع آوردن
توانم منصوبه فکر او درست نخواهد نشست بعد از ان وزیران و نزدیکان را

सर्ग-६

पुत्र प्राप्ति के वर्णन पर आधारित है। इस धर्मपालक राजा के कोई सन्तान नहीं थी और पुत्र के लिये चिन्तित रहता था, उसके मन में यह विचार आया कि सन्तान प्राप्त करने के लिये अश्वमेघ यज्ञ क्यों न करूं। इस बुद्धिमत्तापूर्ण विचार के संदर्भ में उसने मंत्रियों आदि से भी परामर्श किया और सुमन्त्र से कहा कि वशिष्ठ आदि गुरुओं को बुला लाओ। गुरुजनों ने अश्वमेघ का उपदेश दिया है किन्तु महाराज सुनिये जो कुछ मैंने पुराण में सुना है- सनत्कुमार भगवान एक कथा में कहते थे कि आपके सन्तान होगी और सनत्कुमार ने ऐसा कहा है कि कश्यप के विभाण्डक नामक एक पुत्र है उसके भी एक पुत्र (ऋष्यशृंग) होगा, वह लगातार जंगल में रहेगा और वहीं बड़ा होगा वह पिता के अतिरिक्त किसी को नहीं पहचानेगा। उसे ईश्वर की कृपा प्राप्त होगी और तप करते हुए बड़ा होगा, उसका एक लंबा समय तप में व्यतीत होगा। अग्नि और पिता की सेवा में बड़ा होगा। इसी बीच अंग देश में रोमपाद नाम का एक बड़ा राजा पैदा होगा उसके देश में कुछ वर्षों तक वर्षा न होने के कारण एक बड़ा अकाल पड़ेगा उसके लिये राजा ज्ञानियों से पूछेगा कि आप लोग वरिष्ठ हैं और काल चक्र के ज्ञाता हैं मुझे कोई ऐसा उपाय बताइये जिससे यह अकाल दूर हो। तब ज्ञानी लोग उससे कहेंगे कि जैसे भी हो विभाण्डक के पुत्र को अपने नगर में लाइये और अपनी शान्ता नामक पुत्री उन्हें दे दीजिये। उनकी बात सुनकर उक्त राजा सोचेगा कि उन्हें किस प्रकार ला सकता हूँ ?परन्तु उसकी समझ में कोई उपाय नहीं आयेगा। तदुपरान्त मंत्रियों और निकटवर्ती लोगों को बुलाकर

طلبیده خواهد پرسید آنها ابا خواهند کرد بعد از ان خواه مخواه پروهت و وزرا را خواهد
پیری که از همیشه در سلسله او آ
فرستاد آیشان تصدیع خواهند کشید پیش رکهه از دهشت نخواهند رفت و باز خواهند آمد
بسیار نوع فکر کرده خواهند گفت ما می آریم و هیچ عذاب نخواهد شد باستصواب
بیشا یعنی زن بازاری پسر من را می آریم آز مکان پدر بشهر خود بهزار تدبیر حریص
و طامع کرده بیاریم آن زمان باران خواهد بارید بعد از ان چون پسر من خواهد آمد آن راجه
بدستور بزرگان خود آن دختر را بدو خواهد داد بدینگونه آن راجه را داماد خواهد شد
بعد از ان راجه وشنتهه خواهش پسران خواهد کرد و در آتش هوم کنانیده جگ کلان خواهد کنانید
سومنتر میگوید که از گفته سنت کمار اینچنین شنیده ام میان رکهیشران میگفت از این
سخن وشنتهه خوشوقت شده باز گفت که بیان آوردن شرنگ رکهه تفصیل نما که او
با چه بهایم عمر گذرانیده چگونه ببلاغت رسید حالا کجاست سومنتر از فرموده راجه بدینگونه
آغاز کرد در خانه لوم پاد سهت و آن راجه چون بوزرا و پروهتان گفت که خواه نخواه
پیران
رکهه شرنگ را بیارید و رکهه شرنگ در جنگل میماند و بریاضت و خواندن مشغول بود
و عورات را نمیدانست و لذت آن را نیز نمیدانست از گفته پدر بیرون نمیرفت از
مکان خود نمی جنبید وقتی پدر او از مکان بیرون رفت زن فاحشه که گنگا باشد آراسته
و پیراسته نزد او رفت داننده روش و وقت بهزار غنج و دلال وارد گشت بهر نوع
هزوارسته

उनसे पूछेगा कि वे लोग मनाकर विभाण्डक के पुत्र को ले आयें?उन लोगों के लिये यह बात कष्टदायी हो जायेगी और भय के कारण ऋषि के सामने नहीं जायेंगे और अलग रहेंगे। बहुत सोच विचार के बाद कहेंगे कि हम उसे लाते हैं परन्तु कोई विपदा नहीं होगी। नाचने गाने वाली स्त्री के परामर्श से मुनि के लड़के को लाते हैं। पिता के मकान से अपने शहर में, उसे लालच देकर, बहुत प्रयास से लायेंगे उस समय वर्षा होगी। उसके पश्चात जब मुनि का लड़का आयेगा वह राजा अपने पूर्वजों की परम्परा के अनुसार अपनी पुत्री उसे दे देगा। इस प्रकार उस राजा का दामाद बन जायेगा और वह राजा दशरथ पुत्र की इच्छा करेंगे और अग्नि में होम कराके बड़ा यज्ञ करेंगे। सुमन्त्र कहते हैं कि सनत्कुमार की कही हुई बातों से मैंने यही सुना है। यह सुनकर दशरथ ने, प्रसन्न होकर कहा कि तनिक विस्तार से कहो क्योंकि इसकी खोज में मैंने अपना जीवन व्यतीत किया है कैसे वह जवान हुआ और अब वह कहाँ है ? सुमन्त्र ने राजा की आज्ञा से यही किया। रोमपाद ने घर में जब मंत्रियों और पुरोहितों से कहा तो उन्होंने उत्तर दिया कि मुनि कुमार ऋष्यश्रृंग, किसी भी प्रकार से योग तथा पढ़ने में लीन हुआ और स्त्रियों को नहीं जानता था और न उनका संसर्ग जानता था। पिता के कहने से बाहर नहीं जाता था और अपने स्थान से हिलता नहीं था। एक बार उसके पिता आश्रम से बाहर गये एक चरित्रहीन स्त्री दूसरी स्त्रियों के साथ उसके निकट गई और उन्होंने उससे अपनी पूजा कराई।

که دانستند او رانجود حریص کردانیدند و آو در عمر خود عورت یا مرد وغیره اشیا
شهر را سوی پدر خود ندیده بود آو درانجا عورت جمیله را دید که بانواع پیرایه آراسته
و بشیرین آواز سرائیده نزدیک رسیده بسیار خوشوقت شد و از عجائبات
دانست آن عورت نزدیک رکهه شرنک رفته گفت تو کیستی برای چه درانجا ئی خواهش
دارم این ماجرا را بدانم تنها درین بیابان که کسی از مردم نیست میگذرانی او که آن زن
جمیله را کاهی ندیده بود از خواهش دل با او بدینگونه احوال خود درمیان نهاد
بهاندک پدر منست و من پسر اویم و رکهی شرنک نام منست آنمکان منست زن فاحشه
با زنان دیگر پیشتر رفت از و پرستش خود کنانیدند و گفت این ارکهه این پاو این
مول این ثمر آنها همه از طلب دل آن پوجا گرفتند و بر مود شیرین گویان خنده ها
مثل از پینا قند شکرقند وغیره
کردند و گفتند که ثمرات مطلوب نیست در مکان ما ثمرات عجائب اند آنرا بگیر و بخور
بدین بهانه او را لڈو مونک وغیره شیرینها دادند که اینچنین ثمرات است
آنرا بخورده آو دانست که ثمرات آنجا همین نوع خواهد بود بنوعیکه کاهی در عمر بآن
مزه نخورده بود راحت یافت بعد از آن آن عورات با او باعضای دست و سینه
و پستان بازیها کردند با او پیچیدند از مستی جوانی با او خنده ها کردند سر پستان خود ها
براحت تمام بسینه او یکجا کردند بعد از آن مرخص گشته مکان خود را از ده رنمودند

उसने कहा यह अर्ध्य है, यह पाद्य है, यह मूल, यह फल है, सबने मन से पूजा की और चिकनी चुपड़ी बातें करते हुए हंसी तथा कहा कि फल की चिन्ता नहीं है। हमारे घर में भिन्न-भिन्न फल हैं उन्हें लेकर खाओ। इस बहाने से उसे लड्डू और मूंग आदि मिठाईयाँ दीं कि ऐसे ही फल होते हैं। उसने उन्हें खाया और जाना कि वहाँ के फल इसी प्रकार के होंगे। उसने अपनी पूरी आयु में इस प्रकार के स्वादिष्ट फल नहीं खाये थे, आनन्द आया। उसके बाद उन स्त्रियों ने उसके साथ हाथ, छाती और स्तन आदि अंगों के साथ खेल किया। उसके साथ हँसती थी अपने स्तनों को आराम से उसकी छाती पर रखती थी उसके बाद विदा होकर दूर से अपने भवन उसे दिखाए

واز خوف پدر او بسرعت از انجا بیرون رفتند بعد از رفتن آنها شرنگ رکهی بید شد
غم گرفته ماند آن عورات را بدل خود یاد میکرد و دل بآنها داده خواب هم نمیکرد
بعد از ان هنگامیکه بهاندک پدر او در رسید پسر را بیدل و بیخود دیده بغصه
چشم سرخ کرده بمکان خود نشست کیفیت پرسید پسر که تفاوت عورات
و مردان وغیره هیچ نمیشناخت بدینگونه بیان کرد ای پدر در اینجا بزرگ و پاکرو
برهمچاری که شکلها جعدها بر سر داشت و چون آتش سرخ چشم بود آمد او را پا دارکهه و
بوجا داده ام او بمن از محبت و شوق تمام بچپه ایست و حال دیگر بیان کرد پدر گفت
ای پسر انجا راچهسان برای شکستن تپ میرسند اعتماد برین نباید کرد بدین آئین
رکهه شرنگی را تسلی کرده یک شب مانده باز به بیابان رفت و روز دیگر باز همان
عورات آمدند بصورت دلخواه و با حسن وجوه خنده کنان رکهه شرنگی آنها را دیده
باستقبال رفت همگنان بخنده گفتند آینک مکان ما نزدیک ست آزانجم به بیند
آنجا اینطور ثمرات بسیار خواهند بود گفته آنها که حسب خواهش دل او بود شنیده
عزم رفتن کرد و آن زنان او را بردند هنگام آمدن او در شهر فی الفور باران باریدن
گرفت مانند بارش امریت شیرین راجه لوم پاد باستقبال رفت و نمسکار نمود ارگهه
و بوجا بدستور شاستر نمود و مهربانی ازو خواست و رفع غضب و غصه طلبید و در شهر

और उसके पिता के डर से शीघ्र वहाँ से चली गयी। उसके जाने के बाद ऋष्यशृंग उदास हुआ और दुःखी होकर अपने कर्मों से विरत हो गया। दिल में उन स्त्रियों को याद करता था और उन्हें दिल देकर सो भी नहीं पाता था। इसके पश्चात जब उसका पिता विभाण्डक पहुँचे अपने पुत्र को उदास देखकर क्रोधित होकर अपनी जगह बैठ गया। वृतान्त पूछा, पुत्र ने जो स्त्रियों और पुरुषों का अन्तर नहीं जानता था, इस प्रकार वर्णन किया ''पिताश्री यहाँ पर महान पवित्र और ब्रह्मचारी व्यक्ति जो सर पर जूड़े रखे हुए थे और उनकी आँखें आग की भाँति लाल थीं मैंने उनकी पूजा की वह मुझसे बड़े प्रेम और उत्साह से संबद्ध हो गये हैं।'' और दूसरा यह वर्णन किया। पिता ने कहा यहाँ राक्षस तप को भंग कर देने के लिए पहुँचते हैं। उन पर विश्वास नहीं करना चाहिए इस प्रकार ऋषि ऋष्यशृंग को सान्त्वना देकर एक रात्रि वहाँ रुका रहा फिर जंगल को चला गया। मनमोहिनी सूरत और सौन्दर्य की प्रतिमाएँ हँसती हुई ऋष्यशृंग उन्हें देखकर स्वागत के लिए गया। सबने हँसते हुए कहा हमारा घर यहाँ से बहुत निकट है। उसे भी देख लो, वहाँ इस प्रकार के फल बहुत होंगे उसने उनकी बातें सुनकर जो उसके मनपसन्द थीं जाने का विचार कर लिया। वे औरतें उसे ले गयीं और उसके नगर में आते ही तुरन्त वर्षा होने लगी, अमृत की वर्षा, राजा रोमपाद स्वागत के लिये गये और प्रणाम किया और शास्त्र के अनुसार अर्ध्य और पूजा की और उससे कृपा करने एवं अपना क्रोध समाप्त करने का अनुरोध किया। नगर में ले जाकर

برده شانتا نام دختر خود را بدستور بزرگان خویش بعقد ازدواج او در آورد
بدینگونه با جمیع وجه بمنزل مقصود رسیده رکهه شرنگ با شانتا در خانه راجه اقامت داشت
بوجهی که در خانه مهندر بر بهشت می باشد شرنگی رکهه و شانتا دختر راجه لوم پاد
اندر گردراتهه

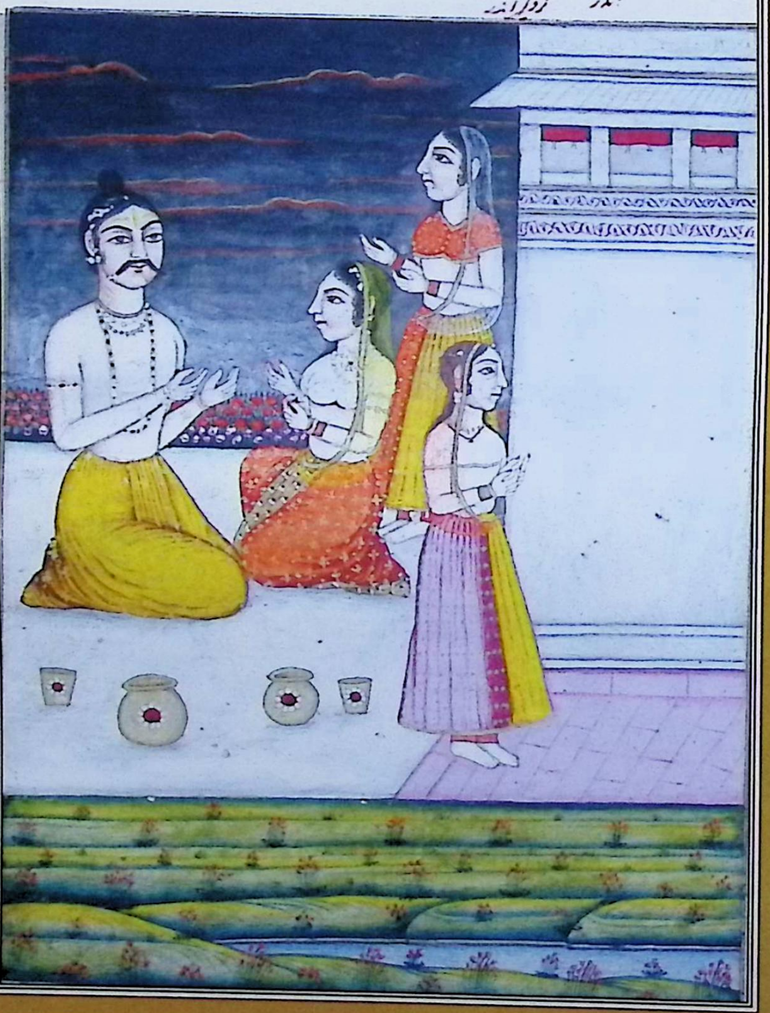

سرگذ داوان

अपनी शान्ता नाम की पुत्री का विवाह अपने पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार कर दिया। इस प्रकार वह पूर्ण रूप से अपने उद्देश्य में सफल रहा जैसे कि महेन्द्र के घर वृहस्पति रहते हैं।

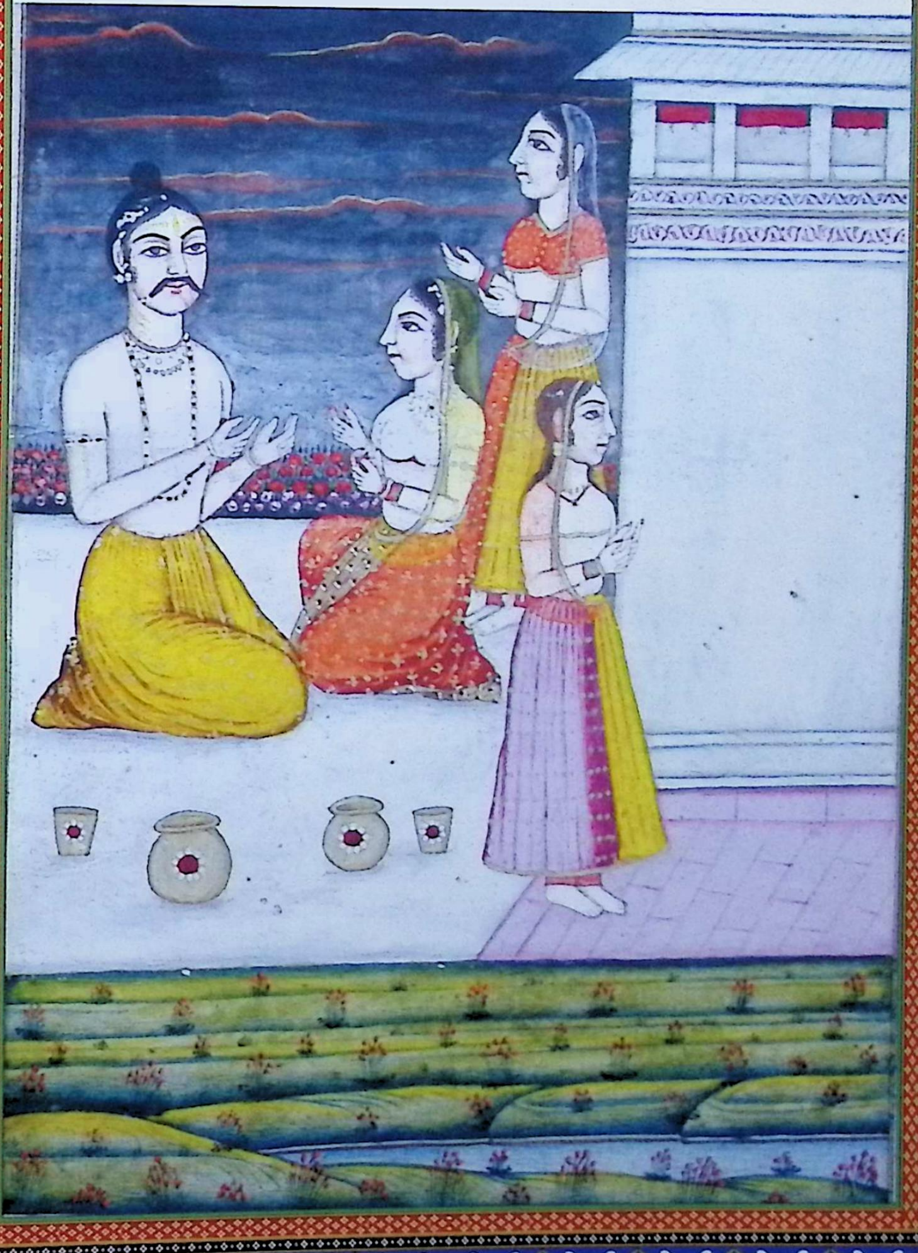

سرگ ۱۰ در احوال **دشرتهه** و آغاز **جگ** بار دیگر بشنو انچه سنت کمار گفته است که در نسل اجهواکو دسرتهه نام راجه خواهد شد

و او را با لوم پاد دوستی خواهد گشت و دشرتهه را دختر خواهد شد شانتا نام لوم پاد از سبب بی اولادی آن دختر از و خواهد خواست

راجه دشرتهه با و خواهد داد آن دختر را گرفته بشهر خود رفته با زدواج رکهه شرنگ خواهد در آورد راجه دشرتهه او را برای

جگ اولاد خود خواهد طلبید و چهار پسر او را متولد خواهد شد هر سه لوک با شکوه این طور گفتار سنت کمار است که آن

در ستجگ گفته است بنا بر آن تو خود رفته آن رکهه را بیار گفته سومنتر را شنیده با بشست در میان نهاد و از اجازت بشست

از شهر برآمد آنجا که رکهه بود رفت و بیابانها و دریاها آهسته آهسته طی کرده در شهر

لوم پاد رسیده پسر رکهه را دید بروشنی و تاب مانند آتش راجه لوم پاد مهمانی و ضیافت

راجه دشرتهه نمود تا هفت و هشت روز آنجا بوده دشرتهه گفت شانتا و شوهر او بشهر من

باید که روانه شوند لوم پاد با پسر رکهه کیفیت دوستی و قرابت خود همه بیان کرد که این

راجه دشرتهه خسر شما میشود برای پسر بخدمت سامی استدعا میکند آرزوی این برآوردن

میتوانی رکهه آنرا قبول کرد پیش راجه دشرتهه آمد با یکدگر خیر و عافیت پرسیده راجه دشرتهه

با شانتا و شوهر او عزم رفتن شهر خود کرد راجه پیشتر کسان را فرستاد تا شهر را آرایند

شهریان هنگام داخل شدن شهر آراستند و نقارها و خرمهره ها و غیرها نواختند

راجه رکهه را پیشوا کرده داخل شد مردم بخوشوقتی رکهه را دیدند پرستش او را موافق شاستر

کردند زنان اندرون خانه راجه شانتا را با شوهر او بخوشوقتی تمام و عشرت ما کلام دیدند

सर्ग-१०

सुमंत्र ने फिर कहा- महाराज पहले सतयुग में शक्तिशाली देव प्रवर भगवान सनत्कुमार ने ऋषियों के सामने ऐसी कथा कही थीः कि इक्ष्वाकु वंश में दशरथ नाम का राजा होगा उसकी रोमपाद के साथ मित्रता होगी और दशरथ के शान्ता नाम की पुत्री होगी रोमपाद सन्तानहीन होने के कारण वह उससे पुत्री माँगेगा। राजा दशरथ उसको दे देगा। इस लड़की को लेकर और अपने नगर जाकर उसका विवाह ऋष्यशृंग के साथ करेगा। राजा दशरथ अपनी सन्तान पैदा होने के लिए इच्छा करेगा और उसके चार लड़के पैदा होंगे। तीनों लोक में सम्मान के साथ रहेंगे। इस आधार पर आप स्वयं जाकर इस ऋषि को ले आइये। सुमन्त्र की बात सुनकर राजा दशरथ ने वशिष्ठ के सम्मुख बात रखी और वशिष्ठ की आज्ञा से नगर से बाहर निकलकर जहां ऋषि थे वहां गये। वनों और नदियों को पार करते हुए धीरे-धीरे रोमपाद के नगर में पहुंचे। उन्होंने ऋषि-पुत्र को प्रकाश और चमक में अग्नि की तरह देखा। रोमपाद ने राजा दशरथ का आतिथ्य और स्वागत किया। सात-आठ दिन वहाँ रहकर दशरथ ने कहा कि उचित होगा कि शान्ता और उसके पति मेरे नगर में जाएं रोमपाद ने ऋषि-पुत्र से अपनी घनिष्ठता और मित्रता का सब हाल बताया कि यह राजा दशरथ तुम्हारे ससुर होते हैं। पुत्र के लिये अनुरोध करते हैं क्या तुम उनकी इच्छा पूर्ण कर सकते हो ?ऋष्यशृंग इसे स्वीकार करते हुए राजा दशरथ के पास गये और एक दूसरे की कुशल क्षेम पूछी। उसके पश्चात् राजा दशरथ ने शान्ता और उसके पति के साथ अपने नगर जाने का दृढ़ निश्चय किया। राजा ने पहले लोगों को भेजा कि जाकर नगर व देश को सजाएं, नगरवासियों ने प्रवेश के समय नगर को सजाया और ढोल और शंख तथा दुंदुभि आदि बजाए। राजा ऋषि को आगे करते हुए प्रविष्ट हुए। लोगों ने प्रसन्नता से ऋषि को देखा और शास्त्र के अनुसार उनकी पूजा की। एक लंबे समय तक राजा के भवन के अन्दर शान्ता अपने पति के साथ प्रसन्नता एवं सुख के साथ रही।

چندی رکهه شرنک در انجا بود وشانتا خدمت میکرد چنانچه از ارندهتی بشست را بعد چندی

نام زوجه بشست

در ایام ستوده که ایام بسنت آمد راجه جک کردن در دل گذرانداز نمسکار سر آن

رکهه دیو وش را مهربان کرده برای جک اولاد مقرر نمود او قبول کرد بعد سب بکار

وسنبهار وبرهمنان برای تنهائی طلبید وراجه ببوت وبرهمنان وپروهتان فرمود

وساکنان مهمان

نام کارنده

بسرعت برهمنان جک دان را وبید وبرت شناسان را در جک کرم دانا را

وکونین سوتر ودانند بید وبید انگ را وآنها که در خانه نمیخورند ومفلسان قبیله داران

قاعده

وشنروتریان وآنها که سافراند بیارید سومنتر سوت گفته راجه را شنیده زود همه را

بید خوانان

حاضر آورد وبرهمنان دانندها تمام بید مثل سوجگ وبام دیو وجاوالی وکشیپ وبشست

وغیره برهمنان آمدند همه را راجه پرستش کرد آغاز نمود بعده بموجب فرموده رکهه شرنک

باوزرا وپادهیا وغیره اسپ برای گردش رها کرد بدستور احسن شانت نمود وانظرف

دعا ورد بلا

سرجو دریا زمین برای جک مقرر کرد بعد از ان که یکسال بگذشت وباز بسنت رت آمد

راجه بشست را با احسن وجوه نمسکار وپرستش نموده برای اولاد استدعا کرد که مطابق

شاستر جک بکنید برهمنان گفتند موافق خواهش میکنیم بعده بزرگان دهارمکان

وکنندهای کار وزمین کنندها وگنکا ومعماران وبازیگران ورقاصان جمع شدند

منجم

وبموجب فرموده راجه هزاران زرها برائی برهمنان آوردند وبرای برهمنان

कुछ समय तक ऋष्यश्रृंग वहाँ रहे और शान्ता उसकी सेवा करती रही। अतः कुछ दिनों बाद वशिष्ठ की पत्नी अरुन्धती ने वशिष्ठ से कहा कि बसन्त के दिन आ गये हैं। राजा के दिल में यज्ञ करने का विचार आया शीर्ष नमस्कार से इस देवाकार ऋषि को प्रसन्न करके यज्ञ के लिए तिथि निर्धारित की। उसने स्वीकार किया सेवा सत्कार और आतिथ्य का सामान एकत्र करने के पश्चात् ब्राह्मणों को एकान्त में बुलाया और ब्राह्मणों और पुरोहितों ने कहा कि शीघ्रता से यज्ञ जानने वाले ब्राह्मणों को, वेद और व्रत जानने वाले को, यज्ञ में काम करने वालों को, सूत्र कहने वाले, वेद-वेदांग जानने वालों को और उनको जो घर में नहीं खाते हैं, गरीबों, कबीले वालों, वेद पढ़ने वालों और उन सबको जो यात्री हैं बुला लाओ। सुमन्त्र ने राजा की बात सुनकर शीघ्रता से सबको एकत्र किया। समस्त वेद जैसे सुयज्ञ, वामदेव, जाबालि, कश्यप और वशिष्ठ आदि वेद जानने वाले सारे ब्राह्मण आए सबका राजा ने स्वागत किया और सम्मान किया। उसके पश्चात् ऋष्यश्रृंग के कथनानुसार मंत्रियों और उपाध्याय के साथ और अश्वमेध के घोड़े की अच्छी तरह से पूजा की और सरयू नदी के उस पार यज्ञ के लिए स्थान निर्धारित किया। उसके बाद एक वर्ष बीता और बसन्त ऋतु पुनः आयी तो राजा ने वशिष्ठ को भली प्रकार नमस्कार और पूजा करके संतान के लिए प्रार्थना की कि शास्त्र के अनुसार यज्ञ करें। ब्राह्मणों ने कहा हम आपकी इच्छानुसार यह कार्य करेंगे। उसके पश्चात् वयोवृद्ध धार्मिक लोग, काम करने वाले, जमीन खोदने वाले, ज्योतिषी कारीगर बाजीगर और नाचने वाले एकत्र हुए। राजा के आदेशानुसार हजारों मुद्राएं ब्राह्मणों के लिए लाई गयीं।

توشه خوردني و غله و شربتها موجود شد و شهریان و والیان دیهات توشه
و خوردنی باعزاز تمام یافتند و همه برن هار ابتش موافق او شد و هیچکس را از غصه
و غضب کم دیدنی نبود و برهمنان و چهتریان و بیشان و شودران همه از هر ملک آمدند
راجه جنک والی متهلا و راجه کاشی شجاع و شیرین زبان و راجه کیکه طول عمره خسر دشرته و والیان مغرب از ملک
سند و والیانِ دکهن و دیگر اقربا بانصواب بشست و سومنتر آمدند پس بشست براجه گفت
که رکهه شرنک خم دکنبید روز نیک و نچهتر خوب راجه از شهر برآمد بشست و غیره برهمنان آغاز اشومید کردند
دریای سرجو و یکطرف صورت شرنک رکهه و بشست و یکطرف راجه دشرته و غیره راجها

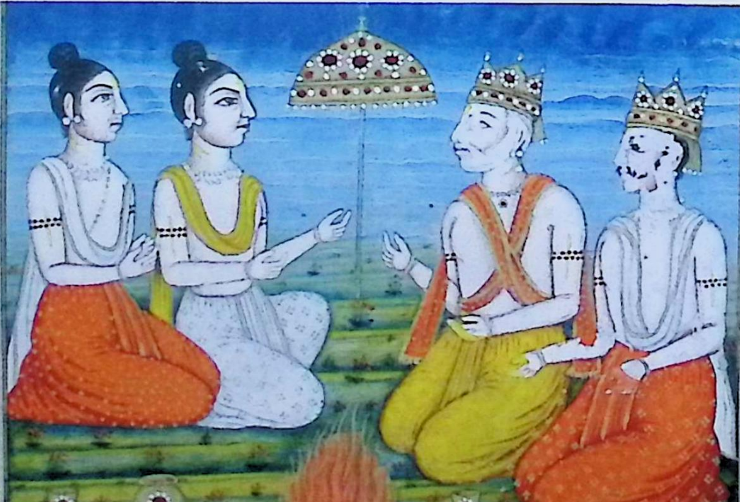

उनके भोजन के लिए वस्तुएँ अनाज शरबत लाया गया और सारे ब्राह्मणों की पूजा उसके अनुसार हुई। किसी भी व्यक्ति को असंतुष्ट अथवा क्रोधित नहीं देखा गया और प्रत्येक देश से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र आए थे। मिथिला के राजा जनक, काशी के वीर एवं मृदुभाषी, राजा कैकय राजा दशरथ के ससुर, सिंध देश के पश्चिम के राजा, दक्षिण के राजा और दूसरे सम्बन्धी, वशिष्ठ और सुमन्त्र के प्रयास से आए। फिर वशिष्ठ ने राजा से कहा कि ऋष्यश्रृंग की कही बात आप स्वयं करें और एक शुभ नक्षत्र वाले दिन राजा नगर से बाहर निकले वशिष्ठ आदि ब्राह्मणों ने हवन आरंभ किया।

सरजू नदी के तट पर एक ओर ऋष्यशृंग और वशिष्ठ का चित्र तथा एक ओर राजा दशरथ और दूसरे राजाओं का चित्र।

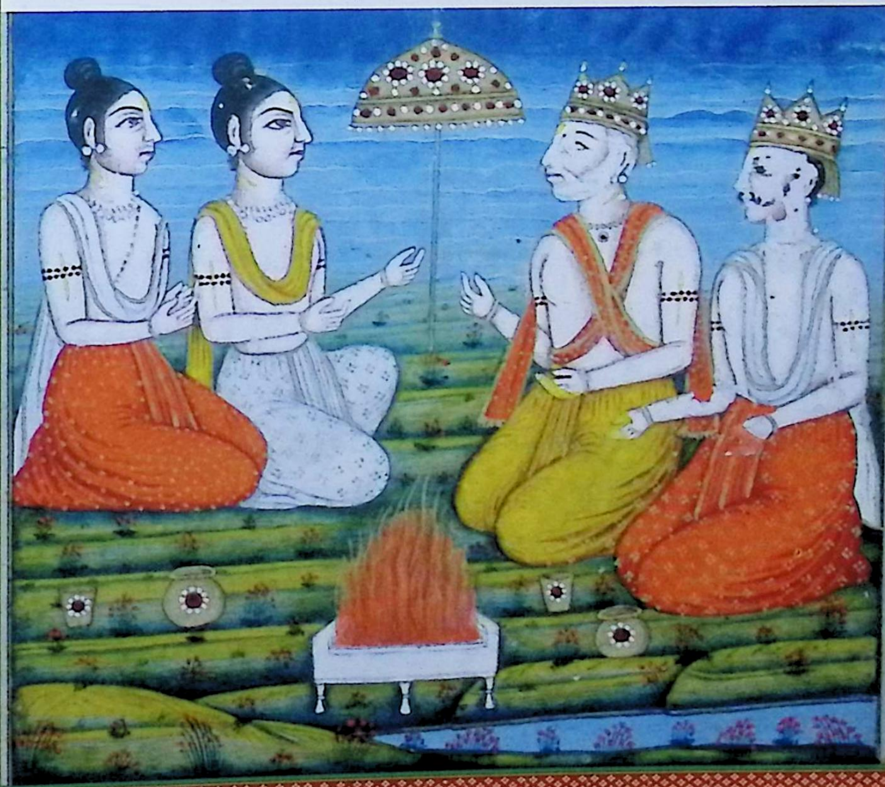

سرگ د جگ نمودن چون اسپ بعد یکسال باز آمد بسمت شمال بر کنار دریا سرجو
آغاز جگ شد رکهه شرنگ وغیره بموجب شاستر باحسن وجوه بخوشوقتی تمام جگ کردند
و اقسام سُوم و سُوم پان و گوناگون غله هوم آورده ابتدا ارکرم کردند چنانکه
هیچ برهمن گرسنه را کسی نمیدید و ناخوانده هم نبود غربا هر روز میخوردند و اهل دولت
نیز میخوردند و عیش میکردند و اهل ریاضت میخوردند و تصدیعکشان نیز راحت میدادند
مسافران و عورات و کودکان و گرسنگان همه سیر میشدند بدهید بدهید طعام
و پارچه همین آواز بود طعام وغیره کوه مانند دیده میشد هر روز برهمنان اطعمهٔ لذیذ
باحسن وجوه میخوردند و هر طرف هر آینه میشنیدند ای راجه نکویی نصیب باد برهمنان را
پیرایه‌ها میدادند و گوشواره‌ها زرین وغیره نیز و از مجلسیان هم کسی که پرشش انگ
بید نداند و برت نکرده و بسیار نشنیده باشد نبود فوفل کوه مانند آمد و ششتن
و برگهانی و دیگر ثمرات شلیکهان دیگر اشجار پاک و بو داره کردند جمیع معماران
عمارات باحسن وجوه ساختند و هشت گوشه درست پرداختند از پارچه‌ها پاک پوشیدند
جای راجه هم آنجا کردند گزز زرین بال سه کنه و دوازده روش آنجا گوناگون بهائم
که دیوتاها را میرسد و جانوران آبی و هوائی و پروانه‌ها و طیور جنس کلی و خرس همه مطابق
شاستر موجود شد و راجه از فراغ با کوشلیا یک شب ماند بدهرم کانچهها همچنین با کیکئی

وسومترا

सर्ग–११

यज्ञ के वर्णन में जब अवश्मेध यज्ञ के लिये छोड़े गये घोड़े एक वर्ष बाद वापस आए तो उत्तर दिशा में सरजू नदी के किनारे यज्ञ का आरंभ हुआ। ऋष्य श्रृंग आदि ने शास्त्र के अनुसार भली प्रकार एवं प्रसन्नचित्त रहते हुए यज्ञ किया और विभिन्न प्रकार की पाक और विभिन्न प्रकार के होम तथा अनाज लाए और यज्ञ-कर्म का आरंभ किया चूंकि कोई किसी भूखे ब्राह्मण को नहीं देखता था और जाहिल भी नहीं था इसलिये गरीब प्रतिदिन खाते थे और धनी भी खाते थे तथा निश्चिन्त रहते थे। बच्चे और भूखे सबका पेट भर रहा था। दूध, खाना, कपड़ा यही आवाज़ सुनाई देती थी। खाने के ढेर पर्वतों के समान दिखाई देते थे। प्रतिदिन ब्राह्मण स्वादिष्ट भोजन भली प्रकार खाते थे और हर दिशा में यही सुनते थे कि भले और दयालु राजा हमारे भाग्य में रहे।

राजा ब्राह्मणों को सनुहरे काम वाले वस्त्र आदि देते थे । सभाओं में कोई व्यक्ति ऐसा न था जो वेदांगों को न जानता हो और जिसने ब्रह्मचर्य का पालन न किया हो तथा अधिक न सुना हो। जब यूप (यज्ञ स्तम्भ) खड़ा करने का समय आया, तब बेल की लकड़ी के छः यूप गाड़े गए, उतने ही खैर के यूप गाड़े गये तथा पलाश के भी उतने ही यूप थे। बहेड़े के वृक्ष का एक यूप अश्वमेध के लिये है। देवदारु के दो यूप हैं। समस्त मजदूर अपने अपने कार्यों में व्यस्त हुए और आठ स्थान ठीक किये, स्वच्छ वस्त्रों से पोछा और वहां राजा के लिए भी स्थान निकाला और राजा कौशल्या से निवृत्त होने के बाद एक रात्रि वहाँ रहे कर्तव्य के साथ इसी प्रकार कैकेयी, सुमित्रा के साथ

وسوتتر ابدستوری که قبل ازین جک سونهو بود و جک کنان را راجه زمین داد آنها
قبول نکردند و جمیع برهمنان گفتند که تمام زمین را تو بادشاه سزاوار هستی مارا
بزمین کار نیست داشتن نتوانیم ما بخواندن خود مشغولیم مرا نشک یعنی دینارها بدهند
راجه دشرتهه یک لک یعنی صدهزار گاو ماده داد و ده کرور نشک یعنی قسم اشرفی
و روپیه ها چهل کرور پس ازان ریتجها و رکهه شرنک و بشست موافق حساب
قسمت کردند و غربا و کوران را و ناداران را و بیتیمان و قبیله داران و زنان
را که پرورش کننده آنها فوت کرده اند آنها که پسران خورد دارند و آزار
و آنها را که برای استاد جو میطلبند و مفلسان را و آنها را که در خانه غیر می باشند
همه را بدلخوشی راجه بخشش کرد صد کرور سوورن که قسمی از دینار زر باشد بخرج درآمد
بعد ازان اقربا و راجها را بخشی کرد که نتوان گفت بعد ازان از رکهه شرنک برای پسران
درخواست نمود رکهه شرنک گفت ای راجه ترا چهار پسر خواهند شد مانند چهار لوک
پال برای پسران اشت میکنم موافق شاستر در آتش هوم انداخت بعد ازان دیوتاها
و گندهربها و بیدها و رکهه ها برای حصه خود حاضر شدند و برهما و سدا شیو و ناراین
یعنی بشن در آن جک راجه دشرتهه آن دیوتاها را رکهه شرنک گفت برای پسر راجه
توجهی فرمائید این راجه صواب کار است و عالم است و از کردن جک عذاب او رفته است

सोम का यज्ञ हुआ था और यज्ञ करने वालों को राजा ने भूमि दी उन्होंने स्वीकार नहीं किया और समस्त ब्राह्मणों ने कहा कि समस्त भूमि के राजा ही मालिक हैं। हमें भूमि से कुछ लेना देना नहीं हम उसकी देखभाल नहीं कर सकते; हम अपने पठनपाठन में व्यस्त हैं। हमें निश्चित (मूल्य) अर्थात् दीनार दे दीजिए। राजा दशरथ ने एक लाख अर्थात् एक सौ हजार दिया और दस करोड़ अशरफी तथा चालीस करोड़ रुपये दिये। उसके पश्चात ऋत्विजों, ऋष्यश्रृंग और वशिष्ठ ने उचित रूप से सब में बाँटा और गरीबों को, अंधों को, अपंगों को, विधवाओं को, कबीले वालों को और उन लोगों की स्त्रियों को जिनका भरणपोषण करने वाले मर चुके हैं जिनके छोटे-छोटे बच्चे हैं और जो कष्ट में हैं उनको। जो अपने गुरुजनों के लिए सम्पत्ति चाह रहे थे उनको और कंगालों को उन लोगों को जो दूसरों के घरों में रहते हैं राजा ने उन सबको प्रसन्नता के साथ बहुत अधिक धन दिया। एक सौ करोड़ की सम्पत्ति जो दीनार सुर्ख के रूप में थी व्यय हुई । उसके पश्चात निकट संबंधियों और राजाओं को इतना दिया जिसका वर्णन कठिन है। उसके पश्चात ऋष्यश्रृंग से पुत्रों के लिए अनुरोध किया। ऋष्यश्रृंग ने कहा कि ऐ राजा चार लोकपाल की भांति आपके चार पुत्र होंगे, पुत्रों के लिए मैं प्रार्थना करता हूं। फिर उसने शास्त्र के अनुसार हवन को अग्नि में डाल दिया उसके पश्चात् देवता, गंधर्व, सिद्ध और महर्षि अपने हिस्से के लिये उपस्थित हुए। ब्रह्मा, सदाशिव और नारायण अर्थात् विष्णु भी राजा दशरथ के इस यज्ञ में उपस्थित थे। ऋष्यश्रृंग ने इन देवताओं से कहा कि राजा के पुत्र के लिये आप महानुभाव ध्यान दें यह राजा ठीक कार्य करने वाला है, ज्ञानी है और यज्ञ करने से उसके पाप समाप्त हो गये हैं।

رکهه را که دست بسته بود دیوتا گفتند تو واین راجه قابل اعزاز هستند آرزو او خواهد برآید
دیوتا اینچنین جواب داده خود برهما که کننده عالم است رفته گفتند آی صاحب زور
از مهربانی تو راون نام راچس ما همه را تصدیع میرساند و ما کشتن او را طاقت نداریم
زیرا که تو قبل ازین او را از مهربانی برداده که از دیوتا و دانو و جچهه ترا کسی نتواند کشت
از سبب آن تصدیع او را برداشت میکنیم و آن بداندیش در هر لوکه خلل انداخته و اندر راجه
دیوتاها را گرفتن اراده دارد و رکهه ها و جچهها و کندهربها و انسران و رهمنان را بخاطر نمی آرد
براوران دیوتاها
از سبب پرتو لوصیای شور او را دیو میلرزد برای کشتن او فکری بفرمای چون
دیوتاها چنان گفتند برهما مراقبه نموده گفت من گفته ام که از ماران و کندهربها
و جچهها و دیوتاها و غیره کشته نخواهی شد و آدمی را بخاطر نیاورده نام او نگرفت
بنا بران او از آدمی کشته خواهد شد اینقدر گفته با دیوتاها نزد بشن رفته ایستادند
و همه ها عرض کردند که شما را برای راحت لوکها درخواست میکنیم بشن قبول کرد بعد از آن
دیوتا صحیح گفتند که این راجه دشرته آشومید جگ کرده دهرماتما و هنرور و راستگو
سنی راسخ الاعتقاد
و مستقیم در برت و این را سه عورت که هر سه اوتار هری یعنی شرم و شری یعنی دولت
و بدهی یعنی عقل اند تو خود را چهار پاره کرده در بطون اینها متولد شو و راون خار
زمانه را که از دیوتاها کشته نمیشود بکش صورت برهما و دیوتاهای دیگر که پیش بشن التماس میکنند جد

देवताओं ने ऋषि से जो हाथ बांधे खड़े थे कहा कि आप और राजा सम्मान के योग्य हो और उसकी इच्छा पूर्ण होगी । देवताओं ने यह उत्तर देकर ब्रह्मा के पास जो पैदा करने वाला है, जाकर कहा हे शक्तिशाली देवता ! आपकी कृपा (वर) से रावण नाम का राक्षस हमारे लिये कष्टदायी बना हुआ है और हमारे अंदर उसे मारने की शक्ति नहीं है क्योंकि आप पहले अपनी दया से उसे यह आशीर्वाद दे चुके हैं कि देवता दानव और यक्ष में से तुझे कोई मार नहीं सकेगा। इसी कारण से हम उसके अत्याचार सहन करते हैं और इस अदूरदर्शी ने तीनों लोकों में उत्पात मचा रखा है वह राजा इन्द्र और देवताओं को बन्दी बनाने का विचार रखता है। ऋषियों, यक्षों, गन्धर्वों, देवताओं और ब्राह्मणों को सम्मान नहीं देता है। पृथ्वीलोक पर शोर नदी (समुद्र) भी उसे देखकर काँपता है उसे मारने की आप चिन्ता कीजिए जब देवताओं ने यह कहा तो ब्रह्मा ने ध्यान लगाकर कहा कि मैं वचन दे चुका हूँ कि रावण लोक गन्धर्वों, यक्षों और देवताओं आदि से भी किसी से नहीं मारा जायेगा और मनुष्य को कुछ न समझते हुए उसका नाम ही नहीं लिया। अतः वह किसी मनुष्य के द्वारा मारा जायेगा देवताओं से यह कहकर वह विष्णु के पास जाकर खड़े हो गये। सबने विनती की कि हम आपसे लोक गन्धर्वों के सुख के लिए प्रार्थना करते हैं। विष्णु ने स्वीकार कर लिया उसके बाद देवताओं ने नम्रता से कहा कि यह जो राजा दशरथ हैं यह दुखी थे, उन्होंने यज्ञ किया और यह धर्मात्मा, कलाकार, सज्जन और दृढ़विश्वासी हैं उनकी तीन पत्नियाँ हैं जो तीन अवतार हैं- ह्री अर्थात् लज्जा, श्री अर्थात् धन, कीर्ति अर्थात् बुद्धि है। आप स्वयं के चार टुकड़े करके (स्वरूप बनाकर) उनके गर्भ से उत्पन्न हो और समय के काँटे रावण को जो देवताओं से नहीं मारा जा रहा है मारिये।

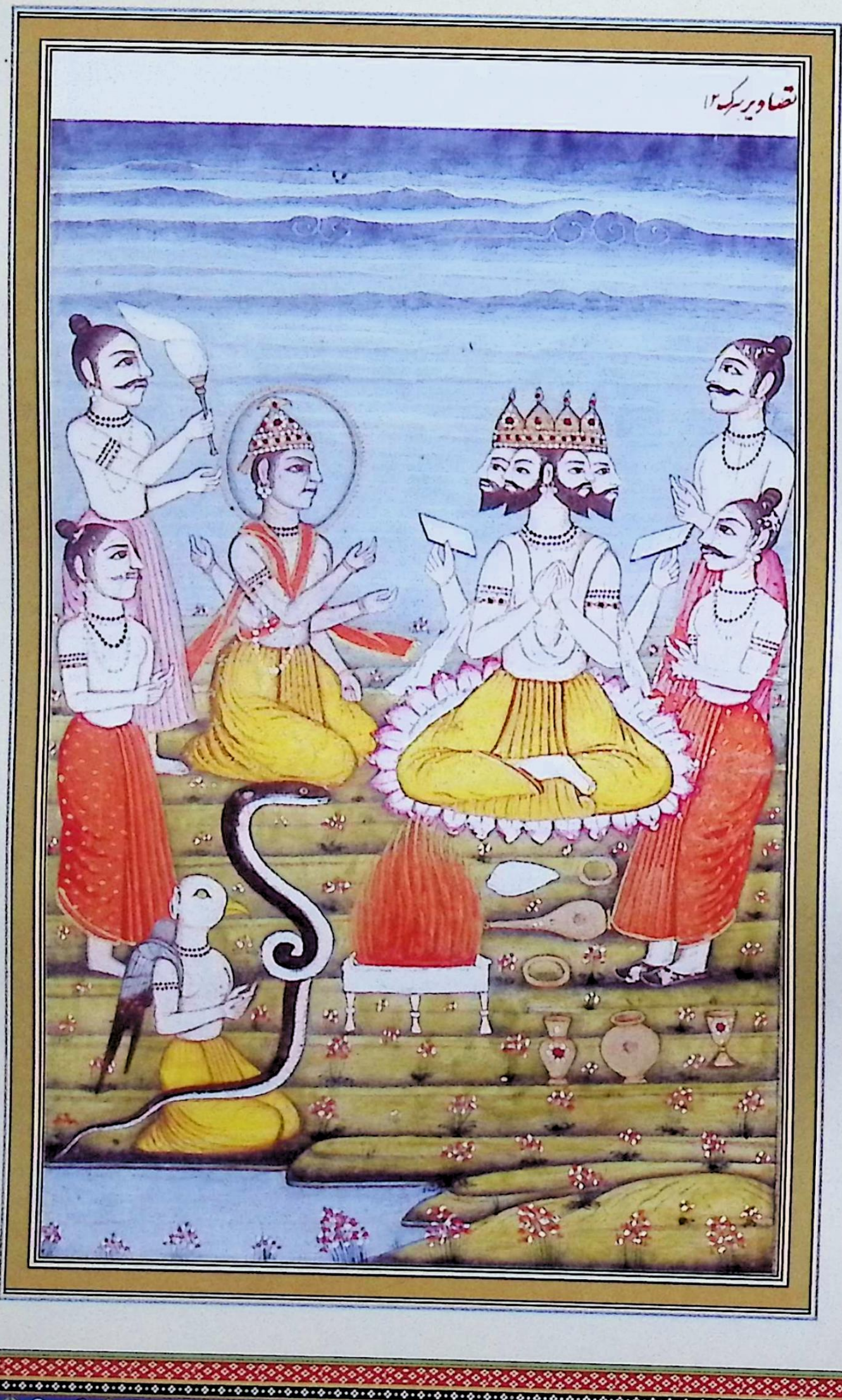
تصاویر سرگ ۱۲

ब्रह्मा और दूसरे देवताओं का चित्र जो विष्णु के सामने इल्तमास और यज्ञ कर रहे हैं।

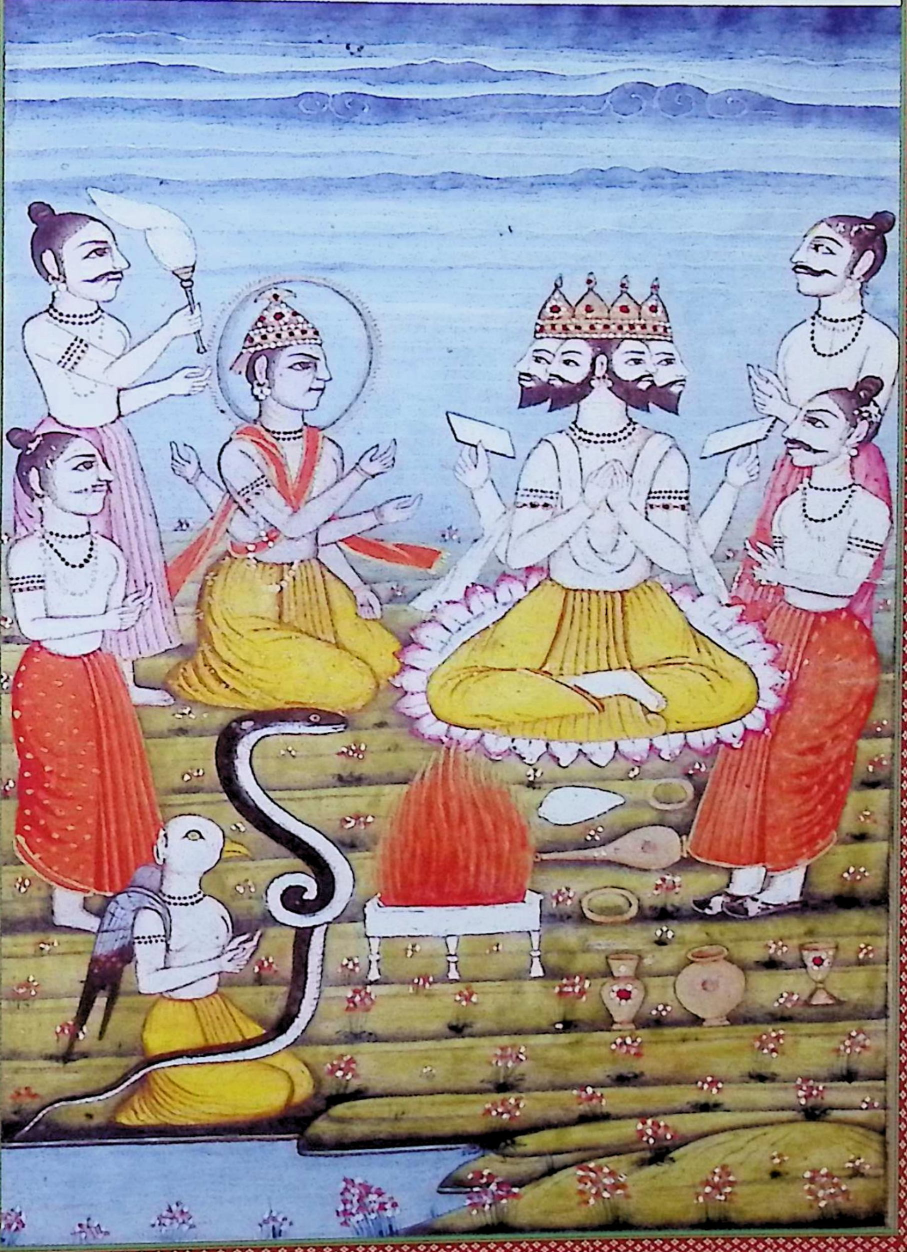

مرگ بفراغ جگ از استدعا، دیوتا با بشن نارایین با آنها بشیرین زبانی
چنان گفت کدام طریق هست کشتن آن راجهس را که بدان طریق او را بکشم دیوتا
گفتند که تو بصورت آدمی گردیده او را بکش بشن اینچنین شنیده آرزو کرد
که دشرتهه را پدر خود کند دران وقت قضارا دشرتهه که پسر راجه اج است از شوق
خود با برهمنان برای اولاد جگ میکرد درهمان جگ ازمیان آتش شخصی عجائب شکل
کلان تند قوی و بسیار زور دارنده سیاه اجن سرخ چشم قمر طلعت و ریش و موی
برنجیر مائل و پارچه ها مطبوع پوشیده و مثل کوه سمیر بلند و مثل شال طویل
و بروشنی بکمال مانند آفتاب بوجود چون طلا از آتش برآمده و ظرفی پر از شیر و برنج
بدو دست گرفته بر تمثیل مامی نام راجهس بیرون آمد و بر شرنگی رکهه گفت مرا پراجاپت نام
شخص بدان اینجا آمده ام شرنگی رکهه گفت پس تو این ظرف را خود براجه بده از گفته رکهه
پراجاپت راجه خود آن ظرف بداد راجه دست بسته بآن شخص گفت که من این را حکیم
آن شخص گفت ای راجه ثمره جگ زود ترا حاصل شد این شیر اولاد کننده بگیر و برم و
تندرستی آرنده است که بانوان خود را برای خوردن بده راجه قبول کرد آن شخص غائب شد
که کس ندانست بعد ازان راجه دشرتهه در خانه خود رفته به کوشلا گفت که نصف این شیر بگیر
چنانچه نصف ورا داده ازان باقی نصف به کیکئی اهلیه دوم داد و چهارم حصه را نصف کرده

برسومترا

सर्ग-१२

देवताओं के अनुरोध पर विष्णु नारायण ने उनसे मीठी वाणी में कहा कि इस राक्षस को मारने का कौन सा उपाय है जिससे उसे मारूँ। देवताओं ने कहा आप मनुष्य का रूप लेकर उसे मारिये। विष्णु ने यह सुनकर इच्छा की कि दशरथ को अपना पिता बना ले। उस समय संयोग से दशरथ जो राजा अज के पुत्र हैं अपनी इच्छा से ब्राह्मणों के साथ संतान के लिये यज्ञ कर रहे थे। उस यज्ञ के अन्दर आग के बीच से एक व्यक्ति लम्बा कद, शक्तिशाली, बलवान, काली खाल, लाल आँख, दाढ़ी, सूरज के समान प्रकट हुआ जैसे आग से रोशनी निकलती है। दूध (पायस-खीर) से भरा हुआ एक बर्तन दोनों हाथों में लिये हुए जादू के समान यामी प्रकट हुआ और ऋष्यशृंग से कहा मेरा नाम प्रजापति है इसीलिये यहाँ आया हूँ कि यह पायस खीर से भरा बर्तन स्वयं राजा को दे दूं, राजा ने वह (खीर) का बर्तन स्वीकार कर लिया उस व्यक्ति ने कहा इससे तुम्हें संसार का फल प्राप्त होगा। इस पायस खीर से तुम्हें संतान का सुख प्राप्त होगा और स्वास्थ्य भी प्राप्त होगा। इसे स्वयं पी लें। राजा ने स्वीकार कर लिया। फिर वह व्यक्ति कहां ग़ायब हो गया कोई न जान सका। इसके बाद राजा अपने घर में प्रविष्ट हुए और कौशल्या से कहा कि वे इस में से आधी खीर पायस का सेवन कर लें चुनांचे आधा उनको दिया बाक़ी आधा दूसरी रानी कैकेयी को दिया और चौथाई भाग

به سومترا اهلیه سیوم داد بعد ازان فکر کرده آن باقی را نیز به سومترا داد همگنان بدلخوشی
تمام نوش جان کردند بعده راجه بخوشوقتی تمام رکهه شرنگ را بسیار مال و منال تکلیف کرد
واقربا و راجها که جمع شده بودند همه بمکانِ خود ها روان شدند راجه هم فرمود
که بجا والیِ شهر شهر مانندِ مکان مردکان میباشد بنابران حراست مکان خود ها
ضرورست بوجهی که کس بانواع تدبیر محافظتِ وجود میکند همچنان عاقل مکان خود را
وهمه را مرخص کرد بعد ازان راجه با و دهیا داخل شد برجا بت از میان آتش هوم
ظرف طلا پر از شیر در دست گرفته بدست راجه داشته میدهد

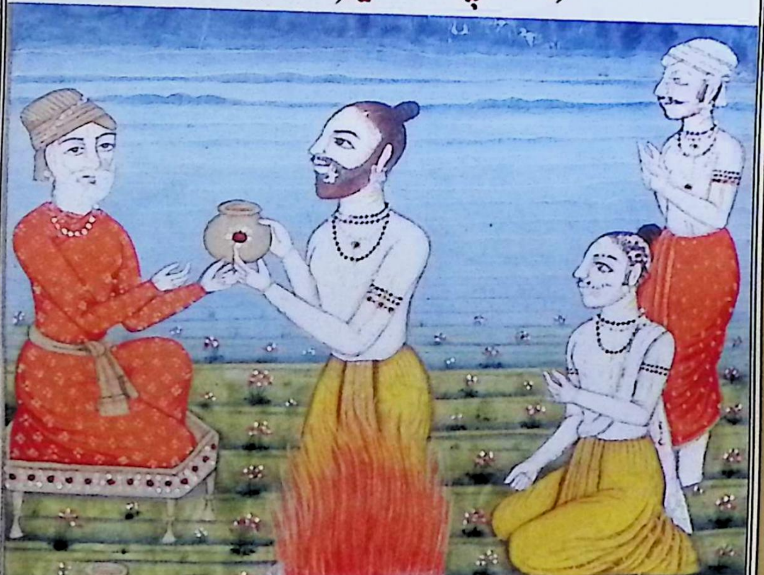

का आधा हिस्सा तीसरी रानी सुमित्रा को पीने के लिए दिया इसके बाद फिर कुछ सोच कर शेष आधा भी सुमित्रा को दे दिया दोनों ने प्रसन्नतापूर्वक सब पी लिया। इसके बाद राजा दशरथ ने बहुत सारा धन दौलत ऋष्यश्रृंग को देकर विदा किया और संबंधी और तमाम एकत्र राजाओं के संग अपने घर की ओर चल दिये। राजा ने ये भी कहा कि बिना अधिकारी के नगर मुर्दे का घर लगता है। इस लिये अपने घरों की सुरक्षा आवश्यक है। जिस प्रकार व्यक्ति विभिन्न योजनाओं से अपने जीवन की सुरक्षा करता है उसी प्रकार बुद्धिमान अपने घर की सुरक्षा करता है यह कहकर राजा आयोध्या नगर में प्रविष्ट हुए।

प्रजापति होम की अग्नि से निकलकर दूध (पायस-खीर) से भरा सोने का बर्तन हाथ में लेकर राजा दशरथ को देते है।

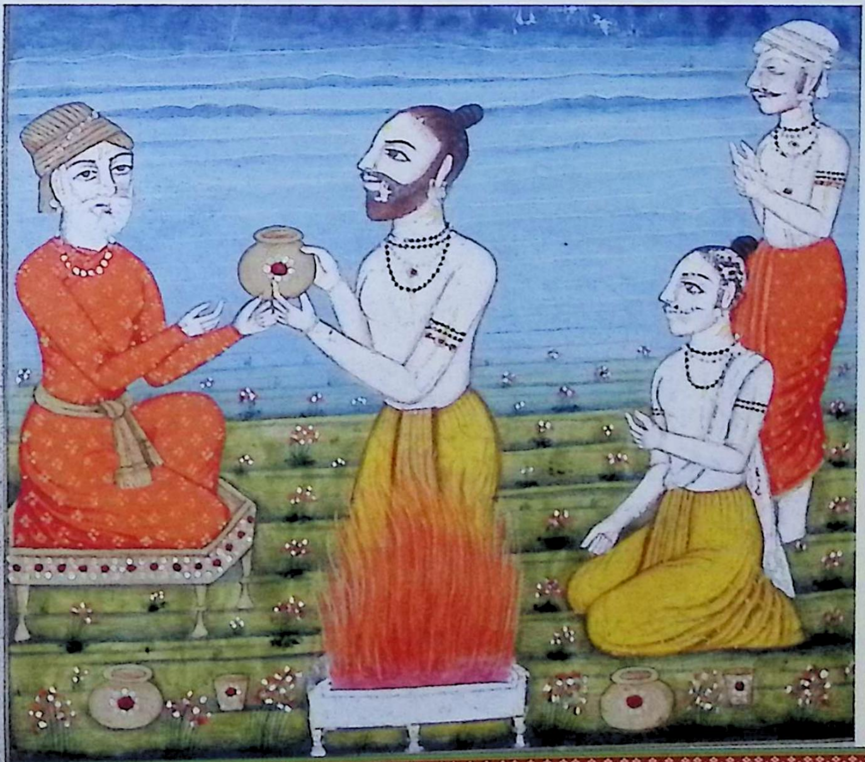

سرگ ١٣ رفتن رکهه بشهر لوم پاد شرنگ رکهه بعد ازان مدت مدید با شانتا و با برهمنان آتم دان
همراه زن شرنگی رکهه
و بشست و مردم دیگر در انجا بود و شانتا شال و ابریشم ناب و گاوان و کنیزان
و جواهر اقسام اقسام و پیرایه انواع انواع بافته باعزاز تمام با شوهر خود براحت
همراه زن اندر
و آسودگی تمام مدتی گذرانید چون پولومی با اندر بعد ازان باعزاز تمام شرنگی رکهه را با شانتا
وداع کرد و شوهر او گوشلا و کیکیی همه شانتا را که دیدن او دشوار است در کنار گرفتند
و دعا کردند که باد و آتش و ماه و زمین در جنگل حافظ تو باد و پرستش خسر خود
خواهی کرد و در گفته شوهر خواهی بود زنان را شوهر خداوند است و شانتا شوهر او کردند
در رکهه بشهر لوم پاد رفت چون شهر لوم پاد که چنپا نام آن شهر بود رسید آن راجه باستقبال
بیرون شهر آمد و گفت که پدر تو بخیریت هست و انتظار آمدن تو با اهلیه تو بسیار دارد
و رکهه را گرفته با پروهت داخل شهر شد چندی در انجا اقامت کرد سرگ ١٤ رفتن رکهه بجنگل
بعد رسیدن رکهه شرنگ راجه لوم پاد برهمنی را گفت نزد بهاندگ پدر رکهه رفته بگوید که
که رکهه شرنگ در اینجا آمده است برهمن بموجب امر رفت و از سر او را انسکار کرده انچه
راجه فرموده بود گفت و نیز به بیابان آورد که پسرت در خانه راجه دشرته که بتقریب جشن
میباشد جگ کرد بهاندگ گفتار او را شنیده عزم خود برای آوردن پسر مصمم کرد با شاگردان
خود در شهر لوم پاد که چنپا نام داشت رسید و بموجب امر راجه برای پرستش او مردم

सर्ग-१३

ऋषि का रोमपाद ऋष्यश्रृंग के नगर जाना

उसके बाद एक लंबे समय तक शान्ता और ब्राह्मणों के सााथ आत्मदान करना। वशिष्ठ और दूसरे लोग वहाँ उपस्थित थे और शान्ता ने शाल व रेशम कमखाब, दासों और विभिन्न प्रकार के रत्न जड़ित आभूषण और विभिन्न प्रकार के वस्त्रों से सुसज्जित रहते हुए पूरे सम्मान के साथ अपने पति के साथ सुख और शांति से एक लंबा जीवन व्यतीत किया जैसे कि पौलोमी इन्द्र के साथ। इसके बाद पूरे सम्मान के साथ ऋष्यश्रृंग को शान्ता के साथ विदा किया और सुमित्रा कौशल्या और कैकेयी सबने इस प्रकार अपनी बाँहों में ले लिया कि उसका दिखाई देना कठिन हुआ। और प्रार्थना की कि वन में वायु, अग्नि, चांद, पृथ्वी तेरी रक्षक हो, तू अपने ससुर की सेवा करे और अपने पति की आज्ञा माने। स्त्रियों के लिए उनके पति ईश्वर के समान हैं और उसके पति की बलाएं लीं और ऋषि रोमपाद के नगर गये। जब रोमपाद के नगर में जिसका नाम चम्पा था पहुंचे, तो वहां का राजा स्वागत के लिए बाहर निकला और कहा कि आपके पिता कुशलपूर्वक है। और तेरा पत्नी के साथ आपके आने की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं। ऋषि को लेकर पुरोहित के साथ नगर में प्रविष्ट हुए और कुछ समय तक वहाँ रहे।

सर्ग-१४

ऋषि का जंगल को जाना

ऋष्यश्रृंग के पहुँचने के पश्चात् राजा रोमपाद ने एक ब्राह्मण से कहा कि ऋषि के पिता विभाण्डक के पास जाकर कहे कि ऋष्यश्रृंग यहां आये हुए हैं ब्राह्मण आज्ञानुसार जब वहाँ गया और सर झुकाकर उनको नमस्कार किया तथा जो कुछ राजा ने कहा था वह कहा और यह भी कहा कि आपके पुत्र ने राजा दशरथ के घर में जो उसके ससुर होते हैं यज्ञ किया। विभाण्डक ने इनकी बात सुनकर अपने पुत्र को लाने का दृढ़ निश्चय कर लिया और अपने शिष्यों के साथ रोमपाद के शहर चम्पा में पहुँचा और राजा के आदेशानुसार उसकी पूजा के लिए लोग खाने-पीने की वस्तुएं लेकर अगुवाई में आये

اطعمه و اشربه گرفته پیشوا آمدند غلامان شب و روز منتظر بودند که انچه بیهاندگ
بفرماید بعمل آریم وقتی آنها را رکهه بفرمود انیقدر عجز و پرستش چراست باری بشنوم
عرض نمودند که یا رکهه صاحب شما مهربان گردید و غصه نکنید بیهاندگ ازین حرف
خوشوقت شده مهربانیها کرد نوکران کیفیت را براجه رسانیدند گفته نوکران را
شنیده راجه با وزرا و امرا باستقبال آمد و مُنِ ایشر را دیده بار بار نمسکار کرد
مراد از بیهاندگ
و گفت که امروز از دیدن شما ثمرهٔ زندگی من حاصل شد منیشر گفت ای راجه ترا ازین
خوف مبادا من بر تو مهربانم پس ازان راجه بخوشوقتی منیشر را پیشوا کرده داخل شهر
پروهت وغیره بدستور نیک نمسکار کرده دست بسته هر طرف ایستادند بعد ازان
شانتا را پیش کرده همه زنان شهر آراسته و پیراسته پسر در پای او
نهادند و گفتند که این پشنو کهه ست رکهه آنرا قبول کرده بر
زن پرستار است
زانو نشانند و کفاره شکستن ریاضت پسر نمود و با مهبا
رکهان و پسر خویش به بیابان رفت شرنگ رکهه و شانتا و راجه لوم پاد

दास रात दिन उसकी प्रतीक्षा में रहते थे कि विभाण्डक जो आदेश करे उसे पूरा करे एक दिन उनसे ऋषि ने कहा कि इतनी नम्रता और सेवा सत्कार क्यों है मैं भी तो जानूँ लोगों ने निवेदन किया कि साहब आप पर दयालु हो गये हैं, आप क्रोधित न हों विभाण्डक ने इस बात से प्रसन्न होकर उन पर दया की और सेवकों ने यह बात बादशाह को पहुँचा दी । सेवकों की यह बात सुनकर बादशाह अमीरों और मंत्रियों के साथ स्वागत के लिये आये और मुनीश्वर को देखकर बार-बार नमस्कार किया और कहा आज आपको देखकर मेरे जीवन का फल मुझे मिल गया। मुनीश्वर ने कहा ऐ राजा ! तुझे मुझसे भय न होना चाहिए मैं तुझ पर कृपालु हूँ और उसके पश्चात् राजा प्रसन्न होकर मुनीश्वर को आगे करके नगर में प्रविष्ट हुए पुरोहित आदि ने विधि के अनुसार नमस्कार किया और हाथ बाँधे चारों ओर खड़े हो गये उसके पश्चात् शान्ता को आगे करके नगर की समस्त स्त्रियों ने सुसज्जित होकर उसके चरणों में सिर रख दिया और कहा कि यह ऋषि की प्रिय पत्नी है। ऋषि ने उसको स्वीकार करके अपने जांघों पर बैठाया तथा अपने पुत्र की तपस्या तोड़ने का प्रायश्चित किया और बड़े ऋषियों एवं अपने पुत्र के साथ वन में चले गये।

ऋष्यशृंग शान्ता और रोमपाद।

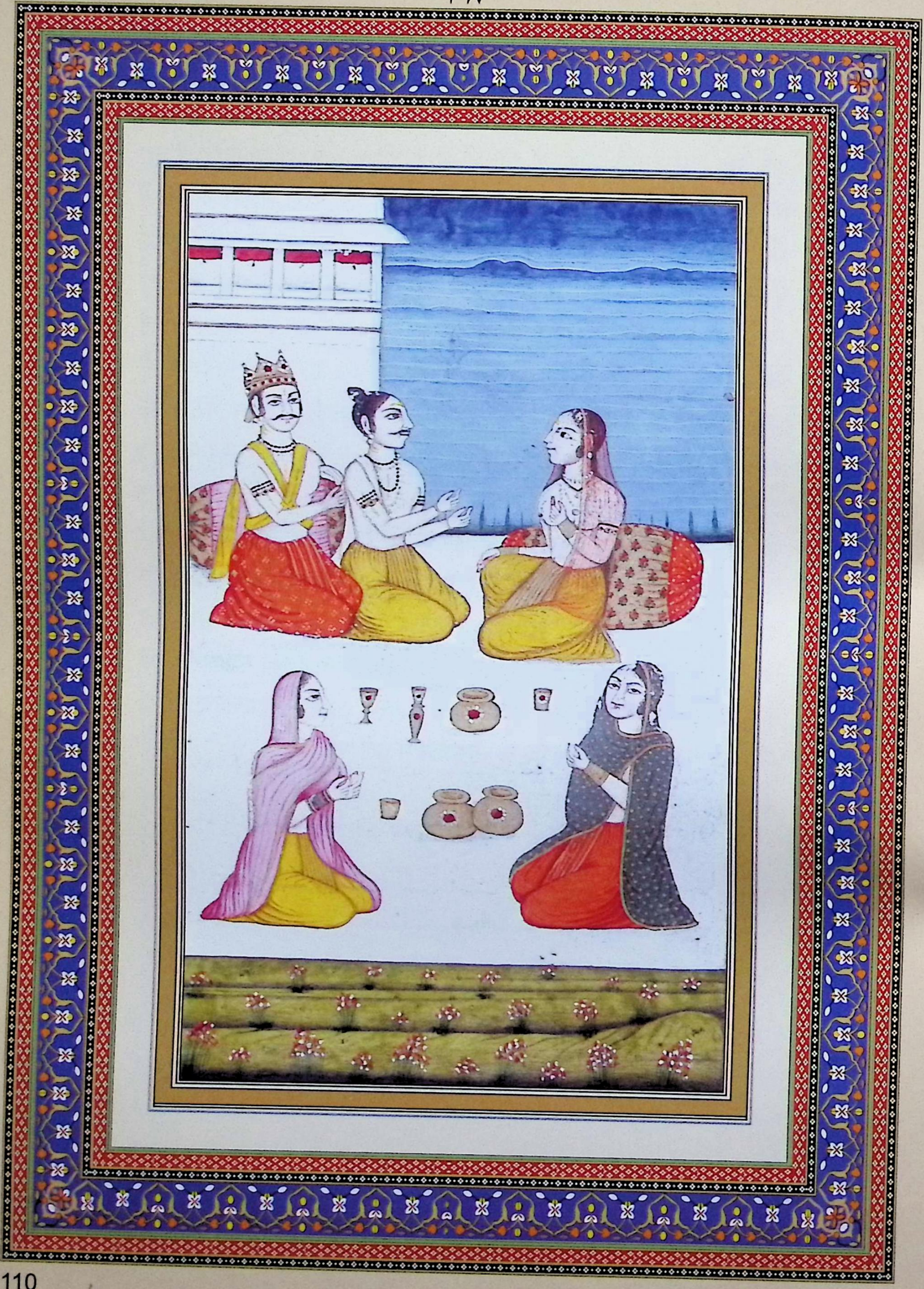

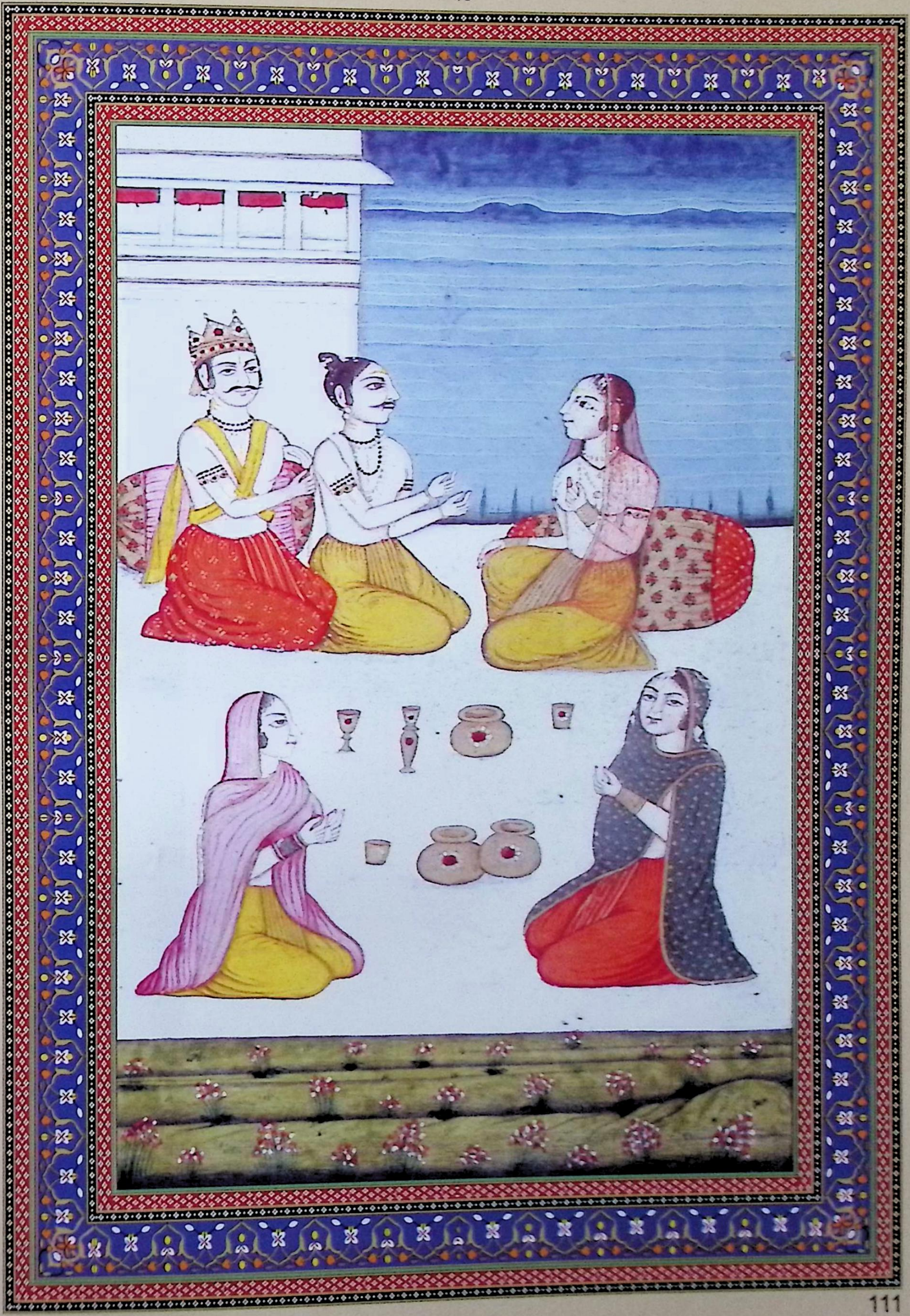

मूल पाण्डुलिपि में यह पृष्ठ (४६) सादा है।

मूल पाण्डुलिपि में यह पृष्ठ (५०) सादा है।

سرگ ۱۶ بر پیدا شدن بوزنه ها و غیره کشن هرگاه بفرزندی راجه رفت همه دیوتا را
برهما چنان گفت که کشن راست رو و نیکخواه ما همه است برای امداد او لشکری پیدا کنید
کامروپ یعنی هر نوع که صورت خواهند پیدا کنند قوت مند و باد وش رونده و بعقل
و شعور آراسته که مانند کشن که همه استر دانند و امرت نوش باشند در وجود
اپسرا ها و گندهرب ها و کنر که نصف مردم و نصف قسم دیگر باشند و بوزنه ها و همیونان
و خرس از بخشش جود ها بیافرینید آنها حکم برهما را قبول کرده دیوتاها و گندهربها پسران
بصورت بوزنه ها و خرس ها پیدا کردند و رکهه ها و سده ها و کنرها و چارن و غیره
نیز بیافریدند هزاران هزار بجهة کشتن راون بحیثیتی که قوت آنها در گمان نیاید و
بطوری که بهر صورت که خواهند در نمود آیند بدین طریق خرس و بوزنه و گوپوچهه
که قسمی از بوزنه هاست دم آنها مثل گاو میباشد هر دیوتا ها و غیره را بنوعیکه
صورت و شکوه بود بهمان حیثیت اولاد ها شد همه به سنگ ها و درخت جنگ
کنان همه ها از ناخن و دندان پسلاح داران و کننده کوه ها و اشجارها و از غضب
برهم زنند کان سمدر یعنی دریای شور و ناظر زمین و طایر آسمان و درهم سازنده
باد و ابر اگر خواهند باسکنه ناگ و غیره از زیر زمین بگیرند و آواز از فلک جانوران را
بلند ازند بدین صورت صدها و هزاران پیدا شدند از آنکه در آفتاب

सर्ग-१६

बन्दरों आदि के उत्पन्न होने पर विष्णु जिस समय राजा के पुत्र होने को गये, सारे देवताओं से ब्रह्मा ने कहा कि विष्णु सत्यमार्गी और हम सब के शुभचिन्तक हैं। उसकी सहायता के लिए सेना पैदा करो कामरूप अर्थात् जिस प्रकार भी हो पैदा करो। बुद्धि और कौशल से सुसज्जित होकर कि सब विष्णु की भांति समस्त अस्त्र जानते हैं और अमृत का पान करते हैं। अप्सराओं, गन्धर्वों और किन्नरों के आकार में जाकर अर्ध मनुष्य एवं अन्य दूसरे प्रकार के बन जाते हैं। बन्दरों और दूसरे पशुओं को अपनी कृपा से उत्पन्न करते हैं उन्होंने ब्रह्मा का आदेश मानकर देवताओं और गन्धर्वों के लड़के वानरों के रूप में पैदा किए। ऋषि, सिद्ध, विद्याधर और चारण आदि भी पैदा किये हजारों हजार यक्ष रावण का वध करने के लिए इस बात से उनकी शक्ति नियन्त्रण में नहीं आती और इस प्रकार वे जिस रूप में चाहे प्रकट हो। इस प्रकार के बन्दर आदि और इनकी वह जाति जिनकी पूँछ गाय की पूँछ के समान होती है हर देवता की जिस प्रकार का आकार और शक्ल थी उसी के अनुरूप सन्तान उत्पन्न हुई, सब के सब पत्थरों और वृक्षों से यज्ञ करते हुए सब अपने नाखूनों तथा दाँतों को बनाये हैं वह पर्वतों और वृक्षों को उखाड़ने वाले, क्रोध से शोर नदी (समुद्र) को अस्त व्यस्त करने वाले, हवा और बादल यदि चाहे तो एक नाग के द्वारा भूमि के नीचे से निकाल लें और आवाज लगाकर आकाश से पशुओं को फेंक दें इस प्रकार के सैकड़ों और हजारों पैदा हुए ।

هزاران پسر تولد شدند بدین اقسام از دیگران اما دو بوزنه سردار شدند
پسر اندر بالی و پسر آفتاب سگریو که سر آمد همه ها گشتند تولد شدن بوزنه ها
وغیره

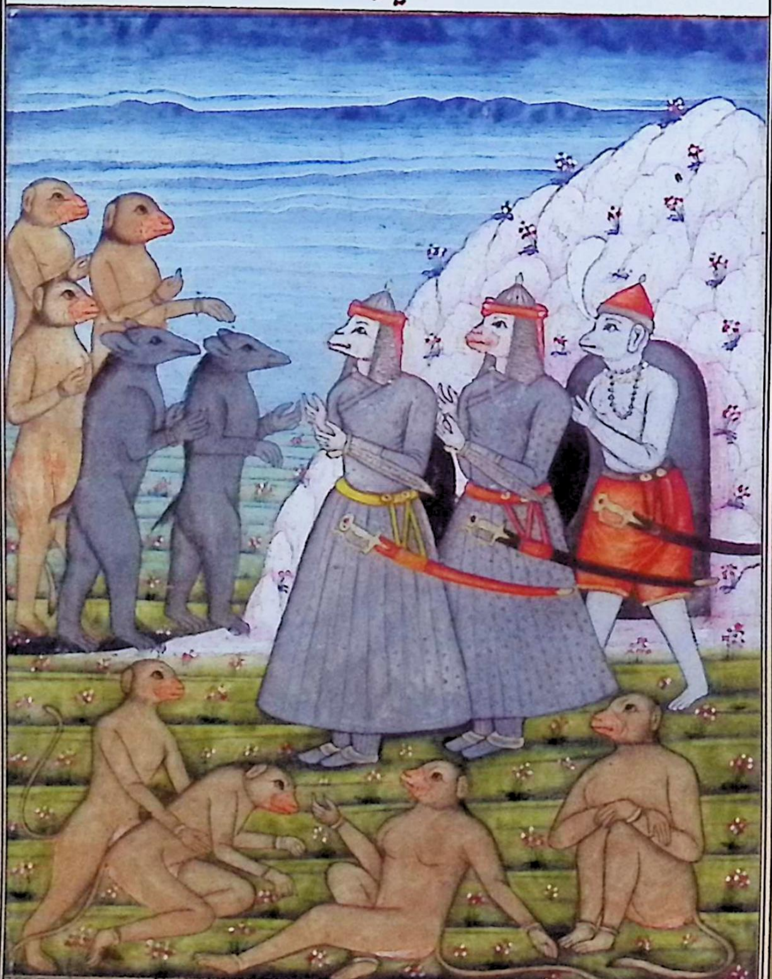

इन्द्र और सूर्य से हजारों पुत्रों ने जन्म लिया और दूसरों से भी इसी प्रकार की प्रजातियाँ उत्पन्न हुईं परन्तु दो वानर सरदार हुए, इन्द्र का पुत्र बालि, और सूर्य का पुत्र सुग्रीव, जो सबके सरदार और सबसे श्रेष्ठ हुए। वानरों आदि का पैदा होना।

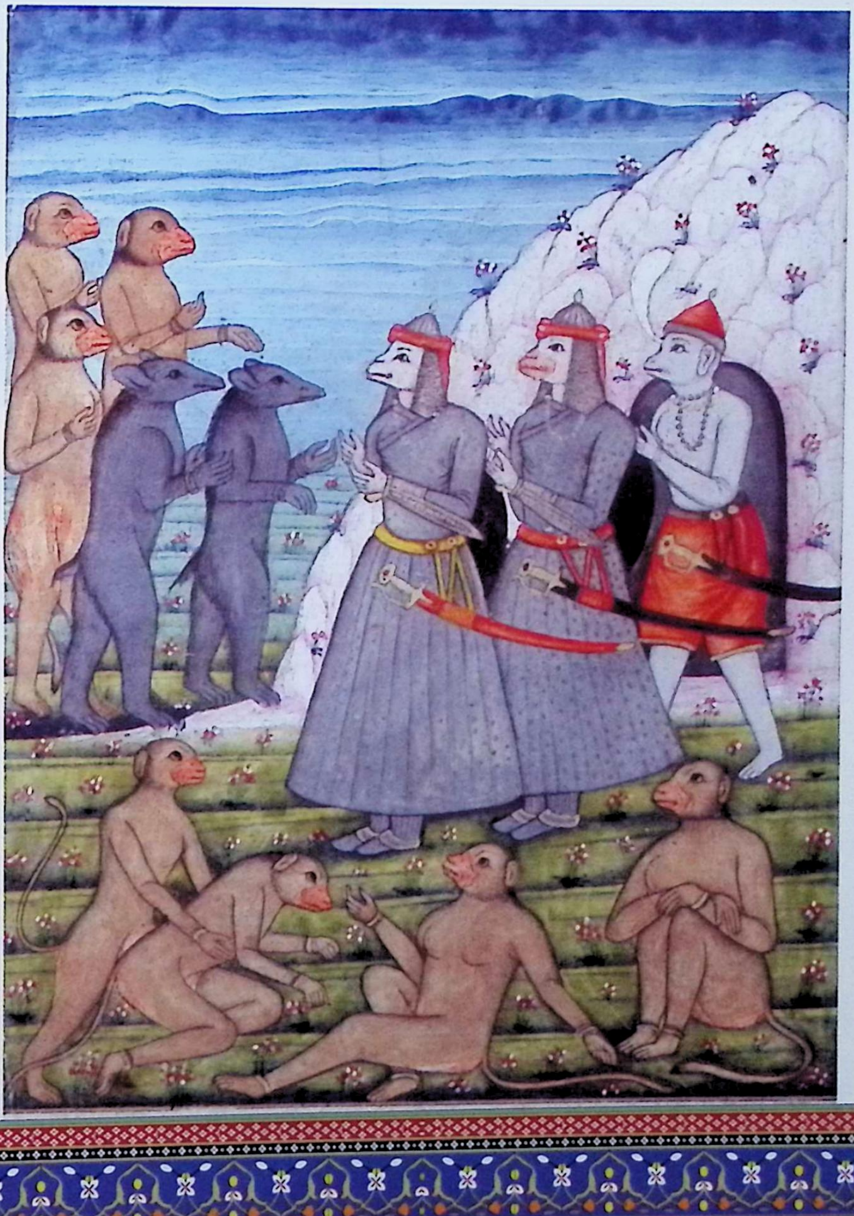

سرک گفتار **بشوامتر** بشوامتر گفتهٔ راجه شنید و از خوشی موی بر تن او برخاست
و چنان گفت ای راجه بچنین گفتن سزاواری توی که بر سر زمین سزائی زیرا که شاگرد
بشست هستی انچه در دل من کار هست آنرا البته بکن و دهرم نگاهدار بشنو من جگ
میکنم در تمام کردن آن دو راچس عارض اند و منع میکنند یکی ماریچ نام دوم سوباهو نام
و آنها در بید یعنی جای جگ گوشت و خون می اندازند و در آن کار مرا غصه کردن
لازم نیست اینچنین و بچها جگ هست و من که پناه بتو جسته ام محافظت مرا سزاواری
و آن اینست که رامچند پسر کلان را که جیغه بر سر دارد و قوتمند هست مرا بده که او
بمحافظت من سزاوار هست او با راچسان جنگ میکند و من او را چیزها میگویم بی نفاق
دل که از آن در هر سه لوک **برام** نام مشهور خواهد شد و آنها مقابل رام نخواهند
اقامت کرد و سوای او هیچکس با آنها طاقت جنگ ندارد آنها مثل هلاهل هستند
در جنگ آنرا به تیرهای رام خواهد کشت و مهر پسر در دل مگذران من میدانم
بزرگی رام یا بشست میدانند یا آنها که ریاضت میکنند در ده شب
عارضان جگ را کشته نگاهبانی جگ خواهد نمود اگر **بشست** و غیره وزرای
و کنکایش کنندگان نو بفرمایند بفرست و زود بگو و غم دل دروغ ست
این گفت و **بشوامتر** خاموش شد و راجه سر فرو کرده بود و عکس و نداها که بر سینه افتاد

सर्ग-१८

विश्वामित्र की वार्ता

विश्वामित्र ने राजा की बात सुनी, प्रसन्नता के कारण उसके शरीर के बाल (रोएं) खड़े हो गये और उसके रोम-रोम में प्रसन्नता भर गयी । उसने कहा महाराज ऐसा कहने के आप ही दोषी हैं कि आप संसार के बादशाह हैं क्योंकि आप वशिष्ठ के शिष्य हैं। मेरे हृदय में जो बात है वह आप पूरी कीजिये। मैं विष्णु-यज्ञ कर रहा हूँ उसको पूरा करने में दो राक्षस बाधा उत्पन्न कर रहे हैं एक का नाम मारीच है और दूसरे का नाम सुबाहु है। वह लोग यज्ञ के स्थान पर मांस और रक्त डाल देते हैं, इस कार्य में क्रोध करना उचित नहीं है, यज्ञ का नियम यही है। यह आवश्यक है और मैंने जो उपाय ढूँढ़ा है तो आप उसका पालन करें और वह यह है कि आप अपने बड़े पुत्र रामचन्द्र को जो सर पर चक्र रखते हैं और बलवान हैं मुझे दे दीजिये वह मेरी सुरक्षा करने के योग्य हैं। वह राक्षसों के साथ यज्ञ करते हैं और मैं बिना पक्षपात के उनके लिए यह कहता हूँ कि तीनों लोक में उनका नाम प्रसिद्ध होगा और वह लोग राम का मुकाबला नहीं कर सकेंगे। उनके अतिरिक्त और किसी में उनसे युद्ध करने की क्षमता नहीं है। वह लोग खतरनाक विष की भांति युद्ध में राम के तीरों से मारे जायेगे आप अपने हृदय में लड़के का प्रेम न लाइये। राम के गुण या तो मैं जानता हूँ या वशिष्ठ या वह लोग जो तपस्या करते हैं। वह दस रात में यज्ञ में बाधा उत्पन्न करने वालों की हत्या करके यज्ञ की सुरक्षा करेंगे । यदि वशिष्ठ आदि और आपके कार्यकर्ता कहें तो आप उन्हें शीघ्र कह दें और हृदय का दुख झूठा है। विश्वामित्र यह कहकर शान्त हो गये और राजा ने सर झुका रखा था कि उसके दाँतों की छाया उसकी छाती पर मोतियों के समान पड़ रही थी।

مانند تسبیح مروارید مینمود درخواست نمودن بشوامتر رامچندر را از راجه دشرته

وصورت نشست

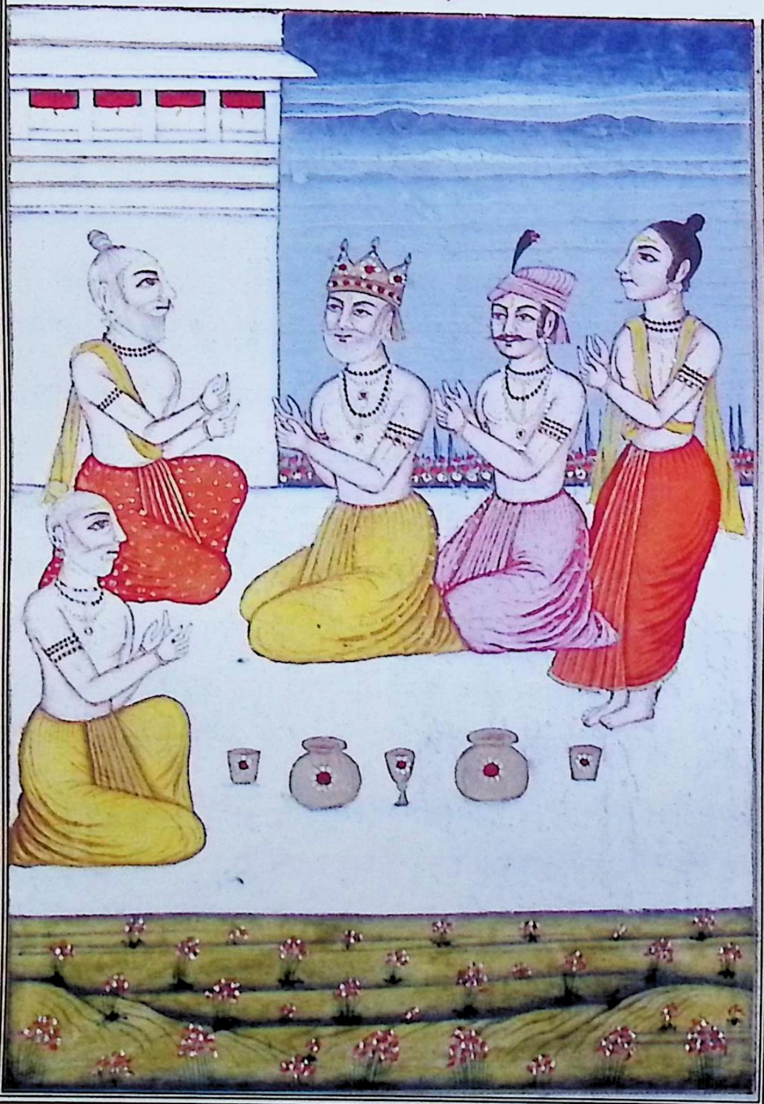

राजा विश्वमित्र रामचन्द्र और राजा दशरथ का चित्र!

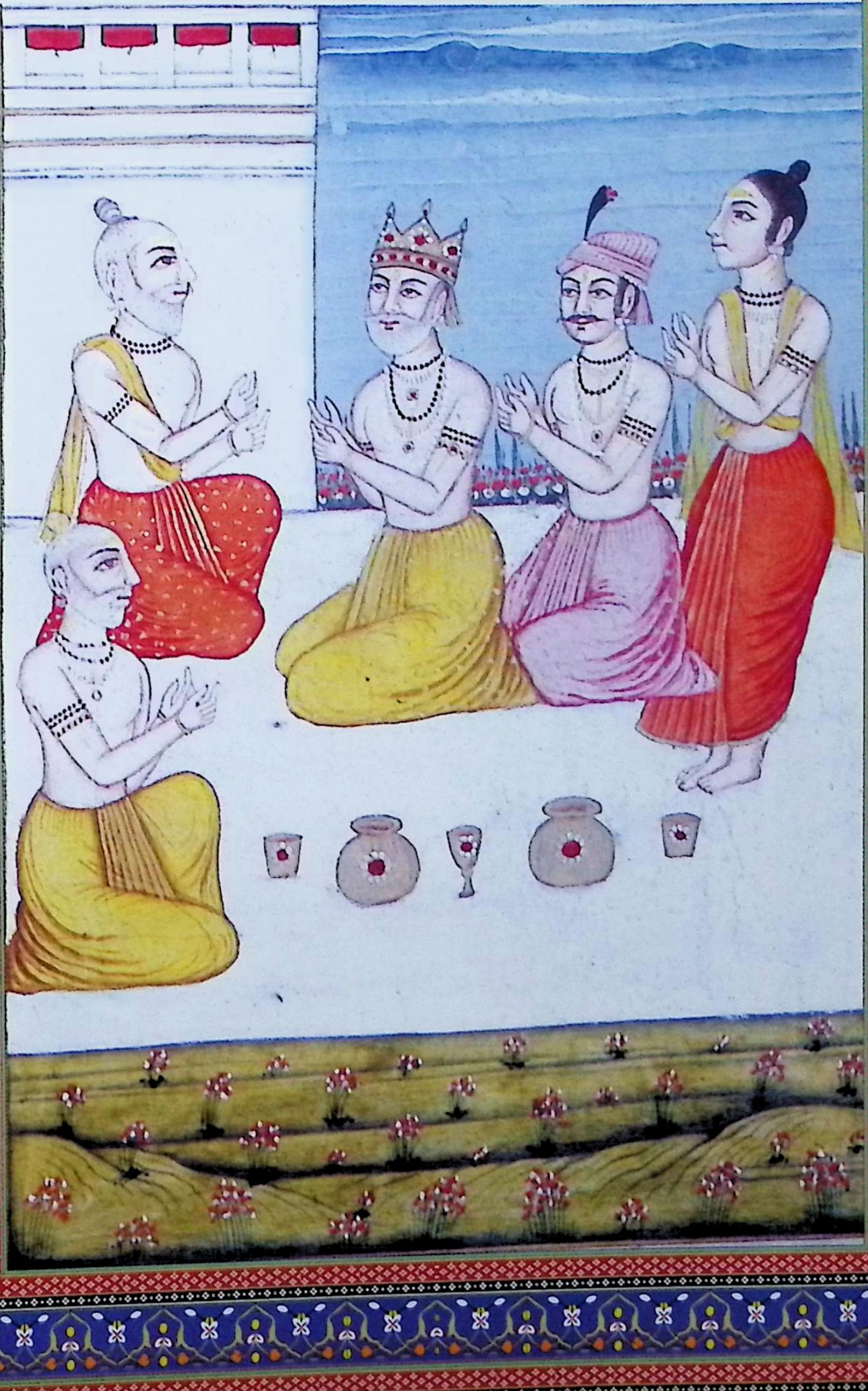

۱۶ سرگ جواب راجه دسرته گفته بشوامتر را راجه شنیده تا یکساعت بیهوش گردیده
آز بیالے چنین گفت که رامچندر که چشم او مانند نیلوفر است بعمر کم از شانزده ساله
است یعنی شانزدهم هنوز تمام نشده آین را قابل جنگ راچهسان نمی بینم این لشکر
که یک اچهوهنی بشمار کامل است آزاو آلی هنم با آنهمه با راچهسان جنگ میکنم وآین
سپاهیان قوی هیکل که سلاح دارانند و کمانها گرفته با من حفیظ گران یعنی مرشدا
اند تا که جان در تن است با راچهسان جنگ منست وآین پسر طفل است وزور وکم زور را
نمیفهمد و سلاح داشتن نمیداند و عقل کمال ندارد و نتواند که براچهسان دغاباز جنگ
کند ساعتی هم استقامت نتواند ورزید زندگی من رام است بردن را نسزاواری
و مرانه هزار سال شده است و بتصدیع تمام این فرزندان پیدا کرده ام سزاوار بردن نیستی
و در هر چهار پسر مرا این پسر بسیار عزیز است وآین کلان است و دهرتمان است این را
بردن نسزاواری اگر خواه مخواه این راهبری مرا با این چترنگ لشکر همراه ببر آن
راچهسان چه قوت دارند و پسران کیستند و چطورند و رام را با آنها مقابله باید کرد
به تیرها یا بزور این مرا شبهه است شنیده ام راون نام راچهس بسیار زور برادر کبیر [illegible]
پسر بشرو است نه البته او جک ترا عارض است در مقابله او بحرب استقامت
نتوانیم کرد بنابران بر پسران من مهربانی کن و بر من کم طالع نیز که تو مرا صاحبی

सर्ग-१६

राजा दशरथ का उत्तर

राजा विश्वामित्र की बात सुनकर थोड़ी देर के लिए वह अचेत रहे। फिर उन्होंने अनमने मन से कहा कि रामचन्द्र जिनकी आँखें नीलोफर के समान हैं उनकी आयु १६ वर्ष से कम है अभी सोलहवाँ वर्ष पूरा नहीं हुआ है। मैं उन्हें राक्षसों से युद्ध करने के योग्य नहीं समझता हूँ यह टुकड़ी जो एक पूरी छावनी है मैं उसका रक्षक हूँ। उन सब के साथ मैं राक्षसों से युद्ध करूँगा और यह दैत्याकार सिपाही जो हथियारों से सुसज्जित हैं और कमानें रखते हैं मेरी सुरक्षा करेंगे। जब तक शरीर में प्राण है मेरा राक्षसों से युद्ध होता रहेगा, यह लड़का अभी बच्चा है, बल और अबल को नहीं समझता है और हथियार लगाना नहीं जानता है उसमें अभी बुद्धि का अभाव है। यह धोखेबाज राक्षसों से युद्ध नहीं कर सकता है। थोड़े समय भी उनसे मुकाबला नहीं कर सकता। राम मेरा जीवन हैं उसको ले जाना उचित नहीं है और मुझे नौ हजार वर्ष हो चुके हैं, मैंने बड़े परिश्रम और कठिनाइयों को सहन कर यह सन्तान उत्पन्न की है, इनको ले जाना उचित नहीं है। मुझे अपने चारों पुत्रों में यह पुत्र अधिक प्रिय है। यह सबसे बड़ा है और धर्मात्मा है इसे न ले जाओ। यदि तुम फिर भी इसे ले ही जा रहे हो तो मुझे भी इस पूरी सेना के साथ ले चलो, वह राक्षस कितनी शक्ति रखते हैं, यह लड़के कौन हैं और कैसे हैं, राम को उनका मुकाबला तीरों से करना चाहिए या बल से। मुझे इसमें संदेह है। मैंने सुना है कि रावण नाम का राक्षस बहुत शक्तिशाली है वही तुम्हारें यज्ञ में बाधक है उससे युद्ध हम नहीं कर सकते इसलिये मेरे पुत्रों पर दया करो और मुझ अभागे पर भी, क्योंकि तुम मेरे मित्र हो।

دیوتا و دانوا و کندهربا و چهپا و طایران و اژدرها طاقت جنگ با راون ندارند
چه جای آدمی یا لوون نام پسر مده عارض جک تست بگوئید پسر را بجاربه او میگذارم
یا ماریچ و سوباهو پسران سند نشنند مثل جسم عارض جک توانند تا نیز پسرازا
نمیدهم یا سوای این دیگران باشد فتح نصیب خود را نمی بینم جواب راجه

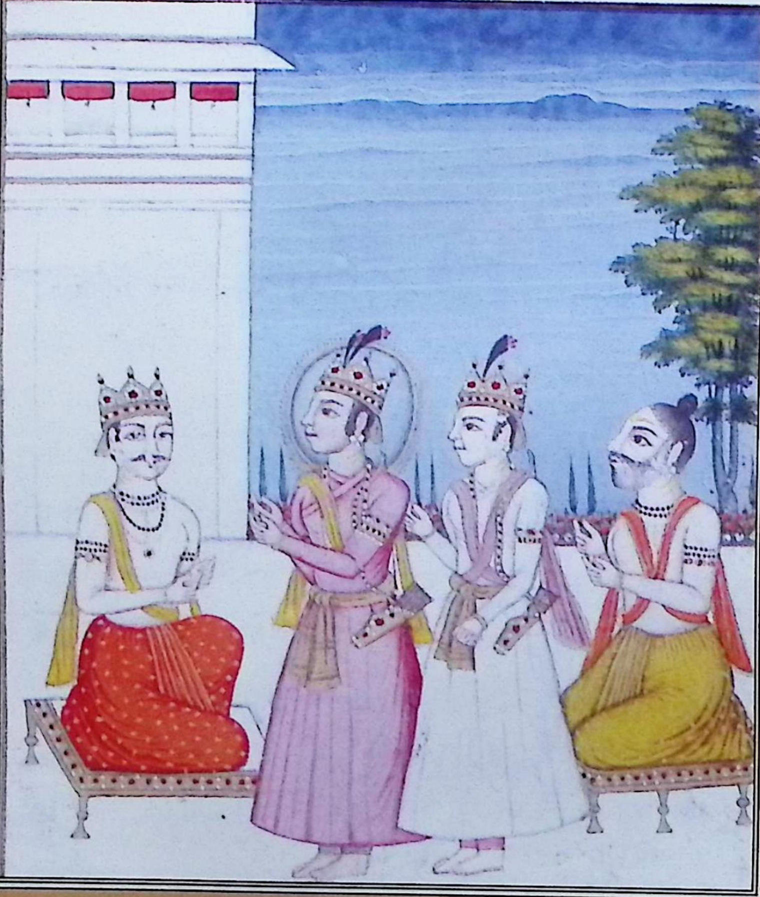

देवता, दानव, गन्धर्व, यक्षों, परिंदों, अशहदों समेत रावण के साथ युद्ध करने की शक्ति नहीं रखते हैं। यहाँ तक कि मनुष्य या लड़के का नाम मत लो वह तुम्हारे यज्ञ से अलग हैं कहो कि मैं लड़के को उससे लड़ने के लिए नहीं छोड़ूँगा या मारीच और सुबाहु लड़के हैं वह तुम्हें यज्ञ से रोक सकते है मैं उन्हें भी अपना पुत्र नही दूँगा या इसके अतिरिक्त कुछ और हो मैं अपने भाग्य में विजय नहीं देखता हूं।

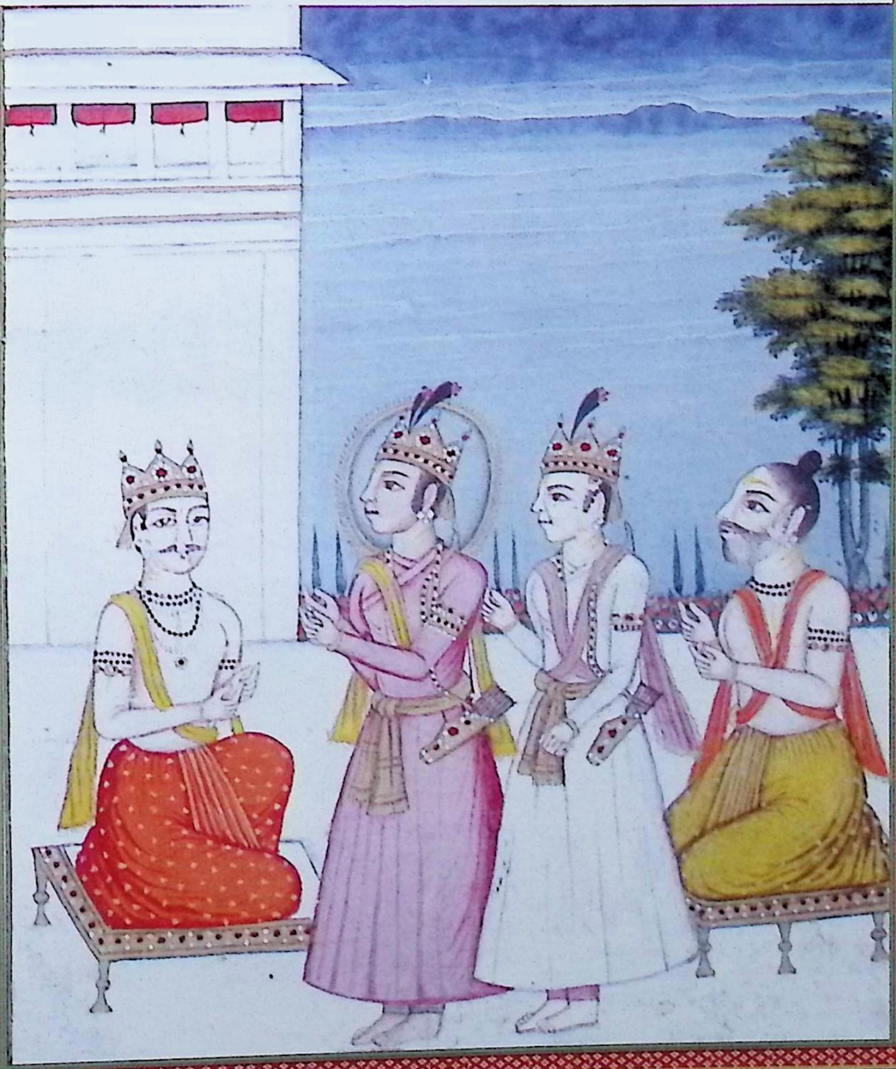

سرگ ۲۰ گفتار بشست گفته راجه مایل مهر پدری شنیده بشوامتر بغصه تمام جواب داد اول

گفتی که من مطابق آرزوی تو بعمل می آرم حالا برمیگردی در نسب راگهوان لایق نیست

ای راجه رگهو

من میروم ای پیمان شکن با اقربا بعافیت باش ازین غضب بشوامتر زمین بلرزید

و دیوتارا دهشت پدید گردید آن حالت غصه بشوامتر دانسته بشست که با تحمل

و نیک طریق هست با راجه گفت تو در نسب اچهواکو پیدا شده دهرماتما و راست

گو هستی دهرم را گذاشتن لایق نیست چهتریان را برای دهرم داشتن برهما آفریده

تو بد انسان باش امید تو میکنم این گفته پس رام را بفرست این بشوامتر بسیار عاقل است

و رایض است و این استرها گونا گون میداند در سوالید ها کسی دیگر انچنان نمیداند این قبل ازین کرشاسو

را استر داد و او را پسران مثل دیوتاها شدند از جیا و سوپربها دا جهانی بنجاه صد پسران پیدا گشتند

یعنی دختران راجه دچه

برای کشتن لشکر دشمنان کامروپی و از جیا بنجاه و صد پسر دیگر شد اینطور بشوامتر است جواب بشوامتر بغصه

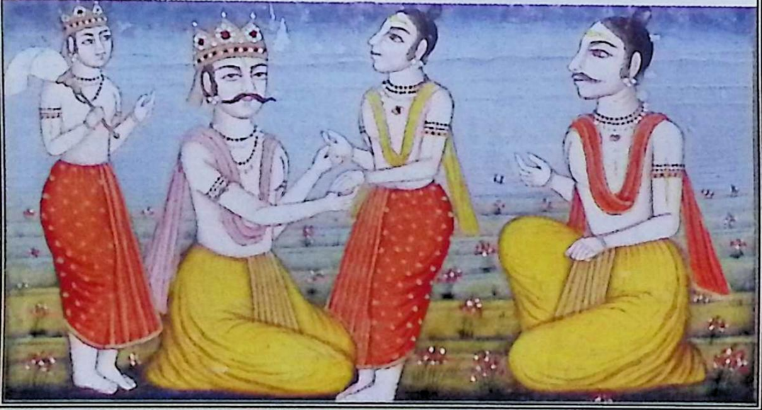

सर्ग-२०

विशिष्ठ की वार्ता

पिता के प्रेम से परिपूर्ण राजा की बात सुनकर विश्वामित्र ने बड़े क्रोध से उत्तर दिया तुमने पहले कहा था कि मैं आपकी इच्छानुसार कार्य करूँगा अब तुम अपनी बात से पलट रहे हो, मैं जा रहा हूँ तुम पूरे सम्मान के साथ सुरक्षित रहो। विश्वामित्र के क्रोध से पृथ्वी कांपने लगी देवताओं में भी भय व्याप्त हो गया। विश्वामित्र के यह क्रोध वाली दशा देखकर वशिष्ठ ने जो कर्मशील और अच्छे चाल चलन वाले हैं राजा से कहा कि आपके परिवार में पैदा हुए हैं, आप धर्मात्मा और सत्य बोलने वाले हैं। धर्म छोड़ना उचित नहीं है, क्षत्रियों को धर्म की रक्षा के लिए उत्पन्न किया है आप बुरे मनुष्य न बनें। मुझे आपसे आशा है उसके कहने पर राम को भेज दीजिये यह विश्वामित्र बहुत बुद्धिमान हैं और तपस्या करने वाले हैं। यह भांति-भांति के अस्त्र जानते हैं। जन्म लेने वाले लोगों में कोई दूसरा वैसे अस्त्र नहीं जानता है उसने इससे पहले कृशाश्व को अस्त्र दिया उसके देवताओं जैसे पुत्र हुए। जया और सुप्रभा आदि से एक सौ पुत्र पैदा हुए जो शत्रुओं की सेना को किसी प्रकार हत्या करने के लिए और जया से डेढ़ सौ दूसरे लड़के हुए। विश्वामित्र ऐसे हैं।

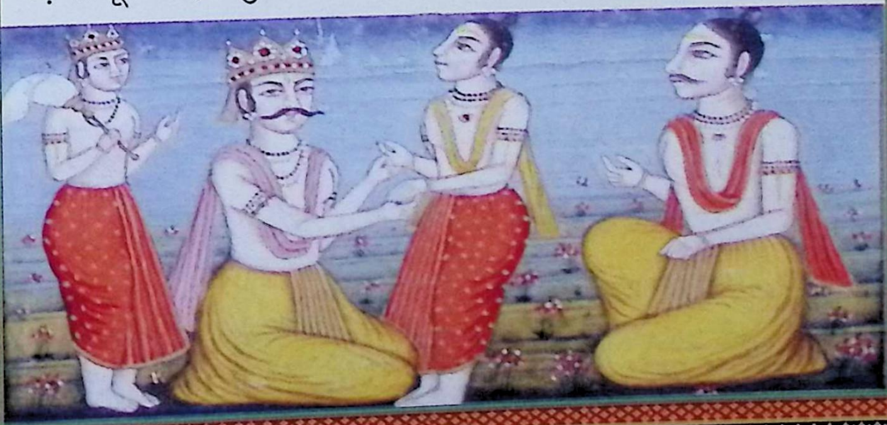

سرگ ۲۱ طلب داشتن و رفتن رام و لچهمن همراه بشوامتر از این سخن بشست راجه دشرته خوشحال
شده رام را با لچهمن طلب داشت بعد از ان مادر و پدر دعا کردند و پروهت چیزی خواند
و سر هردو را بوسیده به پسر کوشک که بشوامتر باشد دادند آنحالت را دیده دیوتا و گندهرب
گلها باریدند و در آسمان پتبه یعنی کوس نواختند و آواز بلند خرمهره و نقاره بآواز آمد
پیش پیش بشوامتر روان شد عقب او رام که جیغه بر سر دارد و همچنین در پس پشت او
لچهمن چون دو کروه راه جنوب رویه دریای سرجو طی کردند بشیرین زبانی بشوامتر گفت
ای رام آب در دست بگیر تا وقت نگذرد و منتر یعنی افسون و گرام او بگیر ترا تصدیع
نخواهد شد و نه پیر خواهی گشت و حسن تو نخواهد رفت و ترا در خواب یا در مستی
راچهسان نخواهند گرفت و مثل تو بقوت در هر سه لوک کس نخواهد شد
و طالع تو و زور تو و عقل و کمال کم نخواهد گشت و این منتر را گرفته نظیر تو
بقوت و همه دانی کسی نخواهد بود و تشنگی و گرسنگی ترا بعد یکماه روی خواهد نمود
و دو بیدیا که مادر لوک اند و دختران برهما آنرا که بمثل تو دهر ما تمان نیست میدهم
اینهم بگیر و هنر بی شک در نیست از ریاضت پیدا کرده شد تمام روشنی است
بعد از ان رام پاک شده دست بسته آنهمه از رکهه مهربان دل بگرفت
آنشب همانجا منزل ساختند و با یکدیگر بگفت را افسانه هائی خوش آینده پرداختند

بشست

सर्ग-२१

राम व लक्ष्मण को बुलाना और उनका विश्वामित्र के साथ जाना

वशिष्ठ की इस बात से राजा दशरथ ने प्रसन्न होकर राम को लक्ष्मण सहित बुलाया इसके बाद माता पिता ने प्रार्थना की पुरोहितों ने कुछ पढ़ा और दोनों का माथा चूमकर कौशिक के पुत्र विश्वामित्र को दे दिया। वर्षा की और आकाश में नक्कारे बजाए और तीव्र ध्वनि के साथ खरमुहरह और नक्कारे निकले आगे-आगे विश्वामित्र चले उसके पीछे राम जो सर पर काक पक्ष रखे हुए थे और उसी तरह उनके पीछे लक्ष्मण चले। जब सरयू नदी के दक्षिण की ओर डेढ़ योजन की यात्रा कर ली तो विश्वामित्र ने बड़ी मधुरता से कहा राम हाथ में पानी लो ताकि समय न बीते और मन्त्र अर्थात् अफसो आदि ले लो तुम्हें कठिनाई और सरदर्द न होगा और न तुम बूढ़े होंगे। तुम्हारा सौन्दर्य समाप्त नहीं होगा और राक्षस तुम्हें निद्रा या मस्ती में नहीं पकड़ सकेंगे और तीनों लोक, पृथ्वी, आकाश, वायु में शक्ति में तुम जैसा और कोई न होगा। तुम्हारा भाग्य, तुम्हारा बल और तुम्हारी बुद्धि और तुम्हारा यश कम नहीं होगा। यह मन्त्र लेकर कि शक्ति में और बल में तुम्हारे समान और कोई न होगा, भूख, प्यास का तुम्हें एक महीने बाद आभास होगा और विद्या जो कि हम ब्रह्म लोक में हैं तथा ब्रह्मा की लड़कियाँ जो तुम्हारी तरह धर्मात्मा नहीं हैं तुम्हें देता हूँ। उनको भी ले लो और गुण उसमें नहीं है तपस्या से उत्पन्न की गयी है। सारा प्रकाश है उसके बाद राम ने पवित्र होकर हाथ जोड़कर उन सारी वस्तुओं को ऋषि की ओर से स्वीकार तथा किया उस रात्रि वहाँ निवास किया और एक दूसरे से अच्छी-अच्छी बातें करते रहे।

بشست منی تسلی راجه میکند و رامچندر و لچهمن را رخصت میدهاند و بسوامتر غصه میکند

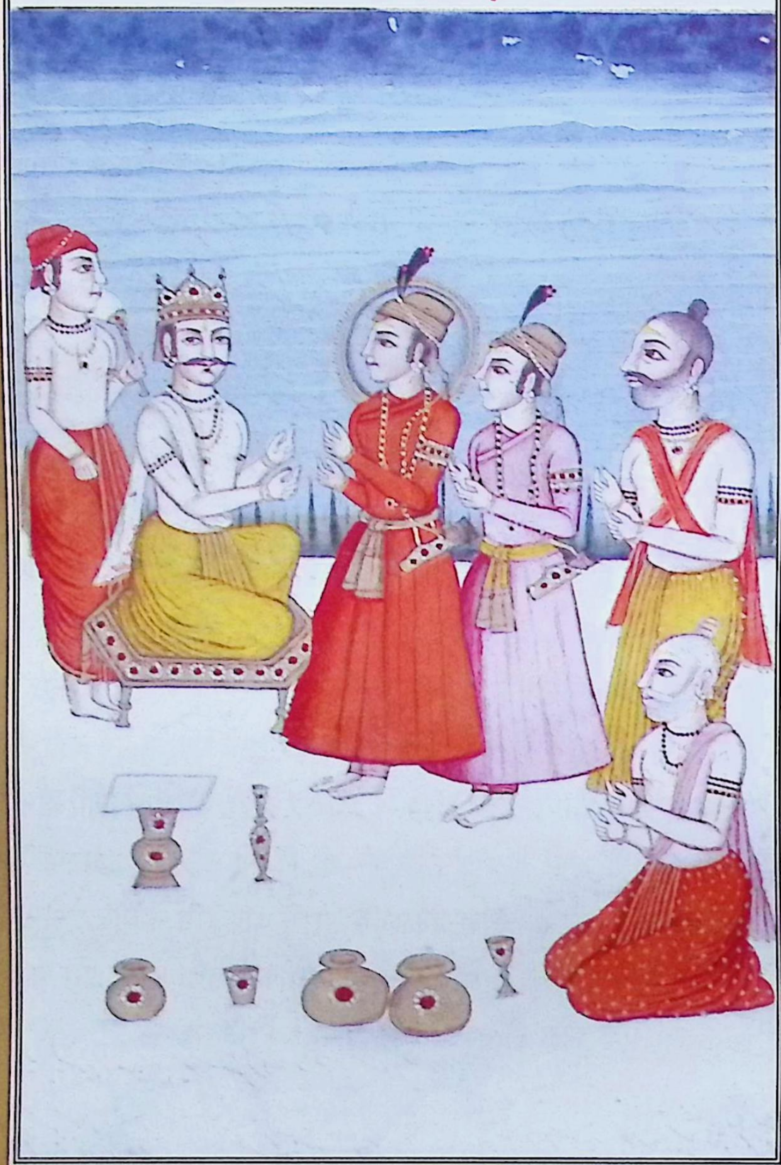

वशिष्ठ राजा को सांत्वना देते हैं अन्य लोग रामचन्द्र और लक्ष्मण को विदा कर रहे हैं और विश्वामित्र क्रोध कर रहे हैं।

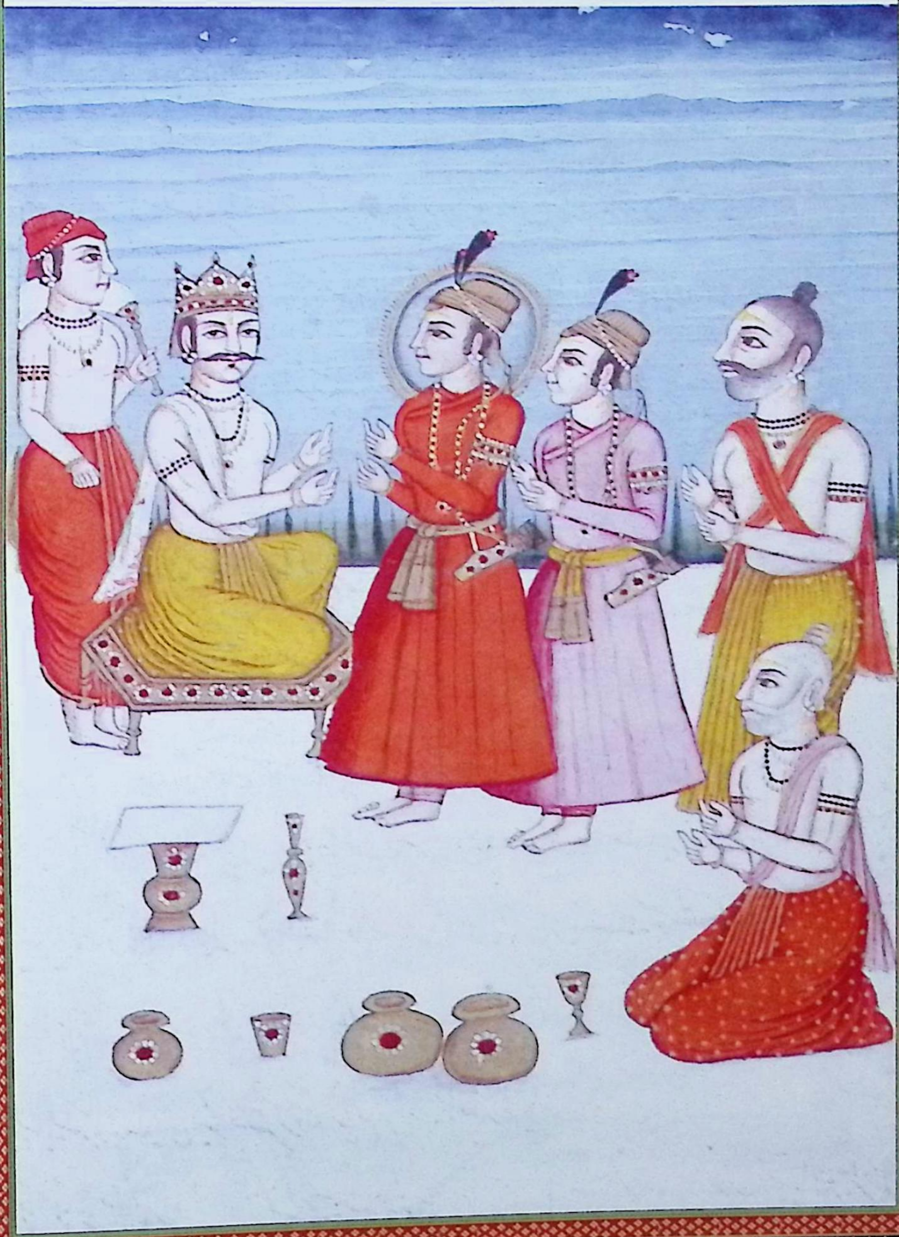

سرگ ۲۲ بیان احوال کام صبح آن شب بشوامتر مهارکهه به رامچندر که برگ درخت
گسترانیده برو خواب کرده بود گفت ای پسر کوشلا عبادت صبح پوربَ سندها شد تو برخیز
و صبح جپ یاد کن گفته رکهه را که دلخواه هست رام شنیده غسل کرد و لچهمن هم بعده
جپ نموده بشوامتر را نمسکار کرده تبلی راه مشغول شدند در اثنای راه گنگا را دیدند
با سرجو سنگم اتصال شده یعنی یکجا گشته رفته درانجا هزاران مکان منیشران را دیدند آنرا
دیده رام لچهمن هردو از بشوامتر پرسیدند آنمکان خوب کیست و این را والی
کدام هست گفته آنهارا استماع نموده بشوامتر گفت کندرپ یعنی بشهوت او صورتی
گرفته ریاضت مهادیو را درینجا مانع شد مهادیو ویرا از غضب بسوخت و کالبد او
پاره پاره کردید و نزدیک کوه هماچل افتاد چون صورت کندرپ یعنی کام
غایب گشت اننگ یعنی بی شکل بلا جسم نام گرفت اینجا همانست که او کالبد گذاشت این بن
اینجا که او مکان داشت بزرگ و دهرماتما و بی عذاب اند امشب همین جا اقامت کنیم
این دریای پاک را فردا عبور میکنیم ایشان درهمین گفت و شنید بودند که منیشران
بچشم ریاضت بسیار دانسته بدیدن ایشان رسیدند ارگهه و پاد آوردند و اعزاز
پسر کوشک یعنی بشوامتر کردند رام و لچهمن را بعد ازان اکرام بجا آوردند افسانه گویان آنشب درانجا
گذرانیدند رامچندر حنفیه سرگ لچهمن عقب او هردو سلاح بسته مکان منیشران همراه بشوامتر ببینند

اوقات عبادات هنودان
سه اند اول پوربا سندها
دوم مدهیان سنده
یعنی عبادت دوپهر سیوم
پچهما سندها یعنی عبادت
وقت غروب آفتاب

सर्ग-२२

उस रात वाली सुबह के कार्यों के वर्णन में विश्वामित्र महर्षि ने जो वृक्ष का पत्ता बिछाकर उसी पर सोये थे रामचन्द्र से कहा- कौशल्या के पुत्र ! पूर्व संध्या हो रही है तू भी उठ और सुबह का जप कर। ऋषि की प्रिय बात सुनकर राम ने स्नान किया और उसके बाद लक्ष्मण ने उठकर विश्वामित्र को नमस्कार किया। उसके बाद यात्रा आरंभ की इसी बीच मार्ग में गंगा को देखा कि सरजू के साथ संगम होकर अर्थात् एक साथ दोनों बह रही हैं। वहाँ हजारों घर देखे उन्हें देखकर राम लक्ष्मण दोनों ने विश्वामित्र से पूछा कि यह सुन्दर भवन किसके हैं और उनका मालिक कौन है ?उनकी बात सुनकर विश्वामित्र ने कहा कि कन्दर्प अर्थात् इच्छा ने एक रूप अपना लेकर यहाँ महादेव की तपस्या में बाधा बनी। महादेव ने उसे क्रोध से जला दिया और उसका शरीर टुकड़े-टुकड़े हो गया तथा हिमाचल पर्वत के निकट जा पड़ी। जब कन्दर्प की मूर्ति गायब हो गयी तो उसने बिना रूप के नाम पकड़ा यह वही स्थान है जहाँ उसने अपना रूप छोड़ा था। यहाँ के मुनि जो बड़े घर रखते हैं यह मुनि लोग धर्मात्मा और निर्दोष हैं। आज रात हम यहां निवास करेंगे और इस पवित्र नदी को कल पार करेंगे यह लोग इसी वार्ता में व्यस्त थे कि मुनीश्वरों ने तपस्या के नेत्र से उन्हें भलीभांति जानकर उनको देखने के लिए पहुँच गये। अर्घ्य और पाद्य लाए और कुशिक के पुत्र अर्थात् विश्वामित्र का सम्मान किया उसके बाद राम लक्ष्मण का सत्कार किया। उस रात वहाँ कुछ मुनियों को छोड़ गये। रामचन्द्र ने सिर से प्रणाम किया और उसके बाद लक्ष्मण ने हथियार सजाए और दोनों हथियारों से सुसज्जित होकर विश्वामित्र के साथ मुनीश्वरों का आश्रम देखने गये।

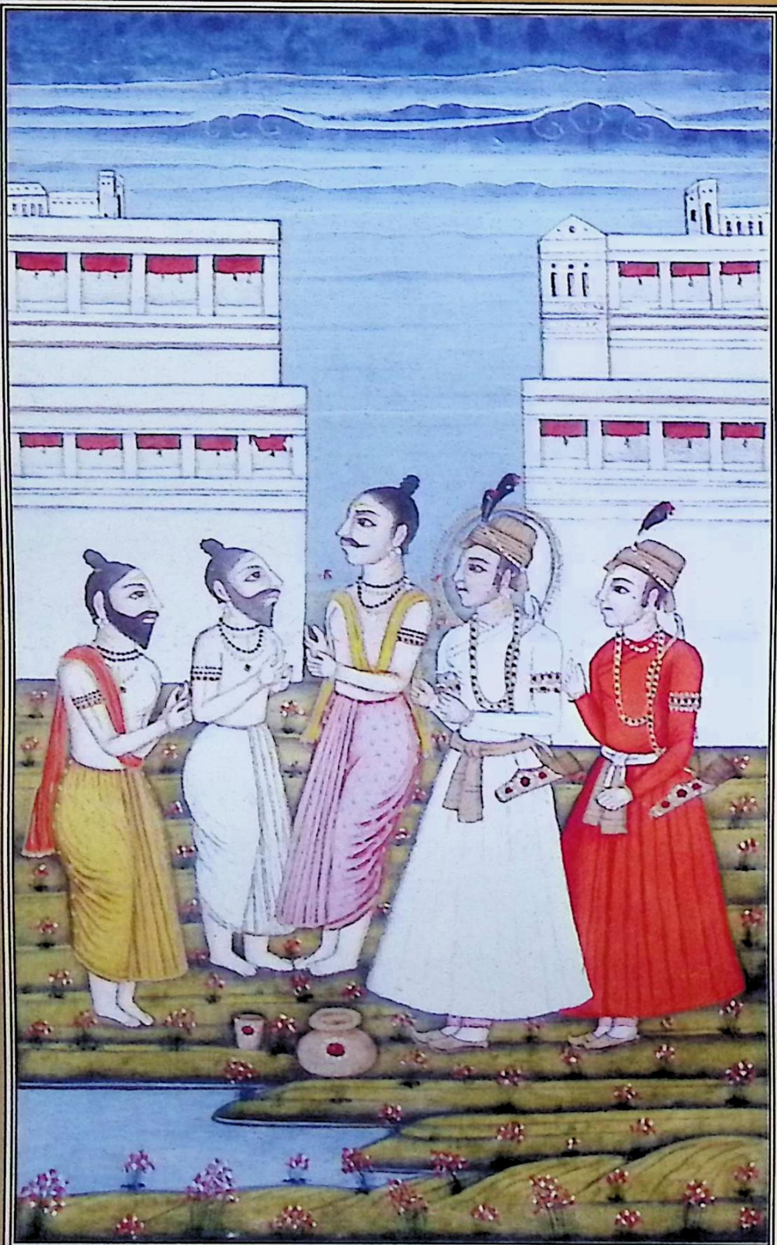

61

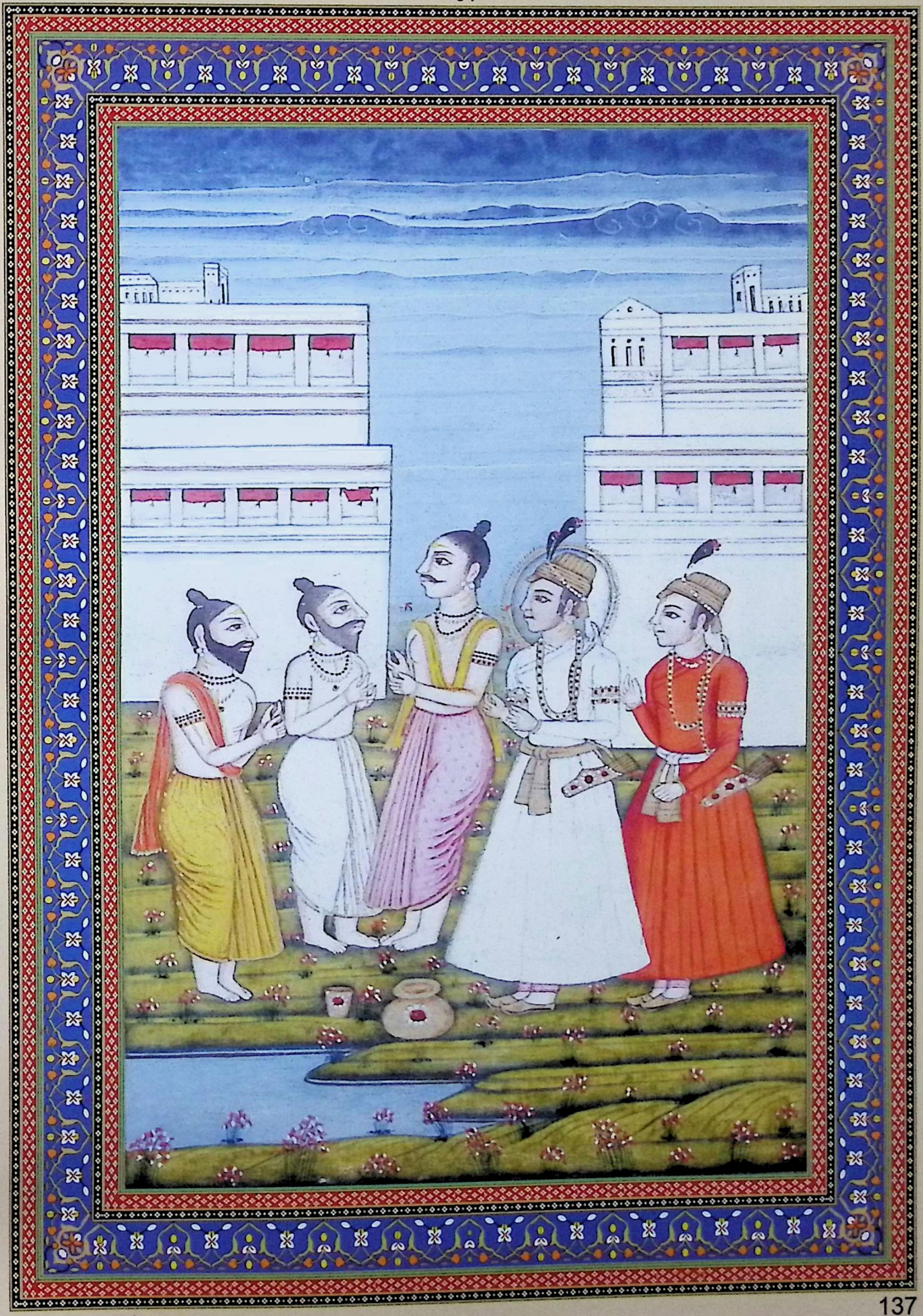

کیفیت ۲۳ احوال سرجو وغیره پس از ان صبح رام و لچهمن سنندها صبح کرده **بشوامتر** را
پیشوا نموده نزدیک دریای سرجو رسیدند و جمیع رکهیشران آفتاب ضیا آمدند
نیز همکنان قریب کشتی گردیدند و گفتند که تو اول در کشتی با پسران راجه بنشین و براه
نیک برو بسرعت تا وقت نگذرد **بشوامتر** اجابت کرده با جازت آنها بعبسر نشسته
بعبور سرجو اشتغال کردند رامچندر با بین دریا برکهه پرسید در روانی آب این آواز
چیست گفته رام شنیده خوشوقت گردیده احوال آنرا به بیان در آورد که در کوه
کیلاس تالابی است که برهما از من یعنی دل خود پرداخته و مانسرور نام ساخته و از میان آن دریا
تیار ساخته
جاری گشته چون آن سر تالاب خوانند و جو بیرون رفته را آن زبان رانند بنا بر آن سرجو نام
یافته چون بگنگا باهم روانی مینماید لهذا این آواز می برآید این را پرنام یعنی نمسکار کنین آنرا
سخن رام و لچهمن بر دو گنگا و سرجو هر دو را پرنام کردن گرفتند و بجنوب دریا رفتند
بیابان وحشت ناک دیدند هر طرف نظر کرده از من پرسیدند این هامون پر شغب جانوران
پرشور و خوف ناک از کیست گفته آنها را شنیده **بشوامتر** گفت بشنوید کسی را که این صحرا است
قبل ازین دو راجه بودند یکی **مالو** دوم **کروکهه** اصل اینست چون بیشتر برتراجس اندر را بکشت
و برهم هتیا بدو عاید گشت دیوتا و رکهه ها **اندر** را با آب پاک اینجا غسل کنانیدند در اینجا دیوتا
مالو و کروکهه یعنی خاک و گل را انداختند **مالو و کروکهه** اسم ساختند دیوتا بر دادند این راجها

بالو

सर्ग-२३

सरजू नदी आदि की कथा

इसके पश्चात् एक एक दिन व्यतीत करते हुए राम और लक्ष्मण विश्वामित्र की अगवाई में सरजू नदी के निकट पहुंचे और सूर्य के पुजारी सभी लोग एकत्र हो गये । सबने नाव के निकट जाकर कहा कि पहले आप नाव में राजा के पुत्रों के साथ बैठिये और शीघ्रता से सीधा रास्ता पकड़िये ताकि अधिक समय न लगे। विश्वामित्र ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और उनकी अनुमति से नाव में बैठकर गंगा नदी को पार किया। रामचन्द्र ने नदी के मध्य में ऋषि से पूछा कि पानी के बहाव में यह ध्वनि कैसी है राम की बात सुनकर और उससे प्रसन्न होकर उन्होंने इसका कारण इस प्रकार बताया कि कैलाश पर्वत पर एक तालाब है, जिसे ब्रह्मा ने स्वयं अपने हृदय से बनाया है। मानसरोवर नाम रखा है और उसके अन्दर से दरिया निकाला है चूँकि उसके तालाब को 'सर' कहते हैं और बाहर निकले हुए भाग को 'जू' कहते है इस कारण से इसका नाम सरजू पड़ा। चूंकि गंगा से जाकर मिलती है इसलिए यह ध्वनि निकलती है इसको प्रणाम नमस्कार करो। यह बात सुनकर राम और लक्ष्मण दोनों ने गंगा और सरजू दोनों को प्रणाम किया और नदी के दक्षिणी किनारे की ओर गये, वहाँ भयानक जंगल देखा। चारों ओर देखकर मुनि से पूछा कि पशुओं की यह भयानक आवाजें और कोलाहल कैसा है ?विश्वामित्र ने उनकी बात सुनकर कहा कि सुनो जिनका यह वन है उससे पूर्व दो राजा थे एक मलद दूसरा करूष मूल यही है जब बहुत पहले वृत्रराक्षस को इन्द्र ने मार डाला और उन पर हत्या का आरोप लगा तो देवता और ऋषियों ने इन्द्र को यहाँ स्वच्छ जल से स्नान कराया, वहाँ देवता ने मलद और कारूष अर्थात् मिट्टी और राख को साफ कर इसका मलद और करूष नाम रखा। देवताओं ने प्रार्थना की कि

به تاتو و گردکه شهرت خواهند یافت بعد از مدتی عورتی از پچهی بد طریق که
قوت ده هزار فیل دارد و بتاڑکا نام موسوم است اهلیه سنند نام راچهس میشود
و ماریچ نام پسر او میکرد و این هردو ملک را او خراب ساخته اینک دو گروه از راه
اقامت دارد که آنجا نباید رفت آنیقد کیفیت این صحرا را گفته آمد بشوامتر
وغیره رکهان و رامچند رو لچهمن بر کشتی بسیر عبور سرجو میکنند

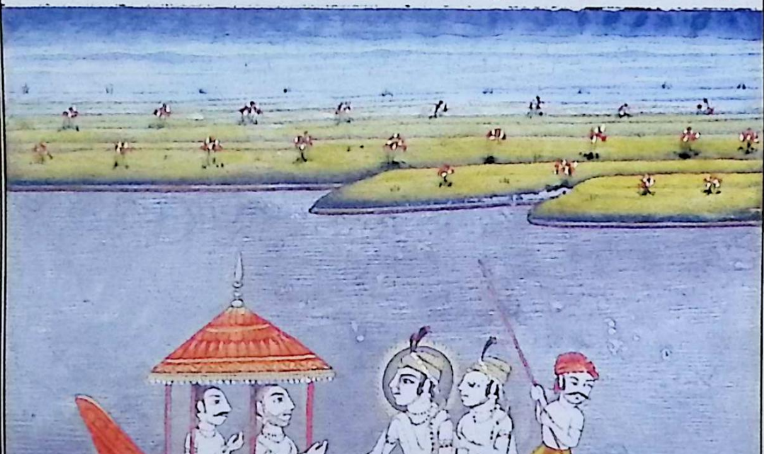

यह राजा मलद और करूष नाम से प्रसिद्धि पायेंगे। उसके लम्बे अंतराल के बाद एक यक्षिणी (एक स्त्री) जो एक हजार हाथियों का बल रखती थी जिसका नाम ताटका है, जो सुन्द नामक राक्षस की पत्नी है और मारीच उसके पुत्र का नाम है उन दोनों ने मिलकर देश को तहस नहस और उजाड़ कर रख दिया है। वह यहां से डेढ़ योजन (छः कोस) की दूरी तक घेर कर रहती है लेकिन वहां नहीं जाना चाहिए तुमसे इस जंगल का विस्तार से वर्णन कर दिया है।

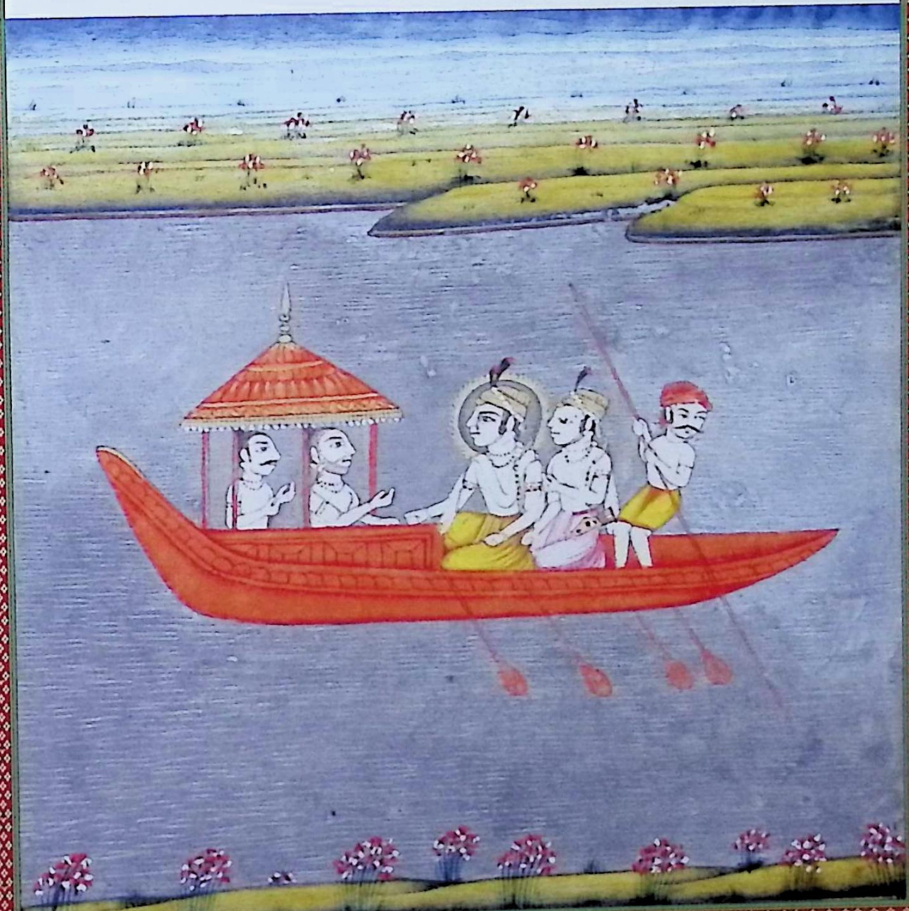

रामचन्द्र और लक्ष्मण सरजू नदी को नाव से पार करते हुये।

۲۴ **سرگشتن تاڑکا** گفته رکهه را شنیده رام گفت ای منیشر جگت‌پتان همیشه کم‌زور
شنیده میشوند این عورت را قوت ده هزار فیل چگونه باشد بشوامتر گفت این
از سبب دادن بر است قبل ازین سوکیت نام مهاجچهه بود اولاد نداشت برای فرزند
ریاضت میکرد از مهربانی برهما او را دختر تاڑکا نام داد که او را قوت ده هزار فیل است
چون او جوان گردید بانعقاد وازدواج سُند پسر گنبه درآورد و بعد از چندی
او پسر زایید ماریچ نام راچهس آن پسر و مادر پیوسته بگرفتن اگست رکهه میدویدند اگست
ماریچ را شاپ داد که تو راچهس بشو و از طیش تاڑکا گفت که تو هم مردم‌خواره و بدصورت
و بدرو خواهی شد او صورت خوب گذاشته بدشکل گشته نام ملک جای اگست
خراب کرد این را برای صواب و رحمت برگاو ماده و برهمن بکش این راچهس مردن خواند گشت
بغیر تو و ترا عذاب کشتن عورت نخواهد شد زیرا که پسران راجه را انگو خواه هر چهار برن باید شد
شنیده شد قبل ازین دختر بروچن دیر کهه جیوا نام که مخوف رود هن او شل آتش قیامت
بود برای خوردن تمام زمین آمد اندر او را کشت و پیش ازین مادگیت که برای دور کردن
اندر آمد دشمن هلاک ساخت بدتیان دیگر راج رکهیان دهرماتما عورات ادهرم خواهان را
کشتند و از دست کشتن این مردمان امین خواهند شد گفته بشوامتر را شنیده رامچند
دست بسته گفت مرا پدر من فرموده که ترا گفته رکهه البته باید کرد از گفته تو شک نیست من تاڑکا را خواهم کشت

सर्ग-२४

ताटका का मारा जाना

ऋषि की बात सुनकर राम ने कहा हे मुनीश्वर ! सदा से कमजोर सुनी जाने वाली उस स्त्री में एक हजार हाथियों की शक्ति कैसे हो सकती है ?विश्वामित्र ने कहा यह आशीर्वाद देने के कारण से है। इससे पहले सुकेतु नामक यक्ष था उसके कोई सन्तान नहीं थी। वह पुत्र प्राप्ति के लिए तपस्या करता था। ब्रह्मा ने उस पर दया करते हुए उसे ताटका नाम की पुत्री दी, जिसके अन्दर एक हजार हाथियों की शक्ति है। जब वह वयस्क हुई तो उसने उसका विवाह जम्भ के लड़के सुन्द के साथ कर दिया। कुछ समय बाद उसने मारीच नामक राक्षस को जन्म दिया। वह माँ बेटे सदा अगस्त्य ऋषि को क़ैद करने के लिए प्रयासरत रहते थे। अगस्त्य ने मारीच को शाप दिया कि तू राक्षस हो जा और क्रोध से ताटका से कहा कि तू भी कुरूप हो जायेगी। वह अपना अच्छा मुखड़ा छोड़कर कुरूप हो गयी। समस्त दैत्य अगस्त्य का आश्रम खराब करने लगे। उसको बरका और स्त्री ब्राह्मण के भरोसे छोड़ दिया। रघुनन्दन! उसे तेरे अतिरिक्त कोई पुरुष हत्या नहीं कर सकेगा और तुझे किसी स्त्री की हत्या करने का पाप नहीं लगेगा क्योंकि राजा के पुत्रों को चारों वर्णों का शुभचिन्तक होना चाहिए। सुना गया है कि इससे पूर्व विरोचन की पुत्री बड़ी जीभ वाली थी उसका नाम अग्नि जिह्वा (मन्थरा) था। वह इतनी भयानक थी कि उसका मुख प्रलय की अग्नि के समान था वह पूरी पृथ्वी को खाने के लिए आयी थी इन्द्र ने उसे मार डाला। इससे पूर्व शुक्राचार्य की मां थी जो इन्द्र की हत्या करने आयी थी। विष्णु ने उसकी हत्या कर दी। इसी प्रकार दूसरे धर्मात्मा राजर्षियों ने बुरी औरतों की हत्या कर दी और उसकी हत्या से लोग सुरक्षित हो जायेंगे। विश्वामित्र की बात सुनकर रामचन्द्र ने करबद्ध निवेदन किया कि मेरे पिता ने यह आज्ञा दी है कि ऋषि की बात अवश्य मानना। आपके कहने से मुझे सन्देह नहीं है, मैं ताटका का वध करूंगा।

این بگفت و کمان را در دست گرفته زه کرد از شور آن مکان را پر شغب نمود از آن شور

کمان

مردم آنجا ترسیدند تارکا بغصه تمام روان شده از آنجا که آن شور بر آمده بود رسید اورا

رامچندر دید به لچهمن گفت ببین لچهمن چه شکل قبیح و خوفناک دارد که از دیدن او

جگر نامردان میدرد حالا از کشتن من پاک شده جگر دریده بر زمین می خسپد در همین اثنا

تارکا هر دو دست برداشته شور کرده بسمت رام دوید رامچندر او را بیک تیر زده

بر زمین انداخت و هلاک ساخت از آن کشته دیده دیوتاها آفرین کردند و به بشوامتر گفتند آفرین باواز نیکا

رفتنه

ما را خوشوقت گردانید استران پسران پرجاپت و کرشاسو برام بده قابل دادنست این بگفتند و دیوتا

راجه جیان نام راجه

بشوامتر شستر ها کرد و از کشتن تارکا خوشوقت شده سر رام را بوسید و گفت ای رام امشب همین جا باشیم

اقسام و اوهن استران کرد

ایمکان از فرموده من بسیدها آشرم نام مشهور خواهد شد و صبح خواهیم رفت کشتن رام تارکا راجهی او بشوامتر

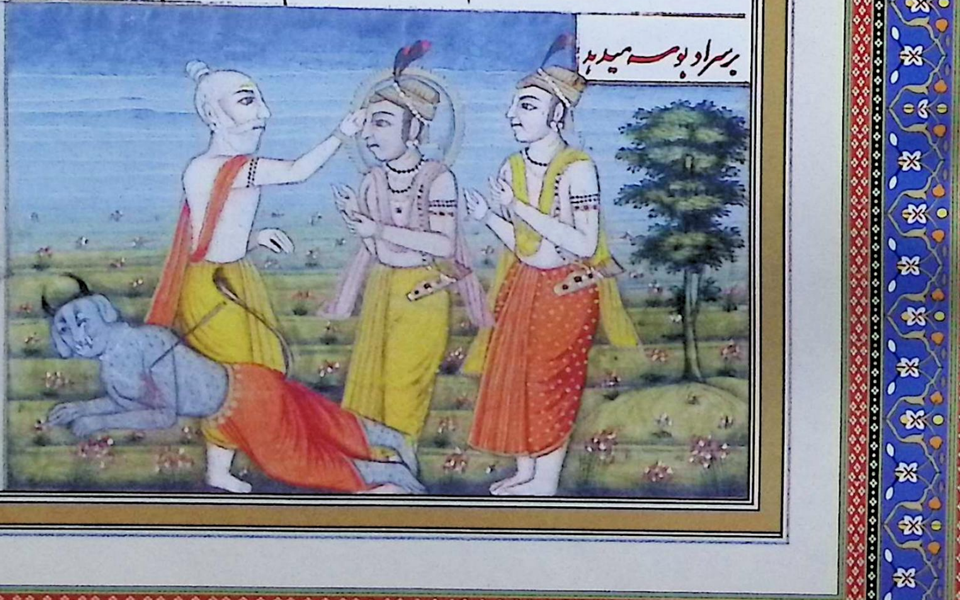

بر سر او بوسه میدهد

यह कहा और कमान हाथ में लेकर चिल्ला (प्रत्यंचा)पर चढ़ा दिया। कमान की ध्वनि से वह स्थान गूँजने लगा उसकी ध्वनि से वहाँ के लोग डर गये। ताटका पूरे क्रोध में चली और जहां से ध्वनि हो रही थी वहाँ पर पहुँची। उसे देखकर रामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा, लक्ष्मण देखो उसका मुखड़ा कितना भयानक है जिसको देखकर कापुरुषों का हृदय काँपता है अब मेरे मारने से यह पवित्र होकर अपना हृदय फाड़कर पृथ्वी पर सो रही है। इसी मध्य ताटका दोनों हाथ उठाकर ध्वनि करती हुई राम की ओर दौड़ी रामचन्द्र ने एक तीर मारकर भूमि पर गिरा दिया और उसकी हत्या कर दी। उसको मृत देखकर देवताओं ने सराहना की और विश्वामित्र से कहा कि इस कृत्य पर तुम्हें बधाई हो आपने हमको प्रसन्न कर दिया। प्रजापति और कृशाश्व के अस्त्र रूपधारी पुत्रों को दे दो वह दिये जाने के योग्य है। यह कहकर देवता चले गये। राम का सर चूमकर कहा : राम ! आज रात हम यही रहेंगे यह स्थान मेरे रहने से सदहा आश्रम के नाम से प्रसिद्ध होगा और प्रातःकाल मैं चला जाऊँगा।

राम द्वारा ताटका राक्षस का वध

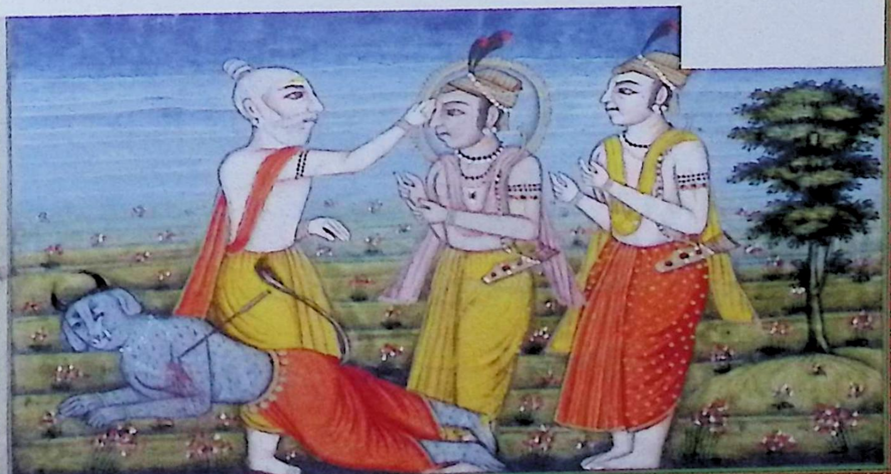

٢٥ سرک دادن استر صبح آن شب بشوامتر بتبسم و شیرین زبانی به رام گفت

من بر تو بسیار مهربانم و از محبت کمال جمیع استران میدهم انچه من میدانم بر هم

استر و دب استر که همه لوک را از رنج خوف دور کند و ذیدا استر میدهم که از ان در جمیع

دشمنان فتح خواهی یافت و دهرم چکر و کال چکر و بشن چکر و اندر بجر استر و شیو پاشوپت

کومودکی و شبودکن بر و کد او برهم شر استر و ایکینک و شنک استر و شنگر استر که روشن روست

از من بگیر همه میدهم ترا و دهرم پاش و کال پاش و برن پاش میدهم و بهر و شبنیر و دیو استر

و ناک استر و نار این استر و اکنی استر و دیوتا استر و بایب استر و هی شر نام استر و کرونچ استر و هر دو ستان

و کنکال و مشل و کپال و کنکنی اینهمه میدهم نگاهدار و استر بیدا دهر و شمشیر و کندرب استر موهن

نام و سایین و پرمتهن و درپن و سوکهن و سنتاپن و دمن و دهرش و کندرپ و پیشاچ و ناکو و اینهمه را بگیر و

با منو و سوسمش و شامبرت و موشل و ستت استر و مایا دهر و موکیه تیج و پرتیچو بکرشرن سوماستر

و ششر استر و بهو دره و دهمه را از مهربانی میدهم بگیر رامچندر که رو بر و شده بود من از مهربانی

همه را باکرام داد همه دست بسته پیش رام رفتند و گفت ما اینک مایم حکم همه رام

دست گرفته تسلی کرده گفت همه در دل من باشید بعد از ان رام بشوامتر را بر نام کرد

بطی را مشغول شد ٢٦ سرک دادن سنگهار استر همه استر از رام گرفته بر کبه گفت استر ازا

گرفتم اما سنگهار آن نیز بگوید بشوامتر گفته رام را شنیده از مهربانی سنگهار

نندک
شاد کننده

و تواشتر
استاد التب

सर्ग-२५

अस्त्र को देना

उस रात्रि की सुबह विश्वामित्र ने मुस्कुराते हुए मधुर वाणी में राम से कहा कि मैं तुम पर बहुत दयालु हूँ और प्रेमवश तुम्हें समस्त अस्त्र देता हूँ। जो कुछ मैं जानता हूँ , वह ब्रह्मास्त्र जो सारे लोक को दुख व भय से दूर करता है और इससे तुम समस्त शत्रुओं पर विजय पाओगे। धर्म चक्र, काल चक्र, ऐन्द्र चक्र, वज्रास्त्र ब्रह्मशिर नामक अस्त्र, पाशुपत, कुमुदक- शिवदक दोनों और ब्रह्मस्त्र दशंक अस्त्र और शंकर अस्त्र जो चक्रदार है, यह सब ले लो मैं तुम्हें सब देता हूँ। धर्म पाश, काल पाश, वरुण पाश देता हूँ और दोनों तलवारों और देव अस्त्र, पिनाक अस्त्र, नारायण अस्त्र, आग्नेय अस्त्र, हयशिरा नामक अस्त्र, क्रौंच अस्त्र, दोनों भाले, कंकाल, कपाल और यह किंकिणी सब देता हूँ इन सबकी रक्षा करो। अस्त्र वेद हर तलवार गन्धर्वों का प्रिय सम्मोहन नामक अस्त्र वर्षण, प्रस्वापन मादन, शोषण संवर्त (दिव्यास्त्र) कन्दर्प, पिशाच और गन्धर्वों का प्रिय अस्त्र यह सब भी ले लो। बामन, सौमन, शाप्रद, मौशल सत अस्त्र, मायाधर, प्रतिजू, प्रकशंग, शिवास्त्र भू और दरोदर यह सब भी अपनी कृपा से देता हूँ, लो। रामचन्द्र जो सामने थे सबको सम्मान के साथ दिया सब दिव्यास्त्र लोग हाथ जोड़कर राम के पास गये और कहा हम उपस्थित हैं बताइये क्या करना है। राम ने हाथ पकड़कर सान्त्वना देते हुए कहा कि तुम सब मेरे हृदय में रहोगे उसके बाद राम विश्वामित्र को प्रणाम करके आगे के रास्ते पर चल पड़े।

सर्ग-२६

अस्त्र के संहार की शिक्षा देना

राम ने सारे अस्त्र लेकर ऋषि से कहा मैंने सारे अस्त्र ले लिए अब इनका संहार भी बताओ। विश्वामित्र ने राम की बात सुनकर कृपापूर्वक संहारक

مهانابهه

د نور تن نیز داده بگفت وست باک وست کیرتی ودرشتارنبهه وپرن پات رس

وانو انکه بهه وپرانکه نمکهه وبپاک بشنوکرمان وکور وده چشم وده دهنه وده کردنه

وده شکمه وپدم نابهه ودرڈه نابهه وسونابهه وغیره همه را بگیر باعتقاد من قابل گرفتن

هستی رام قبول کرده گرفت همه ها بروشنی شکل مانند آفتاب دست بسته

بشیرین زبانی برام گفتند اینک مائیم بگو چکنیم رام گفت حالا بروید بر وقت امداد من خواهید کرد

آنها رام را نمشکار کرده رفتند بعد رفتن آنها بشوامتر را امچند پرسید این از کوه

دورتر برشکل ابر چیست گویا پاره درخت است خوش شکل ومرا هم خوب مینماید بابوقلمون

طیور خوشنوا آراسته بهمین راه میرویم این راه خوب پیراسته است همه را این

بگوئید آنمکان کیست وآن بدخواهان کجایند که جگ ترا عارض می آیند اگرچه پیش ازین

طیش تو کشته شده اند آنها را حالا من میکشم سرگ کیفیت باین چون آنمکان را

سردار مردم یعنی رام پرسید بشوامتر کیفیت را بیان کردانید آنمکان قبل ازین از

بامن است بیدها آشرم نام مشهور اینجا سدها هستند اینجا راجه بل پسر برو چن جگ میکرد

در هر سه لوک مشهور جگ اورا دانسته آتش وغیره دیوتا جمع شده بابشن گفتند

راجه بل جگ خوب میکند دهر که رفته انچه میخواهد آورا همه میدهد تو بر حال دیوتا ترحم کرده

بامن روپ یعنی کوتاه قد نموده مهربانی برما کن وانجا از لطف تو بدها آشرم نام شهرت

और नौरत्न भी देकर कहा सत्य कीर्ति, धृष्ट, रभस, प्रतिहार तर, अवाड्मुख, प्राड्मुख, बपाक, विश्व करमान, कोरूदह चशमदह, दहनादह, करुनावदह आदि सबने प्रकाश में सूर्य के समान करबद्ध, मृदु वाणी में राम से कहा हम उपस्थित हैं बताइये क्या करना है। राम ने कहा इस समय जाओ समय पड़ने पर मेरी सहायता करोगे वह सब राम पर न्यौछावर होकर चले गये। उनके जाने के पश्चात् रामचन्द्र ने विश्वामित्र से पूछा यह पर्वत से कुछ दूरी पर बादल जैसी क्या वस्तु है जैसे कि वह कोई सुन्दर पेड़ का टुकड़ा हो और मुझे भी अच्छा लग रहा है। विभिन्न प्रकार के पक्षियों की मनमोहक आवाज से सुसज्जित है। हम इसी मार्ग से जायेंगे यह मार्ग खूब सुसज्जित है मुझे यह बताइये कि यह भवन किसका है और वह बुरे लोग कौन हैं जो आपके यज्ञ में बाधा डाल रहे हैं। यद्यपि वह पहले आपके तेज और क्रोध से मारे जा चुके हैं परन्तु अब मैं भी उन्हें मारूँगा।

सर्ग–२७

वामन का वर्णन

जब लोगों के सरदार अर्थात् राम ने इस स्थान के विषय में पूछा तो विश्वामित्र ने इस प्रकार वर्णन किया। यह भवन (स्थान) उससे पहले वामन का था। यहाँ का सिद्ध आश्रम प्रसिद्ध है, यहाँ सिद्ध रहते हैं। यहाँ विरोचन का पुत्र राजा बलि यज्ञ करता था। वह तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। उसके यज्ञ को जानकर अग्नि आदि देवता ने एकत्र होकर विष्णु से कहा ! राजा बलि यज्ञ बहुत करता है। जो भी उसके पास जाकर जो माँगता है वह उसे दे देता है। आप भी देवताओं की स्थित पर दया करते हुए वामन रूप अर्थात् काया को छोटा करके हम पर कृपा करें और यहाँ आपकी दया से 'सिद्ध आश्रम' नाम का आश्रम प्रसिद्धि पायेगा

خواهد یافت بعد از آن بشن بجوک بزرگ در آمده با من روپ ساخته سه قدم
زمین خواست و از وی سه قدم گرفته لوک ها را بیهوده بتصرف در آورد و را چسان عاجزان
جگ من نزدیک از اینجا اند که تو آنرا خواهی گشت بهمین راه آشرم برویم درین جا
بشوامتر را دیده رکهان باشند کان آنجا باستقبال بشوامتر که پر متحمل است آمدند واکرام
رامچندر و لچهمن نیز کردند و هر دو پسران راجه آنجا دو کهری آسایش نمودند بعد از آن
رام دست بسته بشیرین زبانی از شیرمن ها گفت از همین جا ودیها گشتن آنها بگیر گفته من را
بشوامتر از گفته رام از همانجا ودیها گرفت و بهمین طور شب هم رفت صبح خاسته بشوامتر را
هر دو نمسکار کردند درینجا صورت رام و لچهمن و بشوامتر بطرزی که بشوامتر که انمسکار میکنند

و مکان بتونان دیگر ودیها دادن

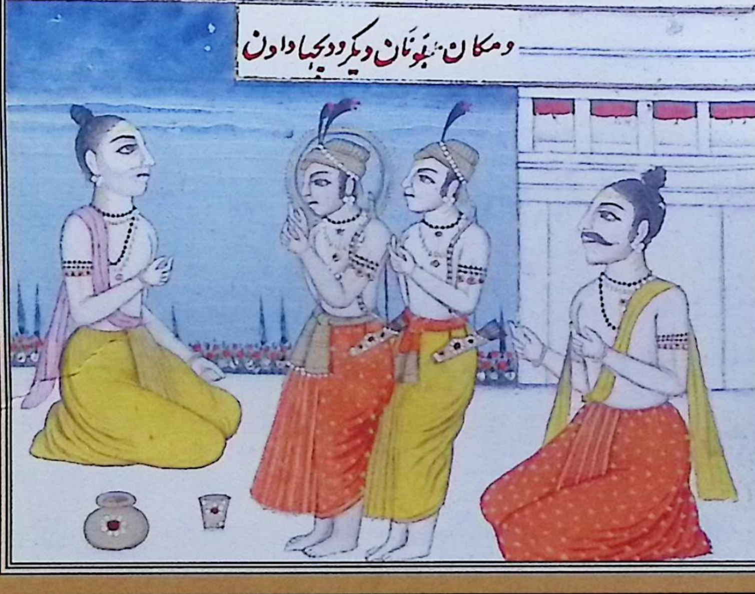

इसके बाद विष्णु ने प्रवेश किया और ब्राह्मण रूप धारण कर तीन पग भूमि माँगी। उस बलि से तीन पग भूमि लेकर सारे लोक नापते हुए उसे अपने प्रयोग मे लिया। मेरे यज्ञ में व्यवधान डालने वाले दो राक्षस यहाँ से निकट हैं तुम इनकी हत्या कर सकते हो। हम उसी मार्ग से आश्रम जायेंगे। यहाँ विश्वामित्र को देखकर वहाँ के रहने वाले ऋषि विश्वामित्र के स्वागत के लिए आए और रामचन्द्र तथा लक्ष्मण का भी सम्मान किया और राजा के दोनों पुत्रों ने वहाँ दो पल विश्राम किया उसके बाद राम ने हाथ जोड़कर मधुर वाणी से मुनिवर विश्वामित्र से कहा : यहीं से उनकी हत्या का आरम्भ करो। मेरा कहा हुआ उचित है विश्वामित्र ने राम के कहने से वहीं से दीक्षा ली और इसी प्रकार रात बीत गई। सुबह उठकर दोनों ने विश्वामित्र को नमस्कार किया।

यहाँ राम, लक्ष्मण और विश्वामित्र का चित्र दिया जा रहा है जिसमें वह विश्वामित्र को नमस्कार कर रहे हैं और राक्षसों और दूसरों के स्थान दीक्षा का देना।

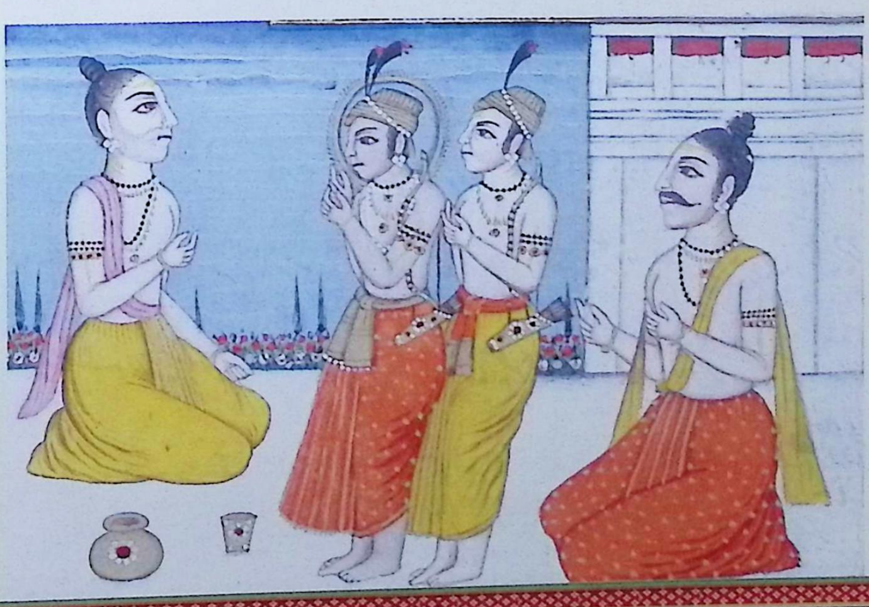

سرگ ۲۱ کشتن راچهسان بعد ازان هر دو پسران راجه که داننده ملک و وقت و بسیار

روز هستند از بسوامتر جنیان پرسیدند هنگام آمدن آن راچهسان بفرما تا وقت

در محافظت بکذرد بسوامتر وغیره رکهیان از خوشی تمام فرمودند از آغاز این زمان که وقت

دیچهاست تا شش شب بمحافظت اقامت ورزید گفته آنها را شنیده پسران راجه تا شش

روز و شب بیخواب بمحافظت اقامت کردند بعد ازان روز ششم بیدی با آتش روشن شد

و اوپادهیا و سام خوانان و منتر دانان بدستور آغاز جک کردند شغب خوف از آسمان

برآمد گویا ابر میبارد یعنی مایا خود را منتشر کنان راچهسان دو دیدند ماریچ و سبو با فوج بحر رسیدند

میگلاو از وحشت ناک خون باریدند آنها را آمده دیده رامچندر که چشم او مانند نیلوفر است

به نبهسم با لچهمن گفت راچهسان بد اندیش را ببین که یک آدمی کشته پرانیده اند

چنانچه یادخس را بعده رامچندر تیری را با استر از غصه تمام در سینه ماریچ زد و او را بدور

چهار صد کروه در دریای شور بر انداخت چنانکه بی شعور و چشم بسته ساخت ماریچ را

چنان دیو باز رام با لچهمن گفت یکی را بیهوش کرده دور انداخته اما کشته نشد

و این دو دیمی بیهیمه و زشت روش را میکشم که غذا آب کار و عارضی جک و خونخوار است

بعد ازان استر اگنی یعنی آتش در سینه سوباهو زده کشته بزمین بحضور خود انداخت

و از بایب استر یعنی بادی باقی دیگر از هلاک ساخت پس ازان منشران رام را جو

सर्ग-२८

राक्षसों का मारा जाना

उसके पश्चात राजा के दोनों पुत्रों ने जो देश, समय और दिन रात को जानने वाले हैं विश्वामित्र से पूछा इन राक्षसों के आने का समय बताइये ताकि समय सुरक्षित व्यतीत हो विश्वामित्र आदि ऋषियों ने बड़ी प्रसन्नता से कहा। इस समय के आरम्भ से जो दीक्षा का समय है छः रात तक सुरक्षा से रहो। उनकी बात सुनकर राजा के पुत्रों ने छः दिन तक रात दिन जागकर सुरक्षित बिताया उसके बाद छठें दिन एक वेद अग्नि में प्रकाशित हुई और वेद पढ़ने वालों और मन्त्र जानने वालों ने नियमानुसार यज्ञ का आरंभ किया। आकाश से भय का शोर उत्पन्न हुआ जैसे बादल बरस रहा हो अर्थात् माया स्वयं को बिखेर रही है। राक्षस दौड़े और मारीच और सुबाहु भी पहुँच गये तथा भयंकर ध्वनि के साथ रक्त बरसाया। उनको आता हुआ देखकर नीलमणि जैसी आँखों वाले रामचन्द्र ने मुस्कुराते हुए लक्ष्मण से कहा-इन अज्ञानी राक्षसों को देखो कि यह एक व्यक्ति को मारकर उड़ रहे हैं जैसा कि वायु तिनके को उड़ाती है। इसके पश्चात रामचन्द्र ने अपने क्रोध के साथ एक तीर मारीच के सीने में मारा तथा उसको चार सौ कोस की दूरी पर शोर नदी में फेंक दिया इस प्रकार गतिहीन होकर उसने आँखें बन्द कर लीं। मारीच को इस प्रकार देखकर राम ने फिर लक्ष्मण से कहा एक को मूर्छित करके दूर फेंक दिया गया परन्तु उसे मारा नहीं गया। इस दूसरे कठोर हृदय एवं आतातायी की मैं हत्या कर देता हूँ जो अत्याचारी, यज्ञ में व्यवधान डालने वाला और भयानक है। उसके पश्चात् सुबाहु के सीने में अग्नि अस्त्र डालकर और उसे मारकर अपने सम्मुख भूमि पर डाल दिया, शेष अन्य को वायु अस्त्र से मार दिया इसके पश्चात मुनियों ने राम को बड़ी प्रसन्नता से धन्यवाद दिया।

آفرین کردند چنانکه آندر بعد از فراغ جگ بشوامتر اطراف را بی عوارض دیده گفت
مقصود من حاصل شد تو امر پدر بجا آوردی باشندگان سدها آشرم را امن بخشیدی
و راچهسان را کشته رام چنان بظهور و نمود آمد که ظلمات را دور کرده آفتاب
بر آسمان کشته شدن سوباهو و راچهسان دیگر از دست رام و خوشی بسوامتر وغیره کنان

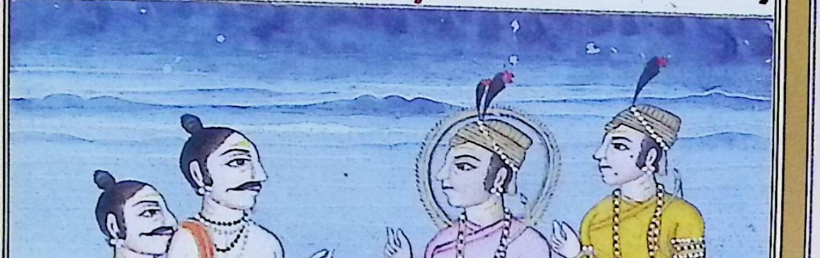

जैसा कि इन्द्र ने विश्वामित्र के यज्ञ से निपटने के पश्चात् चारों दिशाओं को बाधा रहित देखकर कहा कि मेरा उद्देश्य पूरा हो गया तूने पिता की आज्ञा पूरी की। सिद्ध आश्रम के निवासियों को शान्ति दी और राक्षसों को मारकर राम ऐसे दिखाई पड़े जैसे अंधेरे को समाप्त करके आकाश पर सूर्य चमकता है।

सुबाहु और दूसरे राक्षसों का वध तथा विश्वामित्र आदि ऋषियों की प्रसन्नता।

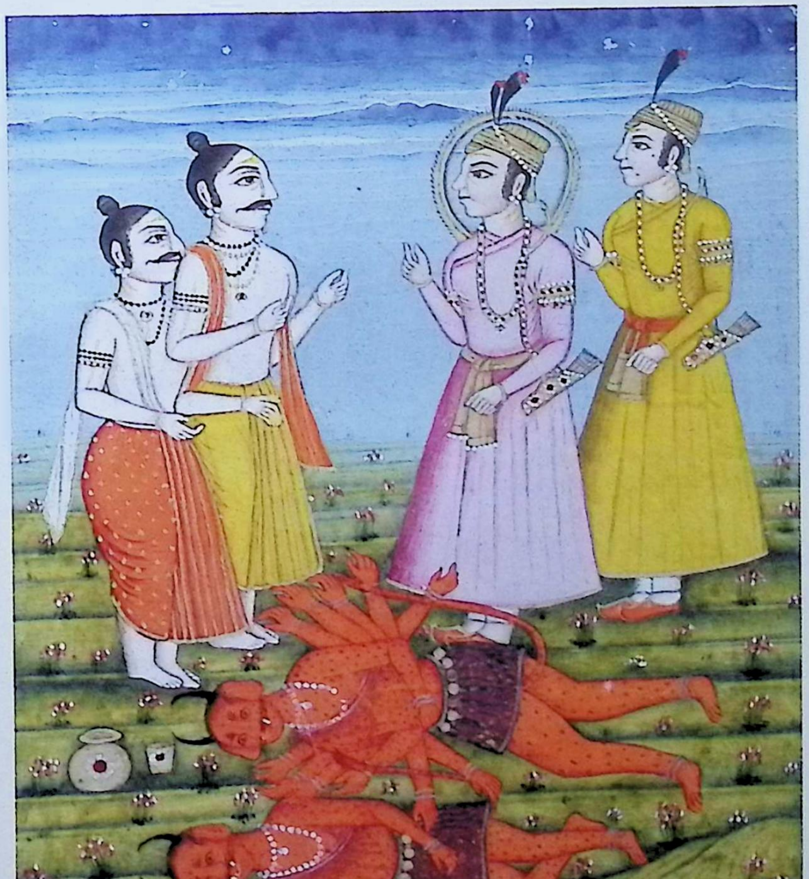

سرگ ۳۵ کیفیت کان کنج کار را کرده آنشب هر دو پسر راجه بخوشی تمام آنجا اقامت ورزید
صبح آنشب غسل کرده پاک شده پیش **بشوامتر** مُن رفته نمسکار نموده گفتند ای اسد منیشران
این هر دو بنده تواند آنچه بخاطر شریف بگذرد امر فرما در جواب آن بشوامتر را پیشوا
کرده رکهیشران گفتند راجه جنک متهل جگ میکند ما در آنجا میرویم تو هم با ما بیا آنجا
عجائب و لطیف کمانی هست آنرا به بینی که پیش ازین دیوتا باو داده اند زور آن بگفتن
نمی آید آنرا از دیوتا و گندرب و اسر و اژدر کسی زه نمیتواند کرد چه جای انسان این گفته
برادران دیوتا
سرداران مُن ها پرستهان رفتن یعنی پای تراب نمودند شمال رویه ساحل گنگا و هماچل و سدها
شرم را پردچهنان کرده یعنی گرد گشته بسوی شمال روانه شدند هنگام رفتن شان بسیار
گرد برخاست قریب عرابه صد ها بشوامتر را پیشوا کرده رفتند و بهایم و طیور بسند شرم
عقب ایشان رفتن گرفتند راه دور طی کرده بشون اقامت گزیدند بعد غروب آفتاب
شون نام دریا
آتش را پرستیده بشوامتر را پیشوا کرده بر زمین خسپیدند رامچند نیز با لچهمن رکهیان را
پرستش کرده پیش بشوامتر مقیم شد و به بهجت کمال از بشوامتر پرسید این ملک
کیست بمردم آراسته مرا هوس شنیدن هست بگوید بخواهش او بشوامتر بتفصیل بگفتا
آورد ای رام بشنو از اولاد برهما کُشن نام بزرگی بود او را چهار پسر پیدا شدند کُشن نابه
و **کُش انب** و **اسورتین** و **بسو** آنها را **کش** فرمود محافظت دهرم بنمایید آنرا شنیده

सर्ग-२६

यह कार्य करके उस रात्रि राजा के दोनों पुत्रों ने प्रसन्नता से वहीं निवास किया। प्रातः उठकर स्नान किया और पवित्र होकर विश्वामित्र मुनि के सामने जाकर नमस्कार करके कहा ऐ मुनिश्वरों में शेर! यह दोनों आपके बन्दे हैं जो कुछ मन में आए आज्ञा दीजिये। उसके उत्तर में ऋषियों के समूह के अगुवा ने विश्वामित्र से कहा- राजा जनक धर्ममय यज्ञ कर रहे हैं हम लोग वहीं जा रहे हैं आप भी हमारे साथ वहाँ चलिये। वहाँ एक धनुष है उसको देखिये कि इससे पहले देवता उन्हें दे चुके हैं उसकी शक्ति अवर्णनीय है उस पर प्रत्यंचा देवता, गन्धर्व आदि में से कोई नहीं चढ़ा सकता है तो फिर मनुष्य क्या। यह कहकर मुनि सरदार वहाँ गये। उत्तर की ओर गंगा किनारे, हिमांचल और सिद्ध आश्रम को दौड़ते हुए उत्तर की ओर चल दिये। उनके चलने के समय बहुत अधिक मिट्टी उठी। सैकड़ों लोग विश्वामित्र की अगुवाई में गये और सिद्धाश्रम के पशु पक्षी उनके पीछे चलने लगे।

सिद्धाश्रम नदी के पास निवास किया। सूरज डूबने के बाद अग्नि की पूजा करके विश्वामित्र के पास रहे और बड़ी प्रसन्नता से विश्वामित्र से पूछा कि यह देश किसका है ?लोगों से सुसज्जित मुझे जानने की बड़ी इच्छा है बताइये। उनकी इच्छा पर विश्वामित्र ने विस्तार से बताया हे राम सुनो। ब्रह्मा की सन्तान में कुश नाम के एक राजा थे। उनके चार लड़के उत्पन्न हुए कुशनाभ, कुशांब, असूर्तरजस और वसु। कुश ने उनसे कहा कि धर्म की रक्षा करो। यह सुनकर

همه ها مکانی معین کردند کشن اب کوشنابنی نام شهر بنا کرد و کشن نابهه مهو دی نزاک
خویش نام شهر بنا کرد و مبو بر کوه رفت و اسونزیس بصحرا زمین این بسوهتی از آن بسوت
و اینهمه قوم ماکدها از نسوا اند بیشتر اقامت گزیده در جای معقول که آنجا غاره دکناه واد نست
بعده کشن نابهه را از کهرتاچی نام اپسرا صد دختر پیدا شدند حسن و خوبی و جوانی آنها بدانسان
گردید که دیگری را بر زمین نبود وقتی در باغچه ها رفته بازی میکردند و سرود میخواندند دوار عنون
میخواختند و سیر قصید ند براحت تمام و نجوشی مالا کلام کلها صحرا را ارایش کلو میکردند
ناگاه باد صورت آدمی گرفته بآنها گفت شما همه را میخواهم که اهلیه ها بشوید و محبت
آدمی بگذارید عمر دراز خواهید یافت دختران از ان خاطر نیاورده تبسم کرده گفتند تو بادے
در وجود همه ها می باشی ما ترا امیدانیم با ما چکار داری مارا خراب کردن نتوانی و ما نسب خودرا
نگاه میداریم و در نسب سیاه روی مباد پدر ما راست کوست هر کرا پدر ما خواهد داد
او شوهر ما خواهد شد گفته آنها را شنیده باد از غضب در تمام وجود آنها داخل گشت و کمر آنها را
بشکست آنها از باد کوز پشت شده در شهر پدر در آمدند آنها را بدان تصدیع دیده
پدر گفت شمارا کوز پشت که کرد و بیهوشی چرا آمد بگوئید آنها در قدم پدر افتاده گفتند
باد خواهش ما میکرد بطریق بد نه براه نیک ما اجابت نکردیم باد با ما ازان بشکست گفته آنها را شنیده
پدر گفت خوب کرد بد نسل مرا نگاهداشتید تحمل خوب پیرایه است خواه زن را باشد خواه مرد را

सबने एक स्थान तय कर लिया कुशांब ने 'कौशाम्बी' नामक शहर बसाया और कुशनाभ ने 'महोदय' नाम का शहर बसाया और वसु पहाड़ पर चले गये और गिरिब्रज नामक राजधानी 'वसुमती' नाम से तथा असूर्त रजस जंगल में 'धर्मारण्य' नामक श्रेष्ठ नगर बसाया। यह भूमि उसी वसु की है और यह 'सुमागधी' नाम से विख्यात नदी का क्षेत्र होने के कारण माकदहा कौम सब उसी का है। उनमें से अधिकांश ऐसे स्थानों पर रहते हैं जहाँ अनाज और घास की बहुतायत है। उसके बाद घृताची नाम की अप्सरा से कुशनाभ की सौ पुत्रियाँ उत्पन्न हुई। उनका सौन्दर्य और यौवन ऐसा था कि पृथ्वी पर किसी और का न था। एक बार सब बगीचे में जाकर खेल रही थी, गाने गा रही थी, बाँसुरी बजा रही थी और नाच रही थीं- बड़े आराम और मस्ती से। फूलों ने जंगल को सजा रखा था कि अचानक वायुदेवता ने उनसे कहा कि मैं तुम सब को चाहता हूँ कि मेरी पत्नी बन जाओ और मनुष्य का प्रेम छोड़ दो तुम सबको लम्बी आयु मिलेगी। लड़कियों ने उस पर ध्यान न देते हुए मुस्कुराकर कहा कि तू हवा है सबके अस्तित्व में रहती है हम तुझे जानते हैं, तुझे हमसे क्या काम है तू हमें बरबाद नहीं कर सकती। हम अपने वंश की रक्षा करते हैं और हमारे परिवार में कोई नहीं है। हमारा पिता सीधे मार्ग पर चलने वाला है। वह जिसके हाथ में हमारा हाथ देगा वही हमारा पति होगा। उनकी बात सुनकर वायु क्रोध के कारण उनमें प्रविष्ट हो गया और उनकी कमर तोड़ दी। वह सब वायु के कारण कुबड़ी हो गयीं और पिता के शहर में प्रविष्ट हुईं। उनको देखकर पिता ने कहा तुम्हें कुबड़ी किसने कर दिया और मूर्छित क्यों हुई बताओ। उन सबने पिता के पैरों में गिरकर कहा कि हवा (वायुदेवता) हमारी इच्छा कर रही थी।

हमने स्वीकार नहीं किया उसने हमारी कमर तोड़ दी उनकी बात सुनकर पिता ने कहा तुमने अच्छा किया मेरे वंश की तुमने रक्षा की। चाहे स्त्री हो या पुरुष क्षमा उसके लिए आभूषण है।

آنجا که باد دختران را کوزپشت کرده به کنیان کج نام مشهور زیرا که کنیان دختر را کوید
و کج کوزپشت باشد القصه کشنابهه دختر از امرخص کرده با کنکایشان برای دادن
دختران کنکایش کرد درین اثنا چوڑی نام مهامن که مجرد میماند و خوش طریق بود و هنگام
ریاضت او سنوم با نام کند بهرلپ دختر آورنا به خدمت او میکرد پس چندی چوڑ رکهه
بر و پسند خاطر گشت و گفت مرا بگوید و آنچه خواهی بخواه کند بهرلپ گفت از صلب تو پسری
میخواهم مرا تا حال کسی شوهر نشده و تن خود را در انعقاد ازدواج تو می آرم آورا پیشتر پسری
داد که برهمدت نام شهرت یافت آن کشنابهه راجه آن صد دختر را باز دواج ان برهمدت
را آورد او به دستور با آنها صحبت کرد فی الفور هنگام دست گرفتن کوزپشتی دختران برآمد
رفت و پاک گشتند کشنابهه دختران را بدانسان دیده خرم دل شد راجه طوی برهمدت نموده
با اهلیه‌ها و او پادهیا نجانه فرستاد سوم پادرها و پسر را با ستدر دیده پرستش بجا آورد
سرک احوال بشوامتر بعد از ان کشنابهه پسری نبود او برای ان اشنٹ یعنی خواندن
اسما و غیره نمود در انحال گنش که پدر او بود باوی گفت که ای پسر ترا پسری خواهد شد
گادهي زیرا که تو کیرت کاده یعنی ژرف عمل کرده این گفت و بر آسمان به برهم لوک رفت
بعد از چندی اورا پسری پیدا آمد گادهی نام کرد و آو پدر منست چون نسل کش ایم بنابران
بگوشک مشهوریم و همشیره کلان ستوتي نام با کالبد خویش بآسمان رفت و از آسمان

चूंकि हवा ने लड़कियों को कुबड़ी कर दिया था इसलिए कनियान कुब्ज के नाम से प्रसिद्ध हुआ क्योंकि कन्या लड़की को कहते हैं और कुब्ज कुबड़े को कहते हैं। संक्षिप्त यह कि कुशनाभ ने पुत्रियों को विदा करने, पुत्रियाँ देने के लिए परामर्शदाताओं से परामर्श किया इसी मध्य चूली नाम का एक मुनि जो अविवाहित था और अच्छे चालचलन वाला था। इसकी तपस्या के समय एक गन्धर्व कन्या सोमदा जो ऊर्मिला की पुत्री थी उसकी सेवा करती थी। कुछ समय पश्चात चूली ऋषि उसके मन को भा गया और उससे कहा कि मुझसे जो मांगना हो मांगो। गन्धर्वी ने कहा कि "मैं आपसे एक पुत्र उत्पन्न करना चाहती हूँ अब तक कोई मेरा पति नहीं बना है मैं स्वयं आपकी पत्नी होना स्वीकार करती हूँ। मुनीश्वर ने उसे एक पुत्र का वरदान दिया और कहा कि वह 'ब्रह्मदत्त' के नाम से प्रसिद्ध होगा"। इस कुशनाभ राजा ने उन एक सौ लड़कियों का 'ब्रह्मदत्त' से विवाह किया और पाणिग्रहण काल में कर का स्पर्श किया, हाथ लगाते ही तुरन्त कुबड़ेपन का रोग समाप्त हो गया और वे सभी स्वस्थ हो गयीं। कुशनाभ लड़कियों को इस स्थिति में देखकर प्रसन्न हो गया राजा ने ब्रह्मदत्त का स्वागत करते हुए उसकी पत्नियों और अतिथियों के साथ घर भेजा सोमदा अपने पुत्र को इतनी सुन्दर स्त्रियों के साथ देखकर प्रसन्न हो गयी।

सर्ग-३०

विश्वामित्र का वर्णन

उसके पश्चात् कुशनाभ के कोई लड़का नहीं था वह उसके लिए पुत्रेष्टि यज्ञ करने में व्यस्त हुआ इन्हीं परिस्थितियों में कुश ने जो उसका पिता था उससे कहा कि बेटे ! तेरे एक पुत्र होगा गाधि। क्योंकि तूने यज्ञ किया है यह कहकर वह आकाश पर ब्रह्मलोक में चला गया। कुछ समय बाद उसके एक पुत्र हुआ 'गाधि' उसका नाम रखा। वह मेरा पिता है चूंकि हम कुश के वंश से हैं इसलिए हम कौशिक के नाम से प्रसिद्ध हैं। सत्यवती नाम की बड़ी बहन

بصورت آب پاک شده بر کوه هماچل افتاد و کوشکی نام دریا شد رحمت بر همان
کوه همشیره من رسیده است و از همشیر محبت کی بر پشت کوه هماچل میباشم این همان ستوتی
نام پاک رو و راستی و دهرم جو و پت برتا یعنی خادمه شوهر همشیره منست من نیم کرده بودم
برای سده بجهة همین بسید ها شرم آمده از شکوه و تفقد تو سده شدم اینقدر پیدا شدن نسب خود
و ملک خود بیان کردم آنچه پرسید در همین افسانه نیم شب بگذشت برگها اشجار از
حرکت بماندند و بهایم و طیور بخواب آمدند و اطراف از ظلمات شب تیره گردید و فلک مانند
سرمه سوده نمودار شد و سیاره و انجم و ستاره گویا از طلا و ذهبی ساخته اند
و حالا ماه هم بر می آید که شروع شعاع شد و عزیز جهانیان است تو هم بخواب رو تا صبح
راه تصدیع نشود این بگفت و بشوامتر خاموش شد همه رکهیشران گفتند خوب خوب رامچند هم با لچهمن
اندکی لطیفه وانسته بموجب گفته رکهه بخواب رفت رامچند و لچهمن میخسپند و بشوامتر نشسته

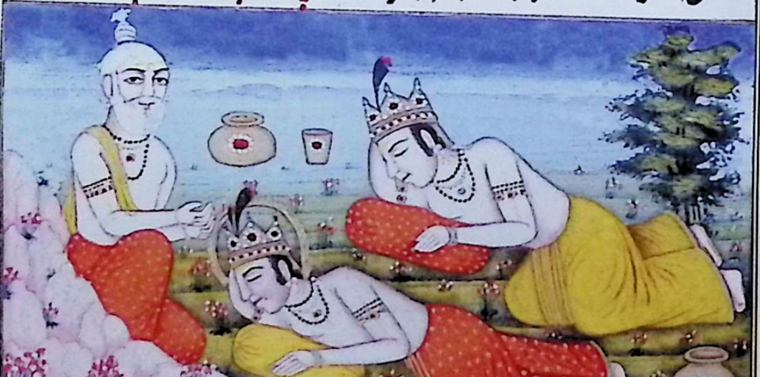

अपने शरीर के साथ आकाश की ओर चली गयी। और आसमान से पवित्र जल में परिवर्तित होकर हिमाचल पर्वत पर गिरा दिया। संसार वालों पर दया एवं करुणा करती हुई मेरी बहन पहुँची है और प्रेम के कारण मैं हिमाचल पर्वत पर रहता हूँ। यह वही सत्यवती नाम की सुन्दर, शान्त पतिव्रता मेरी बहन है मैंने सिद्धि के लिए स्वीकार किया था इसीलिये सिद्ध आश्रम में आकर लेटे। अब तुम्हारे तेज से मैं सिद्ध हो गया इतना मैंने अपने परिवार के पैदा होने और अपने देश का वर्णन किया जो कुछ तुमने पूछा उसी कहानी में आधी रात गुज़र गई। वृक्षों के पत्ते खामोश हो गये, पशु और पक्षी सो गये और चहु ओर रात्रि के अंधेरे से अधिक अंधेरा हो गया। आकाश काले सुरमे की भाँति लग रहा है। इस समय उपग्रह और सितारे सुनहरे चमक रहे हैं। इस समय भी चन्द्रमा निकल रहा है, जिसकी किरणें आने लगी हैं, जो दुनिया वालों को प्रिय है तू भी प्रातः तक सो जा और रास्ता चलने का कष्ट न कर यह कहकर विश्वामित्र शान्त हो गये। समस्त ऋषिवरों ने कहा बहुत उत्तम, रामचन्द्र भी लक्ष्मण से थोड़ी देर तक बात करने के पश्चात् ऋषि के आदेशानुसार सोने चले गये।

रामचन्द्र और लक्षमण सो रहे हैं और विश्वमित्र बैठे हैं।

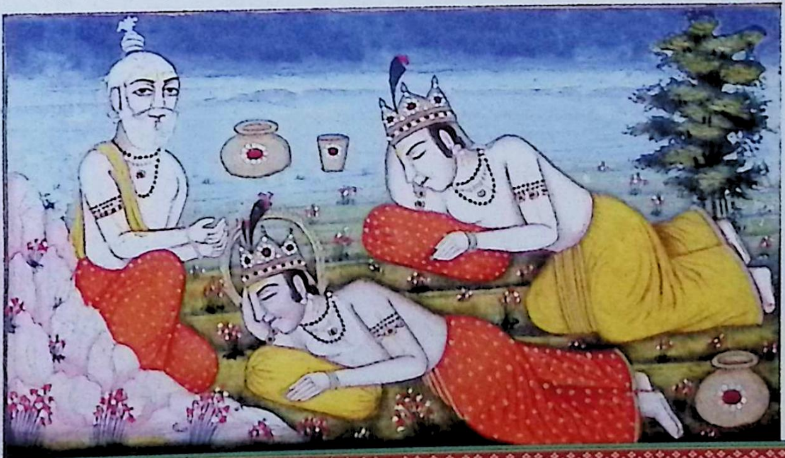

سرگ ۳۵ احوال گنگا صبح آن شب بشوامتر برام گفت پورب سندها شد برخیز
عزم رفتن بکن رام آنرا شنیده پورب سندها نموده عزم رفتن کرد و به بشوامتر چنان
گفت این آپ که ژرف و بسیار بلند ساحل چگونه این را عبور خواهیم کرد بشوامتر گفت این
همین راه می بینیم که مهرکهنه میروند بعد ازان دور راه رفتند و گنگا را که بزرگ دریاهاست
دیدند رام پرسید راه عبور کجاست بشوامتر گفت اینک دوازده کروه هست که گنگا را
عبور خواهیم کرد و شونرتربه را نیز همین راه خواهیم گذشت القصه بدان راه
با مِن تمام گنگا را عبور کردند بر ساحل آن اقامت گزیدند و پیتر و دیوتا را ترپن
کردند در آتش هوم انداختند بعده رام از بشوامتر پرسید مرا آرزوی شنیدن
این حقیقت هست که گنگا که به سه راه میرود و هر سه لوک را در نوردید بسمدر یعنی
دریای شور چگونه رسید گفته رام شنیده بشوامتر کیفیت پیدا
آمدن گنگا و رفتن بدریا به بیان درآورد سرآمد کوها هماچل نام شد
آنرا دو دختر که بصورت و شکل نظیر آنها بر زمین نباشد پیدا آمدند از بطن
دخترِ کوهِ سمیر که منورما نام داشت ازان میان دختر کلان را که گنگا نام داشت
دل را و قبضه او در ربوده
دیوتا برای جلبها خود خواستند که صورت دریا گرفت و دختر خورد اوما نام ریاضت
وروزه بسیار کرد بعده آنرا هماچل برودرها دیو داد اینقدر کیفیت گنگا و اوما

सर्ग-३१

गंगा का वर्णन

उस रात्रि के बाद प्रातः विश्वामित्र ने राम से कहा सुबह हो गयी अब उठ जाओ और चलने की तैयारी करो। राम ने सुनकर सुबह की पूजा करके चलने की तैयारी की और विश्वामित्र से कहा यह पवित्र जल चमकता हुआ और लम्बा चौड़ा पाट हम इसे कैसे पार करेंगे। विश्वामित्र ने कहा मैं यही मार्ग देख रहा हूँ कि महर्षि जा रहे हैं उसके पश्चात् दूर तक गये और गंगा का जो बहुत बड़ी नदी है। राम ने पूछा उसे पार करने का मार्ग कहाँ है विश्वामित्र ने कहा यहाँ से बारह कोस की यात्रा है जहाँ से हम गंगा को पार करेंगे और हम उसी रास्ते से गुजरेंगे।

और अग्नि में होम डाला उसके पश्चात् राम ने विश्वामित्र से पूछा मुझे यह सत्य जानने की इच्छा है कि गंगा ज़ो तीन मार्गों से जाती है तीनों लोक को प्रकाश में देखकर समुद्र अर्थात् शोर नदी तक कैसे पहुँची ?राम की बात सुनकर विश्वामित्र ने गंगा के उत्पन्न होने पर और नदी तक जाने के विषय में वर्णन किया। पहाड़ों का सरदार हिमाचल नाम पड़ा उसके दो पुत्रियाँ उत्पन्न हुईं उनके जैसी सुन्दर पृथ्वी पर कोई नहीं होगी। हिमालय पहाड़ की पत्नी जिसका नाम मनोरमा था उसकी बड़ी पुत्री को जिसका नाम गंगा था देवता ने अपने यज्ञ के लिए माँगा जिसने नदी का रूप अपना लिया और छोटी पुत्री उमा ने बहुत तपस्या की।

उसके बाद हिमाचल ने उसे रूद्र महादेव को दे दिया।

ترا بیان کردم صبح برخاسته هوم میکند

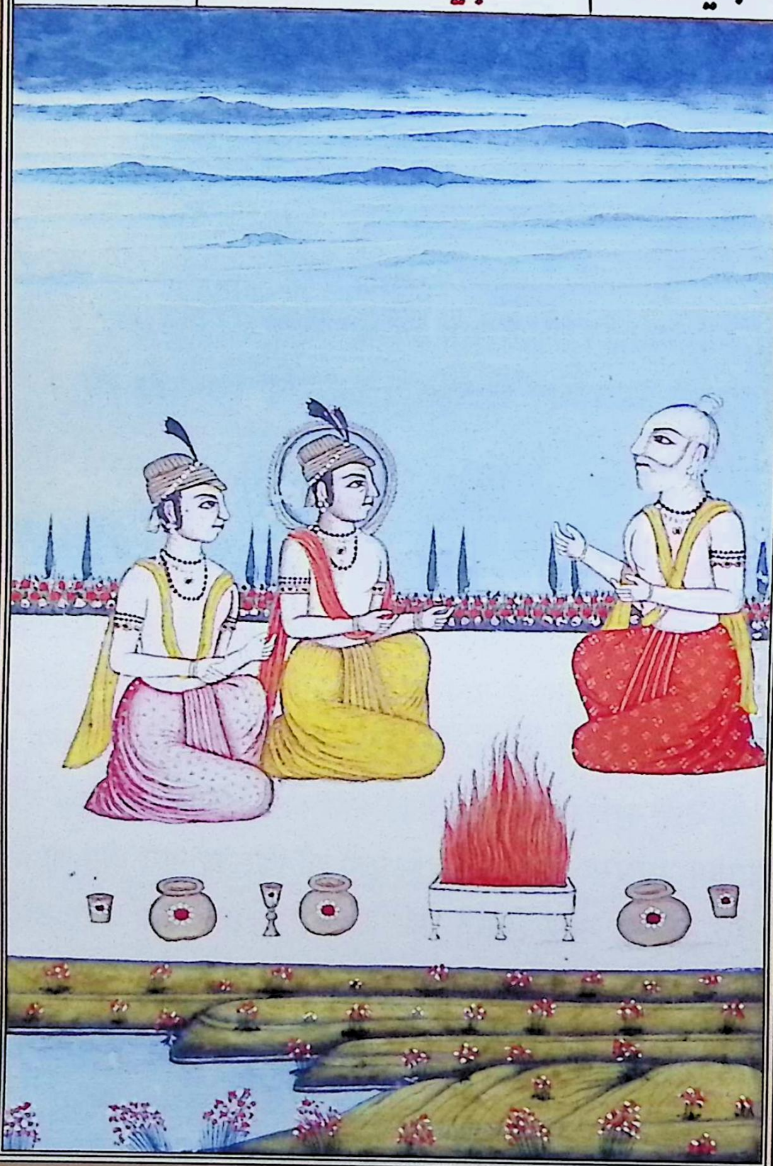

سرگ اول

गंगा और उमा के विषय में मैंने तुमसे वर्णन किया
सुबह उठकर होम कर रहे हैं,

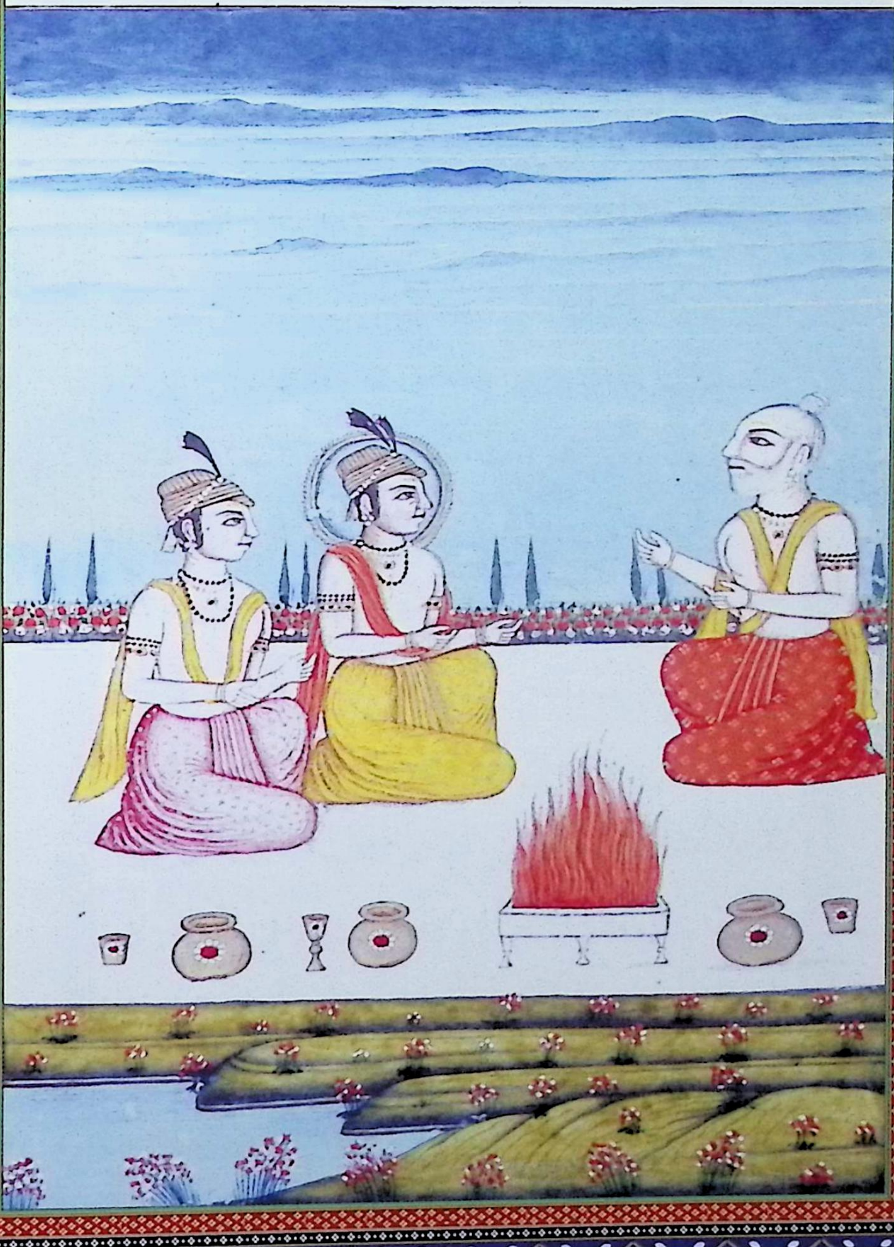

سرک احوال مهادیو و پاربتی از گفتن بشوامتر رام و لچهمن هردو خوشدل و مبتهج گشته
گفتند نیکو فرمودی گفتار عذوبت انگیز اما سخنان اینچنین گفتن را سزاواری که اوما
دیوی در کودکی از چه برهم چارنی یعنی مجرد رایض چرا شد و شوهر مثل مهادیو که والی همه
ذیحیات است یافت و گنگا چرا لبِ راه روان شد و در منش لوک یعنی درین عالم
چه سان آمد چون رام و لچهمن چنان گفتند بشوامتر تمام کیفیت در میان رکهان بدینگونه
گفت در اول ستجگ مهادیو اوما را بانعقاد در آورده با او بطریق زفاف جماع میکرد
قریب صد سال دیو که مقرر آن سه لک و شصت هزار سال میشود بگذشت فراغ نمی گشت
برهما وغیره دیوتا فکرمند گشتند که هرگاه ازین پسری تولد خواهد شد هم جنب او که خواهد
شتافت همه ها رفته به مهادیو نمسکار کردند و به بیابان آوردند که ای والی صاحب
بر همگنان ترحم فرما و مهربانی کن آنچه از تو پیدا خواهد شد تاب آن از هر سه لوک توانند برداشت
لهذا از اوما تو برهم چرج یعنی مجرد بودن اختیار کن مهادیو این را قبول کرد و همگنان را
گفت این نطفه که از صلب من علیحده شده این را که نگاه خواهد داشت مرا بگوئید دیوتا
در جواب گفتند که این نطفه را زمین نگاه خواهد داشت چنانچه مهادیو آنرا انداخت
و زمین تمام صحرا و کوهها پر ساخت بعده دیوتا آتش را گفتند که تو باد را همراه گرفته درین
داخل شو و بسوز آتش همچنان کرد و از آن سنیت پربت عرف کوه سفید بوقوع آمد و بیابان

सर्ग-३२

महादेव और पार्वती का वर्णन

विश्वामित्र की वार्ता से राम और लक्ष्मण दोनों ने प्रसन्न होकर कहा आपने बहुत मधुर वाणी में वार्ता की। इतनी बात और बता दीजिए कि उमा देवी बचपन में किस कारण से रहने लगी जबकि उसने महादेव जैसा पति जो सारे जीवों के मालिक है पाया। गंगा तीन मार्गों से क्यों चली और मर्त्यलोक अर्थात् इस संसार में कैसे आयी?जब राम और लक्ष्मण ने यह बात कही तो विश्वामित्र ने पूरी बात ऋषियों के मध्य इस प्रकार कही। प्रथम सतयुग में महादेव उमा से विवाह करके उसके साथ सुहागरात मना रहे थे और उसके साथ रति कर रहे थे इसी दशा में लगभग सौ दिव्य वर्ष जिसकी अवधि तीन लाख साठ हजार वर्ष होते है बीत गये। उसी में व्यस्त रहते थे। ब्रह्मा आदि देवता चिन्तित हुए कि जिस समय उससे लड़का उत्पन्न होगा तो उसके बराबर कौन लौटेगा। सबने जाकर महादेव को नमस्कार किया और कहा सब पर दया कीजिये आपसे जो सन्तान उत्पन्न होगी (उसके तेज को कौन सहन करेगा) अतः उमा से आप अलग रहिये महादेव ने इसे स्वीकार करते हुए सबसे कहा कि उस (वीर्य) की रक्षा कौन करेगा, मुझे बताओ, देवताओं ने उत्तर में कहा कि उसकी रक्षा भूमि करेगी। अतः महादेव ने उसे डाल दिया और सारे जंगलों और पहाड़ों की भूमि भर दी। उसके बाद देवताओं ने आग से कहा कि तू हवा को साथ लेकर उसमें प्रविष्ट हो जा और जला डाल, आग ने वैसा ही किया उससे सफेद पहाड़ उत्पन्न हुआ और हरा भरा जंगल उगा।

شر یعنی نی تیر پدید گشت که آنجا سوام کارتک وجود گرفت بعد از ان آوما یعنی پاربتی
چرا که از کود پیدا شده
چشم سرخ کرده بغصه شاپ بد دعا داد که عورات شمارا اصلا ولدی متولد نخواهد گشت
و از ابتدای این زمان شما بی اولاد خواهید بود و این گفته زمین را شاپ داد تو هم
بیک صورت بسیار چیز خواهی خورد و از سبب غصه من به پسران محبت نخواهد شد
و چون آرزوی پسر من برنیاوردی تو هم چنین خواهی شد بعد از ان از شرم پاربتی
خواهش رفتن سمت مغرب کرد و مهادیو با پاربتی آنجا رفته بر پشت هماچل تپ یعنی ریاضت
کردن گرفت آنچنین حال او مارا با تو بیان کردم حالا حالات گنگا را بشنو و پیدا شدن
سوام کارتک را بشنو بعد ظهور اینحالت از پاربتی و مهادیو دیوتاها پیش برهما رفتند و برای
مقرر نمودن سیناپت یعنی سردار لشکر خود گفتند که یکه پیشتر سیناپت کرده بود
سردار لشکر جنگ
آو بریاضت مشغول شد آنچه باید کرد تو بفرما ما تابع تو ایم آنرا شنیده برهما بشیرین زبانی
گفت شمارا پاربتی شاپ داد که بی اولاد باشید این خود راست خواهد شد درین شک نیست
این گنگا از نطفه آتش پسری خواهد زائید بسیار عاقل و بسیار زور خواهد گشت این را شنیده
دیوتا برهما را نمسکار کرده پرستش نموده بکوه کیلاس رفتند و از آتش درخواست کردند
آتش بگنگا گفت متحمل نطفه من بشو او قبول کرده حمل او را گرفت از کلانی آتش گنگا بسیار
خشک شد گنگا با آتش گفت که مرا طاقت برداشت گرمی حمل تو نیست من میسوزم و مرا تصدیع

میشود

उसके बाद उमा अर्थात् पार्वती ने लाल आँखों के साथ क्रोध में शाप दिया कि तुम्हारी स्त्रियों को कदापि कोई सन्तान नहीं होगी। इस समय के आरंभ से तुम निःसन्तान रहोगे और यह कहकर भूमि को अभिशाप दिया कि तू भी एक दशा में बहुत सी चीजें खायेगी और मेरे क्रोध के कारण लड़कों से प्रेम नहीं होगा। जब तूने मेरी पुत्री की इच्छा पूरी नहीं की तो तू भी ऐसी ही रहेगी। उसके बाद लज्जा के कारण पार्वती ने पश्चिम की ओर जाने की इच्छा की, महादेव पार्वती के साथ वहाँ जाकर हिमाँचल के ऊपर तपस्या करने लगे यह उमा के विषय में है जो मैंने तुमसे वर्णन किया। अब गंगा के विषय में सुनो और स्वामिकार्तिकेय के जन्म के बारे में सुनो। पार्वती और महादेव की ओर से यह परिस्थिति उत्पन्न होने पर सारे देवता ब्रह्मा के पास गये और अपनी सेना का सेनापति नियुक्त करने की विनती की, और कहा कि जिसे आपने पहले सेनापति नियुक्त किया था वह पूजा एवं तपस्या में व्यस्त हो गया जो कुछ करना चाहिए आप कहिए हम आपके आधीन हैं।

यह सुनकर ब्रह्मा ने मधुर वाणी में कहा, तुमको पार्वती ने शाप दिया है कि तुम निःसन्तान रहोगे यह भी सत्य होगा, इसमे संदेह नहीं है। यह गंगा अग्नि के सहयोग से एक पुत्र उत्पन्न करेंगी, वह बहुत बुद्धिमान और बलवान होगा। यह सुनकर देवता ब्रह्मा को नमस्कार करके और उसकी पूजा करके कैलाश पर्वत पर गये तथा अग्नि से विनती की। आग ने गंगा से कहा, मेरा गर्भ धारण करने को तैयार हो जाओ उसने स्वीकार करके उसका गर्भ धारण कर लिया। अग्नि के ताप से गंगा की छाती सूख गयी गंगा ने अग्नि से कहा मेरे अन्दर तेरा गर्भ रखने की शक्ति नहीं है। मैं जल रही हूँ और मुझे बहुत कष्ट हो रहा है, अग्नि ने कहा ठीक है इसे हिमाचल पर्वत पर डाल दे

میشود آتش گفت پس خوب بر کوه هماچل بینداز از گفتهٔ آتش آن نطفه که بسیار روشن
بینداخت زمین تمام کرپشن یعنی زر و بسرخی مائل شد و آن طلا بوقوع آمد که اصل
زر وهبی باشد قدری ازان سرخ هم شد و قدری سیاه گشت مثل غال و غیرها
بر زمین افتاد گوناگون عقبچه یعنی دهات پیدا آمد آنجا که از افتادن حمل تمام زر شده بود
آن زر ازان زمان جات روپ نام نهادند و آنجا در نیستان طفلی پیدا گردید برای
دادن شیر کرتکا نام دیبی را دیوتا مقرر ساختند و آن طفل را کارتکی نام موسوم کرده
ستنیاپت خود نمود و از شکستن فوج سکند نام کردند و از شش روی کهران خواندند اینقدر
[illegible]
ای رام ترا بتفصیل گفتار پیدایش گنگا و سوام کارتک بیان کردم آفرین باد که تو صواب کار هستی
درینجا صورت رام و لچهمن و بشوامتر و سوام کارتک پسر مهادیو شش رو و صورت کوه که زر و غیره
دهات و نیستان باشد

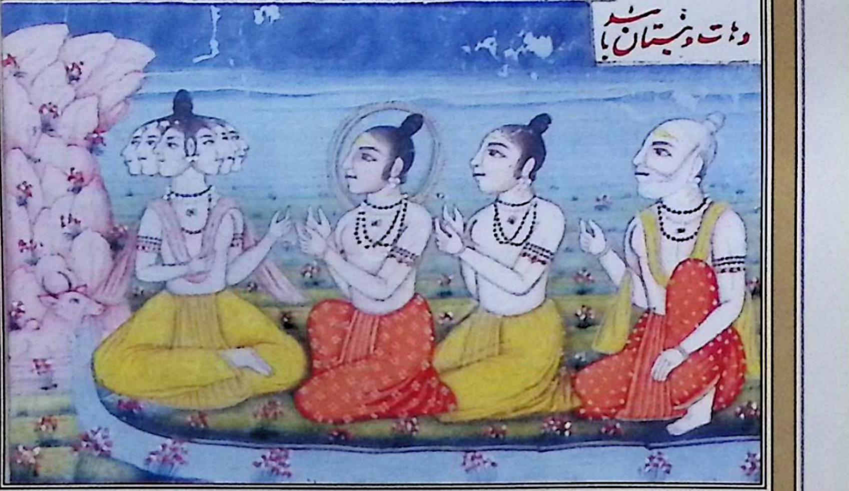

अग्नि के कहने से इस गर्भ को जो बहुत प्रकाशमान था वहाँ डाल दिया। वहाँ की धरती पूरी की पूरी लालिमा लिए हुए पूरी पीली हो गयी और वह सोना पैदा हुआ जो पीला बनाने का मूल तत्व है। इसमें से थोड़ा लाल भी हो गया और कुछ काला हुआ और मल आदि धरती पर गिरा जिससे कई प्रकार की धातु उत्पन्न हुई, जहाँ गर्भ गिरने से पूरी धरती सोना हो गयी थी। इस सोने को उसी समय से जातरूप कहते हैं और वहाँ वन में एक पुत्र उत्पन्न हुआ। दूध पिलाने के लिए देवताओं ने कृत्तिका नाम की देवी को नियुक्त किया और उस लड़के का कार्तिकेय नाम रख दिया एवं अपना सेनापति बना लिया। सेना को पराजित कर देने के कारण उसका नाम स्कन्द रख दिया और छः मुख के कारण उसे षडानन कहने लगे। राम ! मैंने तुमसे गंगा और स्वामिकार्तिकेय के उत्पन्न होने का विस्तृत वर्णन बताया। बधाई हो कि तुम ठीक काम करने वाले हो।

यहाँ राम, लक्ष्मण, विश्वामित्र, स्वामिकार्तिकेय, छः मुख वाले महादेव के पुत्र और पहाड़ आदि का चित्र दिया जा रहा है जहाँ सोना और दूसरी धातुएं होती हैं।

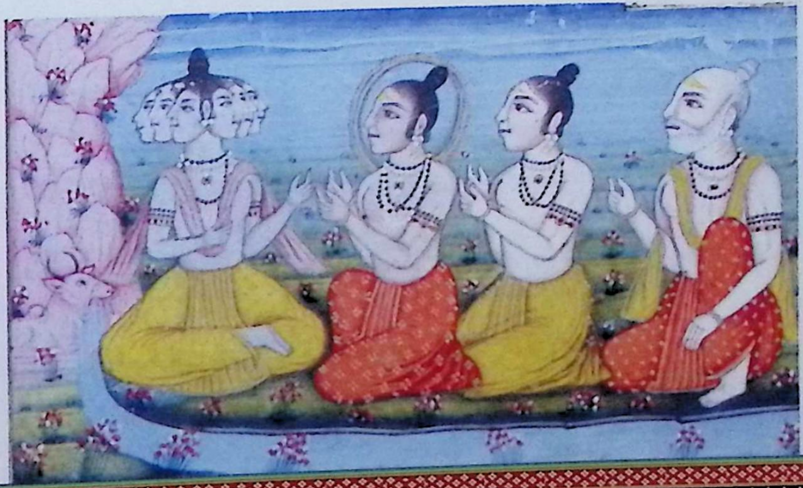

سرگ ۴۳ حال راجه بکر بشوامتر این افسانه را بشیرین زبانی بیان کرده باز به رام گفت راجه

یعنی پادشاه اجودها قبل ازین سگر نام بود مشهور و رعیت پرور دهرماتما و دختر راجه بدر

گشته مسمی بهمین اسم متولد گردید ازازای آن زهر داده بود مادر این را گر بمعنی زهر و سا بمعنی همراه

که کیشنی نام داشت بانوی کلان بود و دختر ارشت نیمی که بحسن بی مثل بر زمین بود سمتی

نام داشت بانوی خورد او بود با آن هر دو عورت بر کوه هماچل نزدیک مکان بهرگ رکهه

راجه ریاضت میکرد بعد از ریاضت صد سال بهرگ که راست گو بود راجه را بر داد ترا پسران

خواهند شد یک عورت تو یک پسر خواهد زائید که صاحب اولاد و نسل خواهد بود و شصت

هزار پسر یک عورت خواهد زائید در همین گفتن بهرگ عورات راجه پرسیدند که یکی که خواهد زائید

و بسیار که خواهد زائید این را بفرمائید بهرگ گفت هر که از شما بسیار خواهد بسیار بگیرد

و هر که یکی خواهد یکی بگیرد گفته بهرگ را شنیده کیشنی بانوی کلان یک پسر بخواست و بانوی

دویمی که همشیره گرد دختر ارشت نیمی بود شصت هزار پسر خواست و گرد رکهه کرده

از سر نمسکار کرده راجه با بانوان بشهر خود رفت بعد چندی بانوی کلان یک پسر زائید

که بنام اسمنج یعنی ازاد شهرت یافت و بانوی دوم که سمتی نام داشت از حمل علقی یعنی کوله خون

وغیره زائید و دایه آنرا علیحده علیحده کرده در شصت هزار سبو پر از روغن گاو نگاه داشت

القصه بعد از مدتی همه جوان شدند چون اسمنج که پسر کلان بود شهریانرا آزار میرسانید

راجه او را شهر بدر کرد از و پسری ماند انشومان نام عزیز همگنان پیدا آمد بعد از مدتی

सर्ग-३३

राजा सगर का वर्णन

विश्वामित्र ने मधुर वाणी के साथ यह कथा कहकर फिर राम से कहाः अयोध्या का राजा अर्थात् बादशाह उससे पहले सगर नाम का था, बहुत प्रसिद्ध, प्रजापालक और धर्मात्मा था। विदर्भराज की पुत्री जिसका नाम केशिनी था उसकी बड़ी पत्नी थी। दूसरी अरिष्टनेमि की लड़की उसके समान सुन्दर अन्य कोई धरती पर नहीं थी और जिसका नाम सुमति था उसकी छोटी पत्नी थी। उन दोनों स्त्रियों के साथ हिमाचल पर्वत पर भृगु ऋषि के आश्रम के निकट राजा तप करने लगा। सौ साल की तपस्या के बाद भृगु ऋषि ने जो सत्यवादी था राजा को वचन दिया कि आपके पुत्र होंगे, आपकी एक स्त्री एक ऐसे पुत्र को जन्म देगी जो सन्तान वाला और वंश चलाने वाला होगा और साठ हजार लड़के दूसरी स्त्री से जन्म लेंगे। भृगु ऋषि की वार्ता के मध्य राजा की स्त्रियों ने पूछा कि यह बताओ कि जो एक बच्चे को जन्म देगी और जो बहुत से बच्चों को जन्म देगी वह कौन स्त्रियाँ हैं। भृगु ऋषि ने कहा तुम में से जो अधिक चाहे वह अधिक ले ले और जो एक चाहे वह एक ले ले। भृगु ऋषि की बात सुनकर बड़ी पत्नी केशनी ने एक लड़का माँगा और दूसरी पत्नी ने जो गरुड़ की बहन और अरिष्टनेमि की पुत्री थी साठ हजार लड़के माँगे और ऋषि के चारों ओर घूमकर सर से नमस्कार करके राजा अपनी रानियों के साथ अपने शहर चला गया। कुछ समय बाद बड़ी पत्नी ने एक लड़के को जन्म दिया जिसका नाम 'असमन्ज' प्रसिद्ध हुआ। दूसरी पत्नी ने जिसका नाम सुमति था गर्भ से माँस के टुकड़ों को जन्म दिया। धाइयों ने उसे साठ हजार मटकों में भरकर सुरक्षित कर दिया। एक लम्बी अवधि के बाद सब नौजवान हो गये। चूँकि बड़ा लड़का 'असमन्ज' जो शहरवासियों को सताता था राजा ने उसे शहर से निकाल दिया। उससे एक लड़का उत्पन्न हुआ अंशुमान नामक वह सबका प्रिय था। एक समय के बाद

راجه سگر را در دل آمد که جگ بکنم این را مقرر کرده با او پادهیایان و کنند کان جگ
و دانایان بید آغاز جگ نمود در همین اثنا آن پسران او در وجود کپل مُنِ داخل شدند
گفته بشوامتر را شنیده رام پرسید که این را شنیدن آرزو دارم بزرگان ما چنان جگ کردند
و چون بمردند بشوامتر تبسم کرده گفت ای رام بشنو خسر مهادیو هماچل بود و بندهه کوه باهم
نظر میکردند ما بین اینها جگ شد آنجا پاک و بسیار بزرگ است در زمینی که جگ می شد
انسی بصورت راچسی درآمد اسپ جگ را گرفته برد آدپاد هیا وغیره اهل جگ گفتند که درین
پرب زود اسپ را بیارید و برنده آنرا بکشید این را شنیده راجه در همان مجلس شصت هزار
پسر را فرمود که رفته تمام زمین که و در دریا شور کرداوست بجوئید و هر یک پسر چهار چهار کروه
زمین بشکافید تا که اسپ بنظر آید و من با انشومان نبیره خود همین جا هستم تا دیدن اسپ آن فرمود
راجه آنهمه خوش شده رفتند و از شول و هل هر یک چهار چهار کروه که یک جوجن باشد
زمین بشکافت از بس اژدرها و راچس و اسر وغیره که کشتند نهایت نداشت همگنان شصت هزار
جوجن که سه لک و بیست هزار کروه باشد زمین کندیدند و تا رساتل که زمین هفتم است رسیدند
بهمین کوهستان جنبودیپ را شکافته شکافته گرد گرد دیدند دیوتا و کندهرپ و اسر و اژدر
حیران شده نزد برهما دویدند گفتند که ما بسیار حیرانیم زیرا که پسران سگر کوه و صحرا و دریا
و دیپ یعنی جزیره تمام زمین بشکافتند برهما فرمود که آنرا که این زمین است او را باسدیو

राजा सगर के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि यज्ञ करूँ यह निश्चय करके ज्ञानियों, यज्ञ करने वालों और वेद जानने वालों के साथ यज्ञ का आरंभ किया इसी मध्य वह दोनों पुत्र कपिल मुनि के आश्रम में प्रवेश कर गये। विश्वामित्र की यह चर्चा सुनकर राम ने निवेदन किया कि मुझे उसके जानने की इच्छा है कि हमारे पूर्वजों ने कैसे यज्ञ किया और कैसे समाप्त किया। विश्वामित्र ने मुस्कुराते हुए कहा कि राम सुनो! महादेव के ससुर हिमाचल थे ....। आपस में एक दूसरे को देखते थे उनके बीच यज्ञ का अनुष्ठान हुआ वहाँ पवित्र और बहुत बड़े वनों में जहाँ यज्ञ हो रहा था कोई किसी राक्षस के वेष में आकर यज्ञ का घोड़ा लेकर चला गया। उपाध्याय आदि यज्ञ करने वालों ने कहा कि इस पर्व में वह घोड़ा शीघ्र लाओ और उसके ले जाने वाले का वध कर दो। यह सुनकर राजा ने उसी सभा में अपने साठ हजार पुत्रों से कहा कि जाकर सम्पूर्ण पृथ्वी में जिसके चारों ओर शोर नदी है खोज करो। हर एक लड़का चार-चार कोस पृथ्वी फाड़े ताकि घोड़ा दिखाई दे और मैं अपने पौत्र अंशुमान के साथ घोड़ा देखने के लिए यहीं पर हूँ। राजा के आदेश से प्रसन्न होकर सब विदा हुए और शूल तथा वहल से प्रत्येक ने चार-चार कोस जो एक योजन होता है भूमि फाड़ी, अजदेह, राक्षस और आयर आदि इतने मारे गये जिनकी कोई सीमा नहीं। सबने अस्सी हज़ार योजन भूमि खोदी जिसका कुल संख्या ३ लाख बीस हजार कोस होते हैं और रसातल अर्थात् सातवीं पृथ्वी पर पहुँच गये। सबने जम्बू द्वीप पर्वत को फाड़कर देखा। देवता, गन्धर्व और असुर व अज़दर आश्चर्यचकित व दुःखी होकर ब्रह्मा के पास गये और कहा हम सब बहुत आश्चर्यचकित हैं क्योंकि सगर के पुत्रों ने पर्वत, वन, नदी और अदीप अर्थात् द्वीप की पूरी धरती फाड़ दी है। ब्रह्मा ने कहा जिसकी यह पृथ्वी है उसे वासुदेव कहते है

گویند و او بصورت کپل گشته اسپ را آنجا برد و کندن زمین اینهم خواهش الهی از قدیم
دانسته آمد و واسطه مردن پسران نیز همین است گفته برهما را شنیده دیوتا بمکان خود ها
رفتند و پسران سگر پیش پدر آمدند و گفتند که تمام زمین شگافتیم و کندیم هرپ و حیچه
و پشاچ و غیره هرکرا یافتیم کشتیم برنده اسپ را نیافتیم آنچه باید کرد بفرما گفته پسرانرا
قسمے از جن
شنیده پدر بغصه گفت باز زمین را بکنید و گیرنده اسپ را گرفته بیارید گفته پدر را شنیده
باز بر ساتل دویدند و را آشنائی کنندن فیل طرف دار زمین را که آساگج نام گویند دیدند بر گرد
در پرب آنفیل زمین را بر کتف می نهد زمین می لرزد آنرا پردچهنان کردند یعنی گرد گشتند
بعد از ان شگافته شگافته طرف قعر را کندیدند آنجا هم فیل را دیدند مهاپدم نام مانند کوه
آنرا هم پردچهنان کردند طرف مغرب را کندیدند آنجا سمنس نام فیل دیدند آنرا پردچهنان
کردند طرف جنوب را کندیدند آنجا بهدر نام فیل دیدند آنرا پردچهنان کردند باز قعر زمین را
کندیدند آنجا کپل مهن باسدیو بسیار زور را دیدند و اسپ را نیز آورا مانع جگ دانسته چشم
سرخ گردانیده بر و دویدند و آوراندانستند که صاحب والی و لم یزل و بی نظیر است
او جمیع پسران سگر را شاپ داده خاکستر نمود در آمدن پسران چون دیر بسیار شد راجه سگر
به نبیره انشومان گفت که سپه سالاری و دانشمندی و بسیار زورداری خبر عمهای خود بگیر
و حوش و غول و غیره ذیحیات مخوف که مابین راه اند برای کشتن آنها شمشیر و کمان برگیر

کارا

और वह कपिल वेष में परिवर्तित होकर घोड़ा वहाँ ले गये । उनकी धरती खोदने की इच्छा पहले से जानकर हुई है और लड़कों के मरने का कारण भी यही है। ब्रह्मा की वार्ता सुनकर देवता अपने स्थान पर वापस चले गये और सगर के पुत्र अपने पिता के पास आए तथा कहा कि हमने पूरी पृथ्वी खोद डाली और गन्धर्व पिशाच आदि जिसको पाया उसका वध कर दिया परन्तु घोड़ा ले जाने वाले को नहीं पाया। अब जो करना है उसका आदेश दीजिए। पुत्रों की बात सुनकर पिता ने क्रोध से कहा। धरती फिर खोदो और घोड़ा ले जाने वाले को पकड़ कर लाओ पिता की बात सुनकर फिर वह पुनः पाताल लोक की ओर दौड़े।

खोदने के मध्य पृथ्वी जिसको आसाकज (विरूपाक्ष) कहते हैं उन्होंने देखी जिस समय पूर्व में हाथी पृथ्वी को कंधे पर रखता है तो पृथ्वी में कंपन होता है। उसको उन्होंने परोछना कर दिया अर्थात् मृत्यु कर दिया उसके पश्चात् खोदते-खोदते गहराई तक खोद डाला वहाँ भी हाथी को देखा जिसका नाम महापद्म था और जो पहाड़ की भाँति था उसको भी परोछना कर दिया। पश्चिम की दिशा में खोदा तो वहाँ सौमनस नामक हाथी देखा उसको भी परोछना कर दिया। दक्षिण की दिशा में खोदा तो वहाँ भद्र नामक हाथी देखा उसको परोछना किया। उसके पश्चात फिर पृथ्वी की गहराई में खोदा वहाँ कपिल मुनि वासुदेव को बहुत जोर से देखा और घोड़े को भी देखा। उनको यज्ञ में बाधक जानकर बहुत क्रोधित होकर उन पर दौड़े और उनको नहीं जाना। वह उसने सगर के समस्त पुत्रों को शाप देकर भस्म कर दिया। जब पुत्रों के आने में बहुत विलम्ब हुआ तो राजा सगर ने अपने पौत्र अंशुमान से कहा कि तू सेनापति, बुद्धिमान और शक्तिशाली है अपने चाचाओं की सुध ले और भयानक पशुओं एवं जंगल के अन्य जीवों के झुंड से भयभीत न हो जो मार्ग के मध्य में हैं। उन्हें मारने के लिए तलवार और कमान ले लो

کار را کرده بیا تا جگ من تمام شود سگر چنین بگفت انشومان کمان و شمشیر گرفته بسرعت رفت
براهی که او پتیرها کندیع بودند در زیر زمین روان شد و مهرکه دیوت و دانو و راجپس و پیشاچ
یعنی عمها
ستایش کنان عقب او رفتند اینهم آن دگج را دید پردچنان کرده خیر و عافیت پرسید
نیل وسا
خبر اعمها پیتر مهکر و اسپ پرسید او را دگج بطریق دعا گفت اسپ را خواهی یافت بهمین آیین
جمیع دگجان را پرستش کرد بآیین احسن همه دعا کردند بعد از ان آنجا که خاکستر عمهائی افتاده بود
رفت و غمگین شد زار زار گریه کردن گرفت و اسپ جگ را نیز از دور نظر کرد خواست تا آنها را
جل کریا کند یعنی آب دهد هیچ جا آب ندید درین اثنا گرڑ که برادر والده مردگان بود
و بقرابت ماموں اینهم باشد بدید گرڑ گفت اینهمه را آب از گنگا دختر هماچل دادن را
سزاواری خاکستر اینها دران آب بیندازی از گداختن آب گنگا این شصت هزار
پسر بآندرلوک خواهند رفت آسپ را گرفته ببر و جگ جد را تمام بگردان گفته گرڑ
یعنی گرڑ را شنیده اسپ را گرفته بسرعت نزد جد آمد و ماجرا عمها و گفتار گرڑ بیان کرد
راجه گفته الم انگیز را شنیده جگ را تمام ساخت و بآمدن شهر خود پرداخت
در آوردن گنگا بیقین سعی نمود تا بسیار مدت کوشش او پیش رفت نبود عاقبت
تا سی هزار سال سلطنت نمود و بملک بقا رفت گویا نزد بابان جگ ها بزمین
نهاده برآسمان برآمد که عشرت گاه و دلخواه دیوتا ها بود از **کوه گنگا**

काम करके आओ ताकि मेरा यज्ञ पूरा हो। सगर ने यह कहा और अंशुमान कमान तलवार लेकर चल पड़ा। इस मार्ग पर से जिसे उसके चाचाओं ने खोदा था। पृथ्वी के अन्दर चला और महर्षि दैत्य, दानव, राक्षस और पिशाच प्रशंसा करते हुए उसके पीछे गये उन्होंने भी पृथ्वी के हाथी को देखा और उसे परोछना करते हुए सकुशल पहुँच गये। उससे चाचाओं और घोड़े का समाचार पूछा उस दिग्गज ने आशीर्वाद के रूप में कहा कि तुम घोड़े को पाओगे। उसी प्रकार उस (अंशुमान) ने समस्त दिग्गजों की पूजा की और सबने बहुत भलीप्रकार से आशीर्वाद दिया। उसके पश्चात् जहाँ उसके चाचा भस्म हुए पड़े थे वहाँ गया देखकर दुःखी हुआ और विलाप करने लगा। यज्ञ के घोड़े को भी दूर से देखा और इच्छा की कि उसे जल दे परन्तु जल कहीं दिखाई नहीं दिया। इसी मध्य उसने गरुड़ को जो मरने वालों की माता का भ्राता था और सम्बन्ध में उनका मामा लगता था देखा। गरुड़ ने कहा कि इन सबको हिमांचल की पुत्री गंगा का जल देना चाहिए। उनकी भस्म जल में डाल दो गंगा का जल पिघलने से यह साठ हज़ार लड़के इन्द्रलोक में चले जायेंगे और तुम घोड़ा लेकर भाग जाना तथा अपने दादा का यज्ञ पूर्ण करना। वह सुपर्ण अर्थात् गरुड़ की बात सुनकर घोड़ा लेकर शीघ्रता से दादा के पास गया और चाचाओं का हाल और गरुड़ का वार्तालाप बताया। राजा ने इस दुखद वृत्तान्त को सुनकर यज्ञ पूर्ण किया तथा अपने नगर आने की तैयारी आरंभ की और गंगा को लाने का भरपूर प्रयास किया। परन्तु बहुत समय तक उनका प्रयास सफल नहीं हुआ। अन्त में वह तीस हजार वर्ष तक शासन करके स्वर्ग लोक को सिधारा अर्थात् यज्ञों का कार्यक्रम पृथ्वी पर छोड़कर आकाश पर आया ताकि देवताओं के प्रिय इशरतगाह बने

برآمده و بشوامتر و رام و لچهمن نشسته

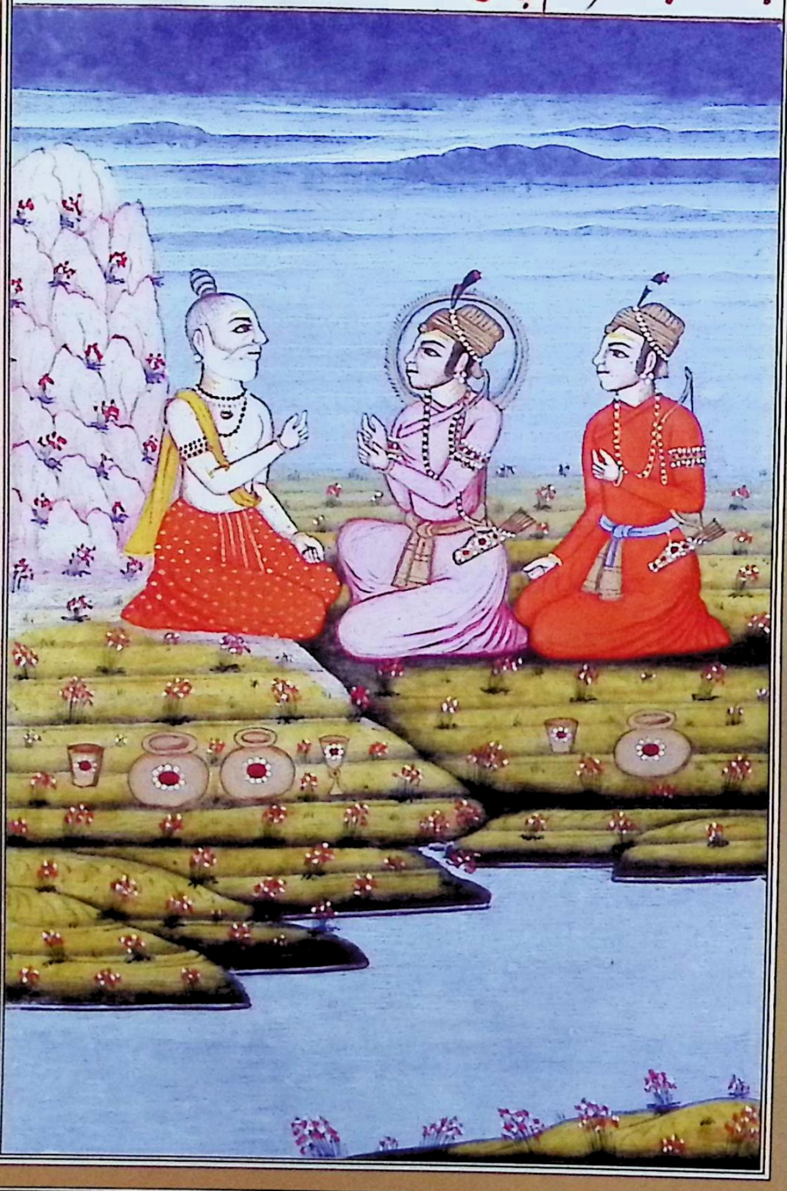

गंगा पहाड़ से निकल रही है और विश्वामित्र राम और लक्ष्मण बैठे हुए हैं।

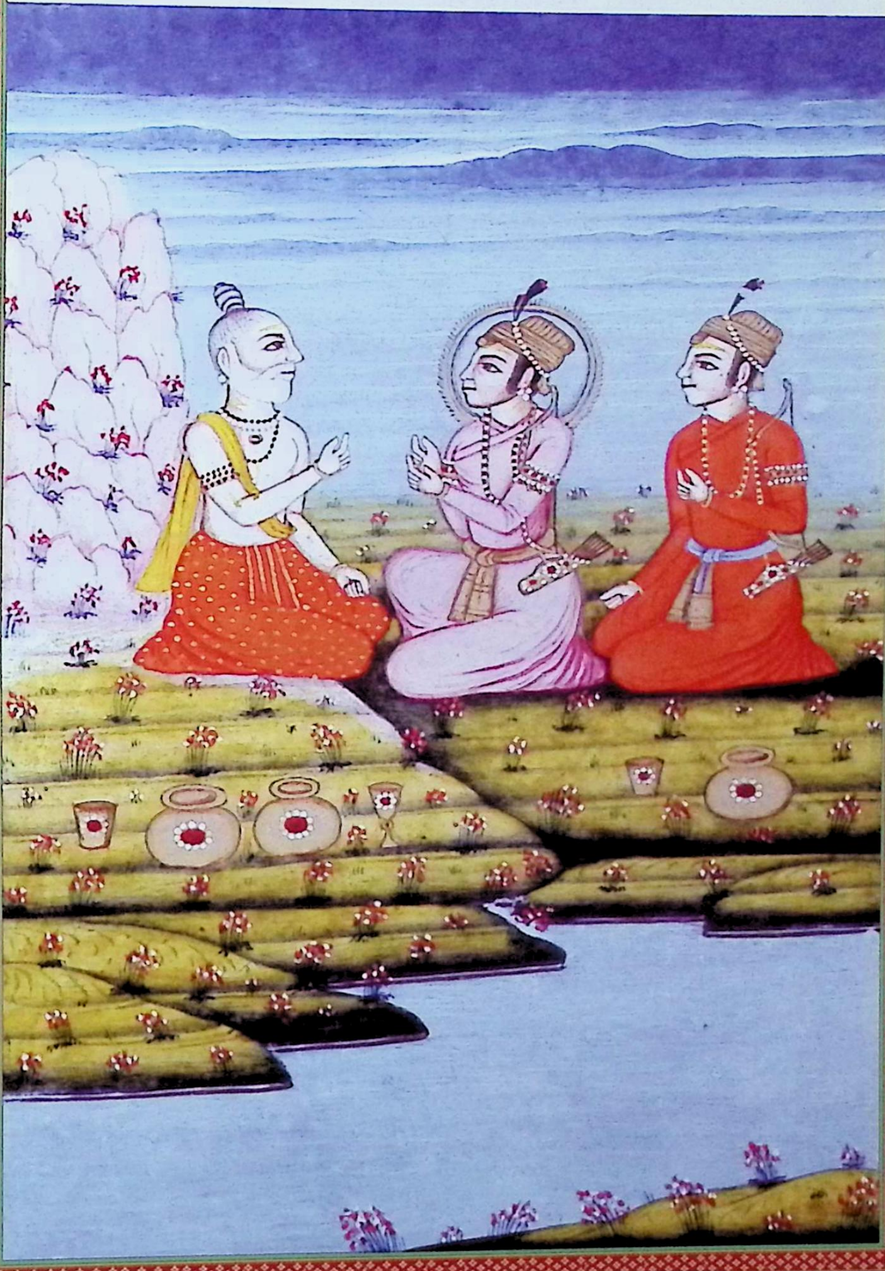

سرگ ۴۲ احوال ریاضت بهگیرته بعد مردن سگر مردم انشومان را راجه کردند و او را دلیپ
نام پسر شد انشومان دلیپ را سلطنت داده بر کوه هماچل بریاضت مشغول شد سی و دو هزار
سال ریاضت کرده بسرگ یعنی به بهشت رفت و دلیپ هم ماجرا را جداد را شنیده بتصحیح
نام در فکر بود که گنگا چگونه فرود آید و چسان بآنها آب داده شود در همین اندیشه و فکر او را
پسر تولد شد بهگیرته نام کرد و دلیپ هم بسیار جگ نمود تا بست هزار سال راج او
بعده بهگیرته را راج داده بمرد باندر لوک رفت که از صواب کاری خود گرفته بود بهگیرته
هم راجه شده دهرماتما اورده باهو یعنی دست بر آسمان داشته و پنج تپا یعنی از پنج آسن
یعنی آنکه هر چهار طرف آتش ها افروخته شده و بالای سر آفتاب باشد و در میان ریاضت کننده
ریاضت کنان و کم خوار و غالب بر حواس خمسه تعداز ریاضت هزار سال برهما بر و مهربان
گشت مقصود او را پرسید بهگیرته دست بسته از سر پرنام کرده گفت اگر مهربان شده
و ثمره ریاضت میدهی پسران سگر را آب برسد و آب گنگا خاکستر آنها را تر کند و در نسب
اچهوا کو تعریف من شود برهما گفت قبول کردم همچنان شود اما برای نگاهداشتن زور آن
مهادیو را مهربان کن زیرا که هنگام افتادن آب زمین را طاقت که زور او را برداشت نماید نیست
او زمین را سوراخ کرده بپاتال یعنی زیر زمین خواهد رفت برای برداشت زور او سوای
مهادیو کسی را نمی بینم بهگیرته پیش مهادیو رفته بسر انگشت پای بر زمین ایستاد بعد یکسال
کامل مهادیو که نمسکار کرده دیوتا هاست و شوهر پاربتی و والی جمیع بهایم و غیره است گفت

सर्ग-३४

भगीरथ की तपस्या का वर्णन

सगर की मृत्यु के पश्चात् लोगों ने अंशुमान को राजा बनाया। उनके दिलीप नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। अंशुमान दिलीप को राज्य देकर हिमांचल पर्वत पर तपस्या में लीन हो गये। बत्तीस हजार वर्ष तक तपस्या करके स्वर्ग में चले गये और दिलीप भी पुरखों का हाल सुनकर इस चिन्ता में थे कि गंगा को कैसे नीचे (पृथ्वी पर) लाएं और उनको जल किस प्रकार दिया जाए। इसी चिन्ता में उसके पुत्र उत्पन्न हुआ उसका नाम भगीरथ रखा और दिलीप ने भी बहुत यज्ञ किये। तीस हज़ार वर्ष तक उसका शासन रहा उसके पश्चात् भगीरथ को राजपाट देकर वे परलोक चले गये। इन्द्रलोक में चले गये जो स्वयं उन्होंने अपनी इच्छा से स्वीकार किया था। भगीरथ भी राजा बनकर धर्मात्मा हुआ और अपना हाथ आकाश की ओर उठाया और पाँच आसनों से तपस्या करके कम सोने वाला तथा इन्द्रियों पर नियन्त्रण पाने वाला हो गया। हज़ार वर्ष की तपस्या के पश्चात् ब्रह्मा उस पर प्रसन्न हुए और उसका उद्देश्य पूछा। भगीरथ ने करबद्ध प्रणाम करके निवेदन किया कि यदि आप कृपालु हो जाएं और तपस्या का फल दें तो सगर के पुत्रों को जल पहुँच जाए और गंगा का जल उनकी भस्म को तार दे एवं इक्ष्वाकु के वंश में मेरा नाम हो। ब्रह्मा ने कहा मैंने स्वीकार किया ऐसा ही होगा यद्यपि उसकी शक्ति को नियन्त्रण में रखने के लिए महादेव को प्रसन्न करो क्योंकि जल गिरने के समय पृथ्वी में इतनी शक्ति कहाँ है कि उसके बल को सहन कर सके वह शीघ्रता से पृथ्वी में छिद्र करके पाताल में चली जाएगी। उसका बल सहन करने के लिए मैं महादेव के अतिरिक्त किसी और को सक्षम नहीं देखता। भगीरथ महादेव के पास जाकर पैर के अंगूठे पर पृथ्वी पर खड़ा हो गया और पूरे एक वर्ष के पश्चात् महादेव ने जो देवताओं को नमस्कार किया हुआ है और पार्वती का पति समस्त ब्रह्मण्ड आदि का मालिक है कहाः हे राजा !

ای راجه بر تو مهربان هستم و آرزوی تو خواهم بر آورد و گنگا را بر سر خواهم نگاهداشت
بعد از ان دختر هماچل را که گنگا باشد راجه یاد کرد و گنگا از آسمان گفت که من هنگام
افتادن خواه مخواه به پاتال یعنی زیر زمین میروم آورا متکبر دانسته از غصه مهادیو
بر کوه هماچل برآمد و جتاها را بمقدار طول و عرض بسیار کرده کشاده گویی یک پاره
کوه هست به گنگا گفت فرود بیا بروانی بسیار گنگا بر افتاد با آواز بلند بر فرق مبارک
مهادیو ببارید آنرا مهادیو در جتا خود نگاهداشت تا یکسال کامل همانجا میگردید بعده باز
بهاگیرته مهادیو را برای گذاشتن گنگا بر خود پسند خاطر گردانید بعده مهادیو یک جتا خود را
بیفشرد از ان رشحات گنگا بر چکیده روان شد همه عالم را تر کنان سیلاب ریزان
از سر مهادیو بزمین رفت آن آب را دیوتاها و رکهه ها بر سر گرفتند و اندر و غیره پرستش کردند
و خود برهما از برهم لوک اینجا آمد و آفیال و آثار در کوه ها راه او را صاف ساختند
دیو رکهه و مهر کهه به جب ها پرداختند دیو و گندهرب و جچهه و سده همراه رفتند
از بیان ها گرهها و مهنس ها و اسپ ها و فیل ها و غیره دویده بر آب میرسیدند و عجایب تر افتادن
تخت روان جانور طایر بعبور نشان
گنگا را دیوتاها دیده همراه می آمدند با آیینی که هزار آفتاب روشن شود گنگا مینمود و جایی
شتاب میرفت و جایی جمع شده میرفت و جایی پهنا شده میرفت جایی سخت جایی بالا
رود جایی آهسته رومیدوید و جایی آب را آب میزده میگذشت و از تیزی خود در حام و خاشاک را

بزاید

मैं तुझ पर प्रसन्न हूँ, तेरी इच्छा पूरी करूँगा और मैं गंगा को अपनी शीर्ष पर उठा लूँगा। उसके पश्चात् हिमाचल की पुत्री गंगा को राजा ने स्मरण किया गंगा ने आकाश में कहा कि मैं ऊपर से नीचे आते समय बेकार में पाताल में चली जाऊँगी उसको घमण्डी जानते हुए महादेव ने क्रोध से हिमाचल पर्वत पर आकर अपनी जटाओं को चारों ओर खूब फैला दिया जैसे कि वह भी पर्वत का कोई अंग या भाग हो और फिर गंगा से कहा नीचे आओ गंगा बड़े वेग तथा तीव्रता के साथ नीचे उतरी और ऊँची ध्वनि के साथ महादेव के सर पर बरसी। उसे महादेव ने अपनी जटा में सुरक्षित कर लिया पूरे एक वर्ष तक वहीं चकराती रही। उसके पश्चात पुनः भगीरथ ने महादेव को गंगा छोड़ने के लिए इच्छानुसार तैयार कर दिया उसके पश्चात् महादेव ने अपनी जटा निचोड़ी और उन बालों से गंगा टपक कर बहने लगी समस्त संसार को जलप्लावित करते हुए और बाढ़ लाते हुए महादेव के सर से पृथ्वी पर आ गयी। इस जल को देवताओं और राक्षसों ने अपने सर पर लिया और इन्द्र आदि की पूजा की। स्वयं ब्रह्मा ब्रह्मलोक से यहाँ आए, हाथियों, अजगरों और पहाड़ों ने उसका मार्ग स्वच्छ किया। देवर्षि और महर्षि उसका जाप करने लगे। देव, गंधर्व, सिद्धनाथ में गये मनुष्य रूपी पक्षी गरुड़ हंस, घोड़े और हाथी आदि दौड़कर पानी के पास पहुँचते थे। इससे आश्चर्यजनक यह कि गंगा का उतरना देखकर देवता दौड़कर साथ आते थे। गंगा ऐसी दिखाई दे रही थी जैसे हज़ारो सूर्य चमक रहे हों और किसी स्थान पर तेजी से जाती और किसी स्थान पर इकट्ठी हो जाती, किसी स्थान पर बड़ी होकर जाती, किसी स्थान पर कठोर होकर जाती। कहीं ऊपर से कहीं धीरे से जाती और कहीं जल पर जल फेंकती जाती और अपनी तीव्रता के आधार पर पत्थर अपने साथ लगाती हुई

پیرایۀ گوش خود کرده بدام اندازی کلان روان میگشت مانند صاعقه تا آسمان موج میزد
از هزار راه تا آب سفید منتشر کنان می آمد گویا در شهر ذرّت بر آسمان هنس طیر میکنند
ماه گنوار
و آب از نهنگ و تنیس و گندهرب وغیره باشندگان زیر زمین پر بود و آنها که در و غسل
[illegible]
میکردند پاک میشدند و بهگیرته راج رکهه بر رتهه دب سوار شده پیش پیش میرفت و گنگا
عقب عقب می آمد و دیوتا و گندهرب و اپسرا و کنر وغیره عقب رتهه بهگیرته بودند
همچنان بزرگ راجه بهگیرته و همچنین بزرگ گنگا همه میرفتند رفته رفته در ساگر سمدر
رسید تا همان راه در زمین که خاکستر بزرگان بهگیرته بود رفت هرگاه گنگا خاکستر را تر
کرد و آلی همه لوک که برهما هست فرو هو دتو همه بزرگان خود را پاک کردی همه شصت هزار
پسر سگر مانند دیوتا تا با آسمان میروند و تا آن زمان که آب در ساگر یعنی دریای شور خواهد ماند
پسران سگر در دیولوک خواهند بود و دارنده دب مالا و دب خوشبوی و خوبصورت
و هنرمند خواهند بود و از سبب تو بهگیرتهی نام خواهد یافت گنگا و بهگیرتهی و ترپتهگا نام
مشهور خواهد شد و همه بزرگان خود را جل کریا بکن تا بزرگان ترا این آرزو ماند نه بر آید
و همچنین انشومان را امید نه بر آمد و همچنان دلیپ پدر تو که هنرمند و مهرکهه و با شوکت
و بزور بی مانند بود در همین آرزو بمرد و این مقصود را تو بر آوردی و در برهم لوک
خواهی رفت این بگفت و برهما به برهم لوک رفت بهگیرتهه هم جل کریا بزرگان و اجداد کرده

उससे बड़ा जाल डालने के लिए आगे बढ़ जाती थी और बिजली की भाँति आकाश पर मौज मारती थी। हजारों मार्ग से सफेद जल बिखेरती हुई आती थी मानो क्वाँर के मास में आकाश में हंस उड़ रहे हों। जल मगरमच्छों और गंधर्व आदि पृथ्वी के नीचे रहने वालों से भरा था जो लोग इसमें स्नान कर लेते थे पवित्र हो जाते थे। राजर्षि भगीरथ घोड़े के रथ पर बैठकर आगे-आगे चल रहे थे और गंगा पीछे-पीछे आ रही थी। देवता, गंधर्व, अप्सरा और किन्नर आदि भगीरथ के रथ के पीछे थे। इतना बड़ा राजा भगीरथ और इतनी बड़ी गंगा सब चल रहे थे। धीरे-धीरे समुद्र में पहुँची। पृथ्वी में इसी मार्ग से जहाँ भागीरथ के पुरखों की भस्म थी गयी जैसे ही गंगा ने राख को तर किया समस्त संसार के स्वामी ब्रह्मा ने कहा कि तूने अपने समस्त पूर्वजों को पवित्र कर दिया। सगर के यह सब साठ हज़ार पुत्र देवता की भाँति आकाश में जाते हैं और उस समय तक जब तक कि जल समुद अर्थात् शोर नदी में रहेगा। सगर के पुत्र देवलोक में रहेंगे और सुगन्धित सुन्दर और कलाकार रहेंगे और तेरे कारण से भागीरथी नाम पायेगी। गंगा, भागीरथी और जाह्नवी ये तीन नाम प्रसिद्ध होंगे और तुम अपने समस्त पूर्वजों को जल दोगे। तुम्हारे पूर्वजों की इच्छा पूर्ण नहीं हुई, इसी प्रकार अंशुमान की इच्छा भी पूर्ण नहीं हुई। इसी प्रकार तेरा पिता दिलीप जो अग्रणी, महर्षि तुल्य मान सम्मान वाले और अद्वितीय शक्ति वाले थे इसी इच्छा में स्वर्ग सिधार गये और यह कार्य तूने पूर्ण किया तू ब्रह्मलोक में जायेगा। यह कहा और ब्रह्मलोक में चला गया। भगीरथ भी अपने पूर्वजों और वंशजों की जल क्रिया करके पवित्र हो गये,

پاک شده داخل شهر خود گردید و بآ دولت و اقبال ملک رانی نمود همگنان را خرم و مبتهج گردانید
و غم و تپ از مردمان دور شد انقدر رای رام را کیفیت فرود آمدن گنگا گفتم بهی نصیب تو باد
پسندها میشود آفرین باد بر تو که این افسانه را شنیدی و بهاگیرت بموج آب پاک
مثل امرت تمام لوک را پاک نمود راجه بهگیرتهه بر رتهه سوار و عقب او گنگا و دیگر اپسرا می آیند

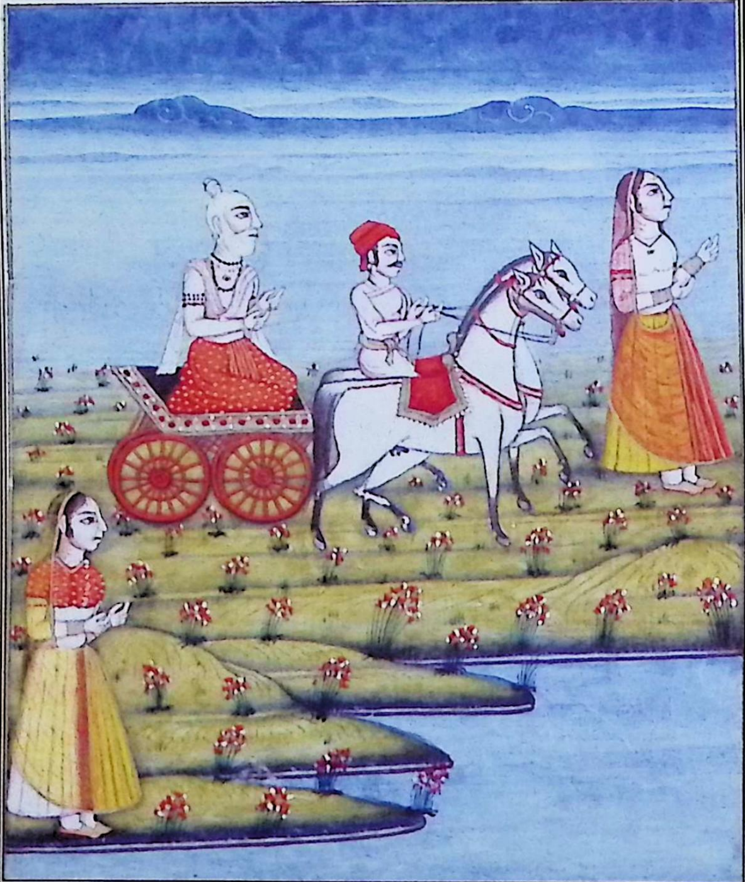

مرکبان

और अपने नगर में प्रविष्ट हुए तथा धनधान्य के साथ शासन किया। सबको प्रसन्न किया और लोगों का दुःख दर्द दूर हुआ। ऐ ! राम मैंने तुमसे गंगा के नीचे आने का समस्त विवरण बता दिया तेरे भाग्य में भलाई हो संध्या हो रही है तेरी प्रशंसा है कि तूने यह कथा सुनी और भागीरथ ने पवित्र जल की धारा से अमृत की भाँति सारे संसार को पवित्र कर दिया।

राजा और भगीरथ रथ पर सवार हैं
और उनके पीछे गंगा और दूसरी अपसरायें हैं।

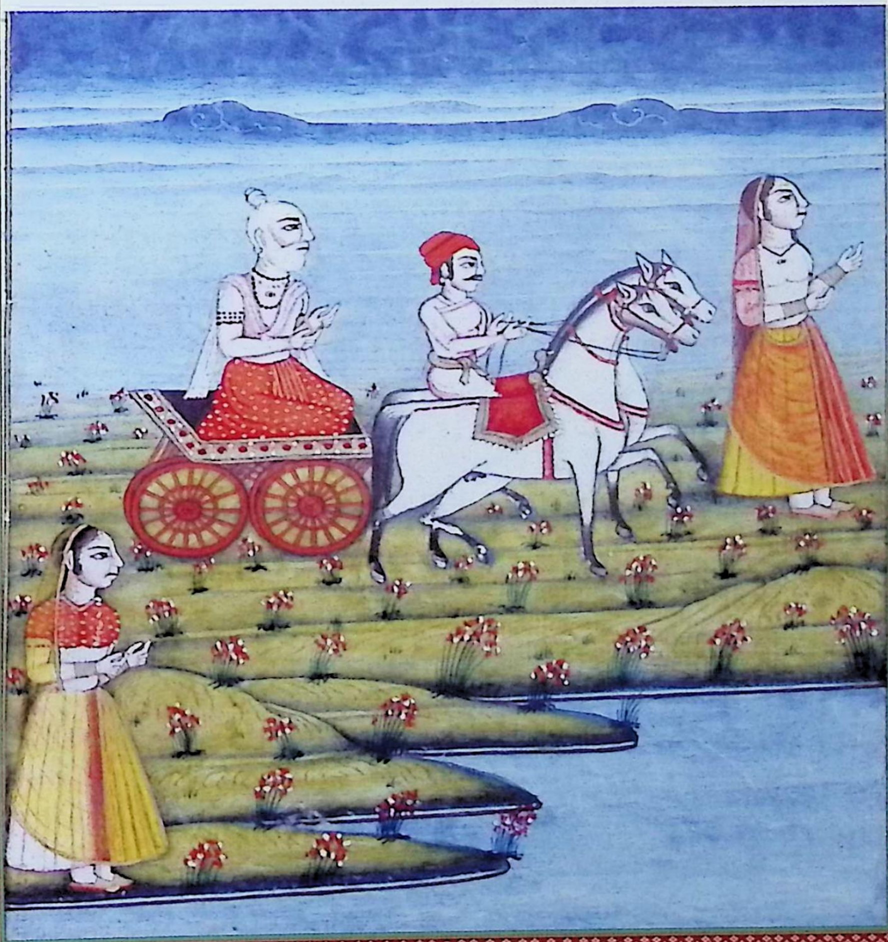

سرگ ۳۵ برآمدنِ امرت گفته بشوامتر را شنیده رام و لچهمن در تعجب ماندند و گفتند
کیفیت برآمدنِ گنگا و پر کردن ساگر بسیار لطیف بیان کردی تمام شب مقدار یک لمحه
بگذشت بعد از ان بگاه رامچندر به بشوامتر کیفیت تمام شب درین عجایب افسانه گنگا بگذشت
و کشتیهای منیشران ترا دانسته اینک آمده اند گفته رام را شنیده بشوامتر با رکهیشران سوار
کشتی شده عبور کرد آنطرف گنگا بر ساحل رسیده بشالا شهر را دیدند بعده رام دست بسته
شهری در و بهتر مکانها باشد
از بشوامتر کیفیت شهر بشالا پرسید گفته او را شنیده رکهیه احوال قدیم بشالا به بیان در آورد
که من این ماجرا از اندر شنیده ام آنرا با تو میگویم ای پسر بشنو ازین در ستجگ پسران دت
یعنی دیت و پسران ادت یعنی دیوتا با هم بزور و بقوت برابر شدند و مصلحت کردند که
دریای شیر را بر هم زده امرت برآرند که آنرا خورده از مرگ و پیری و تپ خلاص شویم
و چنان مقرر کرده مهچک یعنی مثبتان یعنی آلت برآوردن روغن مندر نام کوه را
گردند و عروه یعنی نیتر یعنی رسن بستن آن باسک نام مار را کردند و آب را کیساپندن
یعنی بر هم زدن آغاز کردند از میان آن زمان شکیل برآمدند که اپسرا نامند و سائم ترجمه
گویند وجه تسمیه همین است که آپ در هندوی آب را گویند و سرا بیرون آمده را اپسرا
باشد و آنها بتعداد شصت کرور بودند و خوش و خوبصورت و خوش پیرایه و تحسین و جوانی
و هنر خوشنماتر و کنیزکان و واهان آنها آنقدر که بشمار در نیاید آنها را دیوتا و دانوان

सर्ग-३५

अमृत का निकलना

विश्वामित्र की बात सुनकर राम और लक्ष्मण आश्चर्य में पड़ गये और कहा कि आपने गंगा के आगमन और सागर को भरने का वर्णन बहुत सुन्दर ढंग से किया है। पूरी रात्रि ऐसे व्यतीत हो गयी जैसे एक पल। इसके पश्चात् प्रातः रामचन्द्र ने विश्वामित्र से कहा कि सम्पूर्ण रात्रि इसी गंगा की आश्चर्यजनक कथा में व्यतीत हो गयी और मुनीश्वरों की नौकाएँ आपके आगमन को जानकर अभी-अभी आयी हैं। राम की बात सुनकर विश्वामित्र ने ऋषियों के साथ नौका में बैठकर नदी को पार किया और गंगा के दूसरी ओर तट पर पहुँचे। सुन्दर भवनों वाले नगर विशाला को देखा, उसके पश्चात् राम ने विश्वामित्र से हाथ जोड़कर विशालानगर का हाल पूछा। उनकी बात सुनकर ऋषि ने विशाला की प्राचीन स्थिति का वर्णन किया कि मैंने यह घटना अन्दर से सुनी है उसे तुमको बताता हूँ। ऐ लड़को ! सुनो सतयुग में दैत्य अर्थात् दिति के लड़के और अदित्य अर्थात् देवता के पुत्र आपस में बल व शक्ति में समान हो गये और आपस में परामर्श किया कि मीठे नदी (क्षीर सागर) को मथकर अमृत निकाले, जिसको पीकर मृत्यु, वृद्धावस्था और तप से मुक्ति पा जाएं और यह तय करके कि महचक अर्थात् मन्दराचल अर्थात् तेल निकालने का आला मन्दर नामक पहाड़ को नियुक्त किया और उसमें रस्सी बाँधने के लिए वासुकि नामक साँप को चुना पानी को मथना आरंभ किया। उसके अन्दर से सुन्दर स्त्रियाँ निकलीं जिन्हें अप्सरा कहते हैं। अनुवादकर्ता कहता है कि हिन्दी में आब अर्थात् पानी को कहते हैं और सरा बाहर आने वाले को, इस प्रकार अप्सरा होता है और वह संख्या में साठ करोड़ थी। प्रसन्न व सुन्दर, अच्छे वस्त्र सौन्दर्य और यौवन में श्रेष्ठतम थी और उनकी सेविकाएँ इतनी थीं कि गणना में नहीं आ सकती। उन्हें देवताओं और दानव आदि ने ले लिया।

وغیرہا کرفتند بطریق ازدواج وغیر ازدواج و برضامندی و نوعدیگر متصرف شدند

بعده دختر زن بارنی بخواهش بیاه خود از آب برآمد پسران دیت را گذاشته پسران ادت را

راجه جل

خواهش کرد از آنوقت دیوتاها سرانام یافتند و دیت ها اسرا گشتند داو چیبی شتر وانام اسپ

برآمد و گوس تهبه بن برآمد و آمرت برآمد و دهنتر طبیب برآمد با سفید کمندل بعد ازان زهر

هلاهل برآمد آن را مهادیو در کلو نگاه داشت و دیگر اشیا برآمدند آمرت را دیده دیوتا

برو دویدند بجهة امرت بسیار کشته شدند پسران ادت یعنی دیوتا پسران دت را هلاک

ساختند و آنها را کشته اندر راج لوک ها یافت و دشمنان را کشته با دیوتاها خوشوقت شد

بعد از کشتن پسران دت اهلیه کشیپ رکهه بشوهر خود گفت پسر تو که اندر باشد پسران مرا کشت

بنابران بریاضت بیشمار پسری که اندر را بکشد از تو آرزو دارم مراحل نگاهدار تن تپ میکنم

گفته او را شنیده کشیپ ولد مریچ در جواب گفت همچنین خواهد شد تو پاک شو پسر کشنده

اندر خواهی زاد اما اگر تا هزار سال کامل پاک خواهی بود این بگفت و آو را دست انداز

کرده برفت بعد رفتن او دت بتصدیع تمام گاه را گسترده بر و ریاضت کلان کردن گرفت

و اندر بعقیده تمام خدمت میکرد و هیمه برای آتش و گاه یعنی کش و گل و اثمار و بیخ اشجار

که تناول نموده شود آورده میداد آنچه میخواست بعد تصدیع ریاضت وجود اورا

چپی و تلمیس مینمود و روز هر وقت بخدمت او مستعد بود هرگاه از هزار سال کامل ده سال

باقیماند

कुछ ने विवाह करके कुछ ने बिना विवाह के और उनकी स्वीकृति अथवा धमकी देकर उन पर अधिकार कर लिया। उसके पश्चात् वरुण की पुत्री वारुणी अपने विवाह की इच्छा से जल से प्रकट हुई और उसने दिति के पुत्रों को छोड़कर अदित के पुत्रों की इच्छा की। इसी समय से देवताओं ने 'सुर' नाम पाया और दैत्य ने सुरों की हत्या कर दी। उच्चैः श्रवा नामक अश्व प्रकट हुआ मणिरत्न प्रकट हुआ और अमृत भी निकला। मुख और दंत चिकित्सक (धन्वन्तरि) सफेद कमल के साथ निकला, उसके पश्चात् विष हलाहल निकला उसे महादेव ने कण्ठ में सुरक्षित कर लिया और अन्य दूसरी वस्तुएँ निकलीं। अमृत देखकर देवता उस पर दौड़े अदिति के पुत्रों अर्थात् देवताओं ने दैत्य के पुत्रों की हत्या कर दी और उनका वध करके इन्द्र ने अपने लोक का राज्य पाया और शत्रुओं का वध करके देवताओं के साथ बहुत अच्छा किया। दिति के पुत्रों के वध के बाद कश्यप ऋषि की पत्नी ने अपने पति से कहा तेरे पुत्र इन्द्र ने मेरे पुत्रों को मार डाला। इस आधार पर बहुत अधिक तपस्या के बदले तुझसे मैं एक ऐसे पुत्र की इच्छा रखती हूँ जो इन्द्र का वध करे अपना गर्भ सुरक्षित रख मैं तपस्या कर रही हूँ। उसकी वार्ता सुनकर मरीच के लड़के कश्यप ने उत्तर में कहा ऐसा ही होगा। तू पवित्र हो जा, इन्द्र को मारने वाली तू पुत्र जनेगी अगर तू पूरे एक हज़ार वर्ष तक पवित्र रहेगी। यह कहा और उसको आशीर्वाद देते हुए चले गये। अदिति के जाने के पश्चात् पूरे साज सज्जा के साथ कुशपल्व नामक तपोवन में आकर कठिन तपस्या करनी आरंभ कर दी। इन्द्र पूर्ण सद्भाव से सेवा करते थे। सब अग्नि, घास अर्थात् कुश, काष्ठ, फल और पेड़ों की जड़ जो वस्तुएँ खाई जाती हैं वह सब लाकर देते थे। जो कुछ चाहती उसे बड़े परिश्रम से लाते थे। प्रतिदिन उसकी सेवा में लगे रहते थे। जब एक हज़ार वर्ष में से दस वर्ष शेष बचे तो दिति ने बड़ी

باقیماند دت بمهربانی تمام به اندر گفت بعد گذشتن ده سال باقی مرا پسر که برادر تو باشد
پیدا خواهد شد هر دو برادر باهم شده هر سه لوک را راج خواهید کرد این بگفت و هنگام
دو پاس روز اقدام را بر سر کرده بخواب رفت شاید اندام نهانی در نمود و بود اندر بجوشی
خنجر کرده در وجود او داخل شده و از بجر که سلاح اندر است آن حمل را هفت پاره ساخت
هنگام پاره کردن آن حمل گریه کرد دت دانست و گفت بکش بکش اندر ازین گفته ما در بیرون آمده دست
بسته گفت تو پایها را بر سر کرده ناپاک خفته بودی ازو به نشیب من قابو یافته دشمن خود را هفت پاره کردم تو بر حال ام
خواهی بخشید صورت سمدر شیر که مندر نام کوه را چوب کرده و رسن از باسک ساخته یکطرف دیوتا و

یکطرف دیت چهارده رتن می آرند

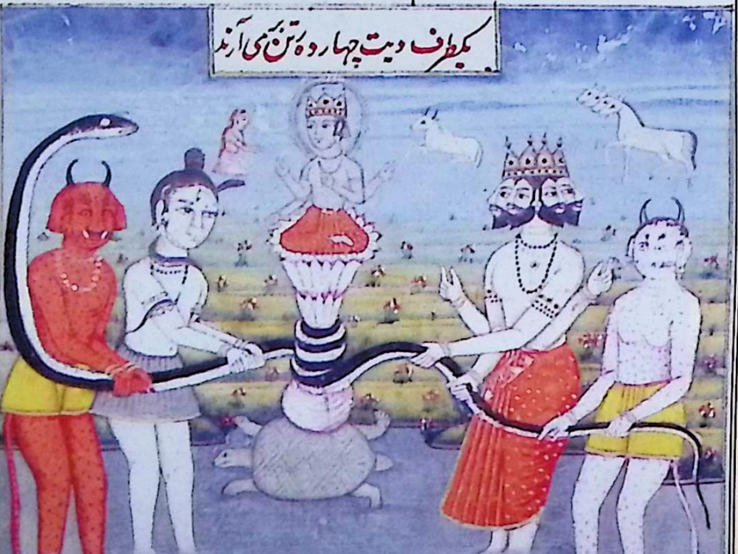

कृपापूर्वक इन्द्र से कहा कि शेष दस वर्ष पूर्ण होने के पश्चात मेरा पुत्र जो तेरा भ्राता होगा, उत्पन्न होगा तुम दोनों भाई आपस में मिलकर तीनों लोक पर राज्य करोगे। यह कहा और दो घड़ी दिन शेष रहने पर पाँव को सर पर रखकर सो गयी। इसलिए इन्द्र प्रसन्नता से हँसे और उसके शरीर में प्रविष्ट होकर बज्र जो कि इन्द्र का अस्त्र है इससे गर्भ के सात टुकड़े कर दिये। गर्भ को टुकड़े करते समय दैत्य का रोना जानकर कहा मत मार मत मार। माँ के इस कहने पर इन्द्र ने बाहर आकर करबद्ध कहा तू पाँव को सर पर करके अपवित्र दशा में सोई थी। मैंने अपने नियन्त्रण में आए हुए शत्रु के सात टुकड़े कर दिये तू मेरी दशा पर दया कर।

एक तरफ़ देवता और एक तरफ़ १४ देव मंथन पर रत्न निकालते हुए!

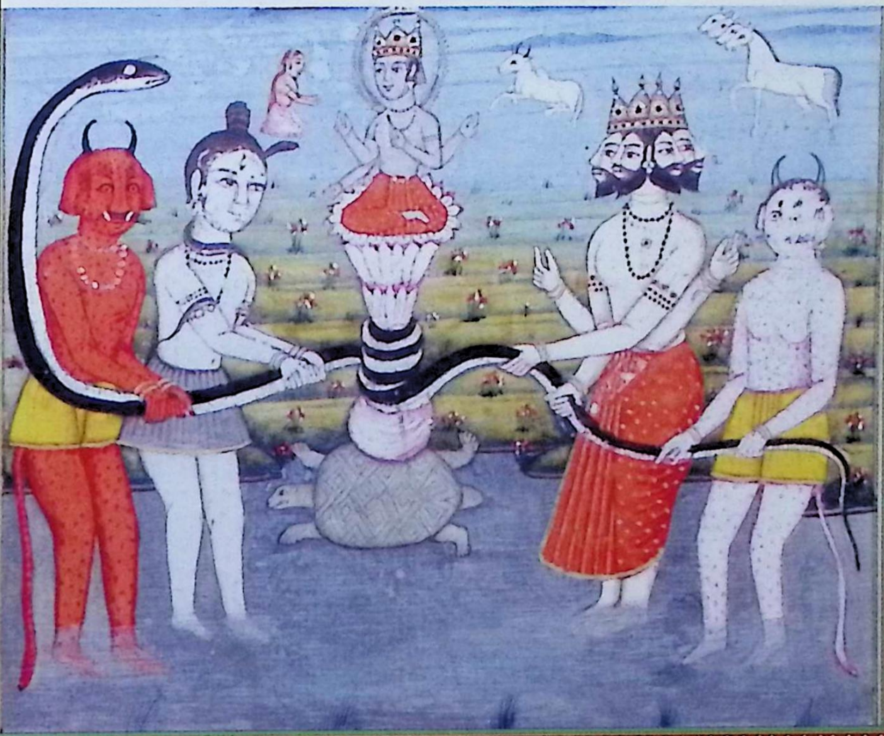

سرگ ۳۶ بعد هفت پاره شدن حمل دِت بتصدیع تمام باندر گفت از سبب خطائی من تو
حمل را پاره کردی گناه تو هیچ نیست برین حمل ملطف فرما این هفت مُرُت هوا دیوتا خواهند شد
هفت جای را محافظت خواهند کرد و بمروت شهرت خواهند یافت یکی در برهم لوک خواهد بود
و یکی در اندر لوک سیوم بشنوک بایو یعنی چهار سو باد رفتن چهارم اطراف را نگاه خواهد داشت همین طور در
حکم تو خواهند بود گفته او را شنیده اندر دست بسته گفت آنچه فرمودی همچنان خواهد شد
بیشک چنان مقرر کرده مادر و پسر هر دو بآسمان رفتند یکی از آن هفت که بشنوک بایو مشهور بود
او با النبوکیا پسرا صحبت نمود بشال نام پسر تولد شد او این بشالا نام بلده بنا کرد و پسر بشال هیم چندر بود
نام شد و پسر او سوچندر بهتر نام شد و پسر او دهوم راشُو نام شد پسرش سرنجی تیز رو رفتار نام شد پسر او سهدیو همراه دیوتا باشد نام شد
پسر او کرشاشو پسر او سوم دت داد به ماهتاب پسر او جنمیجی پسر او که درین بلده میباشد پرمتی عقل کلان نام هست و از دعای
بشنوک بایو همگنان عمر دراز یافتند و قوتمند و دیر ما تما گشتند ای رام امشب همین جا
با راحت تمام اقامت خواهیم نمود پگاه صبحی راجه جنک را می بینیم بعد از آن استماع خبر آمدن بشوامتر
آن راجه پرمتی بپیشوا آمد با اوپادهیا و اقربا پرستش نمود و دست بسته به بشوامتر گفت
من بسیار بزرگم و بسیار مقبولم که شما را دیدم مثل من دیگری نیست ثمرهٔ زندگی من حاصل شد
و خواهش دل بر آمد بایکدیگر خیریت و عافیت پرسیده در اثنای گفتار پرمتی گفت این هر دو
نوجوان که مثل دیوتا با زور اند و روش چون فیل دارند و قوت چون شیر و خشم چون

सर्ग-३६

दिति का गर्भ सात टुकड़े कर दिये जाने के पश्चात् बड़े दुःख से इन्द्र ने उससे कहा कि मेरे अपराध के कारण तूने गर्भ के सात टुकड़े करा दिये तेरा कोई अपराध नहीं है। इस गर्भ पर दया कर यह सात मृत्यु के देवता होंगे। सात स्थान की रक्षा करेंगे और भलाई और सज्जनता में प्रसिद्ध होंगे एक ब्रह्मलोक में होगा, दूसरा इन्द्रलोक में तीसरा दिव्य वायु होगा अर्थात् वायु चारों ओर से चलेगी, चौथा चारों ओर की रक्षा करेगा इस तरह तेरे आधीन रहेंगे उसकी बात सुनकर इन्द्र ने हाथ जोड़कर कहा तूने जो कहा है निश्चय ही वैसा होगा यह निर्धारित करके माता और पुत्र दोनों आकाश में चले गये। इन सात में से एक जो शोक वायु के नाम से प्रसिद्ध था उसने अलम्बुषा अप्सरा के साथ संसर्ग किया जिससे विशाल नामक पुत्र पैदा हुआ उसने विशाला नामक नगर बसाया और विशाल का लड़का हेमचन्द्र नाम का हुआ। इसके पुत्र का नाम सुचन्द्र था उसके पुत्र का नाम धूम्राश्व था और उसका लड़का सृंजय नाम का हुआ और उसका पुत्र सहदेव नामक हुआ उसका पुत्र कुशाश्व उसका पुत्र सोमदत्त उसका पुत्र काकुत्स्थ उसका पुत्र जो इसी नगर में रहता है सुमति नाम है और इक्ष्वाकु के आशीर्वाद से सब दीर्घायु हुए और धर्मात्मा बने। राम आज की रात्रि हम यहीं निवास करेंगे। प्रातः मैं राजा जनक को देखता हूँ उसके पश्चात विश्वामित्र के आने का समाचार सुनकर वह राजा सुमति अगुवानी को आया और मन्त्रियों तथा सगे सम्बन्धियों के साथ सम्मान दर्शाया एवं करबद्ध होकर विश्वामित्र से कहा कि मैं बहुत वृद्ध हूँ और बहुत भाग्यशाली हूँ कि मैंने आपको देखा । मेरे जैसा भाग्यशाली कोई नहीं है मेरे जीवन का फल मुझे प्राप्त हुआ और हार्दिक प्रसन्नता हुई। एक दूसरे का कुशलक्षेम पूछते हुए वार्ता के मध्य में सुमति ने कहा कि यह दोनों युवक जो बल में देवता के समान हैं, हाथी जैसी चाल रखते हैं, शेर जैसी शक्ति

نیلوفر و دارنده اسلحه خوب اند مانند اشونی کماران اند چرا پیاده آمده اند و برای چه
هر دو فرزندان از نظر آفتاب [illegible] رسیده متوجه شده اند بصورت شغوان [illegible] مدام همراه او با [illegible] شده اند عبید له
آمده اند و از کیستند که مثل مهر و ماه این شهر را آراستند گفته او را شنیده بشوامتر حقیقت
شرم و کشتن راچهسان و دیگر ماجرا بتفصیل بیان کرد آن راجه پسران دشرته دانسته اعزاز و اکرام
بجا آوردند آن شب آنجا مانده صبحی در شهر راجه جنک رسیدند و آنجا را دیده خوشوقت شده
خوب خوب با حسنت گفتند نزدیک باغات آنجا مکانی خالی از آدمیان دیده رامچندر
از بشوامتر پرسید این مکان سایه دار خالی از کسان از کیست بشوامتر در جواب گفت این مکان
گوتم مهامنی است دیوتا هم اینجا را پرستیده اند او با اهلیا عورت خود در اینجا تپ میکرد
مهارکه
بسیار هزاران سال بگذشت وقتی در غیبت او اندر خود را بلباس گوتم ملبس نموده با اهلیا
یعنی بسیار [illegible]
گفت مرا خواهش جماع است سرعت بکن اهلیا اندر را بلباس گوتم فهمیده بخوشوقتی او عقل زشت
نمود و گفت شتاب شو مرا و خود را از گوتم نگاه دارا اندر قبول کرده با او صحبت کرد اهلیا
بحیرت و فکرت از زجر و توبیخ گوتم بود که درین اثنا گوتم که از غسل دریا برآمده مثل آتش
روشن بود اندر را آمده دید گشش یعنی گاه و چوب در دست گرفته بغضب گفت ای بیعقل
لباس من کرده کار ناکردنی را کردی بی ثمر خواهی شد اندر بصورت برکهه یعنی گاو حمل شده
بر زمین افتاد و از غصه اهلیه را نیز شاپ داد که بیشمار سالها تو که بدرگاه هستی در خاکستر
خواهی خفت و خواهی طپید در همین مکان خواهی ماند و کسی ترا نخواهد دید هرگاه صحرا رامچندر ولد

और नीलोफर (नीलकमल) के पुष्प के समान आंखों के स्वामी है तथा खूब शस्त्र रखने वाले हैं और सूर्य की सन्तान लगते हैं यह पैदल क्यों आए हैं ?और किसलिए आए हैं ?और किसके पुत्र हैं ?कि चन्द्रमा व सूर्य के समान इस नगर को दोनों ने सुशोभित कर दिया है। उसकी बात सुनकर विश्वामित्र ने सिद्ध आश्रम की वास्तविकता और राक्षसों को मारने और अन्य घटनाओं का विस्तार से वर्णन किया। उस राजा ने उन्हें दशरथ का पुत्र जानकर उनका सम्मान और आदर सत्कार किया उस रात्रि वहीं निवास करके प्रातः राजा जनक के नगर में पहुँचे और वह स्थान देखकर बहुत प्रसन्न हुए। उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की वहाँ उपवन के निकट एक आश्रम मनुष्यों से खाली देखकर रामचन्द्र ने विश्वामित्र से पूछा कि यह मानवरहित छायायुक्त स्थान किसका है। विश्वामित्र ने उत्तर में कहा यह आश्रम गौतम महामुनि का है। देवताओं ने भी यहाँ पूजा की है और वह बहुत हजार वर्ष बीते अपनी पत्नी अहिल्या के साथ यहाँ तपस्या करता था। एक बार उसके अनजाने में इन्द्र ने अपने को गौतम के वस्त्रों से सुसज्जित करके अहिल्या से कहा कि मुझे संभोग की इच्छा है शीघ्रता कर अहिल्या ने इन्द्र को गौतम के वेष में समझकर उससे कहा कि शीघ्रता से आ जाओ और अपनी इच्छा को गौतम से छुपाओ । इन्द्र ने स्वीकार करते हुए उससे संभोग किया अहिल्या गौतम के अभी आश्चर्य में थी कि इसी मध्य गौतम जो नदी में स्नान करके बाहर निकला अग्नि के समान प्रकाशित था। इन्द्र को आता हुआ देखकर घास (कुश) और (समिधा) लकड़ी हाथ में लेकर क्रोध से कहा ऐ मूर्ख। तूने मेरे रूप और वस्त्र गलत कार्य के लिए प्रयोग किये तू सन्तानहीन रहेगा। इन्द्र बरख अर्थात् गाय के रूप में गर्भ होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा और उसने क्रोध से अहिल्या को शाप दिया कि तू अनगिनत वर्षों तक जीवन में धरती में सोयेगी और तड़पेगी और इसी भवन में रहेगी और तुझे कोई नहीं देखेगा।

دشرته خواهد آمد پاک خواهی شد و حرص و بیهوشی دور کرده اعزاز و اکرام او خواهی کرد آنزمان
صورت اصلی خواهی یافت این بگفت و گوتم در ملک سده و چارن رفت و اهلیا همین جاست
و تپ و ریاضت میکند مکان گوتم رکهه خالی از آدمیان و اهلیا که مثل سنگ افتاده رامچندر و لچهمن

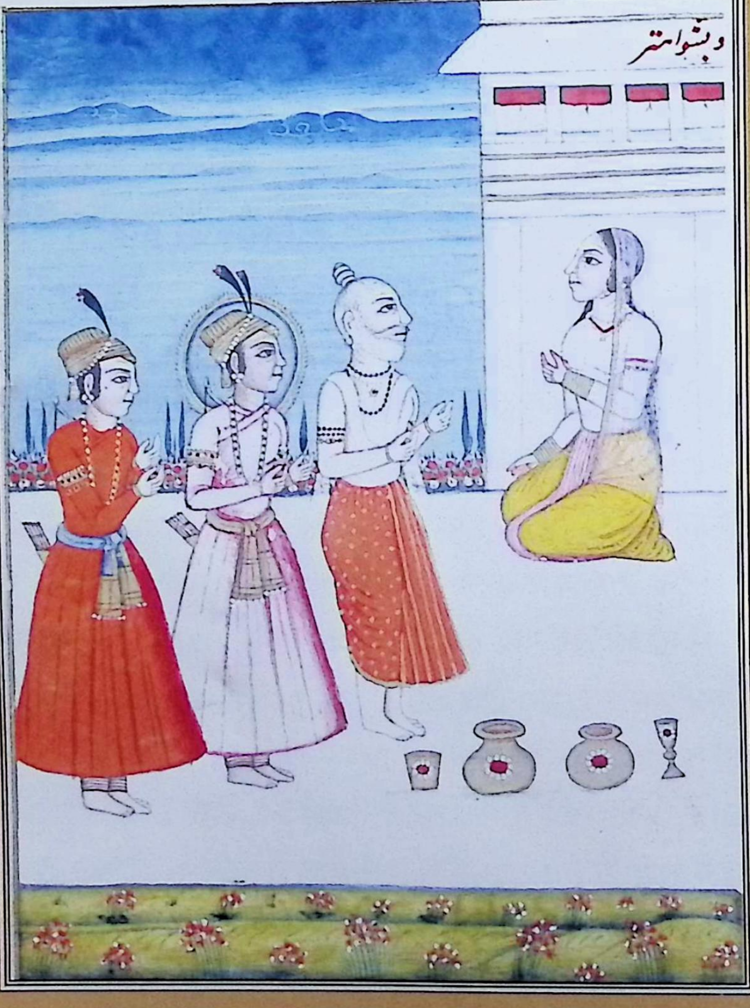

जब इस वन में दशरथ के पुत्र रामचन्द्र आयेंगे तो तू पवित्र होगी और लालच और मूर्छा समाप्त करके उनका आदर सत्कार करेगी, उस समय तू अपना असली रूप पायेगी। यह कहकर गौतम सिद्ध और चारण से सेवित हिमालय पर चला गया और अहिल्या इसी स्थान पर है तथा पूजा व तपस्या कर रही है।

गौतम ऋषि का आश्रम जो मानव रहित है और अहिल्या पत्थर के समान बैठी हुई है।

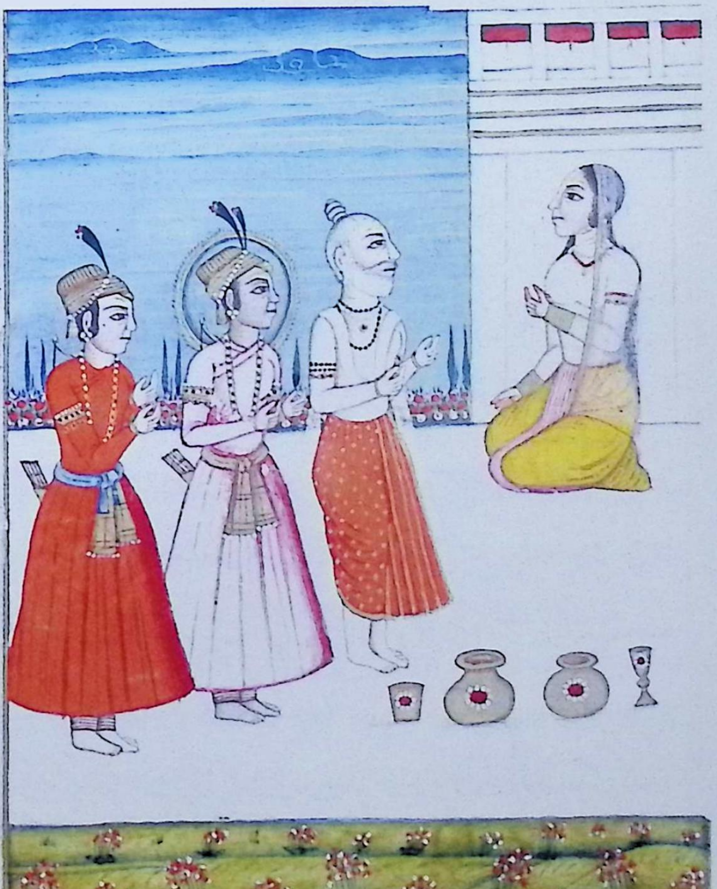

سرگ ۴۷ چون اندر بی ثمره شد با آتش وغیره دیوتا گفت من برای راحت دیوتا مانع تپ
گوتم شدم او مرا بی ثمره کردانید بنابران شما همه بارکهها و چارن ها مرا باثمره بکنید یعنی تشبیل
بنمایید گفت او را شنیده آتش با دیوتا و پترها گفت این بی ثمر حل و برکهه فربه خواهد شد از سبب شما
بسیار ثمره خواهد شد گفته آتش را شنیده دیوتا و پتر حل و کاو یعنی میکهه برکهه
پیدا ساخته به اندر دادند از آن زمان دیوتا و پتر میکهه و برکهه اپهل میخورند و تسپبل
یعنی بیضه را دور میکنند بیضه ها
میکیرند اندر میکهه برکنه از آن زمان هست و ریاضت گوتم را بسیار ثمره هست بیایید
تا بمکان ماک او برویم و اهلیا را پاک کردانیم بعده بشوامتر را پیشوا کرده رامچندر و لچهمن دران
صحرا رفتند او را دیدند بریاضت نشسته تنها بنوعی که سر او را سر نه بینید بکمال محافظت
یعنی دیوتا یعنی
نگاهداشته در دود آتش وخاک تمام وجود او مثل روشنی آتش نمایان گویا بدر به برم
توکهار درگرفته است رام و لچهمن هر دو پای او گرفتند و او گفتار گوتم را بخاطر آورده
کهل
هر دو را اعزاز نمود هر دو را ارکهه و پاد داد رامچندر هم مطابق شاستر آن را قبول
نمود دیوتا از آسمان بشب برشت کردند یعنی گل باریدند و آواز دوندب
باریدن گلها
یعنی نقاره شد کنده هرپ و اپسرا ها آمدند دیوتا اهلیا را گفتند خوب خوب
و گوتم صاحب ریاضت کلان آمده با اهلیا پرستش رام کرد و رام هم پوجا را او
گرفته بشهر متهلا که شهر جنک است رفت اهلیا بصورت اصلی خود شده پوجا رام میکند و گوتم بر کهه

सर्ग-३७

जब इन्द्र अण्डकोष से रहित हो गया तो उसने अग्नि देवता से कहा मैंने देवता के विश्राम के लिए गौतम की तपस्या में विघ्न डाला उसने मुझे निःसन्तान (अण्डकोष रहित) कर दिया इसलिए आप महानुभाव ऋषियों और चारणों के साथ मुझे फलदार (अण्डकोष युक्त) बनाइए। उसकी बात सुनकर अग्नि ने देवता और पितरों से कहा यह फलरहित गर्भ और रक्ष में स्वस्थ होगा तुम्हारे लिए बहुत सी सन्तान होगी अग्नि की बात सुनकर देवता और पितरों ने वृषण (भेड़ा) उत्पन्न करके इन्द्र को दिया उसी समय से देवता, पत्र, मेघ और वृषण फल खाते हैं और सुफल लेते हैं इन्द्र मेघ बरख उसी काल से हैं और गौतम की तपस्या का बहुत फल है। आइए हम उसके पवित्र घर में चलें और अहिल्या को पवित्र करें। उसके पश्चात् विश्वामित्र की अगुवाई में रामचन्द्र और लक्ष्मण उस उपवन में गये और उसको देखा तपस्या के लिए अकेली बैठी हुई है इस प्रकार की सुर व असुर भी न देखे पूरी सुरक्षा में है। अग्नि के धुएं व मिट्टी में उसका पूर्ण अस्तित्व अग्नि के प्रकाश के समान स्पष्ट है जैसे कि वह शृंगार किए हुए है। राम और लक्ष्मण दोनों ने उसके पैर पकड़ लिये और उसने गौतम की बात याद करके दोनों का सम्मान किया दोनों को उसने अर्ध्य व पाद्य दिया। रामचन्द्र ने भी शास्त्र के अनुसार उन्हें स्वीकार किया। देवताओं ने आकाश से पुष्प बरसाए और नगाड़े की ध्वनि आई। गन्धर्व व अप्सरायें आईं देवताओं ने अहिल्या से कहा सुन्दर अति सुन्दर और कठिन तपस्या वाले गौतम ने आकर अहिल्या के साथ राम की पूजा की और राम ने भी उसकी पूजा की और नगर मिथिला जो जनक का नगर है गये। अहिल्या अपनी असली वेष में आकर राम की पूजा करती है और गौतम ऋषि भी पूजा करते हैं।

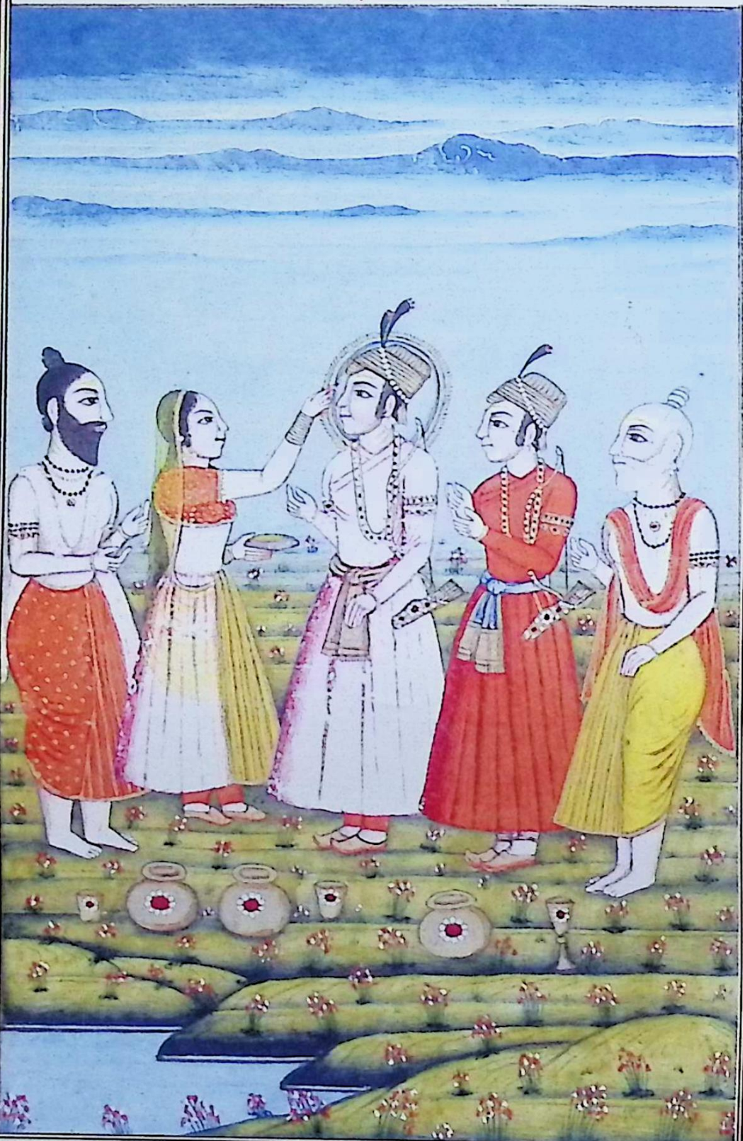

شوهر او و بشوامتر و لچهمن ایستاده

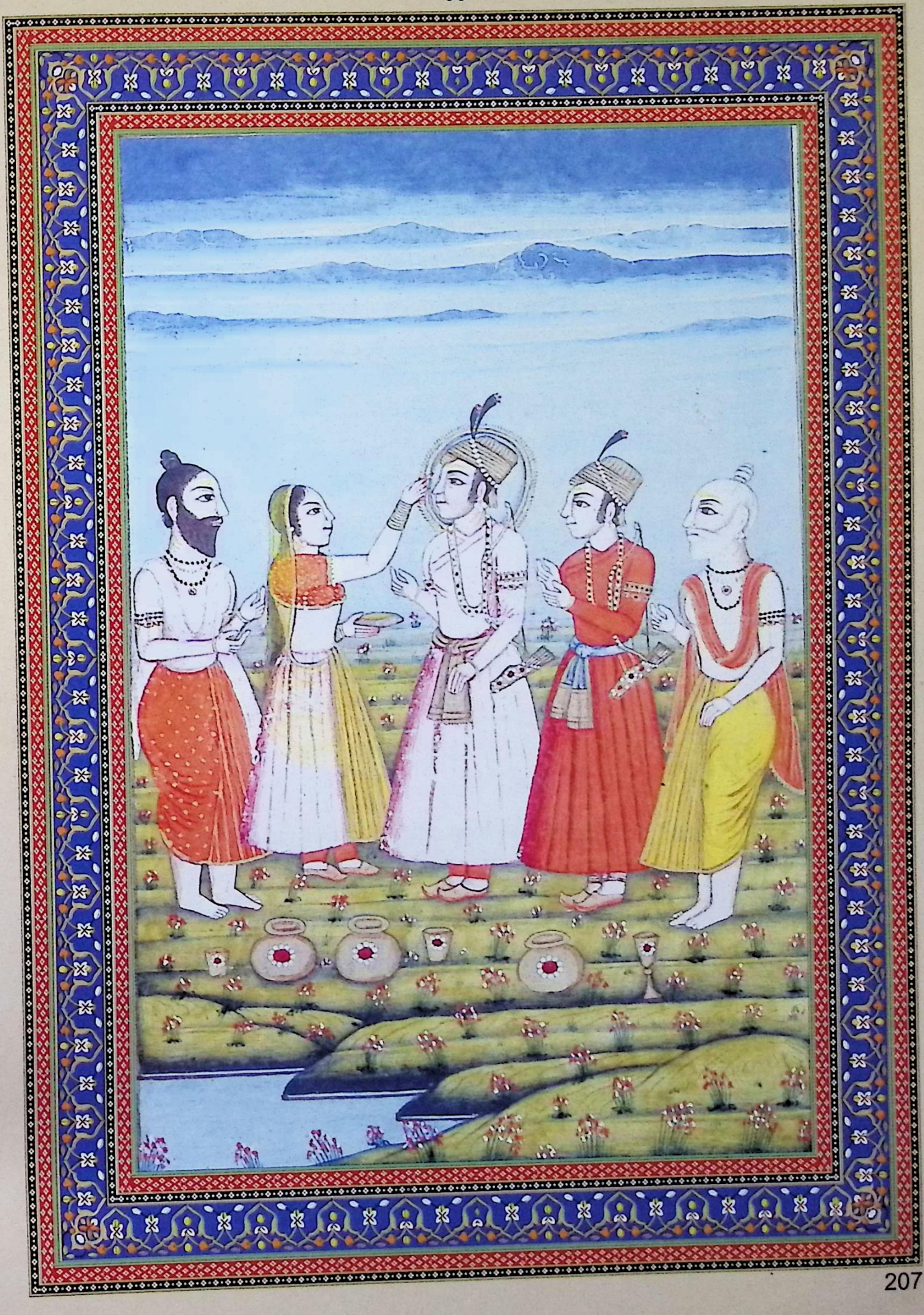

۳۸ سحرک هر دو بشوامتر را پیشوا کرده شهور و اکناف را نظاره کنان سیر رفتند تا آنکه
جای جگ راجه جنک را دیدند رام به بشوامتر گفت این جای جگ بسیار نیکست و بسیار صدها
و هزاران برهمنان اقسام اتسام ممالک و زبان دانان جمع شده اند و بسیار عرابها
آمده مکانی تجویز نمائید که آنجا براحت اقامت کنیم گفته رام را شنیده بشوامتر جای مخفی برکنار
آب اقامت کرد آمدن بشوامتر را شنیده راجه جنک با مشورتیان و وزرا و شتانند پروهت
پیش آمده پرستش کرد و بشوامتر قبول کرده خیر و عافیت او و راج و ملک را پرسید
و او موافق ضابطه بیان کردانید جنک دست بسته به بشوامتر گفت تصدیع راه را
بگذاشتن سزاواری بشوامتر قبول نموده بنشست پروهت و زنارداران
و راجه خود بر وسادهها موافق قدر و درجه نشستند جنک به بشوامتر گفت اکنون
ثمره جگ یافتم از دیدن تو من دانستم و خداوند بر من مهربان است و مهر که اهل دل
میفرمایند که دوازده روز باقیست تا دیوتاها یعنی بهترام برای بخششهای خود بیایند این هر دو
جوان که کلکی و جیغهها بر سر دارند و قوت مندند و کشاده سینه و دراز دست و دارند
شمشیر و کمان و حسن مثل کماران [illegible] آن کیستند و برای چه آمده اند آرزوی شنیدن این
دارم گفته او را شنیده بشوامتر گفت که اینها پسران راجه دشرته اند بعد از آن تفصیل آمدن
و کشتن راچهسان و اقامت سدهاشرم و دیدن بشالا و پاک کردن اهلیا و دیدن گوتم

सर्ग-३८

दोनों विश्वामित्र को आगे करके नगर और नगर के चारों ओर का दृश्यालोकन करते हुए चले जाते थे यहाँ तक कि उन्होंने राजा जनक के यज्ञ का स्थान देखा। राम ने विश्वामित्र से कहा यज्ञ का यह स्थान बहुत अच्छा है और यहाँ हज़ारों और लाखों ब्राह्मण विभिन्न देशों के विभिन्न भाषा जानने वाले एकत्र हो गये हैं। कोई ऐसा स्थान बताइए जहाँ हम आराम से निवास करें। राम की बात सुनकर विश्वामित्र ने एक गुप्त स्थान जल के किनारे निश्चित किया। विश्वामित्र के आगमन की सूचना पाकर राजा ने वहाँ अपने सलाहकारों, मन्त्रियों और पदाधिकारियों के साथ आकर पूजा अर्चना की। विश्वामित्र ने स्वीकार करते हुए उसकी और उसके राज्य की कुशलक्षेम पूछी और उसने परम्परानुसार उसका वर्णन किया। जनक ने करबद्ध होकर विश्वामित्र से कहा आगे जाने की चिन्ता छोड़कर यहीं विश्राम करें। विश्वामित्र स्वीकार करते हुए बैठ गये पुरोहित तथा स्वयं राजा अपने पद के अनुसार स्थान पर बैठ गये। जनक ने विश्वामित्र से कहा अब मैंने यज्ञ का फल पाया। आपके देखने से मैं बहुत प्रसन्न हूँ और ईश्वर मुझ पर दयावान है। और अहलेदिल महर्षि कहते हैं कि बारह दिन शेष हैं कि देवता अपने पुरस्कारों के लिए आयेंगे यह दोनों युवक जो सर पर कलगी और चोगा रखते हैं, बलशाली हैं, चौड़ी छाती वाले, लम्बे-लम्बे हाथ वाले, तलवार और कमान रखने वाले हैं, और सौन्दर्य में कुमार के पुत्रों की भांति हैं। यह कौन है और किस कारण आये हैं ? मैं यह जानने का इच्छुक हूँ। उनकी बात सुनकर विश्वामित्र ने कहा कि ये दोनों राजा दशरथ के पुत्र हैं उसके बाद आने और राक्षसों को मारने, सिद्ध आश्रम में निवास करने, विशाला नगर देखने, अहिल्या को पवित्र करने, गौतम को देखने,

و خواهش ایشان بدیدن کمان سخت کلان که راجه جنک داشت آنهمه را بیان کرده
بوضعی بشوامتر میانِ منجا بنشست گویا آتش و رنبوها و گفته بشوامتر را شنیده
نام آتش
شتانند پروهت که پسر کلان گوتم بود از خوشی موی بر تنش خاست و رام را دیده در تحیر ماند
نام و بیغ صد گونه راحت
و به بشوامتر گفت که والده مرا از دیدنِ رام ازان شاپ خلاص دادی خدا اجرا داد
از بزرگانِ من پرستش را سزاواری گفته او را شنیده بشوامتر جواب داد این عجب نیست
از صحبت نیکان نیک شود بعد ازان شتانند برآمچند گفت آمدن تو مبارک باد این بشوامتر
مهر که که بزرگی او در دل نمیگنجد و مثل تو در زمین سعید تر نیست که نگاهبان تو بشوامتر
صاحب ریاضت بسیار است و بزرگی و زور و روزه و ریاضت او میگویم بشنو راجه پر الیسر
برهما بود دهرم دل و تا بسیار مدت دشمن کش و کننده جگ و خیر خواه رعایا و او کش
نام داشت و او را پسر شد کشنابهه بسیار زور مند و دهرمی و او را پسری شد کادهی نام مشهور و او را
پسری شد این بشوامتر که بلند دل است و این بسیار سال راج این زمین نمود وقتی با لشکر
خود که اچهوهنی کامل بتعداد بود گشت میکرد و همچنین دریاها و کوهها و بیابانها و شهرها
طی کنان راه می نوشت تا گاه بمکان معین بششٹ رکهه وارد گردید با نواع گل آراسته
و با قسام بهایم و دیو رکهه پرستیده و از دیو و دانو و گندهرب پر لبسته و همه باشندگان
آنجا دور از غضب و ریاضت کشان آنجا بصورت مانند آتش و به بلند فکری بی مانند فرقه جیان کی از آنها

کفظ

राजा जनक के पास जो अत्यन्त ठोस कमान थी उसे देखने की इच्छा यह सब वर्णन किया तथा विश्वामित्र मुनियों के मध्य इस प्रकार बैठे जैसे कि अग्नि बसोहा में। विश्वामित्र की बात सुनकर शतानन्द पुरोहित जो गौतम के बड़े पुत्र थे उनके शरीर पर प्रसन्नता के कारण रोम खड़े हो गये और राम को देखकर आश्चर्य में पड़ गये और विश्वामित्र से राम को देखकर कहा कि राम ने मेरी माता को शाप से मुक्ति दी। ईश्वर इसका अच्छा फल दे मेरे पूर्वजों की ओर से आप पूजा के योग्य हैं। उनकी बात सुनकर विश्वामित्र ने उत्तर में कहा कि यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है सज्जनों की संगत से सज्जनता ही प्रकट होती है। उसके पश्चात् शतानन्द ने रामचन्द्र से कहा कि आपका आना मेरे लिए शुभ हुआ यह विश्वामित्र महर्षि जिनकी साधुता हृदय में नहीं समाती है और आपकी तरह संसार में कोई अधिक प्रसन्न और भाग्यशाली नहीं है क्योंकि आपका रक्षक विश्वामित्र जैसा महान तपस्वी है। मैं इनकी साधुता और तपस्या बताता हूँ। सुनो राजा ब्रह्मा का पुत्र दयालु और लम्बी अवधि तक शत्रु को मारने वाला, यज्ञ करने वाला और प्रजा का शुभचिन्तक, उसका नाम कुश था। उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ कुशनाभ नामक, बहुत बलशाली और धार्मिक। उसके पुत्र हुआ गाधि नाम से प्रसिद्ध उसके पुत्र यही विश्वामित्र हुए। जो महान हृदय वाले हैं उन्होंने बहुत वर्षों तक इस पृथ्वी पर राज्य किया है। एक समय अपनी सेना के साथ जो अक्षौहिणी संख्या में पूर्ण थी हत्या और लूटपाट करते थे और इसी प्रकार नदियों, पहाड़ों, जंगलों और नगरों को ध्वस्त करते हुए मार्ग तय करते थे अचानक वशिष्ठ, ऋषि के एक निश्चित घर में प्रकट हुए जो हर प्रकार से सुसज्जित और विभिन्न प्रकार के पशुओं, देव, रथ, दानव और गन्धर्व आदि से भरा हुआ था। वहाँ के निवासी क्रोध से दूर, तपस्या करने वाले अग्नि की भांति है और उच्च्व विचार में अतुलनीय हैं। वह ऐसी जाति के हैं

که فقط آب میخورند و هیچ نخورند و جمعی چنانکه سوای باد هیچ تناول نمایند و بعضی چنانکه
برگ درختان که کهنه شده بزمین افتد آنرا بخورند و چوقی ثمره درخت باین انواع همگنان
حواس را مغلوب ساخته و بالکهلا و غیره رکهان غرض که ازین جماعه مکان بشست مانند برهم لوک
قسم از کهتریان در قوم خود برازنده باشد یا اینکه [illegible]
شد بشوامتر اینهمه را ملاحظه نمود و از باد پای خود که به تیزروی چون باد بود راجه بشوامتر
که حلقه زر در گوش داشت فرود آمد خانه راجه جنک و بشوامتر و رام و لچهمن وغیره

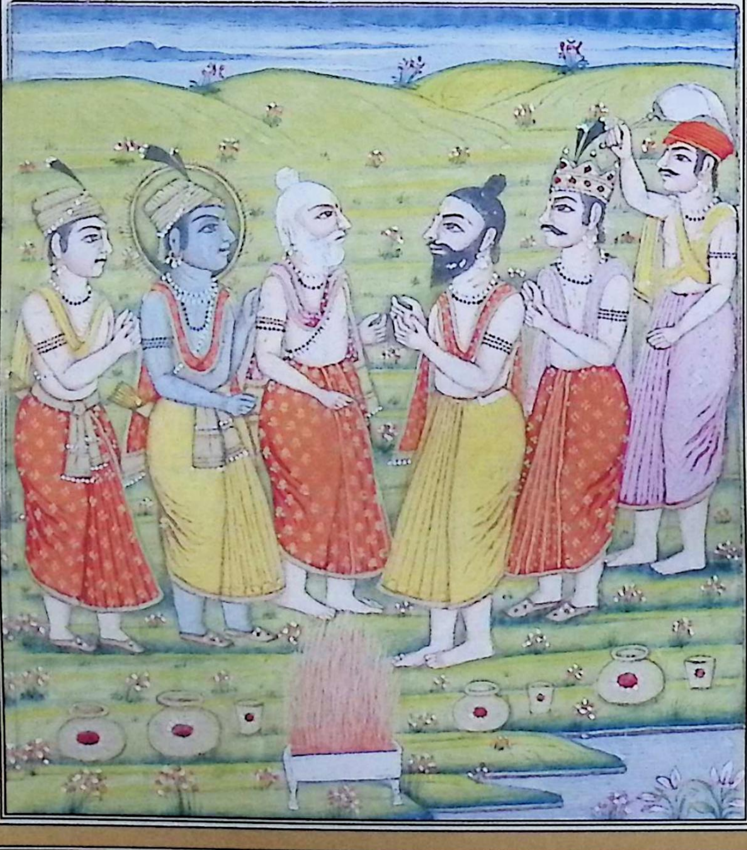

जो केवल जल पीते हैं और कुछ खाते नहीं हैं। कुछ ऐसे लोग हैं कि वायु के अतिरिक्त कुछ नहीं खाते, कुछ ऐसे हैं जो पेड़ों के पत्ते जो पुराने और कमजोर होकर पृथ्वी पर गिरते हैं उन्हें खाते हैं और पेड़ के फलों की अधिकता ने उन सबको आकर्षित कर रखा है। तात्पर्य यह है कि इस गिरोह के कारण वशिष्ठ का घर ब्रह्मलोक बना हुआ है। विश्वामित्र ने यह सब अवलोकित किया और अपनी तीव्र गति से जो वायु के समान थी राजा विश्वामित्र सोने का कुण्डल कान में डाले रखते थे नीचे उतरे।

विश्वमित्र, राम और लक्षमण!

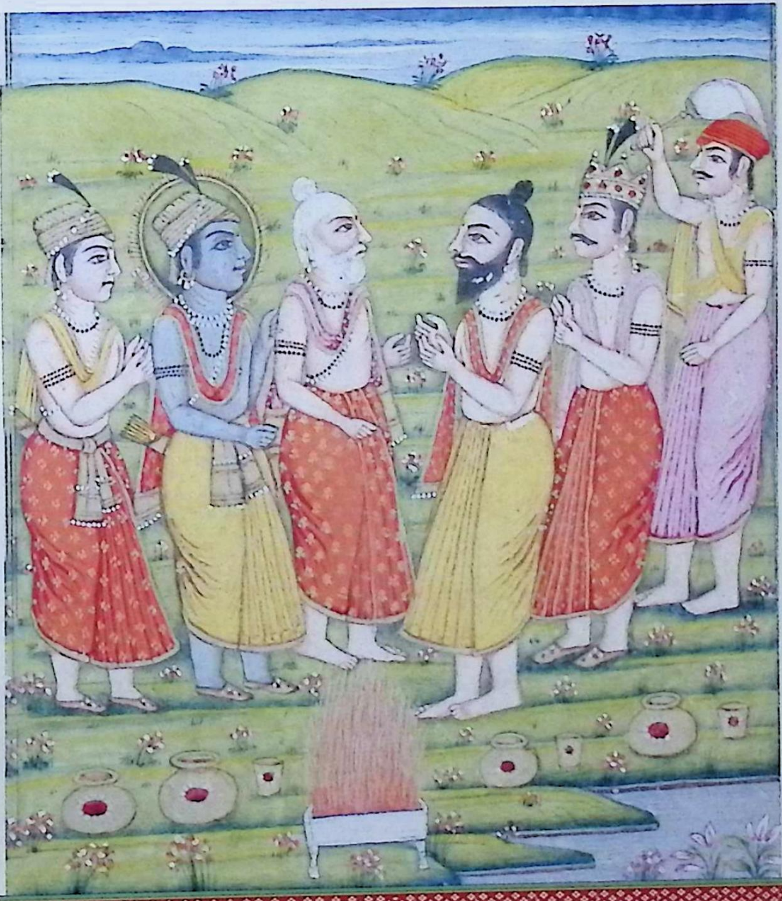

سرگ ٣٩ جنگ بششت بعد از ان درانجا بشوامتر بششت را دید بخواهش تمام با آن
جب کننده بزرگ سر فرود آورد بششت گفت خوب کردی آمدی و آسن یعنی مسند
برای نشستن داد بنشست بعده سبزی که بی قلبه رانی شود و ثمرات و بیخ اشجار پیش
آورد بگرفت بعد بفراغت نشستن بشوامتر بششت ازو پرسید مردم تو بخیریت اند
و دهرم تو درست است و حراست رعایا نیکو میکنی و چاکران تو نیک اند و بگفته تو اند و اعدا
مظفر هستی و خزاین تو پر است و اولاد و نبایر تو بعافیت اند اینهمه را بگو بشوامتر در جواب آن
ها دیری بماجرا میگفت القصه هردو باهم به بهجت نشسته بودند در اثنای گفتار بششت از تبسم
به بشوامتر گفت میخواهم که ترا و تمام لشکر ترا ضیافت نمایم تو راجه هستی و از من پرستش را
سزاواری بشوامتر گفت مهمانی من از ثمرات و بیخها و آبها و آنچه در خانه تو بود کردی
بسکار تراست من میروم بششت باز برای ضیافت گفت بشوامتر گفت البته بکن بششت
شبلا نام ماده گاو خود را یاد کرد و گفت از اطعمه و اشربه وغیره ضیافت بکن از لشکریان زود آرام
هرکرا هرچه باید مهیا ساز و راجه را با اقربا او همه اطعمه و اشربه موجود نما چنانکه همگنان
سیر و خوشوقت چون بششت چنان فرمود شبلا مقصود همگنان مهیا ساخت از رسانید
دل بستر و پوشیدنی و اشربه و اطعمه و لاسه و کلها وغیره مثل کوه ها و دریا ها موجود نمود
و شیرینی و تلخی و ترشی و جغرات و شیر وغیره اقسام اقسام اذواق و لذاید برروی کار آورد

सर्ग-३६

वशिष्ठ का यज्ञ

इसके पश्चात् वहाँ विश्वामित्र ने वशिष्ठ को देखकर पूरे विश्वास से उस साधु जाप करने वाले के सामने सर झुकाया। वशिष्ठ ने कहा खूब किया आइये और बैठने के लिए आसन प्रस्तुत किया और वह बैठ गये। उसके पश्चात् सब्जी फल और वृक्षों की जड़ें (कंद-मूल) सामने लाकर रखीं वह सब उसने ले लीं। विश्वामित्र के आराम से बैठ जाने के पश्चात् वशिष्ठ ने उनसे पूछा आपके आदमी सकुशल हैं, आपका धर्म ठीक है, प्रजा की रक्षा आप भली प्रकार करते हैं, आपके कर्मचारी ठीक हैं, आपके अधीन हैं, आप शत्रुओं पर सफल हैं, आपका कोष भरा हुआ है, आपकी सन्तान और पोते कुशलपूर्वक हैं यह सब बताओ विश्वामित्र ने इन सबके उत्तर में बहुत देर तक वृत्तान्त कहा। निष्कर्ष यह कि दोनों बहुत देर तक प्रसन्नतापूर्वक बैठे रहे इसी मध्य वार्ता में वशिष्ठ ने विश्वामित्र से मुस्कुराते हुए कहा कि मैं चाहता हूँ कि आपकी और आपकी पूरी सेना की आवभगत करूं आप राजा हैं और मेरी ओर से पूजा अर्चना के अधिकारी हैं। विश्वामित्र ने कहा मेरा आतिथ्य सत्कार आपने फलों, कन्द, पानी और जो कुछ आपके घर में था सबसे कर दी, आपको नमस्कार मैं जा रहा हूँ। वशिष्ठ से फिर आतिथ्य के लिए कहा विश्वामित्र ने कहा अवश्य कीजिए। वशिष्ठ ने शबला (कामधेनु) नामक अपनी गाय को याद किया और कहा खाने पीने से आवभगत करो, सैनिकों में से जिसे जो चाहिए वह उपलब्ध करो और राजा के लिए उसके सम्बन्धियों सहित समस्त भोजन और शरबत तैयार करो, ऐसा कि सब प्रसन्न हो जाएँ। जब वशिष्ठ ने ऐसा कहा शबला ने सबकी इच्छा पूर्ण कर दी, आसन, बिस्तर पहनने के कपड़े, पेय, भोजन आदि पहाड़ों और नदियों के समान उपस्थित थे। मिष्ठान्न, नमकीन, दूध आदि विभिन्न प्रकार के भोजन और स्वादिष्ट चीजें सब उपलब्ध थीं।

و هزاران ظروف گوناگون حاضر آمد همگنان سیر و خوشوقت شدند هر گرا هرچه خواهش و آرزو بود موجود نمود بشواهستر با وزرا و مشورتیان و رعایا و چاکران سیر شده از خرمی تمام نشست و گفت صد هزار گاو ماده و جواهر اقسام میدهم شبلا مراده بششت گفت عوض هزار کرور گاو هم نمیدهم بشواهستر گفت تمام راج یعنی سلطنت خود و گنج های نقره و زر میدهم شبلا مراده بششت گفت نمیدهم زیرا که پیوسته هب و کب یعنی دادن دیوتا و پتر مرا محافظ هست اگن هوتر کلان و بل هوم را نیز و سوا ها کار و بگنشگار را هم محافظ باز بشواهستر گفت چهارده هزار فیل که بار گستوان زرین و دیگر آرایش آراسته اند میدهم و پنجاه و دو هزار اسپ با زیر آراسته می آرم و یازده هزار رتهه با اسپان خوب و کنکنی جال یعنی پارچه دامی با گهونگرو مزین میگذرانم و یک کرور گاو ماده زنگا رنگ میرسانم شبلا مراده بششت گفت با اینقدر هم هرگز نمیدهم جملگی اشیا من همین هست و زر من همین هست و راستی و زندگی من همین و درش و پورنماس یعنی هشتم جگ با دهیان کامل میکند این تمام کرپا منست

راجه بشواهستر نشسته و عقب او خدمتکار و صورت بششت و شبلا نام ماده گاو

और विभिन्न प्रकार के हजारो बर्तन आए। सब लोग बहुत प्रसन्न हुए और आनन्द लिया, जिसकी जो भी इच्छा और कामना थी सब उसने पूर्ण किया। विश्वामित्र मंत्री, सलाहकार, प्रजा और सेवकों के साथ सन्तुष्ट होकर पूरे आनन्द से बैठे। उन्होंने कहा कि मैं एक हज़ार गायें और विभिन्न प्रकार के रत्न देता हूँ, शबला (गाय कामधेनु) मुझे दे दो। वशिष्ठ ने कहा मैं उसे हज़ार करोड़ गायों के बदले में भी नहीं दूँगा। विश्वामित्र ने कहा मैं पूरा राज्य और धन सम्पत्ति के भण्डार देता हूँ शबला मुझे दे दो। वशिष्ठ ने कहा, नहीं दूँगा क्योंकि हव्य और कव्य अर्थात् देवता का आशीर्वाद और सहायता और पुत्र मेरे रक्षक हैं। वषट्कार मेरे अग्निहोत्र, बलिहोम, स्वाहाकार और वषट्कार की भी (यह शबला) संरक्षक है। विश्वामित्र ने पुनः कहा, चौदह हजार हाथी जो रत्न जड़ित हौदे और अन्य मूल्यवान सामानों से सुसज्जित हैं देता हूँ, दो हजार पचास सुसज्जित घोड़े भी देता हूँ, श्रेष्ठ घोड़ों सहित ग्यारह हज़ार रथ और सुसज्जित कपड़े आपको अर्पण करता हूँ। विभिन्न रंगों की एक करोड़ गाय पहुँचाता हूँ, शबला मुझे दे दो। वशिष्ठ ने कहा मैं इतने में कदापि नहीं दूँगा, मेरी सारी कमाई यही है, मेरी सम्पत्ति भी यही है, मेरी सच्चाई और मेरा जीवन भी यही है, दर्श पौर्णमास अर्थात् अठ्ठाईस यज्ञ, प्रचुर दक्षिणा वाले यज्ञ, यह सब इसी की कृपा है।

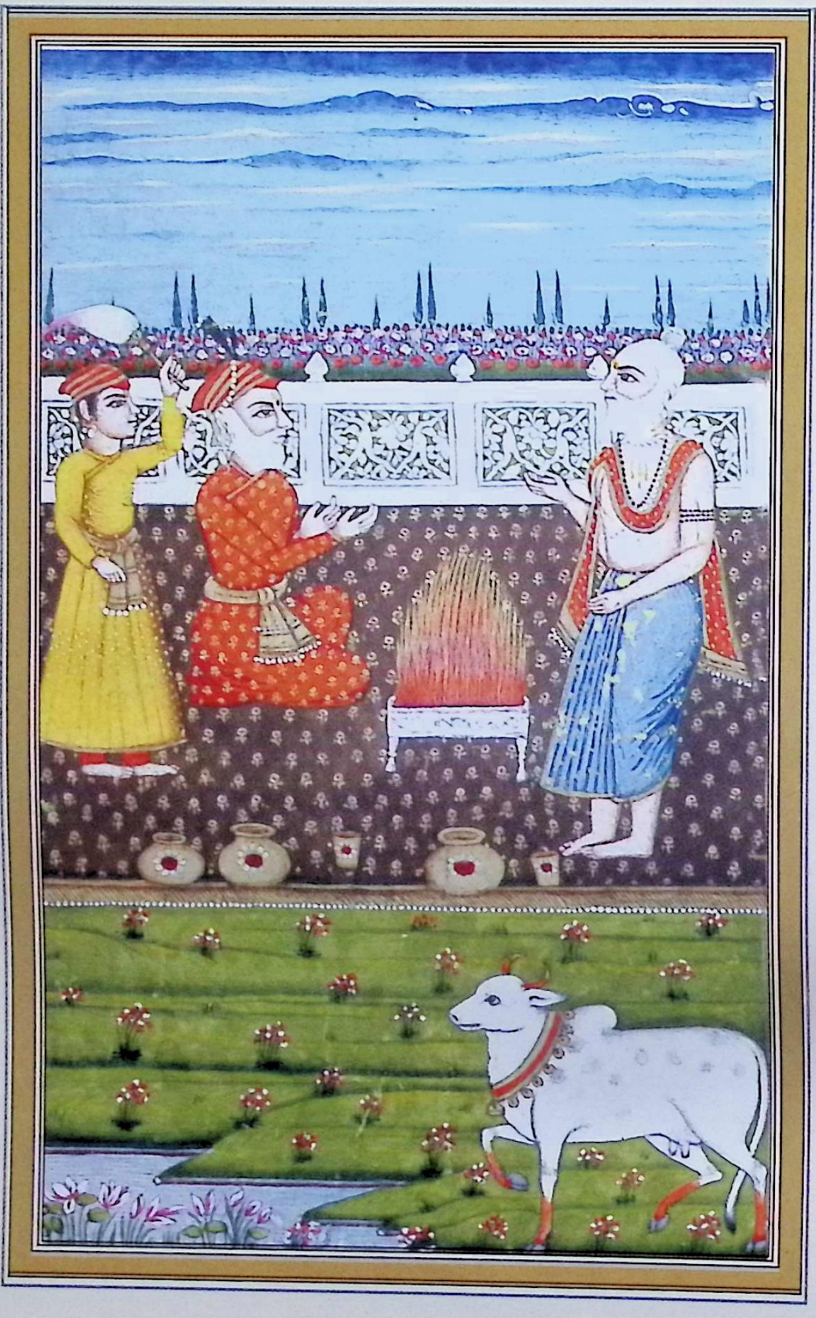

مرکبان

आगे राजा विश्वामित्र बैठे हुए हैं उनके पीछे सेवक है और वशिष्ठ तथा शबला नामक गाय का चित्र दिखाई पड़ रहा है।

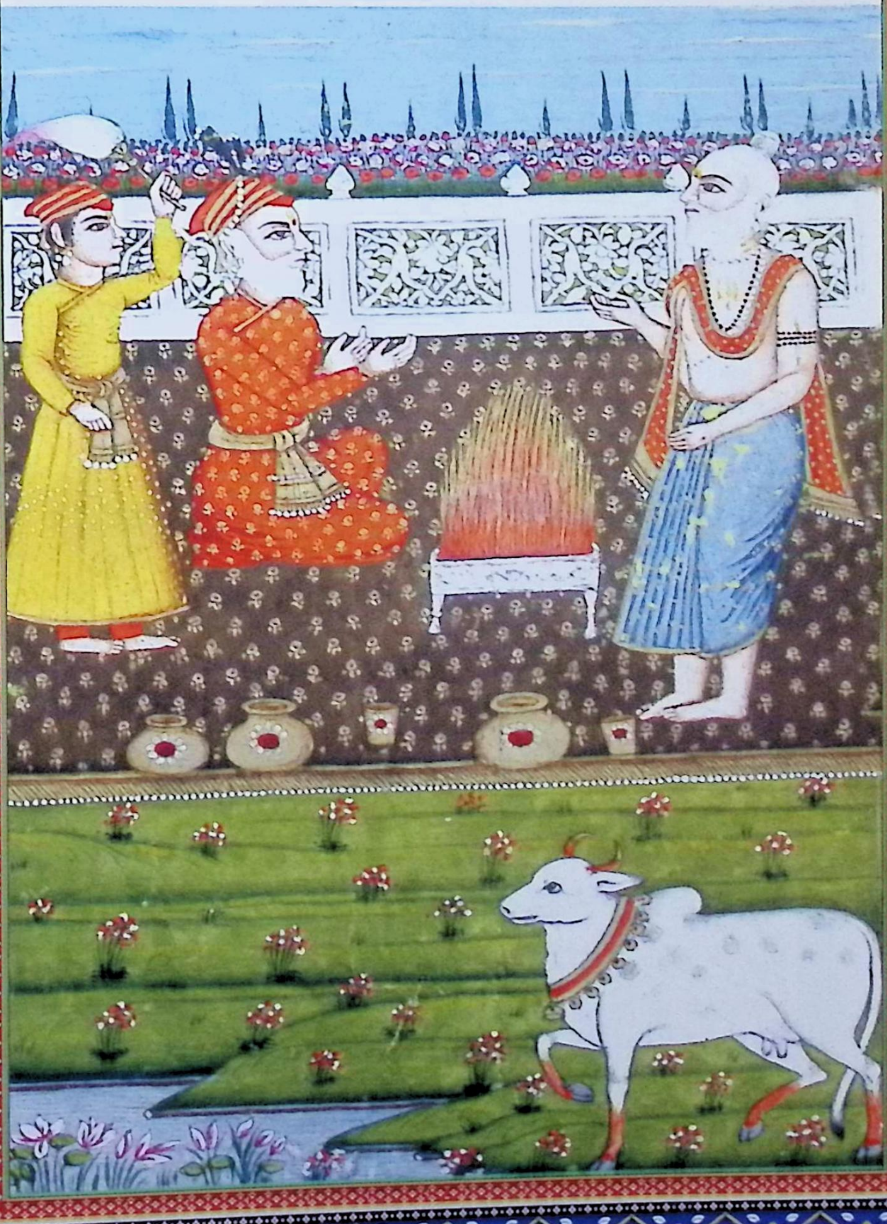

کسر جنگ آن کاو ماده را بشِشت چون نداد بسوامتر از زبردستی گرفته برد
هنگام بردن شبلا بغفلت وحیرت گریه کرد و گفت چه مرا بشِشت گذاشت که مرا چاکران
راجه میبرند من چه بد کردم وچه عذاب کردم همین فکر زو بر پیش بشِشت رفت و گفت
من چکرده ام که بدست کسان راجه میسپاری بشِشت گفت من نمیگذارم ولیکن
راجه زبردست هست ومرا طاقت جنگ نیست شبلا گفت زور برهم از چهتری بالا است
خوب مرا بفرما من تکبر این را دور میکنم بشِشت گفت انچه دانی بکن شبلا هنبهه یعنی آواز نمود
از وی هزاران کس پیدا شدند واز باد او قوم کانبوج و بالهیک و دردا و بربر موجود گشتند
وسلاحها در دست گرفته لشکر بسوامتر را زدند و بار دیگر شکان و جون آفریدند تیغ و تیرها
گرفته دویدند هریک کوه وش به بدن خوفناک تمام لشکر را کشتن گرفتند بسوامتر استرها
رها کرد آنها تمام حیران وپریشان گردیدند بعد از ان آنهارا منتشر و متر دید بشِشت گفت
باز پیدا کن باز شبلا از آواز هنبهه کانبوج پیدا کرد واز مقعد جون واز شکنتهان یعنی دم
وغیره شکان واز پشم ملیچهه وکرات همان لحظه همه ها تمام لشکر بسوامتر صاف نمودند
اسپ و فیل ورتهه و پیاده هیچ نمانده بسوامتر پسران خود را که در شمار یکصد بودند امر
فرمود همگنان سلاح گرفته بر بشِشت دویدند وبشِشت آنهمه را از هونکار یعنی آواز خود
بسوخت و افیال و فروس و پیادگان ورتهان ایشان را هم بخاکستر برابر کرد بسوامتر آ

सर्ग-४०

युद्ध

जब वशिष्ठ ने वह गाय नहीं दी तो विश्वामित्र उसे बलपूर्वक ले गये। ले जाने के समय शबला दुःख और आश्चर्य से रोती जाती थी और कहती थी कि वशिष्ठ ने मुझे कैसे छोड़ दिया, राजा के सेवक मुझे ले जा रहे हैं मैंने क्या बुरा किया ?और क्या दुःख दिया ?इसी चिन्ता में बड़ी शीघ्रता से वशिष्ठ के पास गई और कहा मैंने क्या किया है कि आप मुझे राजा के लोगों को सौंप रहे हैं। वशिष्ठ ने कहा मैं नहीं छोड़ रहा हूँ परन्तु राजा बलशाली हैं और मेरे अन्दर युद्ध की शक्ति नहीं है। शबला ने कहा ब्राह्मण की शक्ति क्षत्रिय से अधिक है आप मुझे आज्ञा दें मैं उनका घमण्ड तोड़ती हूँ। वशिष्ठ ने कहा जो तू उचित समझे कर, शबला ने हुंकार अर्थात् ध्वनि निकाली। उससे हजारों व्यक्ति उत्पन्न हुए, उसकी हवा से काम्बोज बालम, दरदा और बर्बर जातियाँ अस्तित्व में आईं और हाथों में अस्त्र-शस्त्र लिए हुए विश्वामित्र की सेना को मारा। दूसरी बार उसने शक और म्लेच्छ जातियाँ पैदा कीं वह तलवार और भाले लेकर दौड़े और प्रत्येक देखने में पहाड़ जैसा भयानक था। सबने पूरी सेना का वध करना आरंभ किया। विश्वामित्र ने अस्त्रों को अलग कर दिया और वह सब देखकर आश्चर्यचकित और दुःखी हुए। उसके पश्चात् उनको बिखरा हुआ और परेशान देखकर वशिष्ठ ने कहा पुनः पैदा करो फिर शबला ने हुंकार ध्वनि निकालकर काम्बोज को पैदा किया पिछले हिस्से से यवन को और पूंछ आदि से शक को और बालों से म्लेच्छ और किरात को उत्पन्न किया। उन्होंने उसी समय विश्वामित्र की पूरी सेना को साफ कर दिया घोड़े, हाथी, रथ और प्यादे कुछ भी शेष नहीं रहा। विश्वामित्र ने अपने पुत्रों को जो संख्या में एक सौ थे आदेश दिया। सब अस्त्र शस्त्र लेकर वशिष्ठ पर दौड़े और वशिष्ठ ने अपनी हुंकार अर्थात् ध्वनि से सबको जला दिया और

پسر از اکشته دیده از انفعال در فکر شد چنانچه دریا سمندر بهیوج ماند و افعی را از دندان
بشکنند و آفتاب بمغرب رود یک پسر را که باقیمانده بود راج داده بصحرا رفت
و بر پشت هماچل که آنجا کنر میباشند رفته برای پسند کردن مهادیو تپ یعنی ریاضت
آغاز کرد و دست را بر آسمان برداشته بنوک انگشت پای ایستاده مثل اژدها باد را
خوراک کرده هیچ نخورد از آن تپ هر سه لوک طپیدند مهادیو که او را دهوجا یعنی
نشان او دست آمده به بشوامتر گفت چرا تپ میکنی آنچه آرزو داری بخواه من میدهم
بشوامتر دست بسته گفت اگر بر من مهربانی آنچه فن کمانداریست همه بده و سانک
و آو پهار و او پنکهت و جمیع استر که دیوتا و دانوان و دشمنان دیوتا و جچهه و کندهرب
و را چسان میدانند اینهمه میخواهم مهادیو فرمود همچنان شود بشوامتر همه را گرفته بجرمی
تمام و بقوت تام مثل سمندر که بروز شب بدر شود مکمل گشت و بشنت را از زور خود
کشته فهمیده بمکان بشنت آمد و همه استران را رها کرد چنانکه آنمکان سوختن گرفت
اینحالت را دیده هزاران رکهه گریختن گرفتند چنانکه مکان خالی ماند بشنت همه را گفت
مترسید من اینهمه را دور میکنم چنانچه آفتاب تاریکی را این بگفت و به بشوامتر رو کرده
آواز داد چون مکان خراب کردی بدطریق هستی و بیوقوفی و بی شعور هستی بعده دند
یعنی چوب را در دست گرفته بایستاد گویا دردود آتش جم دند دارست سرک

उनके हाथियों, घोड़ों, प्यादों और रथों को भी जलाकर भस्म कर दिया विश्वामित्र अपने पुत्रों को मृत देखकर दुख और पश्चात्ताप से ऐसे चिन्तित हो गये जैसे कि नदी और समुद्र लहर के बिना रह जाए, और साँप का दाँत तोड़ दे और सूर्य पूर्व में अस्त हो जाए। एक पुत्र को जो जीवित रह गया था राजपाट देकर जंगल की ओर चले गये और हिमाचल पर्वत के पीछे जाकर जहाँ वनमानुष रहते हैं महादेव को प्रसन्न करने के लिए तपस्या आरम्भ कर दी। हाथ आकाश की ओर उठाए हुए पैर की उंगलियों की नोक के बल खड़े होकर अजगर की भाँति कीड़े मकोड़े खाते। इसके अतिरिक्त और कुछ न खाते। इस तपस्या से तीनों लोक आहत हो गये। महादेव (वृषभध्वज) ने आकर विश्वामित्र से पूछा तपस्या क्यों कर रहे हो ?जो तुम्हारी इच्छा हो मांगों मैं पूर्ण करूँगा। विश्वामित्र ने करबद्ध कहा यदि आप मुझ पर दयावान् हैं तो रहस्यों सहित धनुर्वेद विद्या की जो कला है वह आप मुझे दे दें, सारे अस्त्र जो देवता, देवताओं के मित्र, शत्रु और यक्ष गंधर्व और राक्षस जानते हैं वह सब मैं चाहता हूँ। महादेव ने कहा ऐसा ही होगा। विश्वामित्र सबको लेकर पूरी प्रसन्नता और शक्ति के साथ जैसा कि समुद्र चौदहवी रात में बलशाली होता है अभिमान से पूर्ण हो गये और वशिष्ठ को अपनी शक्ति से मरा हुआ समझकर वशिष्ट के आश्रम में आये और सारे अस्त्रों को मुक्त प्रयोग कर दिया। जब वह आश्रम जलने लगा तो यह स्थिति देखकर हजारों मुनि भागने लगे जब आश्रम खाली हो गया तो वशिष्ठ ने सबसे कहा डरो मत मैं यह सब समाप्त कर दूंगा जैसे कि सूर्य अंधकार को समाप्त कर देता है। तत्पश्चात् विश्वामित्र की ओर मुँह करके पुकारा, तुमने आश्रम नष्ट कर दिया इसलिए तुम सत्य मार्ग से भटके हुए और मूर्ख हो। उसके पश्चात् हाथ में दण्ड लेकर खड़े हो गये जैसे कि आग के धुए में यमदूत खड़ा हो।

جواب بشوامتر بشست گفت که باش باش واگن استر رها کرد بشست گفت من ده السلام
انچه زور تست بنما حالا نخوت تو دور میکنم کجا زور چهتریان و کجا زور برهمنان ای سفلی
چهتریان به بین زور برهم را و استر اورا از دند خود بکشت بشوامتر رو در استر
و پاشپت و اندر اپشبک مانون بهاون بشن چکر و برهم پاش و کال پاش وغیره
انچه میدانست همه رها کرد بشست همه را ازان دند بکشت بشوامتر برهم استر را که آتش
وغیره پیشتر او بود رها کرد دیو رکهه و کند هرپ وغیره حیران ماندند بشست آنرا
تناول کرد و ازان کار بشست را چنان صورت مقبول گردید که هر سه لوک از دیدن او
بیهوش شدند و از هر مکان موهای او مانند شعاع آتش روشن بر آمد و آن دند که در دست
بشست بود بسوخت و منیشران وصف بشست کردند و گفتند زور تو در گفتن نیاید
تو بشوامتر را شرمنده کردی حالا خود را درکش که عالم تصدیع نیابد بشوامتر هم شرمنده
شده گفت لعنت بر زور چهتری زور برهمن زور آور است و سلاح را گذاشته
بریاضت رفت سرگ ۴۲ بشوامتر با بشست عداوت نموده بریاضت مشغول شد سمت دکن
با اهلیه خود اقامت گزید و ثمرات و بیخ خورده نمود و در دل کرد که من برهمن شوم او را آنجا
چهار پسر تولد شد هبس سند هبس سنت درزه نتر مهو دی و هشت پسر دیگر که راج میکردند و بعد
از هزار سال بشوامتر مثل آتش روشن شد سرگ ۴۳ بعد از هزار سال کامل از برهم لوک برهما آمده

सर्ग-४१

उत्तर

विश्वामित्र ने वशिष्ठ से कहा रुको, रुको और उसने आग्नेयास्त्र छोड़ा। वशिष्ठ ने कहा, मैं खड़ा हूँ तेरे भीतर जितनी शक्ति है दिखा मैं अभी तेरा घमण्ड दूर करता हूँ, कहाँ क्षत्रियों का बल और कहां ब्राह्मणों का बल। ऐ दुष्ट क्षत्रिय ! देख ब्राह्मण की शक्ति और उसके अस्त्र को अपने दण्ड से मार डाला। विश्वामित्र ने ब्रह्मास्त्र को जिसके मध्य में अग्नि होती है छोड़ा देवर्षि और गंधर्व आदि चकित रह गये। वशिष्ठ ने सबको शान्त कर दिया और इस कार्यवाही से वशिष्ठ की काया ऐसी हो गयी कि तीनों लोक उनको देखकर मूर्छित हो गये और प्रत्येक स्थान के उनके बाल जलती हुई मशाल की किरणों की भांति प्रज्वलित हो गये और दण्ड प्रज्वलित हो रहा था जो वशिष्ठ के हाथ में था। मुनीश्वरों ने वशिष्ठ की प्रशंसा की और कहा आपका बल वर्णन से परे है आपने विश्वामित्र को लज्जित कर दिया अब अपना क्रोध शान्त कर लीजिए। कहीं ऐसा न हो कि संसार फट जाए। विश्वामित्र ने भी लज्जित होकर कहा बुरा हो क्षत्रिय का बल, ब्राह्मण का बल उससे कहीं अधिक है और हथियार रखकर तपस्या के लिए चले गये।

सर्ग-४२

विश्वामित्र वशिष्ठ के साथ शत्रुता रखकर तपस्या में लीन हो गये और अपनी पत्नी सहित दक्षिण दिशा की ओर जाकर तपस्या करने लगे। फल और वृक्षों की जड़ें (कंद-मूल) खाकर हृदय में इस बात की इच्छा की कि मैं ब्राह्मण हो जाऊँ, वहीं उनके चार पुत्र उत्पन्न हुए हविष्पन्द, मधुष्पन्द, दृढ़नेत्र और महारथ और आठ दूसरे पुत्र जो राज्य करते थे। हजार वर्ष के बाद विश्वामित्र अग्नि के समान प्रज्वलित हुए।

بشیرین زبانی بشوامتر را گفت ای راجه که تو لوکها را گرفتی و ازین تپ براجرکهی سزاواری
بشوامتر آنرا شنیده از شرم فرو برده بغم تمام گفت ریاضت کلان کردم هنوز
راج رکهه هستم این بگفت و باز ریاضت کلان کردن گرفت درین اثنا راجه بود ترشنکو
بنده
ته برکه را خوشنود
نام از نسل اچهواکو او را در خاطر رسید که چنان جگ بکند که با همین کالبد خود بر آسمان
برود نزد بششت رفته خواهش را ظاهر کرد بششت گفت این خود دشوار است بعد از ان
پیش صد پسران بششت که هر صد بسمت دکن تپ میکردند رفته خواهش ظاهر نمود و گفت
کرد یعنی او استاد جواب داده شما حامی شوید راست میگویم که تمام نسب اچهواکو را در هر حال حامی
ربا
پروهت هست صورت ترشنکو و عقب او خدمتکار چوری در دست و صورت بششت و
راض

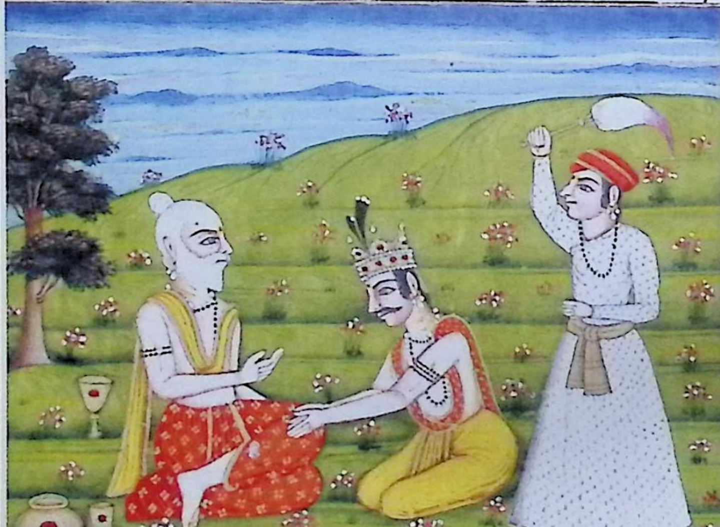

सर्ग-४३

पूरे एक हज़ार वर्ष के बाद ब्रह्मलोक से ब्रह्मा प्रकट हुए। मधुर भाषा में विश्वामित्र से कहा, ऐ राजर्षि ! तुमने सारे लोक प्राप्त कर लिये और उस तपस्या के कारण तू राजर्षि के योग्य है। विश्वामित्र ने यह सुनकर और लज्जा से सर झुकाकर बड़े दुख से कहा मैंने बड़ी तपस्या की, अभी मैं राजर्षि ही हूँ और पुनः तपस्या आरंभ कर दी। उसी समय में यह हुआ कि, इक्ष्वाकुवंशी त्रिशंकु नामक एक राजा था, उसके मन में विचार आया कि ऐसा यज्ञ करें कि इसी नश्वर शरीर के साथ आसमान पर चला जाएँ। उसने वशिष्ठ के पास जाकर अपनी इस इच्छा को प्रकट किया। वशिष्ठ ने कहा, यह कार्य अपने आप में कठिन है। इसके पश्चात् उसने वशिष्ठ के सौ पुत्रों के पास जाकर जो दक्षिण की ओर तपस्या कर रहे थे यह इच्छा प्रकट की और कहा कि तुम ही उत्तर देकर सहायक बन जाओ। मैं सत्य कहता हूँ कि इक्ष्वाकु की समस्त पीढ़ी के प्रत्येक दशा में वशिष्ठ के बाद आप सभी परमदेवता के स्थान पर हैं।

त्रिशंकु की तस्वीर उसके पीछे सेवक हाथ में मुगदर लिए हुए और साथ में वशिष्ठ का चित्र

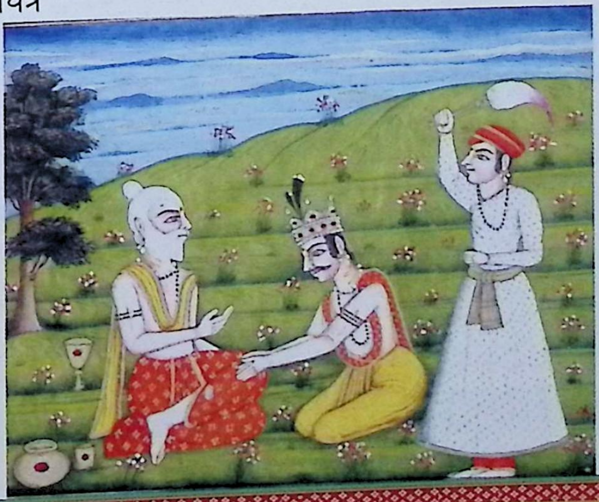

سہ کہ کفته ترشنکو را شنیده پسران رکهه بغصه کفتند هر کاه بشست جواب داد
نزد ما چرا آمدی بیخ را کذاشته شاخ را چرا میکیری از ما مشکل است برو بشهر خود راجه
ترشنکو کفت پس بشست و شما هر دو جواب دادید من جای دیکر میروم پسران بشست
شناپ دادند که تو چانڈال خواهی شد بعد کذشتن آن یکشب صورت راجه بچانڈال مبدل
کشت پارچه نیله در زیر و پارچه سرخ بر سر چشم خوفناک سرخ و زرد و پوست خرس در بر
کرفته آنحال را دیده چاکران و عقب روان او از و کریختند فقط تنها راجه حیران و پریشان
ماند انکاه در پناه بشوامتر آمد و او راجه را بدان حال دیده که بعاجزی بصورت چانڈال
آمده وایستاده کفت چرا بدینحال هستی و چون آمده ترشنکو دست بسته کفت آرزو
داشتم که با کالبد خود بر آسمان روم کرو و پسران کورو باینحال رسانیدند من
کاهی قبل ازین دروغ نکفته ام و من جکیها اقسام کردم و رعایا را
بدهرم محافظت نمودم و کروها را بطور و طریق پسند داشتم با وجود
این کرو مهربان نشد پس آنچه کند تقدیر ایزدی کند تدبیر لا ینفع است در عقل من
چنان مشخص شد که در نیک و بد رسیدن بر حال مردم تقدیر قادر است
و تدبیر بیکار و من در پناه تو آمدم بر من رحم فرما راجه ترشنکو بصورت چانڈال پارچه
نیله در زیر و پارچه سرخ بر دوش و سر چشم سرخ و زرد و صورت خوفناک و پوست خرس

सर्ग-४४

त्रिशंकु की बात सुनकर ऋषि के पुत्रों ने क्रोध से कहा, जब वशिष्ठ ने उत्तर दे दिया तो अब हमारे पास क्यों आये हो ?जड़ छोड़कर टहनी क्यों पकड़ते हो ?हमारी ओर से कठिन है अपने नगर वापस जाओ। राजा त्रिशंकु ने कहा, बस वशिष्ठ और तुमने दोनों ने उत्तर दे दिया। अब मैं दूसरे स्थान पर जाता हूँ। वशिष्ठ के पुत्रों ने शाप दिया कि तू चाण्डाल हो जाएगा इसके एक रात बीतने के बाद राजा का मुख चाण्डाल के रूप में बदल गया। नीचे नीला कपड़ा और सर पर लाल कपड़ा, आँख भयानक लाल पीली, गधे की खाल बगल में, उसकी यह दशा देखकर नौकर और उसके पीछे चलने वाले सब भाग खड़े हुए। राजा अकेला आश्चर्यचकित खड़ा रहा। उस समय विश्वामित्र की शरण में आया। उसने राजा को इस रूप में देखकर जो विनम्र भाव के साथ चण्डाल के रूप में उसके पास गया था, जानबूझ कर कहा, तुम इस दशा में क्यों हो ?और कैसे आए हो ?त्रिशंकु ने करबद्ध कहा, मेरी इच्छा थी कि इस नश्वर शरीर के साथ स्वर्ग में चला जाऊँ लेकिन गुरु और गुरु के पुत्रों ने मुझे इस दशा को पहुँचा दिया। मैंने पहले कभी झूठ नहीं बोला है, मैंने विभिन्न प्रकार के यज्ञ किये और प्रजा को धर्म पर स्थिर रखा। मैं गुरुओं को उनके आचरण के कारण प्रिय रखता था। इनके अतिरिक्त गुरु दयावान नहीं हुए। बस जो कुछ करता है ईश्वर ही करता है, प्रयास निराधार है। मेरी बुद्धि में यह बात आई कि अच्छे बुरे तक पहुँचने में लोगों की दशा पर भाग्य ही सब कुछ है प्रयास असफल है। आपकी शरण में आया हूँ मुझ पर दया कीजिये।

در برو بهمان صورت دست بسته پیش بشوامتر ایستاده عرض میکند و صورت بشوامتر
مطبور رکهه که احوال مي پرسد و او جواب میکوید و صورت یکی از شاگردان

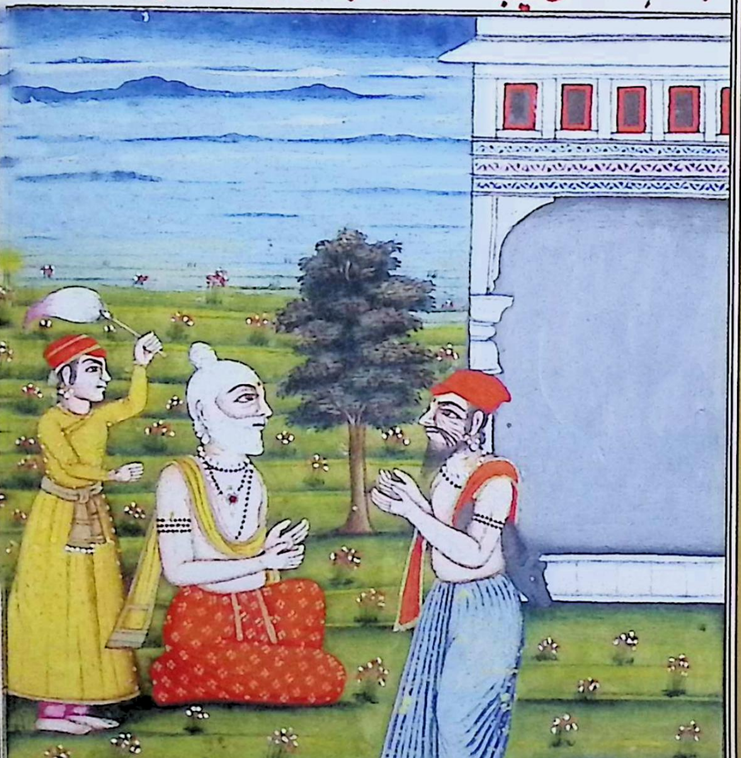

مرکدم بشوامتر

राजा त्रिशंकु चाण्डाल के रूप में, नीचे नीला वस्त्र, कन्धे और सर पर लाल कपड़ा, आँख लाल पीली, रूप भयानक, गधे की खाल बगल में, इसी रूप में करबद्ध विश्वामित्र के सामने खड़े होकर विनती कर रहे हैं और विश्वामित्र का चित्र ऋषि के रूप में जो कथा पूछ रहे हैं वह उत्तर दे रहे हैं और शिष्यों का चित्र

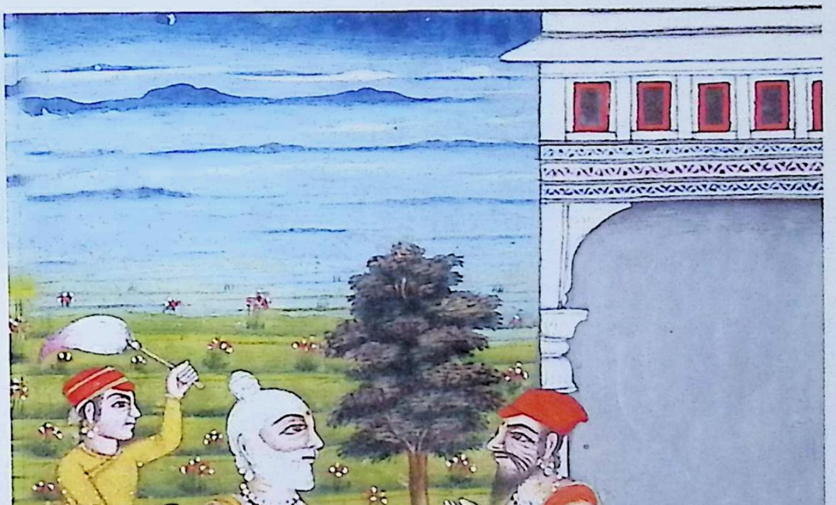

سرگ بشوامتر گفته راجه را شنیده بشیرین زبانی سخن فرحت افزائی او از زبان برآورد
که خوب کردی آمدی من ترا پناه میدهم در مکان من باش از جگ آرزوئی تو خواهد برآید
از گفته گرو اگرچه چنین صورت شد بهمین صورت بسرگ خواهی رفت این بگفت
و پسران و شاگردان و آشنایان وغیره را چنین فرمود که بیارید ساز جگ
از خرج راجه من جگ میکنم شاگردان او هر طرف رفتند این گفته بشوامتر را گفتند
جمیع منیشران مصلحت کرده دعوت را بسر و چشم قبول نمودند اما مهودی نام من و صد
پسران بششت لطیش گفتند که چهتری جگ کنانند شود و چاندال جگ کننده باشد
چگونه آنجا تناول نموده شود و برهمنان اگر طعام چاندال خورند راجه چگونه بسرگ
ن
خواهد رفت بدنیسان سخت جواب گفتند و چشم سرخ کردند شاگردان بشوامتر رفته بیا
کردند بشوامتر پسران بششت را گفت که نادانند همچو من نیک کردار را نکوهش میکنند
زمان
همگنان مرده خاکستر خواهند شد و گوشت خود خواهند خورد و همین
آنها را جم میگیرد و مهودی که مرا بدگفته است در همه جا خراب شده نکهاد یعنی
جانورکش خواهد شد این بگفت و خاموش شد و اینجا صورت بشوامتر
و راجه ترشنکو و صورت جگ و دو سه شاگرد بشوامتر و صورت ترشنکو
بطور سابق

सर्ग-४५

विश्वामित्र ने राजा की वार्ता सुनकर आनन्दमयी मधुर भाषा से यह बात कही कि अच्छा किया जो मेरे पास चले आए मैं तुम्हें शरण देता हूँ मेरे घर में रहो। यज्ञ से तुम्हारी मनःकामना पूरी हो जाएगी, गुरु के कहने से यद्यपि तुम्हारी दशा ऐसी हो गयी है लेकिन इसी रूप में तुम स्वर्ग में जाओगे। यह कहकर उसने पुत्रों, शिष्यों और परिचितों आदि से कहा कि राजा के धन से यज्ञ की सामग्री लाओ मैं यज्ञ करूंगा। उसके शिष्य चारों ओर गये और विश्वामित्र की यह बात सबसे कही सारे मुनीश्वरों ने सन्धि करके निमंत्रण स्वीकार किया लेकिन महोदय नामक मुनि ने और वशिष्ठ के सौ पुत्रों ने क्रोध से कहा कि एक क्षत्रिय यज्ञ कराने जाते है और एक चाण्डाल यज्ञ करने वाला होगा। कैसे कहां खाना खाया जायेगा और ब्राह्मण यदि चाण्डाल का भोजन करेंगे तो राजा स्वर्ग में कैसे जायेगा। इसीलिए उन्होंने कठोर उत्तर दिया और आँखें लाल कर लीं। विश्वामित्र के शिष्यों ने जाकर इसका वर्णन किया विश्वामित्र ने वशिष्ठ के पुत्रों से कहा कि वह सब अबोध हैं मुझ जैसे सज्जन को कष्ट पहुँचाते हैं। सब मरकर समाप्त हो जायेंगे और स्वयं अपना शव खायेंगे और उसी समय उन सबको मौत का फरिश्ता (यमराज) पकड़ेगा और महोदय जिसने बुरा कहा है वह हर स्थान पर नष्ट हो जायेंगे। यह कहकर वह शान्त हो गया। यहाँ पर विश्वामित्र, राजा त्रिशंकु का चित्र है। यज्ञ और विश्वामित्र के दो तीन शिष्यों का चित्र है, त्रिशंकु का चित्र पहले जैसा है।

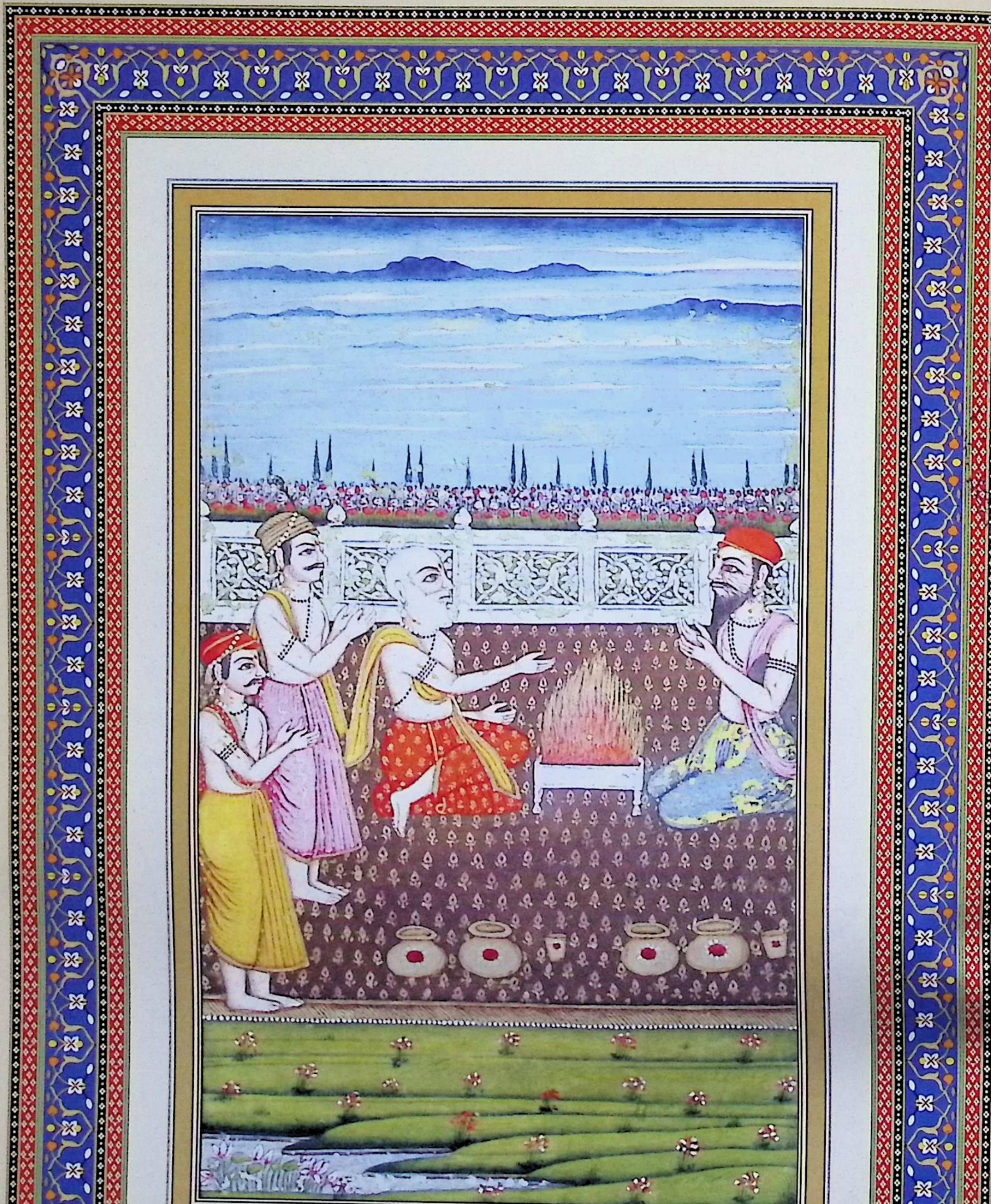

مرک جک

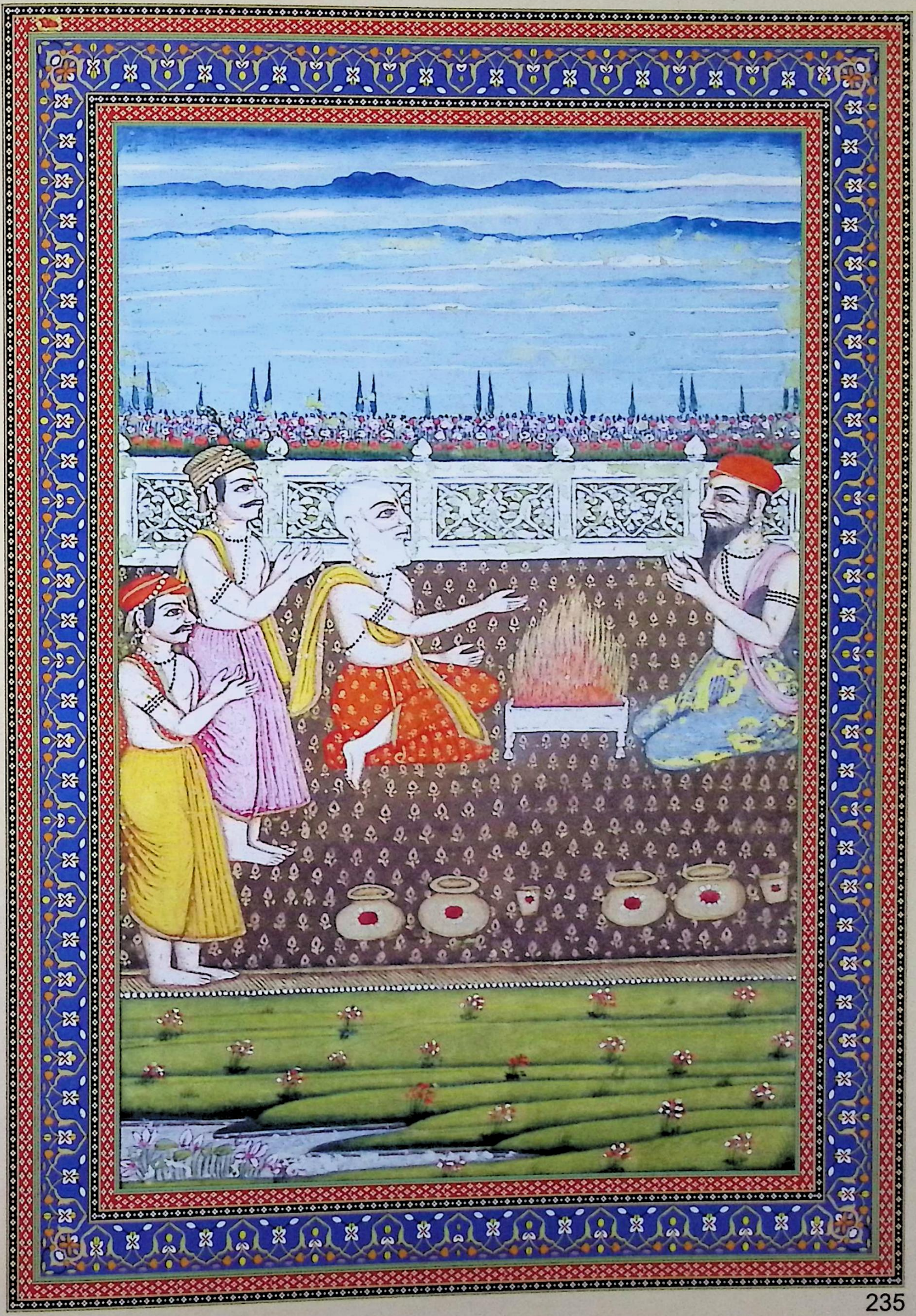

هرک جگ بشوامتر پسران بششت را که صد بشمار بودند و مهودی را از زور ریاضت
کشته و خاکستر کرده و خراب نموده در میان رکهیشران گفت پسر اچهواکو که دهرماتماست
و راست گوست در پناه من آمده و از همین وجود خود خواهش رفتن آسمان دارد شما
همگنان هم بفرمائید گفته بشوامتر را شنیده همگنان از ترس او کنکایش کردند این پسر
کوشک هست و رایض و غصه دار مثل آتش از غضب شتاب خواهد داد بنابران جگ بکنیم
آدهرو یعنی صاحب جگ بشوامتر شد و رتج یعنی اندازنده ساز آتش دیگران گشتند
بدینگونه جگ راجه ترشنکو شد بشوامتر که دانش منتر بود جگ کرده برای گرفتن بخش
دیوتاها را طلبید نیامدند بشوامتر مهامُنی از غضب شروا را یعنی چیزی که از و جگ
چمچه چوبین که ازان روغن در آتش می اندازند
میکنند در دست برداشته به ترشنکو گفت قوت ریاضت من به بین اینک ترا
بر آسمان میبرم که سخت دشوار ست بعد ازان گفت از آغاز کودکی هرچه من نیک
کرده ام از زور و تپ آن با کالبد خود بر آسمان رو از همین گفتن رو برو منها
ترشنکو بر فلک رفتن گرفت اندر اینحالت را دیده باستصواب دیوتاها چنین گفت
که ای ترشنکو هنوز بر آسمان نرسیده بر زمین فرود رو از شاپ گرو خراب
و نادان آواک شرا یعنی سر در زیر فرو رو شتاب رو در زیر زمین باش
از گفت اندر ترشنکو بفرود افتادن گرفت بآواز شور بشوامتر را گفت نگاهدار نگاهدار

सर्ग-४६

विश्वामित्र ने वशिष्ठ के पुत्रों, जो संख्या में सौ थे को तपस्या के बल पर मारकर और नष्ट करके और उनका सर्वनाश करके ऋषियों से कहा- यह इक्ष्वाकु के पुत्र जो कि धर्मात्मा और सीधे मार्ग पर चलने वाले हैं और मेरी शरण में आए हुए हैं। अपने इसी शरीर के साथ स्वर्ग में जाने की इच्छा रखते हैं, तुम सब भी कुछ करो। विश्वामित्र की बात सुनकर उनसे डरकर सबने परामर्श किया, यह कुशिक का पुत्र है तपस्या करने वाले और अग्नि की भांति क्रुद्ध होकर शाप दे देंगे। इस कारण हमें यज्ञ करना चाहिए। विश्वामित्र यज्ञ करने वाले (अध्वर्यु) हुए और दूसरे अग्नि को हवि देने वाले (ऋत्विज्) हुए इस प्रकार त्रिशंकु का यज्ञ हुआ। विश्वामित्र ने जो मंत्र जानते थे यज्ञ करके अपना भाग ग्रहण करने के लिए देवताओं को बुलाया परन्तु वह नहीं आए। महामुनि विश्वामित्र ने स्रुवा प्रोक्षिणी से, अर्थात् वह वस्तु जिससे यज्ञ करते हैं हाथ में उठाकर त्रिशंकु से कहा अपनी तपस्या की शक्ति से मैं अभी तुम्हें स्वर्ग में ले जाता हूँ जो कि अति कठिन कार्य है। इसके बाद उन्होंने कहा बचपन के आरंभ से मैंने जो पुण्य किया है उसके बल व तपस्या से अपने शरीर के साथ स्वर्ग में जाओ। यह कहते ही मुनि के सामने त्रिशंकु स्वर्ग में जाने लगा। इन्द्र ने यह देखकर देवताओं के परामर्श से कहा कि हे त्रिशंकु ! अभी तू स्वर्ग में नहीं पहुँचा है पृथ्वी पर उतर जा और गुरू के अभिशाप से बुरे, अधो मुख नीचे किये हुए शीघ्र लौट जा और पृथ्वी पर रहो। इन्द्र के कहने से त्रिशंकु नीचे उतरने लगा और तेज आवाज से विश्वामित्र से कहा होशियार-होशियार बचाओ-बचाओ और विश्वामित्र ने क्रोध से कहा, रुक जा, रुक जा।

واو آز طیش گفت اقامت کن اقامت بعده بشوامتر از قوت ریاضت مانند
برهما بسمت دکهن هفت رکهه بیافرید و دیگر انجم را آفریدن آغاز کرد و از غضب چشم
سرخ کرده بطرف دکن کواکب برآفرید و اندر و غیره و دیگر لوک ها را آفریدن خواهش
نمود دیوتا تمام حیران گشته به بشوامتر گفتند این راجه از شاپ گرو پاک نشده بر فتن
سرگ سزاوار نیست حکم پران دانان را بجا آورد از ین نتوان گذشت این را شنیده
بشوامتر گفت من پرتگیا یعنی مشخص در دل کرده ام که ترشنکو با کالبد خود بآسمان رود
این را غلط نتوان کرد و انجم ها آفریده من تا که هر سه عالم باشند باشند این پرتگیا من نگاه دارید دیوها از حرف
بشوامتر اینهمه قبول کردند شتانند برام میگوید که هنوز آن انجم مثل آتش بسمت دکن روشن هستند و ترشنکو هم آنجا
اقامت دارد القصه دیوتا هم رفتند و رکهیشران هم جگ آخر نمود و بمکان خود ها گرائیدند بشوامتر در جگ ترشنکو در هوا معلق

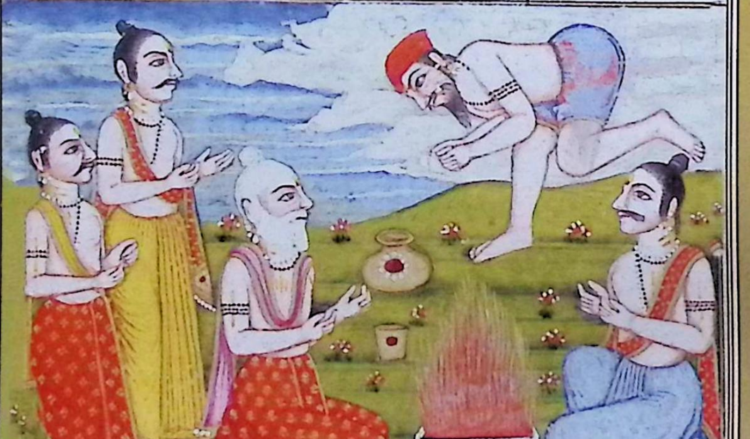

इसके बाद विश्वामित्र ने तपस्या के बल से ब्रह्मा के समान दक्षिण की ओर सात ऋषि पैदा किये और दूसरे नक्षत्रों को उत्पन्न करना आरम्भ किया। उन्होंने क्रोध से आँख लाल करके दक्षिण की ओर सप्तर्षि पैदा किये और इन्द्र आदि दूसरे लोक उत्पन्न करने की इच्छा की। सारे देवताओं ने चकित होकर विश्वामित्र से कहा कि इस राजा त्रिशंकु के गुरू के शाप से मुक्ति नहीं मिली है। स्वर्ग में जाने योग्य नहीं है पर उन जानने वालों को यहाँ लाइये, इससे अनदेखा नहीं किया जा सकता। यह सुनकर विश्वामित्र ने कहा, मैंने मन में यह निश्चय कर लिया है कि त्रिशंकु अपने शरीर के साथ आकाश पर जायेगा। इसको बदला नहीं जा सकता है ताकि तीनों लोक रहें। मेरी इस इच्छा का ध्यान रखो देवताओं ने डर के मारे विश्वामित्र की यह बात मान ली। शतानन्द श्री राम से कहते हैं कि अभी तक वह तारे अग्नि के समान दक्षिण की ओर प्रकाशमान हैं और त्रिशंकु की सन्तान भी अधिक संख्या में है। देवता भी चले गये और ऋषिगण भी यज्ञ समाप्त करके अपने स्थान पर चले गये।

विश्वामित्र यज्ञ में व्यस्त हैं और त्रिशंकु हवा में अटका है।

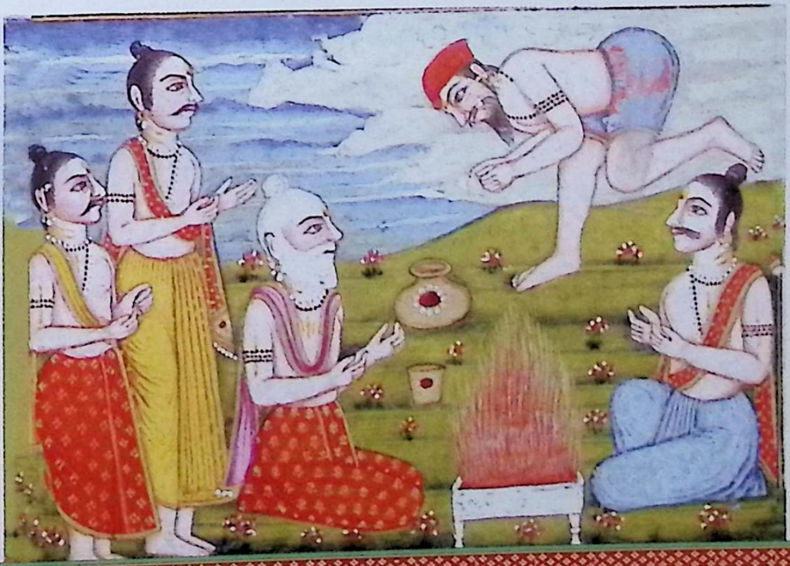

سرگ ۴۷ بعد رفتن منیشران بشوامتر که رایشی است و میان منیها چون سر است
بجمیع باشندگان صحرا گفت درین طرف که پایل دکن است بسیار فساد میشود طرفی
دیگر رفته ریاضت بکنم این بگفت و بطرف مغرب برکنار پهکر رفت و تپ کلان که سخت و دشوار
باشد آغاز کرد و ثمرات و بیخ را خورده طپید آنجا هم از بشوامتر عجایبات بوقوع آمد **انبریکه** نام
راجه که را انجا خاطر رسید که نرمید جگ بکنند یعنی آدمی را بآتش بسوزد زیرا که بهایم جگ او را
اندر برده بود مطابق شاستر عوض آن آدمی را باید داد اینچنین اوپادهیای راجه گفتند
انبریکه که پسر **نابهاک** بود برای این کار در ملکها و شهرها و قصبات و مکانها گردید جایی
رچیک نام برهمنی را دید پسران بسیار در خانه داشت و مفلس بود با او گفت صد هزار
گاو میدهم یک پسر را بده من نرمیده جگ میکنم و تو مفلس و پریشانی اگر در خاطر رسد
سودا کن **رچیک** برهمن گفت پسر کلان را هرگز نمیفروشم زیرا که **گشتب بهگوان** گفته پسر کلان را
نباید فروخت و اینکه از همه خورد است عزیز مادر است که گفته اند پدر را پسر کلان تر
عزیز باشد و مادر را پسر خوردتر و اینکه میانه است **شونه شیپه** نام دارد این را میفروشم
چنانچه راجه عوض صد هزار گاو **شونه شیپه** را گرفته بذوق تمام بر رته نشانده بملک خود
روان شد بر کنار پهکر که آنجا بشوامتر بود منزل گرفت آنجا **شونه شیپه** بشوامتر را دیده
با جگر دریده و خراب از سبب فروختن خود در قدم او افتاد و گفت نه مادر است و نه پد

सर्ग-४७

ऋषियों के जाने के बाद विश्वामित्र ने, जो कि तपस्या करने वालों और मुनियों के मध्य मस्तक के समान हैं, जंगल के समस्त निवासियों (ऋषियों) से कहा- उस दक्षिण दिशा की ओर बहुत विघ्न हो रहा है। अब मैं किसी और तरफ जाकर तपस्या करूंगा, यह कहकर पश्चिम की ओर पुष्कर के किनारे चले गये और महान तप आरंभ किया। पेड़ों के कन्द, मूल खाकर तपस्या की वहाँ भी विश्वामित्र से बहुत से चमत्कार हुए। अम्बरीष नामक अयोध्या के महाराजा के मन में यह विचार आया कि नरमेध यज्ञ करें अर्थात् मनुष्य को आग में जलायें क्योंकि उसके यज्ञ वाले पशु को इन्द्र ले गये थे। शास्त्र के अनुसार उसके बदले में मनुष्य की बलि देनी चाहिए ऐसा राजा के गुरुओं ने कहा। अम्बरीष जो नाभाग का पुत्र था इस कार्य के लिये देश, विदेश, शहरों, गाँवों और विभिन्न स्थानों पर गया। एक जगह ऋचीक नामक ब्राह्मण को देखा। उसके बहुत से पुत्र थे और निर्धन थे उसने कहा- मैं तुम्हें सौ गाय देता हूँ तुम एक पुत्र को मुझे दे दो, मैं यज्ञ करूंगा और निर्धन और बूढ़ा हो चुका हूँ। यदि मन करे तो सौदा कर लेना। ऋचीक ब्राह्मण ने कहा मैं बड़े लड़के को कदापि नहीं बेचूंगा क्योंकि भगवान भार्गव ने कहा है कि बड़े लड़के को नहीं बेचना चाहिए और यह जो सबसे छोटा है माँ का लाडला है। जैसा कि लोगों ने कहा है कि पिता को बड़ा लाडला अधिक प्रिय होता है और माँ को सबसे छोटा लड़का। यह जो बीच का है उसका नाम शुनःशेप है उसे बेचूँगा। अतः राजा ने एक हजार गायों के बदले शुनःशेप को लेकर बड़े चाव से रथ पर बैठाकर अपने देश की ओर प्रस्थान किया। पुष्कर के किनारे जहाँ विश्वामित्र थे उसने पड़ाव किया। शुनःशेप विश्वामित्र को देखकर जोर से चिल्लाया और अपने को बेचे जाने के कारण, उसे गलत बताया। उसने कहा

ونه آشنا ونه برادر من در پناه تو آمده ام مرا نگاهدار و کار راجه هم شود و من زنده مانم همچنان کن که پسر غریب را پدر نگاهدارد گفته او را شنیده تشوامتر دلاسا او کرده به پسران خود گفت پدران پسران را برای این نگاه میدارند که بهنگام سختی بکار آیند و آنوقت رسیده است و آن اینست که این پسر برهمن است و در پناه من آمده این را جان بخشی باید نمود و شما همه نیک کردار و نیکمرد هستید بنوعیکه خلاصی او شود و جگ راجه شود بکنید حاصل آنکه از شما کسی بجائی او برود این را شنیده آنها به پدر گفتند چرا پسران خود را گذاشته پسر دیگر را محافظت میکنی چنانچه کسی گوشت خود را خورد تشوامتر گفته آنها را شنیده از غصه چشم سرخ کرده شاپ داد این سخن از دهرم بیرون است که مرا گفتید شما را گوشت خود خوراک خواهد شد و مثل پسران بشسٹ خواهید افتاد و هزار سال آخر خواهید شد باین آتش غضب پسران خود را سوخته به شونه شیپه گفت این منتر یعنی افسون گفته مرا خواهی خواند اندر ترا خلاصی خواهد داد و جگ راجه کامل خواهد شد شونه شیپه آن منتر را یاد کرد و با راجه انبرکیه گفت مرا شتاب بمکان جگ خود ببر و دیچها خود را تمام کن راجه این را شنیده بخیریت تمام بمکان جگ رفت و شونه شیپه را بطریق بهایم بمنتر بست چون اندر و غیره برائی بخش خود آمدند شونه شیپه اندر را ستود و او مهربان گشته او را زندگی و قوت و جیش مرحمت فرمود و جگ راجه بتمام رسید آنچه آرزو داشت از مهربانی اندر بحصول انجامید

न मेरे पिता हैं और न माता, न कोई परिचित है और न भाई, मैं आपकी शरण में आया हूँ मुझे बचाइये। राजा का काम भी हो जाये और मैं जीवित भी रहूँ ऐसा करें जैसे कि कोई पिता किसी असहाय बच्चे की रक्षा करता है। उसकी बात सुनकर विश्वामित्र ने उसे सान्त्वना दी और अपने पुत्रों से कहा पिता अपने पुत्रों की इसलिए रक्षा करते और उनका ध्यान रखते हैं कि वह विपत्ति में उनके काम आए और वह समय आ चुका है। वह यह है कि यह ब्राह्मण का पुत्र है और मेरे संरक्षण में आया है उसके प्राण की रक्षा करनी चाहिए और तुम सब अच्छे चरित्र वाले सज्जन पुरुष हो। ऐसा कुछ करो कि उसके प्राण भी बच जाएं और राजा का यज्ञ भी हो जाये। इसका उपाय यह है कि तुम में से कोई उसके स्थान पर चला जाए यह सुनकर उन सबने पिता से कहा आप अपने पुत्रों को छोड़कर दूसरे लड़के की क्यों रक्षा कर रहे हैं?जैसे कि कोई अपना ही माँस खाए। विश्वामित्र ने उनकी बात सुनकर क्रोध से आँख लाल करके शाप दिया कि यह बात धर्म के विरुद्ध है जो बात तुमने कही, तुम्हारा माँस तुम्हारा अपना आहार होगा और वशिष्ठ के पुत्रों के समान हो जाओगे। दो हजार वर्ष तक निकृष्ट रहोगे इस क्रोध रूपी अग्नि से अपने पुत्रों को जलाकर उसने शुनःशेप से कहा-यह मन्त्र जो तू पढ़ेगा वह तुझे स्वतन्त्रता देगा और राजा का यज्ञ पूरा हो जायेगा। शुनःशेप ने वह मन्त्र याद कर लिया और राजा अम्बरीष से कहा मुझे शीघ्र अपने यज्ञ के स्थान पर ले चलो और अपनी दीक्षा पूरी करो। राजा यह बात सुनकर कुशलतापूर्वक अपने यज्ञ के स्थान पर ले गया और शुनःशेप को पशुओं की भाँति यूप (खूंटे) से बांध दिया। जब इन्द्र आदि उनके मोक्ष के लिए आए तो शुनःशेप ने इन्द्र की स्तुति की। उन्होंने दयालु बनकर उसे जीवन, शक्ति और सेना प्रदान की। राजा का यज्ञ समाप्त हुआ और उसकी जो इच्छा थी वह इन्द्र की दया से सम्पूर्ण हो गयी।

بشوامتر دهرماتما تا هزار سال بر پهکر یعنی تالاب مغرب ریاضت کرد و درانجا تالاب
پهکر که در اجمیر شریف دید باشد و مکانها کناره او و مکان و صورت بشوامتر که ریاضت
میکند و صورت دو سه شاگرداو

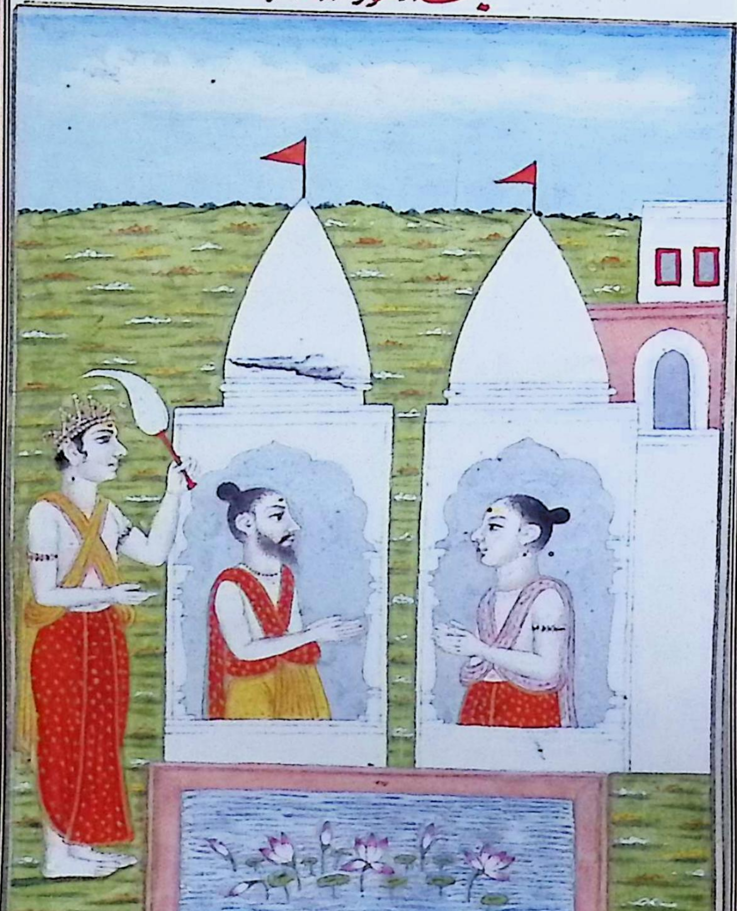

विश्वामित्र और धर्मात्मा ने एक हजार वर्ष तक पश्चिम के पोखर अर्थात् तालाब पर तपस्या की। यहाँ वह तालाब जो अजमेर शरीफ में है देखा जा सकता है और उसके किनारे-किनारे मकान, विश्वामित्र का आश्रम और उनका चित्र भी दिखाई दे रहा है जो तपस्या कर रहे हैं और उनके दो तीन शिष्य का भी चित्र दिखाई दे रहा है।

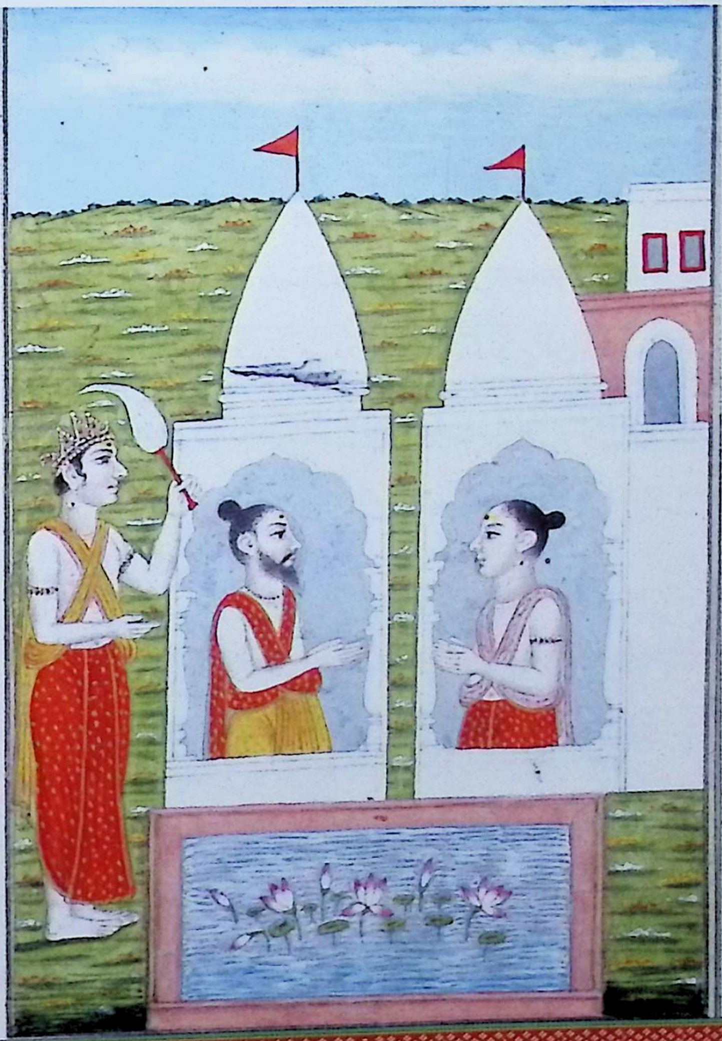

گفتار ۴۷ احوال اپسرا پهر کاه هزار سال کامل در ریاضت بگذشت غسل نمود برهما با دیوتا ها
آمده به بشوامتر گفت از نیکوکرداری خود رکهیسر یعنی رکهه شدن یافتی این بگفت در آسمان
رفت بشوامتر این را شنیده باز بریاضت مشغول شد چون مدت مدید گذشت مینکا نام اپسرا
برای تحریص و شکستن تپ در آنجا آمد و در پهکر غسل کرد بشوامتر آنرا دید بحسن و خوبی بیمثال
گویا لچهمی ست تمام اعضا وجود او مطبوع و در آب بازی کنان و دلبرانه صورت نمایان
مکانرا خالی از غیر دانسته بشوامتر را شهوت غلبه کرد و گفت خوب کردی آمدی با من باش
مینکا دست بسته نمسکار کرده گفت برای محبت و دوستی تو آمده ام اگر رغبت باشد با من
صحبت کن بدینگونه شیرین گفتار را شنیده دست او را گرفته اندرون مکان خود در آمد و آنچه
خواست کرد و در مصاحبت او بشوامتر پنج پنج سال را یک یک لمحه دانست و با او سالهای
بیشمار را مانند یکروز فهمید بعد امضای مدت بسیار چون باز بخویش آمد در دل گفت
اینعورت مرا برخود حریص ساخت و بشکستن ریاضت من پرداخت بنا بر آن این را بگذارم
بعده مینکا را و آن پهکر را گذاشته بر کوه سمت شمال رفت و بر کنار کوشکی دریا اقامت کرده
تپ کلان کردن آغاز کرد تا هزار سال کامل نمود دیوتا ها را خوف پیدا آمد همگنان از دیوتا
و رکهه ها همه اندر جمع شده مشورت کردند که این پسر کاده مهررکهه شد هنوز ریاضت میکند این را
ازین فعل مانع آئیم مصلحت مقرری اینها را دانسته برهما که جد کلان همه خلقت است آمد و حوا هنس

सर्ग-४८

अप्सरा के विषय पर

जब पूरे एक हज़ार वर्ष तपस्या में बीत गये तो उन्होंने स्नान किया। ब्रह्मा ने देवताओं सहित आकर विश्वामित्र से कहा तुमने अपने अच्छे चरित्र से ऋषि होने का पद प्राप्त कर लिया है, यह कहकर स्वर्ग को चले गये। विश्वामित्र यह सुनकर पुनः तपस्या में व्यस्त हो गये जब लम्बी अवधि बीत गयी तो मेनका नाम की एक अप्सरा उन्हें लालच देने और तपस्या भंग करने के लिए वहाँ आयी और तालाब में स्नान किया। विश्वामित्र ने उसे देखा वह सुन्दरता में लक्ष्मी थी उसके शरीर के सारे अंग सुडौल थे वह पानी में खेलती हुई आकर्षक दिखी। घर को खाली जानकर विश्वामित्र के मन में बुरे विचार आए और उसने कहा कि अच्छा किया तुम आ गयीं, मेरे साथ रहो मेनका ने हाथ जोड़कर प्रणाम करके कहा मैं आपके प्रेम और मित्रता के लिए आयी हूँ यदि इच्छा है तो मेरे साथ संभोग कीजिए। उसकी यह मीठी-मीठी बातें सुनकर विश्वामित्र उसका हाथ पकड़कर उसे घर के अन्दर ले गये और उसने जो चाहा किया। उसकी संगत में विश्वामित्र ने पाँच-पाँच वर्ष को एक-एक पल जाना और उसके साथ बहुत वर्षों का एक दिन की भाँति समझा बहुत समय व्यतीत होने के पश्चात् जब वह सचेत हुए तो अपने मन में सोचा कि इस स्त्री ने मुझे अपने ऊपर आसक्त कर लिया और मेरी तपस्या भंग करने का कारण बनी, अतः मैं उसे छोड़ता हूँ। इसके पश्चात् मेनका को और उस तालाब को छोड़कर उत्तर की ओर पर्वत पर चला गया और कोशकी नदी के किनारे रुककर कड़ी तपस्या आरंभ की। पूरे एक हजार वर्ष तक तपस्या की। देवताओं में भय उत्पन्न हो गया। देवताओं ने एकत्र होकर परामर्श किया कि यह लड़का कभी महर्षि बन सकता है। अभी तपस्या कर रहा है उसे इस कार्य से रोकना चाहिए। इन सबका परामर्श जानकर ब्रह्मा, जो समस्त जीवों के पालनहार हैं आए और उन्होंने विश्वामित्र की इच्छा पूछी,

گسه ۱۴۷ احوال اپسرا پهرکاده هزار سال کامل در ریاضت بگذشت غسل نمود برهما با دیوتاها
آمده به بشوامتر گفت از نیکوکرداری خود رکهنو یعنی رکهه شدن یافتی آین بگفت در آسمان
رفت بشوامتر این را شنیده باز بریاضت مشغول شد چون مدت مدید گذشت مینکا نام اپسرا
برای تحریص و شکستن تپ در آنجا آمد و در پهکر غسل کرد بشوامتر آنرا دید بحسن و خوبی بیمثال
گویا لچهمی است تمام اعضا وجود او مطبوع و در آب بازی کنان و دلبرانه صورت نمایان
مکان را خالی از غیر دانسته بشوامتر را شهوت غلبه کرد و گفت خوب کردی آمدی با من باش
مینکا دست بسته نمسکار کرده گفت برای محبت و دوستی تو آمده ام اگر رغبت باشد با من
صحبت کن بدینگونه شیرین گفتار را شنیده دست او را گرفته اندرون مکان خود در آمد و آنچه
خواست کرد و در مصاحبت او بشوامتر پنج پنج سال را یک یک لمحه دانست و با او سالهای
بیشمار را مانند یکروز فهمید بعد امضای مدت بسیار چون باز بخویش آمد در دل گفت
اینعورت مرا بر خود حریص ساخت و شکستن ریاضت من پرداخت بنابران این را بگذارم
بعده مینکا را و آن پهکر را گذاشته بر کوه سمت شمال رفت و بر کنار گوشکی دریا اقامت کرد
تپ کلان کردن آغاز کرد تا هزار سال کامل نمود دیوتاها را خوف پیدا آمد همگنان از دیوتا
و رکهه ها همه اندر جمع شده مشورت کردند که این پسر کاده مهرکهه شد هنوز ریاضت میکند این را
ازین فعل مانع آئیم مصلحت مقرری اینها را دانسته برهما که جد کلان همه خلقت است آمد و حواهش

सर्ग-४८

अप्सरा के विषय पर

जब पूरे एक हज़ार वर्ष तपस्या में बीत गये तो उन्होंने स्नान किया। ब्रह्मा ने देवताओं सहित आकर विश्वामित्र से कहा तुमने अपने अच्छे चरित्र से ऋषि होने का पद प्राप्त कर लिया है, यह कहकर स्वर्ग को चले गये। विश्वामित्र यह सुनकर पुनः तपस्या में व्यस्त हो गये जब लम्बी अवधि बीत गयी तो मेनका नाम की एक अप्सरा उन्हें लालच देने और तपस्या भंग करने के लिए वहाँ आयी और तालाब में स्नान किया। विश्वामित्र ने उसे देखा वह सुन्दरता में लक्ष्मी थी उसके शरीर के सारे अंग सुडौल थे वह पानी में खेलती हुई आकर्षक दिखी। घर को खाली जानकर विश्वामित्र के मन में बुरे विचार आए और उसने कहा कि अच्छा किया तुम आ गयीं, मेरे साथ रहो मेनका ने हाथ जोड़कर प्रणाम करके कहा मैं आपके प्रेम और मित्रता के लिए आयी हूँ यदि इच्छा है तो मेरे साथ संभोग कीजिए। उसकी यह मीठी-मीठी बातें सुनकर विश्वामित्र उसका हाथ पकड़कर उसे घर के अन्दर ले गये और उसने जो चाहा किया। उसकी संगत में विश्वामित्र ने पाँच-पाँच वर्ष को एक-एक पल जाना और उसके साथ बहुत वर्षों का एक दिन की भाँति समझा बहुत समय व्यतीत होने के पश्चात् जब वह सचेत हुए तो अपने मन में सोचा कि इस स्त्री ने मुझे अपने ऊपर आसक्त कर लिया और मेरी तपस्या भंग करने का कारण बनी, अतः मैं उसे छोड़ता हूँ। इसके पश्चात् मेनका को और उस तालाब को छोड़कर उत्तर की ओर पर्वत पर चला गया और कोशकी नदी के किनारे रुककर कड़ी तपस्या आरंभ की। पूरे एक हजार वर्ष तक तपस्या की। देवताओं में भय उत्पन्न हो गया। देवताओं ने एकत्र होकर परामर्श किया कि यह लड़का कभी महर्षि बन सकता है। अभी तपस्या कर रहा है उसे इस कार्य से रोकना चाहिए। इन सबका परामर्श जानकर ब्रह्मा, जो समस्त जीवों के पालनहार हैं आए और उन्होंने विश्वामित्र की इच्छा पूछी,

بشوامتر پرسید او گفت برهم رکهه شدن که دشوار تر است از مهربانی تو بیایم برهما
برهما گفت تا وقتیکه تو حواس درونی و برونی را مسخر نکرده و ترک طمع و آرزو و غصه غالب
نیامده چگونه برهم رکهه شدن آرزو داری این بگفت و برهما برفت بشوامتر همانجا
دست را بر آسمان برداشته بیکپای ایستاده ریاضت آغاز کرد و خوراک خود باد
مقرر نمود و مثل ستون بی جنبش خالی از حرکت بیکجا استقامت ساخت و در هوای
تابستان در پنج آتش نشستن گرفت و در هنگام بارش بی سایه ماند و در میان سرما
بآب خواب کرد آنچنین یکصد سال تپ مخوف نمود دیوتاها را دهشت تمام کمال پیدا شد
اندر و غیره حیران گشته برای منع ریاضت او رنبها نام اپسرا طلبیده بجهت خواهش خود
و ناخواهش بشوامتر چنین گفتند **سرگ گفتار** اندر ای رنبها کار دیوتاها را بکن
و این بنیره کوشک را بر خود تحریص کردان رنبها دست بسته سراپای اندر گذاشته
گفت این رکهه غصه دار است مرا ازین کار معذور دارید اندر گفت خوف مکن و کار ما
بکن و من بصورت کوکلا گردیده با کام دیو بر درختی قریب تو خواهم بود تو شکلی
خوب نموده آن رکهه را عاشق خود ساز القصه رنبها صورت خوب نموده نزدیک
بشوامتر آمد و اندر هم بصورت کوکلا جانور با کام دیو حاضر گردید و سرود
نیک سرائیدند بشوامتر آواز کوکلا و سرود رنبها را بگوش کرده و از باد نسیم

उसने कहा ब्रह्मर्षि होने का पद जो बहुत कठिन है, मैं चाहता हूँ कि आपकी कृपा से वह प्राप्त कर लूँ। ब्रह्मा ने कहा जब तक तुम भीतरी और वाह्य इन्द्रियों पर विजय प्राप्त न कर लो और अपनी इच्छा व क्रोध पर प्रभावी न हो जाओ उस समय तक ब्रह्मर्षि होने की इच्छा कैसे करते हो?ब्रह्मा यह कहकर चले गये, विश्वामित्र ने उसी स्थान पर हाथ आकाश की ओर उठाकर और एक पाँव पर खड़े होकर तपस्या आरंभ कर दी और अपना भोजन वायु को निर्धारित किया। वह एक खम्भे के समान बिना हिले जड़ रूप में एक स्थान पर खड़े रहे और ग्रीष्म ऋतु में पंच-अग्नि का सेवन कर तप आरम्भ किया। वर्षा में बिना छत के रहते और शीत ऋतु में पानी पर सोते इस प्रकार उन्होंने एक सौ वर्ष तक भयानक तपस्या की जिससे सारे देवताओं में भय व्याप्त हो गया। इन्द्र आदि ने भी आतंकित होकर उनको तपस्या से रोकने के लिए रम्भा नामक अप्सरा को बुलाया और अपनी इच्छा तथा विश्वामित्र की अनिच्छा के सम्बन्ध में इस प्रकार वार्ता की।

सर्ग-४७

इन्द्र की वार्ता

हे रम्भा ! देवताओं का कार्य कर और कुशिक के इस पौत्र को अपने ऊपर रिझा ले। रम्भा ने हाथ जोड़कर इन्द्र के पैरों पर अपना शीश रखकर कहा यह ऋषि क्रोधी हैं मुझे इस कार्य से क्षमा कीजिये। इन्द्र ने कहा भयभीत मत हो और हमारा कार्य करो मैं कोयल के रूप में कामदेव के साथ एक वृक्ष पर तेरे निकट ही रहूँगा। तुम एक सुन्दर रूप धारण करके इस ऋषि को अपनी ओर आकर्षित कर लो। निष्कर्षतः रम्भा सुन्दर रूप धारण कर विश्वामित्र के पास गयी और इन्द्र भी कोयल के रूप में कामदेव के साथ उपस्थित हुए, और बहुत मधुर गीत गाया। विश्वामित्र ने कोयल की वाणी और रम्भा का गाना सुनकर प्रातः की सुगन्धित वायु की गन्ध सूंघकर

خوشبوی شنیده یکایک اثر شهوت در خود یافت اما از هوش نرفته فهمید که اینکار
اندرست و در غضب شده برنبها گفت چونکه عارض تپ من میشوی بصورت سنگ خواهی شد
در همین صحرا تا ده هزار سال خواهی ماند کسی از برهمنان ترا بر داشته بصورت اصلی باز
خواهد آورد دید یکونه رنبها را سنگ کرده بار دیگر خود را ملامت کرد که من هنوز حواس را سخر
نکرده ام این بگفت و آن مکان را گذاشته بسمت شرق یعنی پورب رفت و تا هزار سال مون
یعنی خاموشی اختیار نمود و بجز آسن بسته یعنی هر دو پای بر هر دو ران نهاده بنشست صورت
کوشکی دریا که بشوامتر بیک پا ایستاده ریاضت میکند و رنبها میسکا وغیره اپسرا برای شکستن ریاضت
آمده و اندر بصورت کوکلا شده

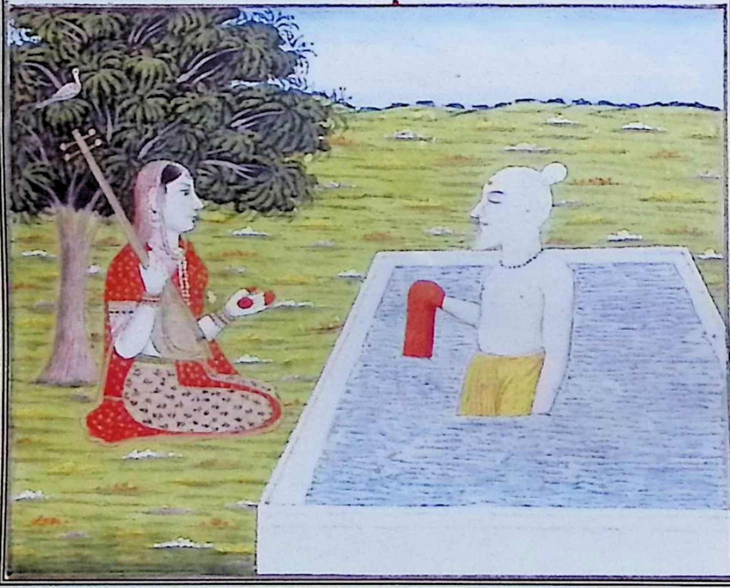

مرکیاتن

अपने अन्दर अचानक कामवासना के प्रभाव का अनुभव किया परन्तु वह समझ गये कि यह इन्द्र का कार्य है। क्रोध में उसने रम्भा से कहा चूँकि तुम मेरी तपस्या में बाधक हो रही हो। इसलिए तुम पत्थर के रूप में हो जाओगी और इसी वन में दस हजार वर्ष तक तुम रहोगी ब्राह्मणों में से कोई तुझे उठाकर असली रूप में वापस लायेगा। इस प्रकार उन्होंने रम्भा को पत्थर बनाकर एक बार पुनः अपने को बुरा भला कहा कि मैं अभी तक इन्द्रियों पर विजय प्राप्त नहीं कर सका हूँ। यह कहकर उन्होंने वह आश्रम छोड़ दिया औरं पूर्व की ओर चले गये। एक हजार वर्ष तक मौन धारण कर और आसन जमाकर अर्थात् दोनों पैर दोनों जाँघों पर रखकर बैठे।

कोशकी नदी का चित्र जहाँ विश्वामित्र एक पाँव पर खड़े तपस्या कर रहे हैं, रम्भा और मेनका आदि अप्सरायें तपस्या भंग करने के लिए आई हुई हैं और इन्द्र कोयल के रूप में हो गये हैं।

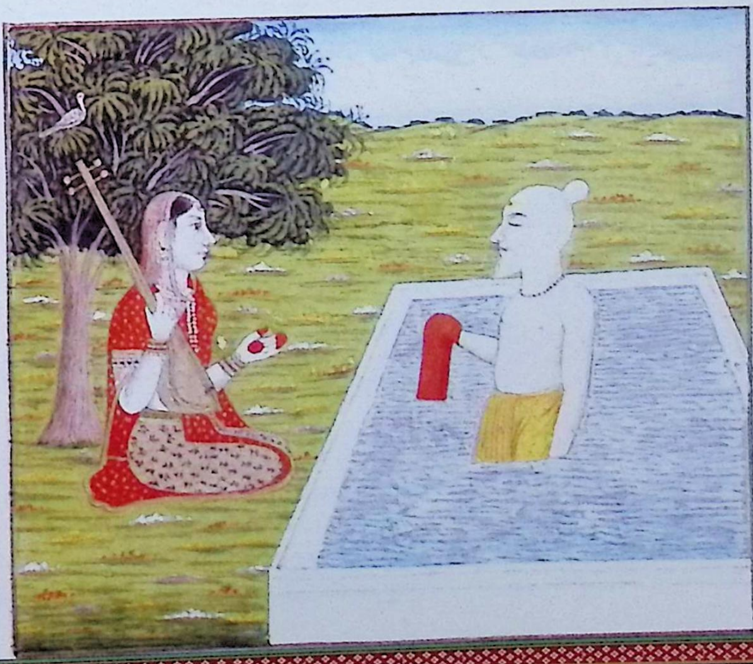

سرگ ۴۹ یافتن برهمه کهه و بدانحالت بودن بشوامتر آرزو و غصه هیچ درو راه نیافت
و تپ بسیار نمود اندر و غیره دیوتا نزد برهما رفت گفتند که اقسام حرفت ایخال
کردیم و انواع انواع لیاقت بکار بردیم اما بشوامتر از تپ بر نمیگردد برهما از استماع
با دیوتاها نزد بشوامتر آمده گفت از قوت تپ تو برهم رکهه شدی حالا از تپ باز آمدی و از مهربانی
زا سو چند چرن میدهم یعنی هرجا که خواهی برسی و نیکوی نصیب تو باد از تپ بس کن بدینگونه شیرین
زبانی برهما را شنیده بشوامتر گفت اگر مرا برهمه رکهی از قوت تپ میسر آمد پس مرا برهم روشن شود
و بید دانسته آید و آستی و سده و برده و سمرت و علم و عقل و شم یعنی تسخیر حواس ظاهر و جهما یعنی تحمل و تپ
و دم یعنی تسخیر حواس باطن و دیا یعنی مهربانی بر غربا و جهانت یعنی غصه نکردن و همه دانی و همه کار
کردنی و استموه یعنی با طریق مردم دنیا کم صحبتی و غیبت نکردن و بر آرزوی دل کم خواهشی
اینهمه در من پیدا شود برهما گفت اینهمه در تو ظهور خواهند گرفت و ترا از جمیع برهم دانانان ممتاز
میدانم این بگفت و برهما با دیوتاها برفت بشوامتر با خوشدلی بر زمین گذران کردن گرفت
شتانند میگوید ای رام این همین بشوامتر سر آمد برهم دانان و سردار تیجوسییان یعنی
اهل ریاضت و ممتاز اهل شعور و تقاوه بیدهاست اینچنین گفتار **شتانند** را شنیده راجه جنگ
دست بسته به بشوامتر گفت تمام مجلس مرا روشن کردی و بزرگی ترا شنیدم تپ تو بی نهایت
و زور آن بغایت و فنون تو بیشمار از این شنیدن مرا سیری نیست وقت شام شد آفتاب

सर्ग-४६

ब्रह्मर्षि का पद पाना

विश्वामित्र के इस दशा में होने के कारण से इच्छा और क्रोध में से कोई भी उनके मन में नहीं पनप पाया उन्होंने बहुत तपस्या की। इन्द्र आदि देवताओं ने ब्रह्मा के पास जाकर कहा कि हमने विभिन्न प्रयास कर डाले और भाँति-भाँति व्यवधान उत्पन्न किये लेकिन विश्वामित्र तपस्या में लगे हुए हैं। ब्रह्मा यह सुनकर देवताओं के साथ विश्वामित्र के पास आए और कहा तपस्या के बल पर तुम ब्रह्मर्षि हो गये हो अब तो तपस्या समाप्त करो। मैं तुम्हें वचन देता हूँ तुम जहाँ चाहोगे पहुँच जाओगे और अच्छे कार्य करने वाले होगे। तपस्या समाप्त कर दो, ब्रह्मा की यह मधुर वाणी सुनकर विश्वामित्र ने कहा यदि मुझे तपस्या के बल से ब्रह्मर्षि प्राप्त हो जायेगा तो मेरा ब्रह्म भी प्रज्वलित हो जायेगा और वेद का ज्ञान होगा, सत्य परामर्श, उन्नति, स्मृति, ज्ञान, बुद्धि और वाह्य इन्द्रियों पर विजय, क्षमा, दूसरी तपस्या अर्थात् अन्य इन्द्रियों पर विजय, दीन दुखियों पर दया व कृपा, क्रोध न करना और सब कुछ जानना व सब कुछ करना और संसार के लोगों से मेल-मिलाप व सम्पर्क कम करना, दूसरों की बुराई न करना और अपने हृदय की इच्छाओं पर न चलना यह सारी बातें मुझमें उत्पन्न हो जायेंगी। ब्रह्मा ने कहा यह सारी बातें तुझमें प्रकट होंगी और तुम्हें मैं समस्त ब्रह्म जानने वालों से अधिक श्रेष्ठ समझता हूँ। ब्रह्मा यह कहकर देवताओं सहित चले गये विश्वामित्र प्रसन्नतापूर्वक पृथ्वी पर जीवनयापन करने लगे। शतानन्द राम से कहते हैं कि इसी कारण से विश्वामित्र ब्रह्म ज्ञानियों में प्रथम हैं, तपस्या करने वालों के अग्रणी, ज्ञानियों में श्रेष्ठ और सज्जन व्यक्तियों में उत्तम हैं। शतानन्द की इतनी बात सुनकर राजा जनक ने करबद्ध विश्वामित्र से कहा आपने मेरा दरबार प्रकाशमान कर दिया। मैंने आपकी महानता सुनी है, आपकी तपस्या अत्यधिक है और उसका बल भी अधिक है, आपकी कलाएँ अनगिनत हैं यह सुनने से मेरी सन्तुष्टि नहीं हुई है। संध्या का समय हो चुका है, सूर्य अस्त हो रहा है

غروب میشود صبح گاه باز می بنیم این بگفت و راجه جنک گرد بشوامتر گردیده رفت و بشوامتر نیز با رام و لچهمن بمکان خوابگاه خود آمد صورت راجه جنک و شتانند و رام و لچهمن و بشوامتر

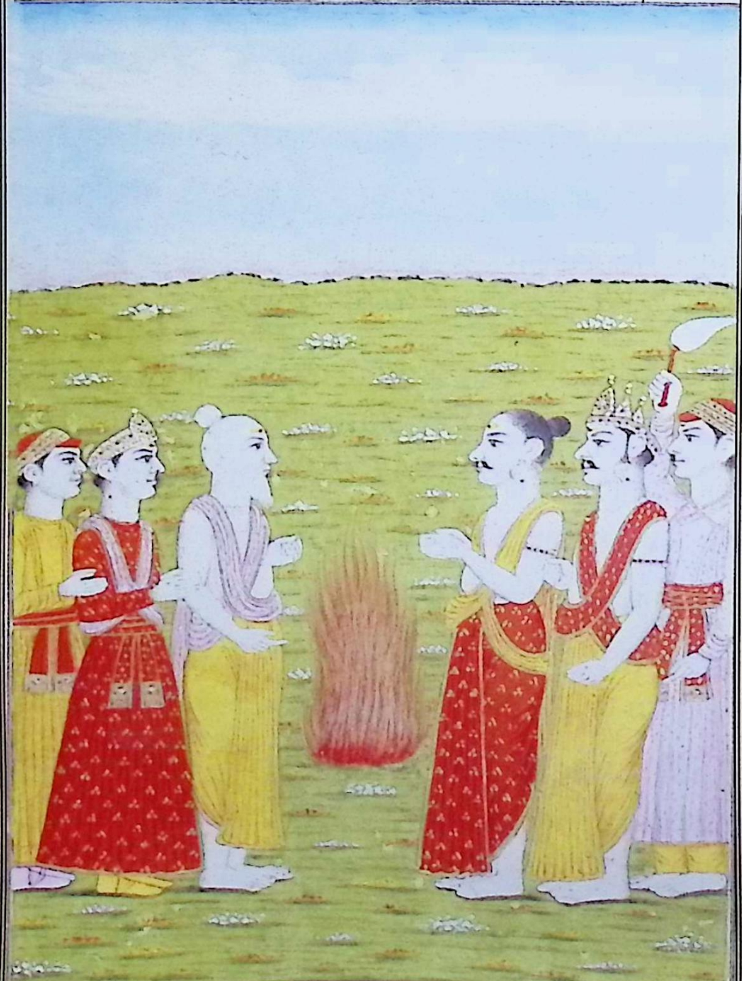

अतः प्रातः पुनः दर्शन करूँगा। यह कहा और राजा जनक विश्वामित्र की परिक्रमा करके चले गये और विश्वामित्र भी राम और लक्ष्मण के साथ अपने आश्रम में आए।

राजा जनक, शतानन्द, राम व लक्ष्मण और विश्वामित्र के चित्र

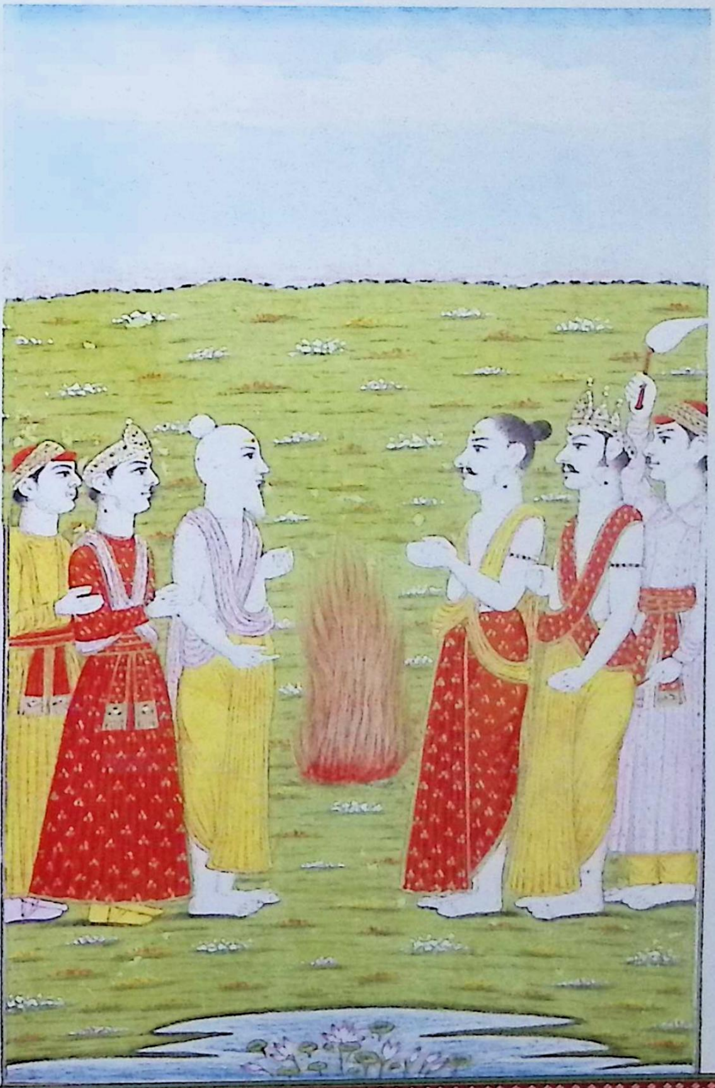

سرگ احوال دهنک علی الصباح کرباز صبح کرده بشوامتر با رام و لچهمن نزدیک جنک آمد
راجه موافق شاستر پرستش او بجا آورد و گفت خوب کردید که تشریف فرمودید بفرمایید
چکنم شما حاکم هستید و من محکومم بشوامتر در جواب گفت این پسران دشرته کمان دهب را
ز دیوان
که تو داری میخواهند که ببینند آز اینجا بعد از ان انچه در خاطر تو خواهد آمد خواهی کرد جنک
دست بسته عرض کرد که آین کمان نوعیکه در خانه من آمده است بشنوید در نسب ما
راجه دیورات نام پسر راجه نمی شده بود او را نیاس بهوت نام این کمان داده است
امانت دیو رات یعنی داده شده دیو
و ازین کمان مهادیو بعد تخریب جک راجه دچهه جمیع دیوتا را منهزم ساخته و گفته چون
حصه مرا نمیدهید لهذا اعضا شما همه ازین کمان خراب میکنم آزین خوف دیوتا مهادیو
را نمسکار کرده برخود مهربان ساختند اعضا همکنان بدستور سابق گذاشت و دیگر آن
هنگام قلبه رانی از زمین پیدا شده و بجمیع خوبی آراسته سیتا نام دختر منست و وجه تسمیه اش
همچنانست که در هندوی سیت قلبه را گویند از آنچه پیدا آید سیتا باشد و برای خوا
این دختر تمین راجه ها از هر طرف آمدند همکنان این بلده متهلا نام که مکان بودن منست التماس
کردند من این شرط مقرر کردم که هر که این بردارد و بکشد و زه کند دختر خود باو دهم هیچکس
از عهده این شرط بر نیامد آن راجها از غصه شهر مرا محصر کرده پامال کردن گرفتند
قضارا در این یکسال کامل همه بهلاک رسیدند و من ریاضت کرده دیوتا ها را برخود مهربان

सर्ग–५०

धनुष के विषय

प्रातःकाल होते ही विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को लेकर जनक के पास आये। राजा ने शास्त्र के अनुसार उनकी पूजा की और कहाः आपने अच्छा किया कि पधारे। कहिए मैं क्या करूँ आप राजा हैं और मैं आपकी प्रजा। विश्वामित्र ने उत्तर में कहाः दशरथ के यह दोनों पुत्र उस धनुष को जो आपके पास है देखना चाहते हैं। उसे दिखाइए उसके बाद जो आपके दिल में आएगा वह कीजियेगा। राजा जनक ने हाथ जोड़कर विनती की कि यह धनुष मेरे घर में किस प्रकार आया आप उसकी कहानी सुन लीजिए। हमारे कुल में राजा निमि के पुत्र देवरात नामक एक राजा हुए है उन्हें न्यास (धरोहर) के रूप में यह धनुष दिया गया है। इसी धनुष से महादेव ने राजा दक्ष को नष्ट करने के बाद समस्त देवताओं को पराजित किया और कहा चूँकि तुम मेरा हिस्सा नहीं दे रहे हो इसलिए मैं तुम्हारे सारे अंग इसी धनुष से नष्ट करूँगा। इस भय से देवताओं ने महादेव को नमस्कार करके अपने प्रति दयालु कर लिया। दूसरी बात यह है कि पृथ्वी से उत्पन्न हुई और समस्त गुणों से परिपूर्ण मेरी पुत्री का नाम सीता है, उसका कारण यह है कि हिन्दी में सीता कलबा को कहते हैं और उससे जो उत्पन्न होगी वह सीता होगी। मेरी इस पुत्री की इच्छा लेकर चारों ओर से राजा लोग आए। सबने इसी मिथला शहर में जो मेरे रहने का स्थान है डेरा डाल रखा है। मैंने यह शर्त रखी है कि जो उसे उठा ले। उसे खीचे चिल्ले पर चढ़ायेगा, मैं अपनी पुत्री उसे ही दूँगा। किसी ने यह शर्त पूरी नहीं कीं वह सारे राजा क्रोध के कारण मेरे शहर का घेराव करके नष्ट करने लगे। भाग्य की बात यह है कि एक वर्ष के भीतर सब के सब परलोक सिधार गये और मैंने तपस्या करके देवताओं को प्रसन्न कर लिया।

نمودم آنها مرا لشکر چترنگ یعنی مجموعه فیل و رتهه و اسپ و پیاده بکومک دادند چنانچه
بعضی که مانده از خوف من گریختند اگر این کمان را رامچندر بکشد من سیتا را باو میدهم
و بکار و خوبی گویا شنکهه یعنی خرمهره بشیر انداخته آمد بشوامتر گفت باری آن کمان را برامچندر
بنمائید چنانچه راجه جنک بمردم گفت که آن کمان از درام و لچهمن بیارید از حکم جنک کسان رفتند
و پانصد کس آن کمان برداشته آوردند بی زه مانند حلقه راجه جنک دست بسته به بشوامتر
عرض کرد که این کمان است و سرکن و اسر و کندهرب و جچهه و کنر بنی آدم هیچکس زه کردن آن طاقت نداد
و آدمی خود چه وجود دارد بشوامتر گفته جنک را شنیده برامچندر گفت این کمان را بکش رامچندر
قبول کرده بطریق بازیچه آن را در دست گرفت و بحضور همگنان زه کرد و بکشید چنانکه از میان بشکست
آواز خوفناک از آن برآمد و زمین بلرزید گویا کوهی دریده شد همه مردم بیهوش گشته افتادند
سوای چهار کس بشوامتر و راجه جنک و رامچندر و لچهمن چون مردم بهوش آمدند جنک گفت
من قبل ازین شنیده بودم رامچند. ولد دشرتهه عجایب کار کند که در خاطر کسی نگذرد و سیتا
رامچندر را شوهر خود یافته در نسل و قبیله باکیرت و بزرگی و شهرت خواهد آورد حالا پرتگیای
من درست شد سیتا را به رام و از استصواب شما زود کارگذاران من باجودهیا
بروند و ماجرا را براجه دشرتهه بگویند بشوامتر گفت همچنان باید کرد بعده کارگذاری را باجودهیا فرستاد
در اینجا صورت دهنک یعنی کمان و رامچندر و لچهمن و بشوامتر و راجه جنک که از بانک

شکستن

अब सबने मुझे चतुरंग सेना अर्थात् हाथी रथ घोड़े और पैदल सैनिक दिये अतः कुछ जो अभी शेष थे वह मेरे भय से भाग गये यदि रामचन्द्र इस धनुष पर तीर चढ़ा लेंगे तो मैं सीता उन्हीं को दे दूँगा और आदर व सम्मान के साथ खरमहरह दूध में डालकर आया। विश्वामित्र ने कहा वह धनुष रामचन्द्र को दिखाइये। अतः राजा जनक ने लोगों से कहा कि वह धनुष राम और लक्ष्मण के लिये निकाल लाओ। जनक के आदेश से लोग गये और पाँच सौ व्यक्ति वह धनुष उठाकर लाए। राजा जनक ने हाथ जोड़कर विश्वामित्र से अनुरोध किया कि यह धनुष है और समस्त, असुर गन्धर्व राक्षस और वनमानुष आदि किसी में इसको चिल्ले पर चढ़ाने की शक्ति नहीं है और मनुष्य का तो क्या वर्णन?विश्वामित्र ने जनक की बात सुनकर रामचन्द्र से कहा यह कमान खींचो रामचन्द्र ने इसे स्वीकार करते हुए खेल की भाँति उसे मुट्ठी में लिया और सबके सम्मुख चिल्ला चढ़ाकर कमान इस प्रकार खींची कि कमान बीच से टूट गयी और इससे एक भयानक ध्वनि निकली। पृथ्वी काँप गयी मानो कोई पहाड़ फट गया हो सारे व्यक्ति मूर्छित होकर गिर पड़े चार लोगों को छोड़कर विश्वामित्र, राजा जनक, रामचन्द्र और लक्ष्मण। जब लोगों की मूर्छा टूटी तो जनक ने कहा मैंने इससे पूर्व सुना था कि दशरथ के पुत्र राम ऐसे आश्चर्यजनक कार्य कर देते हैं जो किसी की कल्पना में भी नहीं होते। सीता ने रामचन्द्र के रूप में अपना पति पा लिया और यह भागीरथ के वंश में सम्मान व प्रसिद्धि लायेगी अब जाकर मेरी कल्पना साकार हुई आप आशीर्वाद के साथ सीता को राम के साथ ले जाइये। मेरे सेवक अयोध्या जाकर राजा दशरथ से सारा विवरण बतायेंगे। विश्वामित्र ने कहा कि ऐसा ही करना चाहिए उसके पश्चात् एक सेवक को अयोध्या भेजा

نمودم آنها مرا لشکر چترنگ یعنی مجموعه فیل و رتهه و اسپ و پیاده بکومک دادند چنانچه
بعضی که مانده از خوف من گریختند اگر این کمان را رامچندر بکشد من سیتا را باو میدهم
و بکار و خوبی گویا شنکهه یعنی خرمهره بشیر انداخته آمد بشوامتر گفت باری آن کمان را برامچندر
بنمائید چنانچه راجه جنک بمردم گفت که آن کمان را نزد رام و لچهمن بیارید از حکم جنک کسان رفتند
و پانصد کس آن کمان برداشته آوردند بی زه مانند حلقهٔ راجه جنک دست بسته به بشوامتر
عرض کرد که این کمانست و نرکن و اسر و کندهرپ و جچهه و کنر هیچکس زه کردن آن طاقت نداد
و آدمی خود چه وجود دارد بشوامتر گفتهٔ جنک را شنیده برامچندر گفت این کمان را بکش رامچندر
قبول کرده بطریق بازیچه آنرا در دست گرفت و بحضور همکنان زه کرد و بکشید چنانکه از میان بشکست
آواز خوفناک ازان برآمد و زمین بلرزید گویا کوهی دریده شد همه مردم بیهوش گشته افتادند
سوای چهار کس بشوامتر و راجه جنک و رامچندر و لچهمن چون مردم بهوش آمدند جنک گفت
من قبل ازین شنیده بودم رامچندر ولد دشرتهه عجایب کار کند که در خاطر کسی نگذرد و سیتا
رامچندر را شوهر خود یافته در نسل و قبیله با کیرت و بزرگی و شهرت خواهد آورد حالا پرتگیای
من درست شد سیتا را به رام واز استصواب شما زود کارگذاران من باجودهیا فرستاد
بروند و ماجرا را براجه دشرتهه بگویند بشوامتر گفت همچنان باید کرد بعده کارگذاری را باجودهیا
در اینجا صورت دهنک یعنی کمان و رامچندر و لچهمن و بشوامتر و راجه جنک که ازبانک

شکستن

अब सबने मुझे चतुरंग सेना अर्थात् हाथी रथ घोड़े और पैदल सैनिक दिये अतः कुछ जो अभी शेष थे वह मेरे भय से भाग गये यदि रामचन्द्र इस धनुष पर तीर चढ़ा लेंगे तो मैं सीता उन्हीं को दे दूँगा और आदर व सम्मान के साथ खरमहरह दूध में डालकर आया। विश्वामित्र ने कहा वह धनुष रामचन्द्र को दिखाइये। अतः राजा जनक ने लोगों से कहा कि वह धनुष राम और लक्ष्मण के लिये निकाल लाओ। जनक के आदेश से लोग गये और पाँच सौ व्यक्ति वह धनुष उठाकर लाए। राजा जनक ने हाथ जोड़कर विश्वामित्र से अनुरोध किया कि यह धनुष है और समस्त, असुर गन्धर्व राक्षस और वनमानुष आदि किसी में इसको चिल्ले पर चढ़ाने की शक्ति नहीं है और मनुष्य का तो क्या वर्णन?विश्वामित्र ने जनक की बात सुनकर रामचन्द्र से कहा यह कमान खींचो रामचन्द्र ने इसे स्वीकार करते हुए खेल की भाँति उसे मुट्ठी में लिया और सबके सम्मुख चिल्ला चढ़ाकर कमान इस प्रकार खींची कि कमान बीच से टूट गयी और इससे एक भयानक ध्वनि निकली। पृथ्वी काँप. गयी मानो कोई पहाड़ फट गया हो सारे व्यक्ति मूर्छित होकर गिर पड़े चार लोगों को छोड़कर विश्वामित्र, राजा जनक, रामचन्द्र और लक्ष्मण। जब लोगों की मूर्छा टूटी तो जनक ने कहा मैंने इससे पूर्व सुना था कि दशरथ के पुत्र राम ऐसे आश्चर्यजनक कार्य कर देते हैं जो किसी की कल्पना में भी नहीं होते। सीता ने रामचन्द्र के रूप में अपना पति पा लिया और यह भागीरथ के वंश में सम्मान व प्रसिद्धि लायेगी अब जाकर मेरी कल्पना साकार हुई आप आशीर्वाद के साथ सीता को राम के साथ ले जाइये। मेरे सेवक अयोध्या जाकर राजा दशरथ से सारा विवरण बतायेंगे। विश्वामित्र ने कहा कि ऐसा ही करना चाहिए उसके पश्चात् एक सेवक को अयोध्या भेजा

شکستن کمان چوبداران و دیگران بیهوش شدند و چهار کس مسبوق الذکر بهوش ماندند

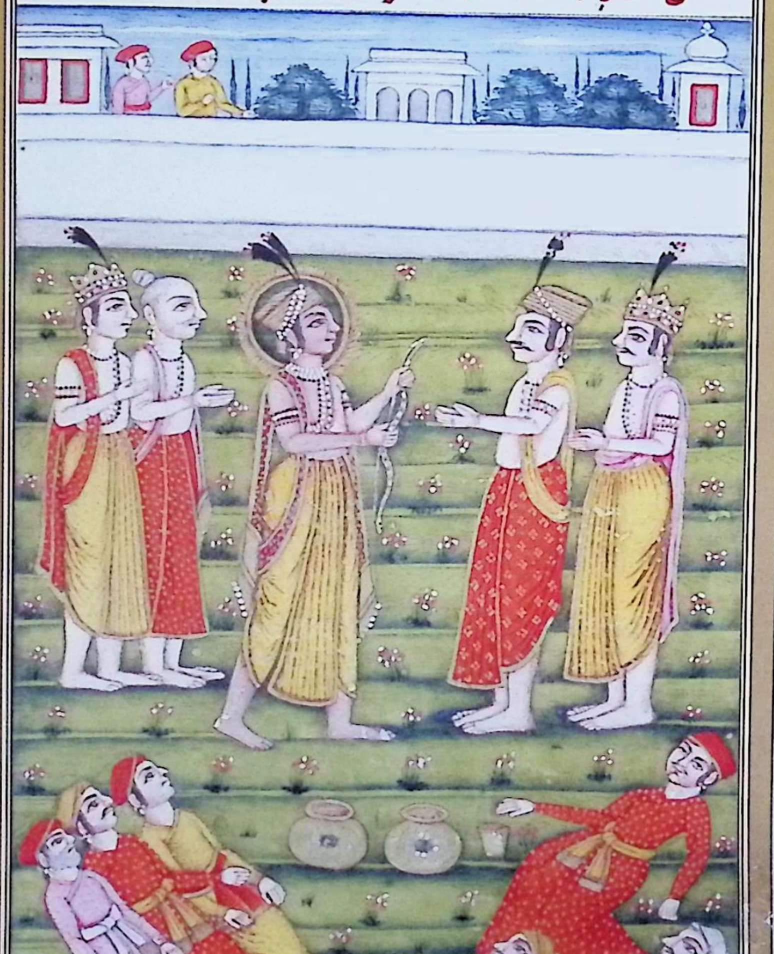

यहाँ धनुष, रामचन्द्र, लक्ष्मण, विश्वामित्र और राजा जनक के चित्र दिये जा रहे हैं।

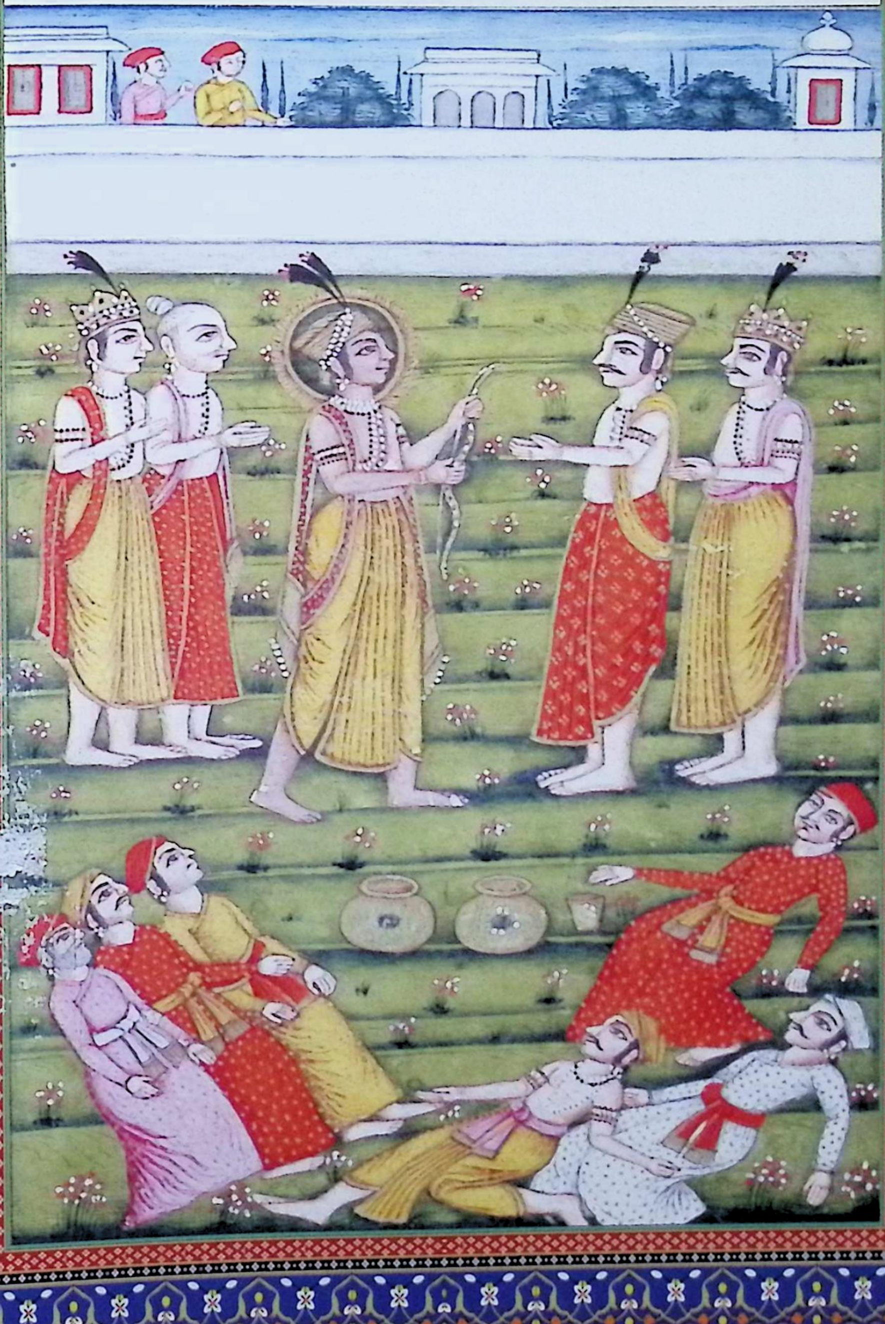

بازآمدن جاسوسان تیزرو سه شبانروز در راه منزل کرده با جودهیا رسیدند بعد عرض بموجب امر راجه ببارگاه رفتند و شترتهن را دیدند بر مرد مثل دیوتا نشسته بهرم در حراست ملک و محافظت رعیت پیوسته و بشست و غیره منتریان صاحب حکم دانای نزدیک نشسته چنانکه نزد اندر برسپت که پسر انگراست و غیره با همچنان رعیت پرور که ثانی اندر و غیره لوکپالان بود و جمیع جاسوسان و کارگذاران دست بسته عرض کردند که راجه جنک جگ میکند و با اوپادهیا و غیره و پروهت بار بار سلامتی مهاراجه میخواهد و باستصواب بشوامتر چنین گفته که پرتگیا بمن که برای دادن دختر بود پسر تو از عهده آن برآ یعنی آن کمان را بکشید و از میان بشکست و او را سیتا به بیرج شلکا رسید هم اینچنین لفظ انها را شنیده راجه از بهجت تمام با بشست و بام دیو و غیره منتریان گفت از سبب محافظت پسر کوشک یعنی بشوامتر پسر کوشلا با برادر خود در بدیه نگری هست و راجه بجرد دیدن او دختر خود را باو میدهد اگر مصلحت باشد ما آنجا برویم تا وقت نگذرد همگنان قبول کردند و قرار یافت که صبح البته باید رفت کسان راجه جنک هم با راحت و فرحت تمام شب همانجا ماندند و در اینجا صورت راجه و شترتهن ریش سفید بطور راجه با بر تخت نشسته و چپ و راست بشست و بام دیو نشسته و یک حد مکا

باجوری

सर्ग-५२

जासूसों का आगमन

तीव्र गति वाले दूत तीन दिन व रात में अपनी यात्रा पूर्ण करते हुए अयोध्या पहुँचे प्रार्थना एवं अभिवादन के पश्चात् राजा के आदेश के अनुसार दरबार में गये। दशरथ को देखा जो बूढ़े व्यक्ति किसी देवता की भाँति बैठे हुए थे और देश व जनता की रक्षा में व्यस्त थे। वशिष्ठ आदि जैसे ध्यानी ज्ञानी मंत्री उसके निकट बैठे हुए थे जैसे कि इन्द्र के निकट बृहस्पति जो अंगिरा के पुत्र हैं। इसी प्रकार प्रजापालक जो अतीन्द्रिय है, संसार का पालन करने वाले हैं। समस्त दूत और सेवकों ने करबद्ध निवेदन किया कि राजा जनक यज्ञ कर रहे हैं और उनके साथ उपाध्याय आदि और पुरोहित बार-बार महाराजा की कुशल के आकांक्षी हैं। विश्वामित्र के परामर्श से यह कहा है कि अपनी पुत्री के विवाह के लिए मेरी जो इच्छा थी उसे आपके पुत्र ने पूरा किया है अर्थात् वह कमान खींच ली और बीच से तोड़ दी और उसे मैं सीता को उसकी शक्ति के बदले में देता हूँ। उनकी यह बात सुनकर राजा ने बड़ी प्रसन्नता के साथ वशिष्ठ और वामदेव आदि मंत्रियों से कहा कि कौशिक अर्थात् विश्वामित्र की रक्षा के कारण कौशल्या के पुत्र अपने भ्राता के साथ विदेह नगरी में है और राजा उसे देखते ही अपनी पुत्री दे देंगे। अगर उपयुक्त हो तो हम वहाँ जाए ताकि समय निकल न जाए। सबने यह बात स्वीकार कर ली और निश्चित हुआ कि प्रातः चलना चाहिए। राजा जनक के लोग भी सुविधा एवं प्रसन्नता के साथ रात को वहीं ठहरे।

باچوري عقب راجه وصورت جاسوسان که روبروایستاده عرض میکنند

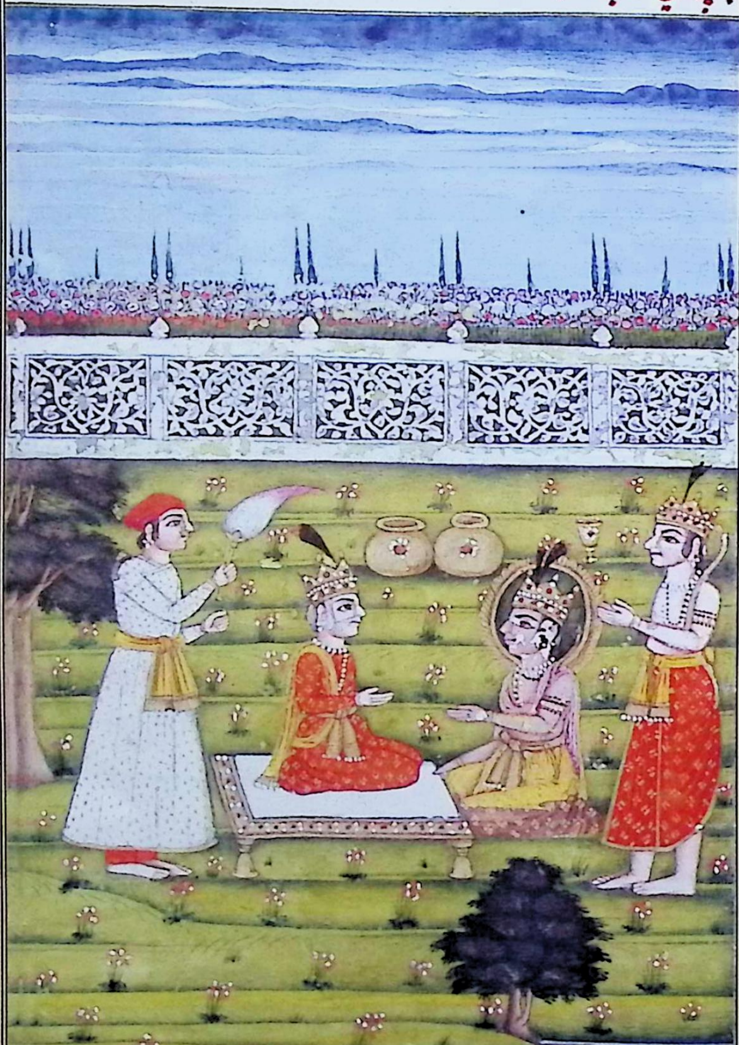

यहाँ राजा दशरथ के रूप में सफेद दाढ़ी वाले राजाओं की भाँति राजगद्दी पर बैठे और उनके दाएं एवं बायें वशिष्ठ, बामदेव और सेवक बैठे।

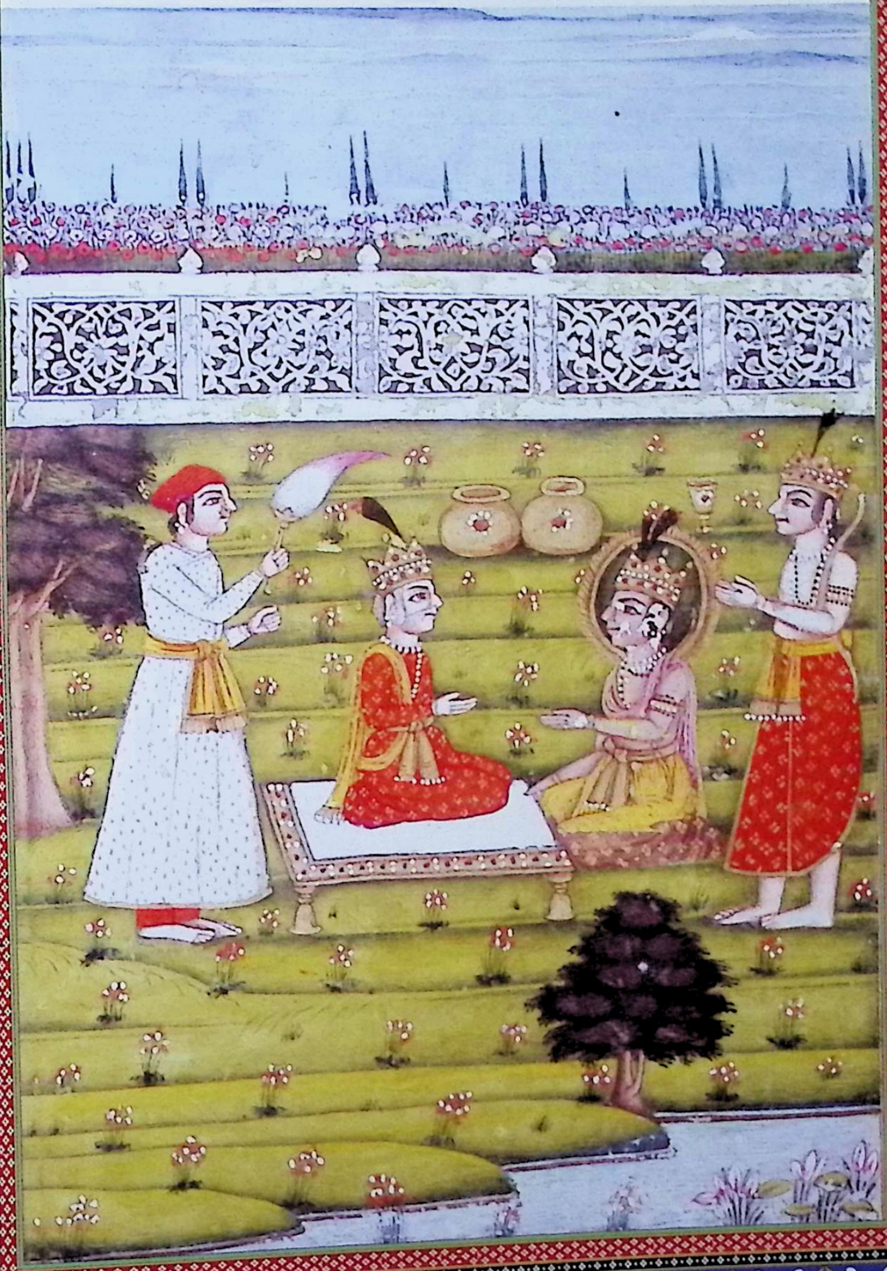

سرگ ۵۳ روان شدن راجه چون شب بگذشت راجه دشرتهه با آوپادهیا و اتربا
بخوشي تمام سومنتر را گفت همه اهل خزانه با خزانه و اقسام اقسام ارقام جواهر پیش پیش من
نام وزیر
بروند و با افیال و فروس و رتهه ها و پیادگان همه چترنگ لشکر خیمه بیرون زدند و
بشست و بام دیو و جاوالي و کاشپ و مارکندي که عمر دراز دارد و کاتیاین من
وغیره پیشوا هر اول بروند و رتهه مراز و طیار کنید و کارگذاران زود رفته
خبر کنند چنانچه بموجب حکم راجه لشکر بر آمد و راجه بارکهان کوچ کرد در چهار شبانروز
بشهر بدیه رسید از رسیدن راجه دشرتهه جنک را خوشوقتی تمام حاصل آمد و راجه دشرتهه را
دیده گفت خوب کردید که تشریف آوردید هر دو پسران شما بقوت خود مشتهر گشتند
و بشست وغیره برهمنا زادیدم مرا بزرگی حاصل شد صبح گاه بعد فراغ جگ بیواه کرده
میشود راجه دشرتهه در جواب گفت صاحب بخشنده هستند و ما گیرنده آنچه میگوئید خواهیم نمود
بعد از آن همه منیشران با یکدیگر ملاقات کرده گوناگون افسانه و گفتارها به بیان آوردند
و راجه دشرتهه بشوامتر را دیده سر فرود آورده نمسکار کرد و گفت از مهربانی تو شریف گشتم
بشوامتر در جواب گفت ای راجه از نیک کرداری خود شریف تر هستی و این پسر تو رامچندر
که بمثال جهانست و این رامچندر و لچهمن هر دو پسر تو بسلامت بتو رسیدند راجه هر دو
پسر را پسر و چشم بوسید و بخوشی تمام آنشب بگذرانیدند و راجه جنک شب را بکار جگ آخر کرد

ومش

सर्ग-५३

राजा का प्रस्थान

जब रात बीत गई तो राजा दशरथ ने उपाध्याय और सम्बन्धियों सहित सुमन्त्र से बड़ी प्रसन्नता के साथ कहा कि सारे कोष वाले (खजांची) कोष के साथ और दूसरे प्रकार के जवाहरातों के साथ मेरे आगे चलें। हाथियों, घोड़ों, रथों के साथ पैदल और पूरी सेना बाहर खेमा लगाये। वशिष्ठ, वामदेव, जाबालि कश्यप मार्कण्डेय जो लम्बी आयु रखते हैं और कात्यायन आदि हरावल के रूप में जाए। मेरा रथ शीघ्र तैयार करो और कार्यकर्ता शीघ्र जाकर सूचना दे। अतः राजा के आदेशानुसार सेना तैयार हुई और राजा ने ऋषियों के साथ प्रस्थान किया। चार दिन बाद वे विदेह शहर पहुँचे। राजा दशरथ के पहुँचने से जनक को बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होंने राजा दशरथ को देखकर कहा आपने अच्छा किया कि आ गये। आपके दोनों पुत्र शक्ति में प्रसिद्ध हो गये हैं। मैंने वशिष्ठ आदि ब्राह्मणों को भी देख लिया मुझे प्रसन्नता प्राप्त हुई। प्रातः यज्ञ की समाप्ति पर विवाह की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी जायेगी। राजा दशरथ ने उत्तर में कहा कि आप देने वाले हैं और हम लेने वाले हैं जो आप कहेंगे मैं वह करूँगा। उसके बाद समस्त मुनीवरों ने एक दूसरे से भेंट की और भाँति-भाँति की कहानी और कथा का वर्णन किया। राजा दशरथ ने विश्वामित्र को देखकर सर झुकाकर नमस्कार किया और कहा मैं आपकी कृपा से और अधिक सम्मानित हो गया। विश्वामित्र ने उत्तर में कहा कि राजा साहब ! आप अपने अच्छे कार्यों के कारण सम्मानित हैं और आपके यह पुत्र रामचन्द्र जो सारे संसार में उदाहरणीय हैं। यह रामचन्द्र और लक्ष्मण दोनों पुत्र सकुशल आप तक पहुँच गये। राजा ने दोनों के सर और आँखों का चुम्बन किया और वह रात सबने बड़ी प्रसन्नता से बिताई। राजा जनक ने रात भर यज्ञ किया।

وشل زام داماد یافته در دل خوشحال گشت صبحی راجه جنک شتانند پروهت را گفت
که برادر من کوشدهج نام هست دیدن او را آرزو دارم از حکم و فرموده پروهت تیز روان
رفتند و کوشدهج را آوردند راجه جنک برادر را دید و آو شتانند پروهت را و راجه را نمسکار
کرد و بر مسند راجه نزدیک بنشست چون هر دو بفراغت نشستند راجه جنک سدامان نام
منتری را فرستاد تا راجه دشرتهه را زود بیارد او آمده در اینجا عرض نمود که راجه جنک
خواهش دیدار دارد از استماع گفتار او راجه دشرتهه با رکهان و برادران وغیره نزدیک
راجه جنک آمد و بعد نشستن راجه با او پادهیا وغیره گوینده چنین گفت که این روشن
ونها هر هست که راجه اولا داچهواکو هست چنانچه بشست و بشوامتر وغیره رکهان به بیان
می آرند بعد خموش شدن او بشست بهگوان نسب نامه رامچندر را با راجه بدیه وپرد هست او
جنان بمعرض تبیان آورد که از برهما که همیشه و بیکم و کاست هست مریچ پیدا شد و از و
کشپ و از و دیوسوت یعنی آفتاب که عزیز همگنانست و از و منو و از و اچهواکو و از
اول راج اجودهیا کرد و از و بکچهی و از و بکچهی پیدا شد و از و بان و از و آرن و از و
پرتهو و از و ترشنکو و از و دهوندهومار و از و جوبنشو و از و ماندهاتا و از و سوسندهی
و از و اوزده سندهی و از و بهرت و از و اسیت او را دشمنان بسیار پیدا گشتند
مثل هیهی و تالجنگ و ششبند و ازین سبب با هر دو عورت خود بر پشت کوه همالچل

और राम जैसा दामाद पाकर मन में बहुत प्रसन्न हुए। अगली सुबह राजा जनक ने शतानन्दपुरोहित और राजा कुशध्वज को नमस्कार किया तथा सुदामन के निकट बैठे। जब दोनों आराम से बैठ गये तो राजा जनक ने सुदामन नामक मंत्री को भेजा कि वह राजा दशरथ को शीघ्र लेकर आए। उसने वहाँ जाकर निवेदन किया कि राजा जनक आपसे मिलने के इच्छुक हैं। उसकी बात सुनकर राजा दशरथ ऋषियों और भाइयों आदि के साथ राजा जनक के पास गये। राजा के बैठने के बाद उपाध्याय आदि से बातें करते हुए जनक ने कहा कि यह बात उचित है कि राजा इक्ष्वाकु की सन्तान हैं जैसा कि वशिष्ठ और विश्वामित्र आदि ऋषि वर्णन करते हैं। उनके शान्त होने के पश्चात वशिष्ठ भगवान ने रामचन्द्र की वंशावली विद्या को राजा और उनके पुरोहित के समक्ष इस प्रकार वर्णन किया-ब्रह्मा से, जो सदा से हैं और सदा रहेंगे मरीचि उत्पन्न हुए, उनसे कश्यप, उनसे देवसुत अर्थात् सूर्य जो सबको प्रिय हैं और इन्होंने मनु और उनसे इक्ष्वाकु। उन्होंने सबसे पहले अयोध्या पर राज्य किया और उनसे कुक्षि उत्पन्न हुए इनसे बाण और उससे अनरण्य और उनसे त्रिशंकु, उनसे धुन्धुमार और उससे युवनाश्व और उससे मान्धाता और उससे सुसन्धि और उससे ध्रुवसन्धि और उनसे भरत और उससे असित, असित के तीन शत्रु हो गये जैसे हैहय और तालजंघ और शशबिन्दु। वह इसी कारण से अपनी दोनों पत्नियों को पीठ पर लादकर हिमांचल पर्वत पर चला गया।

رفت قضارا هر دو زن او حمل داشتند یکی از آن برای افتادن حمل دویمی را که
کالندی نام داشت زهر داد و آنجا چون رکهه اقامت داشت آن عورت باو رجوع
آورد او گفت ترا پسری خواهد شد باز هر چنانچه او سگر نام پسر زائید
و وجه تسمیه چنانست که گر در هندوی زهر را خوانند و سین یعنی سکار
بمعنی همراه است چون همراه زهر بر آمد سگر نام شد او در انسمنج پسر پیدا آمد
یعنی کاهل و بیکار ناقص
و از و انشومان و از و دلیپ و از و بهگیرتهه و از و کوکستهه و از و رگهو
و از و کلماکهپاد و از و کهرنگ و از و سوذرسن و از و اگن برن و از و
یعنی پای سیاه
سنکهرگن و از و منی و از و پرسوسستو و از و انبریکهه و از و نهوکهه و از و
یعنی شتاب رونده همیشه کامل یعنی کسیکه زور او چون نهنگ معلوم باشد
ججاتی و از و نابهاک و از و آج و از و این راجه دشرتهه که پسران او رام و
یعنی آنکه بکر را خوب میداند همیشه فرش نصیب باشد آنکه او را رنج نباشد
هستند و آفزاینده نسب اند دختر خود را برام بده

گکبته
یعنی کوه زاده

भाग्य की बात है कि दोनों स्त्रियों के गर्भ था उनमें से एक ने गर्भपात के लिए दूसरी को जिसका नाम कालिन्दी था विष दे दिया। चूँकि वहाँ च्यवन ऋषि ठहरे हुए थे, इस स्त्री ने उनसे सम्पर्क किया। उन्होंने कहा कि तेरे एक विष सहित पुत्र उत्पन्न होगा। अतः उसके सगर नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ और उसके नामकरण का कारण यह है कि 'गर' विष को कहते हैं और सीन अर्थात् सकार साथ के अर्थ में है चूँकि वह विष के साथ उत्पन्न हुए इसलिए उसका नाम सगर हो गया। उनके असमन्ज अर्थात् बबातिन कामिल और देखने में अयोग्य पुत्र उत्पन्न हुआ। उससे अंशुमान, दिलीप उससे भगीरथ उससे ककुत्स्थ, उससे रघु, उससे कल्माष पाद, उससे शंखण और उससे सुदर्शन, उससे अग्निवर्ण, उससे शीघ्रग, उससे मरु, उससे प्रशुश्रुत, उससे अम्बरीष, उससे नहुष, उससे ययाति, उससे नाभाग, उससे अज और उससे यह राजा दशरथ कि जिनके पुत्र राम व लक्ष्मण है और अपने वंश में वृद्धि करने वाले हैं आप अपनी पुत्री राम को दे दें।

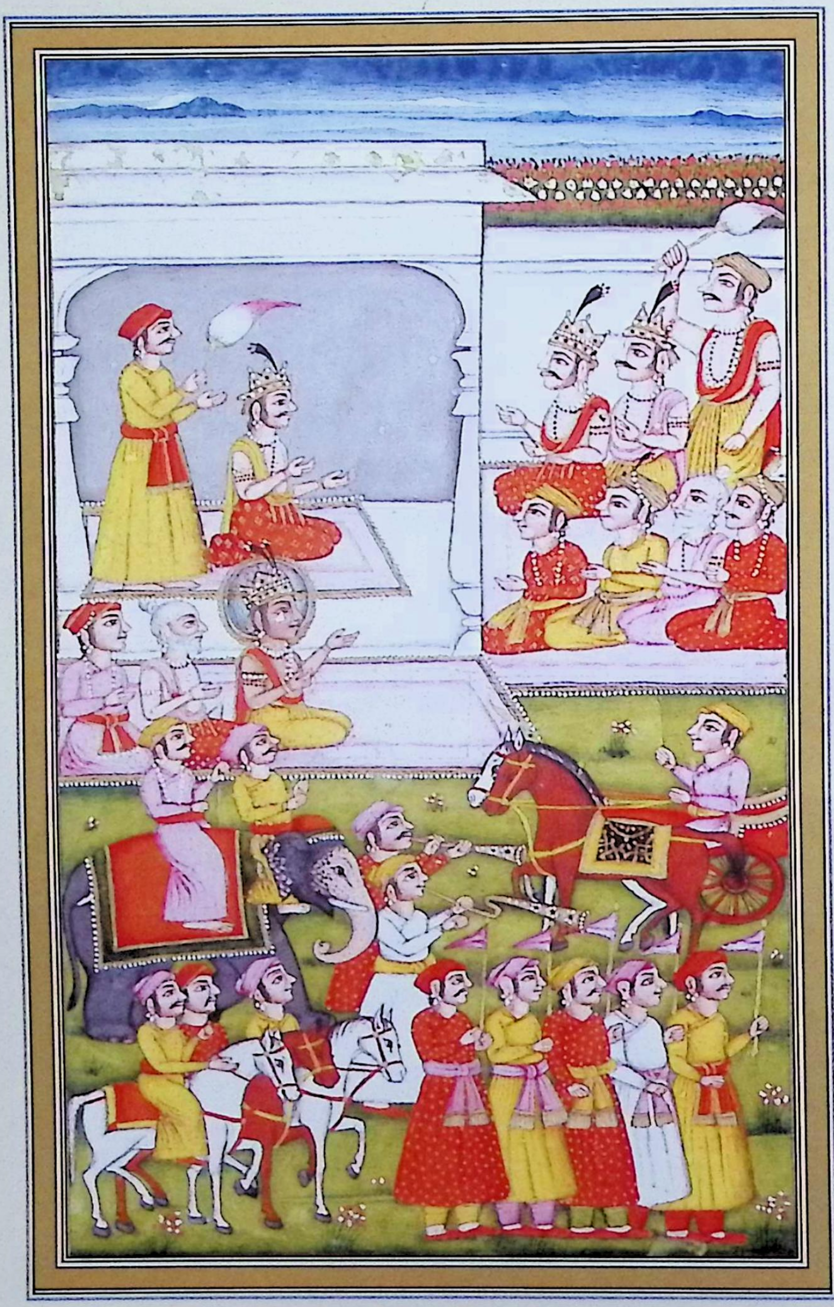

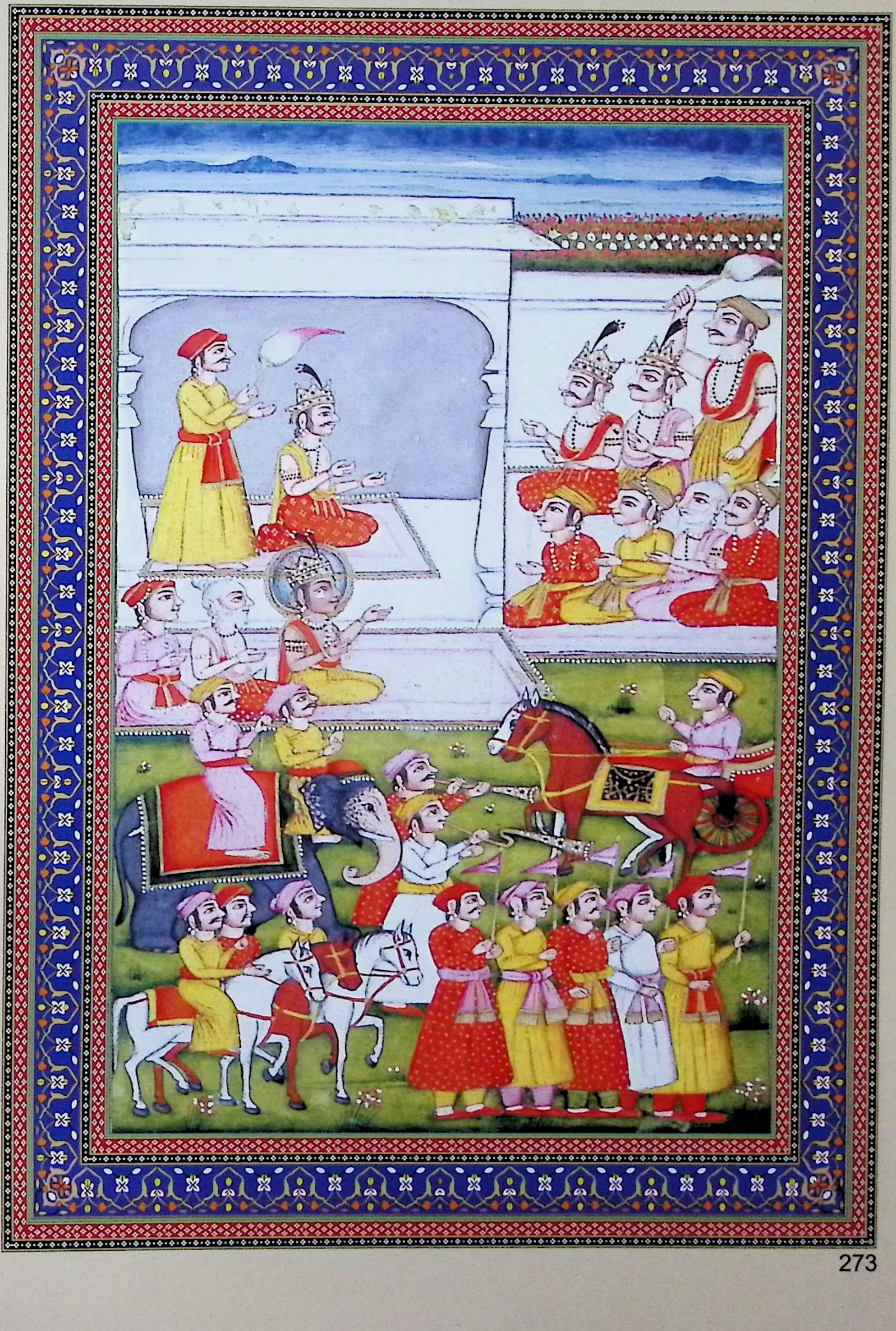

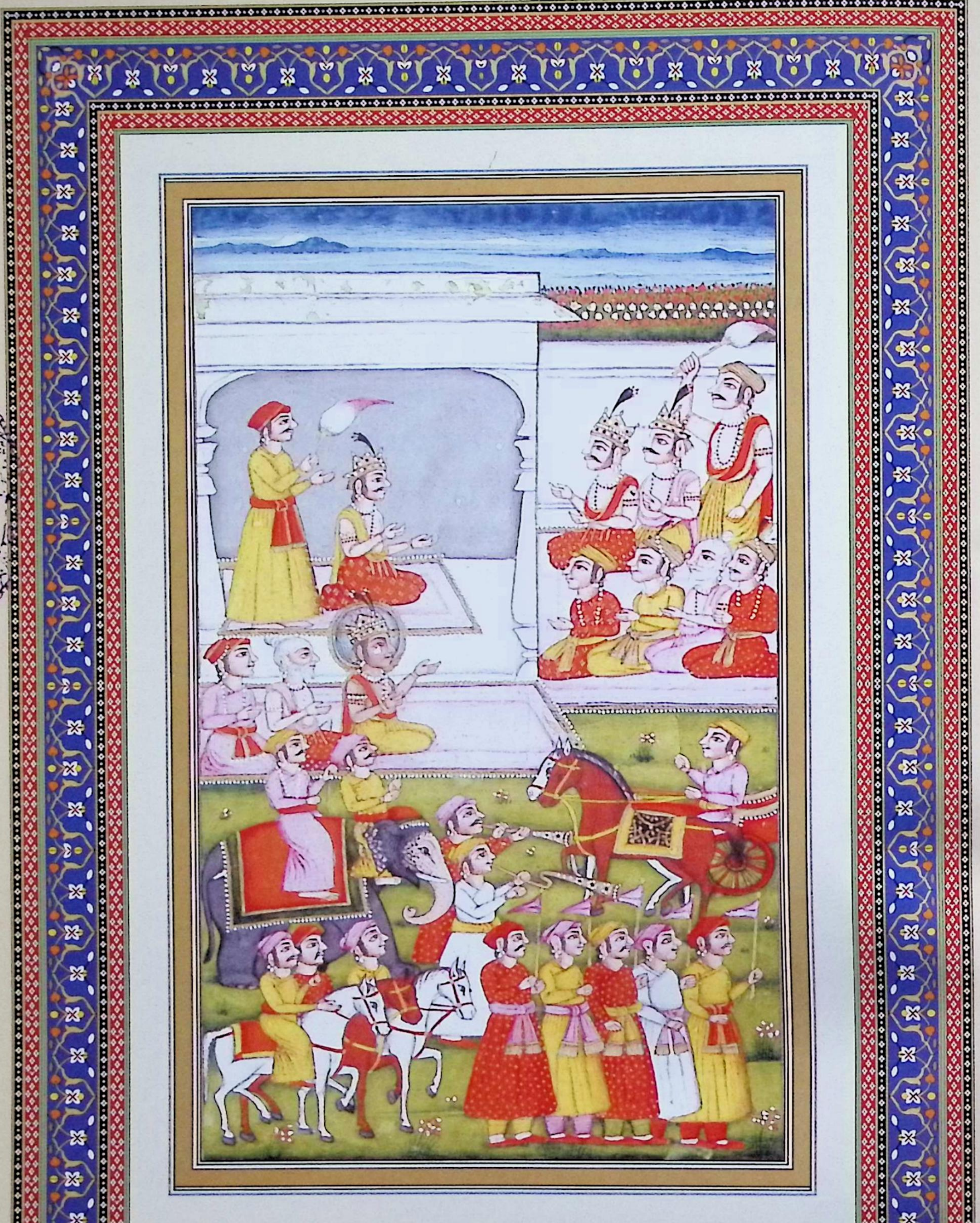

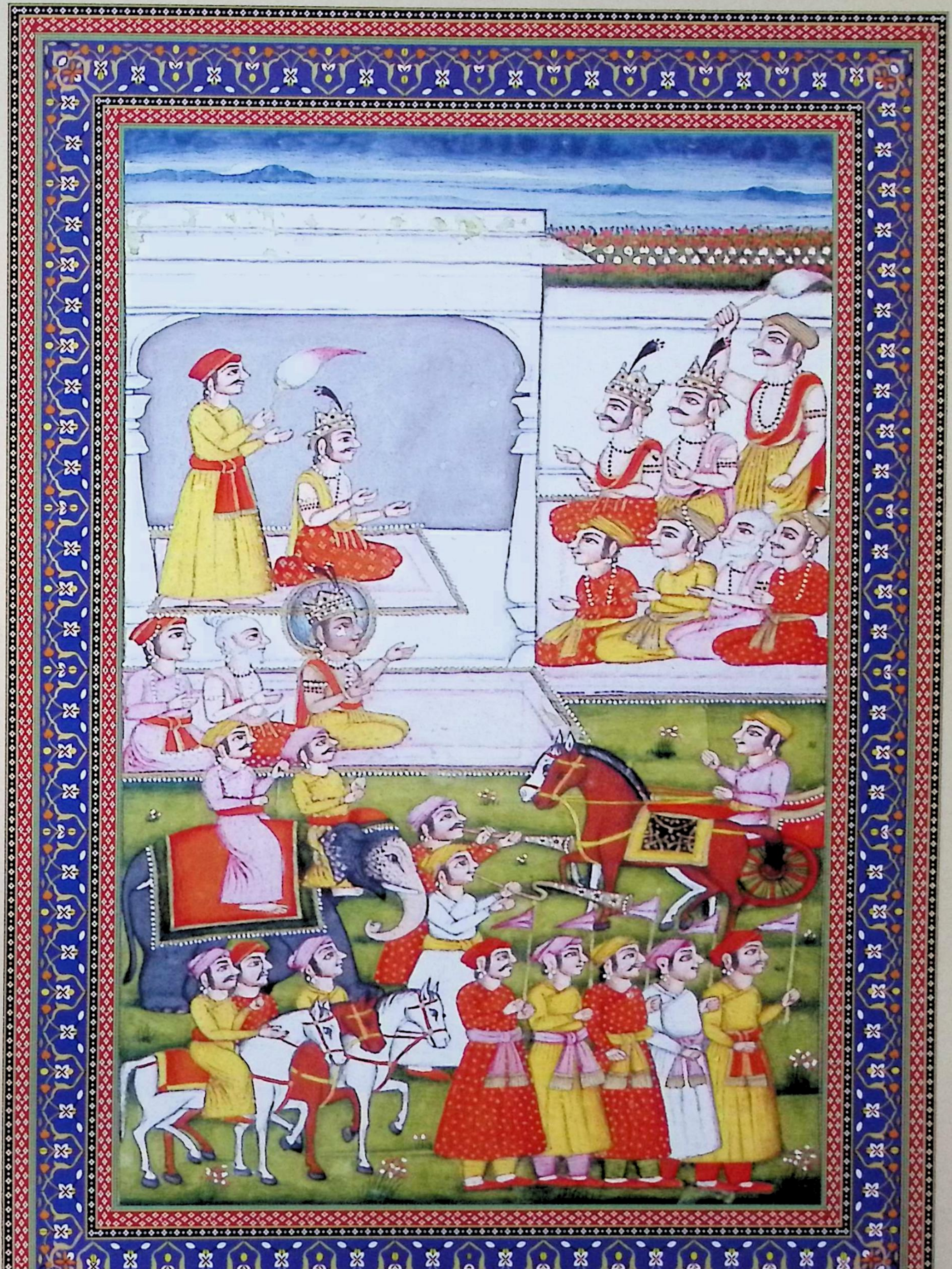

سرکب بواچ چون این بگفت راجه جنک دست بسته عرض کرد نسب مرا هم شنیدن را
سزاواری راجه بود در هرسه لوک از کردار خود مشهور نیمی نام او را متهی نام پسر تولد شد
و از و جنک و از و اودهی وسو و از و مهابیرج و از و دهرت مان و از و سودهرت
و از و دهرشت کیت و از و هرجسو و از و مرونت و از و پرتیکنک و از و کیرت رتهه و از و
مانند باد تیز رو
دیومیدهه و از و بیبوده و از و مهاندهک و از و کیرت راج و از و مهاروما و از و
سرانید دیوتا — دانشمند کلان — بخشنده روزی کلان — موی کلان بدن
هرسنورما و از و سوزن روما او را دو پسر شد یکی که کلانم و خورد از من کوشدهج پدر مرا
موی خورد بر بدن — ببخشی زیبا موی بدن
راج داده و برادر را پیش من گذاشته بصحرا رفت بعد مردن پدرم برادر را عزیز داشته
از احوال او خبردار بودم وقتی سودهنو نام راجه این منهلا نام شهر را انحصار نمود
کمان بستر داشت
آو نزد من سبوندهو نام ایلچی فرستاد که مرا جواهر و زر بطریق خراج بده چون من
ابا کردم با او جنک واقع شد من سودهنو را در جنک هلاک ساختم و بجای او کوشدهج برادر را
راج دادم ای راجه دشرتهه ترا از خواهش خاطر دو کنیه میدهم یکی سیتا برام دوم
اورملا بلچهمن از هر دو گودان یعنی دادن گاو ماده بعمل آرو کار بیواه و کار بیاهم و من
از امروز سیوم روز که پهلکنی نچهتر است بیواه میکنم اینقدر گفتار جنک را شنیده بسوامتر
گفت و بشست نیز حامی شد که نسبت اچواکو و نسب بدیه هر دو با هم هم جنب هستند
بہ پہلو
نسبت سیتا و اورملا برام و لچهمن نیکو است این برادر تو که کوشدهج است این را دو دختر

هستند

सर्ग-५४

वशिष्ठ ने जब यह कहा तो राजा जनक ने हाथ जोड़कर निवेदन किया कि मेरी वंशावली भी सुनने योग्य है। एक राजा थे, तीनों लोकों में अपने अच्छे चरित्र के कारण प्रसिद्ध थे, उनका नाम निमि था। उनके मिथि नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ और उससे जनक, उससे उदावसु, उससे नन्दिवर्धन, उनसे सुकेतु, उनसे देवरात, उससे बृहद्रथ और उससे महावीर, उससे सुधृति और उससे धृष्टकेतु और उससे हर्यश्व और उससे मरू और उससे प्रतीन्धक और उससे कीर्तिरथ, उससे देवमीढ़, उससे विबुध, उससे महीध्रक, उससे कीर्तिरात उससे महारोमा, उससे स्वर्णरोमा, उससे ह्रस्वरोमा उत्पन्न हुए। ह्रस्वरोमा के दो पुत्र हुए एक मैं जो बड़ा पुत्र हूँ और मुझसे छोटा कुशध्वज है। मेरे पिता मुझे राज देकर और मेरे भाई को मेरे पास छोड़कर वन को चले गये। पिता की मृत्यु के बाद भाई को प्रिय रखते हुए मैं सदैव उसके बारे में सचेत रहा। एक समय में सुधन्वा नामक राजा ने मिथला नामक इस नगर को घेर लिया उसने मेरे पास सुबन्धु नामक दूत भेजा कि मुझे तुम रत्न एवं धन सम्पत्ति हरजाने के रूप में दो। जब मैंने उसकी माँग अस्वीकार कर दी तो उसके साथ युद्ध हुआ और मैंने युद्ध में सुधन्वा को मार दिया । उसके स्थान पर अपने भाई कुशध्वज को राज्य दे दिया । राजा दशरथ ! मैं आपको अपनी प्रसन्नता से दो पुत्रियाँ देता हूँ एक सीता राम के लिए दूसरी उर्मिला लक्ष्मण के लिए। दोनों की ओर से गोदान अर्थात् गाय देने की परम्परा पूर्ण कीजिए और विवाह का प्रबन्ध पूर्ण कर लीजिए। मैं आज से तीसरे दिन जो फाल्गुनी नक्षत्र है, उसमें विवाह कर दूँगा। इतनी बात सुनकर दशरथ ने विश्वामित्र से कहा और विश्वामित्र ने भी उसका समर्थन किया कि इक्ष्वाकु और विदेह दोनों की वंशावली बराबर हैं। सीता और उर्मिला की सगाई राम और लक्ष्मण के साथ उपयुक्त है आपका यह भाई कुशध्वज उसके दो पुत्रियाँ हैं।

هستند آنها به بهرت و شترگهن که برادران رام اند نسبت کن گفته بشوامتر و بشست را
گوش کرده راجه جنک دست بسته گفت بسیار احسن فرمودید همچنان میکنیم همه دختران را
بیک روز در عقد نکاح هر چهار پسر راجه در آورند آخر روز بها لگنی که آنرا بهک دیوت ست
روز بیواه میکونید و بار دیگر بهردو من گفت که ما شاگرد شمائیم و لشکر و وزیر من تابع شما
باید که مرا گاه گاهی در یاد دارید و آین راجه دشرتهه راچنانچه اجودهیا همچنان تهین شهرست
هرجا خواهند اقامت فرمایند بعد از آن دشرتهه بمنزلگاه خود رفت و از پسران گودان
کنانید چهار صد هزار گاو ماده از چهار پسر دهانید چنانکه سرون همکنان بزر پوشانید
بابچه آنها و با ظروف روئین وغیره بهر یک و دیگر هم زر نقد برهمنان داد و با هر چهار پسر
مثل هر چهار لوک پال راجه ورنمود و همان روز که راجه گودان کنانید همان روز
جودها جت پسر راجه کیکیه نامون بهرت در آنجا رسید بعد استماع ماجرا سلامتی با یکدیگر جودها جت
[illegible]
گفت برای دیدن خواهرزاده ها باجودها آمده بودم آنجا شنیدم که برای بیواه رفته اند
رنو داز آنجا درینجا رسیدم راجه دشرتهه او را اعزاز و اکرام نموده شب آنجا بودند
درهنگام لگن راجه پسران را به پیرایه آراسته بشست را پیشوا کرده بمکان جگ رفت
بشست رفته براجه جنک گفت راجه دشرتهه انتظار بخشش دارد بیواه بکن راجه جنک گفت
اینخانه خانه دشرتهه است درخانه خود انتظار چیست و اینهمه راج از ایشان است

उनकी सगाई भरत और शत्रुघ्न से जो राम के भाई हैं विश्वामित्र और वशिष्ठ की बात सुनकर राजा जनक ने हाथ जोड़कर निवेदन किया कि इससे उचित और कुछ न होगा मैं ऐसा ही करूँगा। समस्त पुत्रियों का एक ही दिन राजा के चारों पुत्रों के साथ विवाह कर दिया जायेगा। अन्तिम दिन फाल्गुनी नक्षत्र है, जिसमें विवाह करना उत्तम कहते हैं। वशिष्ठ और विश्वामित्र से पुनः कहा कि हम आपके आभारी हैं, मेरी सेना और मेरे मन्त्री आपके अधीन हैं। यदा-कदा मुझे भी याद कर लिया कीजिए। राजा दशरथ की जैसी अयोध्या है, वैसा ही यह शहर है जहाँ चाहे निवास करें। उसके पश्चात् दशरथ अपने निवास पर गये और पुत्रों की ओर से गोदान किया और चार लाख गायें चारों लड़कों की ओर से दीं। इसी प्रकार सबको वस्त्र, आभूषण, बर्तन, आदि दिये और ब्राह्मणों को भी दक्षिणा दी और चारों पुत्रों के साथ राजा चारों लोकपाल की भाँति प्रकट हुए। इसी दिन जबकि राजा ने गोदान किया इसी दिन राजा कैकय के पुत्र और भरत के मामा युधाजित् वहाँ पहुँचे एक दूसरे का कुशल क्षेम पूछने के पश्चात् युधाजित् ने कहा- मैं अपने भांजों को देखने के लिए अयोध्या आया था वहाँ मैंने सुना आप सब विवाह के लिए गये हैं। शीघ्रता से वहाँ से यहाँ पहुँचा, राजा दशरथ ने उसका आदर व सत्कार किया। तीन रात वहाँ रहे। शुभ लगन देखकर राजा ने पुत्रों को कुशलता से सुसज्जित करके और विश्वामित्र को उनका अगुवा बनाकर जनक के महल पर गये। वशिष्ठ ने जाकर राजा जनक से कहा कि राजा दशरथ अनुमति की प्रतीक्षा कर रहे हैं विवाह कर दीजिए। राजा जनक ने कहा कि यह घर दशरथ का घर है अपने ही घर में प्रतीक्षा कैसी?यह सारा राज्य

هرچه خواهند بکنند در مکان بیدی آمده دختران مرا عقد بندند بعد جواب
سوال راجه دشرتهه بار کهیشران وغیره داخل مکان بیدی کردید رانخستین
برام گفت که ای شریف نژ مردم این سیتا پیرو تست دست این را بگیر
و بیواه کن و لچهمن با اورملا قرین شود و بهرت با مانڈوی و شترگهن با شرت
کیرتی گفته جنک را شنیده هرچهار پسران راجه اهلیه خودها را دست گرفته
گرد بیدی آتش کردیدند و گرد رکهیشران هم گشت کردند دران زمان از
آسمان بسیار گل بارید و خرمهره و نقارها را نواختند اپسرا
بر آسمان رقص آغاز نمودند و گندهربان سرود سرائیدند آن راجه با چهار پسر
اهلیه دار چنان نمودار گشت که ماه با آندر و جم و برن و کبیر خوش نماید
راجه بارش راجه حاکم مالک جل مالک دولت
در اینجا صورت بیدی که وقت بیواه ایستاده میکنند و در و صورت آتش که
و گرداو هرچهار پسر راجه دست اهلیه خود گرفته میگردند اول رام با سیتا و بعده لچهمن
با اورملا دست گرفته و بهرت با اهلیه خود و شترگهن همچنین یکطرف صورت راجه
دشرتهه با بششت وغیره رکهیشران و یکطرف راجه جنک و کوشدهج و شتانند
و بشوامتر و عقب راجها چوری برداران و سامانات بیواه ش

और शासन उन्हीं का है

जो चाहे करे, मण्डप में आकर मेरी पुत्रियों का विवाह कर दे। वार्ता के बाद राजा दशरथ महर्षियों आदि के साथ मण्डप में प्रविष्ट हुए। राजा ने पहले राम से कहा कि हे सज्जन पुरुष ! यह सीता तुम्हारी है उसका हाथ पकड़ो और विवाह करो और लक्ष्मण उर्मिला के साथ वैवाहिक सम्बन्ध बनाएं, शत्रुघ्न श्रुतिकीर्ति के साथ तथा भरत माण्डवी के साथ । जनक की बात सुनकर राजा के चारों पुत्रों ने अपनी पत्नियों का हाथ पकड़कर अग्नि की परिक्रमा की। उस समय ऊपर महल से फूल बरसाए गये खरमोहरें और दुन्दुभियाँ बजाई गयीं। अप्सराओं ने नाचना आरंभ किया और गाने गाये। वह राजा चारों पुत्र, पत्नियों सहित ऐसे प्रसन्न हुए जैसे वर्षा के राजा इन्द्र पृथ्वी के मालिक और धन के मालिक (कुबेर) को प्रसन्न किया। यहाँ विवाह के अवसर पर जो मण्डप खड़ा करते हैं और उसमें अग्नि जलाते हैं उसके चारों ओर राजा के चारों पुत्रों ने अपनी-अपनी पत्नियों के साथ चक्कर लगाये (परिक्रमा की) पहले राम ने सीता के साथ उसके बाद लक्ष्मण ने उर्मिला का हाथ पकड़कर, भरत ने अपनी पत्नी के साथ और इसी प्रकार शत्रुघन ने अपनी पत्नी के साथ परिक्रमा की।

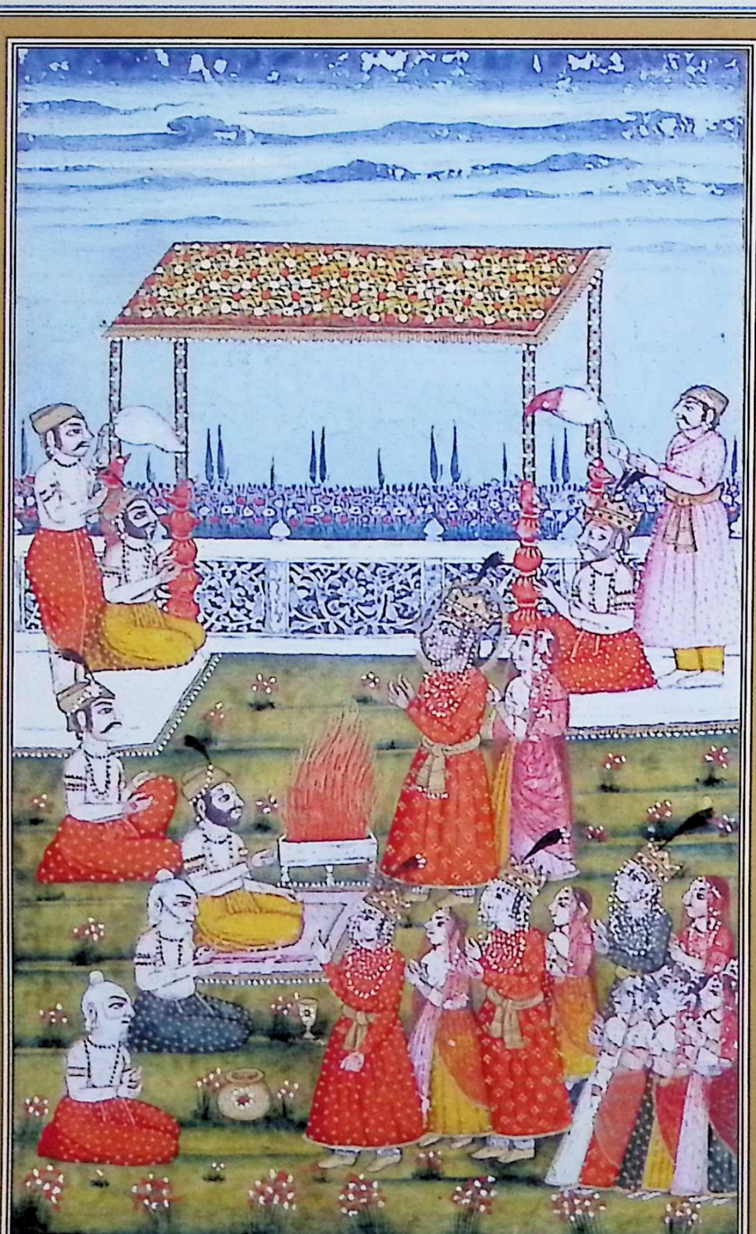

चित्र में एक ओर राजा दशरथ वशिष्ठ आदि महर्षियों के साथ और एक तरफ राजा जनक, कुशध्वज, शतानन्द और विश्वामित्र दिखाई दे रहे हैं उनके पीछे भाईयों की जोड़ी और विवाह की सामग्री लिए दूसरे लोग हैं।

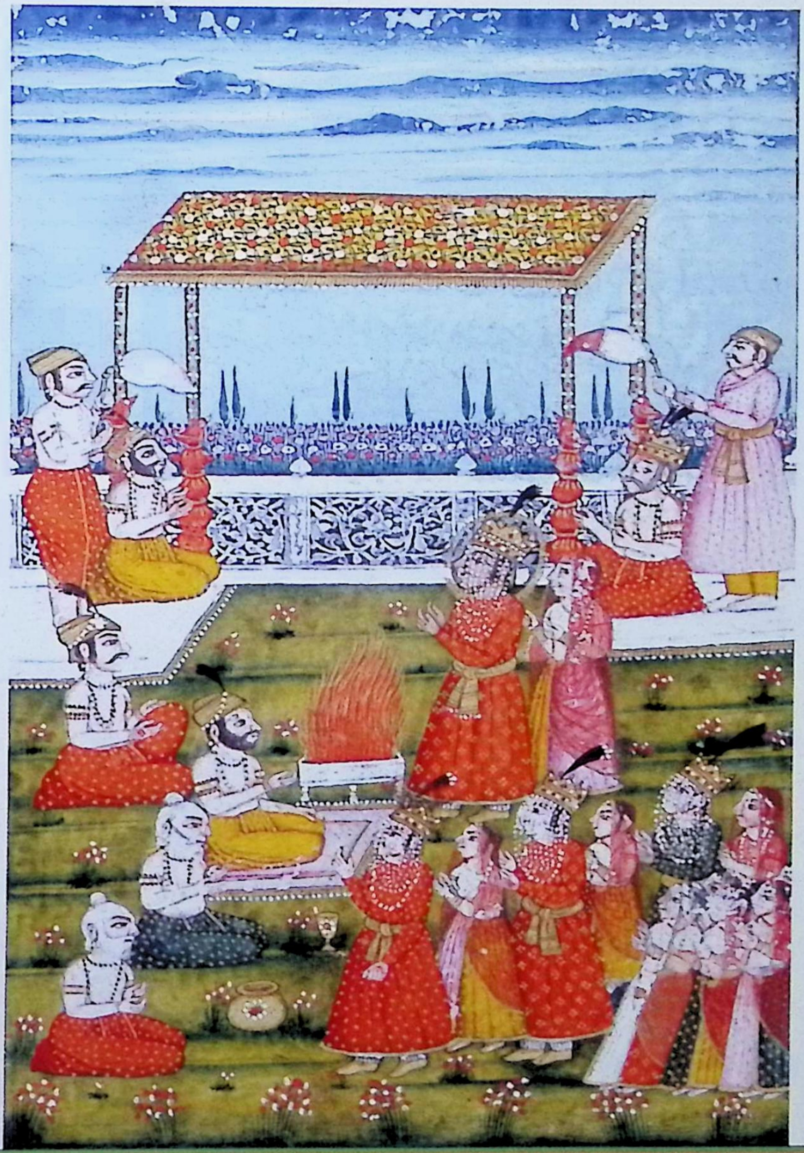

سرگذشت جنگ پرسرام چون شب بگذشت بشوامتر از راجه دشرتهه و جنک مرخص گشته
بکوه شمال رفت و بعد از ان راجه دشرتهه از جنک رخصت گردید باجودهیا
روان شد راجه جنک در جهیز دختران شال باف و غیره پارچه‌ها قیمتی داد سوار آن
یک لک گاو ماده داد و پیاده و رتهه‌ها مضاعف آن و کنیزکان با پیرایه زر و نقره
صد صد اینهمه داده مرخص کرد و والی اجودهیا نیز رکهه‌ها پیشوا کرده روانه شهر خود شد
با بهجت و شادی راه می‌نوشت ناگاه شکون زشت نمودار شد طیور هر سو بگفتار
خشمناک در آمدند و بهایم منکر میکرد کردگشتن گرفتند اینحالت را ملاحظه کرده راجه به بشسٹ
گفت شکون زبون چون نمودار میشوند در اطراف فساد بنظر می آید و گرد آفتاب
هاله کلان مینماید و فلک تمام بظلمت اندوده هیچ معلوم نمیگردد از ینخوف جگر من منفظ
میشود جواب این بفرمایید که غیر شما کسی را مجال گفتن کیفیت اینحال نیست بشسٹ گفت
فی الواقع خوفی و ترسی پدید آمده هر دو در همین گفت و شنود بودند که بادی کلان
وزید و تمام زمین با کوه و صحرا بلرزید و بر آفتاب تاریکی نمودار شد تمام لشکر بگرد آلوده
گردید و بشسٹ و غیره رکهه و راجه با پسران حیران و متفکر شد در همان حال شخصی نمودار
گشت خوفناک و جٹاها بر سر چون کوه کیلاس بلند و مانند آتش آخرت سوزنده
چنانکه از روشنی در نظر بدشواری می آمد پرشی یعنی تبری بر دوش گذاشته و کمانی

सर्ग-५५

जनक परशुराम

जब रात्रि बीत गई। विश्वामित्र राजा दशरथ और जनक से विदा होकर दक्षिणी पहाड़ पर चले गये और उसके बाद राजा दशरथ भी जनक से विदा होकर अयोध्या की ओर चले। राजा जनक ने पुत्रियों को दहेज में शाल बाफ आदि बहुमूल्य वस्त्र दिये इसके अतिरिक्त एक लाख गायें दीं, पैदल और रथ उस पर एक सौ सेविकाएँ सोने चाँदी से सुसज्जित देकर विदा किया। अयोध्या के राजा जनक भी ऋषियों की अगुवाई में अपने शहर की ओर चल दिये। प्रसन्नता के साथ रास्ता तय कर रहे थे कि अचानक अपशकुन प्रकट हुआ। पक्षी चारों ओर क्रोध से शोर मचाते हुए और अद्‌भुत पशु चारों ओर एकत्र होने लगे। यह परिस्थिति देखकर राजा ने वशिष्ठ से कहा कि जब अपशकुन प्रकट होता है तो आसपास में दंगा दिखता है और सूरज के चारों ओर एक गोला दिखाई देता है आकाश में अंधकार हो जाता है। कुछ मालूम नहीं पड़ता और इस भय से मेरा हृदय व्याकुल हो जाता है इसका उत्तर दो क्योंकि तुम्हारे अतिरिक्त किसी में इसका वर्णन करने की शक्ति नहीं है। वशिष्ठ ने कहा कि वास्तव में भय और निराशा उत्पन्न हुई है। दोनों अभी वार्ता कर रहे थे कि भयंकर हवा चली और पर्वत व जंगल सहित सम्पूर्ण पृथ्वी काँप गयी। सूर्य पर अंधकार छा गया, पूरी सेना धूल मिट्टी से भर गयी। वशिष्ठ आदि ऋषि और राजा पुत्रों सहित आश्चर्य में पड़ गये इसी स्थिति में एक व्यक्ति प्रकट हुआ जो बड़ा भयंकर था और सर पर बड़े-बड़े जटाएँ रखे हुए था। कैलाश पर्वत के समान बड़ा, अग्नि की भाँति जलाने वाला, ऐसी की उसकी रोशनी कठिनाई से दिख रही थी।

باتیر در دست داشته بنوعیکه مهادیو هنگام کشتن ترپردیت باشد آنرا دیده
بشست وغیره جپ وهوم شروع نمودند وبایکدیگر گفتند که اینکس قبل ازین بیست
ویکبار چهتریان روی زمین کشته حالا شاید باز همان دستور بعمل نیارد وهمه ها را
بشیرین زبانی پرسرام پرسرام گفته پرستش کردند او آن پرستش قبول کرد
وبا رام پسر دشرتهه گفت که ترا قوی شجاع شنیده ام وشکستن کمان راجه جنک
عجب تر از تو بوقوع باری این کمان جامدگنی که من دارم این را نیز در زه آورده
زور خود بنما که من زور ترا دانسته قابل آن کمانی تبود هم گفته او را کوشش کرده راجه
دشرتهه دست بسته گفت تو چهتریان را از گناه ایشان بکشتی تو برهمن بزرگ هستی و
پسران کودکان مرا تهدید نمودن نسزاواری تو در نسب بهرگ پیدا شده وبرت
وبید خوانی بسیار میکنی از پرتگیا اندر سلاح را گذاشته وآز روی دهرم تلم
زمین کشب رکهه را بخشیده وصحرا نشینی گزیده برای کشتن من چرا آمده زیرا که از کشتن
یک فقط رامچندر را همه خواهیم مرد این گفتار دشرتهه را پرسرام ولد جمدگن بخاطر
نیاورده با رامچندر گفت که بشوکرمان دو کمان سخت در همه لوک برآراست
یکی از آن مهادیو را داد ودومی به بشن رسید با بین هردو بسبب نمودار کردن
زور کمان جنگ واقع شد وقتی مهادیو آن کمان را تمام کشید بشن از هنوکار یعنی گفتار

कन्धे पर एक कुल्हाड़ी (फरसा) और हाथ में तीर कमान लिए हुए था जैसा कि महादेव त्रिपुर राक्षस की हत्या करते समय दिखे थे। उसको देखकर वशिष्ठ आदि ने जाप और होम आरंभ कर दिया तथा एक दूसरे से कहने लगे कि इससे पहले यह व्यक्ति छोटा था और एक बार पृथ्वी की छतरी बन चुका है अब संभवतः वही फिर न हो और उन्होंने मधुर वाणी से राम-राम कहते हुए पूजा की तथा उन्होंने पूजा स्वीकार की। परशुराम ने दशरथ के पुत्र राम से कहा कि तुझे मैंने वीर और शक्तिशाली सुना है और राजा जनक का धनुष तोड़ने वाला तुम्हारा कार्य अद्‌भुद है। अब तुम जमदग्नि की यह कमान जो मेरे पास है उसे भी चिल्ला-चढ़ाकर शक्ति का प्रदर्शन करो ताकि मैं तुम्हारी शक्ति देखकर और तुम्हें इस धनुष के योग्य समझकर धनुष तुम्हें दे दूँ। उनकी बात सुनकर राजा दशरथ ने हाथ जोड़कर कहा कि आपने क्षत्रियों को उनके पाप के कारण मार डाला। आप बड़े ब्राह्मण हैं और मेरे छोटे-छोटे बच्चों को धमकाना नहीं चाहिए। आपका ब्राह्मण जाति में जन्म हुआ है और आप व्रतधारी और वेद पाठी हैं। आपने इन्द्र के कहने से हथियार रख दिया और धर्म के आधार पर अधिकांशतः भूमि कश्यप ऋषि को दे दी और स्वयं वन को चले गये। अब पुनः मेरे वध को क्यों आए हैं क्योंकि केवल एक को

زبان آزا بی زه ساخت و دیوتا و رکهه و چارن از بشن درخواست کردند که این کمان
شکنید و بشن را در زور زیاده دانستند مهادیو از غصه کمان به دیورات که
از بزرگان جنک بود داد و بشن کمان خود به رچیک داد و او پسر خود را که جمدکن باشد
داد و از و که پدر من است بمن رسید و من ارجن هیهی را کشتم و از غصه چهتریان را
از زمین دور کردم و زمین را بکشب بخشیدم و دچهنا بسیار دادم بعده سلاح را
گذاشته بر کوه سمیر رفته بریاضت مشغول گشتم پس این کمان که از پدر منست این را
نیز در زه آر بعده با تو جنگ میکنم ازین گفتن پرسرام تمام عالم جر و اچر یعنی آنانی
۵۶ ارزندگان
که از جا میجنبند و آنانکه نمیجنبند در لرزه آمدند و دیوتا هم سرگ جنگ رامچندر گفته
پرشرام را شنیده گفت من شنیده ام انچه تو کرده در کار پدر بد نمیگویم و قوت
و مردمی ترا حالا میگیرم به بلین وزور چهتریان را هم نظر کن و تو برهمن هستی
و از اقربای بشنوامتر هستی بنابران پرستش تو لازم است راقم ترجمه گوید در مهابهارت
آمده که جمدکن پدر پرسرام خواهرزاده بشوامتر بود القصه رامچندر گفت که مرا قوتی است
که از تیری ترا بکشم برای خاطر تو روش لوکها که تو داری ازین تیر دور میکنم و این تیر
شکونتی من دروغ نخواهد رفت درین زمان دیوتا و رکهه و گن برهما را پیش کرده
بمعنی مزبوت
آمدند و گندهرب و اپسرا و سده و چارن و کنر و جچه و راچهس و ناگ برای تماشا جمع شدند

بعد ازان

अर्थात् रामचन्द्र को मारने से मर जायेंगे।

दशरथ की इस बात को जमदग्नि पुत्र ने अनसुनी करते हुए राम से कहा कि विश्वकर्मा ने तीनों लोकों में दो धनुष बहुत मजबूत बनाए हैं उनमें से एक महादेव को दिया और दूसरा विष्णु को मिला। दोनों के मध्य धनुष की शक्ति प्रकट करने के लिए युद्ध हुआ। एक बार महादेव ने वह धनुष पूरा खींच लिया। विष्णु ने मंत्र के द्वारा उसकी जीभ बिना चिल्ले के कर दी। देवता, राक्षसों और चारणों ने विष्णु से प्रार्थना की कि यह धनुष तोड़ दे और उन्होंने विष्णु को शक्ति में अधिक जाना। महादेव ने क्रोध में धनुष देवरात को जो जनक के पूर्वजों में था, दे दिया और विष्णु ने अपनी कमान ऋचीक को दे दी। उसने भी अपने पुत्र जमदग्नि को दे दी और उनसे जो मेरे पिता है मुझे मिली, मैंने अर्जुन ही का वध कर दिया और क्रोध के कारण क्षत्रियों को पृथ्वी से दूर कर दिया। पृथ्वी कश्यप को दे दी और बहुत से उपहार दिये। उसके पश्चात समीर पर्वत पर जाकर तपस्या में व्यस्त हो गया। बस इस धनुष को जो मेरे पिता का है चिल्ले पर चढ़ा उसके पश्चात् तुमसे युद्ध करूँगा। परशुराम के इस कथन से चल अचल समस्त संसार काँप गया और देव दानव ने भी परशुराम की रामचन्द्र से कही हुई बात सुनकर कहा कि मैंने सुना है आपने जो कुछ पिता के लिए किया है उसे मैं बुरा नहीं कहता और अब मैं तुम्हारे आदमियों को बन्दी बनाता हूँ। देखो और क्षत्रियों का बल भी देखो। तुम ब्राह्मण हो और विश्वामित्र के सम्बन्धियों में हो इस कारण से तुम्हारा सम्मान आवश्यक है। अनुवादक कहता है कि महाभारत में आया है कि परशुराम के पिता जमदग्नि विश्वामित्र के भांजे थे। निष्कर्ष यह कि रामचन्द्र ने कहा कि मेरे भीतर इतनी शक्ति है कि एक ही तीर से तुम्हारा

بعد ازان پرسرام آهسته آهسته با رامچندر که چشم او مثل
نیلوفر است گفت من چون کشب را زمین بخشیدم او گفت
در ملک من نباشید بنا بران در گوشه میباشم و بملک اندر هرگاه
دل میخواهد میروم و بکوه مهیندر میروم و دیگر لوکها از تپ گرفته ام
آنها را دور کن تا وقت نگذرد من ترا میدانم تو کشنده مدهو دیت
بشن هستی و این کمان هم ترا باشد و این دیوتاها وغیره
برای تماشای من و تو آمده اند مرا هیچ انفعال نخواهد شد ازینکه تو والی
هر سه لوک هستی مرا خجل کردی و این تیر را پرتاپ ده بعد ازین
بر کوه مهیندر میروم چنانچه رامچندر تیر را رها کرد و در اطراف روشنی
پدید آمد و باد هم نیک وزیدن گرفت و پرسرام بر دچهنا رامچندر
کرده یعنی گرد او گشته برفت درینجا صورت پرسرام جٹا بر سر بلند قد و صورت روشن
و تبر بر دوش و تیر و کمان در دست و روبروی رام و لچهمن بود و دشرتهه و بششت
که با عجز و الحاج دست بسته دشرتهه و بششت کلام میکند و او کمان و تیر بدست
رام میدهد و عقب راجه صورت سواری راجه دشرتهه

نام دیتیه که او را بشن کشته بود

अन्त कर दूँ तुम्हें दिखलाने के लिए लोक कीर्ति जो तुम्हारे पास है वह इस तीर से समाप्त कर देता हूँ।

यह मेरा शक्तिशाली बाण खाली नहीं जायेगा। इस समय देवता, ऋषिगण ब्रह्मा की अगुवाई में आए और गन्धर्व, अप्सरा, शूद्र, चारण, किन्नर, यक्ष, राक्षस और नाग तमाशा देखने के लिए एकत्र हो गये। उसके पश्चात् परशुराम ने धीरे-धीरे राम से जिनकी आँखें नीलम जैसी हैं कहा कि मैंने जब पृथ्वी कश्यप को दे दी तो उन्होंने कहा कि आप मेरे देश में न रहें इसी कारण से मैं एक किनारे रहता हूँ। जब मन करता है तो महेन्द्र पर्वत पर चला जाता हूँ। दूसरे अनुपम लोकों को जो मैंने तप से लिया है, इन्हें समाप्त कर दो ताकि समय न बीत जाये। मैं जानता हूँ कि आप मधु राक्षस का वध करने वाले हो यह धनुष भी तुम्हारा होगा। यह देवता आदि मेरा-आपका तमाशा देखने आए हैं। मुझे कोई लज्जा नहीं आयेगी, क्योंकि तुम तीनों लोक के मालिक हो मुझे आपने अपमानित किया और इस तीर को सम्मान दो उसके पश्चात् मैं महेन्द्र पर्वत पर चला जाऊँगा। अतः रामचन्द्र ने बाण छोड़ दिया, चारों ओर प्रकाश उत्पन्न हुआ और वायु भी बहुत मनभावन चलने लगी तथा परशुराम रामचन्द्र की परिक्रमा करके चले गये।

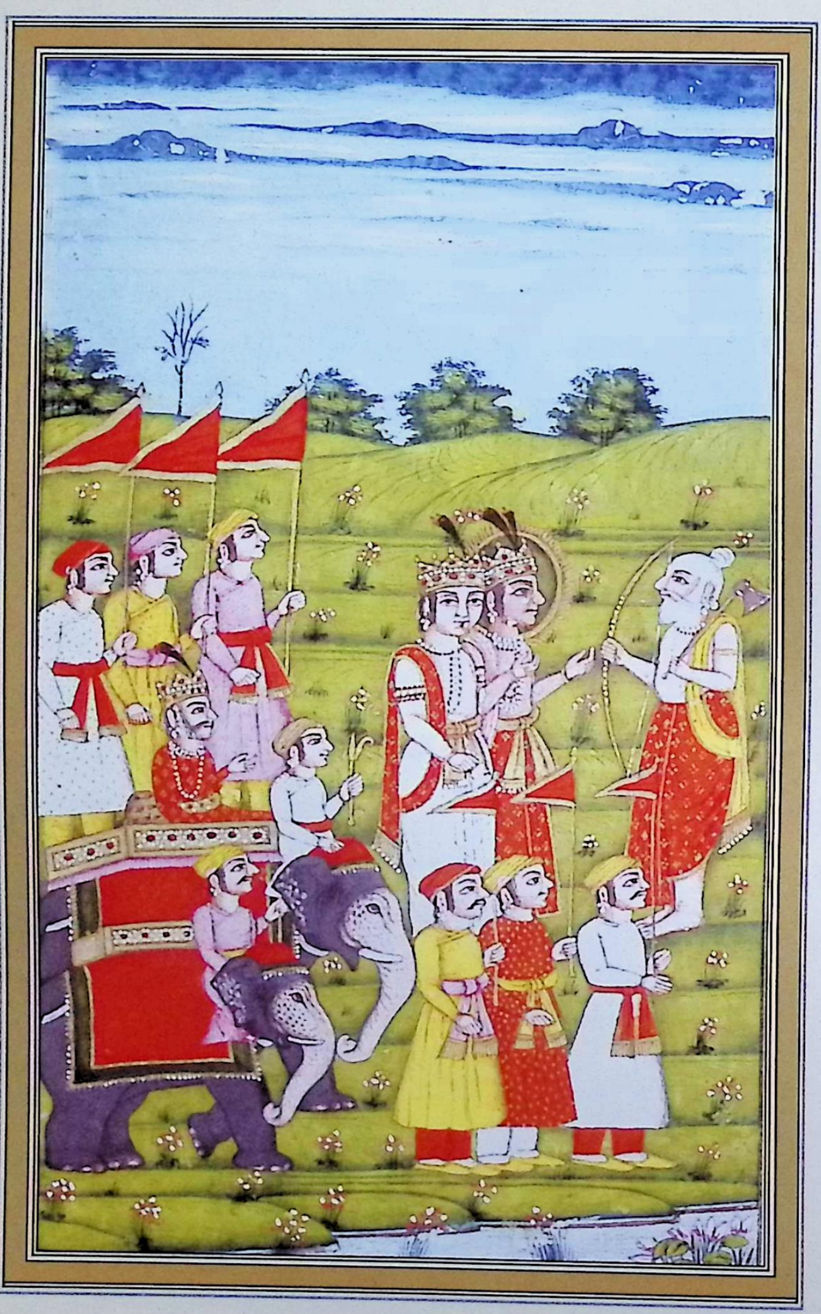

مرکآن

यहाँ चित्र में परशुराम सर पर जड़ा विशालकाय, कान्तिमय मुख, कन्धे कुल्हाड़ी, हाथ में तीर कमान, उनके सामने राम और लक्ष्मण हैं। दशरथ और वशिष्ठ बातें कर रहे हैं और वह तीर कमान राम के हाथ में दे रहा है और पीछे राजा दशरथ के अतिरिक्त और राजा का चित्र है।

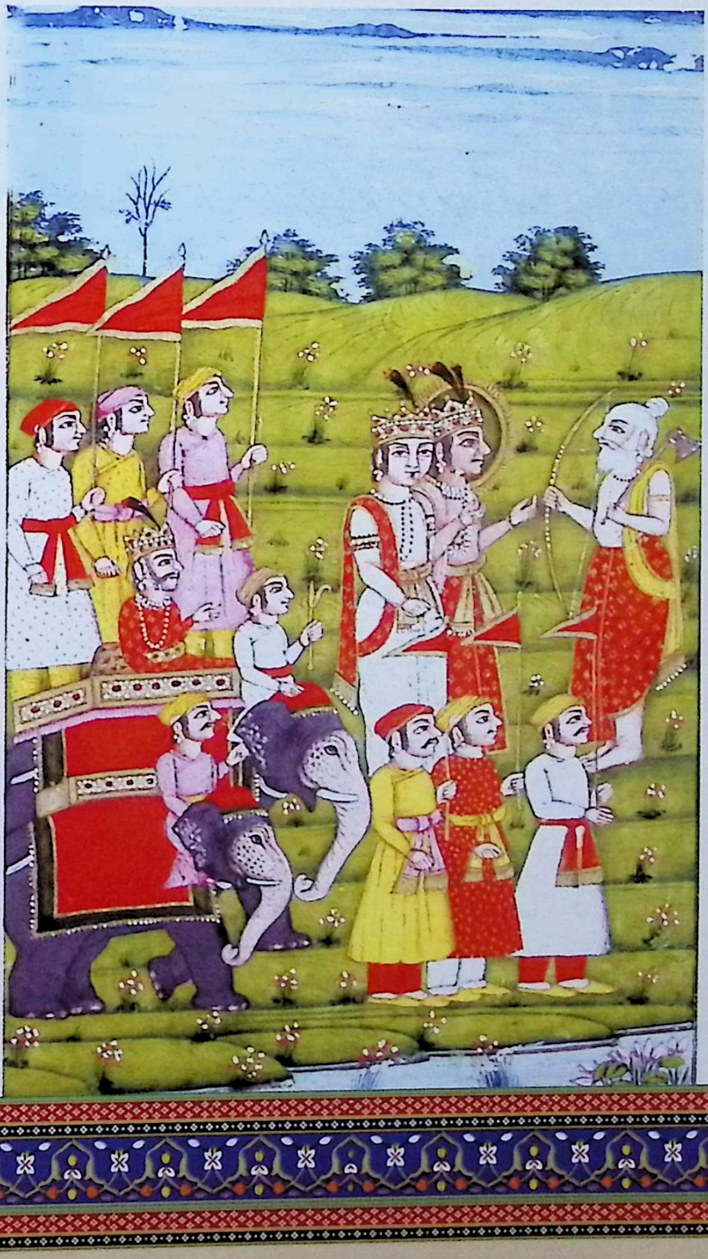

سرگ ۵۷ آمدن اجودها بعد رفتن پرسرام رامچندر آن کمان را به برن که صاحب
آب است داد و بشسٹ وغیره رکهارا نمسکار کرده پدر خود را که حیران و متردد بود
گفت که پرسرام ولد جمدگن رفت حالا لشکر را بفرمایید که روانه اجودهیا شود گفته پسر را
شنیده از خوشی سر او را بوسیده لشکر را روان کرد و بشهر خود رسید
پتاکا و دهوجا یعنی نشان و بان بشهر در آمدند در شاهراه آب پاشی شد و گل باریدند
جهنڈی خرد جهنڈی کلان
راجه بعیش و عشرت داخل شهر گشت کوشلا و سومترا و کیکئی وغیره زنان بطریق
گرفتن مشتبه‌ها در خانه پرداختند سیتا و اورملا و دختران کوشدهج را
یعنی جامهای زری و ابریشمی
با منگل در خانه داخل ساختند القصه هر چهار پسر صاحب خانه شده در حکم پدر محکوم
در ساعت نیک
بودند و امرا در امتابعت مینمودند از میان آنها رامچندر بهنر و فنون از همه
افزون بر آمد مثل برهما مهربان بر جمیع جانداران بود و رامچندر با سیتا
تا بسیار رت و ماه بعیش و عشرت ماند و دل را پیوسته با او داده همیشه او را
دو ماه را میگویند
در خاطر خود داشت و بهنر و حسن و خوبی دایم دل در خیال او میگماشت و سیتا هم
شوهر را دو چندان در دل جا داده بود و پیوسته شوق با او می افزود و باهم چنان
مینمودند که ماه با دختر راجه دچهه باشد ❖ تمام شد کانداول که مسمی به بال کاند است

بخط فدوی درگاه سید شیر شاه فی سنه ۱۲۴۳ هجری

सर्ग-५७

परशुराम के जाने के बाद रामचन्द्र ने वह धनुष पानी के देवता वरुण को दे दिया और वशिष्ठ आदि ऋषियों को नमस्कार किया और अपने पिता से जो चकित थे कहा कि जमदग्नि पुत्र परशुराम चले गये अब आप सेना को आदेश दीजिये कि अयोध्या की ओर प्रस्थान करे। उन्होंने पुत्र की बात सुनकर और प्रसन्नता से उसके सर को चुम्बन देकर सेना को भेजा और अपने शहर में पहुँचे। पिताका और ध्वज अर्थात् निशान और बान शहर में आए। मार्ग में छिड़काव किया गया और फूल बरसाए गये। राजा पूरे सम्मान के साथ शहर में प्रविष्ट हुए। कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी आदि स्त्रियाँ घरों में ज़री और रेशम के वस्त्र पहनने में व्यस्त हुईं। निष्कर्ष यह कि चारों पुत्रों का घर बस गया। वह पिता की आज्ञा का पालन करते थे और कर्तव्य निर्वाह करते थे। उनमें रामचन्द्र विद्या में निपुण और गुणों में सबसे श्रेष्ठ थे और ब्रह्मा के समान समस्त जीवों पर दयालु थे। रामचन्द्र ने सीता के साथ दो महीना भव्यपूर्वक बिताये और सदा उन्हीं के साथ रहते थे और उनकी गुणवत्ता, सुन्दरता का विचार सदा अपने हृदय में रखते थे। सीता ने भी अपने पति को हृदय में स्थान दे रखा था और उनका शौक बढ़ता ही जाता था वे आपस में ऐसे रहते थे जैसे राजा की पुत्री के साथ चन्द्र रहता है।

फ़िदवी (सेवक) दरगाह सैय्यद अमीर शाह के कलम से १२४२ हिजरी (1826 A.D.) में पहला भाग सम्पूर्ण हुआ जिसको बालकाण्ड कहते हैं।

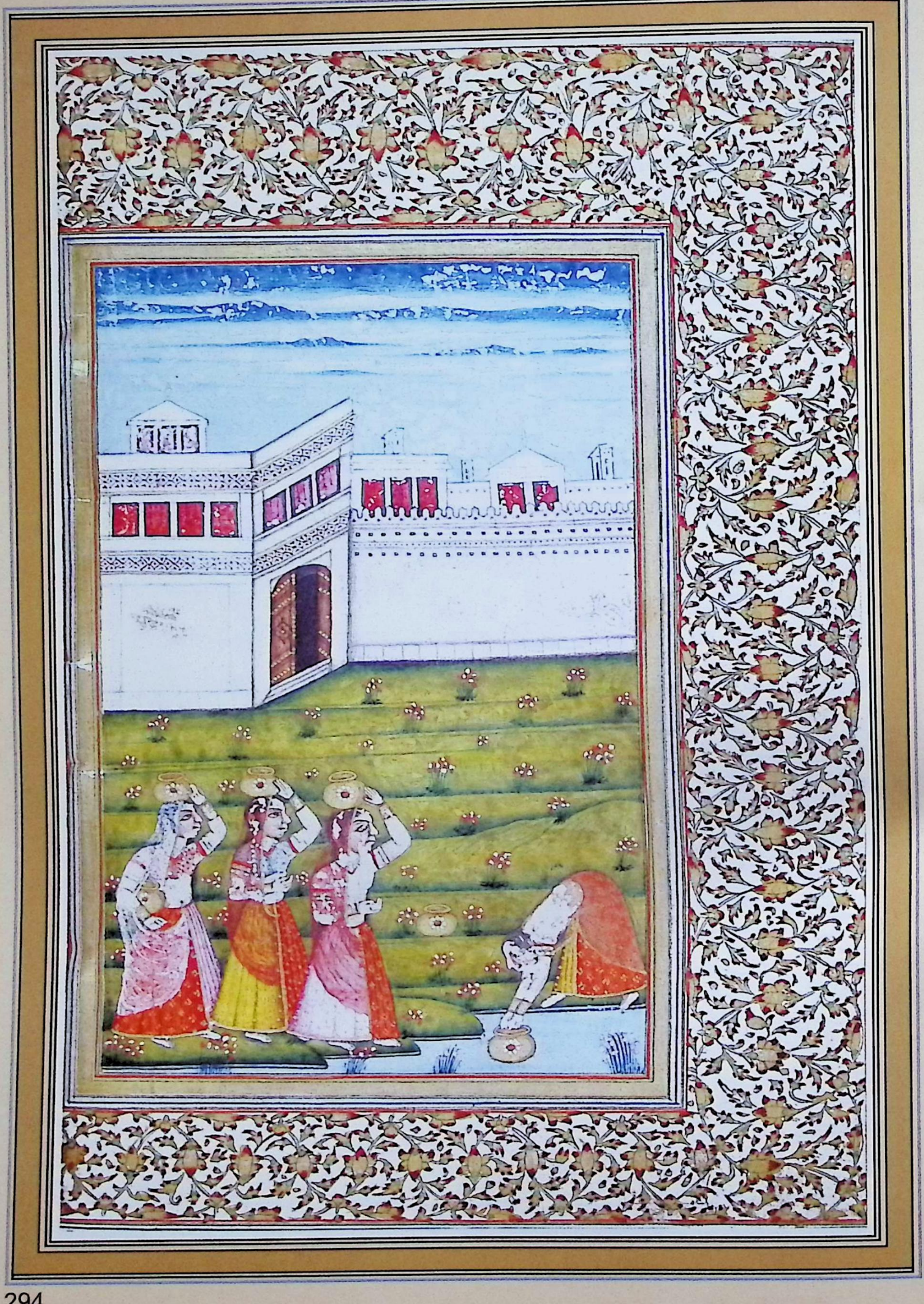

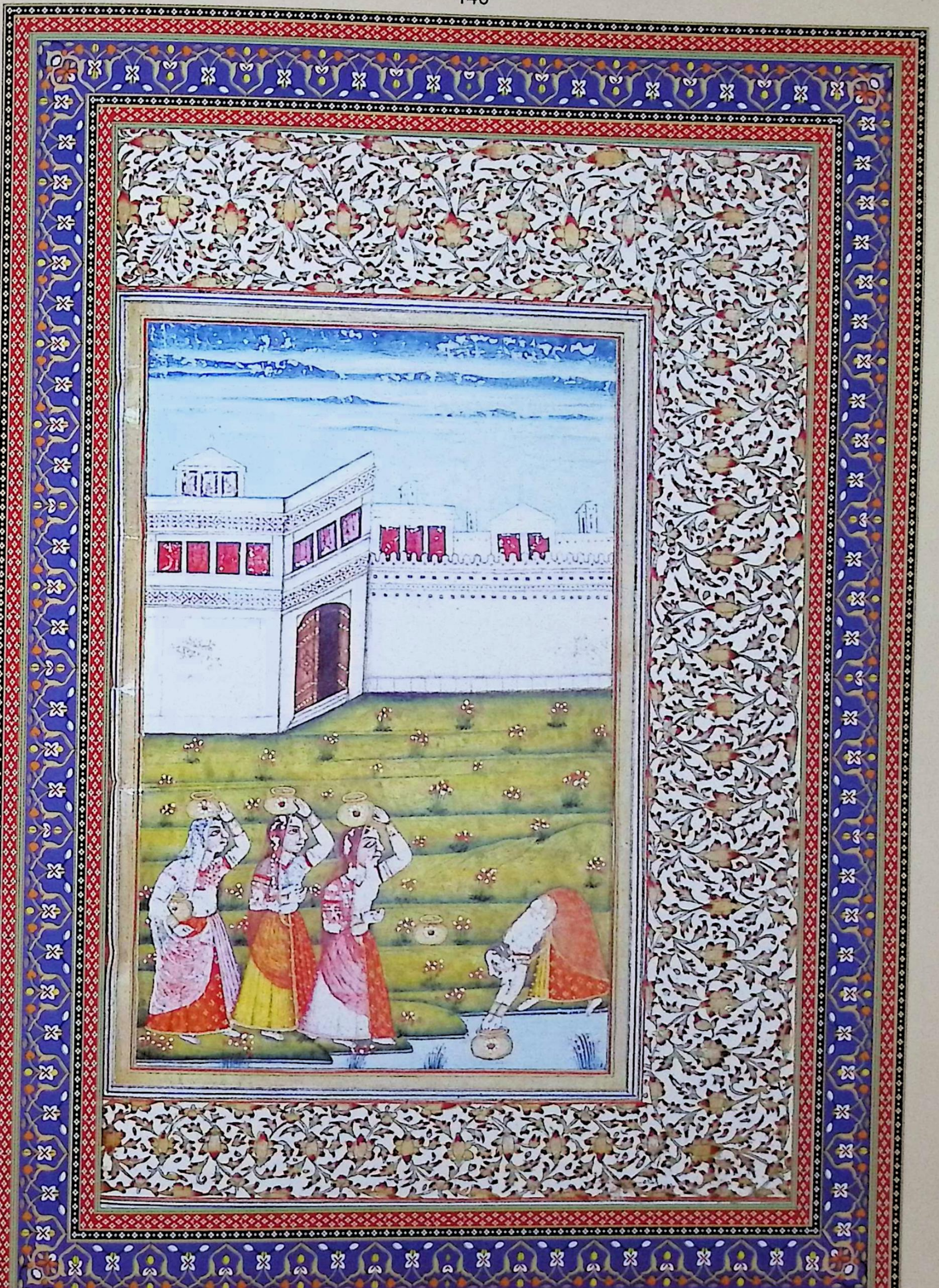

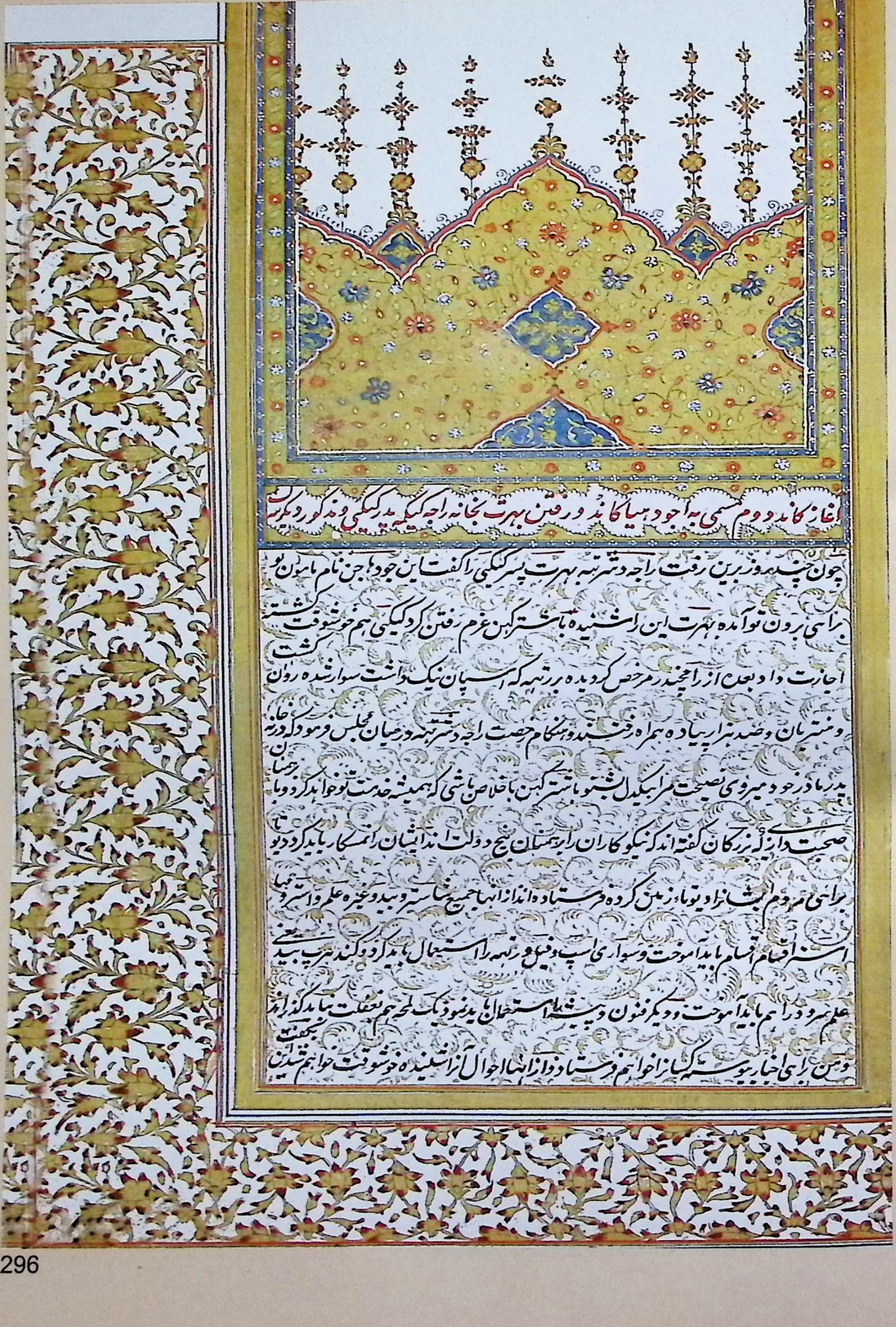

آغاز کاند دوم مسمی به اجودهیا کاند و رفتن بهرت بخانه راجه کیکیه پدر کیکئی و ذکر دیگر

چون چند روز برین رفت راجه دسرته به بهرت پسر کیکئی را گفت این جودهاجن نام ماموی تو
برای بردن تو آمده بهرت این را شنیده با شترگهن عزم رفتن کرد کیکئی هم خوشوقت گشته گشت
اجازت داد بعد از راجه چندر مرخص گردیده بر رتهه که اسپان نیک داشت سوار شده روان
و شتربان و صد هزار پیاده همراه رفتند و هنگام رخصت راجه دسرته در میان مجلس فرمود که در خانه
پدر مادر خود میروی نصیحت مرا بیکدل بشنو با شترگهن باخلاص باشی که همیشه خدمت تو خواهد کرد و با رهنمایان
صحبت دانایان دار که بزرگان گفته اند که نیکوکاران را برهمنان گنج دولت اند ایشان را نمسکار باید کرد دیوتا
برای مردم ایشان را دیوتا بزمین کرده فرستاده اند ازانها جمیع شاستر و بید و غیره علم و استر و تعلیم
استر اقسام اقسام باید آموخت و سواری اسپ و فیل و رتهه را استعمال باید کرد و گندهرپ بید یعنی
علم سرود را هم باید آموخت و دیگر فنون و پیشه ها استعمال باید نمود و یک لمحه هم غفلت نباید گذرانید
و من برای اخبار پیوسته کسان را خواهم فرستاد و ازانها احوال آن را شنیده خوشوقت خواهم شد این بگفت

द्वितीय काण्ड का आरम्भ अर्थात् अयोध्याकाण्ड शत्रुघ्न भरत का कैकयी के पिता राजा केकेय के पास जाना और अन्य वर्णन

जब कुछ दिन व्यतीत हो गये तो राजा दशरथ ने कैकेयी के पुत्र भरत से कहा कि यह जो युधाजित् नामक तेरे मामा तुझे लेने के लिए आये हैं। भरत ने यह सुनकर शत्रुघ्न के साथ जाने का निश्चय कर लिया। कैकयी ने भी प्रसन्नता से जाने की अनुमति दे दी। उसके पश्चात् रामचन्द्र जी से विदा होकर उत्तम घोड़ों वाले रथ पर सवार होकर चले। मन्त्रियों और एक लाख पैदल सैनिकों के साथ गये। विदा के समय राजा दशरथ ने दरबार में कहा कि तुम अपने माता पिता के घर जा रहे हो मेरी शिक्षा ध्यान से सुनो। शत्रुघ्न के साथ प्रेम एवं सद्भाव के साथ रहना वह सदैव तुम्हारी सेवा करेगा। ब्राह्मणों की संगत रखना क्योंकि वरिष्ठ लोगों का कहना है कि सज्जनों के लिए ब्राह्मण धन की जड़ हैं उनको प्रणाम करना चाहिए। देवता ने मनुष्यों के लिए उनको पृथ्वी का देवता बनाकर भेजा है। उन सबसे समस्त शास्त्र, वेद आदि और विभिन्न प्रकार के अस्त्र और महाअस्त्र के सीखना चाहिए। घोड़े, हाथी और रथ की सवारी का प्रयोग करना चाहिए और गन्धर्व वेद अर्थात् गायन की शिक्षा भी लेनी चाहिए। अन्य कलाएँ और व्यवसाय भी करना चाहिए और एक पल भी व्यर्थ नहीं बिताना चाहिए और मैं परिस्थितियाँ ज्ञात करने के लिए लोगों को बराबर भेजता रहूँगा। उनसे वहाँ के समाचार सुनकर प्रसन्न हूँगा, उन्होंने यह कहकर भरत को विदा किया।

و بهرت را وداع کرد او پدر را نمسکار کرده روان گشت رام و لچهمن قدری همراه رفته برگشته آمدند و بهرت در چند روز با رام و آسایش دریاها و کوهها را نوشته نزدیک دیره راجه کیکه رسید و کس را فرستاده تا خبر رسانید راجه مذکور هنگام داخل شدن بهرت شهر را آراست گلها و خوشبو بجا هر سو در شاهراه بکار آمد و هر جا پتاکا یعنی نشانها ایستاده کردند و رقاصان پیش پیش بهرت رقص کنان میرفتند و مردم بزرگ و بادفروشان تعریف آغاز ساختند باین طریق بهرت داخل شهر گشت و از پدر والده نمسکار کرد و از دیگران هم نمسکار و ملاقات نمود القصه چندی در آنجا اقامت فرمود در اینجا

صورت راجه کیکه پیر مرد بر تخت نشسته و عقب چوری بردار و روبروی بهرت و شترگهن بطور راجه زادهها تنها ایستاده جوانمرد بیعه بر سر راجه نمسکار میکنند عقب آنان صورت جودهاجت پسر راجه کیکه جوان سیاه ریش آخر صورت

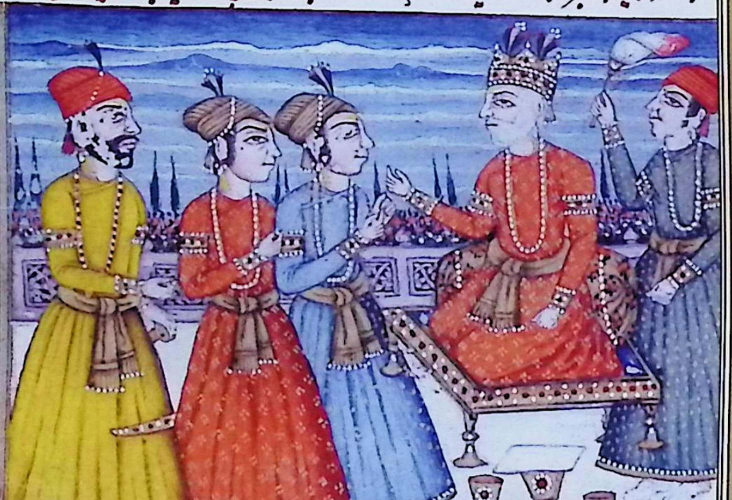

उन्होंने पिता को नमस्कार करके प्रस्थान किया। राम लक्ष्मण थोड़ी दूर जाकर वापस लौट आए और भरत कुछ दिनों में आसानी से साज सज्जा के साथ नदी और पर्वत पार करते हुए राजा केकय के 'डेर' के निकट पहुँचे और किसी को भेजा कि वह जाकर सूचना पहुँचा दे। उक्त राजा ने भरत के नगर में प्रवेश के समय नगर को खूब सजाया था हर तरफ मार्ग में सुगन्धित फूल और गुलदस्ते लगाए गए थे और प्रत्येक स्थान पर चिह्न खड़े किये गए थे । नर्तकियाँ नृत्य करती हुई भरत के आगे-आगे चल रही थीं और वरिष्ठ व्यक्तियों ने प्रशंसा आरंभ की, भरत इस प्रकार नगर में प्रविष्ट हुए एवं नाना को नमस्कार किया और दूसरे लोगों से भी नमस्कार तथा भेंट की। निष्कर्ष यह कि कुछ दिनों उन्होंने वहाँ निवास किया।

यहाँ राजा केकय वृद्ध पुरुष का चित्र है जो सिंहासन पर बैठे हुए हैं और पीछे मूर्छलधारी है। सम्मुख भरत व शत्रुघ्न जवान राजकुमारों की भांति उपस्थित हैं। राजा को नमस्कार कर रहे हैं और उनके पीछे राजा केकय के पुत्र युधाजित् का चित्र है जो काले बालों वाला युवक है, अन्त में घोड़ों वाले रथ का चित्र है।

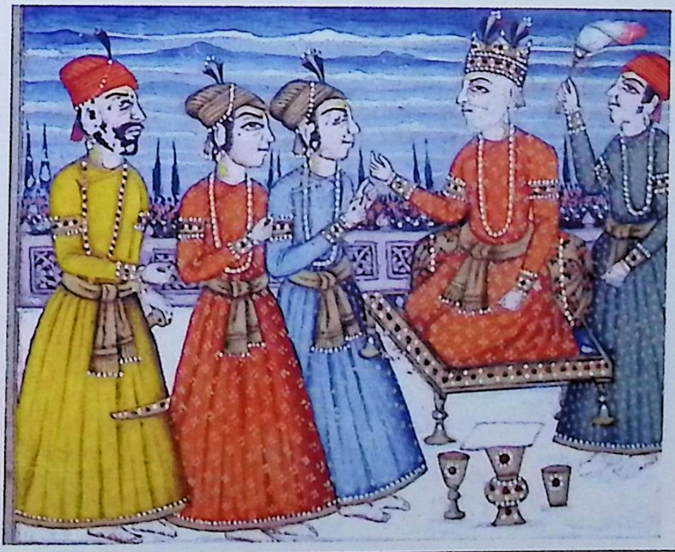

بسرگر راجه دسرتهه آن روز رامچندر را اجازت داده بشست را طلبید گفت که رفته
برت و غیره آنچه باید کرد از رامچندر بکناند بشست شل ابر سفید بسمت خانه رامچندر رفت
و رامچندر خبر یافته بپیشوا آمد و از رتهه فرود آورده و دو دست بسته ایستاده شد بشست فرمود
که پدر تو خرسند است و ترا جوراج میدهد تو با سیتا او روزه پاس بکن این بگفت و منتر داد و رامچندر
بسر و چشم گرفت و او را ده هزار گاو ماده داد بعده بشست بمکان خود رفت آرام بنوعیکه گفته بود
بعمل آورد و از بهجت تمام شب در شاه راه اژدهام بود هیچکس خواب ننمود و زن و مرد بر بام

و مناظره نشسته تماشا میکردند درینجا صورت بشست پرمردمش دیوتا بر رتهه سپاهان سوار و
صورت رام و لچهمن که برای استقبال آمده نمسکار میکنند

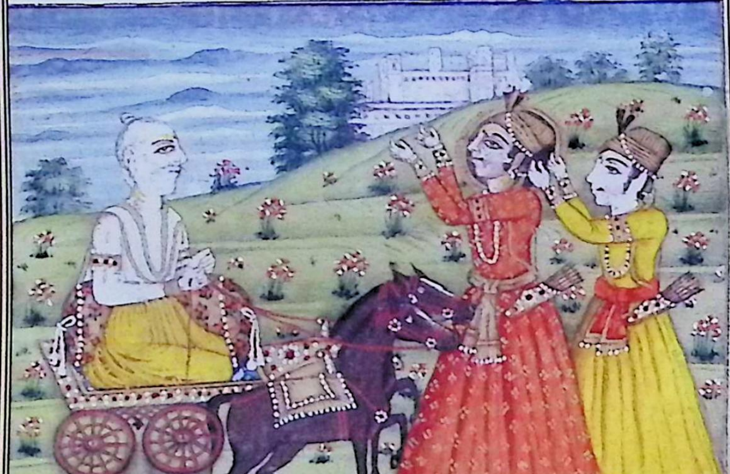

सर्ग-७

राजा दशरथ ने उस दिन रामचन्द्र को अनुमति देकर वशिष्ठ को बुलाकर कहा कि व्रत आदि जो कुछ भी करना चाहिए रामचन्द्र की ओर से करें। वशिष्ठ सफेद बादल की भाँति रामचन्द्र के घर की ओर गये और रामचन्द्र सूचना पाकर स्वागत के लिए आए तथा रथ से नीचे उतरकर दोनों हाथ जोड़कर खड़े हो गये। वशिष्ठ ने कहा तुम्हारे पिता प्रसन्न हैं और तुमको राज्य दे रहे हैं तुम सीता के साथ व्रत रखो यह कहकर उन्होंने मन्त्र दिया। रामचन्द्र ने उसे सम्मानपूर्वक ले लिया और उनको दस हजार मादा गाएं दीं उसके बाद वशिष्ठ अपने घर चले गये। राम ने जिस प्रकार उन्होंने कहा आचरण किया। रात्रि में प्रसन्नता के कारण सड़क पर जनसमुदाय था कोई व्यक्ति नहीं सोया, स्त्री और पुरुष कोठे पर चढ़े और झरोखों में बैठे उत्सव देख रहे थे।

यहाँ वृद्ध पुरुष वशिष्ठ का चित्र है जो देवता की भाँति घोड़ों के रथ पर सवार है और राम लक्ष्मण का चित्र है जो स्वागत के लिए आकर नमस्कार कर रहे हैं।

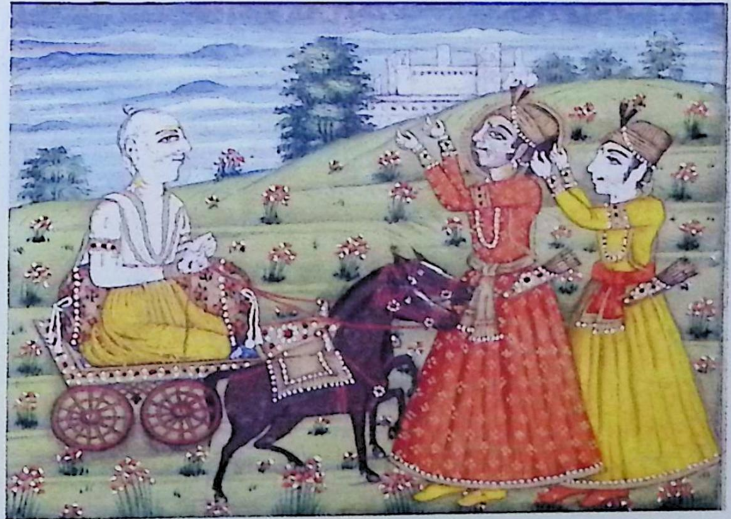

سرگ ۹ بعد رفتن بسنت راجه چندرو سیتا به پرستش نارایین مشغول شدند وظرف هوش چربها
یعنی روغن وکنجد وغله وغیره برسر گرفته در آتش می انداخت انچه باقی میماند بعورت مینوشانید
ودل را بنارایین نهاده بربستر گیاه نشسته بود خاموش و والی دولت شری بشن اپر ستش
میکرد این خبر را شنیده مردم در سیاه ابر خانه و آبری خانه و دیو خانه و سفید ابر خانه و روشنخانه
غلو واثر دهام داشتند و دهوجا یعنی نشانها را در دوکانها و مناظرها و غرفه‌ها و در خانه
قبایل‌ها و دولتمندان و قلعچه‌ها و عقب خانها و مجالس‌ها و در طاقچه‌ها و دوات خانها و همه جا بلند کرده بودند
و آواز بازیگران و رقاصان و سنکهه و نقاره و سرود شیرین و خواندن بیدها همه جا بود و همه جا آواز
خوش آینده گوش بود جای محفل شده بعضی جا آلی آرایش دولت جای شاستر و جای افسانه و جا شادی
عرض که همه جا نوید بود و طفلان پیش دایه‌ها بعیش بازی میکردند و دونډی خوش با آسمان میرفت
ازبسکه بارش گل شده بود گویا دریای گل بر دروازه راجه بهت مردم اجودهیا جمع شده دعا میکردند که دسرته را
عمر دراز باد که از لطف او رام راجه خود خواهیم دید تمام شب از دهام چنانچه در دریا شور از جادو یعنی از زم آبی

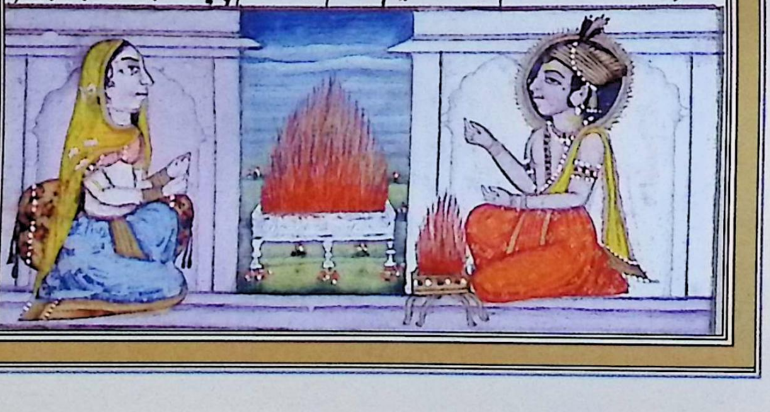

سرگ ۹

सर्ग–८

वशिष्ठ के जाने के पश्चात रामचन्द्र और सीता नारायण की पूजा में व्यस्त हुए, हवन सामग्री अर्थात् तेल तिल एवं अनाज आदि लेकर अग्नि में डाल रहे थे और जो शेष बचता स्त्री को पिला देते। वह नारायण के निकट घास की शैय्या पर शांत बैठी धन सम्पत्ति के देवता और विष्णु की पूजा कर रही थी। लोगों ने यह समाचार सुनकर सयाह अबर खाना, अबरी खाना, देवखाना और रौशन खाना, सफेद अबरखाना में भीड़ लगा दी। दुकानों में खिड़कियों, कमरों, घनाढ्य एवं सरदारों के घरों, किलों या घरों के पीछे, ताकचों और दवातखानों पर प्रत्येक स्थान पर ध्वज खड़े कर रखे थे। बाज़ीगरों, नर्तकियों, शंख, ढोल, मधुर गीतों और वेद पढ़ने की आवाज प्रत्येक स्थान से आ रही थी। इस प्रकार प्रत्येक स्थान पर कानों में मधुर आवाजें पड़ रही थीं। इसी स्थान पर लोग एकत्र थे, किसी स्थान पर सम्पत्ति की सज्जा थी कहीं शास्त्र कहीं कथा और कहीं शादी। निष्कर्ष यह कि प्रत्येक जगह आनन्द ही आनन्द था और बच्चे आयाओं के सामने प्रसन्नता से खेल रहे थे और श्रेष्ठ डोंडी आकाश पर जा रही थी चूंकि फूलों की बहुत वर्षा हुई थी इसलिए ऐसा लग रहा था जैसे पुष्पों का दरिया राजा के दरवाजे पर है। अयोध्या के निवासी एकत्र होकर प्रार्थना कर रहे थे कि दशरथ की आयु लम्बी हो उनकी कृपा से हम अपने राजा राम को देखेंगे । समस्त रात्रि भीड़ लगी रही जैसा कि दरिया में पानी के जानवरों का कोलाहल रहता है।

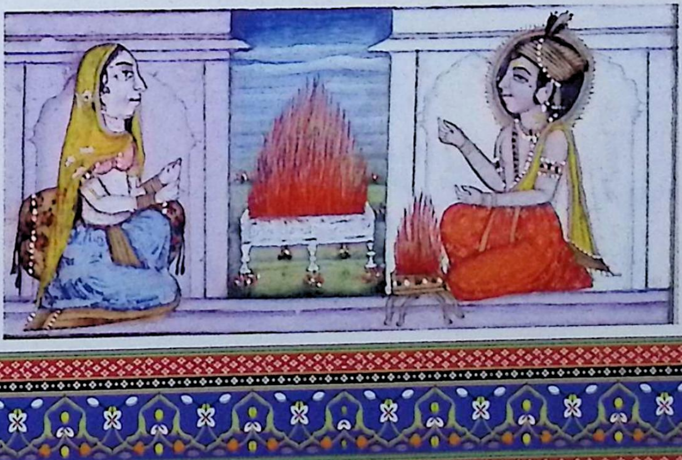

کس منتهرا ناکاه منتهرا نام کنیزک کیکئی که بسبب کوزپشتی بکبجا نیز مشهور بود بر منظر بام برآمده و شور و غلو ازدهام مردم دیده نزدیک دایهٔ خود رفته پرسید این خوشوقتی در خانهٔ راجه چیست و والدهٔ رام چرا بخشش زر بمردم برهمن میکند دایه کفت پکاه پکهپ نچهتر هست راجه دسرتهه رامچند را جوراج میدهد منتهرا مضطرب و غمناک کشته زود از انجا زود آمد و از غصه چشم سرخ کرد اصل کار آنکه رامچند را او را وقتی بسبب کناهی زده بود و او خواهان انتقام بود آن کینه در دل داشت غرض که آن کوزپشت از غصه نزد کیکئی رفت و کفت که ای ابله تکیه بر شوهر کرده چه نشسته برخیز کیکئی برخاست و کفت تو چرا دلکرفته و چنین سخت چرا میکویی کفت فسادی برپا شد یعنی رام را راجه جوراج میدهد من ازین آتش طپیده نزد تو آمده‌ام زیرا ئی آنکه از تصدیع مرا تصدیع کمال هست و این شوهر تو که دهر ماتماست دغاباز هست از شیرین زبانی نرا میکشد بهرت را که خار بود بدر کرد و رام را راج میدهد چنانچه مار افعی بدشمنی کند چنان میکند کیکئی از کفت او خوشوقت کردید و یک زیور پیرایه باو بخشید و کفت ای منتهرا من ازین نوید خوشوقت شدم زیرا که

بهرت و رام را برابر میدانم مرا هیچ ازین خوبتر نیست که رام را راجه جوراج بکند در اینجا صورت کیکئی خوبصورت بر پلنگ نشسته و پاندان پیش نهاده و منتهرا کنیزک کوزپشت پیش استاده سخن میکوید و کیکئی زیور خوشنما باو میدهد

सर्ग-६

मंथरा नामक कैकेयी की एक दासी ने, जो कूबड़ के कारण कुब्जा नाम से भी प्रसिद्ध थी, कोठे पर जाकर और लोगों का जनसमूह तथा कोलाहल सुनकर अपनी धाय के पास जाकर पूछा कि राजा के महल में यह प्रसन्नता कैसी है ?और राम की माता ब्राह्मण लोगों को धन क्यों दे रही है ?धाय ने कहा, प्रातः पुष्य नक्षत्र है, राजा दशरथ रामचन्द्र को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर रहे हैं। मन्थरा व्याकुल व दुखी होकर शीघ्रता से नीचे आई और क्रोध के कारण आंखे लाल कर लीं। वास्तविकता यह है कि रामचन्द्र ने कभी किसी त्रुटि पर मारा था और वह बदला लेना चाहती थी, वही बात दिल में रखे हुए थी। अतः वह कुबड़ी क्रोध से कैकेयी के पास गई और कहा मूर्ख पति पर विश्वास करके क्या बैठी है, उठ, कैकेयी उठी और कहा कि तू क्यों चिन्तित है और ऐसी कठोर बात क्यों कर रही है? उसने कहा, उपद्रव हो गया है अर्थात् राजा राम को उत्तराधिकारी घोषित कर रहे हैं मैं उसके कारण व्याकुल हूँ और तुम्हारे पास आयी हूँ। इसी के कारण मेरे शिर में बहुत पीड़ा है और तेरा यह पति जो धर्मात्मा है धोखेबाज है मधुरवाणी से तुझे मार रहा है। भरत को जो काँटा था बाहर कर दिया और राम को उत्तराधिकारी बना रहे हैं। जैसा कि साँप किसी शत्रु के साथ करता है कैकेयी उसकी बात से प्रसन्न हुई और एक जड़ाऊ आभूषण उसको दे दिया और कहा ऐ मंथरा ! मैं इस शुभ समाचार से प्रसन्न हुई क्योंकि मैं भरत और राम को भली प्रकार जानती हूँ मेरे लिए इससे अच्छा और कुछ नहीं है कि राजा राम को उत्तराधिकारी बनायें।

यहाँ कैकेयी का चित्र है जो सुन्दर पलंग पर बैठी हैं। पानदान सामने रखा है और कुबड़ी दासी सामने बैठी वार्ता कर रही है और कैकेयी आकर्षक आभूषण दे रही हैं।

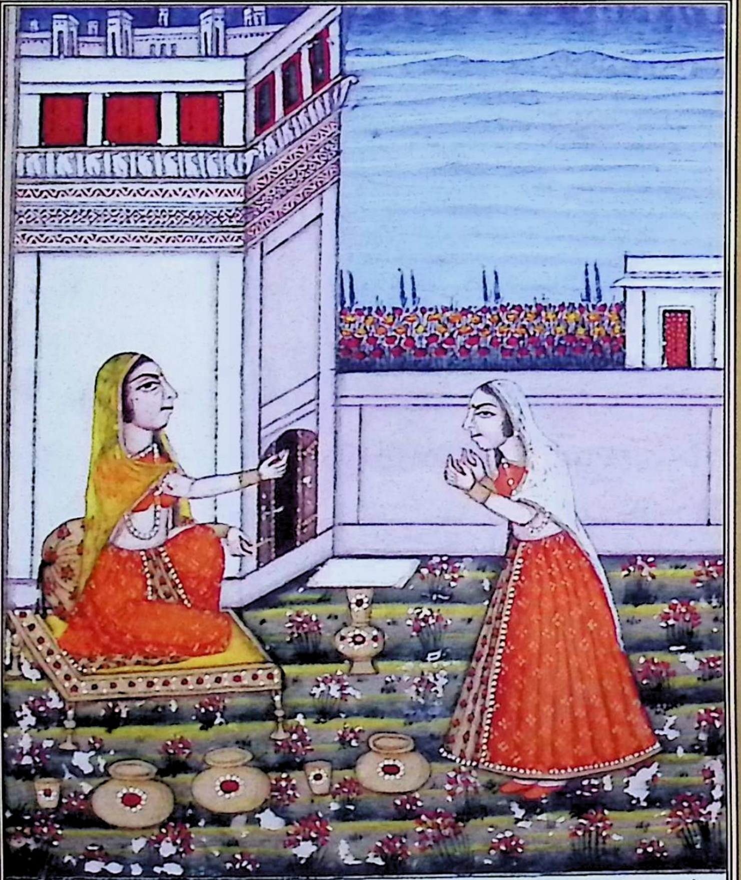

سرک منتهرا بار دیگر از غصه گفت کدام وقت خوشوقتی خود را در یای غم افتاده بینی

پسر بای یعنی سوکن راجه میشود تامل کن لچهمن و شترگهن هم همراهی او خواهند کرد و می بینم

که باز نوبت راج به بهرت برسد کوشلا نجتا و رست که پسر او راجه شود و تو کم بختی که پسرت

از راج می افتد و تو مثل کنیزکان او خواهی بود زنان خانه رام خوشوقت خواهند شد و سینه های تو

بخوبت

सर्ग-१०

मंथरा ने पुनः क्रोध से कहा किसी समय अपने सुख को दुख के दरिया में डाल देना। क्या तुम नहीं जानती कि सौत का लड़का शत्रु होता है, सोचो लक्ष्मण और शत्रुघ्न भी उसका साथ देंगे। मैं जानती हूँ कि फिर राज्य भरत को मिलेगा। कौशल्या भाग्यशाली है कि उसका पुत्र राजा होगा और तुम दुर्भाग्यशाली हो कि तुम्हारे पुत्र को राज्य से अलग कर दिया जायेगा। तुम उसकी दासी के समान होगी। राम के महल की स्त्रियाँ प्रसन्न होंगी और तुम्हारा पुत्र निर्धनता में घिर जायेगा।

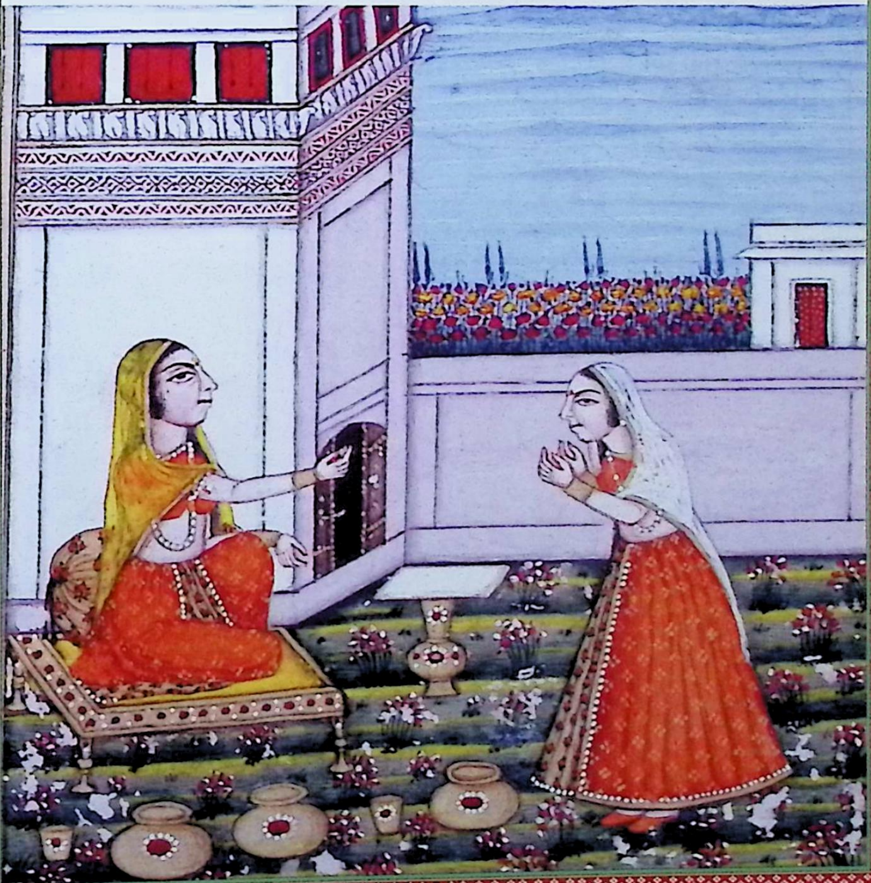

بغربت گرفتار بدینسان گفتار غصه آمیز منتهرا شنیده کیکئی گفت تو غمگین مشو رام را در آن
مثل پدر پرورش خواهد کرد دهرتا تما و راست کو و عاقل و پاکروست منتهرا بار دیگر در غصه
آمده دم سرد کشیده گفت تو بمعنی میفهمی و بیوقوف هستی رام راجه خواهد شد و بعد او
پسر او باز به بهرت چه حساب دارد من اینطور جدل دیو و دانو بسیار شنیده ام هر کس خود را
میخواهد و برادری یکطرف میباشد همین به بین که بهرت غایب است رام را جو راج میدهند
لچهمن و رام باهم رفیق خواهند بود و بهرت را از شهر بصحرا خواهند فرستاد بنابران تو فکر کن
و بهرت را محافظت نما در اینجا صورت کیکئی با پیرایه رنگ دیگر در مکان خوب نشسته و همان کنیزک کبجا

سرخ چشم گردیده بغصه میگوید

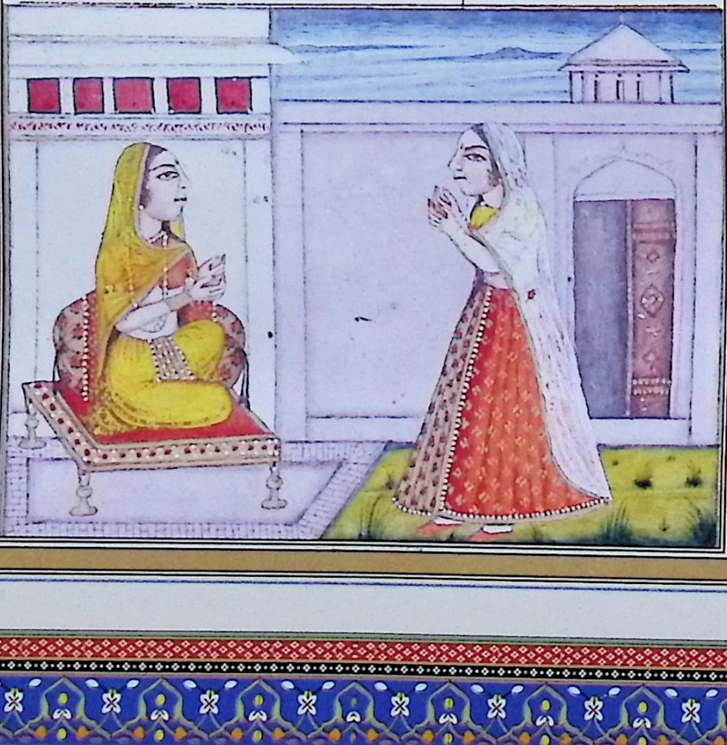

मंथरा की क्रोध से भरी बातें सुनकर कैकेयी ने कहा, तुम दुखी मत हो राम अपने भाईयों का पालन पिता के समान करेंगे। वह धर्मात्मा, सत्य मार्ग पर चलने वाले और बुद्धिमान और सज्जन है। मंथरा ने पुनः क्रोध में सांस खींचकर कहा, तुम गलत समझ रही हो और तुम मूर्ख हो। राम राजा होंगे उसके बाद उनका पुत्र होगा फिर वह भरत को क्या समझेगा ?मैंने इस प्रकार का देव व दानव का झगड़ा बहुत सुना है प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को प्रेम करता है और भाई एक ओर रह जाता है। यही देख कि भरत नहीं है और राम को उत्तराधिकारी बना रहे हैं। लक्ष्मण और शत्रुघ्न आपस में मित्र हो जायेंगे और भरत को शहर से जंगल में भेज देंगे। अतः तुम चिन्ता करो और भरत की रक्षा करो।

यहाँ कैकेयी का दूसरे कोण से लिया गया चित्र है जो अपने महल में बैठी हुई है और वही कुब्जा सेविका क्रोध में बातें कर रही है।

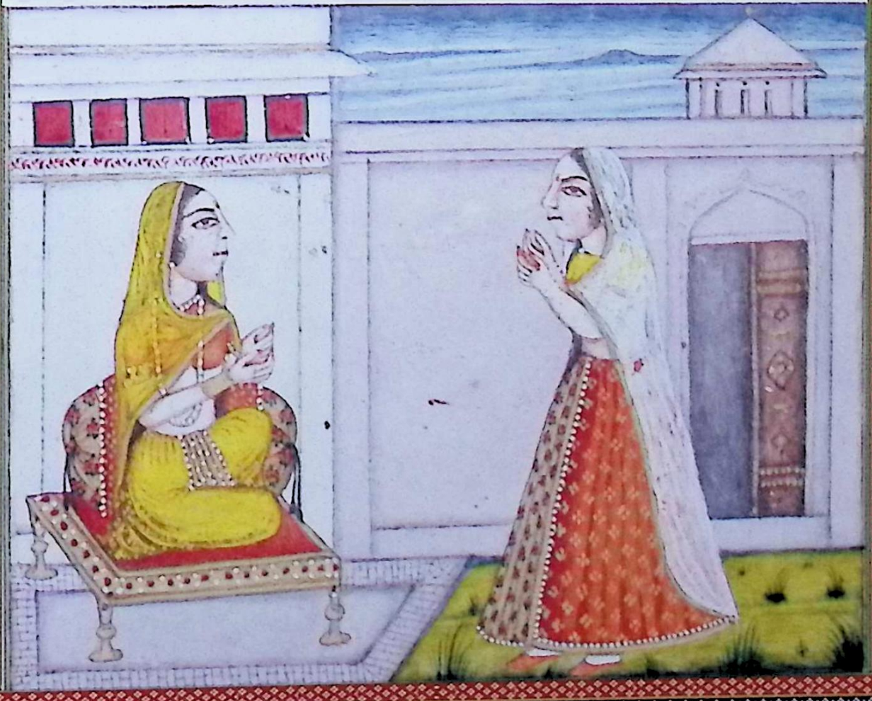

سرک کیکئی تامل کرده دم سرد کشیده کفت تو راست میکوئی اما چه فکر کنم من وجهی نمی بینم
که بهرت راجه شود راجه چکونه مثل رام را کذاشته بهرت را راج خواهد داد منتهرا کفت
من همین زمان وجهی میکویم که رام بصحرا برود و بهرت راجه شود کیکئی خوشوقت شده کفت
باری بکو کفت هرکاه میان سُر و اسُر جنک شده بود اندر کمان برداشته بسمت دکهن
که دندک بن است اقامت کرد آنجا بجینتی نام شهریست آنجا شنبر نام اسُر با اندر جنک نمود فت شد
درانجا مردم زخمی را میکشت و میخورد درانجا شوهر تو که زخمی بود او را محافظت نمودی او خوشنود
و ترا دو برداد یعنی دو حکم از من بخواه انچه فرمائی میکنم تو جواب دادی که خواهم خواست حالا
وقت آنست که آن هر دو را بخواهی یکی از ان چنان بخواه که بهرت جوراج کند و دوم انکه
رامچندر تا چهارده سال در صحرا باشد و در خانه رفته بنشین و پارچه های چرکین بپوش
و بر زمین بخسپ من راجه را مینمایم اکر راجه کوه طلا بخشد هرکز نکیری تا آن هر دو بر نه دهد هرکاه بعد
چهارده سال رام خواهد آمد و مردم به بهرت متعلق خواهند کشت از وی هیچ نخواهد شد کیکئی
کفته منتهرا را که دغا بود قبول کرد زیرا که طریق عوراتست از ناقص عقلی و بیوقوفی انچه کسی کوید فی الفور بران
می آیند و در اصل آنکه در خانه پدر خود برهمنی را ملامت کرده بود او شاپ داده که ترا از غیب ملامت
و نکوهش خواهد رسید القصه کیکئی منتهرا کوزپشت را کفت که عقل تو کامل و خوب تدبیر کفتی و من
راجه را از زور علم خود نکاه داشتم و بطوریکه آن علم بمن رسیده آن را بشنو زیرا که مثل تو مرا کسی

सर्ग-११

कैकयी ने सोचते हुए एक आह भरकर कहा, तू सच कहती है लेकिन मैं क्या करूँ, मुझे ऐसा कुछ समझ में नहीं आ रहा है जिससे भरत राजा बने। राजा (दशरथ) राम जैसे पुत्र को छोड़कर कैसे भरत को राज्य देंगे। मंथरा ने कहा मैं इसी समय ऐसी योजना बताती हूँ कि राम जंगल को चले जायेंगे, और भरत राजा हो जायेंगे। कैकयी ने प्रसन्न होकर कहा, हाँ हाँ कहो। उसने कहा जिस समय सुर और असुर के मध्य युद्ध हुआ था इन्द्र धनुष उठाकर दक्षिण की ओर जो दण्डकारण्य वन है उसमें रहने लगे थे। वहाँ वैजयन्त नामक एक शहर है उसमें शम्बर नामक एक असुर ने इन्द्र से युद्ध किया। वहाँ घायल लोगों को मारकर खा लेता था वहाँ तूने अपने पति की, जो घायल था उसकी रक्षा की, वह प्रसन्न हो गया और उसने तुमको दो वचन दिये थे कि मुझसे मांग लो, जो तुम कहोगी मैं करूंगा। तुमने उत्तर दिया था कि समय आने पर मांग लूंगी। अब समय आ चुका है कि तू दोनों वचन मांग ले। उनमें से एक वचन यह माँगो कि भरत को उत्तराधिकारी बना दे और दूसरा यह कि राम चौदह वर्ष तक जंगल में रहे और तुम घर (कोपभवन) में जाकर बैठ जाओ, फटे पुराने कपड़े पहन लो, भूमि पर सो जाओ, मैं राजा को सूचना देती हूँ यदि राजा सोने का पहाड़ भी दे तो कदापि न लेना, जब तक कि वह दोनों वचन पूरे न करे। जब चौदह वर्ष के बाद राम वापस आयेंगे लोग भरत के निकट हो चुके होंगे तो उससे कुछ नहीं होगा। कैकेयी ने मंथरा की बात जो धोखा थी, स्वीकार कर ली क्योंकि कम बुद्धि और मूर्खता के कारण स्त्रियों का स्वभाव होता है कि यदि कोई कुछ कहता है तो तुरन्त उसकी बात मान लेती हैं। वास्तविकता यह है कि उसने अपने पिता के महल में किसी ब्राह्मण का अपमान किया था उसने शाप दिया था।

निष्कर्ष यह कि कैकेयी ने मंथरा से कहा कि तू बुद्धिमान है तूने अच्छी योजना बतलाई और मैं राजा की ज्ञान के बल पर रक्षा करती थी और वह ज्ञान जिस प्रकार मेरे पास पहुँचा है उसे सुना।

خیرخواه نیست برهمنی بود پارچه کهنه پوشیده و در ریش او کاه دمیده و تمام وجود بنجاست
آلوده و پیرشن از نادانی بر و خنده کردم او پسند و خوشوقت شد مرا گفت انچه بگوئی کنم
گفتم من هیچ نخواهم تو بر من مهربان باش او از مهربانی این بید یعنی علم مرا داد که راجه را محافظت
کردم و نور است میکوئی رام هر چند بهرت را میخواهد بعد چو راج خراب خواهد کرد درینجا صورت
کیکئی بطور سابق با لباس دیگر و منهر انشسته و سخن میگوید و صورت خانه و صورت چاه و جانوران

مثل طوطی و هنس و طاوس و کرونج و زنان تشکیل

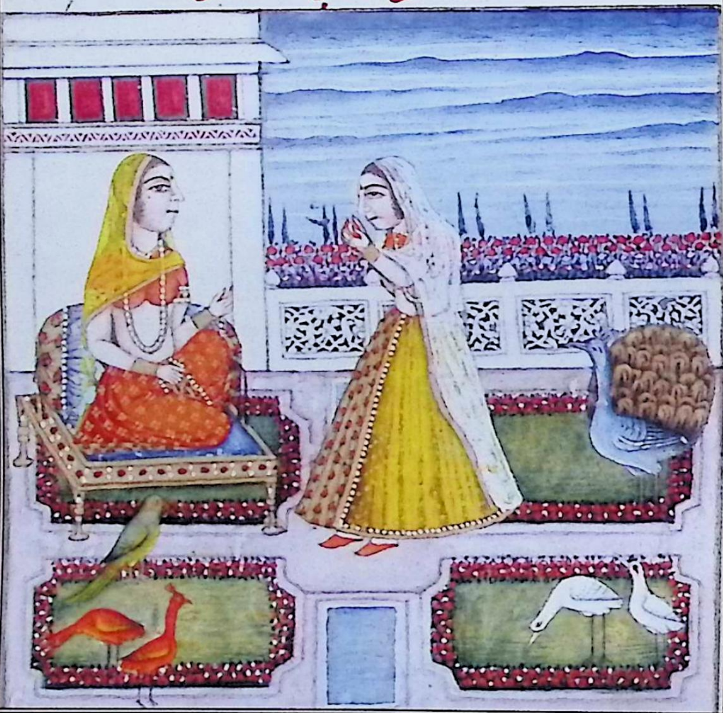

तेरी तरह मेरा और कोई शुभचिन्तक नहीं है। एक ब्राह्मण था पुराने कपड़े पहने हुए, दाढ़ी उसकी खूब बड़ी घास के समान, पूरा शरीर मिट्टी से भरा हुआ, बूढ़ा हो चला था मैं अपनी मूर्खता से उस पर हँस पड़ी वह प्रसन्न हो गया मुझसे कहने लगा तू जो कहेगी मैं करूँगा। मैंने कहा मैं कुछ नहीं चाहती, तुम मेरे प्रति दयालु हो जाओ उसने दया से मुझे यह ज्ञान दिया कि मैंने राजा की रक्षा की। तू सच कहती है राम यद्यपि भरत को प्रिय रखता है लेकिन उत्तराधिकारी बनने के बाद भूल जायेगा।

यहाँ कैकेयी का यथावत चित्र है लेकिन दूसरे परिधान में, मंथरा बैठी बातें कर रही है और महल का चित्र है कुएं और पशुओं, तूती, हंस, मोर और सुन्दर स्त्रियों का भी चित्र है।

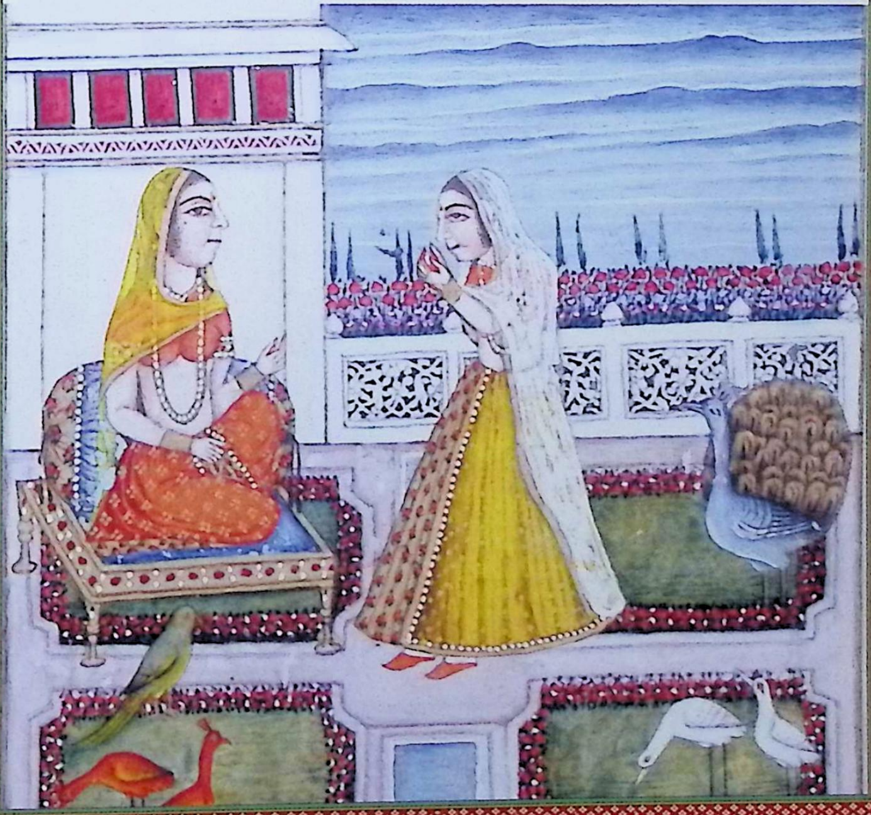

سرکت ۱۲ کیکی از مهربانی بامنتهرا کوندل گوش خود برآورده داد و گفت که مثل تو در زمانه
کسی نیست و تو خیر خواه منی تو با این خوبی که روی مثل نیلوفر و سینه تو پیچیده و کتف تو
بلند و ناف تو کم نما و ران تو پهنا و انگشت پای تو دراز ست و پارچه سفید و ازین بیشتر کار
خواهی بود و آنچه دولت منست متعلق تو خواهد شد و بعد رفتن رام بصحرا و راج یافتن بهرت
مالا طلا بتو خواهم داد و تمام وجود ترا بطلا آراسته خواهم نمود و برای پیشانی تو ٹکیه
خواهم ساخت و پارچه های نیکو خواهم بخشید برخیز و راجه را حال من بنما و هاری که بقیمت لکها بود
بمنتهرا داد و با او بخانه غمکده رفت و بر زمین خفت و گفت مرا پارچه و زیور و طعام هیچ نمی باید تا رام بصحرا
نرود و بهرت جو راجه نشود من ازینجا بر نمیخیزم و زیور و پارچه از تن دور کرد و چون بیوه ها یک بینی
یعنی یک نغوله بست مانند کنیز عورت یا آفتاب در تیرگی باشد درینجا کیکی در غمکده با لباس زبون
پارچه های خوب پاره پاره کرده موی پریشان افتاده و با کس سخن نمیگوید و نمیشنود

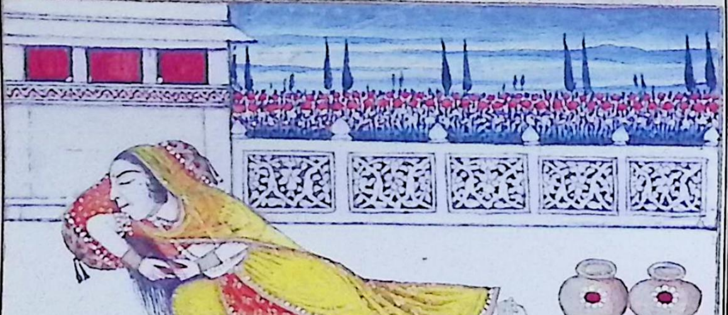

सर्ग–१२

कैकेयी ने दया भाव से अपने कान की बाली उतारकर देते हुए कहा कि तुझ जैसा संसार में कोई नहीं है और तू मेरी शुभचिन्तक है। तू इस गुण के साथ कि तेरा मुख नीलोफर जैसा है, तेरी छाती जटिल, तेरे कंधे ऊँचे, तेरी नाभि कम, तेरी जांघे लम्बी और तेरे पाँव की उंगलियाँ लम्बी हैं। तेरा वस्त्र श्वेत हैं तू आज से मेरी सहयोगी होगी और जो कुछ मेरा धन है उसकी जिम्मेदार तू होगी। राम के जंगल चले जाने और भरत को राज्य मिल जाने के बाद मैं तुझे सोने की माला दूंगी। तेरे शरीर को सोने से सुसज्जित कर दूंगी और अच्छे-अच्छे वस्त्र दूंगी। उठ और राजा को मोरी दशा दिखा। एक माला जिसका मूल्य लाखों था मंथरा को दिया और शोक भवन में जाकर भूमि पर सो गई तथा कहा कि मुझे वस्त्र, आभूषण एवं भोजन कुछ नहीं चाहिए जब तक कि राम जंगल न चले जायें और भरत उत्तराधिकारी न बन जायें। मैं यहां से नहीं उठूंगी और उसने आभूषण तथा वस्त्र उतार दिये, विधवा स्त्रियों के समान एक साड़ी बाँध ली जैसे कि वेश्यायें और देवता अंधकार में होते हैं।

यहाँ कैकेयी कोप भवन में फटे पुराने वस्त्रों में बाल बिखराये हुए है न किसी से बोलती है, न किसी की सुनती है।

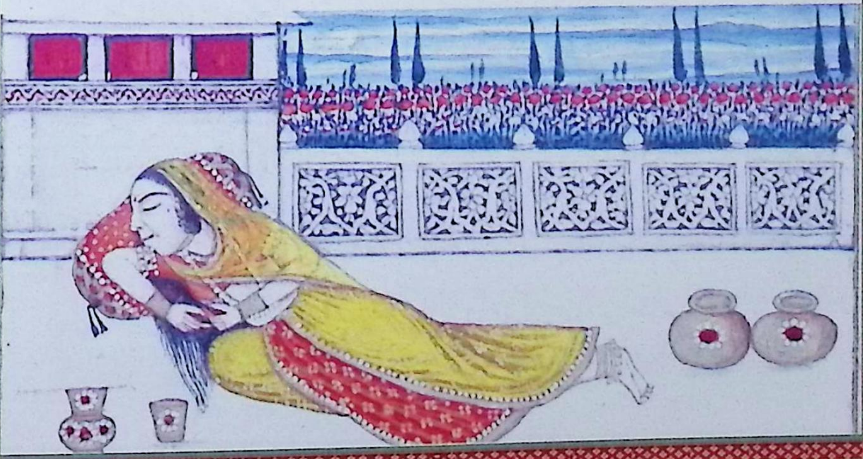

سرگ راجه آنروز حکم جوراج رام فرموده ناگاه در خانه کیکئی که مثل ابر سفید یا همچو ماه ظلمت بر روا

و مجمع طوطی و طاوس و کرونج و هنس و سازهای نوازش درانجا موجود بود و اشجار که همیشه

کلدار باشند و از چاه و باولی نیز پیراسته و از طلا و عاج باقسام جواهر مرصع آراسته

و انواع اطعمه و اشربه مهیا و زنان شکیل باپرایه و پارچه نیکو بخدمت برپا بود و داخل شد

و مغلوب غلبه شهوی شده کیکئی را هم گفت و یاد کرد زیرا که او درآنوقت کاهی غیر حاضر نشده بود

دارنده چتر عرض کرد که او در غمکده نشسته راجه بواسطه آنکه مرد پیر را زن جوان از جان

عزیزتر باشد درانجا رفته دید که چون شاخ شکسته بر زمین افتاده چون فیل کلان از دست اورا

تلمیس کرده پرسید که چرا چنین خسته هستی اگر آزار است مرا طبیبان کامل نوکراند علاج تو کنند

اگر کسی بد کرده پس بگو کدام دشمن است و کدام دوست فکر مکن من و آنچه مراست همه در اختیار تست

از تو عزیزتر هیچ نیست جان خود را اگر خواهی میدهم سوگند نیکی تست آنچه خواهی میکنم زر و گوهر آنچه

خواهی بخواه کیکئی راجه را خسته تیر شهوت دانسته گفت نه من آزار دارم و نه مرا کسی بد کرده سخنی

دارم و آن اینست که با وکن در جنگ دیوواسر ترا که زخمی بودی از زور علم محافظت کردم تو بهوش آمده

مراد و بر دادی حالا آن هر دو بر مرا بده و اگر انچنان نکنی حالا خود را اهلاک میکنم راجه در ان زمان

که مفتون کیکئی بود تبسم کرده گفت مرا هیچکدام از تو و رام پسر کلان من عزیزتر نیست

سوگند رام که انچه خواهی میدهم بگو کیکئی گفت اگر سوگند خوردی میگویم و اندر و غیره

सर्ग-१३

राजा उस दिन राम को उत्तराधिकारी बनाने की घोषणा करके कैकेयी के महल में, सफेद बादलों के मध्य चन्द्रमा की भाँति प्रवेश किया। जहाँ तोते, मोर, हंसों का समूह था और ऐश्वर्य की सब वस्तुएँ थीं। पेड़ जो सदा फलों से लदे रहते हैं कुएँ और तालाब से सुसज्जित था। सोने, हाथी दाँत और विभिन्न प्रकार के रत्नों से सुसज्जित था। विभिन्न प्रकार के भोजन और पेयजल थे। सुन्दर स्त्रियां आभूषण व वस्त्रों से सुसज्जित सेवा पर तैनात थीं। कामवासना के अधीन होकर राजा ने कैकेयी को याद किया क्योंकि वह इस समय वहाँ उपस्थित नहीं थी। महल के संरक्षक ने राजा से निवेदन किया कि वह कोप भवन में बैठी हुई है। राजा ने इस कारण कि बूढ़े पुरुष जवान स्त्रियों को प्राण से अधिक प्रिय रखते हैं वहाँ जाकर देखा कि टूटी हुई टहनी के समान भूमि पर पड़ी है। वृद्ध हाथी के समान उसको हाथ से छूकर पूछा कि इतनी दुखी क्यों हो ? यदि कोई रोग है तो मेरे पास योग्य वैद्य हैं, इलाज करेंगे। यदि किसी ने बुरा कहा है तो बताओ कौन शत्रु है ?और कौन मित्र है ?चिन्ता मत करो मैं और मेरा जो कुछ है वह सब तुम्हारे अधिकार में है, तुम से अधिक कोई प्रिय नहीं है। यदि तुम कहोगी तो मैं अपनी जान भी दे दूँगा तुम्हारे अच्छे कार्यों की सौगन्ध जो कुछ तुम चाहोगी मैं करूंगा। धन दौलत जितना चाहिए ले लो। कैकेयी ने राजा को कामवासना के अधीन जानकर कहा : न कोई रोग है और न किसी ने बुरा भला कहा है मैं बस एक बात रखती हूँ और वह यह है कि याद कीजिए कि देवों व असुरों के युद्ध जब आप घायल हो गये थे तो मैंने आपकी ज्ञान के बल पर रक्षा की थी। आपने होश में आकर मुझे दो वचन दिये थे अब वह दोनों मुझे दे दो और यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो मैं आत्महत्या कर लूंगी। राजा ने जो उस समय केकेयी पर आसक्त था मुस्कुराते हुए कहा मुझे कोई भी तुमसे और मेरे बेटे राम से अधिक प्रिय नहीं हैं। राम की सौगन्ध जो कुछ तुम माँगोगी मैं दूँगा कहो। कैकेयी ने कहा जब आपने सौगन्ध खा ली है तो कहती हूँ

دیوتا و ماه و آفتاب و دیگر کواکب و هوا و شب و روز و اطراف و زمین و کندهرپ

و راچهس و پشاج جن وغیره ذیحیات همه شاهد اند و میدانند که تو سوگند خورده و بر میدهی

اول اینکه انچه برای جوراج رام مهیا کرده از همین ساز و سامان بهرت را جوراج کنی و دوم

آنکه تا چهارده سال رامچندر اجن و جتا داشته باشد و در صحرا وند کارن بگذراند اگر راجه

تو راست گو هستی پس گفتار خود را نگاهدار در اینجا صورت کیکئی بلباس زبون پوست آهو بر زمین خفته

و صورت غمی نه و راجه دشرتهه نزد او رسیده از دست بدار میکند و نمودار ی وقت شب و کواکب

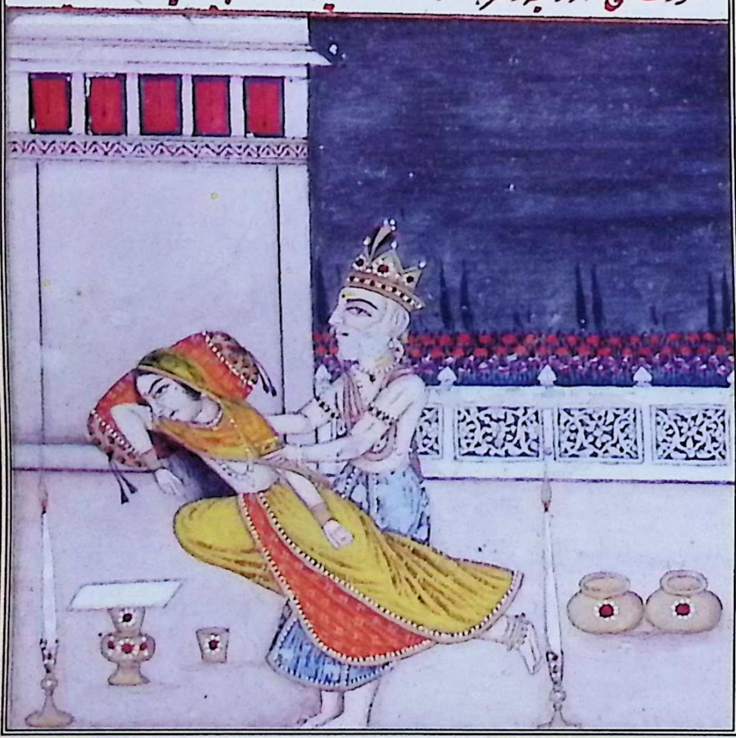

इन्द्र आदि देवता, चांद सूर्य और दूसरे सितारे, वायु, रात और दिन, भूमि के चारों ओर गन्धर्व राक्षस और पिशाच आदि जीव जन्तु सब साक्षी हैं और सब जातने हैं कि आप सौगन्ध खा रहे हैं और वचन दे रहे हैं। सबसे पहली बात यह है कि जो कुछ आपने उत्तराधिकारी राम के लिए किया है उन्हीं साजसज्जा के साथ भरत को भी उत्तराधिकारी नियुक्त कीजिए । दूसरी बात यह है कि चौदह वर्ष तक के लिए रामचन्द्र को हिरन की खाल पहनकर वन में वनवास के लिए कहिए। राजा यदि आप सत्यवादी हैं तो अपनी बात का मान रखिये।

यहाँ कैकेयी का चित्र है खराब वस्त्रों में भूमि पर सोई हैं और कोप भवन का चित्र है तथा राजा दशरथ उसके पास पहुँचकर उसे हाथ से जगा रहे हैं एवं रात्रि के समय सितारों का निकलना।

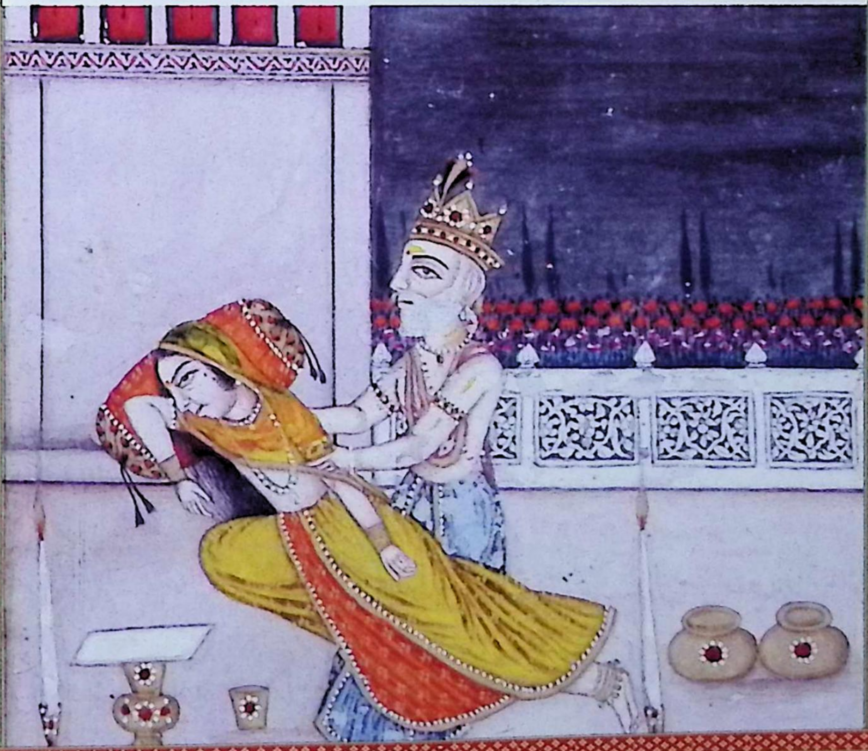

سرگ ۱۴ گفته فساد انگیز کیکیی شنیده فی الفور از اندیشه طپیدن گرفت و مبهوش شد
بر زمین افتاد و بعد از ساعتی بخویش آمده مثل آهو که سمت ماده شیر بیند سوی کیکیی دیده گفت
لعنت برین گفتار تو بشنیک بدروش و خراب کننده نسب منی رام را پیوسته بجای مادر دیده اند
او چه کرده است تو بصورتِ دختر راجه مار هستی که کوشلا و سومترا بلکه زندگی خود بگذارم
اما سوای رام که عزیزتر است اگر ساعتی نمی بینم مبهوش میشوم جهان بی آفتاب و گیاه
بی آب باشد اما زندگی من بی رامچندر نباشد این اندیشه بگذار که بپای تو می افتم و رام
خدمت ترا زیاده از بهرت میکند و بسیار هزاران عورات خانه مرا دار و گیر از دولت
رام است بعضی از راست گوئی بزرگ میروند و بعضی از رحم بر حال غریبان و بعضی از خدمت
اوستادان و بعضی از زور علم کمانداری یعنی استر دانی در رام اینهمه هست و ریاضیت و استعد
و تسخیر حواس و ترک دنیا و دوستی کردن با همکنان و پاکی ظاهر و باطن و غربت و همیشه
شدن بخدمت استادان اینهمه در رام هست در وجه بد دیده او بشوکت مانند مهر است آگهه
چرا دلِ تو سخت است چرا ترا عاطفت نیست ترا کدام بد اندیش این عقل داد که باعثِ هلاک من است
بر من پیر عمر کم کرده و کتایک رحمت کن و آنچه هر چهار طرف زمین هست از همه ترا امید هم ود نشسته
میگویم ازین اراده باز آ بدینسان راجه زاری میکرد مانند راجه ججاتی که بعد شکستن پیون
از آسمان افتد یا مانند آهو که از کهرم گریزد بار دیگر کیکیی بغضب گفت اگر قبل ازین بر داده

सर्ग-१४

राजा कैकेयी की पीड़ादायक बात सुनकर तुरन्त भय से काँपने लगे और अचेत होकर भूमि पर गिर पड़े। कुछ समय बाद होश में आकर हिरन के समान, जो शेरनी की ओर देख कर व्यथित हो जाता है, कैकेयी की ओर देखकर कहा! तुम निःसंदेह बुरे चरित्र और मेरा वंश नष्ट करने वाली है। राम सदा तुम्हें माँ के समान समझते हैं। उन्होंने क्या किया है ?तू राजा की पुत्री के रूप में सांप है। मैं कौशल्या, सुमित्रा बल्कि अपना जीवन त्याग दूंगा लेकिन यदि राम की ओर जो मुझे सबसे अधिक प्रिय है यदि थोड़ी देर भी नहीं देखता हूँ तो बेहोश हो जाता हूँ। संसार बिना सूर्य और घास बिना जल के रह सकती है लेकिन मैं बिना राम के नहीं रह सकता। तू यह बात मन से निकाल दे कि मैं तेरे पैर पड़ूँगा। राम तुम्हारी सेवा भरत से अधिक करते हैं और मेरे महल की हजारों स्त्रियाँ राम के अधीन हैं। अर्थात् सत्यता से स्वर्ग में जाते हैं कुछ लोग निर्धनों पर दया करने के कारण से, कुछ गुरुओं की सेवा के कारण से कुछ धनुषबाण के ज्ञान अर्थात् अस्त्र वेद के बल से, लेकिन राम में यह सारे गुण हैं। सत्यवादी, तपस्या इन्द्रियों पर दमन, संसार त्यागना, सबसे मित्रता करना, आन्तरिक एवं वाह्य पवित्रता और अपने गुरू की सेवा के लिए तत्पर रहना, यह सारे गुण राम में हैं। तुमने उसके अन्दर क्या बुराई देखी है ? वह भव्यता में महर्षि के समान है तेरा दिल क्यों कठोर है? क्यों तेरे भीतर दया नहीं है तुझे किस दुष्ट ने यह बात बतायी है, जो मेरी मौत का कारण है। तूने मुझ बूढ़े की आयु कम कर दी है और मौत तक पहुँचा दिया है। दया कर और चारों ओर जो मेरी भूमि है वह सब मैं तुझे देता हूँ तथा करबद्ध कहता हूँ कि इस विचार को छोड़ दे। राजा इस प्रकार विनती कर रहा था जिस प्रकार ययाति जो टूटने के बाद आसमान से गिरता है या हिरन के समान जो शेर से भागता है पुनः कैकेयी ने क्रोध से कहा, यदि आपने इससे पहले मुझे वचन दिया है

پس تامل چیست چگونه دهرتما هستی کسی اول کسی را بر داده باشد و بران عمل نکند او با تمام قبیله
بدوزخ رود چنین میگویند راجه شب عوض کبوتر گوشت خود را بشاهین داد و بسرگ رفت
و الک چشم داد نیک مکان یافت و دریائی شور تا جائی که ساحل خود مقرر کرده افزون نمیشود
تو چرا از گفته خود بر میگردی میخواهی رام را راج داده با کوشلا بعیش گذرانی خواه دهرم خواه
پاپ خواه راست خواه دروغ انچه شد شد نوع دیگر نمیشود اگر رام را راج دهی من حالا زهر خورده
بحضور تو میمیرم سوگند بهرت میخورم که مرا هیچ وجه آرام نیست غیر از رفتن رام بصحرا راجه این را
شنیده از غم بیهوش شده بر زمین افتاد مانند مضطرب و بی شعور دم سرد کشید و گفت
این سخن نامعقول رو بروی من میگوئی و شرم نداری من چگونه برام خواهم گفت که بصحرا برو و این
سخن را بخاطر آورده در دل خراب میکردم مثل کور که در تاریکی افتد در چهار اطراف و جوانب
مرا چه خواهند گفت و من با آنها و دیگر مردم چه خواهم گفت انچه حالا ندامت میکشم چنانچه کسی از اصطا
طعام ثقیل خوردن و تصدیع کشیدن و سیتا و سومترا و کوشلا چه خواهند گفت مردم مرا
در کوی و برزن لعنت کنند چنانچه برهمن شراب خوار را بعد مردن من و رفتن رام بصحرا تو با
بهرت آسودگی باش و نسب من هلاک کردی کوشلا اگر رام را نخواهد دید بعد من خواهد مرد
و سومترا نیز رام پسر من که دایم بر رتهه و فیل و اسپ سوار میشد چگونه در صحرا خواهد رفت و هنگام
خوردن خوشرو با حلقه زرین طعام خوب و لذیذ می آرند او چگونه ثمرات اشجار صحرا که تلخ و تیز

तो अब संकोच कैसा? आप कैसे धर्मात्मा हैं जो पहले किसी को वचन देते हैं और उसको पूरा नहीं करते वे अपने पूरे परिवार के साथ नरक में जाते हैं और लोग ऐसा कहते हैं कि राजा शैब्य ने कबूतर के बदले अपने मांस शाहीन पक्षी को दिया था वह स्वर्ग में गया और राजा अलर्क ने अंधे ब्राह्मण को आँखें दीं तो अच्छा स्थान पाया। समुद्र ने जहाँ तक अपनी सीमा निर्धारित किया उससे आगे नहीं बढ़ती फिर आप क्यों अपने वचन से फिर रहे हैं ? आप चाहते हैं कि राम को राज्य देकर कौशल्या के साथ आनन्द करें। चाहे धर्म, चाहे पाप, चाहे सत्य, चाहे झूठ जो भी होगा दूसरी तरह नहीं होगा। यदि आप राम को राज्य देते हैं तो मैं अभी विष खाकर आपके सामने प्राण त्याग दूंगी। मैं भरत की सौगन्ध खाती हूँ कि मुझे किसी पल आराम नहीं है बिना राम के वन जाने के। राजा यह सुनकर और दुख से बेहोश होकर भूमि पर गिर पड़े तथा व्याकुल होकर सांस खींचकर कहा तू यह अनुचित बात मेरे सामने कह रही है और तुझे लज्जा भी नहीं आ रही है। मैं राम से कैसे कहूँगा कि वन चला जा? मैं यह बात मन में भी सोचकर पाप करूँगा। अन्धे के समान जो अंधेरे में गिर जाए और आसपास के राजा मुझे क्या कहेंगे ?और मैं उनसे और दूसरे लोगों से क्या कहूँगा? मुझे इस समय ऐसा पश्चाताप हो रहा है जैसे कि किसी गरिष्ठ भोजन खाने और सरदर्द होने से। सीता, सुमित्रा और कौशल्या क्या कहेंगे लोग मुझे गलियों में अपमानित करेंगे, जैसे शराब पीने वाले ब्राह्मण को अपमानित करते हैं। मेरे मरने और राम के वन चले जाने के बाद तू भरत के साथ आराम से रह। तूने मेरे परिवार का नाश कर दिया। कौशल्या यदि राम को नहीं देखेगी तो मेरे बाद वह भी मर जायेगी और सुमित्रा भी। मेरा पुत्र राम जो सदा रथ, हाथी और घोड़े पर सवार होता था कैसे वह वन में जायेगा? जो आकर्षक व भोजन स्वादिष्ट खाता है। कैसे वह जंगली फल जो कड़वे, तीखे और निस्वाद होते हैं खायेगा!

و بدمزه باشند خواهد خورد لعنت بر عورات است که دغاباز و خودکام همیشه اندنی نیز مرا
نمیگویم بغیر والده بهرت من روی خوب رام را که بکوندل آراسته است دیده خوشوقت میشوم
بی او چگونه خواهم بود بغیر آفتاب شاید روز هم شود و بی بارش گاه هم روید اما بی رام من زنده نمانم
مثل دیوانه بدین آیین راجه زاری مینمود بدینگونه آن شب آخر شد سرگ ۱۵ راجه را بتقصیر نام آن شب
مثل حجابی که بعد شکستن بون از آسمان افتد بگذشت و بطلبیش طرف کیکئی دیده گویا گشت که بعد مردن من
و رفتن رامچندر تو راج کن و باز کیکئی را که دست بسته ایستاده بود گفت برو من ترا نخواهم دید و کیکئی از صاف دلی
و بد درونی گفتار و زاری راجه شنیده بر آن هیچ عمل نمیکرد درینجا صورت راجه دشرته غمناک و بطور مسکینیست
دیوانگان بر زمین افتاده و صورت کیکئی بطور سابق روبروی راجه ایستاده و راجه دور ازد

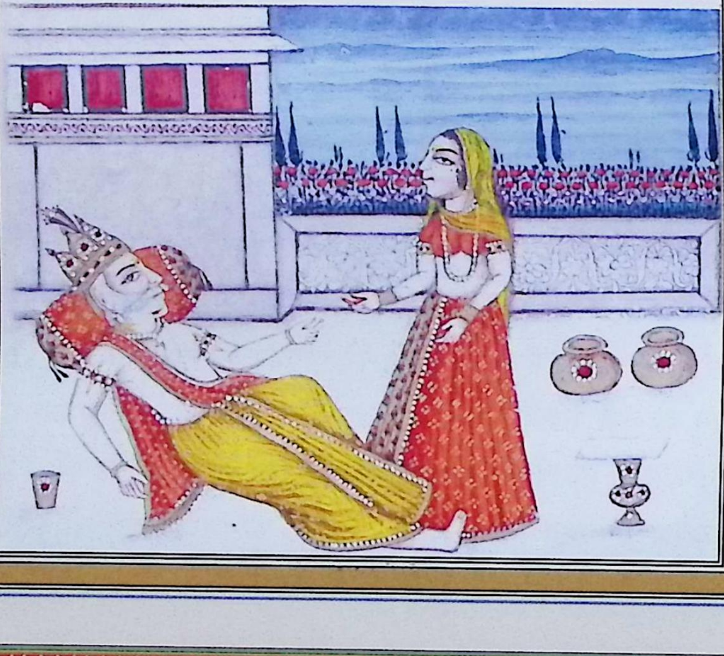

ईश्वर का अभिशाप हो उन स्त्रियों पर जो धोखेबाज और स्वार्थी होती हैं मैं सबको नहीं कहता भरत की माता के अतिरिक्त। मैं राम का सुन्दर मुख जो कुण्डल से सुसज्जित है देखकर प्रसन्न होता था। अब मैं उसके बिना कैसे रहूँगा, बिना सूर्य के दिन हो जाए और बिना वर्षा के घास भी उग आये लेकिन मैं बिना राम के जीवित नहीं रहूँगा। पागलों की भाँति राजा विलाप कर रहे थे और इसी प्रकार वह रात्रि समाप्त हुई।

सर्ग-१५

राजा की वह रात्रि बड़े कष्ट से बीती। वह ययाति के समान थे जो पुण्य समाप्त होने के बाद आसमान से गिर पड़ता है। क्रोध से कैकेयी की ओर देखकर कहा कि मेरे मरने और राम के जाने के बाद तुम राज्य करना। फिर उसने कैकेयी से कहा जो हाथ जोड़े खड़ी थी कि जा, मैं तुझे नहीं देखूंगा । कैकेयी राजा की बात और विलाप सुनकर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं कर रही थी। यहाँ राजा दशरथ का चित्र है जो दुखी, अर्ध विक्षिप्त से, पलंग पर पड़े हैं और कैकेयी का चित्र जो यथावत राजा के सामने खड़ी है तथा राजा हाथ से उसे दूर कर रहा है।

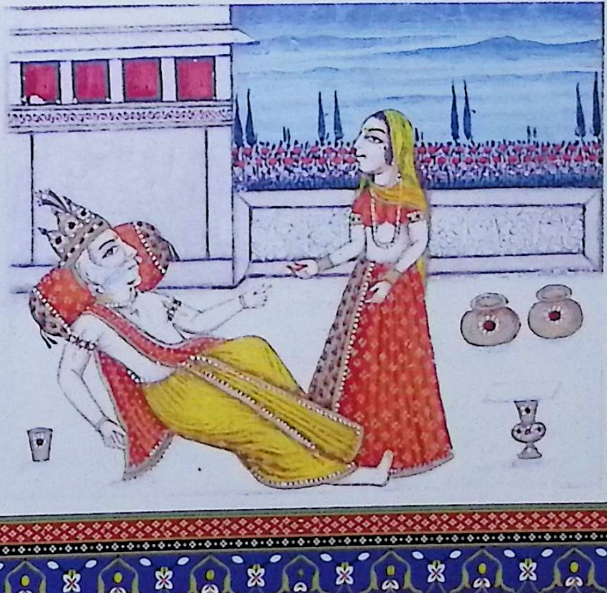

کب ۱۶ راجه را که بغم پسر مبتلا بود و بیهوش بر زمین افتاده باز کیکئی گفت ای راجه بر جاده
راستی مستقیم شو زیرا که راستی و درستی را دانند کان دهرم کلان میگویند رام را
بصحرا روان کن کیکئی و راجه همه شب درهمین گفت و شنود گذرانند و درین شب رام با سیتا
از برت و دهرم یکجا ماند صبح پگاه بادفروشان و کبت گویان گفتار بتعریف رام آغاز
کردند و رامچندر پرستش سحری کرده بتعریف مده سودن ساخته و به پوجا ناراین دیو
[illegible]
پرداخته برهمنان را نمسکار کرد و سیتا و رام هردو براحت و آرام منتظر نشستن راجه
بر سنگهاسن یعنی تخت و طلب او نشستند درینجا صورت رام جیغه بر سر و مالا در گلو
و سیتا با پیرایه نیکو برابر نشسته محل [illegible] که درانجا بر دروازه بادفروشان و سواری رام

بنزد پدر رفتن تیار است

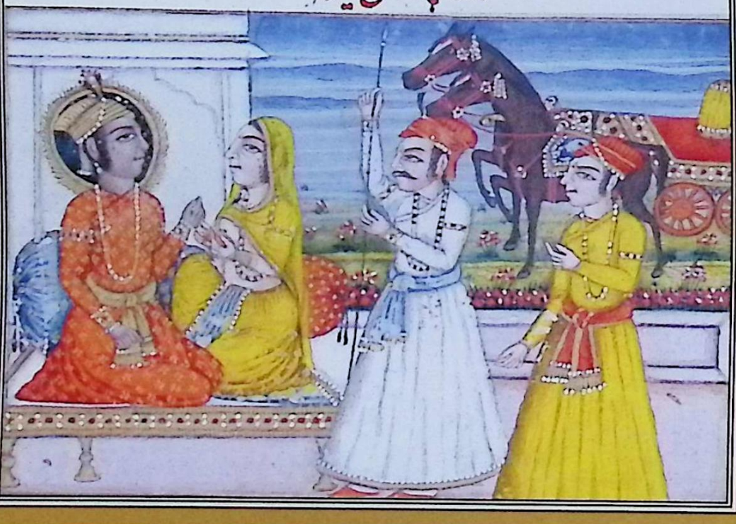

सर्ग-१६

राजा जो पुत्र के दुख में ग्रस्त थे और बेहोश होकर पृथ्वी पर पड़े हुए थे। कैकेयी ने फिर कहा हे राजा ! सत्य पर दृढ़ रहो क्योंकि सत्य और उचित को जानने वाले को बड़ा धर्म कहते हैं। राम को वन भेज दो। कैकेयी और राजा पूरी रात्रि इस कहने सुनने में लगे रहे और उस रात राम सीता के साथ व्रत और धर्म से एक हुए। प्रातः कथाकारों ने राम की प्रशंसा आरंभ की, रामचन्द्र ने प्रातः पूजा करके नारायण की प्रशंसा की और नारायण देव की पूजा में व्यस्त होकर ब्राह्मणों को नमस्कार किया। राम और सीता दोनों निश्चिन्त होकर राजा के सिंहासन पर बैठने और अपने बुलाने की प्रतीक्षा में बैठ गये।

राम का चित्र, शिर पर मुकुट, गले में माला और सीता सहज भाव से बराबर में बैठी हुई तथा राम का महल जहाँ द्वार पर दरबान और राम की सवारी बाहर निकलने को तैयार है।

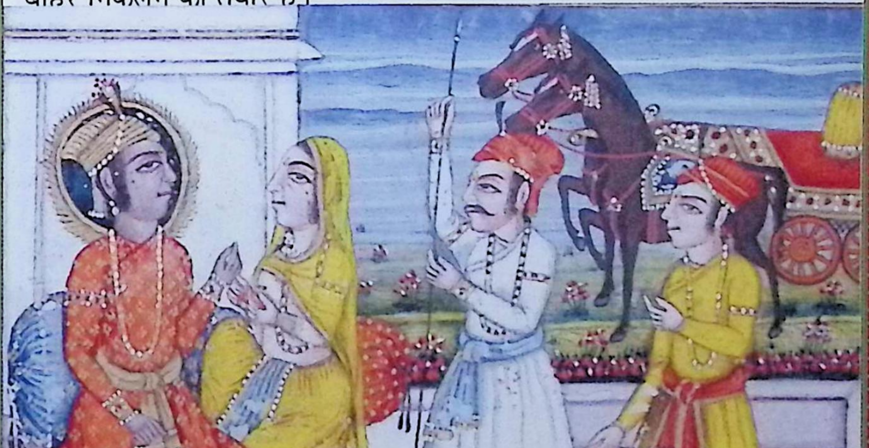

سرگ ۱ سومنتر وزیر راجه دسرته بروقت آمده بخوشوقتی تمام پیش راجه اندرون رفت

و دربانان بجهة آنکه عزیز تر راجه بود او را منع نتوانستند کرد و در اثنا راه دید که نشست وغیره

برهمنان رسیده اند و جمیع نوکران و وزرا برابر در راه راجه صف کشیده اند تمام راه را از نشانها

و پتاکاها زیب داده اند زنان و مردان بازدحام ایستاده و گلهای گوناگون پراکنده شده

و بوی دود صندل و اگر بآسمان رفته سومنتر این شنیده و دیده داخل محل شد دید

که سامان جوراج رام ساخته همه منتظر اند و میگویند که آفتاب برآمد راجه چرا درنگ میکند

چون اندر خوابگاه رفت را خفته دیده وصف کردن گرفت ای راجه شب بخیر بگذشت

چنانچه از بدر آمدن ماه بدریای شور ترقی میکند تو هم ترقی پذیر شو چنانچه اندر و برن و افتاب

بدولت زینت پذیر اند تو هم همچنان باش سومنتر چند میگونه بسیار گفت راجه را غمگین تر

یافت در فکر شد که راجه چرا متوجه نمیگردد درین اثنا کیکئی اصل سخن در نهفته با سومنتر

چنین بر زبان راند که راجه را امشب به بیداری گذشته رتهه را شتاب ببر و رام را بیار

سومنتر این را شنیده اسپان را با رتهه پیوند داده بآوردن رامچندر روانه شد

درانجا صورت خوابگاه و درانجا راجه غمگین بر تخت خفته و صورت کیکئی که درانجا نشسته

و صورت گلها گوناگون و عود سوز که از ان دود میخیزد و صورت سومنتر وزیر که

متفکر رو برو ایستاده سخن میگوید و صورت رتهه و اسپان و غیر آن

सर्ग-१७

राजा दशरथ के मंत्री सुमन्त्र समय पर आकर प्रसन्नतापूर्वक राजा के निकट अन्दर गये और रक्षक इस कारण उनको मना नहीं कर सकते थे क्योंकि वह राजा को प्रिय था उसने मार्ग में देखा कि वशिष्ठ आदि ब्राह्मण वहाँ उपस्थित हैं समस्त सेवक और मंत्रीगण राजा के मार्ग में पंक्ति बाँधे हुए हैं। समस्त मार्ग को झण्डों और पताकाओं से सुसज्जित कर रखा गया है। अन्दर स्त्रियाँ और पुरुष भीड़ लगाए हुए हैं और भाँति-भाँति के पुष्प बिखरे हुए हैं चन्दन की सुगन्ध आकाश तक जा रही है। सुमन्त्र यह सुनकर दौड़ते हुए महल में प्रविष्ट हुए उन्होंने देखा कि राम के राजकुमार घोषित किये जाने की समस्त तैयारी है और सब प्रतीक्षारत हैं तथा कह रहे हैं सूर्य निकल आया, राजा क्यों विलम्ब कर रहे हैं ?जब वह शयन कक्ष के अन्दर गये तो राजा को सोया हुआ देखकर पूछने लगा, महाराज रात्रि कुशलपूर्वक बीती ?जिस प्रकार चन्द्रमा के निकलने से समुद्र में उफान आता है उसी प्रकार आप भी उन्नति करें। अन्दर व बाहर सूर्य चमक रहा है आप भी वैसे हों। सुमन्त्र ने इस प्रकार बहुत कुछ कहा उन्होंने राजा को दुखी पाया तो उन्हें चिन्ता हुई कि राजा आकर्षित क्यों नहीं हो रहे। इसी बीच कैकेयी सच्ची बात छुपाकर सुमन्त्र से इस प्रकार बोली कि राजा की यह रात्रि, जागते हुए व्यतीत हुई है रथ लेकर शीघ्रता से राम को यहाँ लाओ। सुमन्त्र ने यह सुनकर घोड़े रथ में जोतकर दौड़ाए और रामचन्द्र को लाने के लिए विदा हुए।

शयनकक्ष का चित्र दुखी राजा शय्या पर सोए हैं और कैकेयी का चित्र जो वहाँ बैठी है। विभिन्न प्रकार के फूलों का चित्र जिनसे धुआँ उठ रहा है और सुमन्त्र मन्त्री का चित्र जो सामने चिन्तित से बैठे वार्ता कर रहे हैं तथा रथ, घोड़ों आदि का चित्र।

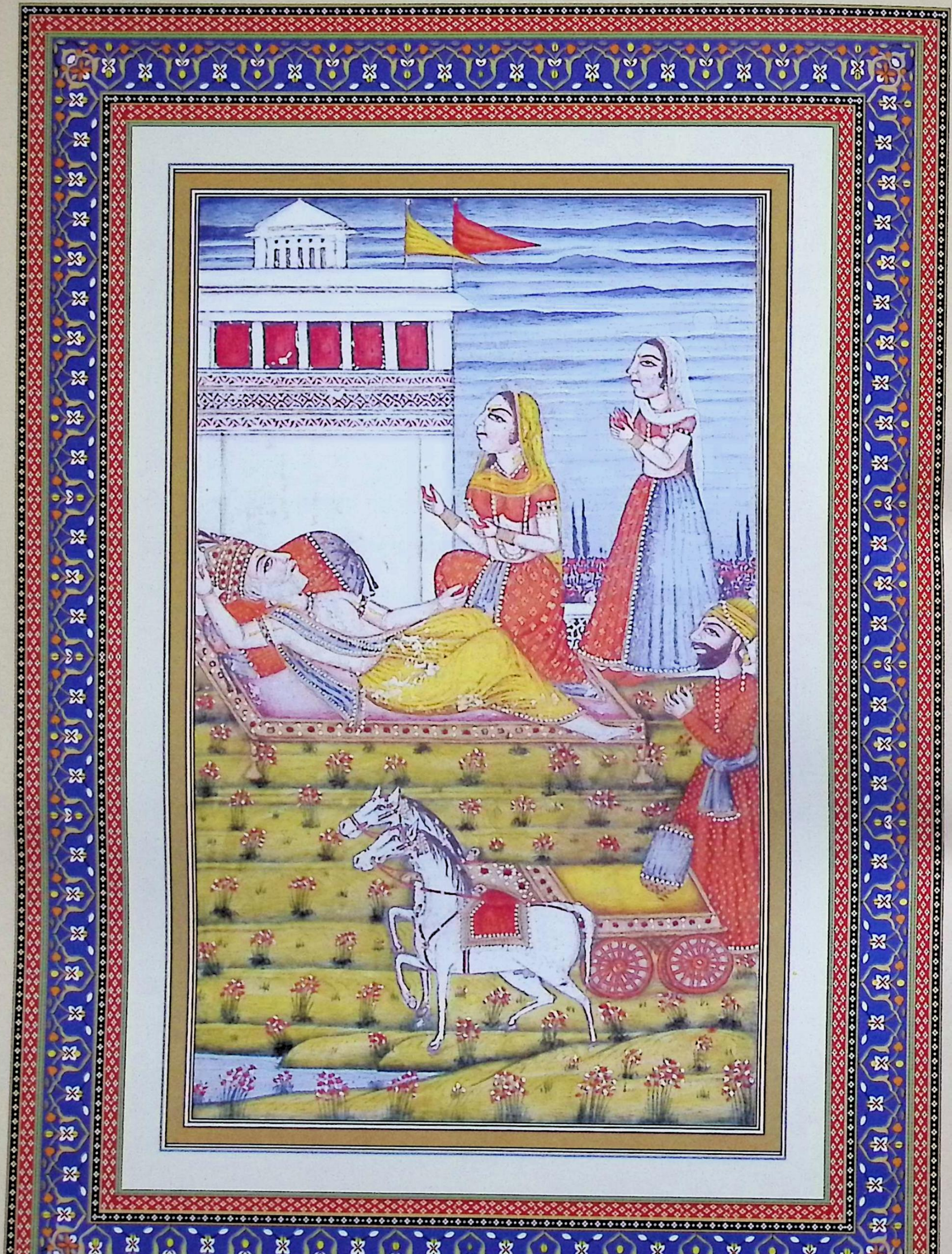

مرکب چون شتر

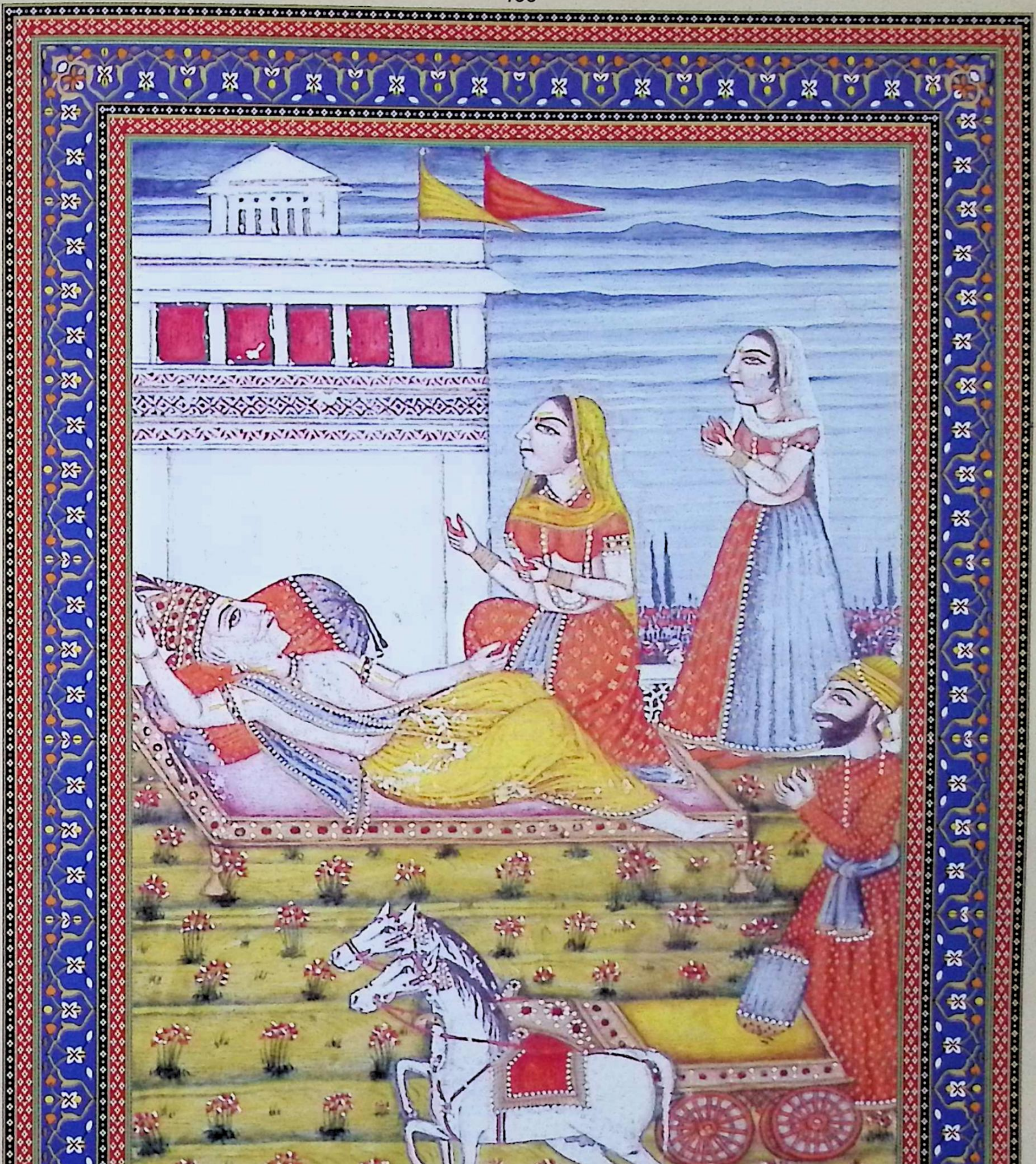

سرگ چون سومنتر برآمد پروهتان وغیره گفتند که باز برو و راجه را از آمدن ما خبر کن که سامان جوراج رام همه مهیاست و آفتاب برمی آید درنگ نباید کرد و آنچه سامان موجود ست نیز عرض کن درخت اودنبر یعنی گولر و بهدر پتهه که از طلاست و آب سنگم گنگا و جمنا وغیره دریاهای پونیت و آب هر چهار سمدر و جمیع تخم و جمیع خوشبوئی و جواهر اقسام اقسام و سواریهای هشل پالکی و نالکی و رتهه وغیره و پارچه‌ها و پیرایه‌های زرین و شمشیر و درخت مرجان و نیلوفر و کلس یعنی سبوهای زرین آراسته و روچک و روچنا و لاج و شیر و روغن و شهد و چندرکهی و سورج مکهی با چوب طلا مرصع تیار کرده و چامر یعنی قسطاس و بیجن یعنی بادکش مرصع و چتر مرصع با مروارید و فیل مست سفید و اسپ سفید و تخت دختر از پیرایه‌ها آراسته و کنیزکان نوجوان یعنی طوائف بیشمار و کلها سفید و نی کمان و گاو و بارسن طلائی و سنگهاسن یعنی تخت و چرم شیر و سامان هوم وغیره و نقاره وغیره همه ساز نواختن و سوت و بادفروشان و ماکده و بندنه و اجاج و برهمن و گاو و بهایم و طیور و مردم شهر وغیره آنچه در نسب اچهواکو شده آمده همه موجود و مهیاست این را شنیده سومنتر بار دیگر نزد راجه رفت و بطریق آغاز سخن چنان گفت که اندر را چنانچه ماتلی سارتهی او تعریف میکند من ترا میکنم برخیز این همه سامان و ساز جوراج رام موجود است و مردم شهر و بیرون همه آمده اند و بنشست خود بار همنان نشسته بفرما

सर्ग-१८

जब सुमन्त्र बाहर निकले तो पुरोहितों आदि ने कहा पुनः जाओ और राजा को हमारे आगमन की सूचना दो कि राम के उत्तराधिकार के आयोजन की समस्त सामग्री तैयार है। सूर्य निकल चुका है अब देर नहीं करनी चाहिए और जो कुछ सामग्री है, उसके विषय में भी सूचना दे दो। गूलर की भद्रपीठ़ कलश जो सोने के हैं, गंगा जमुना आदि नदियों का जल है, समुद्रों का जल, समस्त बीज, समस्त सुगन्ध, विभिन्न प्रकार के रत्न और सवारियाँ जैसे पालकी, नालकी और रथ आदि, पाश्चे और मूल्यवान परिधान, मरजान नीलोफर पेड़ का दूध, सुनहरे कलश अर्थात् मटके चन्दन का तेल, चन्द्रमुखी, सूरजमुखी, सुनहरी टहनियों के साथ तैयार की गयी हैं और चामर अर्थात् कसतास, बचन अर्थात् बादकश, गुस्सा और मखारीद जड़े हुए चित्र, मस्त सफेद हाथी सफेद घोड़े और आठ सेविकाएँ सजी हुई और अनगिनत युवा वेश्याएँ, सफेद फूल, कमान और सिंहासन अर्थात् तख्त, शेर की खाल, और हवन आदि की सामग्री और नगाड़े आदि वाद्य यन्त्र बजाने वाले, कथा कहने वाले और प्रशंसा करने वाले चारण वन्दना, आचार्य ब्राह्मण, गऊ, पशु और नगर के निवासी आदि-आदि जो कुछ इच्छवाकु के परिवार में होता आया है सब उपस्थित एवं एकत्र हैं। यह सुनकर सुमन्त्र पुनः राजा के पास गया और इस प्रकार अपना कथन आरंभ किया कि जिस प्रकार इन्द्र की मातलि सारथी प्रशंसा करते हैं मैं आपकी प्रशंसा करता हूँ उठिये! यह सब सामग्री राम के उत्तराधिकारी बनाने की उपस्थित है। शहर और बाहर के सभी लोग आ चुके हैं, वशिष्ठ स्वयं ब्राह्मणों के साथ बैठे हुए हैं आप कहिए कि राम को उत्तराधिकारी बनायें।

که رام را جوراج نمایند چنانچه بی ماه شب و بی آفتاب روز باشند همچنان آن بارگاه شود که آنجا
راجه نباشد تصدیعه نیست برخاسته کارهای راج بکن راجه دشرته از غم خشم سرخ گرده چشم
گفت ای سومنتر چرا مرا میکشی و ازین سخنان جگر مرا سوراخ میکنی سومنتر این را شنیده
دست بسته قدری خود را انجو دکشید بار دیگر کیکئی عذاب کار براجه گفت این چه میگوئی
زود رامچندر را بطلب و بصحرا بفرست اگر اکوهستی چنان کن این وقت غم نیست بهرت را
جوراج بکن ناچار راجه به سومنتر گفت من خفته نیستم بحبل المتین راستی بسته ام زود رامچندر را
بیار و شتاب کار شو سومنتر بحیرانی و تفکر ازانجا برآمد و بر رتهه سوار شده برائی آوردن رام
بخانه او رفت در راه از همه ها نوید می شنید که حالا رام راج می یابد و امید جهانیان بر می آید
القصه بخانه رام آمد و آنخانه مثل کیلاس که خانه مهادیو ست دید دروازه بلند مهاکپات
یعنی تختهای زربفته کلان آراسته و دیوارها از زر و جواهر و بند رواره مرجان پیراسته مثل کوه سمیر
مزین و هر سو داهیهای زرین و مالاهای طلائی معقد و مردم هر طرف مروارید می افشانند
وانه خوشبوئیها مثل کوه ملاگیر معطر ست و سارس و طاوس بآواز خوش نوامیکنند و آهو و غیره
جانوران بازی مینمایند گویا خانه مهر و ماه و گبیر و اندر ست و باد فروش و سوت و لک نهیا
وغیره بتعریف در آمده اند در محل رامچندر که مانند باغ نیکوکاران بود در آمد درینجا صورت
سومنتر وزیر جوان سیاه ریش بر رتهه اسپان سوار و صورت خانه رام عالیشان و بلند

ونمودار

जिस प्रकार बिना चाँद के रात्रि होती है और बिना सूर्य के दिन होता है उसी प्रकार वह दरबार होता है जहाँ राजा नहीं होता है। कोई चिन्ता की बात नहीं है, उठकर राज्य का कार्य कीजिये। राजा दशरथ ने क्रोध से आँख लाल करके कहा, हे सुमन्त्र ! तुम मुझे क्यों मार रहे हो ?और इन बातों से मुझे बहुत पीड़ा हो रही है। सुमन्त्र ने यह सुनकर हाथ जोड़कर स्वयं सीधे हो गये। पुनः दुष्ट कैकेयी ने राजा से कहा, यह आप क्या कह रहे हैं राम को शीघ्र बुलाकर वन भेजिए, यदि आप सत्यवादी हैं तो यही कीजिये। यह शोक मनाने का समय नहीं है, भरत को उत्तराधिकारी बना दीजिये। विवश होकर राजा ने सुमन्त्र से कहा मैं सोया हुआ नहीं हूँ। सत्य के बन्धन से बँधा हुआ हूँ शीघ्रता से राम को लाओ और शीघ्र लाओ। सुमन्त्र वहाँ से आश्चर्य और चिन्ता के साथ बाहर निकले और रथ पर सवार होकर राम को लाने के लिए उनके महल में गये मार्ग में उन्होंने सबसे शुभ समाचार सुना कि अब राम को राज्य मिलेगा और संसार वालों की इच्छा पूर्ण होगी। अतः वह राम के महल में आये, जो सोने का पहाड़ है, जो महादेव का घर है को देखा। ऊँचे ऊँचे द्वार, बड़े-बड़े तख्ते, दीवारें रत्नों से सुसज्जित, लू-लू और मरजान से सजी हुई, समीर पहाड़ के समान सुसज्जित, चारों ओर सोने की मालाएँ, लोग चारों ओर सुगन्ध छिड़क रहे हैं जो मलयगिरि के समान सुगन्धित है। सारस, मयूर मधुर वाणी से कलरव कर रहे हैं और हिरन आदि पशु खेलकूद कर रहे हैं। जैसे यह घर चन्द्रमा और सूर्य के समान तेजस्वी कुबेर व इन्द्र का घर है। जहाँ कथा आदि कहने वाले प्रशंसनीय कविताएँ लेकर आये हैं और रामचन्द्र के महल में सुमन्त्र ने प्रवेश किया।

ونمودار و دربانان نشسته وزینت وزیب خانه از د مبوجا وغیره نمود

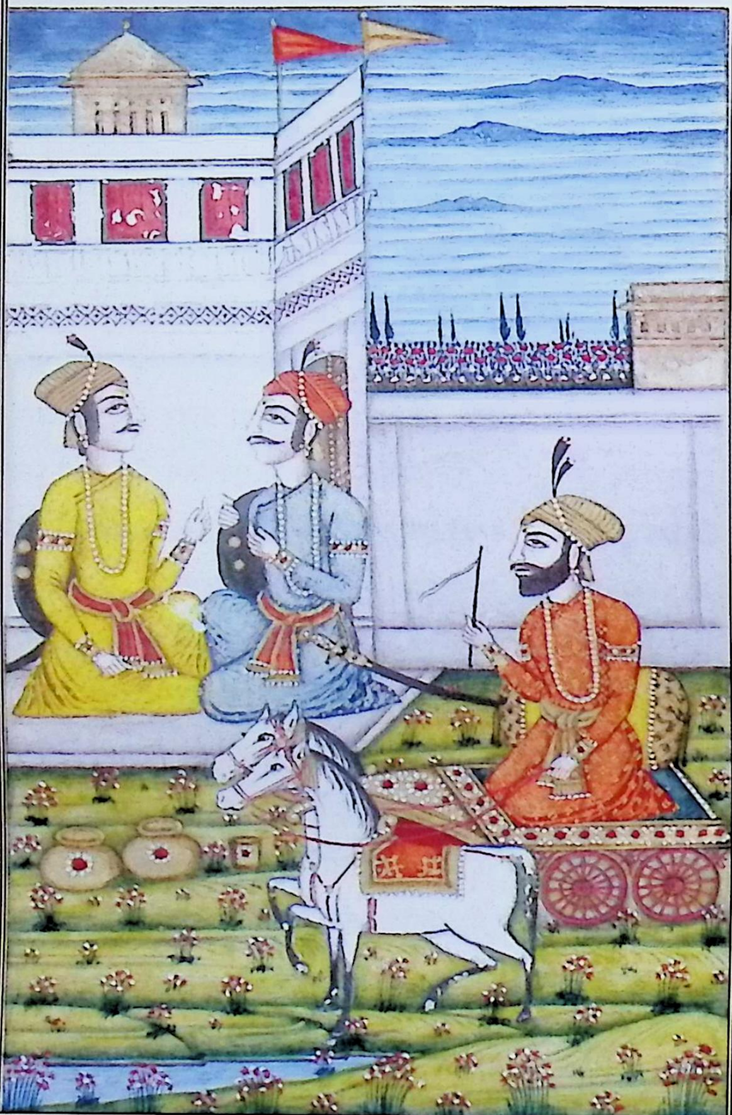

सुमन्त्र मन्त्री काले केश वाले युवक का चित्र, रथ पर सवार और भव्य व ऊँचे राम के महल का चित्र।

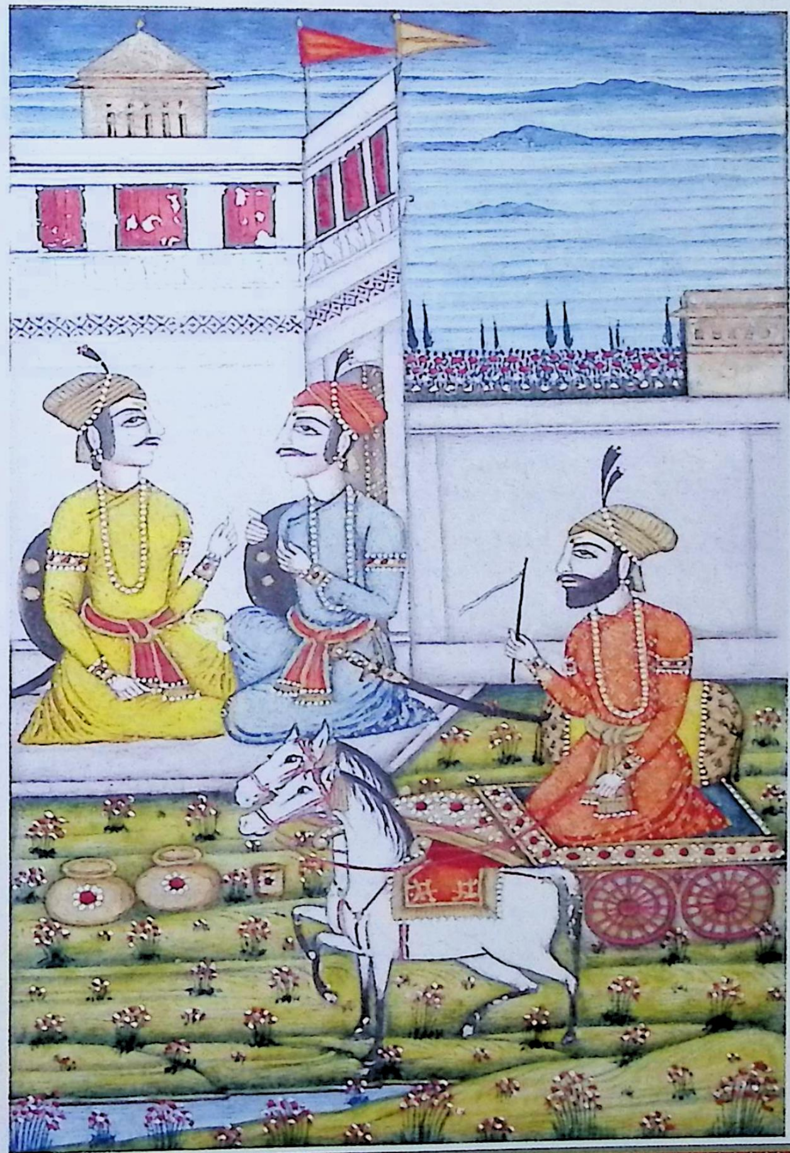

سرگ ۱۹ از ازدهام مردم که بر درها بود گذشته بر دروازهٔ هفتم رسید و دید بر دو طرف کمانداران
و غیره نشسته اند و بمحافظت پیوسته آنها سومنتر را دیده رفته رامچندر را آگاه ساختند
رام باعزاز فرمود که بیاید سومنتر اندر رفت رامچندر را دید بر پرجنگ زرین که قسمی از چهارپای
میباشد نشسته و از باد کشِ موی سیتا عقب او بخدمت پیوسته چنانکه لچهمن یعنی دولت
بخدمت پرستش یعنی حفیظ باشد سومنتر نمسکار کرده گفت که راجه میخواهد شما را به بینید اما با کیکی
نشسته اگر بخاطر بگذرد بیاید رام صاف دل حکم را بسر و چشم قبول کرده به سیتا گفت که کیکی
مادر من البته برای جوراج من بجد و جهد ساعی خواهد بود حالا راجه میشوم البته مرا باید رفت
سیتا بطریق ادعیه گفت طرف مشرق ترا اندر حافظ باد و طرف جنوب راجم و طرف مغرب را
برن و طرف شمال را کبیر القصب بعد گفتار سیتا رام با سومنتر از خانه بر آمد چنانچه شیر از کوه
بر آید بر رتهه که مانند رعد آواز داشت از جواهر و زر آراسته بود و مثل آتش بلند مینمود
سوار شده مثل آفتاب روان گشت گیت ها یعنی نشانهای بعید دیشتر روان شدند و چتر
و چامر در دست گرفته لچهمن در پس پشت سوار گشت هنگام بر آمدن رام از هجوم شور
و شغب بلند شد اسپان خوب و فیلان مانند کوه صدها و هزاران از عقب روان گردیدند
و پیش پیش سپاهیان شمشیر بند و کماندار بیشمار روانه گشتند آواز های نقاره
و کرنای وغیره بر آمد و باد فروشان و بندی بوصف مشغول شدند و زنان شهر بر بساط

सर्ग-१९

लोगों का जनसमूह जो द्वार पर था आगे बढ़ते हुए साँतवें द्वार पर पहुँचा, देखा कि दोनों ओर धनुर्धारी आदि बैठे हुए हैं और सुरक्षा के कार्यों में व्यस्त हैं। उन्होंने सुमन्त्र को देखा और जाकर रामचन्द्र को सूचित किया, राम ने सम्मान के साथ कहा कि आयें, सुमन्त्र अन्दर आ गए। रामचन्द्र को सुमन्त्र ने देखा सुन्दर पलंग पर बैठे हुए हैं और सीता उनके पीछे बैठी सेवा कर रही हैं, जैसे कि लक्ष्मी, विष्णु की सेवा पर तैनात अर्थात् रक्षा करती है। सुमन्त्र ने नमस्कार करके कहा कि राजा आपको देखना चाहते हैं इस समय कैकेयी के पास बैठे हुए हैं यदि उचित समझें तो चलें। सुहृदय राम ने आज्ञा को सम्मानपूर्वक स्वीकार करते हुए सीता से कहा कि कैकेयी मेरी माँ हैं वह मुझे उत्तराधिकारी बनाने में अवश्य प्रयास करेंगी। अब मैं राजा बनूँगा, मुझे अवश्य जाना चाहिए। सीता ने शुभकामना के रूप में कहा चारों दिशाओं- पूर्व दिशा में इन्द्र और उत्तर दिशा में यम, पश्चिम दिशा में वरुण और दक्षिण दिशा में कुबेर आपके रक्षक हैं। निष्कर्ष यह कि सीता के आशीर्वाद के बाद राम सुमन्त्र के साथ महल से बाहर आए जैसे कि शेर पहाड़ से निकलता है। एक ऐसे रथ पर, जिसकी आवाज़ मेघ के समान थी रत्न से सुसज्जित था और अग्नि की भाँति तेजवाला था सवार होकर सूर्य की भाँति चले। अधिकांश प्रतीक व पताका आगे चले और हाथ में चँवर लेकर लक्ष्मण पीछे सवार हुए। राम के बाहर आने के समय कोलाहल हुआ और पहाड़ के समान सैकड़ों, हज़ारों घोड़े, हाथी पीछे-पीछे चले और आगे-आगे असंख्य हथियार सहित सिपाही चले। बाजे, शंख की आवाजें आने लगीं और प्रशंसक कवि व कथाकार प्रशंसा में व्यस्त हुए,

و غرفه ها ایستاده گل باریدن آغاز کردند و میگفتند که کوشلا مادر تو خوشحال خواهد بود
و درزنان سیتا ممتاز است که عزیز رام است و او ریاضت بسیار کرده چنانچه
وهنی باماه باشد سیتا با رام است عرض که رام از هر طرف انواع انواع سخنان
خوشی افزا می شنید و اژدهام مردم و هجوم خلایق تماشا میدید در اینجا صورت رام
بلو راجها بر رتهه اسپان مرصع سوار شده و عقب لچهمن چامر در دست نشسته و پیشتر
توزک اسپان کوتل و فیلان و نشانها و بانها و سپاهیان کماندار و نقاره و کرنا و کلبا
که می بازند

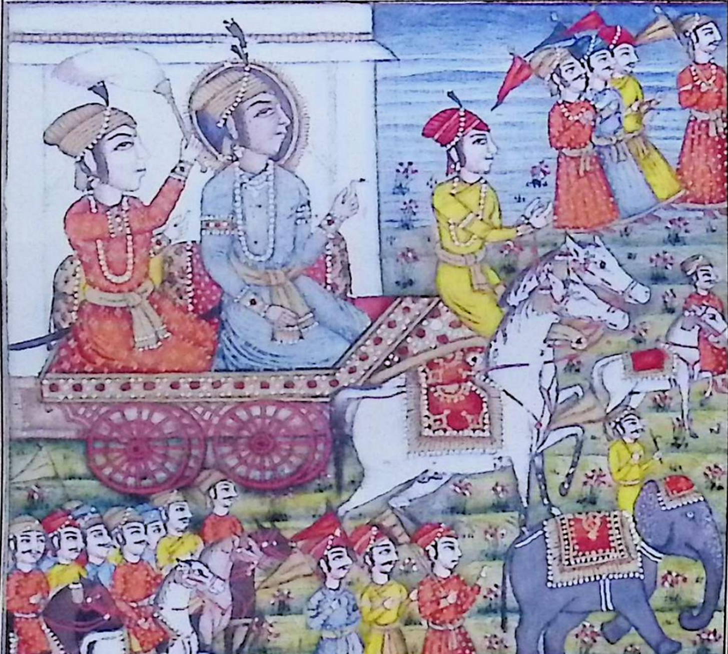

शहर की स्त्रियाँ कोठों और छतों पर खड़ी होकर फूलों की वर्षा करने लगीं और कहती थीं कि आपकी माता कौशल्या प्रसन्न होंगी। सीता सारी स्त्रियों में श्रेष्ठ हैं कि वह राम को अत्यधिक प्रिय हैं और उन्होंने बड़ी तपस्या की है। जिस प्रकार चाँद रोहिणी के साथ होता है उसी प्रकार सीता राम के साथ हैं। राम चारों ओर से भाँति-भाँति की प्रशंसक बातें सुनते थे और लोगों के जनसमूह तथा प्रजा के समूह का दृश्य देखते थे।

राम का चित्र, घोड़ों से सजे रथ पर सवार पीछे हाथ में चामर लिये लक्ष्मण बैठे हुए हैं। आगे-आगे घोड़े, हाथी, पताका, प्रतीक, सिपाही और बाजे आदि तथा फूल जो बरसाए जा रहे हैं।

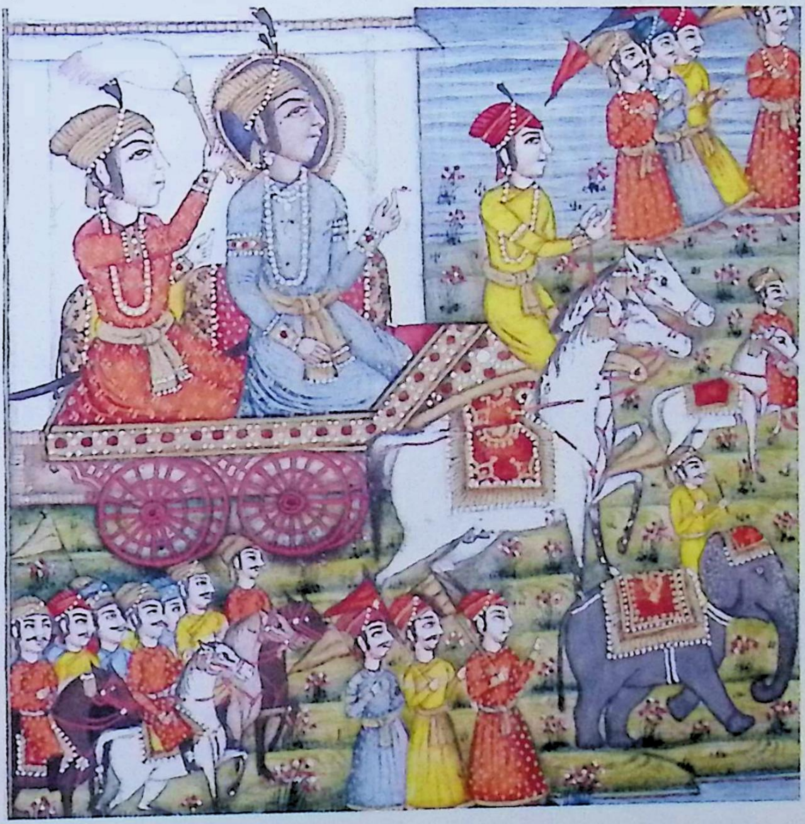

سرگ آمدن رامچندر خوشوقت می آمد و گفتار خرمی افزا میشنید در شاه که از بوهای خوش
و پارچه های نفیس مملو بود و از الماس وغیره جواهر و پٹنگ و بلور وغیره برآسته بود
میگذشت و اشیرباد یعنی دعای بسیار درویشان و گدایان مستمع میگشت کسی که
رام را دران زمان نمیدید خود را می نکوهید و رام مثل ابر از پسران راجه ها که گرد بگرد بودند
ممتاز میرفت القصه در محل راجه که از کنگره ها مثل قله کیلاس که تا آسمان مثل سفید بادان
برازنده و از خانه های پشکپ های طلا فرازنده بود داخل شد و از همه دروازه ها گذشته چون
در دروازه اندرون رسید همه مردم شادان گشتند چنانچه از طلوع ماه چهارده دریای شور

درینجا صورت خانه راجه که تمام سفید است و کنگرها نمایان و صورت رامچندر بر سر با زیب تمام داخل خانه راجه میشود

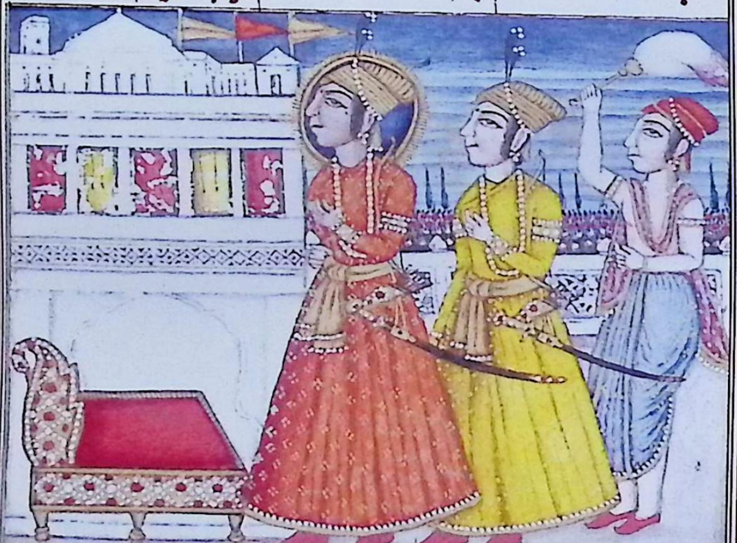

सर्ग-२०

श्रीराम प्रसन्नतापूर्वक आ रहे थे, प्रसन्नता बढ़ाने वाली बातें सुनते जा रहे थे, जिस मार्ग से जा रहे थे वह सुगन्ध और सुन्दर वस्त्रों तथा स्फटिक आदि रत्नों से सुसज्जित था। भिक्षुकों का आशीर्वाद कानों में पड़ रहा था जिसने उस समय राम को नहीं देखा अपने को बुरा भला कहता था। राम बादल के समान राजाओं के पुत्रों से जो आसपास थे सुशोभित होकर चल रहे थे। निष्कर्ष यह कि राजा का महल जो अपने शिखरों के कारण से कैलाश शिखर के समान आकाश तक ऊँचा था, सफेद और पुष्पक विमान के समान चमक रहा था। श्री राम जब प्रविष्ट हुए और बाहरी द्वार से होते हुए जब अन्दर वाले द्वार पर पहुँचे तो सारे लोग प्रसन्न हो गये जैसे कि चौदहवीं का चाँद निकलने से समुद्र।

राजा के महल का चित्र जो पूरा सफेद है और कंगूरे हैं तथा राम का चित्र जो सर पर हाला (वृत्त) डाले प्रवेश करते हैं।

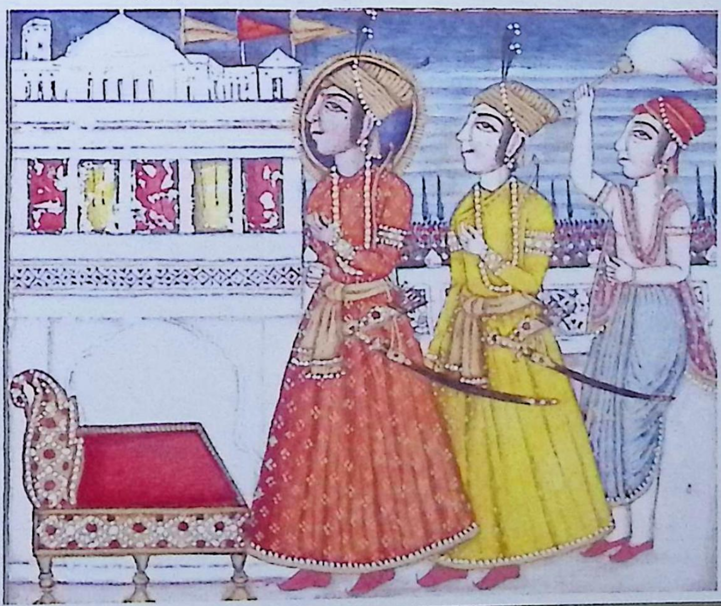

سرک رامچند پدر را دید بر مسند غمگین و غریب طور نشسته و کیکئی نزدیک است اول قدم
پدر افتاده نمسکار کرده بعده قدم کیکئی را نمسکار کرد پس ازان لچهمن پای پدر و کیکئی را
نمسکار نمود چون راجه رام را دست بسته نزدیک ایستاده دید آن سخن ناگوار نتوانست گفت
همین نام رام از زبان برآورد گریه کرد رامچند پدر را بدین غم و گریه مثل دریای عمان
که از امواج برهم شود یا آفتاب از زم یعنی دود و بخار شوریده گردد دید متامل گشت
و از غم متردد و از الم متحیر گشته کیکئی را پرسان نموده گفت که ای دیوی من راجه را چه گناه
کرده ام که با من سخن نمیگوید یا وجود راجه را آزار و تپ نیست زیرا که دایم راحت دشوارست
یا از بهرت نوجوان یا شترگهن یا از مادرهای ما خبر زشتی مسموع شده است یا من
از نادانی خطای کرده ام بنابران بی مهر با راجه یک لمحه زندگانی خود نمیخواهم یا کسی از مردم
جواب ناصواب گفته که راجه ازان برآشفته است اینهمه را با من بگو که پدر خدای حاضر من است
و چرا با من خاموش از سخنست کیکئی گفت راجه را نه قصد بغیست و نه غصه چیزی در دل گذشته
از خوف تو گفتن نمیتواند عزیز را دو راز عزیزی گفتن بر زبان او نمی آید و ترا آنچه ازین
بشنوی کردن آن ضروریست و آن اینست که قبل ازین مراد و برداده حالا ندامت
میکشد چنانچه بر آب طغیان گرفته پل بند و آنرا هم من خواهم گفت این ترا نتواند گفت
رام گفت بدینسان مرا چه میفرمایی من از گفته راجه بآتش در افتم و زهر خورم و در آب غرق شوم

सुमन्त्र मन्त्री काले केश वाले युवक का चित्र, रथ पर सवार और भव्य व ऊँचे राम के महल का चित्र।

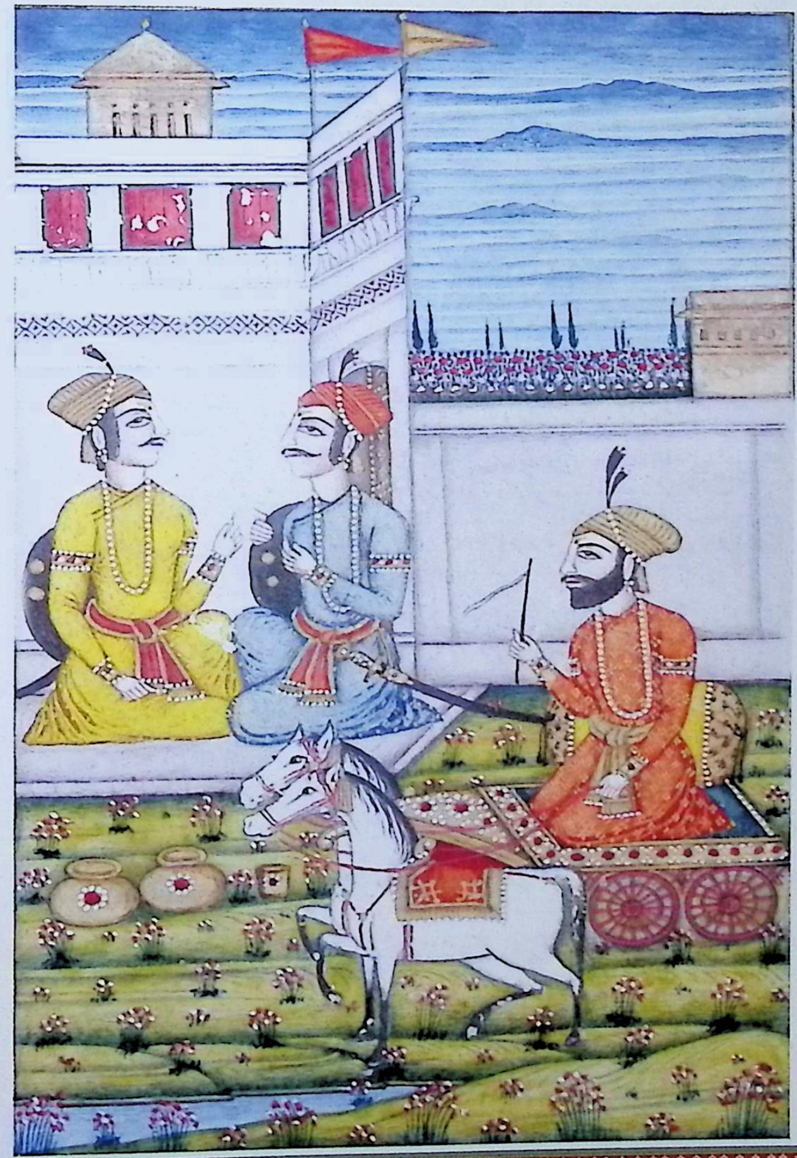

سرگ ۱۹ از اژدهام مردم که بر دربار بود گذشته بر دروازهٔ هفتم رسید دید بر دو طرف کمانداران
وغیره نشسته اند و بمحافظت پیوسته آنها سومنتر را دیده رفته رامچندر را آگاه ساختند
رام باعزاز فرمود که باید سومنتر اندر رفت رامچندر را دید بر چنگ زرین که قسمی از چهارپای
میباشد نشسته و از بادکش موئی سیتا عقب او بخدمت پیوسته چنانکه لچهمی یعنی دولت
بخدمت بشن یعنی حفیظ باشد سومنتر نمسکار کرد و گفت که راجه میخواهد شمارا ببیند اما با کیکی
نشسته اگر بخاطر بگذرد بیاید رام صاف دل حکم را بسر و چشم قبول کرده به سیتا گفت که کیکی
مادر من البته برای جوراج من بجد و جهد ساعی خواهد بود حالا راجه مشوم البته مرا باید رفت
سیتا بطریق ادعیه گفت طرف مشرق ترا اندر حافظ باد و طرف جنوب راجم و طرف مغرب را
برن و طرف شمال اکبیر القصه بعد گفتار سیتا رام با سومنتر از خانه برآمد چنانچه شیر از کوه
برآید بر رتهه که مانند رعد آواز داشت از جواهر و زر آراسته بود و مثل آتش بلند مینمود
سوار شده مثل آفتاب روان گشت کیت ها یعنی نشانهای بعید پیشتر روان شدند و چتر
و چامر در دست گرفته لچهمن در پس پشت سوار گشت هنگام برآمدن رام از هجوم شور
و شغب بلند شد اسپان خوب و فیلان مانند کوه صدها و هزاران از عقب روان گردیدند
و پیش پیش سپاهیان شمشیربند و کماندار بیشمار روانه گشتند آوازهای نقاره
و کرنای وغیره برآمد و باد فروشان و بندی بوصف مشغول شدند و زنان شهر بر مناظر

دغزو:

सर्ग-१६

लोगों का जनसमूह जो द्वार पर था आगे बढ़ते हुए सातवें द्वार पर पहुँचा, देखा कि दोनों ओर धनुर्धारी आदि बैठे हुए हैं और सुरक्षा के कार्यों में व्यस्त हैं। उन्होंने सुमन्त्र को देखा और जाकर रामचन्द्र को सूचित किया, राम ने सम्मान के साथ कहा कि आयें, सुमन्त्र अन्दर आ गए। रामचन्द्र को सुमन्त्र ने देखा सुन्दर पलंग पर बैठे हुए हैं और सीता उनके पीछे बैठी सेवा कर रही हैं, जैसे कि लक्ष्मी, विष्णु की सेवा पर तैनात अर्थात् रक्षा करती है। सुमन्त्र ने नमस्कार करके कहा कि राजा आपको देखना चाहते हैं इस समय कैकेयी के पास बैठे हुए हैं यदि उचित समझें तो चलें। सुहृदय राम ने आज्ञा को सम्मानपूर्वक स्वीकार करते हुए सीता से कहा कि कैकेयी मेरी माँ हैं वह मुझे उत्तराधिकारी बनाने में अवश्य प्रयास करेंगी। अब मैं राजा बनूँगा, मुझे अवश्य जाना चाहिए। सीता ने शुभकामना के रूप में कहा चारों दिशाओं- पूर्व दिशा में इन्द्र और उत्तर दिशा में यम, पश्चिम दिशा में वरुण और दक्षिण दिशा में कुबेर आपके रक्षक हैं। निष्कर्ष यह कि सीता के आशीर्वाद के बाद राम सुमन्त्र के साथ महल से बाहर आए जैसे कि शेर पहाड़ से निकलता है। एक ऐसे रथ पर, जिसकी आवाज़ मेघ के समान थी रत्न से सुसज्जित था और अग्नि की भाँति तेजवाला था सवार होकर सूर्य की भाँति चले। अधिकांश प्रतीक व पताका आगे चले और हाथ में चँवर लेकर लक्ष्मण पीछे सवार हुए। राम के बाहर आने के समय कोलाहल हुआ और पहाड़ के समान सैकड़ों, हज़ारों घोड़े, हाथी पीछे-पीछे चले और आगे-आगे असंख्य हथियार सहित सिपाही चले। बाजे, शंख की आवाजें आने लगीं और प्रशंसक कवि व कथाकार प्रशंसा में व्यस्त हुए,

و غرفه‌ها ایستاده گل باریدن آغاز کردند و میگفتند که کوشلا مادر تو خوشحال خواهد بود
و وزنان سیتا ممتاز ست که عزیز رام ست و او ریاضت بسیار کرده چنانچه
وهنی با ماه باشد سیتا با رام ست عرض که رام از هر طرف انواع سخنان
خوشی افزا می شنید و از دهام مردم و هجوم خلایق تماشا میدید در اینجا صورت رام
بلو راجها بر رتهه اسپان مرصع سوار شده و عقب لچهمن چامر در دست نشسته و چتر
نوزک اسپان کوتل و فیلان و نشانها و بان‌ها و سپاهیان کماندار و نقاره و کرناو کلبنا که می بازند

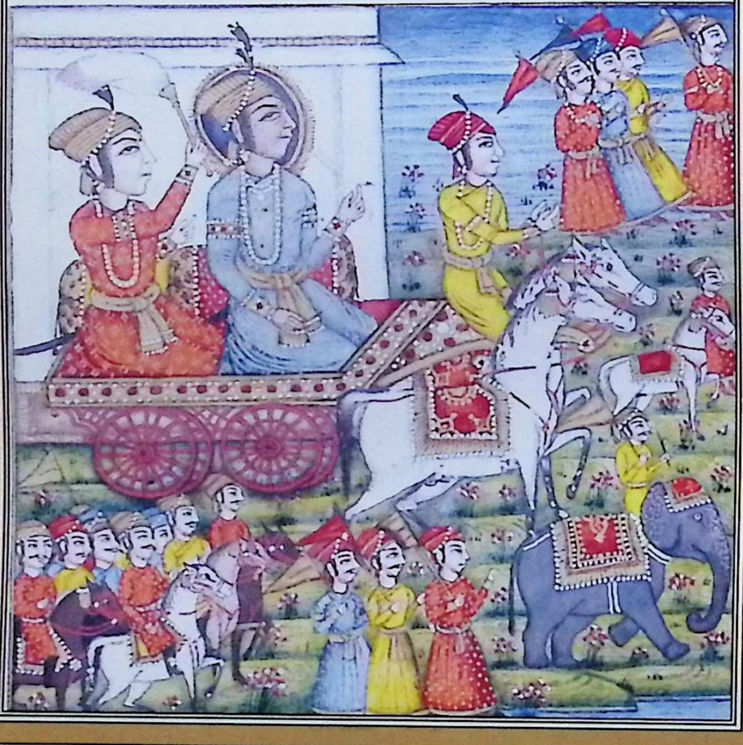

शहर की स्त्रियाँ कोठों और छतों पर खड़ी होकर फूलों की वर्षा करने लगीं और कहती थीं कि आपकी माता कौशल्या प्रसन्न होंगी। सीता सारी स्त्रियों में श्रेष्ठ हैं कि वह राम को अत्यधिक प्रिय हैं और उन्होंने बड़ी तपस्या की है। जिस प्रकार चाँद रोहिणी के साथ होता है उसी प्रकार सीता राम के साथ हैं। राम चारों ओर से भाँति-भाँति की प्रशंसक बातें सुनते थे और लोगों के जनसमूह तथा प्रजा के समूह का दृश्य देखते थे।

राम का चित्र, घोड़ों से सजे रथ पर सवार पीछे हाथ में चामर लिये लक्ष्मण बैठे हुए हैं। आगे-आगे घोड़े, हाथी, पताका, प्रतीक, सिपाही और बाजे आदि तथा फूल जो बरसाए जा रहे हैं।

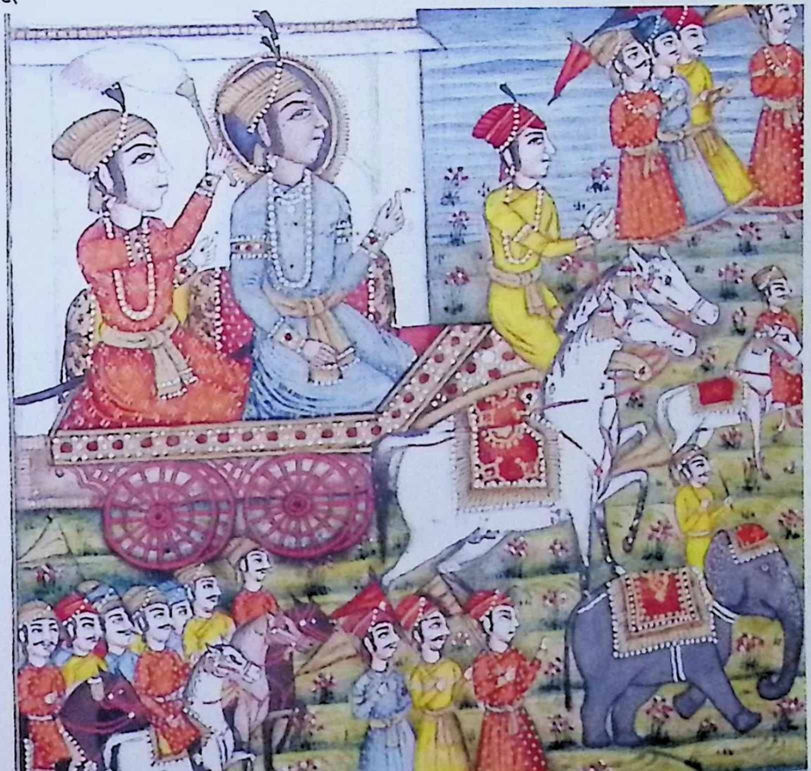

سرگ آمدن راچندر خوشوقت می آمد و گفتار خرمی افزا میشنید در شاه که از بوهای خوش
و پارچه های نفیس مملو بود و آز الماس وغیره جواهر و پهٹنگ و بلور وغیره برآسته بود
میگذشت و آشیرباد یعنی دعای بسیار درویشان و گدایان مستمع میگشت کسی که
رام را دران زمان نمیدید خود را می نکوهید و رام مثل ابر از پسران راجه ها که گرد بگرد بودند
ممتاز میرفت القصه در محل راجه که از کنگره ها مثل قله کیلاس که تا آسمان مثل سفید بادبان
برازنده و از خانه ها پنشپاک های طلا فرازنع بود داخل شد و از همه دروازه ها گذشته چون
در دروازه اندرون رسید همه مردم شادان گشتند چنانچه از طلوع ماه چهارده دریای شور

در اینجا صورت خانه راجه که تمام سفید است و لنگر نمایان و صورت رام چندر بر سر بازیب تمام داخل خانه راجه میشود

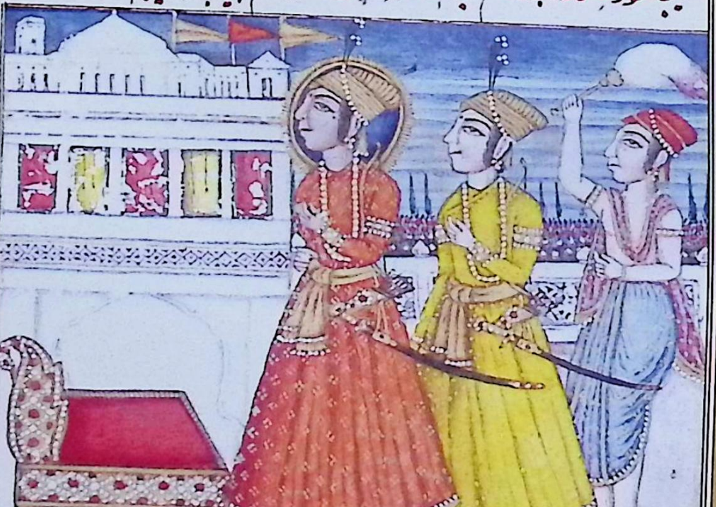

سرگ اینجد

सर्ग-२०

श्रीराम प्रसन्नतापूर्वक आ रहे थे, प्रसन्नता बढ़ाने वाली बातें सुनते जा रहे थे, जिस मार्ग से जा रहे थे वह सुगन्ध और सुन्दर वस्त्रों तथा स्फटिक आदि रत्नों से सुसज्जित था। भिक्षुकों का आशीर्वाद कानों में पड़ रहा था जिसने उस समय राम को नहीं देखा अपने को बुरा भला कहता था। राम बादल के समान राजाओं के पुत्रों से जो आसपास थे सुशोभित होकर चल रहे थे। निष्कर्ष यह कि राजा का महल जो अपने शिखरों के कारण से कैलाश शिखर के समान आकाश तक ऊँचा था, सफेद और पुष्पक विमान के समान चमक रहा था। श्री राम जब प्रविष्ट हुए और बाहरी द्वार से होते हुए जब अन्दर वाले द्वार पर पहुँचे तो सारे लोग प्रसन्न हो गये जैसे कि चौदहवीं का चाँद निकलने से समुद्र।

राजा के महल का चित्र जो पूरा सफेद है और कंगूरे हैं तथा राम का चित्र जो सर पर हाला (वृत्त) डाले प्रवेश करते हैं।

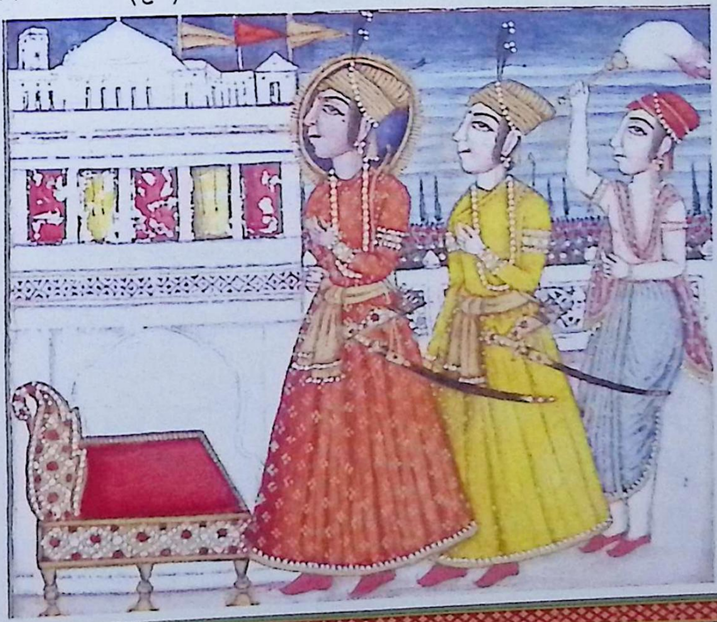

سری رامچندر پدر را دید بر بستر غمگین و غریب طور نشسته و کیکئی نزدیک است اول قدم
پدر افتاده نمسکار کرده بعده قدم کیکئی را نمسکار کرد پس از آن لچهمن پایهای پدر و کیکئی را
نمسکار نمود چون راجه رام را دست بسته نزدیک ایستاده دید آن سخن ناگوار نتوانست گفت
همین نام رام از زبان برآورد گریه کرد رامچندر پدر را بدین غم و گریه مثل دریای عمان
که از امواج بر هم شود یا آفتاب از زم یعنی ددو بنجار شوریده گرد دوید متامل گشت
و از غم متردد و از الم متحیر گشته کیکئی را پرنام نموده گفت که ای دیوی من راجه را چه گناه
کرده ام که با من سخن نمیگوید یا وجود راجه را آزار تپ نیست زیرا که دایم راحت دسوار است
یا از بهرت نوجوان یا شترگهن یا از مادرهای ما خبر زشتی مسموع شده است یا من
از نادانی خطای کرده ام بنا بر آن بی مهربانی راجه یک لمحه زندگانی خود نمیخواهم یا کسی از مردم
جواب ناصواب گفته که راجه از آن برآشفته اینهمه را بمن بگو که پدر خدائی حاضر من است
و چرا با من خاموش از سخن است کیکئی گفت راجه را نه تصدیعست و نه غصه چیزی در دل گذشته
از خوف تو گفتن نمیتواند عزیزا دو راز عزیزی گفتن بر زبان او نمی آید و ترا آنچه ازین
بشنوی کردن آن ضرورست و آن اینست که قبل ازین مراد و بر داده حالا ندامت
میکشد چنانچه بر آب طغیان گرفته پل بندد آن را هم من خواهم گفت این ترا نتواند گفت
رام گفت بدینسان مرا چه میفرمائی من از گفته راجه با آتش درافتم و زهر خورم و در آب غرق شوم

सर्ग-२१

रामचन्द्र ने पिता को देखा, जो एक दुःखी और निर्धन की भाँति बैठे हुए हैं तथा कैकेयी निकट हैं श्रीराम ने पहले पिता के चरणों में झुककर नमस्कार किया उसके बाद लक्ष्मण ने पिता के चरण स्पर्श कर कैकेई को नमस्कार किया। जब राजा ने राम को करबद्ध निकट खड़े देखा तो वह कष्टदायी बात कहने का उनमें साहस न हुआ क्योंकि जैसे ही राम का नाम मुख से निकलता आँसू गिरने लगते। रामचन्द्र पिता को इस दुख और विलाप की दशा में देखकर क्षुब्ध समुद्र नदी के समान जो टकराती हुई लहरों वाला हो या सूर्य के समान जो जो राहु से ग्रसित है चिन्तित हुए और दुख तथा कष्ट से चकित हुए। कैकेयी को नमस्कार करके पूछा कि माता जी ! मैंने राजा के प्रति क्या पाप किया है कि वह मुझसे नहीं बोल रहे हैं या राजा के शरीर को कोई क्ष्ट, दुःख अथवा रोग है। क्योंकि सुख-सुविधा सदा रहना तो कठिन है या नवयुवक भरत, शत्रुघ्न अथवा हमारी माताओं की ओर से कोई बुरा समाचार आया है अथवा मुझसे अज्ञानतावश कोई पाप हो गया है इस कारण से। मैं बिना राजा की दया के एक क्षण भी जीवन नहीं चाहता या लोगों में से किसी ने कुछ कहा है जिससे राजा क्रुद्ध है यह सब मुझको बताइये क्योंकि मेरे पिता मेरे भगवान हैं। मेरे साथ बोलते क्यों नहीं ? कैकयी ने कहा- राजा को न कोई कष्ट है और न क्रोध। एक बात उनके मन में आयी है वह तुम्हारे भय से कह नहीं सकते। किसी प्रिय को अपने से दूर करने की बात उनके मुख पर नहीं आ रही है लेकिन वह सब तुम्हें सुनना आवश्यक है। वह यह है कि इससे पहले उन्होंने मुझे दो वचन दिये थे, अब लज्जित हैं जैसे पानी से बढ़कर बाँध बन्द हो जाता है। उसको मैं कहूँगी कि वह यह बात तुमसे नहीं कह सकते। राम ने कहा, यह आप मुझसे क्या कह रही हैं मैं तो राजा के कहने से आग में कूद पड़ूँगा, विष खा लूँगा और पानी में डूब जाऊँगा।

بکو راجه چه در خاطر کرده که بران علنمایم کیکئی گفت قبل ازین در جنگ اسرواسر پدر را
باز خم محافظت کردم این مراد و بر داد یکی بهرت را راج دادن و دوم ترا بصحرا ر دندکان
فرستادن اگر تو گفتهٔ پدر را بصدق مقرون گردانی پس ازین بشنو ترا در صحرا نه سال
و پنج سال که مجموع چهارده سال باشد در صحرا باید گذرانید وانچه سامان جوراج موجود است
ازین بهرت را جوراج بده و تو جتا و چیر بر سر نگاهدار اینطور حکم پدر تست گفته کیکئی را
شنیده رام تبسم نمود و گفت همچنان خواهم کرد اما این را بفرما که راجه از زبان خود چرا
سخن نمیگوید چنانچه همیشه میگفت اگر راجه هم نمیگفت من خود و سیتا راج و دولت را
بخوشوقتی بهرت را حواله کنم چه جای آنکه راجه خود بفرماید همین زمان کسان بر تیز روا سیا کارن
بروند و بهرت را از خانه ماموں جهته راج دادن زود بیارند من همین زمان زود بدبند
صحرا میروم کیکئی شاد شده گفت همچنین خواهد شد بهرت مردم را خواهند آورد
اما تو زود رفتن صحرا را سزاوار اگرچه از شرم پدر تو هیچ نمیگوید اما این غصه نخواهد شد
و تا که تو ازین شهر بدر نمیروی تا آن زمان پدرت نخواهد برخاست و نخواهد خورد و راجه
بر چارپای طلا از غم بیهوش افتاده بود و رام از گفته کیکئی چنانکه کسی اسپ را چابک زند بر رفتن
صحرا سرعت کرد و غمناک نگشته به کیکئی گفت من حریص دولت و دنیا و جهان نیستم
مرا مانند رکهه فقط خواهان دهرم بدان اگر راجه نگفت تو مرا خداوندتری از والده خود برسید

سیتارا

राजा से कहिए कि उनके हृदय में जो कुछ है मैं उसका पालन करूँगा। कैकेयी ने कहा इससे पहले सुर और असुर के युद्ध में मैंने तुम्हारे घायल पिता की रक्षा की थी। उन्होंने मुझे दो वचन दिये थे एक भरत को राज्य देने का और दूसरा तुम्हें वन भेजने का। यदि तुम अपने पिता के वचन को पूरा करना चाहते हो तो मुझसे सुनो। तुम्हें वन में ९ वर्ष और ५ वर्ष जो कुल १४ वर्ष होता है, वन में बिताना पड़ेगा उत्तराधिकारी की जो व्यवस्था है उससे भरत को उत्तराधिकारी बना दें। तुम सिर पर जटा रख लो तुम्हारे पिता की यही आज्ञा है। कैकेयी की बात सुनकर राम ने मुस्कुराकर कहा, मैं ऐसा ही करूँगा। यह बता दीजिए कि राजा स्वयं क्यों नहीं बात कर रहे हैं जैसे कि सदा करते थे। यदि राजा न भी कहते तो भी मैं और सीता राज्य व धन प्रसन्नतापूर्वक भरत को सौंप देता। इसी समय लोग तीव्र गति वाले घोड़ों पर सवार होकर जायें और भरत को मामा युधाजित् के घर से शीघ्र लायें मैं इसी समय वनवास के लिए वन जाता हूँ। कैकेयी ने प्रसन्न होकर कहा, ऐसा ही होगा भरत को लोग ले आयेंगे लेकिन तुमको शीघ्र वन चले जाना चाहिए। तुम्हारे पिता लज्जा के कारण कुछ नहीं बोल रहे हैं, यह क्रोध नहीं है। जब तक तुम इस शहर से बाहर नहीं चले जाओगे उस समय तक तुम्हारे पिता नही उठेंगे और न कुछ खायेंगे। राजा दुःख के कारण सुनहरी शय्या पर अचेत लेटे हुए थे। राम ने कैकेयी के कहने से वन जाने में इतनी जल्दी की जैसे कोई घोड़ों को चाबुक मारे और वे दुःखी नहीं हुए। राम ने कैकेयी से कहा, मैं सांसारिक धन का लालची नहीं हूँ मुझे आप ऋषि के समान धर्म का प्रेमी समझिये। यदि राजा न भी कहते तो आप मेरी मालकिन हैं, मैं अपनी माँ से आज्ञा लेकर सीता को लाता हूँ।

سیتارا با رام من در صحرا تا چهارده سال خواهم بود بهرت راج کند راجه دشرته این را
شنیده گریه و زاری کرد رام پای راجه و کیکئی را نمسکار کرده برآمد و لچهمن با گریه و زاری
از عقب برآمد رام دل و حواس را در تصرف خود کرده در خانه مادر خود رفت و دلگیر رفت
تا کسان از تصدیع پیدا نشود درینجا صورت راجه دشرته بر چارپای طلا خوابیده میگرید و نزدیک چارپای
کیکئی نشسته و صورت رام و لچهمن بطور راجها که پای پدر و مادر را بوسه میدهند

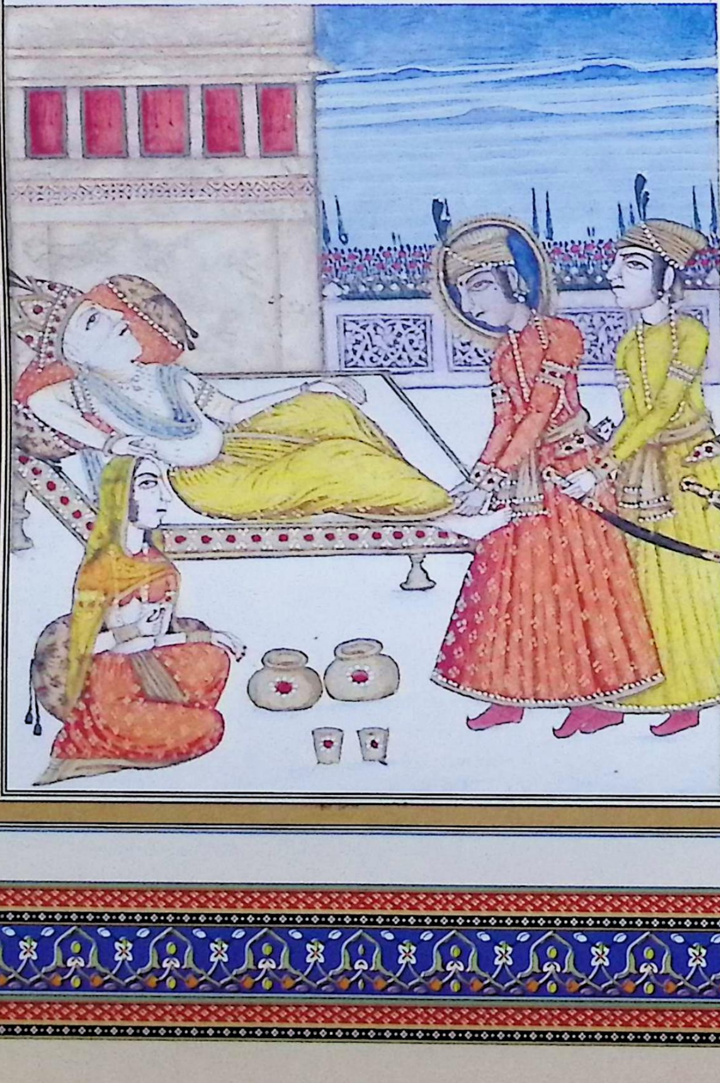

मैं वन में चौदह वर्ष तक रहूँगा, भरत राज्य करे, राजा दशरथ ने यह सुनकर विलाप किया। राम राजा और कैकेयी के पाँव छूकर बाहर निकले और लक्ष्मण पीछे से विलाप करते हुए निकले। राम अपने हृदय और मन को शान्त रखते हुए अपनी माँ के महल में गये तथा दुःखी नहीं हुए ताकि लोगों को कष्ट न हो। राजा दशरथ का चित्र सोने के पर्यंक पर सोए हुए विलाप कर रहे थे। पर्यंक के पास कैकेयी बैठी हुई हैं और राम तथा लक्ष्मण का चित्र जो राजाओं के समान माता पिता के चरण स्पर्श कर रहे हैं।

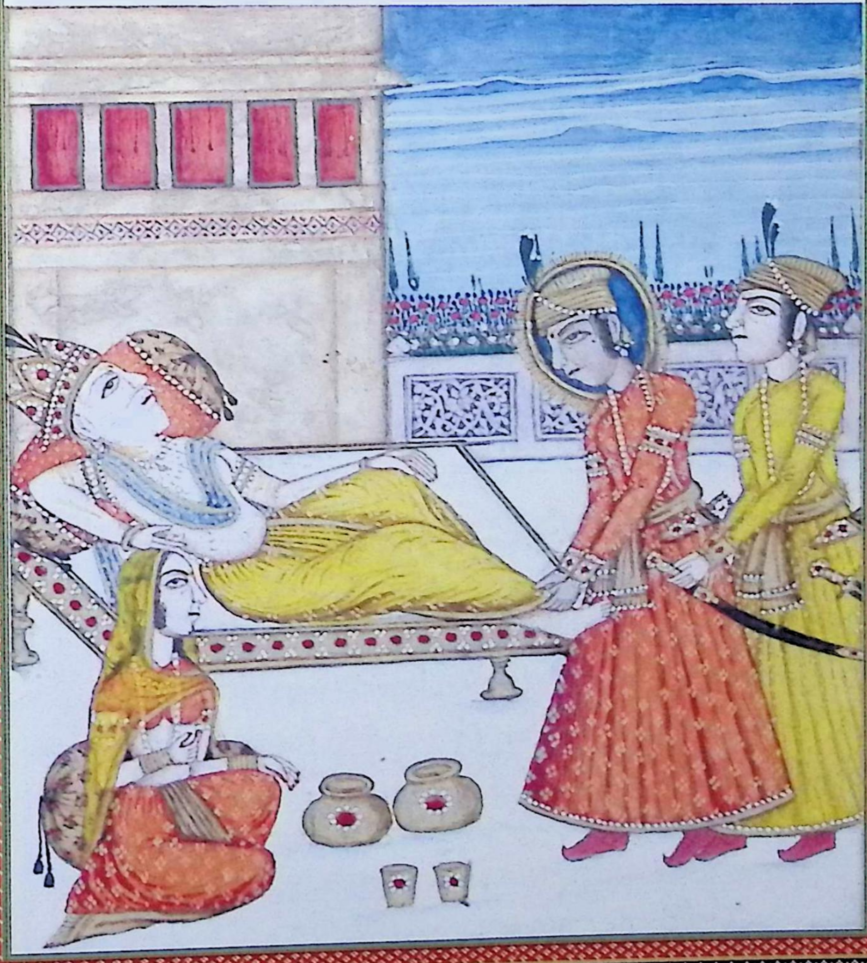

سرگ ۲۲ در هنگامیکه هر دو دست بسته رام و لچهمن از انجا بر آمدند از زبان اندرون محل
راجه آواز غم انگیز بر آمد یعنی او که پناه ما بود و مثل کوشلا ما یانرا محافظت میکرد و کاهی
غصه نمینمود او بصحرا میرود و عقل راجه رفته است چنانچه بچه کاو ماده جدا شود همچنان زبان راجه
بشور زاری مینمودند چون رام آمده در خانه والده خود داخل شد او از شادی پیش آمد
و گفت راجه راست گوست ترا حالا جوراج میکند گفته کوشلا را شنیده رام گفت تحقیق
شنیده که خوفی تصدیعی پیدا شد زیرا که تا چهارده سال مرا در صحرای که آنجا کسی نباشد
باید بود بدستور فقیران ثمرات وغیره باید خورد و بهرت را برای جوراج راجه طلبیده است
مادر این را شنیده بیهوش بر زمین افتاده چنانچه از آسمان ستاره افتد رام بدست خود
او را برداشت کوشلا برام گفت عقیمه را یک غم میشود که مرا پسر نیست و او که یک پسر دارد
او را بسیار غم و مرا ده ازان الم بحضور تو من یکی و هیچ از شمارم هنگامیکه تو بصحرا رفتی بس
هر آئینه هلاک نمست من رانده تر از شوهر کم صحبت و از گفت و شنود کیکئی از با من باشعور
و پر فنونست کیکئی از ضحک و خنده مرا بخاطر نخواهد آورد و مرا برداشت نیست بودن اینجا
مرا معقول نیست و از بیست و هفت سال که عمر تست پاره غم من رفته ازو پاس و تدابیر و
تصدیعها غم رفته مرا اینجا نگذارد دیگر آنکه برت روزه و بخشش و تپ آنچه من برای پسر کردم همه بی ثمر
شد چنانچه تخم در زمین شور ازین تصدیع چرا جگر من نمیدرد یا مرا مرگ نیست بدینگونه

सर्ग-२२

जिस समय राम, लक्ष्मण दोनों करबद्ध वहाँ से निकले राजा के महिला-निवास से दुःखभरी आवाज आयी कि जो हमारा रक्षक था, कौशल्या के समान हम सबकी रक्षा करता था, कभी क्रुद्ध नहीं होता था वह वन को जा रहा है क्या राजा की मति मारी गई है ?जिस प्रकार गाय का बच्चा माँ से बिछुड़ जाए, उसी प्रकार रानियाँ विलाप कर रही थीं। जब राम अपनी माता के महल में प्रविष्ट हुए वह प्रसन्न हुई और कहा राजा सत्यवादी हैं अब वह तुम्हें उत्तराधिकारी बना रहे हैं। कौशल्या की बात सुनकर राम ने कहा, मैंने सही बात सुनी है कि आपके ऊपर एक डर और भय उत्पन्न हो गया है क्योंकि मुझे चौदह वर्ष तक एक ऐसे वन में जहाँ कोई न हो रहना पड़ेगा। भरत को उत्तराधिकारी बनाने के लिए बुलाया है। माँ यह सुनकर बेहोश होकर भूमि पर गिर पड़ी जैसे आकाश से तारा गिरता है। राम ने उन्हें हाथों पर उठा लिया। कौशल्या ने राम से कहा बांझ स्त्री को एक दुख होता है कि मेरे सन्तान नहीं है और जिसे एक लड़का होता है उसे अनेक दुःख होते हैं। मुझे दस गुना कष्ट है कि तेरे सामने मैं कुछ नहीं हूँ जिस समय तू वन को जायेगा उस समय मेरा अन्तिम समय होगा और वह कैकेयी की वार्ता से अत्यन्त दुःखी हुईं। कैकयी हँसी के कारण मुझे तुच्छ समझेगी और यह मुझसे सहन नहीं होगा। मेरा यहाँ रहना उचित नहीं है और २७ वर्षों की जो तेरी आयु है, मेरे दुखों का अन्त हो गया था उससे मेरे कष्ट और दुःख सब समाप्त हो गये थे। वह मुझे यहाँ नहीं छोड़ेंगे और दूसरे यह कि व्रत, त्याग और तपस्या मैंने पुत्र के लिए किये थे वह व्यर्थ हो गया जिस प्रकार बंजर भूमि में बीज व्यर्थ हो जाता है इस दुख से मेरा कलेजा फट क्यों नहीं जाता और मुझे मृत्यु क्यों नहीं आती?

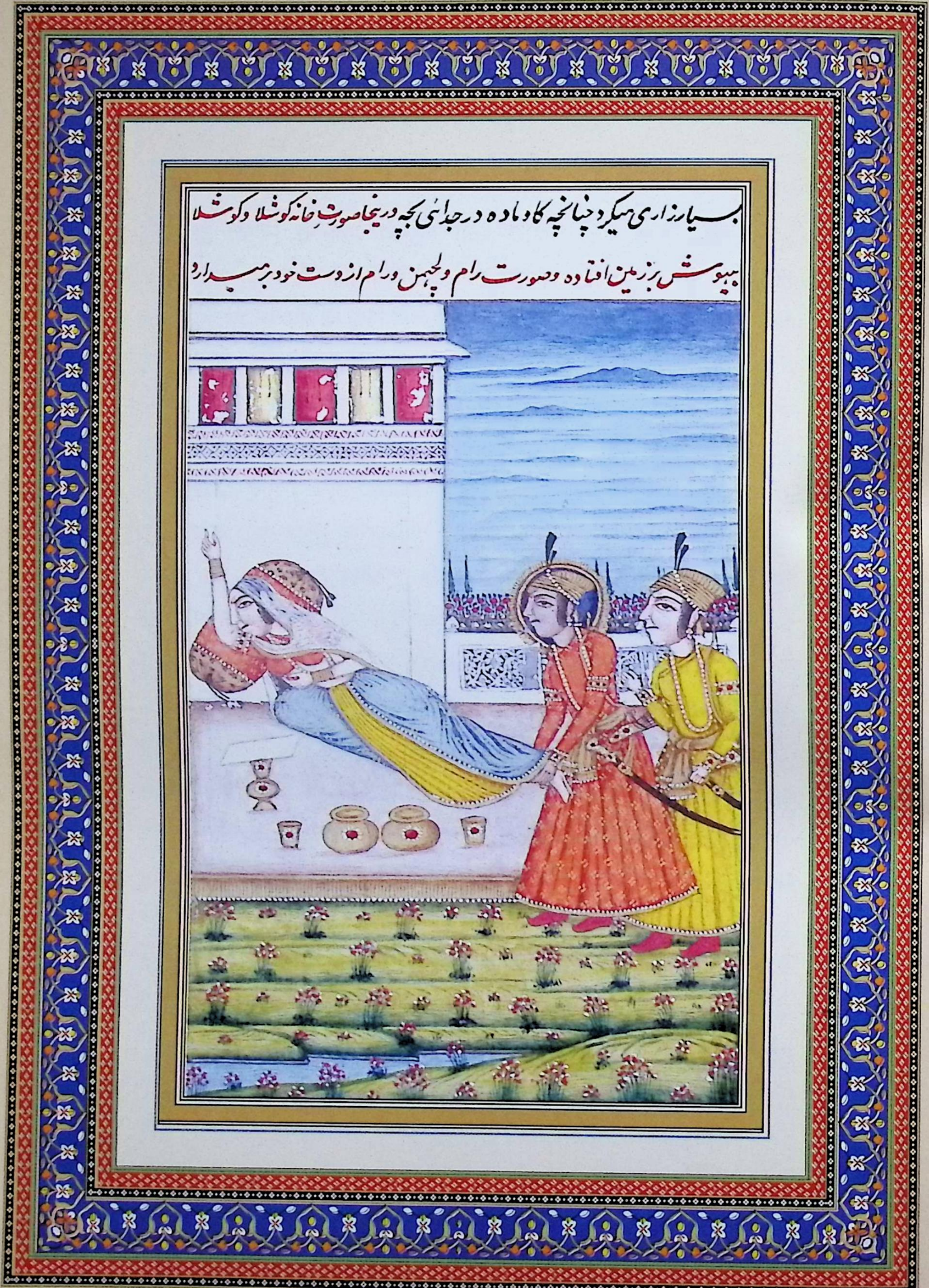

بسیار زاری میکرد چنانچه گاو ماده در جدائی بچه درینجا صورت خانه کوشلا دکوشلا

بیهوشش بر زمین افتاده وصورت رام ولچهمن ورام از دست خود برمیدارد

इसी प्रकार वह बहुत अधिक विलाप कर रही थीं जैसे कि बच्चे के बिछुड़ने में उसकी माता गाय की स्थिति होती है।

कौशल्या के भवन का चित्र, कौशल्या पृथ्वी पर मूर्छित पड़ी है। राम व लक्ष्मण का चित्र और राम उन्हें अपने हाथों से उठा रहे हैं।

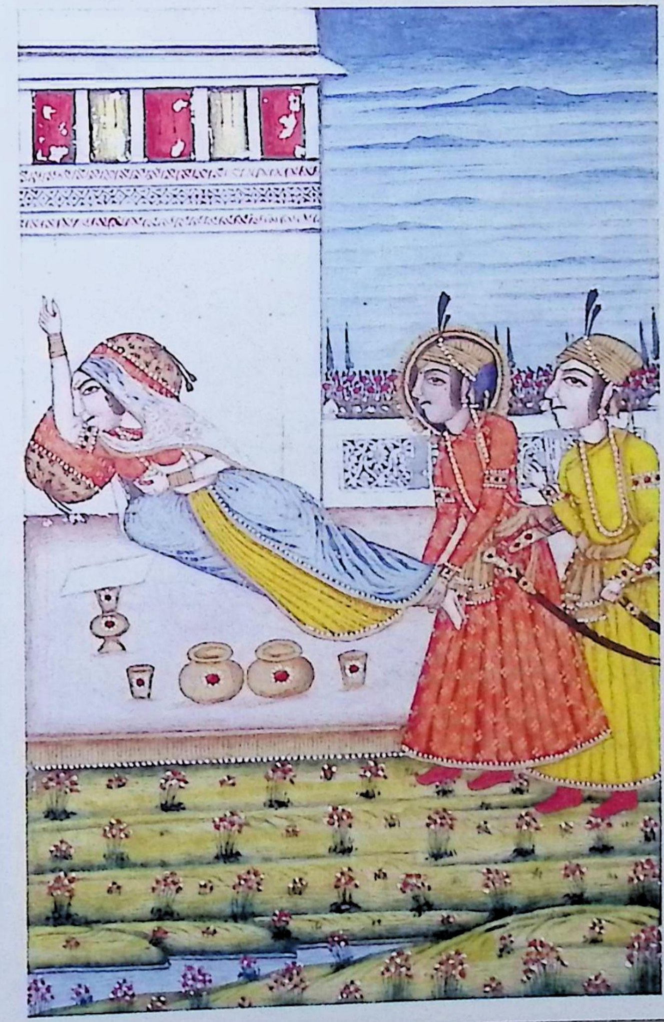

سرگ ۲۲ در ان زمان که کوشلا در گریه و زاری بود لچهمن با او و رام گفت مرا هم نیکو
نمی نماید که رامچند راج گذاشته از گفته عورت بصحرا رود راجه دشرته خود پیر شده
عقلش سلب گشته و مغلوب حواس شده رامچند چنان گناه نکرده که این را بصحرا باید فرستاد
فرشته خو و بے غریب و نرم دل و دشمنان را هم دوستدار چنین پسر را بی تقریب که بصحرا
فرستاده است کدام دهرم است تا زمانیکه کسی از ین خبر واقف نیست مرا همراه گرفته تو خود
راجه کن هر گاه تو بجنگ در آئی من کمان گرفته عقب تو باشم کدام کس طاقت دارد که روی ترا
بیند از تیرهای تیز پیکان تمام اجودهیا را خالی از مردم میکنم بهرت یا هر که دوستدار راجه
خواهد شد همه را همین زمان خواهم کشت پدر ما اگر بر گفتار کیکئی مستقیم است پس دشمن ماست
ترک این میکنم این راجه چه قوت است که بهرت را بی غل و غش راج دهد من و تو هر گاه عداوت
نمودیم که قدرت دارد که زمین از ما بگیرد تو خداوند منی پس من بسته رسن دوستی توام راستت
سوگند تو اگر رام مرا آتش روشن بفرستد بدانید که من در رفتم حالا این غم نیز دایم چنانکه
آفتاب تیرگی را اینقدر گفتار لچهمن دلیر دل را شنیده کوشلا برامچند گفت برادر تو خوب میگوید
اگر کردنی هست برخیز اگر تو دهرما تما هستی و دهرم میکنی پس فرمان من چنین است فرمان ما
در همه وقت لایق قبول است کشپ رکهیشر ازین بسر گرفت چنانچه راجه ترا سزاوار لیست
نام رکهیشر عادلی
پرستش ست من همچنانم بصحرا مرو از جدائی تو میمیرم و با تو مرا گاه خوردن میوه

اگر تو

सर्ग-२३

जिस समय कौशल्या विलाप कर रहीं थी लक्ष्मण ने उनसे और राम से कहा मुझे भी यह उचित नहीं प्रतीत हो रहा है कि रामचन्द्र राज्य छोड़कर एक स्त्री के कहने से वन चले जायं। राजा दशरथ वृद्ध हो चुके हैं उनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है, सोचने समझने की शक्ति खो चुके हैं और रामचन्द्र ने ऐसा कोई अपराध नहीं किया है कि उन्हें वन भेजना चाहिए। वह देवता तुल्य हैं दीन दुखियों के रक्षक मृदुहृदय और शत्रुओं को भी मित्र समान रखने वाले ऐसे पुरुष को अकारण वन भेज देना कौन सा धर्म है ?जब तक कि कोई इस समाचार से भिज्ञ नहीं है। आप मुझको साथ लेकर चलिये और स्वयं को राजा बना दीजिए। जब युद्ध होगा तो मैं धनुष लेकर आपके पीछे रहूँगा। किसके अन्दर शक्ति है कि आपका मुखड़ा देखे। तीव्र नोंक वाले बाणों से मैं पूरी अयोध्या को लोगों से खाली कर दूँगा। भरत या जो भी राजा का मित्र होगा मैं उसी समय उसका वध कर दूँगा। हमारे पिता यदि कैकेयी की बात पर दृढ़ हैं तो वह हमारे शत्रु हैं मैं उन्हें छोड़ दूँगा?यह कौन शक्ति है कि भरत को बिना प्रचार एवं आयोजन के राज्य दे रहे हैं। जिस समय मैं और आप शत्रुता पर उतर आयेंगे तो किसमें शक्ति है कि पृथ्वी हमसे ले सके। आप मेरे मालिक हैं, मैं आपकी मित्रता के डोर से बँधा हुआ हूँ यह सत्य है। आपकी सौगन्ध यदि राम मुझे प्रज्वलित अग्नि में भी भेजेंगे तो समझिये मैं उसमें चला जाऊँगा अब मैं इस दुख को समाप्त करता हूँ जैसे कि सूर्य अंधकार को समाप्त करता है। वीर लक्ष्मण की इतनी बात सुनकर कौशल्या ने कहा तुम्हारे भ्राता ठीक कहते हैं। अगर करना है तो उठो अगर तू धर्मात्मा है, धर्म का पालन करता है, तो मेरा आदेश यही है और मेरी आज्ञा हर समय स्वीकार करना आवश्यक है। काश्यप राक्षस इसी (माता की सेवा के) कारण से स्वर्ग में गया जिस प्रकार राजा तुम्हारे लिए पूजनीय हैं उसी प्रकार मैं भी हूँ। वन को मत जाओ तुम्हारे वियोग से मैं मर जाऊँगी। तुम्हारे साथ रहकर मुझे घास खाना स्वीकार है।

اگر تو مرا میگذاری و میروی زهر میخورم و میمیرم پس عذاب بر گردن تو خواهد شد

از همه مرشدان والده ترجیح دارد بنابران گفته من کن رامچندر گفت چرا از محبت و مهر انچنین چیز

میگوئی تو نسبت خود را قیاس کن بگو گفته شوهر زن را ترجیح دارد یا گفته مادر پسر را بعد از ان

مرا نصیحت کن مرا طاقت انحراف از حکم پدر نیست بنابران از سر تو انکار میکنم مرا رفتن صحرا

بفرمانه تنها من گفته پدر میکنم بزرگان کرده اند پرسرام ولد جمدگن از گفته پدر سر رینکا نام

مادر خود از پرش یعنی تبر جدا کرد از بزرگان من سگر هم گفته پدر کرده است این بگفت باز بو

به لچهمن گفت میدانم که ترا محبت من بسیار هست و از تصدیع من تو غم هست اما دهرم از همه

ترجیح دارد و از دهرم ها گفته پدر دهرم خوب هست و کیکئی از فرموده پدر مرا گفته است پس تو

هم پیرو عقل من باش اینقدر به لچهمن گفته باز دست بسته بکوشلا گفت میدانی اگر پیرو هم پسر

مرا فرمان ده بعد فراغ ایام بودن صحرا مانند راجه ججاتی باز خواهم آمد و جس من در جهان مشهور

خواهد شد برای اندک زندگانی اینجهان فانی این جس را پس پشت نخواهم انداخت بدینگونه

بسیار گفت مادر بار بار میدید و باز بمحبت او میگرائید درینجا صورت خانه کوشلا

وصورت کوشلا که نشسته وصورت رام و لچهمن که دست بسته رام

سخن میگوید لچهمن

خشمناک شده راه ستیزه میپوید

यदि तुम मुझे छोड़कर जाओगे तो मैं विष खा लूँगी और मर जाऊँगी उसका पाप तुम्हारे ऊपर होगा। माता समस्त बड़ों और मुनियों से श्रेष्ठ है। अतः मेरा कहा करो। रामचन्द्र ने कहा आप प्रेम में ऐसी बातें क्यों कर रही हैं ?आप अपने वंश पर विचार कीजिए बताइये कि एक स्त्री के लिए पति की बात महत्वपूर्ण है या लड़के के लिए माता की बात, इसके पश्चात् मुझे शिक्षा दीजिए। मेरे अन्दर पिता की आज्ञा के उल्लंघन की शक्ति नहीं है। अतः मैं आपको नमस्कार करता हूँ मुझे वन जाने की आज्ञा दीजिये केवल मैं ही अपने पिता के आदेश पर नहीं चल रहा हूँ (इसके पूर्व अन्य) बड़ों ने भी पालन किया है। जमदग्नि के पुत्र परशुराम ने पिता के कहने पर रेणुका नामक अपनी माता का शीश बाण से अलग कर दिया था। मेरे पूर्वजों में से शुक्र ने भी पिता का आदेश माना। फिर लक्ष्मण को सम्बोधित करते हुए कहा- मैं जानता हूँ कि तुम्हें मुझसे बहुत प्रेम है और मेरे कष्ट से तुम्हें दुख है परन्तु धर्म पर सब एक मत और दृढ़ हैं, सभी धर्मों में से पिता की आज्ञा का पालन श्रेष्ठ धर्म है। कैकयी ने पिता के कहने से मुझसे कहा है अतः तुम भी मेरी बुद्धि के अनुकूल बन जाओ। लक्ष्मण से इतना कहकर उन्होंने पुनः कौशल्या से करबद्ध निवेदन किया। आपको विदित है कि मैं जाऊँगा अतः आप मुझे आज्ञा दीजिये। वन में रहने की अवधि पूर्ण करने के उपरान्त राजा ययाति की भाँति मैं पुनः वापस आऊँगा और मेरी आज्ञाकारिता समस्त संसार में प्रसिद्ध होगी। इस नश्वर संसार की छोटी सी आयु के लिये मैं अपने चरित्र को कलंकित नहीं होने दूँगा। इस प्रकार उन्होंने बहुत सी बातें कहीं, माता बार-बार देखती थी और फिर प्रेम से रो पड़ती थी।

कौशल्या के भवन और कौशल्या का चित्र जो बैठी हुई हैं और राम एवं लक्ष्मण का चित्र,कि राम हाथ जोड़े वार्ता कर रहे हैं और लक्ष्मण क्रोध में है।

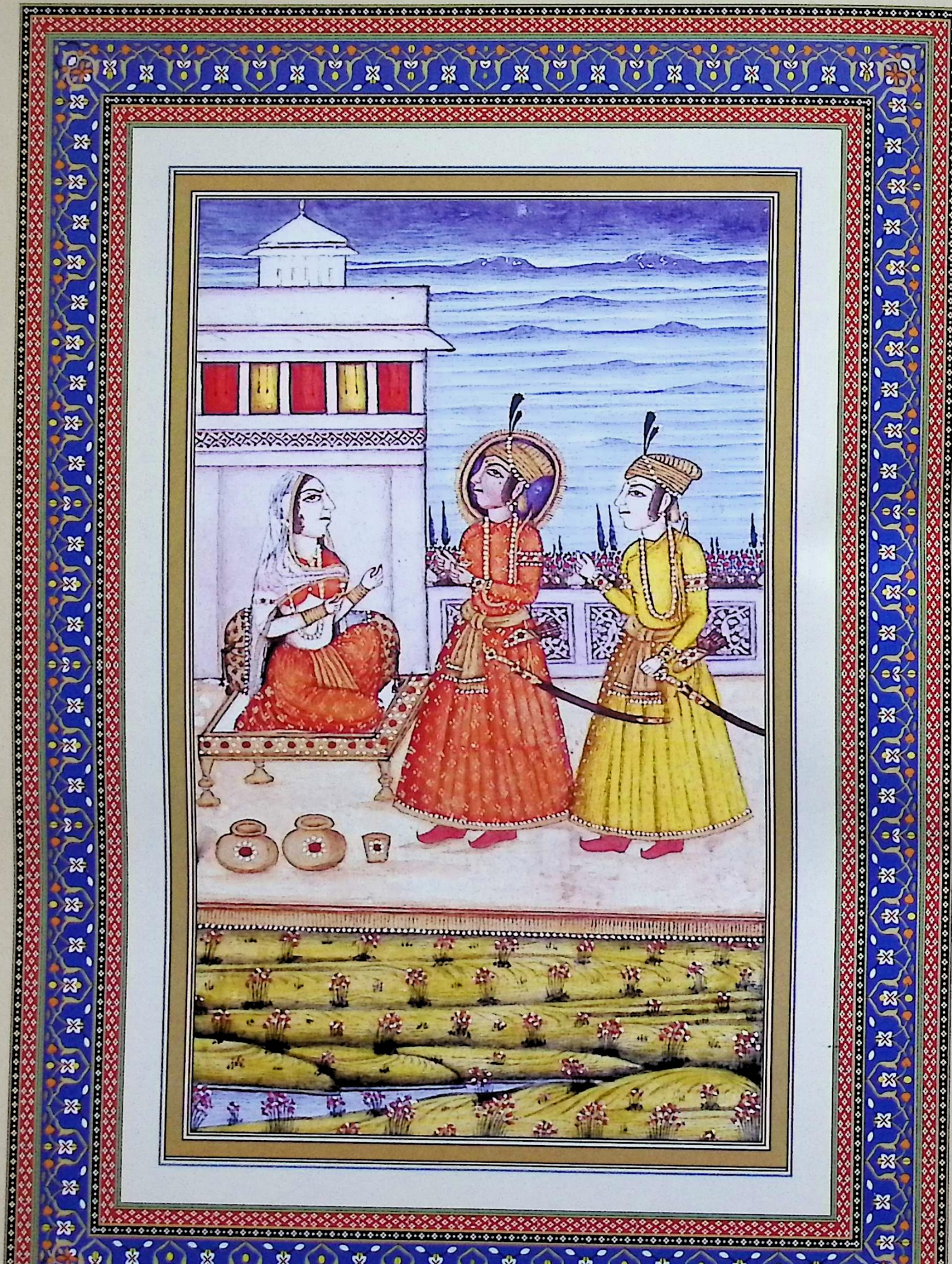

۲۰

مرکز راجہ پنجم.

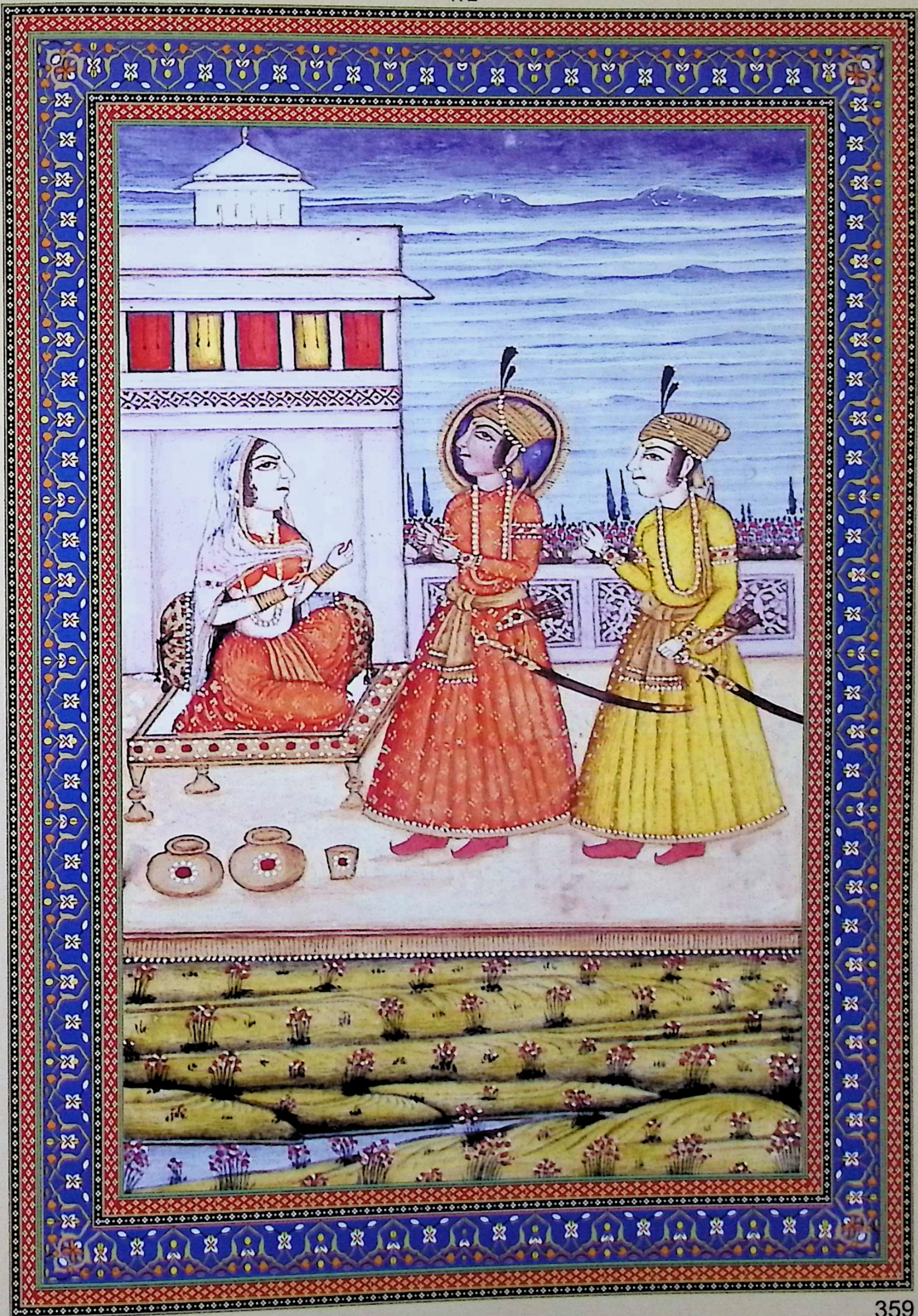

سرگ ۳۴ رامچند بر لچهمن گفت بشنو این فساد در جوارح شدن من آمد این را از مادر و پدر نمیدانم بلکه بر راستی مستقیم هستم و راست روام از جبر داشتن و جدا نمودن و مندل کردن من و رفتن صحرا کیکئی خوشوقت میشود اول طیاری راج کردن بعد از آن از مادر من منع آن نمودن اینهمه را از آفریدکار میدانم راحت و رنج خوف و ایمنی یافتن و نا یافتن شدن و نشدن و هرچه هست همه کار پروردگار است این را بعقل تحقیق بدان و رکهیهای رایض بزرگ از تقدیر در تصدیع اند از سبب غضب ریاضت گذاشته مایل حرص گشته اند چیزی که در دل و در گمان نبود و از غیب بوقوع آید آن را از خدا باید دانست از رفتن جوراج مرا غمی نیست پس تو هم چنان در دل مقرر کن ای لچهمن منع راج من نه کیکئی میکند و نه پدر را تقصیر است اینهمه از تقدیر بدان

درینجا صورت خانه کوشلا و کوشلا ایستاده و رام با لچهمن متوجه سخن گشته

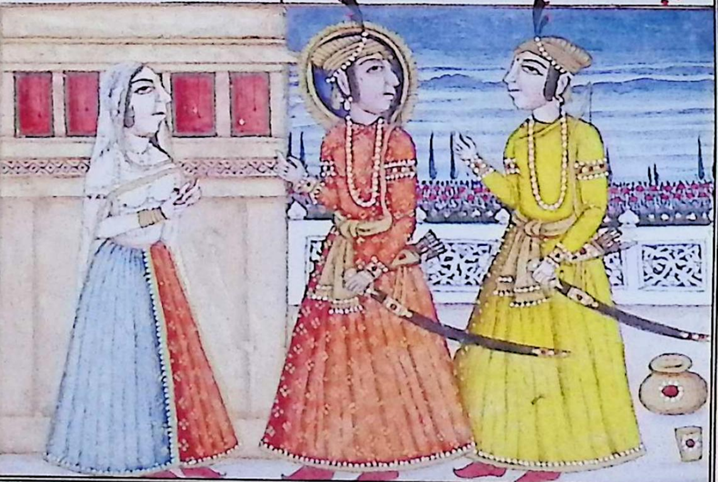

सर्ग-२४

रामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा सुनो यह दुर्घटना मेरे यहाँ होने से हुई है मैं उसे अपने माता-पिता की ओर से नहीं समझता, मैं सत्य मार्ग पर हूँ और सत्यवादी हूँ। मेरे वल्कल धारण करने और जटा रखने और वन जाने से कैकयी को प्रसन्नता होगी। पहले राज्य-पाट की तैयारी करने और उसके पश्चात् माता के उससे मना करने को मैं भगवान की ओर से समझता हूँ प्रसन्नता, दुख, भय और शान्ति पाना या न पाना, होना या न होना और जो कुछ है सब ईश्वर का काम है। इस बात को तुम बुद्धि से जाँच-परख कर जान लो। बड़े-बड़े तपस्वी ऋषि भाग्य के कारण कष्ट पाते रहे हैं और दैव के कारण तपस्या छोड़कर लालच की ओर आकर्षित हो गये जो बात हृदय में और अपने अधिकार में न हो, आकाश की ओर से आए उसे ईश्वर की ओर से जानना चाहिए। उत्तराधिकार के जाने से मुझे कोई दुख नहीं है।

अतः तुम भी हृदय से यही निश्चित कर लो और हे लक्ष्मण ! मुझको राज्य से मना करना न तो कैकेयी कर रही है और न तो पिता का इसमें कोई दोष है इन सबको तुम भाग्य की ओर से जानो।

कौशल्या के भवन और कौशल्या का चित्र जिसमें वह खड़ी है और राम लक्ष्मण के साथ बातों में व्यस्त है।

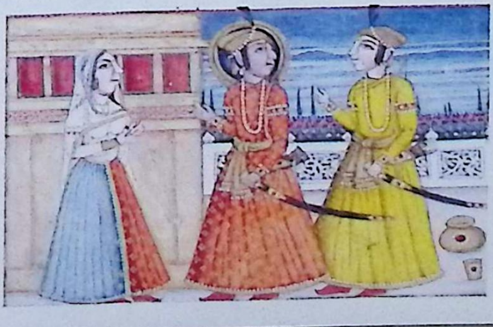

۲۰ سرک غصه لچهمن چون اینقدر رامچندر گفت لچهمن سر فرو کرده با غربت و کربت ازانجا
زود رفت ابروان را از طیش باهم بسته دم سر و کشید مثل افعی که سوراخ بند باشد مثل دست فیل
دست خود را برو کردانید و سر را کج کرد چنانکه دستار از سر افتاد شمشیر آبدار را بر داشته
روی خود قرمز نمود و بالا دیده سر بجنبانید و برامچندر گفت اگر تو خانه را گذاری از سبب دهرم
والا از کاذب گفتن مردم مثل تو سپاهی اینچنین نامردی میکند و سخنان عذبان میگوید
چهتری شو و بی شعوری بگذار نامردان تدبیر را بر تقدیر می اندازند نه مردان گفته کیکئی در آچه
چرا باید کرد و انتقام چرا نباید گرفت تدبیر دهرم بسیار است اما عمل آن برای بد گفتن زمانیان
غیری را آچه کن بعد ازان کار خود کن راحت و آرام تمام عالم گذاشتن و فقط گفته کیکئی کردن
این عقل و شمه تبه از شهوت و حرص . ست از دهرم نیست اگر در بیکار تو مستعد میشوی حالا قوت
و قدرت مرا مردم می بینند از منع راج مر الطیش شده چنانکه فیل مست از کجک مثل آندرو غیره
لوکپالان را خواهم کشت چه جای پدر ترا در چهارده سال در جنگل نباید بود مرا بفرما سر پدر را
میشکنم هرگاه من بزور در آیم زور تقدیر هیچ است تو خود را راجه کن بعد چند هزار سال راج تو نیک شود
راج ترا من نگاهبانم این بازوان من برائی دیدن نیستند بلکه برای کمان کشیدن است و نه
شمشیر من برائی بستن است و نه تیرها برائی ترکش اینها برائی تسخیر دشمنانست حالا از شمشیر من
خرمن خرمن مردم کشته می افتند چنانچه از برق هرگاه من شست در زه انگشت کرده تیرها د کمان

सर्ग-२५

लक्ष्मण का क्रोध

रामचन्द्र ने जब इतना कहा तो लक्ष्मण सिर नीचा करके सम्मान और दुःख से शीघ्रता से चले गए क्रोध से भौहों को चढ़ाकर दुख भरी आह खींची, किसी साँप के समान जिसका छेद बन्द हो गया हो। हाथी की सूँड़ के समान राम ने अपना हाथ उन पर फेरा और शिर इतना झुका लिया कि पगड़ी सर से गिर पड़ी और अपनी तलवार उठाकर मुखड़ा ठीक किया ऊपर देखकर शिर सहलाया और रामचन्द्र से कहा यदि तुम धर्म के कारण घर छोड़ रहे हो अन्यथा लोगों के झूठ बोलने से तुम जैसा सिपाही ऐसी कायरता करता है और पागलों जैसी बातें करता है। क्षत्रिय बनो और मूर्खता छोड़ो। नपुंसक व्यक्ति प्रयास को भाग्य को सौंप देते हैं न कि मर्द कैकयी और राजा के आदेश का क्यों पालन किया जाए और प्रतिशोध क्यों न लिया जाय। धर्म के रूप बहुत हैं उन्हीं का पालन कीजिये संसार वालों के बुरा कहने के लिये किसी अंजान व्यक्ति को राजा बना दीजिये और उसके पश्चात् अपना कार्य कीजिये। संसार की सारी सुख सुविधा को छोड़ देना और केवल कैकयी की बात मानना दशरथ की यह बुद्धि वासना और लालच के कारण है धर्म के कारण नहीं। यदि आप तत्पर हों तो अभी आपकी शक्ति और प्रभाव लोग देख लेंगे। राज्य से विरत करने के कारण से मुझे किसी मत्त हाथी की भाँति क्रोध है। इन्द्र आदि लोकपालों का मैं वध कर दूँगा। पिता के स्थान पर तुम्हें चौदह वर्ष के लिए वन में नहीं जाना है। मुझे आज्ञा दीजिये मैं पिता का सर उड़ा देता हूँ मैं जब उत्साह में भरा हूँगा तो मेरे समक्ष भाग्य बिल्कुल छोटा हो जायेगा। आप स्वयं को राजा घोषित कर दीजिये कुछ हजार वर्ष बाद आपका राज्य अच्छा होगा आपके राज्य का मैं रक्षक हूँ। मेरी यह भुजाएँ देखने के लिए नहीं हैं वरन् कमान खींचने के लिए हैं, और न मेरी तलवार बाँधकर रखने के लिए है और न बाण वरन् यह सब शत्रुओं को पराजित करने के लिये है। अब मेरी बिजली की तरह चंचल तलवार से लोग खलिहान के रूप में पड़े होंगे।

کشیده می ایستم کدام کس مقابل می آید حالا تیرها پرتاب میدهم و زمین بی فیل و اسپ و آدم
میکنم بنوعیکه تو راجه شوی مرا بفرما در اینجا صورت رام و لچهمن بطور غصه سرخ کرده
و در پیشانی شکن انداخته و یکدست سوی آسمان کرده و در دست دوم شمشیر گرفته و همه سلاح در کمر
بسته و دستار او که بزیر افتاده رام بر سر او می نهد

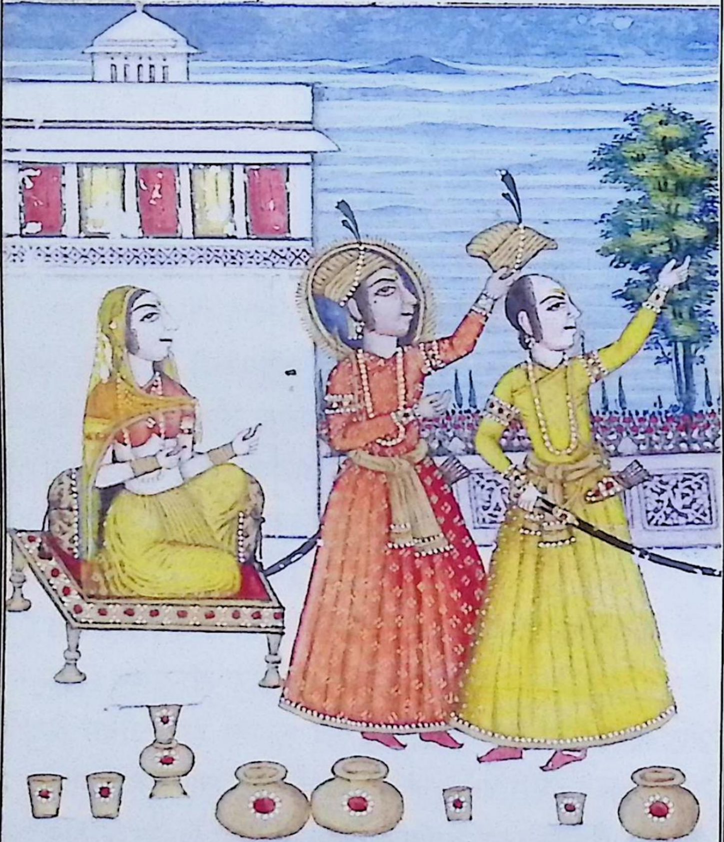

जिस समय मैं अंगूठा लगाकर कमान में तीर खींचकर खड़ा हूँगा तो कौन मेरे सामने आने का साहस करेगा ?अभी मैं तीरों को छोड़ता हूँ और पृथ्वी को हाथी, घोड़े और मनुष्यों से खाली कर देता हूँ जिस प्रकार कि आप राजा हो जाए, बस मुझे आज्ञा दीजिये।

राम का चित्र, लक्ष्मण क्रोध में सर टेढ़ा किये, माथे पर बल डाले, एक हाथ आकाश की ओर उठाए और दूसरे हाथ में तलवार लिये दूसरे सारे हथियार सजाए हुए हैं तथा उनकी पगड़ी जो नीचे गिर गयी थी राम उनके सर पर रख रहे हैं।

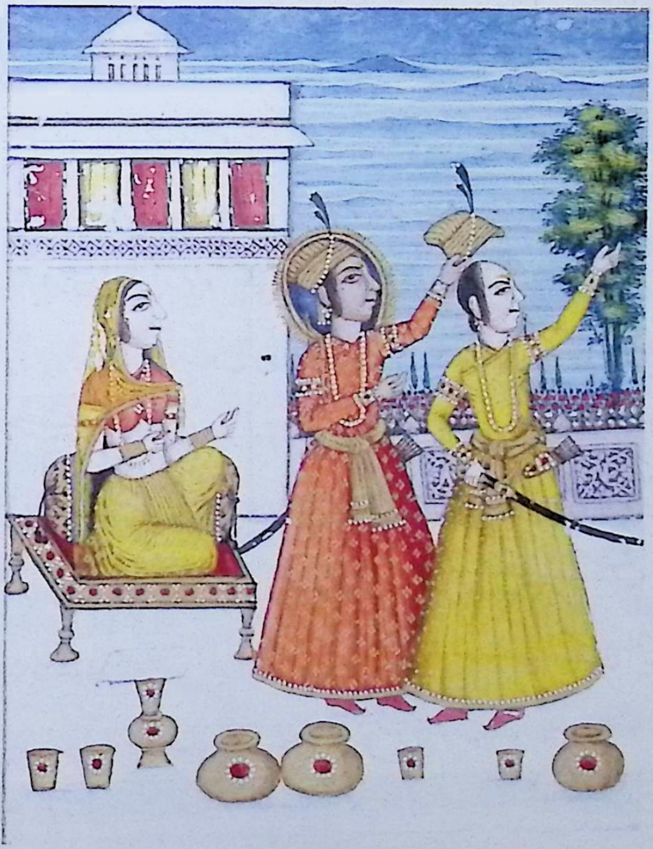

۳۶

مسطی

مهر گفتار رامچندر این طور گفت لچهمن را که بر پدر غصه شده بود شنیده بشیرین زبانی

آن آتش کشته گفت ای لچهمن از تو عجب نیست که همچو من غرق دریای غم را نجات دهی پاک رو

و صاف دل و راست رو راجه نست و گرو یعنی مرشد هست گفته او را دروغ نباید کرد گفته

پدر را بعمل آرنده در جهان و در عاقبت صواب کار دایم خواهد شد اگر ترا در من محبت است

هم

و خادم من هستی این غصه را دور کن و عقل بجال دار و از گفته من چنان بعمل آر که مرا ا

رنق

یاد نکند و از خدمت تو محظوظ باشد و خدمت مادران زیاده تر کنی و ترا باید که با بهرت بود

و فتق و بند و بست ملک بکنی لچهمن گفت برای که تو خواهی رفت من هم خواهم رفت و بصحرا

در خدمتکاری تو خواهم بود بلیتو این شهر را خواهم گذاشت دبتیو در سرگ هم بروم اگر مرا

عزیز داری عقب خود بری و منع نکنی در صحرا برای تو اقسام اقسام ثمرات و فواکه لذیذ خواهم آورد

جنگل

و در کوه‌ها و فیافی ممد و معاون تو خواهم شد فرمان بردار و چاکر تو در جنگل خواهم بود

و سبوی آب پر کرده خواهم آورد و برای تو طعام طیبا خواهم ساخت باید که مرا هیچ جا

بود

نگذاری لچهمن چون بدینسان بسیار گفت آخرش رام قبول کرد و گفت همراه من خواهی

هستی

تو برادر عزیز من هستی و خادم و محب ———

رنگ

در اینجا صورت رام و لچهمن بطور راجه‌های قوی هیکل دراز دست کتف بلند چشم سرخ نما و ملیح

جسیغه بر سر و همه سلاح بسته با هم سخن میگویند و صورت مکان و کوه مثلا

सर्ग-२६

लक्ष्मण की इस प्रकार की बातें सुनकर कि पिता पर क्रोध कर रहे हैं उन्होंने मृदुभाषा से उनके क्रोध की अग्नि को बुझाकर कहा- हे लक्ष्मण ! तुम में इतनी शक्ति है कि मुझ जैसे दुख में डूबे हुए का दुख दूर कर दो। पवित्र, सुहृदय और सत्यमार्ग पर चलने वाले मेरे राजा हैं, मेरे गुरू हैं उनके कथन को झूठा नहीं होने देना चाहिए। अपने पिता के आदेश का पालन करने वाला इस संसार में और परलोक में सदैव पुण्य पायेगा। यदि तुम्हारे अन्दर मेरे लिये प्रेम है और तुम मेरे सेवक हो तो यह क्रोध समाप्त करो, और अपनी बुद्धि को ठीक करो। मेरे आदेश से ऐसा करो कि मुझे राजा भी स्मरण न करे और तुम्हारी सेवा प्राप्त हो, तुम माताओं की सेवा और अधिक करना, तुम्हें चाहिए कि भरत के साथ रहकर देश की व्यवस्था और शासन प्रबन्ध करो। लक्ष्मण ने कहा जिस मार्ग पर आप जा रहे हैं उसी मार्ग पर मैं भी जाऊँगा और वन में आपकी सेवा में रहूँगा। आपके बिना मैं इस नगर का त्याग कर दूँगा और आपके बिना मैं स्वर्ग में भी नहीं जाऊँगा। यदि आपको मैं प्रिय हूँ तो अपने संग ले जायें और मना न करें। मैं वन में आपके लिये विभिन्न प्रकार के फल एवं स्वादिष्ट मेवे लाऊँगा और पहाड़ों और मरुस्थलों में आपका सहायक एवं सहयोगी हूँगा। वन में आपका आज्ञाकारी सेवक रहूँगा और पानी का घड़ा भरकर लाऊँगा आपके लिए भोजन तैयार करूँगा। अतः आप मुझे अकारण यहाँ न छोड़ें लक्ष्मण ने जब इस प्रकार बहुत सी बातें कहीं तो अन्ततः राम ने स्वीकार किया कि तुम मेरे साथ रहोगे तुम मेरे प्रिय भ्राता हो, सेवक और प्रिय हो।

राम और लक्ष्मण का चित्र राजाओं के समान विशालकाय लम्बे हाथ, ऊँचे कंधे, लाल आँखें, रंग साँवला, सर पर पगड़ी समस्त हथियार बाँधे आपस में बातें कर रहे हैं और भवन व कौशल्या का चित्र।

١٢٢

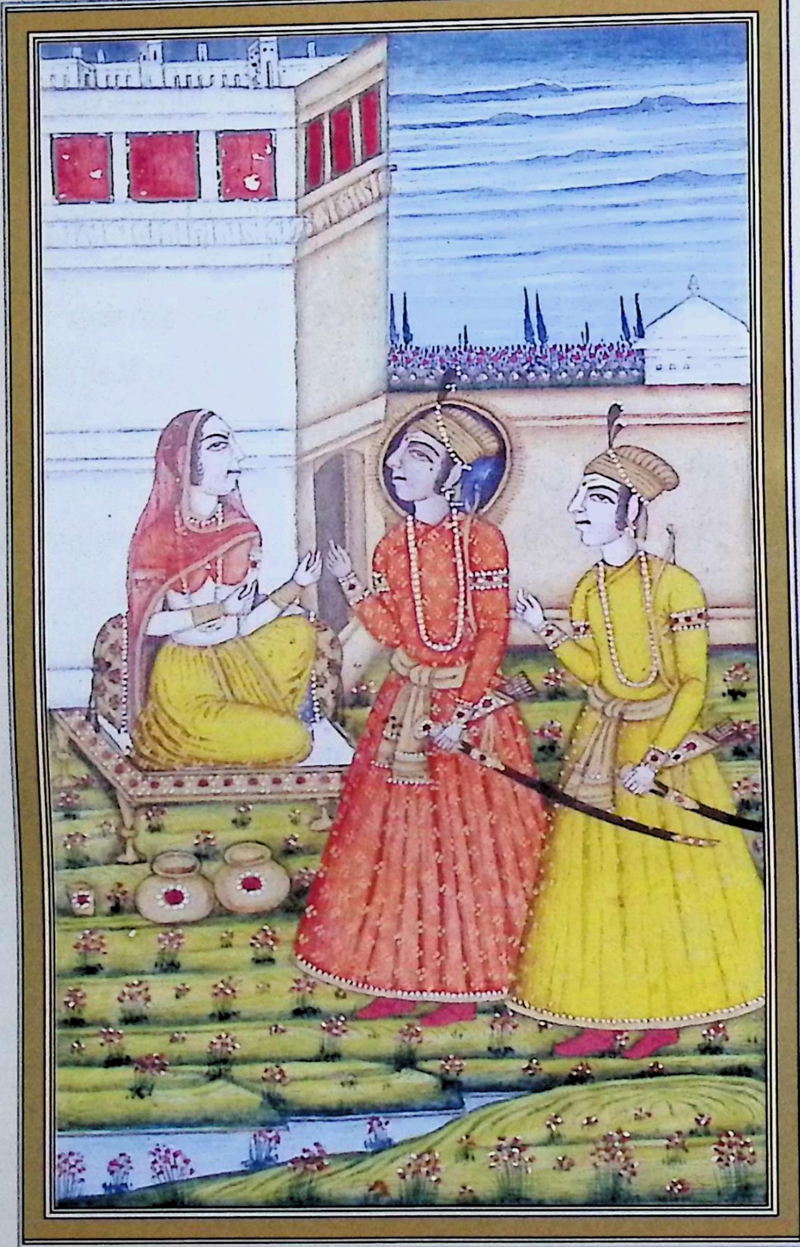

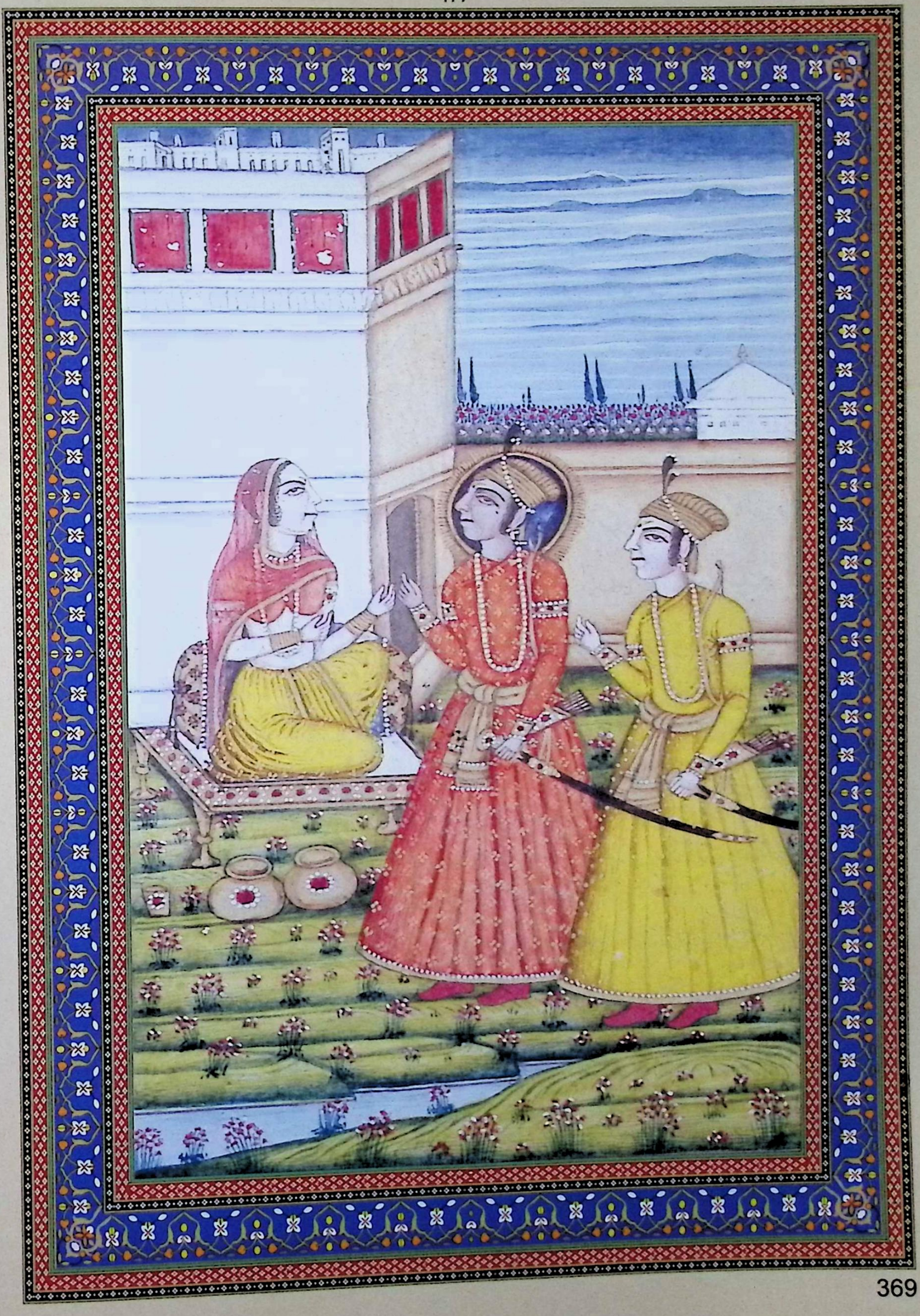

سرگفتار کوشلا رامچندر را از گفته پدر مستعد رفتن صحرا دید کوشلا با گریه تمام گفت
اگر تو دهرم را پیش کرده گفته مرا بشنو از ریاضت ها و نیم ها و روزه ها تو از من تولد شده
بنابران گفته مرا ترا البته باید کرد ترا با امید تمام از طفلی پرورده ام که مرا محافظت خواهی کرد
حالا تو مرا از جان میکشی چنانکه سوکن یعنی عورت دوم شوهر خوشحال شوند و نکوهش کیکی
نخواهم شنید در سایه پسر خود دلقرار خواهم ماند و بی تو امشب هم نتوانم زیست تو گفته پدر را
که مغلوب کیکی است مکنی همه عمر درخت پرورده هنگام ثمر قطع میکند و دهرم که از اچهواکو
آمده ازا گذاشته ترا یکسو کرده بهرت را راج میدهد و من این را در کتابها و گرنته ها شنیده ام
و من راجه گفته که اگر مرشد و پیر باشد و مغلوب حرص بود و کردن و ناکردن را نداند گفته او
نباید کرد و در شاستر و غیره از ده برهمنان او پادهیا که ازو چیزی نخوانند بزرگترست
و از ده او پادهیا پدر بزرگترست و از ده پدر مادر بزرگترست درین
زمین پدر گرو یعنی استاد است اما مادر در حمل میدارد و میپرورد
ازان بزرگترست بنابران من از پدر تو ترجیح دارم گفته من البته
باید کرد یعنی خود را راجه بکن و اگر نخواهی نمود زود بجانه جم من خواهم رفت یعنی خواهم مرد

درینجا صورت خانه کوشلا و کوشلا روبرو بصورت خوب
و عقب او مادر لچهمن و صورت رام و لچهمن ؞

सर्ग-२७

कौशल्या की वार्ता

रामचन्द्र को पिता के कहने से वन में जाने के लिए तैयार देखकर कौशल्या ने रोते हुए कहा यदि तुमने धर्म को प्रस्तुत किया है तो मेरी बात सुनो। तुम बड़ी तपस्या और व्रत आदि के द्वारा उत्पन्न हुए हो। अतः तुम्हें मेरी बात अवश्य माननी चाहिए मैंने तुम्हें बचपन से बड़ी आशा से पाला है कि तुम मेरी रक्षा करोगे। अब तुम मुझे जान से मार रहे हो जैसे सुख सम्पन्न पति की दूसरी पत्नी सौतन होती है और मैं कैकेयी के कटुवचन नहीं सुनूँगी। अपने पुत्र की छाया में मेरे हृदय को शान्ति मिलेगी और तुम्हारे बिना मैं आज की रात भी जीवित नहीं रह सकती। तुम पिता का कहा हुआ जो कैकेयी के वश में है न करो। सारी आयु पेड़ की भाँति देखरेख की, अब फल देने के समय राजा उसे काट रहे हैं और धर्म जो इक्ष्वाकु कुल में चला आया है उसको छोड़कर और तुम्हें अलग करके भरत को राज्य दे रहे हैं। मैंने यह बात कथाओं और ग्रन्थों में सुनी है कि किसी ऐसे राजा का कहा हुआ जो लालची हो और करने और न करने को न जानता हो तो उसका कहा हुआ नहीं करना चाहिए। शास्त्र आदि में है कि गुरू जिससे कुछ पढ़े वह दस ब्राह्मणों से बड़ा है और दस गुरूओं से पिता बड़ा है और दस पिता से माता बड़ी है। इस पृथ्वी पर पिता गुरू है लेकिन माँ जो बच्चे को गर्भ में रखती है और उसका पालन करती है वह इससे भी बड़ी है इस कारण मैं तेरे पिता पर वरीयता रखती हूँ मेरा कहा हुआ अवश्य करना चाहिए अर्थात् स्वयं को राजा बना दो और यदि तुम नहीं बनोगे तो मैं अति शीघ्र अपने घर चली जाऊँगी अर्थात् मर जाऊँगी।

कौशल्या के महल का चित्र सामने सुन्दर कौशल्या है उसके पीछे लक्ष्मण की माँ और राम व लक्ष्मण का चित्र।

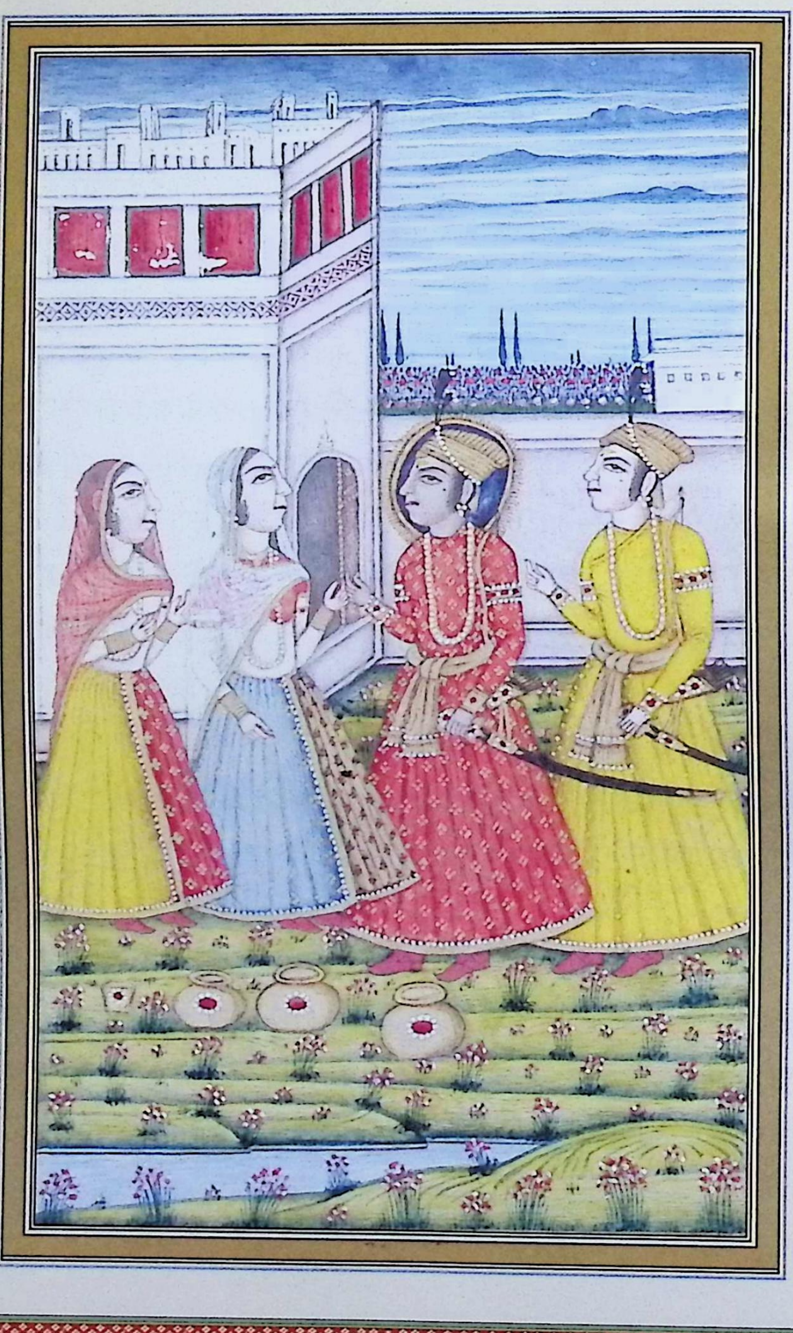

179

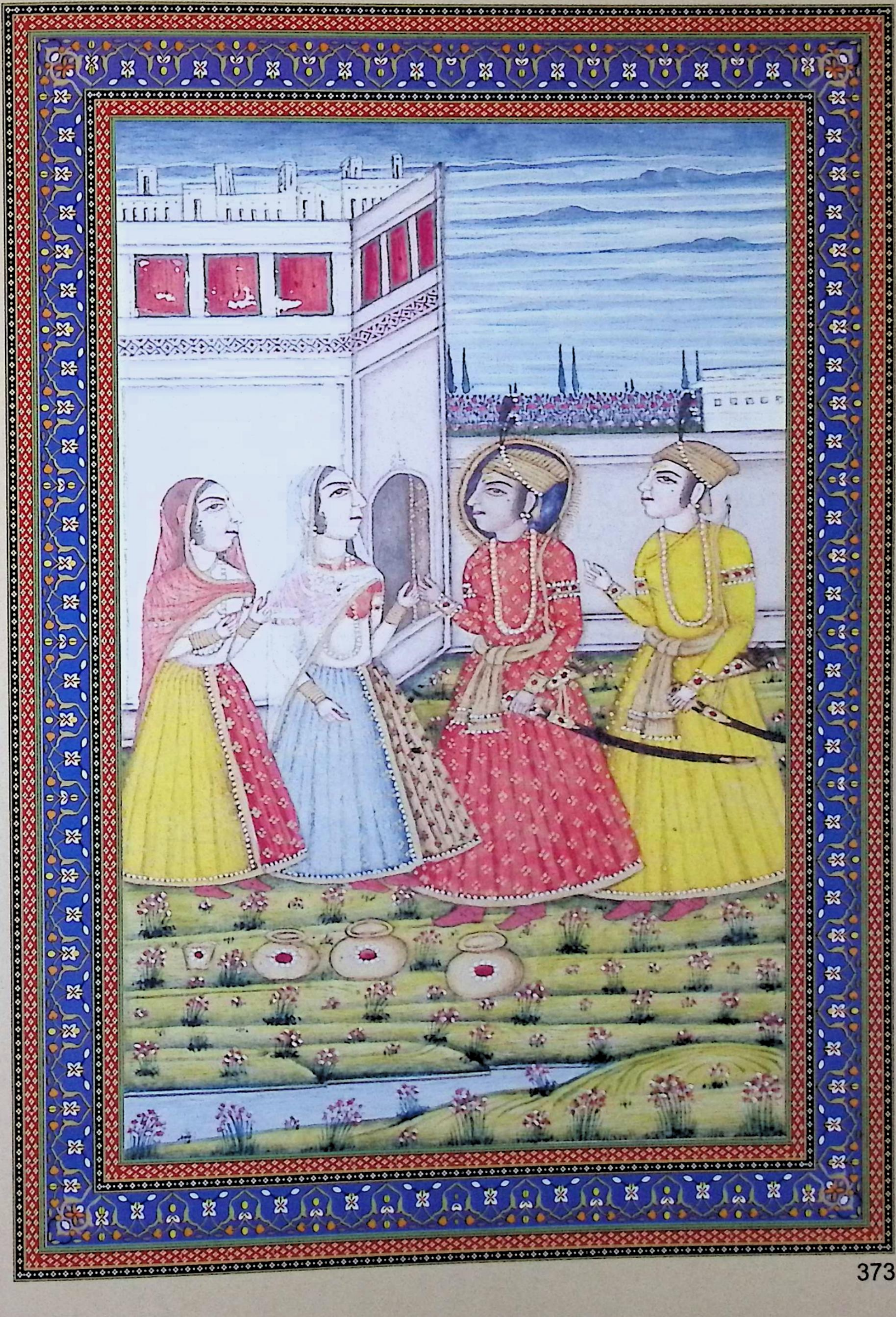

سرگ ۱۸ گفتار رام بکوشلا رامچندر گفت که راجه والی من و تست در منع من تووانی نیستی
لهذا باید که مرا حکم رفتن صحرا بدهی شوهر زنان را خداست وهم او صاحب است بنابران
دربجا آوردن حکم راجه ترا منع کردن نمیرسد باید که در خدمت شوهر باشی
وانتظار باز آمدن من داری تو در حسب ونسب بزرگ هستی خداوند و مرشد
که
شوهر تست انچه گفته او نکردی از محبت من بگذاشتن دهرم نسزاواری و ترا باید
را
از سبب من براجه چیزی نگوئی و باکیکئی و بهرت هم بد نگوئی چنانچه مرا همچنان بهرت
پسندآری و کیکئی را مثل همشیره شماری با کسی که از خود زورآور باشد عداوت
را
نباید کرد و با کمزور هم عداوت لازم نیست این مقرر خاطر تست اگر پدر من جوراج بهرت
داد پس تقصیر او چیست و کیکئی پیش ازین بر گرفته است تقصیر او هم نیست و راجه
که پیشتر بر داده باشد حالا بسبب کذب نوعدیگر بعمل نیارد گناه او چه باشد
تو میدانی که من بصحرا خواهم رفت بنابران مرا فرمان ده بدینگونه چون رامچندر
داد
رفتن جنگل با لچهمن مقرر نمود بار دیگر با کوشلا گفت میدانی که گفته راجه پشت نخواهم
برای این جهان فانی که در زندگانی کم است بنابران مرا فرمان رفتن جنگل بده
رام
درینجا صورت رام ولچهمن بطور سابق بصورت راجهاجنیه بر سر و صورت کوشلا مادر
که استاده سخن میگوید رام بمادر خود و اراده رخصت گرفتن میدارد

सर्ग-२८

कौशल्या से राम की वार्ता

रामचन्द्र ने क़हाः राजा मेरे और आपके मना करने में आप जानती हैं अतः आपको चाहिए कि आप मुझे वन जाने का आदेश दे दें। पति स्त्रियों का भगवान होता है और वह शासक भी है। अतः यहाँ राजा की आज्ञा पालन करने से रोकने का हक आपको नहीं है आपको चाहिए कि आप पति की सेवा में रहें और मेरे वापस आने की प्रतीक्षा करें।

उनकी बात से आप न फिरें। मेरे प्रेम में धर्म छोड़ देना आपको उचित नहीं लगता और आपको चाहिए कि मेरे कारण से आप राजा को कुछ न कहें और भरत और कैकेयी से भी कोई बुरी बात न कहें जैसे आप मुझको समझती हैं उसी प्रकार भरत को समझें और कैकेयी को बहन समान समझें किसी ऐसे के साथ जो अपने से अधिक शक्तिशाली है शत्रुता नहीं रखनी चाहिए और निर्बल के साथ भी शत्रुता नहीं करनी चाहिए मेरे हृदय में यह बात निश्चित है कि यदि मेरे पिता ने भरत को उत्तराधिकारी बना दिया तो इसमें उनका क्या दोष है ?और कैकेयी उनसे पहले वचन ले चुकी हैं उनकी गलती भी नहीं है। राजा जो पहले वचन दे चुके हैं और अब झूठ के कारण से कोई दूसरा कार्य न करे तो इसका फल क्या होगा ?आप जानती हैं कि मैं वन में जाऊँगा। अतः आप मुझे आज्ञा दें और इस प्रकार जब रामचन्द्र ने लक्ष्मण के साथ वन जाने का निर्णय कर लिया तो कौशल्या से पुनः कहा आप जानती हैं कि मैं राजा की बात को अवश्य मानूँगा। इस नश्वर संसार के लिए जिसमें जीवन बहुत कम है अतः आप मुझे वन जाने की आज्ञा दे दें।

राम लक्ष्मण का चित्र यथावत, राजाओं के समान शिर पर पगड़ी और राम की माता कौशल्या का चित्र कि राम खड़े होकर अपनी माता से वार्ता कर रहे हैं और विदा लेने का विचार कर रहे हैं।

١٨١

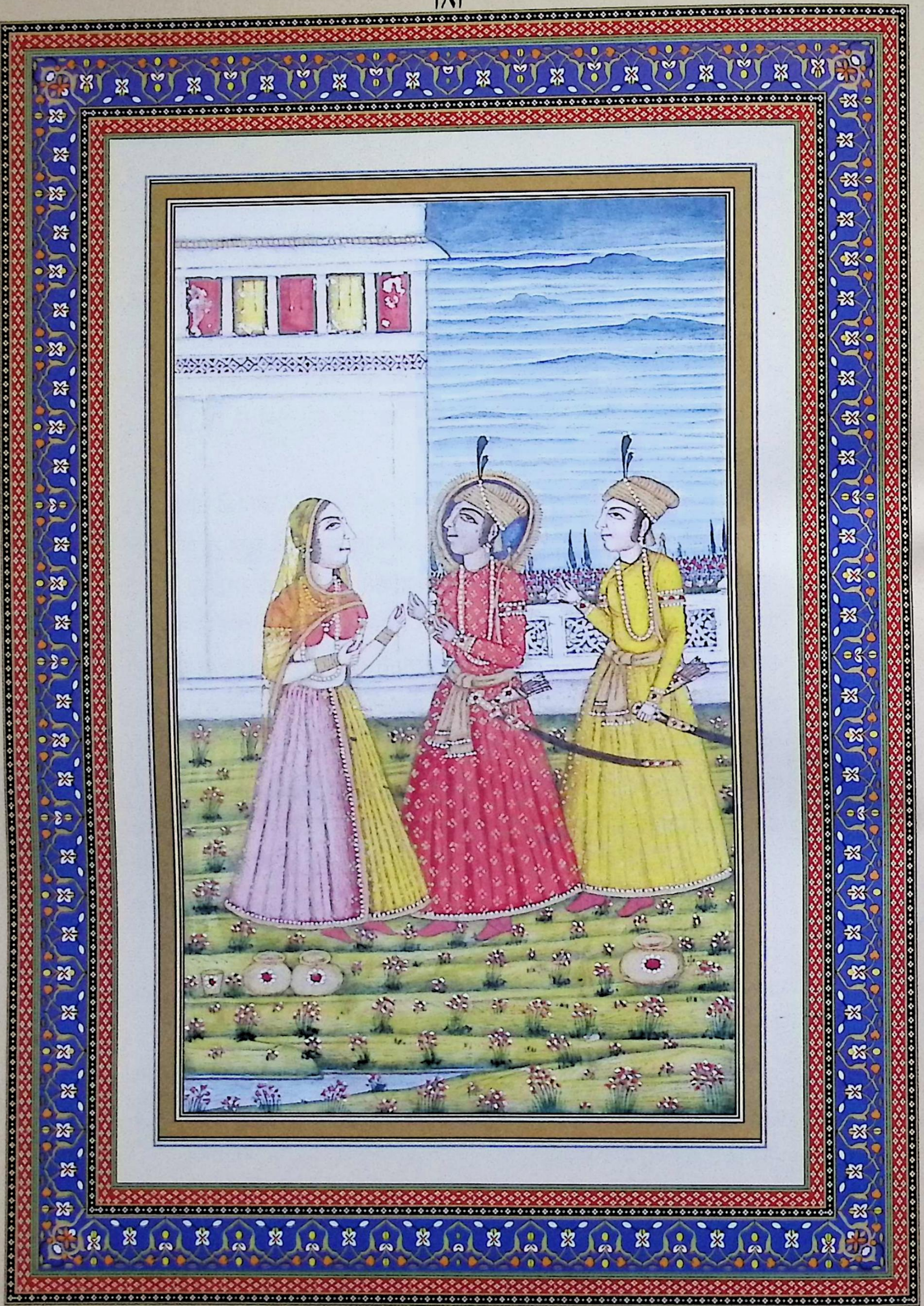

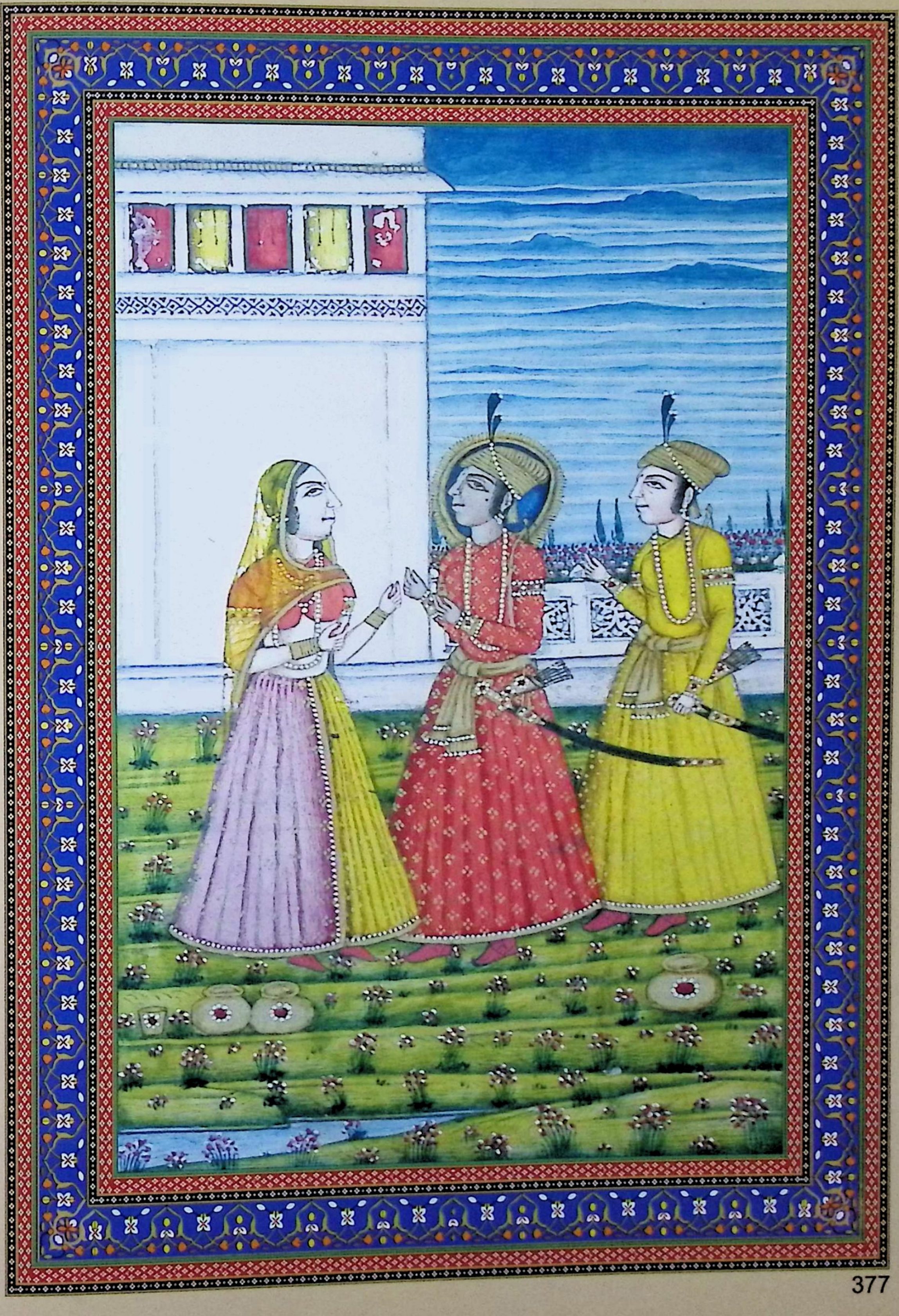

سرگفتار رام   رامچندر بار دیگر گفت ای مادر مرا و ترا گفتهٔ راجه البته کردنی هست زیرا که
همه را راجه مرشد و پیشواست اینک تا چهارده سال در صحرا مانده باز می آیم کوشلا بار دیگر از گریه به رامچندر گفت
میدانم که زندگی زنان شوهر هست و پروردگار و خداوند همچنان تراست بنابران در رفتن صحرا ترا منع نمیکنیم
اما مرا هم همراه ببر رامچندر گفت اینهم از انصاف نیست زیرا که شوهر بهر نوع تکیه و پناه زنست خصوص راجه
که خداوند و صاحبدل باشد و چنانچه من ترا پسرم همچنان پتنک بهرت خدمت خواهد کرد چنانچه پدر من
غمناک نشود همچنان باید کرد و همان زن دهرماتماست که شوهر را پناه خود داند و همان پت برتا
یعنی محکوم شوهر درینجهان کیرت یعنی خوبی و نام و نیک می یابد و عاقبت بسرگ میرود بنابران تو خدمت
شوهر بکنی بدستور گرهستیان یعنی خانه داران در رضامندی شوهر باشی و بخواهش آمدن برهمنان را
پرستش کنی چون رامچندر چنین گفت کوشلا گفت خوب برو و حکم پدر بجا آر و آنچه گفته بخدمت شوهر مستقیم
خواهم بود این بگفت و بگریه و زاری بیهوش شده بر افتاد در اینجا صورت رام و لچهمن که از مادر رخصت میشوند

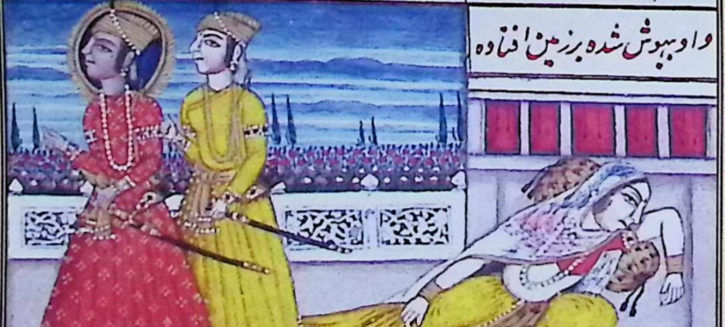
و او بیهوش شده بر زمین افتاده

سرگفتار کوش

सर्ग-२९

राम की वार्ता

श्री रामचन्द्र जी ने पुनः कहा हे माता ! मुझे और आप को राजा की बात अवश्य माननी चाहिए क्योंकि राजा सबके धर्मगुरू और पथप्रदर्शक हैं। अभी चौदह वर्षों तक वन में रहकर मैं पुनः आऊँगा। कौशल्या ने रोते हुये दोबारा राम से कहा ''मैं जानती हूँ कि स्त्री का जीवन उसका पति होता है और वही उसका परमेश्वर भी होता है। ऐसे ही तुम्हारे लिये है मैं इसी कारण तुमको वन जाने से नहीं रोकती हूँ लेकिन मुझे माँ को अपने साथ ले चलो। रामचन्द्र जी ने कहा यह भी इंसाफ की बात नहीं है क्योंकि पति हर प्रकार से स्त्री का रक्षक और आश्रय होता है। विशेषकर राजा जो कि पालक होता है और जिस प्रकार मैं आपका पुत्र हूँ उसी प्रकार भरत आपकी सेवा करेगा इसमें कोई संदेह नही। जिस कार्य से मेरे पिता को दुख न पहुँचे वह ही हमें करना चाहिये। वही स्त्री धर्मात्मा है जो अपने पति को अपना आश्रय समझे। अपने पति की आज्ञाकारी स्त्री ही इस संसार में यश और सम्मान पाती है और बाद को स्वर्ग में भी जाती है। इसलिये आप एक गृहस्थ स्त्री की तरह अपने पति की सेवा करें और पति की इच्छानुसार रहें तथा ब्राह्मणों के आने की इच्छा में पूजा पाठ करें। जब रामचन्द्र जी ने ऐसा कहा तो कौशल्या ने कहा ''बहुत अच्छा, जाओ, पिता की आज्ञा का पालन करो और जो कुछ तुमने कहा है मैं पति की सेवा में लीन रहूँगी। उन्होंने यह कहा और विलाप करते हुए गिर पड़ी। राम और लक्ष्मण का चित्र, जो माता से बिछुड़ रहे हैं और वह बेहोश होकर भूमि पर गिर गयी हैं।

سرگفتار شت کوشلا کوشلا باز بهوش آمده چنین گفت دهرماتما و نیکخواه جمیع ذیحیات
پسر و شوهر تهه چیان نصیبه ها برداشت خواهد کرد چاکران و غلامان کسیکه اطعمه لذیذ میخورند او خود
چگونه ثمرات و گل و برگ جنگلی خواهد خورد دیگر این فکر مراست مردم خوف خواهند خورد که راجه پسر عزیز
و هنرمند را از شهر بدر کرد لهذا چنانچه گاو ماده عقب بچه خود برود همچنان پس تو خواهم رفت
رامچندر گفت از فریب کیکئی راجه مرا بصحرا فرستاده و ترا گذاشتن شوهر هرگز لازم نیست اگر
این در دل هم گذرد زبون است تا که شوهر تو زنده است او خداوند تست تا آن زمان ترا بخدمت او مشغول
باید شد چون رامچندر چنین گفت کوشلا قبول نمود و بدینسان دعای رفتن نمود و از گوناگون
خوشبوئیها و اطعمه دیوتا را پرستش و نمسکار کرده برائی خیر و عافیت باز آمدن تو اینچنین میخوانم
ساده دیوتا و مروت دیوتا و رکهه ها و دهاتا و بدهاتا و پوکها و بهگ و اریا و برن و بسو و آفتاب
و رود در همه ها تا مر و یاور و ممد و معاون تو باد و اطراف و گوشه ها و ماه ها و سالها و شب ها و روزها و ساعت
همه خیرخواه تو باد و آنچه دعا هنگام رفتن آندر برائی کشتن برتردینت دیوتاها کرده اند آن دعا
نصیب تو باد و آن دعای که هنگام رفتن گرر برای آوردن امرت یعنی آبحیات بنتا مادر او کرده
نصیب تو باد و بیدها و انگ بیدها و علوم و فسونها و حروف و تحل و حافظه و عقل نگهبان تو باد
وسه ها و دیو رکهه و برهم رکهه صافدل و هفت رکهه و نارد و قمر و زهره و برجیس و دیگر کواکب و گره ها
حافظان تو باد در صحرا از خوف بطریق لباس فقرا افعی و غیره جانوران زهردار ترا مانند آبحیات شواد

सर्ग-३०

कौशल्या की वार्ता

कौशल्या ने फिर होश में आकर ऐसा कहा- धर्मात्मा और सारे जीवनधारियों का अच्छा चाहने वाला दशरथ का पुत्र ऐसा कष्ट सहन करेगा। जिसके सेवक और दास स्वादिष्ट भोजन खायेंगे वह स्वयं कैसे फल, फूल और जंगली पत्ते खायेगा ?दूसरे मुझे यह चिन्ता है कि लोगों को भय होगा कि राजा ने प्रिय और गुणी पुत्र को शहर से निकाल दिया। अतः जिस प्रकार गाय अपने बच्चे के पीछे-पीछे जाती है उसी प्रकार मैं तेरे पीछे जाऊँगी। रामचन्द्र ने कहा, कैकेयी के छल से राजा ने मुझे वन में भेजा है और आपके लिये पति को छोड़ना कदापि उचित नहीं है। यदि मन में ऐसा विचार भी आए तो बुरा है जब तक आपके पति जीवित है वह भगवान् हैं उस समय तक आपको उनकी सेवा में व्यस्त रहना चाहिए। जब रामचन्द्र ने यह कहा तो कौशल्या ने इसे स्वीकार किया और इस प्रकार जाने का आशीर्वाद दिया। भाँति-भाँति की सुगन्धों और भोजनों से देवता की पूजा और नमस्कार करके उनके सकुशल लौटने के लिए यह कामना की। साध्य देवता, मरुद्गण, ऋषि और धाता-विधाता पूषा, भग, अर्यमा, वरुण, बसु और सूर्य सारे के सारे तुम्हारे सहयोगी और सहायक हो। सिद्धगण चारों दिशाओं में चन्द्रमा वर्ष, रात, दिन सारे समय में सब तुम्हारे शुभचिन्तक हो। जो आशीर्वाद वृत्रासुर राक्षस की हत्या करने के लिए जाते समय इन्द्र को देवताओं ने दिया था वही आशीर्वाद तुम्हें मिले। जो आशीर्वाद गरुड़ को अमृत लाने के लिए जाते समय उसकी माँ विनिता ने दिया था वही आशीर्वाद तुम्हारे भाग्य में भी हो। वेद और बुद्धि तुम्हारी रक्षक हो और श्रद्धा, देवर्षि और स्वच्छ हृदय ब्राह्मण सप्तर्षि, अग्नि, चन्द्रमा और दूसरे तारे तुम्हारे रक्षक हों। भयानक वन में भिक्षुओं के वस्त्र की भाँति सर्प आदि विषैले जन्तु तुम्हारे लिये अमृत के समान हों। राक्षस, पिशाच और भयानक तथा डरावने जन्तु जो रक्त पीते हैं और जिनमें घातक विष होता है, जिनके आकार नाना प्रकार के होते हैं एवं जो जन्तु जल में रहते हैं उन सब से तुमको कोई हानि न पहुँचे।

وراچهس و پشاج و چیچه و خونخواران و بیابانان مخوف و زنبور و عقرب و کرم و دانس و پشه و مارها خیرخواه تو

باد و افیال و گرازها و شش بانان و شیرها و خرسها و گاومیشها جنگلی نیک اندیش تو باد و دیگران

که خون میخورند و هلاهل باشند و گوناگون صورت دارند و آنها که در آب می باشند از همه ترا ضرر مرساد

و مرشد جمیع لوک برهما و مهادیو با گنهای خود و بشن محافظ تو باد و بخیریت بازآی و امید من برآری

این بگفت و دست بر سر او گذاشت و اجازت داد رامچند برخاست و پردچهنا نمود یعنی گرد گردید

و در پا افتاد و نمسکار کرد و با لچهمن بخانه یعنی مکان بودن خود آمد اینجا صورت کوشلا در رام که دست بر سر

رام نهاده سخن میگوید و صورت رام و لچهمن که در پای مادر افتاده نمسکار میکنند و صورت خانهٔ کوشلا

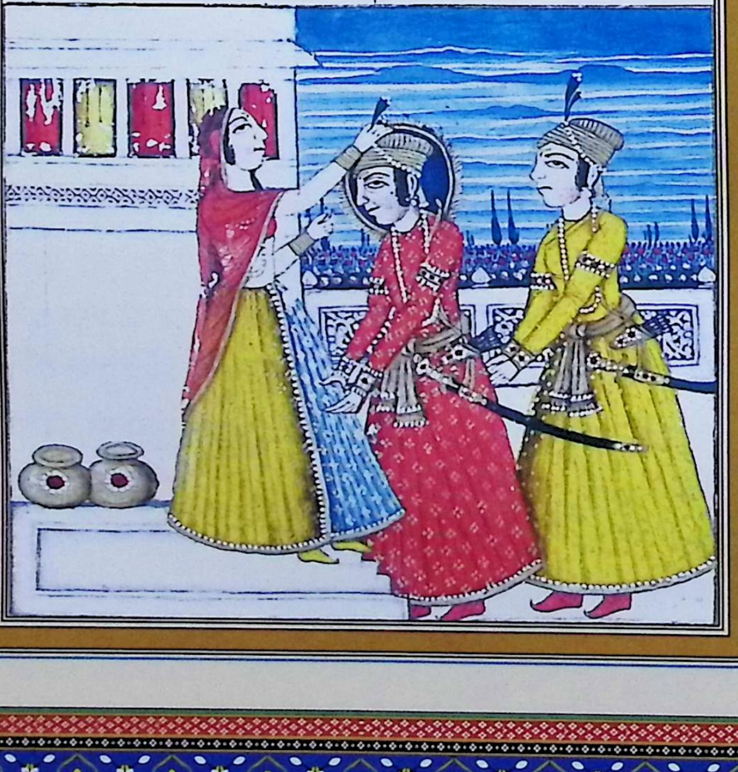

सारे लोकों के रक्षक ब्रह्मा, महादेव अपनी शक्ति के साथ और विष्णु तुम्हारे रक्षक हों और तुम सकुशल लौटकर आओ तथा मेरी आशा पूर्ण करो। यह कहकर उनके शिर पर हाथ फेरा और आज्ञा दी। रामचन्द्र ने उठकर उनकी परिक्रमा की और चरणों में गिरकर प्रणाम किया तथा लक्ष्मण के साथ अपने महल में आये।

राम की माता कौशल्या का चित्र जो राम के शिर पर हाथ रखे हुए बात कर रही हैं और राम व लक्ष्मण का चित्र जो माँ के चरणों में पड़े हुए प्रणाम कर रहे हैं, एवं कौशल्या के महल का चित्र।

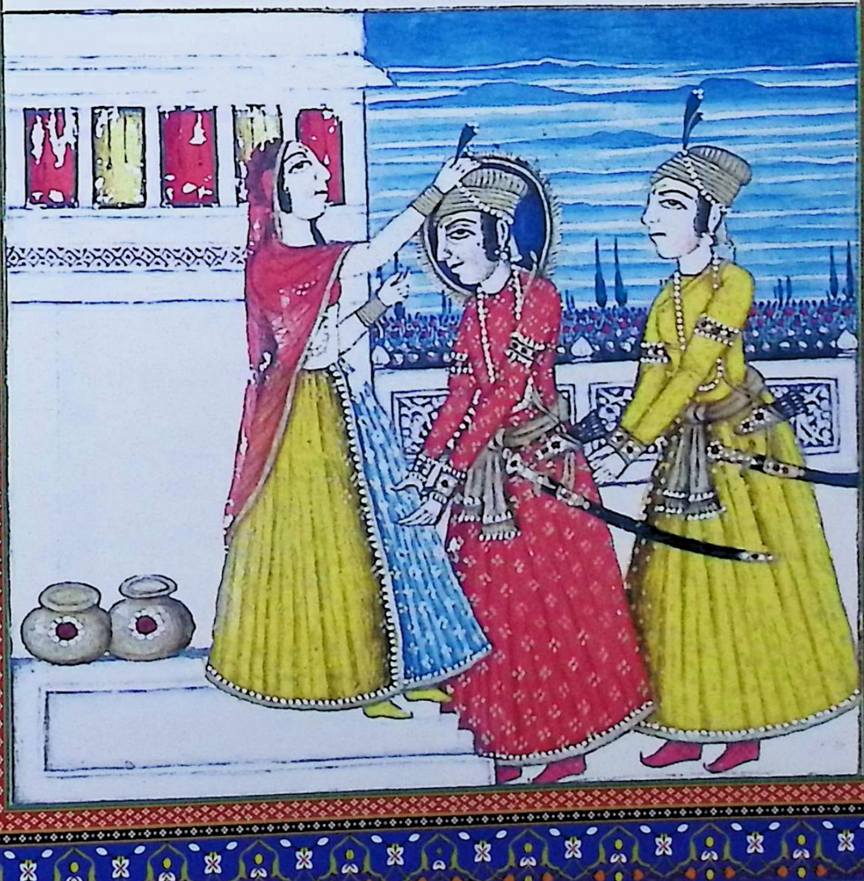

۲۱۳ گفتار سیتا در آن زمان که رامچندر بخانه زود آمد و دید که سیتا دل را بانتظار رام داده و

جوراج یافتن او بخاطر کرده خوشوقت بود و بربالائی خانه منتظر آمدن رامچندر نشسته ناگاه

رام را دید از شرم سر فرو کرده و غمناک شده باستقبال آمده چامر یعنی قسطاس گرفته

عقب ایستاده و بدینگونه بطریق استفسار پرسید چرا برهمنان تعریف تو نمیکنند و چرا غمین هستی

چرا از چهتر که مثل ماه چهارده است برآزنده نیستی و چامرها و بجن‌ها چرا ترا نیست و بادو دوشان

و اوصاف چرا تعریف جوراجی تو نمیکنند برهمنان و غیره چرا پیشکش تو نمی آرند چرا نوکران

و غلامان تو حاضر نمیشوند و رتهه که بست اسپ و چهتری مرصع اوراست چرا نیامده است و فیل دلخواه تو

کجاست بدینگونه میپرسید رامچندر گفت بشنو باعث دلگرفتگی من این است راجه راست بود

کیکئی را دو بر داده بود و آن هر دو چنان مقرر شد که مرا تا چهارده سال هرآینه در صحرا باید بود

و بهرت را راج اجودهیا باید نمود من پرستهان یعنی پای تراب میکنم و برائی دیدن تو آمده ام

مرا اجازت ده و ترا باید که بخدمت خسر و خوشدامن مستقیم باشی تا که من بیایم و خوبی و تعریف

من نزد بهرت نگوئی زیرا که دولتمندان برداشت سخن وصف دیگری نمیتوانند کرد من برای

بجای آوردن حکم پدر همین ساعت بصحرا میروم و ترا هم واه پاس باید کرد و صبحی باید برخاست

دیو جا باید کرد و دوشتهه را نمسکار باید کرد که او خداوند ماست و جمیع والده‌ها را مطابق ضابطه

خورد و کلان و ذات و غیره بپائی باید افتاد و در حکم برادر من باید بود و درام بهرت

सर्ग-३१

सीता की वार्ता

जिस समय श्री रामचन्द्र शीघ्रता के साथ अपने महल में प्रविष्ट हुए तो उन्होंने देखा कि सीता राम की प्रतीक्षा में मग्न और उनके राजकुमार बनने की कल्पना हृदय में बसाये प्रसन्न हो रही हैं और परकोटे में राम की प्रतीक्षा में बैठी हैं। जैसे ही राम को देखा लज्जा से शीश झुकाकर और नम आँखों से राम के स्वागत के लिए मूर्छल लेकर उनके पीछे खड़ी हो गयीं और कारण जानने के लिए पूछा ब्राह्मण आपकी प्रशंसा क्यों नहीं कर रहे हैं ?आप दुःखी और चिन्तित क्यों हैं ?क्यों आप छत्र से जो कि पूर्णमासी के समान है उठाकर लाने वाले नहीं हैं ?क्यों आपके लिए मूर्छल आदि नहीं हैं ?सम्मान गीत और प्रशंसा करने वाले क्यों आपके राजकुमार बनने की प्रशंसा नहीं कर रहे ? ब्राह्मण आदि क्यों आपको आशीर्वाद नहीं दे रहे ?क्यों आपके सेवक उपस्थित नहीं हो रहे हैं ? वह रथ जिसमें बीस घोड़े लगे हुए हैं और जिसकी रत्नजड़ित छतरी है क्यों नहीं आया ?आपका प्रिय हाथी कहाँ है ?आदि इसी प्रकार की बातें वह पूछती जा रही थीं। रामचन्द्र ने कहा, सुनो मेरे दुःख का कारण यह है कि सत्यवादी राजा ने कैकेयी को दो वचन दिये थे और यह दोनों, यह तय हुए कि मुझे प्रत्येक परिस्थिति में चौदह वर्ष तक वन में रहना होगा और भरत को अयोध्या का राज्य मिलेगा। मैं प्रस्थान कर रहा हूँ और तुम्हें देखने के लिए आया हूँ मुझे आज्ञा दो। अब तुम्हें चाहिए कि सास ससुर की सेवा में लगी रहना जब तक मैं वापस न आऊँ। मेरा गुणगान एवं प्रशंसा भरत के सम्मुख मत करना क्योंकि सत्ता के मालिक किसी अन्य की प्रशंसा सहन नहीं कर सकते। मैं पिता की आज्ञा पालन के लिए इसी समय वन को प्रस्थान कर रहा हूँ। तुम्हें भी उनका सम्मान करना चाहिए। प्रातः उठकर पूजा पाठ करना चाहिए और राजा दशरथ को प्रणाम करना चाहिए जो हमारे स्वामी हैं। छोटे बड़े और जाति आदि के अनुसार सभी माताओं के चरण छूना चाहिए तथा मेरे भ्राता के आदेश के अनुसार रहना चाहिए।

که او راجه ملک و دولت و سبب ماست باید بود زیرا که راجه ها باندک چیز خوشوقت میشوند
و باندک رغصه درآیند و کاهی پسر را که از جگر پیدا شوند از دشمنی بکشند و بیگانگان را از دوستی
بدوستی گیرند و والده مرا که از هجر من در غم است برای خوشوقت شدن من خدمت خواهی کرد
و ترا آنچنان باید بود که کسی را از تو آزار نرسد ۳۲ **گفتار سیتا** چون رامچندر
چنین گفت سیتا بشیرین زبانی نمسکار کرده از غربت محتوی رغصه چنین گفت ای پسر خوشنود من
بدان که پدر و مادر و اهلیه و فرزند و سینه کرده خویش می یابند و نصیب خود میخورند نه
پدر از گناه پسر و نه پسر از گناه پدر راحت و رنج می یابند کرده خود می یابند اما نصیب شوهر را
اهلیه شریکست من عقب تو میروم هر کجا که میروی سوگند زندگی است من بتو بر ماندن سرگ
هم راضی نیستم تو والی و مرشد و پناه و خداوند هستی اگر در راه مون خار دار خواهی رفت
من پیش پیش خواهم رفت و خارها بپا خواهم سود و عورات را نه پدر نه مادر نه پسر و نه دوستان از
محافظت میکنند بلکه کالبد خود محافظت نمیکند غیر از شوهر و از محل و غرفه و مناظر و بمان
قدم تو ملاذ منست بلکه از سرگ هم زیاده تر است بنابران مهربانی کن و با خود ببر در جنگل که
آنجا خرس و فیل و شیر وغیره جانورانند در پناه شوهر آسوده خواهم بود و هرگز لوک یاد
نخواهم کرد غیر از شوهر خود و حواس درونی و بیرونی را مسخر کرده در خدمت تو خواهم بود و تو
مثل آتش هستی بمحافظت هر سه لوک سزاواری چه جای من از پناه تو اندر هم مرا نتواند

भरत के आदेशानुसार, जो देश और हमारे वंश व सम्पत्ति के राजा है, रहना चाहिए क्योंकि राजा छोटी सी बात पर प्रसन्न हो जाते हैं और छोटी-सी बात पर क्रोधित हो जाते हैं। कभी वह पुत्रों को जो इनके अत्यन्त प्रिय होते हैं, शत्रुता से मार डालते हैं और अन्जान को मित्रता से अपने साथ ले लेते हैं। मेरी माता जो मेरे वियोग में दुःखी हैं मेरी प्रसन्नता के लिए तुम उनकी सेवा करोगी और तुमको इस प्रकार रहना चाहिए कि किसी को तुमसे कष्ट न पहुँचे।

सर्ग-३२

सीता की वार्ता

जब रामचन्द्र ने यह बात सीता से कही तो सीता ने क्रोध मिश्रित असहाय रूप से कहा हे मेरी सास के पुत्र ! आपको ज्ञात होना चाहिए कि माता पिता, पत्नी पुत्र और बहू अपने कर्म का फल पाते हैं और अपने भाग्य का खाते हैं। पिता न पुत्र के पाप से और न पुत्र पिता के पाप से दुख व सुख पाते हैं। सब अपने कर्म का पाते हैं। परन्तु पति के भाग्य में पत्नी सम्मिलित है। आप जहाँ भी जायेंगे मैं आपके पीछे-पीछे आऊँगी। अपने जीवन की सौगन्ध मैं आपके बिना स्वर्ग में भी रहने के लिए सहमत नहीं हूँ। आप मेरे स्वामी गुरू आश्रयदाता और ईश्वर हैं। यदि आप काँटों और जंगलों में जायेंगे तो मैं आपके आगे-आगे चलूँगी तथा अपने पैरों से कांटों को कुचल दूंगी। स्त्रियों की रक्षा पिता, मॉ, पुत्र और मित्र नहीं करते हैं और न ही वह स्वयं अपनी रक्षा करती है केवल पति ही उसका रक्षक है। महल, चौबारे, दृश्य और सवारी से अधिक आपके चरण मेरा आश्रय ही नही अपितु स्वर्ग से भी अधिक है। अतः कृपा करके मुझे भी अपने साथ वन में ले चलिये जहाँ हाथी और शेर आदि पशु हैं मैं अपने पति के संरक्षण में सुखी रहूँगी। अपने पति के अतिरिक्त तीनों लोकों को याद नहीं करूँगी और आपकी सेवा करूंगी। आप विष्णु के समान हैं तीनों लोक की रक्षा के योग्य हैं क्योंकि आपके आश्रय में होने के कारण इन्द्र भी मुझे नहीं ले सकते।

گفت و با تو برگ و بارِ اشجار خواهم خورد و ترا تصدیع نخواهم داد و مرا خواهش دیدن دریاها
و کوهها و تالابها و هامون هست و نیلوفر و هنس و کارند و اکها با تو سیر خواهم کرد
بدینگونه با تو گذشتن هزار سال و صد سال بخاطر نخواهم آورد و چنانچه در سرگ
سیتا همچنین میگفت رامچندر باراده نبردن و تصدیع بودنِ صحرا بدینگونه بیان نمود

درینجا صورت خانه رام و سیتا جام در دست گرفته روبروی رام آمده و صورت رام
و لچهمن که ایستاده سخن میگویند و صورت جانوران رنگارنگ و گلهای گوناگون

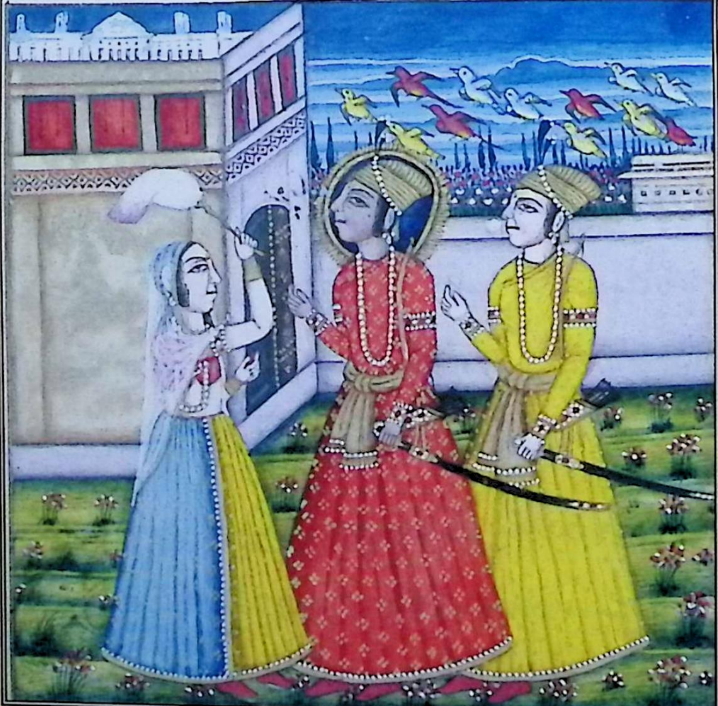

मैं आपके साथ वृक्षों के फल पत्ते खाऊँगी और आपको कोई कष्ट नहीं दूँगी। मुझे नदी, पहाड़, तालाब वन , नीलोफ़र और हंस आदि देखने की इच्छा है, मैं आपके साथ भ्रमण करूँगी। आपके साथ इस प्रकार हज़ार वर्ष और सौ वर्ष बीतने को भी नहीं सोचूँगी जैसा कि स्वर्ग में। सीता इस प्रकार वार्ता करती जा रही थी और रामचन्द्र उनको साथ, न ले जाने का अपना निर्णय तथा वन में रहने का कष्ट एवं कठिनाइयों का इस प्रकार वर्णन कर रहे थे।

राम के महल का चित्र। सीता हाथ में मूर्छल लिये राम के सामने हैं और राम व लक्ष्मण का चित्र, जो खड़े बातें कर रहे हैं। रंगीन पशुओं और विभिन्न फूलों का चित्र।

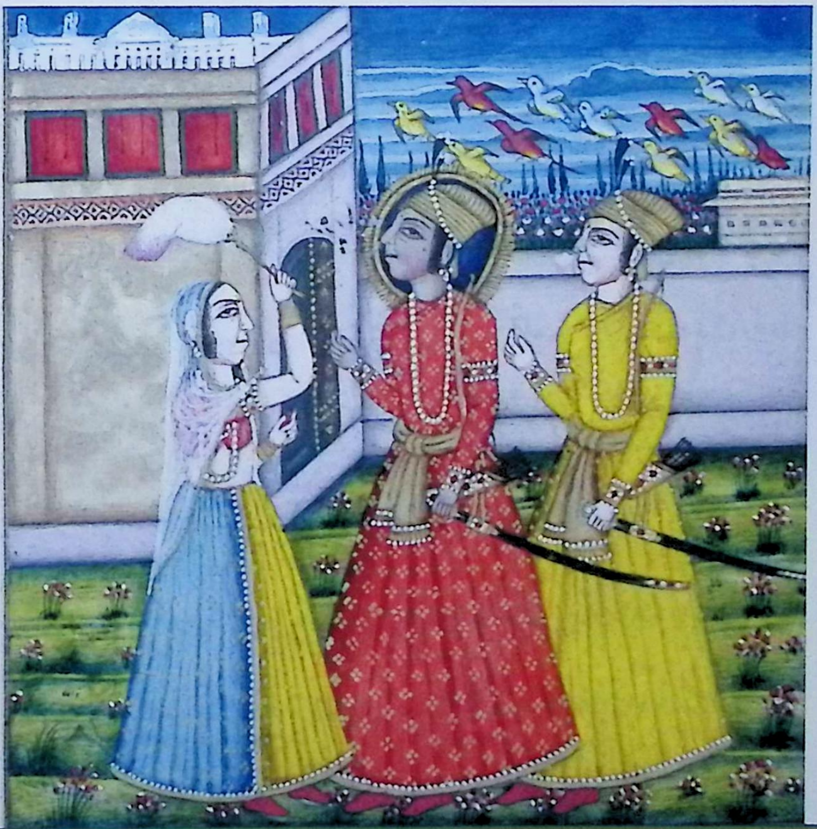

سرگ ۲۳ گفتار رامچندر رام گفت ای سیتا تو به نسل بزرگ زاده همیشه دلا بیاد من داری

لهذا بشنو دلرا در تو گذاشته تنها با کالبد خود میروم والبته حکم پدر بجا می آرم تصدیعهای

بودن صحرا بشنو و آنرا شنیده اراده رفتن از دل بدر کن بر تو رحمت نموده بسبب تصادیع

صحرا نمی برم آنجا بسیار شیرها مست و کشنده آدمی هستند ازانها خواهی رسید

و فیلان مست که هستی ازانها میچکد در آنجا بسیار مثل کوهها ازان لرزان خواهی گردید

و در آنجا برودت سرما بسیار است و گرسنگی هم بیشمار و دیگر از جانوران گوناگون بسیار

خوفست ماران که از غار برآیند و بکنار دریا روند ازانها بسیار ترس است و زنبورها و عقربها

و کرم و ڈانس و پشهها در صحرا افزونند ازان تصدیع از حد بیرون و دریاها که ژرف اند

و در میان آنها تمیس و نهنگ بسیار آنها را شنا باید کرد و بسبب گیاه خاردار و دلدل

خشک و در و باره و از طرق صحرا انباشته ازان تصدیع رفتن بیحد است و طعام

خورش آنجا از بدری و آمله و انگد و آک سیاه و شاک تلخ و تبرنیه باید نمود اگر چیزی یافته نشود

تا چند روز بخورش باید بود و خانه برگ درخت که برن شالا نام دارد و چارپائی که از دست

خود از گاه باید کرد بر زمین باید گذرانید و بقدر سد رمق باید خورد و بار جٹا باید برداشت

و پوست درخت مثل بهوج پتر و اجن را باید پوشید و از دهرم در راه ما که غسل باید کرد و مون

یعنی خاموشی باید گزید این بسیار تصدیعست و گلهائی که خود یابد آورد باید خورد این

सर्ग-३३

रामचन्द्र की वार्ता

राम ने कहा हे सीते ! तू एक से सम्बन्ध रखती है, तू मेरा स्मरण सदा दिल में रखती है। अतः सुनो! मैं अपना हृदय तेरे अन्दर छोड़कर अपने इस शरीर के साथ अकेला जाता हूँ और पिता की आज्ञा का पालन करता हूँ। वन में रहने की कठिनाइयां सुनकर हृदय से जाने का विचार निकाल दें। तुझ पर दया करते हुए मैं शिकार के लिए वन नहीं जा रहा हूँ। वहाँ बहुत से मस्त शेर नरभक्षी हैं उनसे भयभीत होना चाहिए और मस्त हाथी हैं जिनकी मस्ती नष्ट करने वाली है। वहाँ बहुत से पहाड़ हैं जिनसे काँपना चाहिए वहाँ शीत ऋतु की ठंडक बहुत है और भूख का आभास भी बहुत है एवं दूसरे विभिन्न प्रकार के पशुओं का भय है। सांप है जो गुफा से निकलते हैं, नदी के किनारे चलते हैं उनसे बहुत डर लगता है। बिच्छू, कीड़े-मकोड़े और मच्छर वन में बहुत अधिक हैं उनका बहुत भय है। नदी में मगरमच्छ बहुत हैं उनको पार करना होगा और घास - फूस, काँटेदार मार्गों से चलना होगा, उनसे कठिनाई बहुत होती है। वहाँ का भोजन बेर, आंवला और इसी प्रकार की कड़वी तीखी सामग्री है। यदि कुछ न मिले तो कई दिन तक बिना खाये रहना होगा। रहने के लिए झोपड़ा होगा, पलंग के स्थान पर घास होगी, भूमि पर रहना होगा और जीवित रहने के लिए खाना होगा। जटा का बोझ सहन करना होगा और वृक्षों की छाल, वस्त्र के स्थान पर पहनना होगा। धर्मानुसार माघ के महीने में स्नान करना होगा, शान्त रहना होगा। ये बहुत सी कठिनाइयां हैं और स्वतः उगने वाले फूल खाने होंगे,

این تصدیع زیاده تر و دیوتا و پترها را پرستش باید کرد و هر گدائی که بیاید او را پرستش
باید کرد و باید خورانید و غصه و حرص را باید گذاشت و تحمل از تپ باید کرد از خشکی
غیر از پوست نخواهد ماند مرا با توجه محبت خواهد ماند تمام وجود در ریاضت و باد خراب
خواهد شد من ترا نخواهم دید و در صحرا از آواز کرفش و غیره بسیار خوفست اینهمه تامل
کن و بخاطر آر و بصحرا مرو چون رامچندر چنان گفت سیتا تبسم کرده برامچندر گفت این
تصدیعها که گفتی این دیگر از است و مرا که در پناه تو باشم هیچ تصدیع نیست با تو میروم
و اگر میگذاری حالا خود را هلاک میکنم و من از برهمنان شنیده ام که گفته سیتا را
رفت
در صحرا چندی باید گذرانید این را بخاطر آورده دایم آرزوی دیدن صحرا دارم مرا با تو باید
که این هنگام آن آمد و برهمنان راست گفته اند در پائی تو می افتم مرا همراه ببر با تو سیر خواهم
نمود زنان را شوهر خداوند است و من از برهمنان شنیده ام زن را باید که مانند سایه عقب شوهر
باشد هر گاه برود همراه رود و هر گاه بایستد بایستد با شوهر محبت دارد و همراهی او خواهد
و با او بسر کرد برود اینچنین میگفت و گریه میکرد رام سر فرو کرده هیچ ندید همراه بردن او
بخاطر نمیکرد سرگ ۳۴ گفتار جواب سیتا این اراده رامچندر را دانسته بغصه تمام گفت
پدر من که جنک ست پو توفست و خود را عاقل میداند که همچو رامچندر داماد نامرد را
مرد میداند این تمام جهان دروغ میگوید که رامچندر تنها چون آفتاب روشن است

यह और कठिनाई की बात है। देवताओं और पितरों की तपस्या करनी होगी अपितु जो भी आयेगा उसकी तपस्या करनी होगी और भोजन कराना होगा। क्रोध और लालच को छोड़ देना होगा, परिश्रम करना होगा। ठण्ड के कारण त्वचा के अतिरिक्त शरीर पर कुछ शेष न बचेगा। मेरे साथ तुझे क्या प्रेम बचा रहेगा ?समस्त काया कठोर परिश्रम में और वायु में नष्ट हो जायेगी। मैं तुझको नहीं देखूँगा और वन में भेड़िये आदि की आवाज से बहुत भय लगता है यह सब भी विचार हृदय में ला और वन मत जा। जब रामचन्द्र ने यह कहा तो सीता मुस्कुराईं और रामचन्द्र से यह कहा। यह कठिनाइयाँ जो आपने वर्णन की दूसरों के लिये है। जबकि मैं आपकी शरण में रहूँगी तो मुझे कोई कठिनाई नहीं होगी। मैं आपके साथ चलूँगी। आप मुझे यहाँ मरने के लिए छोड़ रहे हैं ?अब मैं स्वयं अपने को मार लूँगी। मैंने ब्राह्मणों से सुना है कि सीता को वन में कुछ समय व्यतीत करना चाहिये। उसे मन में रखते हुए मुझे सदैव वन देखने की इच्छा रही है। मुझे आपके साथ चलना चाहिए क्योंकि इसका समय आ गया है। ब्राह्मणों ने सत्य कहा है, मैं आपके चरणों में पड़ी रहूँगी मुझे अपने साथ ले चलिये मैं आपके साथ भ्रमण करूँगी। स्त्रियों के लिये पति ही उनके भगवान हैं और मैंने ब्राह्मणों से यह भी सुना है कि स्त्री को चाहिये कि छाया की भाँति पति के पीछे रहे। जब भी जाये साथ जाये और जब खड़ा हो तो खड़ी हो, पति के साथ प्रेम रखे और उसका साथ चाहे, उसके साथ स्वर्ग में जाये, वह यह कहती जाती थी और रोती जाती थी। परन्तु राम शीश नवाए हुए कुछ नहीं देख रहे थे और उन्हें साथ ले जाने का विचार मन में नहीं आता था।

सर्ग-३४

वार्तालाप

सीता ने रामचन्द्र की यह इच्छा जानकर जानबूझकर क्रोध से कहा, मेरा पिता जनक मूर्ख है, और स्वयं को बुद्धिमान समझता है कि राम जैसे नपुंसक दामाद को पुरुष जानता है, यह पूरा संसार झूठ कहता है कि श्री रामचन्द्र अकेले चमकदार सूर्य की भांति हैं।

که همچو من زن را که غیر او ملاذ و معاذ ندارد میخواهد که بگذارد و مرا مانند ستاوزی الهیه
ستنبونت پسر دیومت سین پیر و خود دان که غیر شوهر هیچ پناه ندارم و غیر همراهی تو
در دل هم نمیگذرانم مانند کماری یعنی نوجوانی را آوردی حالا سیلوهی یعنی قریب
پست شده ام دیگر را دادن اراده داری و من از کالبد و دل و گفتار گناه تو نکرده ام
چرا مرا میگذاری و اگر گناهی از نادانی کرده ام عفو نموده مهربانی فرما از همراهی تو کاه و سنخ و خارهای
اشجار مرا مانند نخل خواهد بود و اگر بادی گرد من خواهد افشاند آنرا چون چندن خواهم دانست
و اگر آنجا هیچ درخت و ثمر آنها برای خوردن خواهی داد خواه لذیذ خواه غیر لذیذ مرا چون امرت
یعنی الحیات خواهد شد و بهمراهی تو برادران و مادر و پدر را یاد نخواهم کرد اگر بیتو سرگ یعنی بهشت
روهم نرک یعنی دوزخ باشد لهذا مرا با خود ببر و الا همین زمان زهر میخورم این تصدیع هجر تو
یکلحه هم برداشت نخواهم نمود چه جای سه سال و ده سال و یکسال که چهارده سال باشد بدینسان
دختر جنک گریه کرده در پای شوهر افتاده و بدینگونه گفتار غربت انگیز او که جگر را زخم نمود رامچندر
هم از گریه اشکها چون آتش فرو ریخت بحدیکه تالاهای آب با شد و او را از میان پای خود برداشت
و بشیرین زبانی گفت ای نیکو مبتو من هم سرگ نمیخواهم و مرا خوف هم نیست اگر اندر خود باشد
این رفتن صحرا دهرم هست که بزرگان گفته اند این را نمیتوانم گذاشت مثل دریائی که مکان ساحل خود
نگذارد آنچه مرا باید بگفت همان میکنم اگر میخواهی همراه من بیا مرا خاطر تو عزیز است اسباب و پیرایه ها برهمنان را

वे मुझ जैसी स्त्री को जिसका, उनके अतिरिक्त कोई अन्य ठिकाना और आश्रय नहीं है चाहते हैं कि यही छोड़ जायें। मुझे आप घुमत्सेन के पुत्र सत्यवान की पत्नी सावित्री की भाँति अपना सेवक समझिये, कि पति के अतिरिक्त मेरा और कोई आश्रय नहीं है। आपके संग के अतिरिक्त मैं और कोई बात मन में नहीं ला सकती। आप मुझे विवाह करके किशोरावस्था में लाए थे अब मैं बीस वर्ष के लगभग हो चुकी हूँ अब आप मुझे दूसरों को देने का मन में विचार रखते हैं ?यद्यपि मैंने अपने शरीर, मन और बातों से आपका कोई अनिष्ट नहीं किया है फिर भी आप मुझे क्यों छोड़ रहे हैं ?और फिर भी यदि मैंने मूर्खता में कोई अपराध किया है तो कृपया मुझे क्षमा कर दें। आपकी संगति में मेरे लिये घास और वृक्षों के कांटे उपवन की भाँति होंगे। यदि वायु मेरे पर धूल उड़ायेगी तो मैं उसे चन्दन समझूंगी, यदि आप वहां मुझे वृक्ष की जड़ और फल खाने को देंगे, चाहे वह स्वादिष्ट हो या अस्वादिष्ट हो, तो वह मेरे लिये अमृत के समान होगा। आपके साथ रहकर मैं अपने भाइयों और माता-पिता को याद नहीं करूँगी, यदि मैं आपके बिना स्वर्ग में भी जाऊँगी तो वह नरक होगी। अतः आप मुझे अपने साथ ले चलिये। मैं इसी समय विष खा लूँगी परन्तु आपके वियोग का यह कष्ट मैं एक पल के लिए भी सहन नहीं करूँगी। जबकि तीन वर्ष, दस वर्ष और एक वर्ष मिलाकर चौदह वर्ष होते हैं। जनक की पुत्री इस प्रकार विलाप करती हुई पति के चरणों में पड़ी थी और उसके हृदय को भेदने वाली बातें ऐसी थीं कि राम के हृदय को आहत किये दे रही थीं। रामचन्द्र भी रुदन के कारण गरम-गरम इतना अश्रु बहा रहे थे कि उससे तालाब बन जाए। फिर उन्होंने सीता को अपने चरणों के मध्य से उठाते हुए मधुर भाषा में कहा हे सज्जन स्त्री ! तेरे बिना मैं भी स्वर्ग नहीं चाहता हूँ और मुझे भय भी नहीं है। यदि इन्द्र स्वयं हो तब भी यह वन जाना धर्म है बड़े बूढ़ों ने कहा भी है कि मैं इसे नहीं छोड़ सकता, जैसे कि समुद्र अपना तट नहीं छोड़ता है। पिता ने जो मुझे कहा है मैं वही करूँगा। यदि तू मेरे साथ चाहती है तो आ मुझे तेरी इच्छा अधिक प्रिय है।

ونیک کارا زا بسرعت و شتابی بخشنده باش اینچنین از زبان شوهر شنیده بزودی از خوشحالی

زر و نقره و غله وغیره بخواهند کان بخشیدن گرفت درینجا صورت رام و لچهمن و عقب رام

صورت سیتا با پیرایه خوب در پای رام افتاده و رام او را از دست برمیدارد و صورت

دو کس دیگر که بر دروازه ایستاده اند

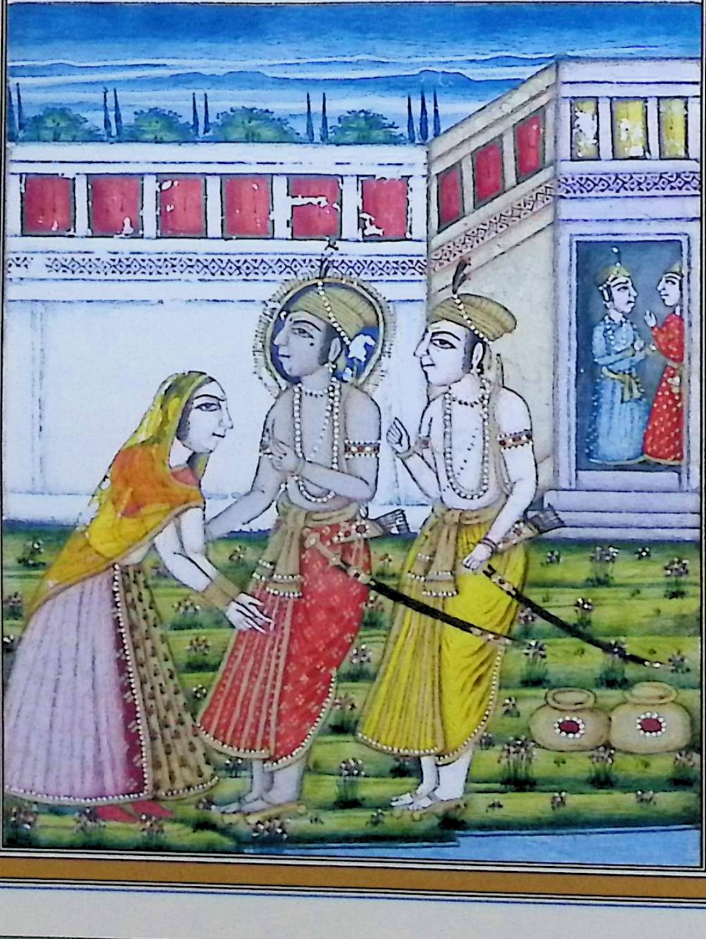

अपना समस्त सामान कपड़े आदि शीघ्रता से ब्राह्मणों और सज्जन लोगों को दे डालो। पति के मुख से इतनी बात सुनते ही सीता ने जल्दी-जल्दी सोना चांदी, अनाज आदि माँगने वालों को देना आरंभ कर दिया।

राम और लक्ष्मण का चित्र, राम के पीछे सीता का चित्र, जो सुन्दर वस्त्र में राम के चरणों में पड़ी हैं और राम उसे हाथ से उठा रहे हैं तथा दूसरे दो व्यक्तियों का चित्र जो द्वार पर खड़े हैं।

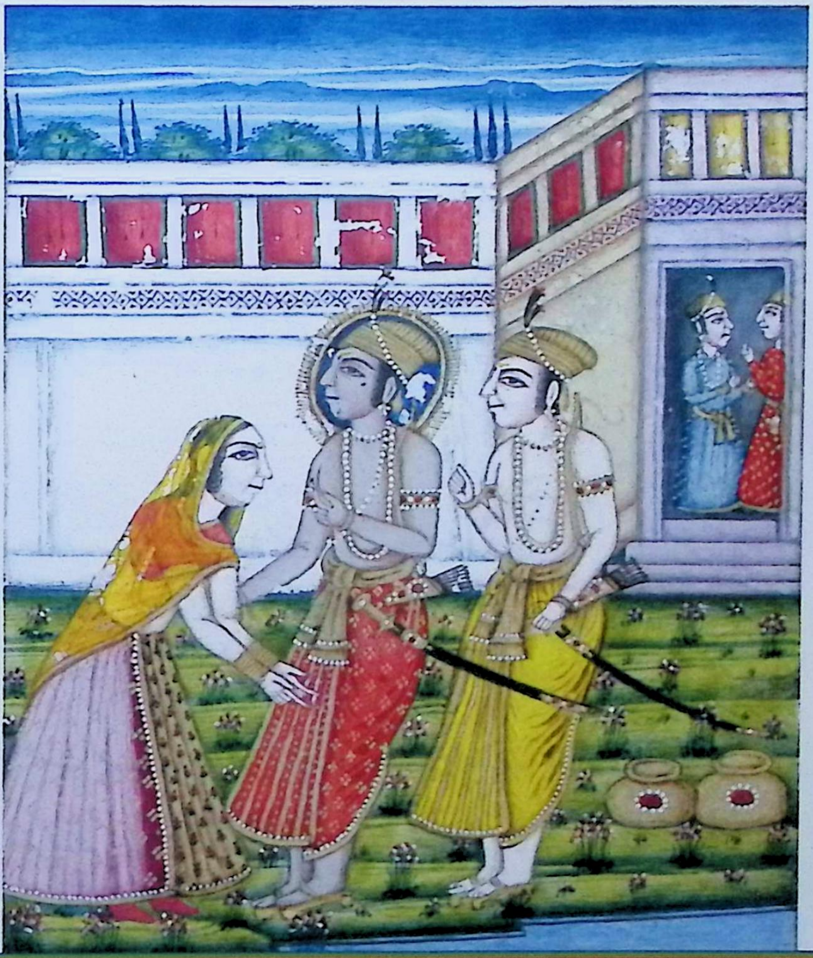

گفتار لچهمن اینطور گفت و گوی سیتا و رامچندر را لچهمن که پیشتر آمده حافظ بود
شنیده باقدام سیتا و برادر افتاده گفت اگر رفتن صحرا مقرر نموده اید من هم کمان
گرفته عقب شما میروم و میتو راج و سرگ لوک و دولت بی نهایت هیچ نمیخواهم رامچندر
از مهربانی بالچهمن گفت تو برادر عزیز منی نباید بصحرا بروی تو متحمل و با دولت باش
این را شنیده لچهمن پای برادر را گرفته گفت مرا منع مکن در جای دشوار خدمت تو
خواهم کرد رامچندر گفت اگر تو با من خواهی رفت خدمت کوشلا و سومترا که خواهد کرد
پدر من مغلوب حواس شده بهرت را راج داده محکوم کیکئی خواهد گشت و کیکئی از مستی
دولت و راج کور گشته کجا پرداخت باری یعنی سوکن خواهد کرد بنابران تا که من آیم
تو پرورش ایشان کن لچهمن دست بسته بار دیگر گفت مثل من هزاران نوکر کوشلا
راست او را که هزاران دیه در تصرف ست بهرت البته خدمت خواهد کرد و من خادم تو
خواهم شد پیش پیش تو رفته راه صاف خواهم نمود و ثمرات صحرائی و گلها و برگها
برائی تو خواهم آورد و همه شب بیدار خواهم بود رامچندر ازین گفته بسیار مهربان گشته بود
گفت البته همراه من بیا اما از دوستان اجازت و کمانی را که راجه را برن داده
و ترکش که تیر ازو کم نمیشود همراه بگیر و کوچ ابهند یعنی جوشن که هرگز شگافته نشود و تیرها
تیز پیکان و شمشیر آبدار و کمانی که در خانه استاد من است اینهمه را بیار این را شنیده

सर्ग-३५

लक्ष्मण की वार्ता

सीता और रामचन्द्र की इस प्रकार की वार्ता सुनकर, लक्ष्मण ने, जो पहले से उपस्थित थे सीता और भाई के चरणों में गिरकर कहा, ''यदि आप वन में जाने का निर्णय कर चुके हैं तो मैं भी धनुष लेकर आपके पीछे-पीछे आऊँगा। आपके बिना राज्य, स्वर्ग, लोक और अत्यधिक धन उन में से कुछ नहीं चाहूँगा।'' रामचन्द्र ने प्रेम से लक्ष्मण से कहा कि ''तू मेरा प्रिय भ्राता है, तुझे वन में जाना उचित नहीं, धैर्य रखो और आराम से रहो यह सुनकर लक्ष्मण ने भाई के चरण पकड़कर कहा ''मुझे मत रोकिये, कठिन स्थान पर मैं आपकी सेवा करूँगा'' रामचन्द्र ने कहा ''यदि तुम मेरे साथ जाओगे तो कौशल्या और सुमित्रा की सेवा कौन करेगा?मेरे पिता की बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है वह इन्द्रियों के वश में हो गये हैं। भरत को राज्य देकर वह कैकेयी के आधीन हो जायेंगे और कैकेयी सम्पत्ति राज्य कीमस्ती में अंधी होकर अपनी सौतन की देखरेख कहाँ करेगी। अतः जब तक मैं न आऊँ तुम उनकी देखभाल करो।'' लक्ष्मण ने करबद्ध पुनः निवेदन किया ''मेरी माता कौशल्या के हजारों सेवक हैं और हजारों गाँव उसके अधिकार में हैं। भरत अवश्य उसकी सेवा करेगा और मैं आपका सेवक रहूंगा। आपके आगे-आगे चलकर मार्ग साफ करूंगा आपके लिये जंगल के फल-फूल और पत्ते लाऊँगा, सारी रात्रि जागता रहूंगा।'' रामचन्द्र ने इस वार्ता से बहुत प्रभावित होकर कहा तुम मेरे साथ अवश्य आओ परन्तु मित्रों से अनुमति ले लो। एक धनुष जिसने राजा को वचन दिया था और तरकश, जिसके बाण कभी कम नहीं होते साथ ले लो। कवच जो कदापि फट नहीं सकता और तेज नोक वाले बाण तथा धारदार तलवार और कमान जो मेरे गुरू के घर में है, यह सब लाओ।

لچهمن زر و دار از همراهیان پرسیده و همه اسلحه را گرفته آمده حاضر شد بار دیگر رامچندر

بلچهمن گفت آنچه نقد و جنس برابست میخواهم که برهمنان را بخشم و یاران بسیار کسانی را

که بسیار متعلقان دارند و اندک زر و دیگر آنها که نوکران و دوستان من اند اینها را

هم برای وظیفه چیزی بدهم و سوجگ پسر بششت را و غیره برهمنان را نیز بسیار

درینجا صورت رام و لچهمن بطور سابق و لچهمن که دو کمان و یک ترکش و زره و شمشیر آورده

و در پای رام و سیتا افتاده و صورت خانه

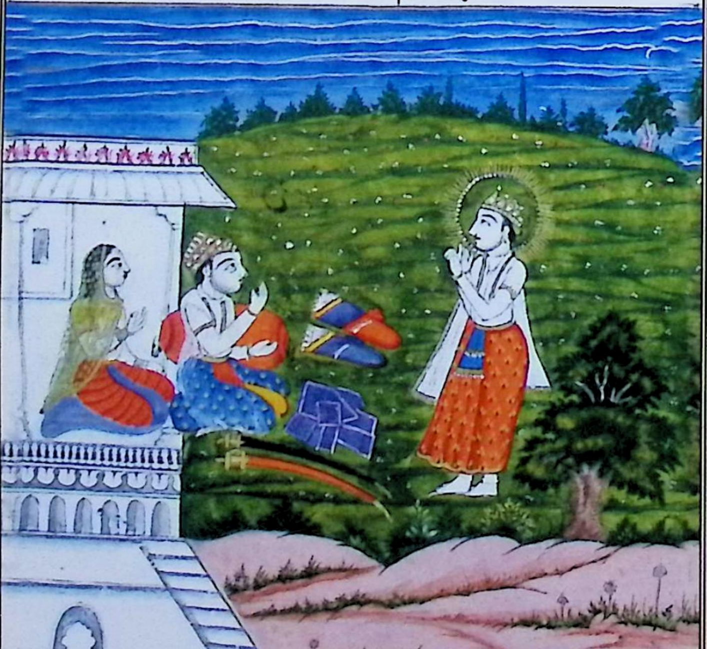

यह सुनते ही लक्ष्मण जल्दी से अपने साथियों से पूछते हुए सारे हथियार लेकर उपस्थित हो गये। रामचन्द्र ने पुनः लक्ष्मण से कहा कि ''नकद धन व अन्य सामान जो कुछ मेरे पास है मैं चाहता हूँ कि सब ब्राह्मण को दे दूँ। अतः तुम ऐसे लोगों को लाओ जिनके सम्बन्धी और खाने वाले अधिक हों तथा धन कम हो। दूसरे वह लोग जो मेरे सेवक तथा मित्र हैं उनको भी मैं वज़ीफे के लिए कुछ दूंगा, और वशिष्ठ के पुत्र सुयज्ञ आदि ब्राह्मणों को भी लाओ।''

राम और लक्ष्मण का चित्र यथावत और लक्ष्मण जो धनुष तथा एक तरकश, कवच और तलवार लाए हुए राम व सीता के चरणों में पड़े हैं और भवन का चित्र।

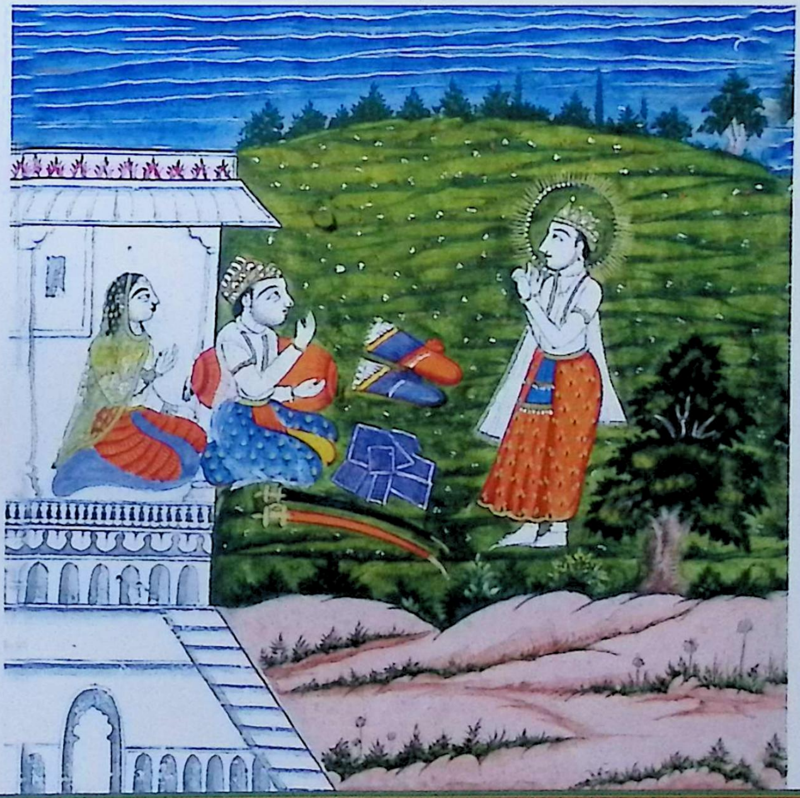

سرگ ۳۲ از فرموده برادر لچهمن در خانه سوجک رفت و در آتشکده که آنجا نشسته بود
رفته گفت رامچندر برادر من بصحرا میرود شما را طلبیده سوجک که در خواندن مشغول بود
سند هیا یعنی پرستش کرده با لچهمن روانه شد و در خانه رام آمد و رامچندر او را دید
با سیتا پیشوا رفت و بطریق پیشکش کونڈل یعنی گوشواره طلا و حمائل جواهر لعل و یاقوت
و بازوبند و بلی یعنی کره که در دست می پوشند و دیگر جواهر بیشمار گذرانیده پرستش نمود
و سیتا فرمود که این آشنائی وقت نست و بیدها را تمام خوانده هار طلائی و غیره زیور
و اسباب بسیار برائی اهلیه این بده و پلنگ خواب که از اقسام جواهر مرصع است هم بده سیتا
همچنان کرد و فیلی شترجی نام که معنی آن دشمن کش باشد و بنائی یعنی ماهون مرا داده است
از اپیرایه پوشانیده با هزار کاو ناده من باین بخشیدم سوجک که اینهمه را گرفته اسیس یعنی دعا کرد
و سوائی این دیگر برهمنان را رامچندر بسیار زر بخشید و دیگر خیرخواهان را نیز داد و چاکران
و چوبداران و اهل حرفه و آنها که همراه بودند هر یکی را مطابق قدر زر بذل نمود و باز بلچهمن گفت
که تو هم نقد و جنس ببرهمنان بخش و دوستان و خواهندگان را از کاو ماده و زر و نقد
و اطعمه و غیره و اثواب و پارچه هرچه باشد مطابق آرزوی همگنان بده و اگست و کوشک
و کارکی و شاندل را طلبیده ببارش اکرام جواهر سیر کن و دوستان خیر اندیش
من که همیشه خدمت من میکنند و اچارج پتری را بیار که با نجا سواریها و جواهرها می بخشم

सर्ग-३६

भाई के आदेश से लक्ष्मण सुयज्ञ के घर गये और अग्निकुण्ड में जहाँ वह बैठे हुए थे जाकर कहा ''मेरे भाई रामचन्द्र वन को जा रहे हैं और उन्होंने आपको बुलाया है।'' सुयज्ञ जो पढ़ने में व्यस्त थे पूजा करके लक्ष्मण के साथ चल दिये और महल में आए। रामचन्द्र उन्हें देखकर अगुवाई के लिए बढ़े और दक्षिणा के रूप में कान की बाली अर्थात् कुण्डल स्वर्ण हीरे, जवाहरात भुजा पर बांधने वाला (बाजूबन्द) कड़ा जो हाथ में पहनते हैं एवं दूसरे रत्न देकर दक्षिणा दी और सीता से कहा ''यह मेरे काल का ज्ञाता है, समस्त वेद पढ़ डाले हैं उनकी पत्नी के लिये सोने का हार आदि आभूषण और बहुत सारा सामान दे दो तथा मसहरी जो हर प्रकार के रत्नों से जड़ित हैं वह भी दे दो। सीता ने पति की आज्ञा का पालन किया और शत्रुञ्जय नामक हाथी जिसका अर्थ होता है शत्रु का वध करने वाला और जो मुझे मामा ने दिया है उसको मूल्यवान वस्त्रों से सुसज्जित करके हजार गायों के साथ उनको दिया। सौजक ने यह सब लेकर प्रार्थना की। उनके अतिरिक्त दूसरे ब्राह्मणों को भी रामचन्द्र ने बहुत सम्पत्ति दी और दूसरे शुभचिन्तकों नौकरों, चोबदारों और अहलेहरफा उन सब को जो सहायक व सहयोगी थे उनमें से प्रत्येक को उसके पद के अनुरूप दिया। फिर लक्ष्मण से कहा कि तुम भी नकद धन और सामान ब्राह्मणों को दे दो। मित्रों और मांगने वालों को गऊ, धन, नकद धन, खाने आदि वस्त्र, पारचे आदि जितना संभव हो सके उनकी इच्छानुसार दे दो। अगस्त्य, कौशिक, कार्की और शान्डिल्य को बुलाकर रत्नों की वर्षा का चमत्कार देखो और मेरा भला चाहने वाले मित्र जो सदैव मेरी सेवा करते हैं और अचार्य पुत्री को लाओ मैं उन सबको सवारी और रत्नों से सम्मानित करूंगा। मेरा गुणगान करने वाले और मेरे सेवक हैं

وآنها که با دزوشان وخدمتکاران منند وآنانکه مرا پارچه ها میپوشانند وانکه ریش
حجامت مینمایند وآنانکه خوشبوی میمالند وانانکه طعام می پزند وانانکه برائی خوشوقتی
دل حاضر میشوند وآنانکه افسانه میکویند ازینان هر یک را هزار هزار نشک و برائی خوردن
هزار هزار من شالی و هزار هزار ماده کاو بده و پهلوانان مرا و شعبده بازان وسخن پردازان
و برهمنان بازی کنان مرا هزار نشک بده راقم ترجمه مقدار نشک در لیلاوتی چنان مینویسد
که ده کودی را دمشک و ده دمشک را کاکنی و چهار کاکنی را پن و شانزده پن را درم و شانزده
درم را نشک باشد غرض رامچندر فرمود که خدمتکاران کوشلا و سومترا را نیز دو دو هزار
نشک بده و گدایان و برهمنان وآنانکه کوشلا ما در مرا خدمت میکنند دو دو هزار
نشک بده و همین مقدار گدایان سومترا را و همچنان کن که کسی از رفتن من پریشان نکردد
و مرا هیچ چیز چنان نیست که ندادنی باشد این را شنیده لچهمن موافق فرموده بهر یک داد
و مردم را فرمود تا آمدن من خانه را محافظت نمایند بعده خزانچی را فرمود وانچه زر باقی نشست
همه را بیار خزانچی همچنان کرد رامچندر آن زر ابغربا و مفلوکان و ناداران بخشید سبهاج تربیت
نام کسی برای جک دختر میخواست او را موافق خواهش او داد صورت رام و لچهمن و سیتا
برابر نشسته و سو جک برهمن را رامچندر کنڈل در کوش و هار لعل و یاقوت در کلو و بازو بند
جواهر و کڑه طلا در دست پر پلنک نشسته زر و جواهرش نهاده واز دست سیتا با حلیه سو جک

जो लोग मुझे वस्त्र पहनाते हैं, जो मेरी दाढ़ी की हज़ामत करते हैं, शरीर पर सुगन्ध मलते हैं, जो भोजन बनाते हैं, जो मनोरंजन के लिये उपस्थित रहते हैं, जो कथाएँ व लघु कथाएँ कहते हैं उनमें से प्रत्येक को एक हजार रुपये और खाने के लिए हज़ार-हज़ार मन चावल तथा हजार-हजार गायें दो। मेरे पहलवानों, जादूगरों गवैया और खेलकूद दिखाने वाले ब्राह्मणों को हजार-हजार नशक दो। (अनुवादक कहता है कि नशक कर मूल्य लीलावती में यह लिखा है कि दस कोदी को दशक कहते हैं और दस दशक को काकुनी कहते हैं और चार काकुनी को पन और पन्द्रह पन को द्रहम और पन्द्रह दरहम का नशक कहते हैं)। अन्त में श्री रामचन्द्र ने कहा कि कौशल्या और सुमित्रा के सेवकों को भी दो-दो हज़ार नशक दो और इतनी मात्रा सुमित्रा के फ़कीरों को भी दो इस प्रकार ऐसा करो कि कोई मेरे जाने से दुखी न हो। मेरी कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो देने योग्य न हो। यह सुनकर लक्ष्मण ने आदेश के अनुसार प्रत्येक को दिया और लोगों से कहा कि मेरे आने तक घर की रक्षा करें। उसके पश्चात् कोषाध्यक्ष से कहा कि मेरा जितना माल शेष है वह सब लाओ। कोषाध्यक्ष ने ऐसी ही किया रामचन्द्र ने उसे गरीबों और फटेहाल लोगों तथा अपंगों को दे दिया सुबहाज तरचत नामक एक व्यक्ति अपनी पुत्री के यज्ञ के लिये कुछ धन चाह रहा था उसको भी उसकी इच्छानुसार दिया।

श्री राम का चित्र, लक्ष्मण और सीता बराबर बैठे हुए हैं। सौजक ब्राह्मण को रामचन्द्र कान की बाली गले में लाल और याकूत का हार, बाजूबन्द रत्न और सोने का कड़ा हाथ में दे रहे हैं, शय्या (मसहरी) पर बैठे हुए हैं सामने जवाहर रखे हुए हैं और सीता के हाथ से सौजक की पत्नी को दिलवा रहे हैं।

داده و هوم و سند ها میکند و شترجی فیل را پیرایه جواهر پوشانیده به برهمن بخشیده

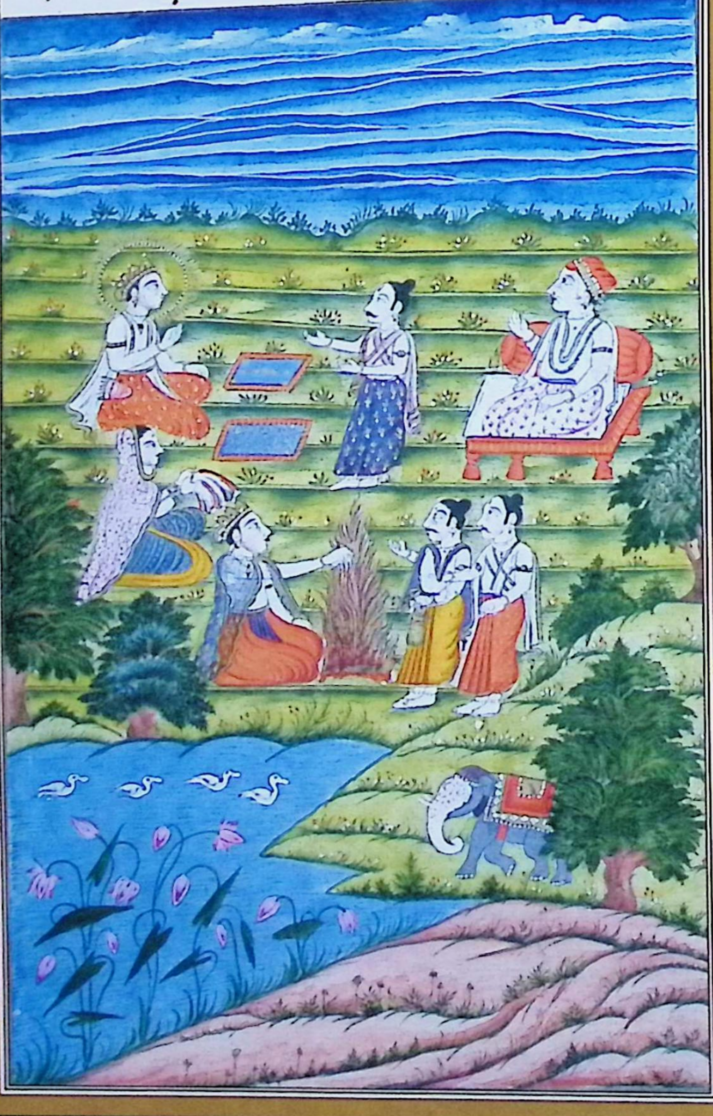

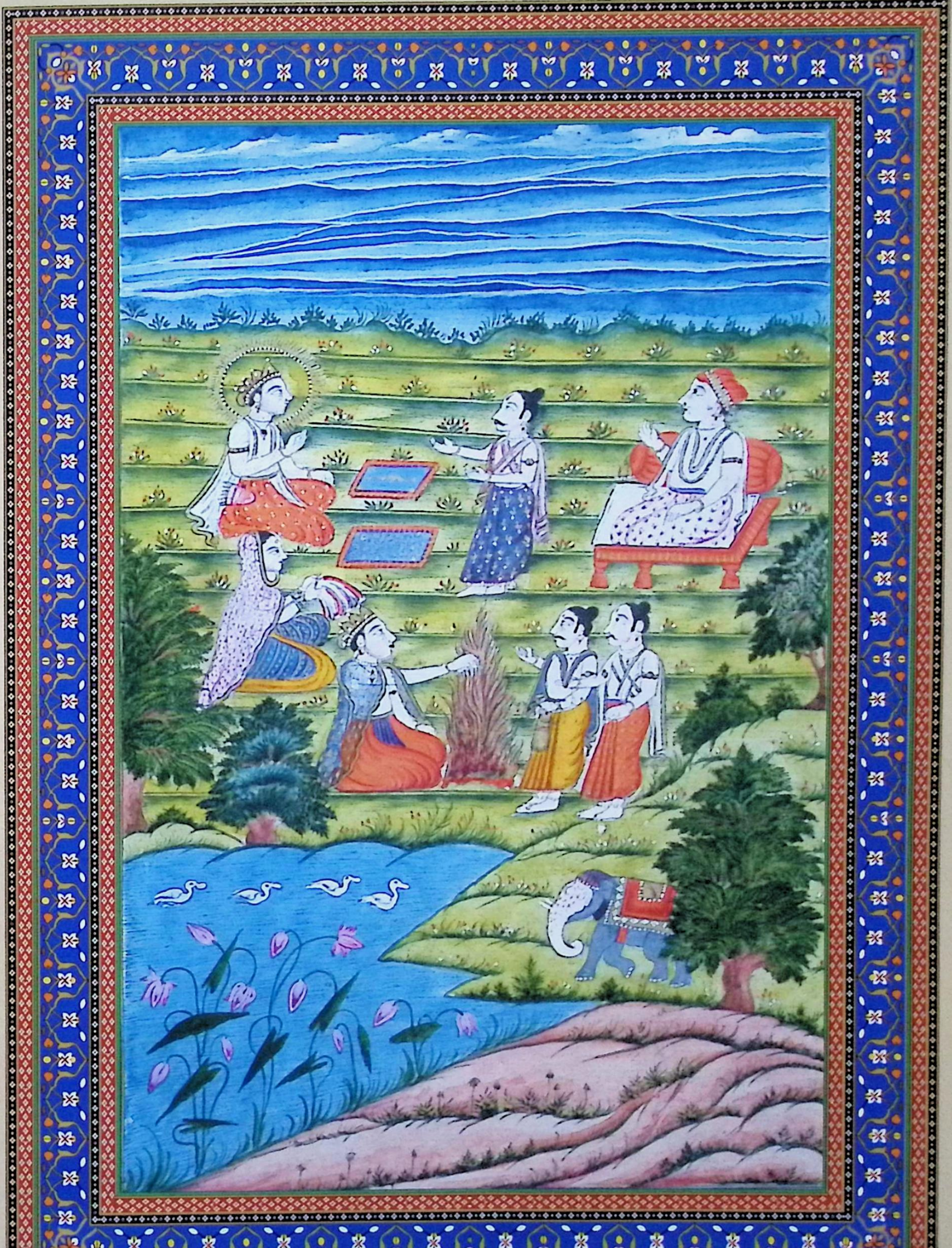

۳۷

سرگ رفتن نزد پدر رامچندر همه متاع خانه را بخشیده با سیتا و لچهمن برای دیدن پدر
رفت هر دو برادر اسلحه‌ها گرفته در شاهراه بگذشتند و سیتا عقب اینها میرفت
و مردم خلایق بر بالائی بام برآمده تماشا میکردند و در کوچه و برزن از بس هجوم
طاقت عبور نبود و از هر طرف گوناگون سخنان میگفتند آن رامچندر که عقب او لشکر چترنگ
یعنی فیل و اسپ و رتهه و پیاده میرفت او تنها با سیتا و لچهمن میرود و با وجود قدرت
و طاقت گفته پدر رارد نمیکند آن سیتا که پیشتر جانداران فلک و طیور هم دیدن
نمیتوانستند او را حالا مردم کوچه می بینند آنکه ذاتی وجود او پر از پیرایه ست اگر گرمی میشد
زنان ماه رو او را بادکش میکردند آن سیتاست غرض که دشرتهه بیوقوف شد
که این را بصحرا فرستاد ازین تمام جهان تصدیع یافت چنانچه جانوران آب را از خشک شدن آب
یا بوقت ماه را کلف گیرد رامچندر بیخ درخت است ما همه ثمر و گل و برگ اگر کندن
بیخ ما همه مستاصل بشویم و خانه و باغ و خوابگاه را گذاشته با پسر و غلامان و زنان
و بهایم و سواری وغیره همه عقب رام میرویم که بیکسی تنها اینجا بماند و آن جنگل خود
شهر خود خواهد شد آنجا که رامچندر خواهد رفت بدینسان سخنان شنیده
رامچندر با لچهمن و سیتا برای دیدن پدر رفت و در اینجا صورت رام را
که شمشیر بسته و لچهمن و سیتا عقب او در شاهراه میرود

सर्ग–३७

पिता के पास जाना

श्री रामचन्द्र अपने घर का सारा सामान बाँटकर सीता और लक्ष्मण के साथ पिता को देखने के लिये गये। दोनों भाई हथियार लिये हुए मार्ग से जा रहे थे और सीता उनके पीछे चल रही थीं अन्य लोग कोठों के ऊपर आकर देख रहे थे। गली में जन समूह की अधिकता के कारण चलना कठिन था। लोग विभिन्न प्रकार की बातें कर रहे थे कि वह रामचन्द्र जिनके पीछे सेना चतुरंगिणी अर्थात् हाथी, घोड़े, रथ और पैदल सेना चलती थी। सीता आज लक्ष्मण के साथ अकेले चल रही हैं। शक्ति और प्रभाव होने के बावजूद पिता की बात को नकार नहीं रहे हैं। वह सीता जिनकी झलक इससे पहले आकाश के पशु पक्षी भी नहीं देख सकते थे, उनको इस समय गली के सब लोग देख रहे हैं। जिनका अपना अस्तित्व वस्त्रों से ढका होता था, गर्मी होती थी तो सुन्दर स्त्रियां उन्हें पंखा झलती थीं यह वही सीता हैं। दशरथ पागल हो गये हैं कि उनको वन भेज दिया और सम्पूर्ण संसार की निन्दा मोल ले ली। जैसे कि जल के पशुओं को जल के सूख जाने से या चन्द्रमा को असमय ग्रहण लग जाने से होता है। रामचन्द्र वृक्ष की जड़ हैं और हम सब फल फूल और पत्ते हैं। जड़ खोद देने से हम सब मर जायेंगे। घर, बाग़ और शयनकक्ष को छोड़कर पुत्रों, दासों तथा स्त्रियों, पशुओं एवं सवारियों आदि के साथ हम राम के साथ पीछे जायेंगे। कैकेयी यहां अकेली और वह वन जहाँ रामचन्द्र जायेंगे स्वयं अपना शहर बन जायेगा। इसी प्रकार की बातें सुनते हुए श्री रामचन्द्र, लक्ष्मण और सीता के साथ पिता को देखने के लिये गये।

श्री राम का चित्र जो तलवार लगाए हुए हैं तथा लक्ष्मण और सीता उनके पीछे-पीछे जनपथ पर चल रहे हैं।

۱۹۸

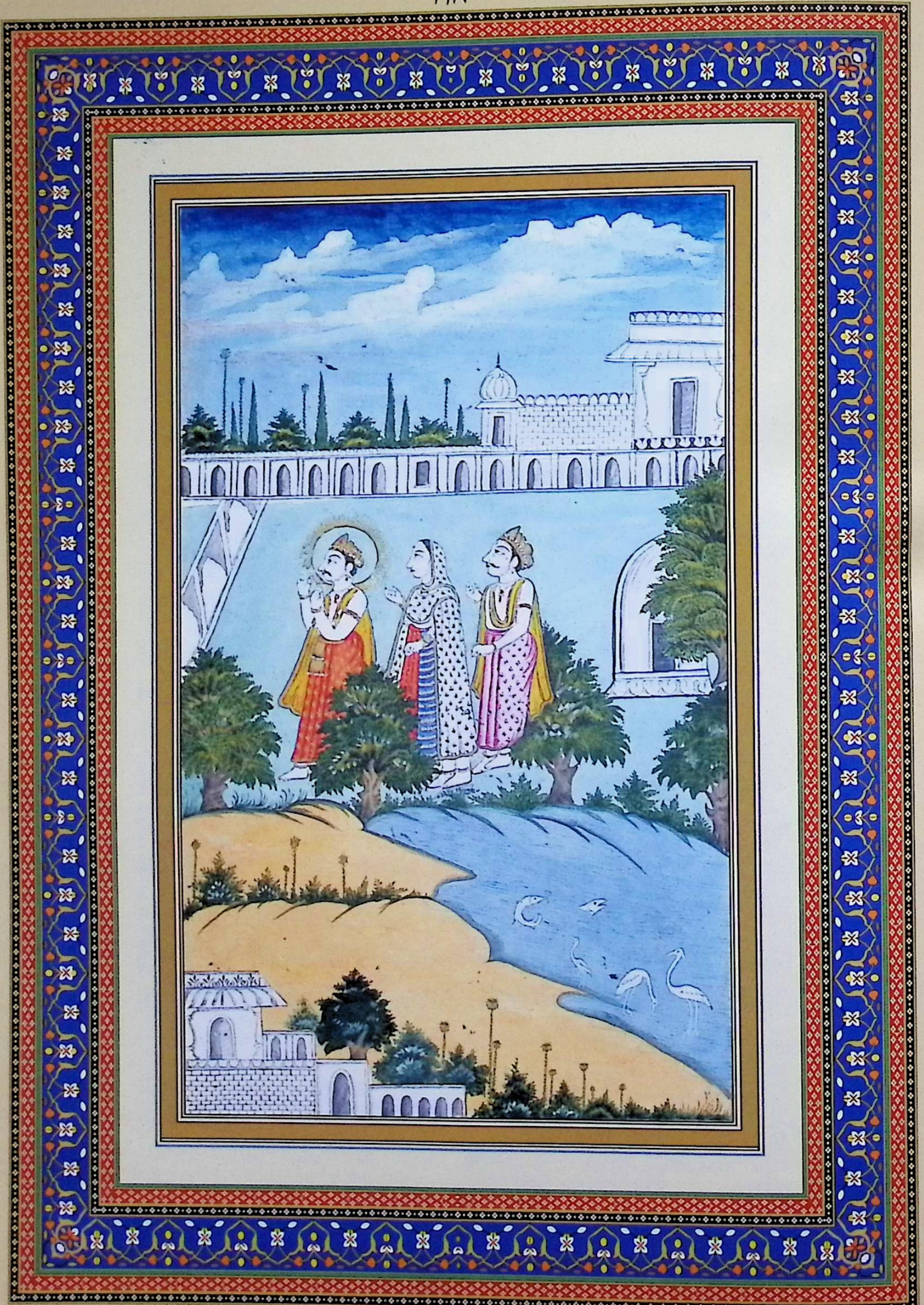

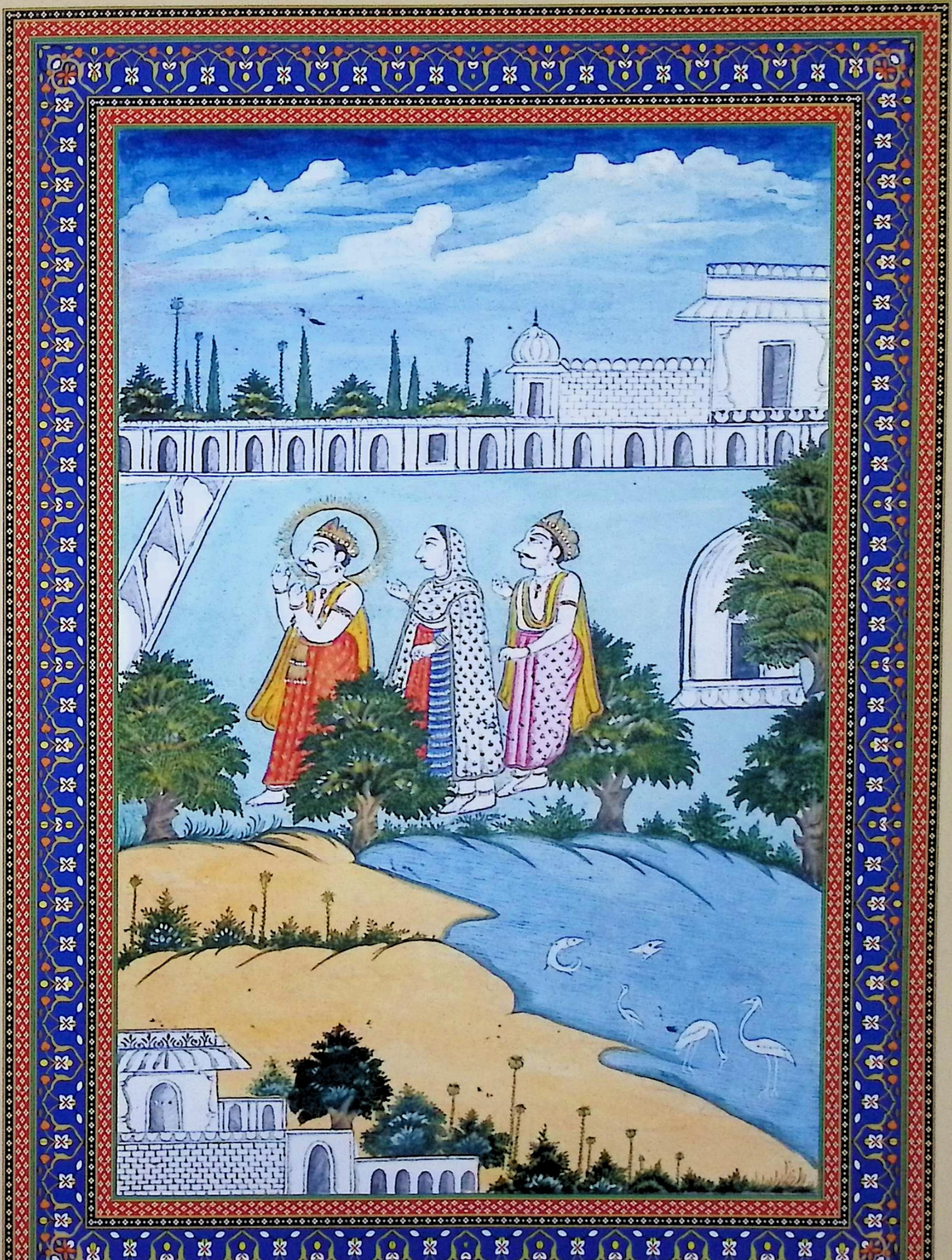

۳۰ سرگ حال راجه دشرته پیش از آنکه رامچندر بوبا سیتا و لچهمن برسد راجه دشرته گریه نمود
میگفت ای کیکئی مرا کشتی از رفتن رامچندر و بمردن من خوشوقت باش بهرت ترا هم ترک
میدهم ای احمقه ترا که کس این مصلحت داد با وجود رامچندر بهرت کودک چسان راج خواهد کرد
تو مانند شب آخرت چسان اهلیه من شدی مثل افعی زهردار هستی لعنت بر عورات
است تخصیص آنها که کار آراسته را مانع آیند از سبب حرص زرپرستندگان
و دوستان را گذارند ای کیکئی دل تو بیرحم است که بر من رحم نمیکنی ترا درینجهان
و در انجهان راحت مباد زیرا که پسر عزیز مرا جدا میکنی پسر من که بسواری پالکی و رتهه
سزاوار است چگونه پیاده در صحرا خواهد رفت و کسیکه بتناول اطعمه لذیذ سزاوار است
او تلخ و تیز و ترش ثمرات صحرا چسان خواهد خورد و آنکه بسیار نازک و پیرایه های نیک
میپوشید او چگونه پوست درختان خواهد پوشید بهر نوع لعنت بر من است که از سبب عورت
پسر محکوم خود را ترک میکنم مرا مردم چه خواهند گفت و آن شب است و بام دیو و جاوالی
و کشب مرا از رفتن رامچندر چه خواهند گفت و هنگام عیش پسر من تصدیع می یابد
مردن خواهد شد اگر رامچندر خواهد رفت بدینگونه راجه گریه میکرد که سومنتر عرض نمود
رامچندر آمده است راجه فرمود که اندرون آید درینجا صورت راجه دشرته بالای
چارپائی نشسته و دست برداشته سخن میگوید و کیکئی زیر چارپای نشسته و سومنتر وزیر پیش ایستاده

सर्ग-३८

राजा दशरथ की दशा

इसके पूर्व कि श्री रामचन्द्र, सीता और लक्ष्मण के साथ वहाँ पहुँचे राजा दशरथ रो-रो कर कह रहे थे "हे कैकेयी ! तुमने मुझे मार डाला। रामचन्द्र के जाने से और मेरे मरने से तू प्रसन्न हो मैं तेरे लिये भरत को भी छोड़ देता हूँ। ऐ मूर्ख तुझे किसने यह परामर्श दिया रामचन्द्र के होते हुए भरत बच्चा कैसे राज्य करेगा ?तू जीवन के अन्तिम रात्रि की भांति कैसे मेरी पत्नी हो गयी। तू सर्प के समान विषैली है। धिक्कार है ऐसी स्त्रियों पर, विशेष रूप से उन पर, जो बने कार्य में रुकावट डालती हैं। धन और लालच के कारण अपने चाहने वालों और मित्रों को छोड़ देती हैं। ऐ कैकेयी ! तेरा हृदय कठोर है कि मुझ पर तू दया नहीं करती। तुझे इस संसार में न शान्ति मिले और न उस संसार में। क्योंकि तू मेरे प्रिय पुत्र को मुझसे अलग कर रही है। मेरा वह पुत्र जो पालकी और रथ की सवारी का अभ्यस्त है वह पैदल वन में कैसे जायेगा?और जो व्यक्ति स्वादिष्ट भोजन खाया है या खाया करता है, वह वन के कड़वे कसैले और खट्टे फल कैसे खायेगा? जो बहुत कोमल और सर्वश्रेष्ठ वस्त्र धारण करता है वह वृक्षों की छाल कैसे पहनेगा?मुझ पर धिक्कार है कि स्त्री के कारण अपने आज्ञाकारी पुत्र को छोड़ रहा हूँ। मुझे लोग क्या कहेंगे और वशिष्ठ, वामदेव, जाबालि और कश्यप मुझे रामचन्द्र के जाने से क्या कहेंगे ?और मेरे विलासिता के समय मेरा पुत्र कष्ट उठायेगा। मुझे मर जाना होगा यदि रामचन्द्र जायेंगे। राजा इसी प्रकार विलाप कर रहे थे कि सुमन्त्र ने निवेदन किया "रामचन्द्र आये हैं" राजा ने कहा कि अंदर आयें।

राजा दशरथ का चित्र, चारपाई पर बैठे हुए हैं, हाथ उठाकर बातें कर रहे हैं और कैकेयी चारपाई के नीचे बैठी हुई हैं तथा सोमन्त्र (मंत्री) सामने खड़े हैं।

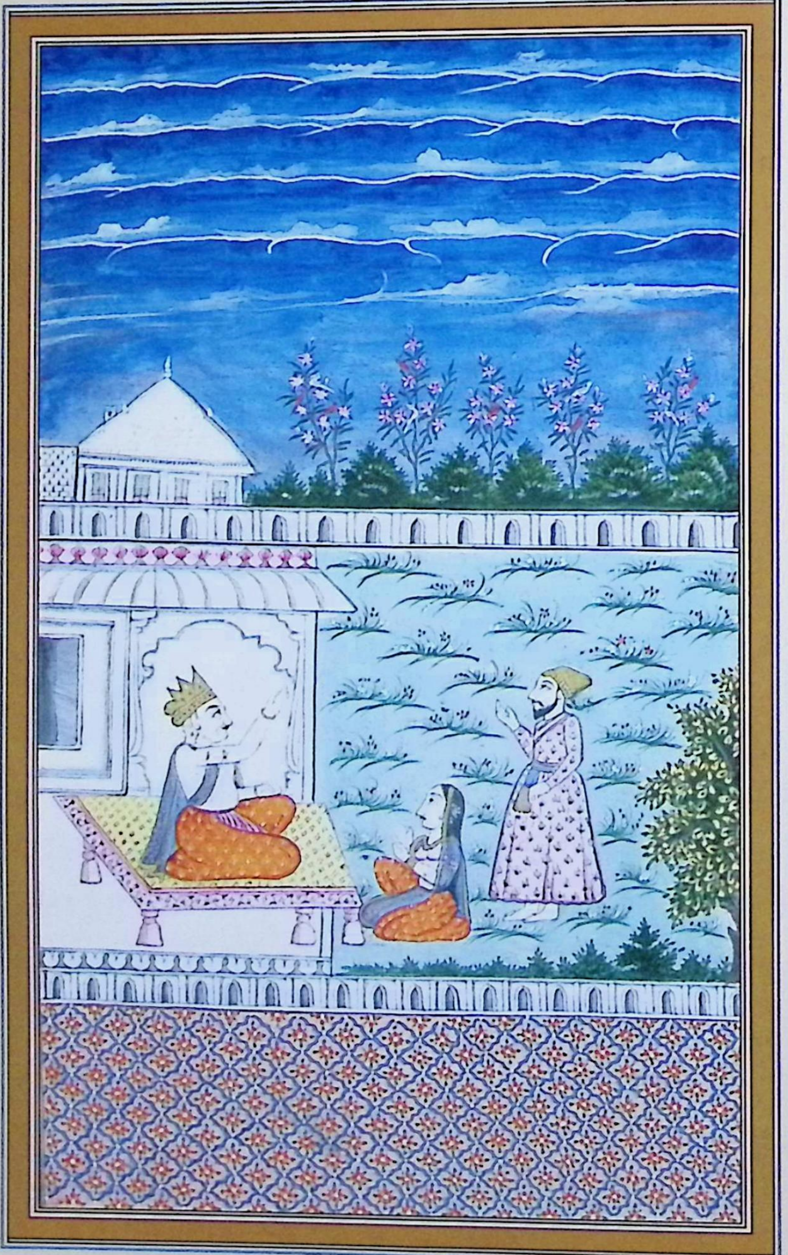

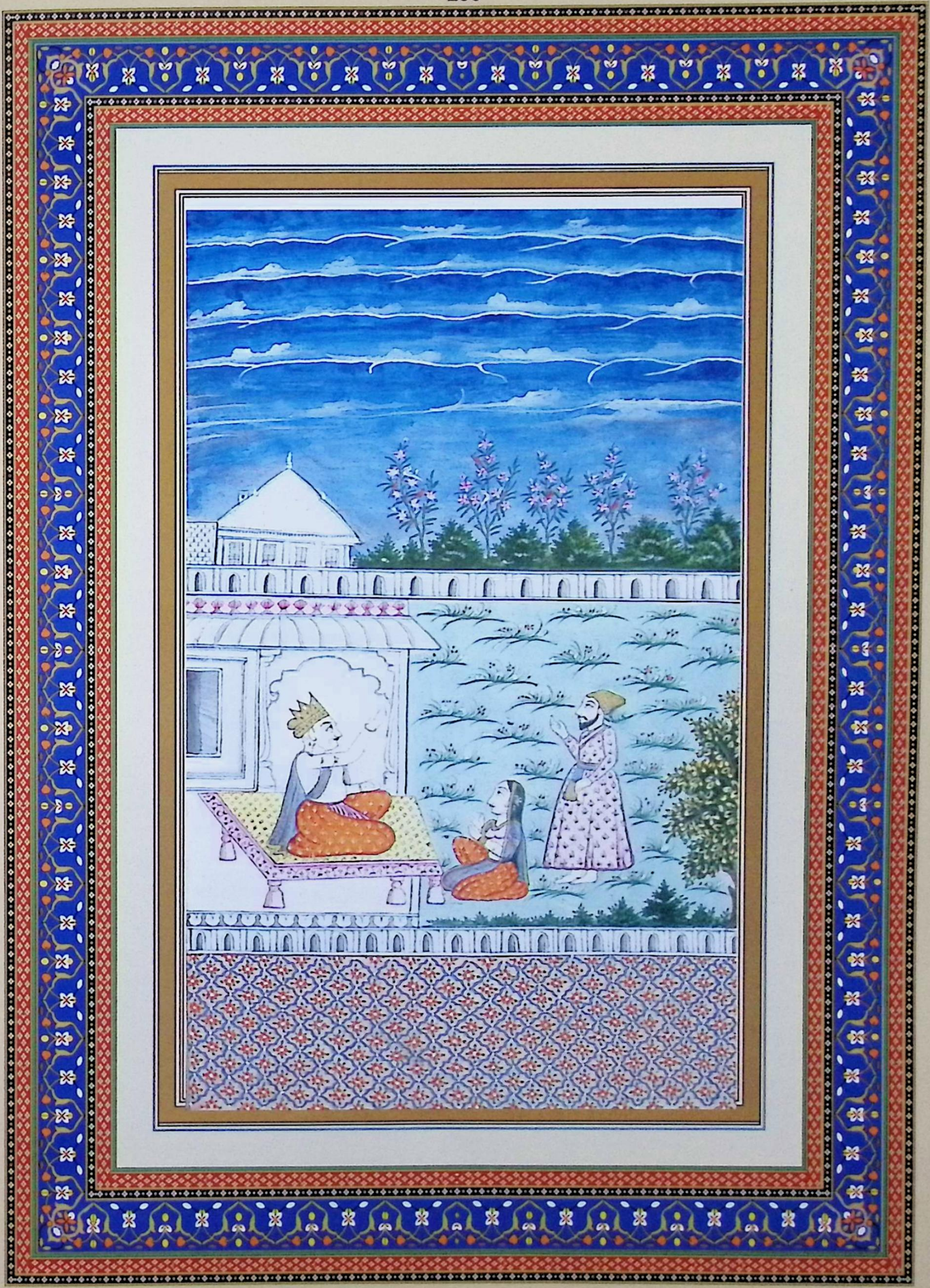

سرگ ۲۹ بیهوشی راجه دشرتهه رامچندر را حکم درآمدن فرموده خود بیهوش افتاد بعد از
یکساعت کامل بهوش آمده بر سنگهاسن نشست و سومنتر دست بسته عرض کرد که رامچندر
حکم را برسر جا داد و متاع خانه را به برهمنان وغیره بخشید مثل آفتاب که از شعاع خود
روشن کرد و مشتهر شد و با سیتا و لچهمن برای دیدن قدم تو آمده است اگر فرمان
رود بیاید و قدم به بیند راجه فرمود زود بیاید مرا آرزوی دیدن اوست چون راجه
چنان گفت عورات راجه که بشمار سیصد و پنجاه بودند آراسته و پیراسته در انجا آمدند
القصه رامچندر با لچهمن و سیتا داخل اندرون شد چون راجه رامچندر را دست بسته دید
بیهوش بر افتاد و ازینطرف رامچندر هم بیهوش بر زمین خفته ازینحالت هزاران عورات
در خانه راجه وای ویلا نمودند بعد از انکه راجه بهوش آمد رامچندر دست بسته عرض کرد که من
حکم رفتن صحرا میخواهم و لچهمن و سیتا را هر چند منع کردم ایشان مرا نمیگذارند بنا بر ان
ما همه رفتن صحرا مقرر نمودیم راجه دشرتهه در گریه شده گفت ای رام مرا از سبب کیکئی
دغا داد تو مرا در قید کن و راجه اجودهیا باش رامچندر گفت تو مرشد و خداوند و پدر و حاکم
و پرورنده و قابل پرستش هستی حکم ترا م انجا آوردنیست مرا فرمان رفتن صحرا داده و تو
هزار سال راج بکن و پرتگیا کیکئی بنما و ترا دروغگو کرده هرگز لوک نمیخواهم راجه گفت
اگر همچنین مقرر است همراه من بصحرا برو و بیتو نخواهم زیست و بهرت انجا راج بکند رامچندر

सर्ग-३९

राजा की बेहोशी

राजा दशरथ रामचन्द्र को अंदर आने का आदेश देकर स्वयं अचेत हो गये। पूरे एक घण्टे के बाद वे होश में आकर सिंहासन पर बैठे। सुमन्त्र ने करबद्ध उनसे निवेदन किया कि रामचन्द्र ने आपके आदेश का पालन किया और घर का समस्त सामान ब्राह्मणों आदि को दे दिया। सूर्य की भांति, जो अपनी किरणों से प्रकाशमान होता है, वे प्रसिद्ध हो गये और सीता तथा लक्ष्मण के साथ आपके चरणों के दर्शन के लिये आये हैं। यदि आज्ञा हो तो आयें और चरणों के दर्शन करें। राजा ने कहा शीघ्र आयें मुझे उन्हें देखने की इच्छा है। जब राजा ने यह बात कही तो राजा की स्त्रियां जो संख्या में तीन हज़ार पचास थीं सुसज्जित होकर वहां आयीं श्री रामचन्द्र लक्ष्मण और सीता के साथ अन्दर प्रविष्ट हुए। जब राजा ने रामचन्द्र को करबद्ध देखा तो बेहोश होकर गिर पड़े और उस ओर रामचन्द्र भी बेहोश होकर गिर पड़े। इस दशा को देखकर राजा के दरबार की हजारों स्त्रियों ने राजा के होश में लाने का प्रयास किया, होश में आने के बाद राम ने राजा दशरथ से करबद्ध निवेदन किया कि मैं वन जाने की आज्ञा चाहता हूँ लक्ष्मण और सीता को मैंने भरसक रोका लेकिन यह मुझे नहीं छोड़ रहे हैं। इस कारण हम सबने वन जाने का निर्णय कर लिया है। राजा दशरथ ने रोते हुए कहा हे राम ! मुझे वचन के कारण कैकेयी ने धोखा दिया। तू मुझे क़ैद कर दे। अयोध्या का राजा बन जा। रामचन्द्र ने कहा आप गुरू, भगवान, पिता, और पूजनीय हैं, मुझे आपके आदेश का पालन करना है। मुझे आप वन जाने की आज्ञा दीजिये और आप हज़ार वर्ष राज्य करें तथा कैकेयी का वचन पूरा करें। मैं तीनों लोक में आपको तुच्छ नहीं करना चाहता। राजा ने कहा यदि यही निर्णय है तो मुझे भी अपने साथ ले चलो, मैं तुम्हारे बिना जीवित नहीं रहूँगा और भरत यहाँ राज्य करे। रामचन्द्र ने कहा महाराज ! आपका जाना उचित नहीं है, आप सत्य पर डटे रहिये और धर्म के अनुसार राज्य कीजिये।

کفت ای راجه رفتن تو نه سزاوار است بر راستی مستقیم باش واز دهرم راج مکن چون رامچندر

چنین عرض نمود راجه بطریق دعا فرمود ترا اکیرت نصیب باد و عمر دراز و شجاعت و دهرم همیشه بیاب

و باز اینجا بیایی و براه خوب رو و مرا راست کو ساز و امشب مادر و مرا ببین و همین جا باش رامچندر

کفت اینهمه زر و غله و بار و کاه و بهایم و حشم من کذاشتم بهرت را بده و سیتا را هم ترک کنم

وانچه از منست بکذارم اما پرتنکیا که برفتن صحرا مقرر کرده ام نکذارم و تو از جدائی من برهم مشو

مثل تو از جا نرود مانند دریا که از مکان ساحل خود بالا نرود راج و راجت و جواهر و سرک هم هیچ نمیخواهم

همین حکم تو بجا می آرم سوکند نیکو کاری تست ثمرات و بیخ ها را خورده و صحرا و غارها و دریاها و

تالاب ها و کوناکون اشجار را دیده براحت خواهم کذرانید تو بری الذمه خواهی شد راجه دسرته بر سنکهاسن

بیهوش افتاده و کیکئی نزد نشسته و یک عورت چور بردار عقب راجه ایستاده و رام و لچهمن و سیتا روبرو ایستاده

رخصت میشوند

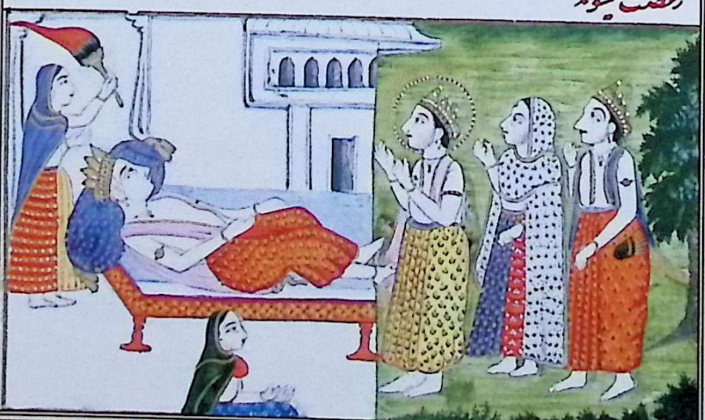

जब रामचन्द्र ने यह विनती की तो राजा ने आशीर्वाद देते हुए कहा तुम्हें कीर्ति मिले। लम्बी आयु, वीरता व पौरुष और धर्म सदा पाओ तथा फिर यहाँ वापस आओ, भली प्रकार जाओ और मुझे सत्यवादी प्रमाणित करो। आज की रात माँ को और मुझे देख लो तथा इसी स्थान पर रहो। लेकिन राम की यह तपस्या कि वन में जाना निश्चय कर लिया है नहीं छोडूंगा और मेरे वियोग से चिन्तित न हो आप जैसा व्यक्ति अपने स्थान से नहीं टलता। नदी के समान जो अपने तट से दूर नहीं होती और मैं राज्य, विलासिता रत्न यहां तक कि स्वर्ग कुछ नहीं चाहता मैं तो बस आपकी आज्ञा का पालन करना चाहता हूँ। आपके पुण्यों की सौगन्ध मैं फल और जड़ें (कंद) खाकर और वन गुफा, नदी, तालाब और पेड़ देखकर आराम से बिता दूंगा। आप निश्चिन्त हो जायेंगे।

राजा दशरथ सिंहासन पर बेहोश पड़े हैं। कैकेयी पास बैठी हुई हैं और एक स्त्री राजा के पीछे खड़ी है तथा राम व लक्ष्मण और सीता सामने खड़े हैं।

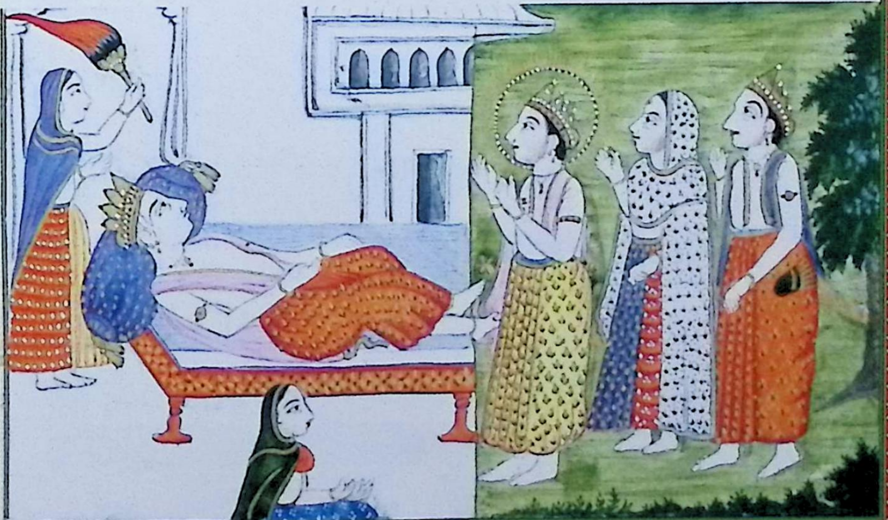

سر کِ غصه راجه دشرته راجه از کردهٔ خود پشیمان شده سومنتر را فرمود که چترنگ لشکر ز
با اسلحه و اثواب زود طیار کن که با رامچندر بروند و عورات جوان و خوبرو با زر و زیورها
با پسر نوجوان سن البته همراه شوند و دوستانی که با رامچندر اخلاص دارند هم روانه کردند
و نوکران و خادمان نیز و آنها که خزانچی ها من اند همه زر را گرفته رفاقت نمایند و بر همان
که در شهر هنند و پهلوانان و رقاصان و سرانیدکان و افسانه گویان و کندهربان و
روندکان و نایکا یعنی دستک زنان برائی معاشرت رامچندر همراه او باشند و دانندکان
راه صحرا و بهایم خانگی و افیال وغیره رفیق شوند که در انجا تفرج کنان خانه را یاد نکنند
و انچه دولت و اقبال منست همه همراه برود بهرت بارکهان اجودهیا را محافظت خواهد نمود
تا که رامچندر باز آید راجه بدیکونه میگفت کیکئی از غصه براجه گفت برداده باز چرا دروغ گو
میشوی چنانچه کسی شراب خورده بخشیده باشد راجه کفت پس تو این راج را نگاهدار
مرا بار بار چه میکوئی کیکئی کفت مهاراب چرا میکنی سکر زرک تو پسر کلان را بصحرا بدر کرد
که اسمنج نام داشت راجه در غم بود که سدهارته نام وزیر جواب داد و گفت اسمنج را
سکر بواسطهٔ بدر کردهٔ و خانه رعایا را ویران میکرد و طفلان را در دریا سرجو می انداخت
بنابران رعایا نزد راجه سکر فریاد کردند که یا تنها اسمنج پسر خود را بدر کن یا مایانرا
بگذار بنابران سکر اسمنج را بدر کرده بود و رامچندر هنرمند و کلان و دهرماتماست

सर्ग-४०

राजा दशरथ का क्रोध

राजा ने अपने किये पर लज्जित होकर सुमन्त्र से कहा कि मेरी चतुरंगिणी सेना हथियार और वस्त्रों के साथ शीघ्र तैयार करो, वह रामचन्द्र के साथ जायें। किशोर व सुन्दर स्त्रियां, धन व रत्न और आभूषण सहित मेरे नवयुवक पुत्र के साथ अवश्य जायें। वह मित्र भी जो रामचन्द्र के शुभचिन्तक हैं प्रस्थान करें और नौकर सेवक भी तथा मेरे कोषाध्यक्ष भी। सारा धन लेकर साथ जायें। जो ब्राह्मण शहर में हैं और पहलवान, नर्तक, ब्राह्मण कवि, कथाकार, और दस्तक देने वाले रामचन्द्र के साथ रहने के लिए सब उनके साथ जायें। वन का मार्ग जानने वाले, पालतू पशु और हाथी आदि साथ रहे ताकि वहां उनकी क्रियाकलापों को देखते हुए घर की याद न आये। भरत ऋषि के साथ अयोध्या की रक्षा करेंगे यहां तक कि रामचन्द्र वापस आ जायें,राजा इस प्रकार कह रहे थे कि कैकेयी ने क्रोध से कहा राजा आपने वचन दिया है फिर पूरा क्यों नहीं कर रहे हैं जैसे किसी ने शराब पीकर दिया हो। राजा ने कहा बस तू ही राज्य चला मुझे बार-बार क्यों कहती है। कैकेयी ने कहा रुष्ट क्यों हो रहे हो, आप श्रेष्ठ पुरुष सगर ने अपने पुत्र को वन भेज दिया था जिसका नाम असमंज था राजा दुखी था कि सिद्धार्थ मंत्री ने उत्तर दिया और कहा असमंज को सगर ने इसलिए देश निकाला दिया था कि वह प्रजा का घर नष्ट करता था और बच्चों को सरयू नदी में डाल देता था। इस कारण प्रजा ने राजा सगर के सामने फरियाद किया कि या तो अपने पुत्र असमंज को देश निकाला दीजिये या राज्य छोड़ दीजिये इस कारण सगर ने असमंज को देश निकाला दे दिया था जबकि रामचन्द्र गुणी, बड़े और धर्मात्मा हैं।

کیکئی بار دیگر گفت رامچندر خود بخود راج و راحت گذاشته میرود راجه تو خود

با بهرت با آسایش بمان و بگذران در اینجا صورت راجه دشرتهه بر سنگهاسن بطور سابق و

صورت کیکئی نیز بهمانطور و صورت سومنتر و سدهارتهه وزیر هر دو دست بسته

ایستاده و رام و لچهمن و سیتا روبرو ایستاده

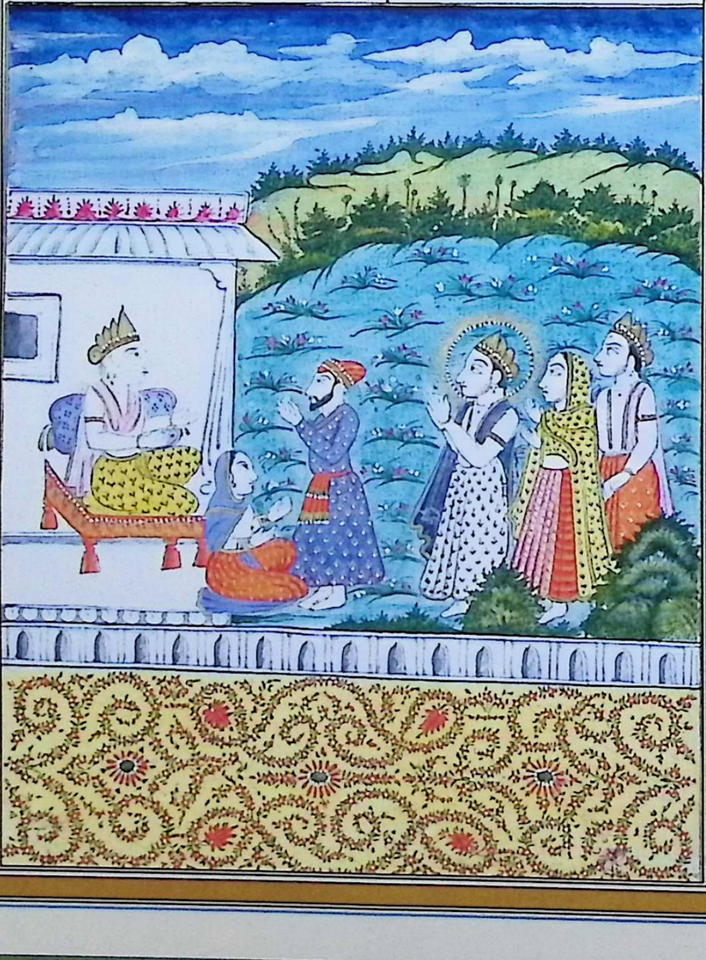

कैकयी ने पुनः कहा रामचन्द्र स्वयं राज्य और विलासिता छोड़कर जा रहे हैं तथा राजा आप स्वयं भरत के साथ आराम से रहिये और जीवन व्यतीत कीजिये।

राजा दशरथ का चित्र जो सिंहासन पर यथावत् बैठे हुए हैं कैकेयी का चित्र भी इसी प्रकार है। सोमन्त्र और सिद्धार्थ मंत्री का चित्र दोनों दायें बाएं हाथ पर खड़े हैं और राम, लक्ष्मण एवं सीता सामने खड़े हैं।

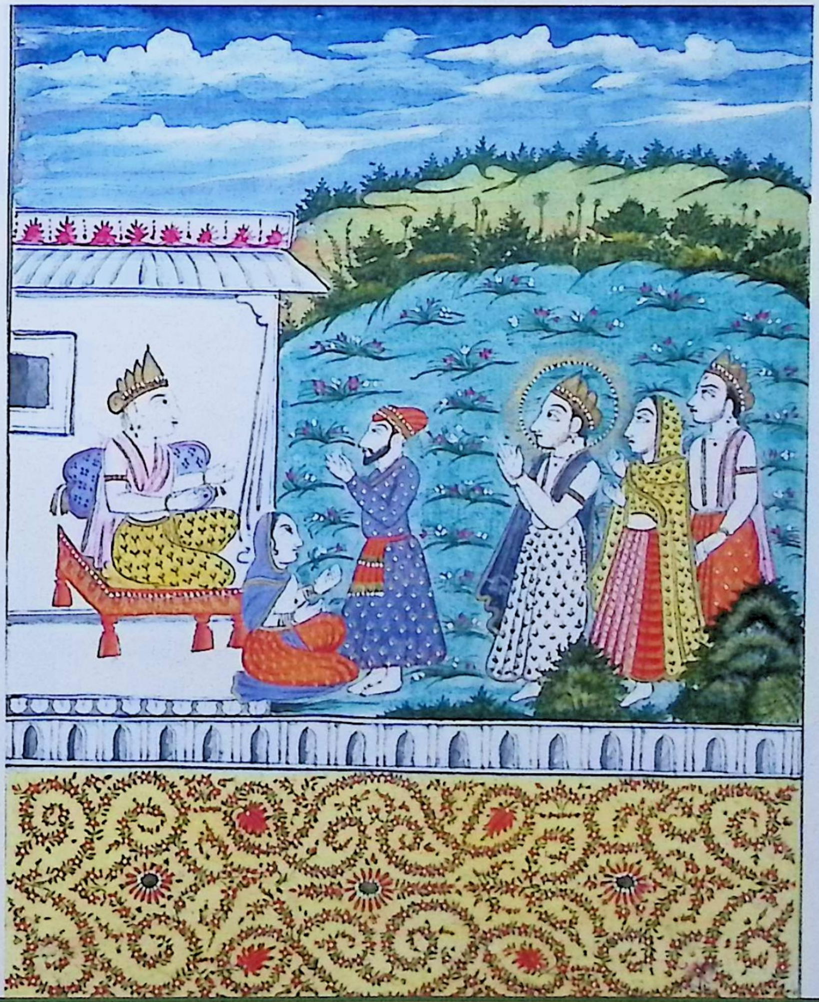

سرگفتار رامچندر گفتار کیکئی و جواب را شنیده رامچندر گفت من این راج و آسایش را
گذاشته بصحرا میروم مرا با دولت و مردم وغیره اشیا چکار مرا تا چهارده سال در
صحرا باید بود درین اثنا کیکئی بی‌شرم چیر یعنی پارچه پوشش فقرا خود آورده و برامچندر
داد که بحضور همگنان بپوش رامچندر آنرا از دست کیکئی بگرفت و جامهای قیمتی از تن
بدر کرده آن چیر را پوشید و بهمین آئین لچهمن هم جامه‌ها را بدر کرده بحضور پدر چیر پوشید
بعد ازان سیتا چیر را از دست کیکئی بگرفت و بطریق گریه رامچندر را گفت منتشران
باشندگان صحرا چگونه چیر می‌بندند این را گفته از بیهوشی یک گره در گلوئی خود بسته
بایستاد و منفعل ماند درین اثنا رامچندر نزدیک آمده و بالائی پارچه خوب او آن چیر به بست
اینحالت را دیده بشست که پیر و مرشد یعنی پروهت همه است به کیکئی گفت ای گنه‌کار
سفله نسب راجه را بفریب و دغا دادی سیتا را بصحرا نباید رفت رامچندر از حکم پدر
اگر میرود برود و اگر از محبت شوهر میرود ما همه میرویم و تمام شهر میرود نوکران
و اهل سلطنت میروند و بهرت و ستر گهن هم چیر را بسته عقب رامچندر میروند در شهر خالی
تو تنها راج کن اگرچه تو برای پسر خود که بهرت است این کار نموده و عذاب کرده او هرگز
نخواهد نمود و عوض پیرایهائی نیکو سنه را چیر دادی این سزاوار نیست تنها رامچندر را
رفتن صحرا مقرر است سیتا با پیرایه‌هائی خود همراه او خواهد بود و الطمعه و اشربه خوب

सर्ग–४१

रामचन्द्र की वार्ता

कैकेयी की बात और उत्तर सुनकर रामचन्द्र ने कहा मैं यह राज्य और ऐश्वर्य का जीवन छोड़कर वन को जा रहा हूँ। मुझे धन, दौलत, व्यक्ति और वस्तुओं आदि से क्या सम्बन्ध। मुझे चौदह वर्ष तक वन में रहना है। इस मध्य कैकेयी लज्जावश भिक्षुओं वाला वस्त्र स्वयं लेकर आई और रामचन्द्र को दिया कि सबके सम्मुख इसे धारण करो। रामचन्द्र ने उसे कैकेयी के हाथ से ले लिया और मूल्यवान वस्त्र शरीर से उतारकर वह भिक्षुओं वाला वस्त्र पहन लिया। इसी प्रकार लक्ष्मण ने भी सारे वस्त्र उतारकर पिता के सामने पुराना कपड़ा पहना। उसके पश्चात् सीता ने पुराना वस्त्र कैकेयी के हाथ से लिया और रोते हुए रामचन्द्र से कहा वन के निवासी मुनीश्वर किस प्रकार चर अर्थात् भिक्षुओं का वस्त्र पहनते हैं यह कहते हुए अर्धमूर्छित अवस्था में अपने गले में एक गाँठ लगाकर खड़ी हो गयी और बेचैन व प्रभावित हुई। इसी मध्य रामचन्द्र निकट आये और उनके सुन्दर वस्त्र के ऊपर वह चर बाँध दिया यह स्थिति देखकर वशिष्ठ ने जो पूर्वज अर्थात् सबके पुरोहित हैं ने कैकेयी से कहा ऐ पापी ! तुच्छ परिवार वाली तूने राजा के साथ छल से विश्वासघात किया। सीता का वन में जाना उपयुक्त नहीं है। रामचन्द्र यदि पिता के आदेश से जाते हैं तो जायें और यदि सीता पति के प्रेम में जा रही है तो हम सब चलते हैं, समस्त नगर जायेगा, सेवक और समस्त राज्यवासी जायेंगे तथा भरत और शत्रुघ्न भी चर बाँधकर रामचन्द्र के पीछे जायेंगे निर्जन नगर में तू अकेली राज्य कर। यद्यपि तूने अपने पुत्र भरत के लिये यह कार्य किया है और पाप किया है परन्तु वह कदापि नहीं करेगा और अच्छे वस्त्रों के बदले तूने सबको चर दिया यह उचित नहीं है। रामचन्द्र का अकेले वन जाना निश्चित है।

و پرستاران نکو و پارچه گران قیمت با سیتا باشند نه چرا اما سیتا که خواهان خواهش شوهر
بود آز او دور نکرد مردم چون آنحالت دیدند راجه دشرتهه بد گفتن گرفتند راجه دم سرد
کشید بکیکئی گفت تنها رفتن رامچندر را برگرفته نه لچهمن و سیتا را ای بدطریق زشت آخر
اینها را چرا چرا داد راجه دشرتهه همین طور سخنان میگفت که رامچندر عازم صحرا شد و سمنترو کرده
عرض کرد که کوشلا مادر من ریاضت کش ست و پیر است و از هجر من در دریا غم
غرق و پیش ازین غم جدائی پسر کاهی ندیده از رحمتی که بر نست او را خواهید دید چنان نشود
که از جدائی من بخانه جم برود یعنی بمیرد راجه در لباس منیشران این سخن از رامچندر شنیده
جواب نتوانست داد ساعتی در فکر شده از غم گریه کرده گفت من پیش ازین در جنم دیگر
پسر از جدا کرده باشم و بسیاران کشته باشم که اینحالت مرا پیش آمده لعنت بر من بحیاست
که مغلوب عورت شدم راست گفته اند دانایان که نافهمیده بر ند هند بتخصیص سنگدلان
و عورات را نیک کردار ازا چنین معامله روند بد چنانچه مرا رو داد آرزو دارم که بمیرم
زیرا که مردم را مردن در غم از رفتن پسر خوبتر بود و لیکن بی هنگام مرگ هرگز نشود فرزند
عزیز را بصحرا فرستادم چرا جگر من نمیدرد هنگام ناز و پرورش او بود من بتصدیع
کمان حکم فرموده‌ام و هنگام مراست این بگفت و نام رام گرفته خاموش شد و بیهوش افتاد
بعد از ساعتی بخود آمده بسومنتر فرمود که رتهه من طیار کرده بیار که برو سوار شده رامچندر

सीता अपने वस्त्रों समेत उनके साथ रहेगी। अच्छी खाने पीने की वस्तुएँ सज्जनता की देवी सीता के साथ मूल्यवान वस्त्र होंगे न कि चीर। उन्होंने सीता को जो अपने पति की इच्छा चाहती थी उसको अलग नहीं किया। लोगों ने जब यह स्थिति देखी तो राजा दशरथ को दोषी कहने लगे। राजा ने ठण्डी सांस खींचकर कहा तूने रामचन्द्र के अकेले जाने का वचन लिया है न कि सीता व लक्ष्मण का। ऐ कुलक्षणी ! तूने इन लोगों को चर क्यों दिया ?राजा दशरथ यही बात कर रहे थे कि रामचन्द्र वन जाने को तैयार हुए और शीश झुकाकर कहा कि मेरी माता कौशल्या तपस्विनी हैं और वृद्ध हैं और मेरे वियोग में दुख के सागर में डूबी हैं। इससे पूर्व उन्होंने पुत्र के वियोग का दुख कभी नहीं देखा। आप उसी कृपा दृष्टि से जो मुझ पर है उसको देखेंगे। ऐसा न हो मेरे वियोग में वह यम के घर चली जाये अर्थात् मर जायें। राजा मुनीश्वरों के वेष में रामचन्द्र की यह बात सुनकर उत्तर नहीं दे सके। थोड़ी देर चिन्तित रहकर दुख के कारण रोते हुए कहा ''मैंने उससे पहले दूसरे जन्म में उसके पुत्र को अलग किया होगा और बहुत लोगों का वध किया होगा जिससे मेरी यह स्थिति हुई। मुझ निर्लज्ज पर धिक्कार है कि मैं स्त्री से पराजित हो गया। बुद्धिमानों ने सत्य कहा है बिना समझे हुए वचन नहीं देना चाहिए। विशेष रूप से कठोर हृदय वालों और स्त्रियों को चरित्रवान के साथ ऐसी घटना नहीं होती जैसा कि मेरे साथ हुई मेरी इच्छा है कि मैं मर जाऊँ क्योंकि लोगों के लिए दुःख में मरना स्वर्ग में जाने से उचित होता है। लेकिन असमय मृत्यु कदापि नहीं आती। मैंने अपने प्रिय पुत्र को वन में भेज दिया। मेरा हृदय फटता क्यों नही है यह समय तो उसके पालन करने और उसके लाड़ प्यार करने का था, लेकिन मैंने बड़ी निर्दयता से यह आदेश दिया। मुझ पर धिक्कार है।'' यह कहते हुए राम का नाम लेकर शान्त हो गये और बेहोश होकर गिर पड़े। एक घड़ी बाद होश में आकर सुमंत्र से कहा कि मेरा रथ तैयार करके लाओ ताकि उस पर सवार होकर रामचन्द्र के पास जायें सुमंत्र ने रथ तैयार करके हाथ जोड़कर निवेदन किया राजा ने कहा मेरे महल

بصحرا برود سومنتر رتهه را طیار کرده دست بسته عرض نمود راجه فرمود از خانه من
اثواب و پارچه خوب و پیرایه های اسلوب مطابق حساب چهارده سال برای سیتا
بدهند بموجب حکم راجه توشکچی بعمل آورد سیتا آن پارچه پوشیده چنانچه آفتاب در روز
ورش شود نمودار و زیبنده شد صورت راجه دشرتهه بر سنگهاسن نشسته و کیکئی نزدیک
چهاردهم
راجه زیر تخت نشسته و رام و لچهمن چیر یعنی لباس فقرا در بر کرده ایستاده و سیتا هم چیر میپوشد

و یک گره چیر در کلو بسته و رام گره دیگر جا میدهد

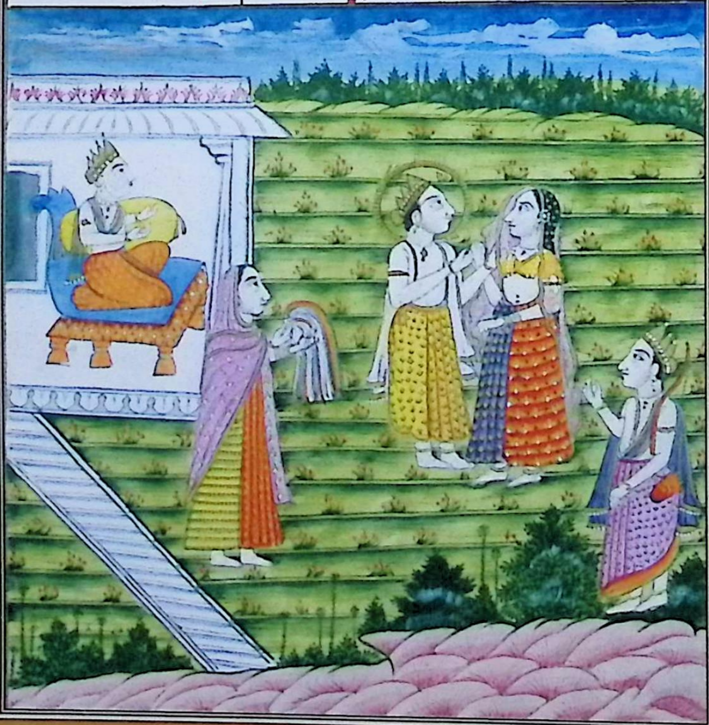

से अच्छे वस्त्र लाकर चौदह वर्ष तक के लिए सीता के लिए दे दो। भण्डार घर के अधिकारी ने राजा के आदेश का पालन किया। सीता वह वस्त्र पहनकर ऐसी सुन्दर और सुसज्जित हो गयी जैसे कि दिन में सूर्य निकला हो।

राजा दशरथ का चित्र सिंहासन पर बैठे हुए कैकयी राजा के निकट तख्त के नीचे बैठी हुई है। राम लक्ष्मण चीर अर्थात् भिक्षुकों का वस्त्र धारण किये हुए खड़े हैं सीता भी चीर पहने हुए हैं तथा एक गाँठ चीर गले में बाँध रखा है और राम दूसरे स्थान पर गाँठ लगा रहे हैं।

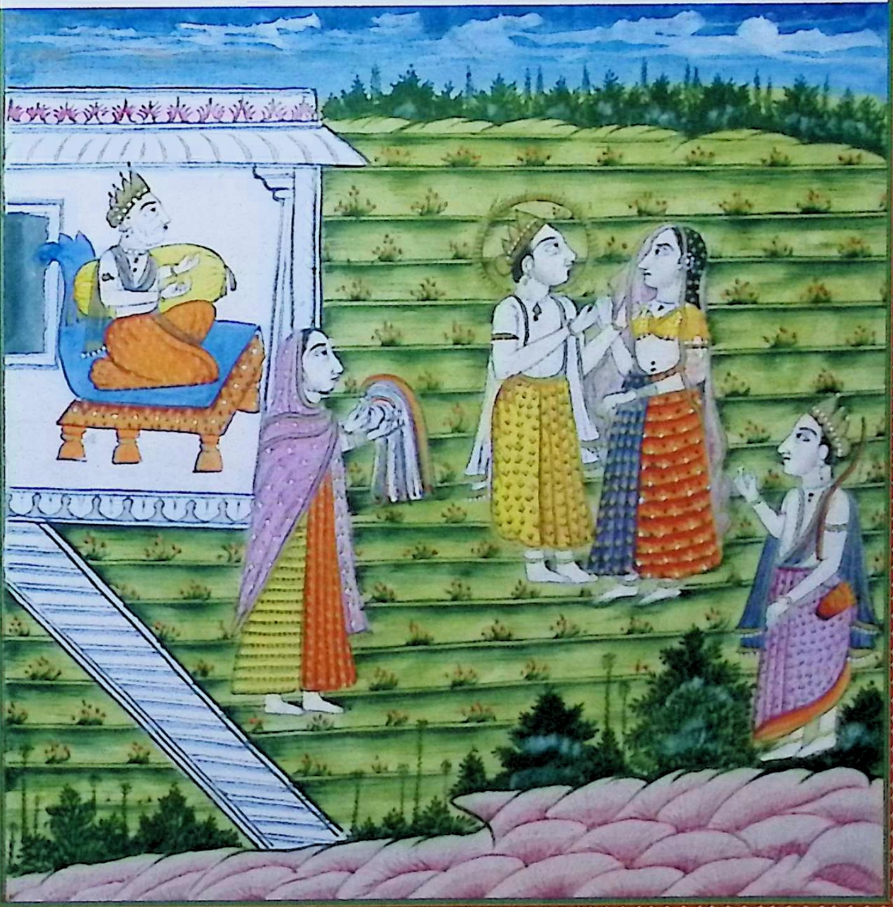

۴۴ **سرگ وداع رام** کوشلا سیتا را پارچه و پیرایه پوشیده دیده از مهر سر او بوسید و گفت
تو در صحرا با رامچندر میروی و دولتمند زاده و ناز پرورده و از مستی و کبر و خوبی جوانی
که خوی عورات است پسر مرا محقر نشمری زیرا که شوهر خداوندست عورات را باید که چنان
خدمت کنی که مرا یاد نکنند نه زنان را کسی دشمن است و نه دوست آنچه در خاطر ایشان آید بکنند
باد را بند و آتش را مسخر توان کرد اما دل زنان که همیشه بیقرار است نتوان گرفت اما شوهر
خواه دانا باشد خواه نادان هر که خدمت شوهر کند عاقبت بسرگ رود سیتا دست بسته گفت
آنچه میفرمائی همچنان خواهم کرد هنگام انعقاد و ازدواج من چنان عهد شده که اگر از کوه
افتادن باشد یا در آتش رفتن مرا گفته شوهر باید کرد رامچندر گرو یعنی استاد و شوهر
و خداوند منست درین شک نیست چنان خدمت خواهم نمود که راج وغیره را یاد نکند
کوشلا گفت این از تو عجب نیست و خدمت لچهمن زیاده تر از رامچندر خواهی نمود
بدینگونه بسیتا گفته رامچندر را گفت بر سیتا مهربان خواهی بود و لچهمن را عزیز خواهی
داشت رامچندر گفت لچهمن دست راست منست و سیتا سایه من اینها را چگونه خواهم
گذاشت و هر گاه من کمان و تیر گرفته بایستم از والی تسه لوک آندر هم دهشت ندارم
و این چهارده سال حکم راجه بسرعت میگذرد چنانچه یکروز باشد و اینک از صحرا باز می آیم
اینقدر بوالده خود گفت بعد سیصد و پنجاه والده های خود را دید و دست بسته با آنها گفت

सर्ग–४४

राम की विदाई

कौशल्या ने सीता को पारचा और पैराया (भिक्षुओं वाला वस्त्र) पहने हुए देखकर प्रेमपूर्वक उसके सर का चुम्बन लेकर कहा ''तू रामचन्द्र के साथ वन जा रही है तेरा धन व ऐश्वर्य में लालन-पालन हुआ है और जवानी के गुणों से पूर्ण मस्ती की, जो स्त्रियों का स्वभाव है। तू मेरे पुत्र को तुच्छ नहीं मानती क्योंकि पति स्त्रियों का भगवान है। तुझे चाहिए कि तू राम की ऐसी सेवा करे कि वह मुझे याद न करे। स्त्रियों का न कोई शत्रु है और न मित्र। उनके मन में जो आता है यह वही करती हैं। वायु को बन्द और अग्नि को नियन्त्रण में किया जा सकता है, लेकिन स्त्रियों का हृदय जो सदा व्याकुल रहता है उसे नियन्त्रित नहीं किया जा सकता, पति चाहे वह बुद्धिमान हो। जो स्त्री भी पति की सेवा करेगी अन्त में वह स्वर्ग में जायेगी।'' सीता ने हाथ जोड़कर कहा जो कुछ आप कह रही हैं मैं वही करूँगी। मेरे विवाह के समय यही प्रण हुआ है कि चाहे पर्वत से गिरना पड़े या अग्नि में चलना पड़े, मुझे पति की आज्ञा का पालन करना होगा। रामचन्द्र गुरू अर्थात् मेरे शिक्षक, पति और भगवान हैं इसमें कोई संदेह नहीं मैं उनकी ऐसी सेवा करूँगी कि वह राज्य आदि को याद नहीं करेंगे। कौशल्या ने कहा तुमसे यह आश्चर्य नहीं है और तू लक्ष्मण की सेवा रामचन्द्र से भी अधिक करेगी। सीता से इस प्रकार की बात करते हुए उन्होंने रामचन्द्र से कहा, तुम सीता के प्रति दयालु रहोगे और लक्ष्मण को प्रिय रखोगे। रामचन्द्र ने कहा, लक्ष्मण मेरा सहयोगी है और सीता मेरा साया हैं मैं भला उन्हें कैसे छोड़ सकता हूँ ? जिस समय मैं धनुष बाण लेकर खड़ा हूँगा तो उस समय तीनों लोक के मालिक इन्द्र से भी नहीं डरूँगा और राजा के आदेश के यह चौदह वर्ष शीघ्र बीत जायेंगे। और मैं शीघ्र ही वन से वापस आ जाऊँगा माता से उन्होंने इतना कहा। उसके बाद उन्होंने अपनी तीन हजार पचास माताओं के दर्शन किये और उनसे हाथ जोड़कर कहा।

اکر کناهی دانسته نادانسته کرده باشم عفو فرمایید آنها شکل جماعهٔ کلستان شغنی

نمودند و اجازت دادند صورت رام و لچهمن و سیتا بطور سابق و لباس سابق و صورت

کوشلا مادر رام و صورت دو سه عورت دیگر مو پریشان کرده و رام وغیره نمسکار میکنند و رخصت میشوند

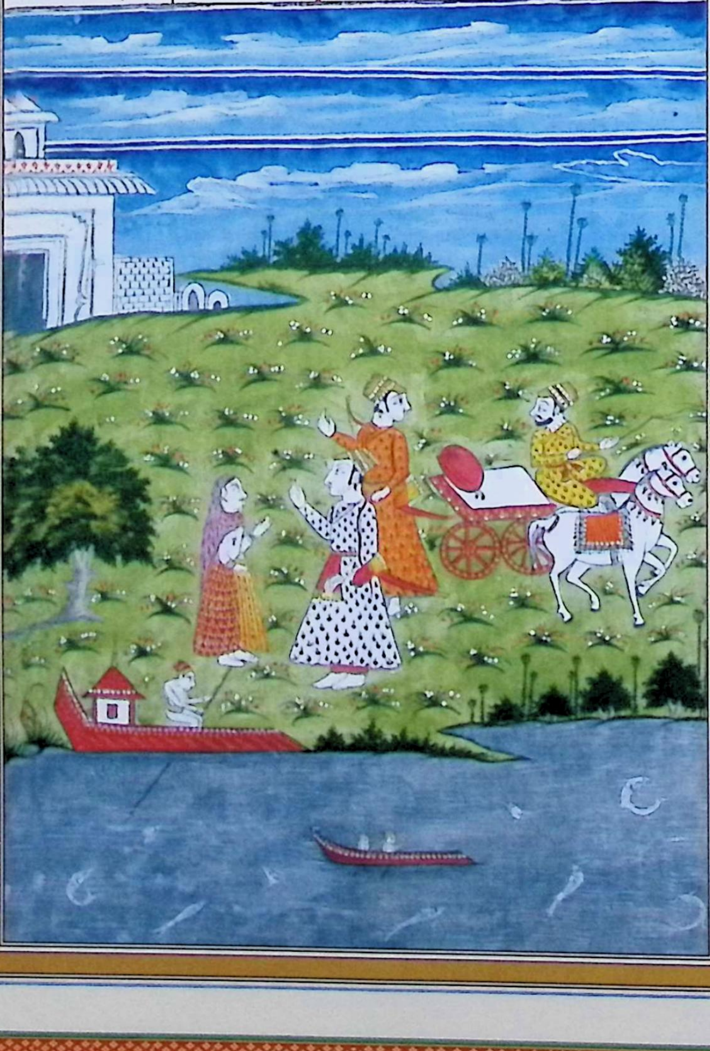

''यदि मैंने जानबूझकर या अनजाने में कोई पाप किया हो तो क्षमा कर दें।

राम लक्ष्मण और सीता का चित्र पहले के समान और पहले के वस्त्र में। राम की माता कौशल्या का चित्र और दो तीन दूसरी स्त्रियों का चित्र जो बाल बिखेरे राम आदि को नमस्कार कर रही है और विदा हो रही है।

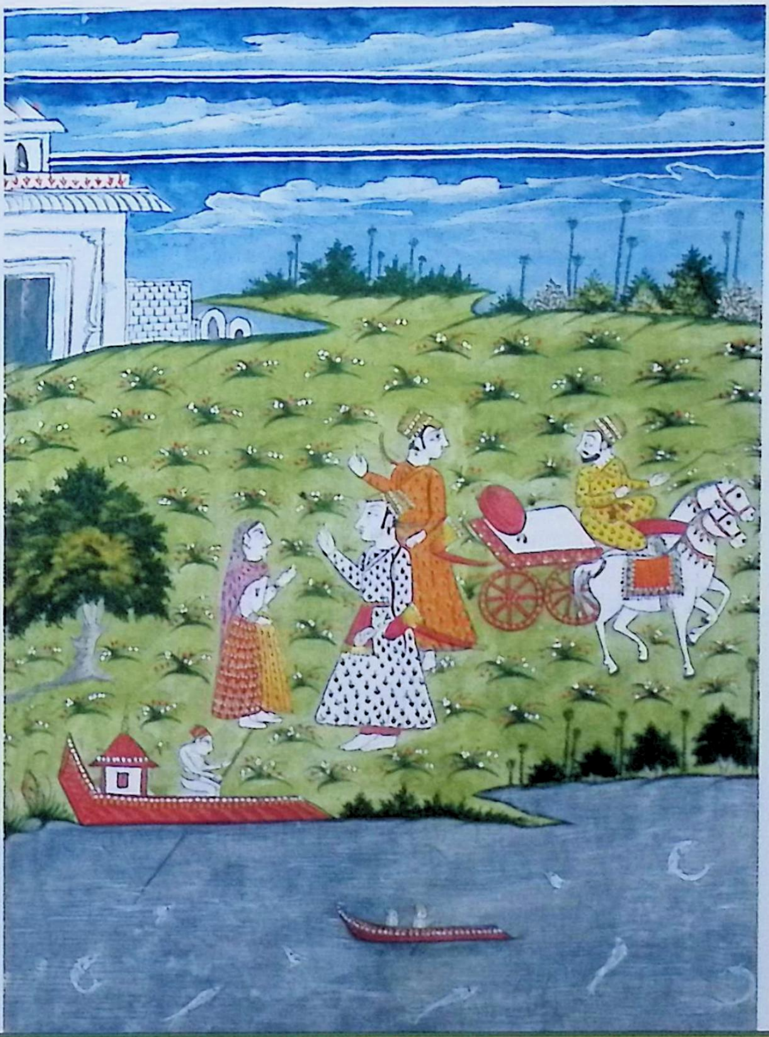

سرگفتار سومنتر بعد از ان سیتا و رام و لچهمن نزدیک راجه رفته پردچهنان راجه
کروند یعنی گرد گشتند بعد و لچهمن سومترا مادر خود را قدم گرفت او از محبت سرش را
گرفته دعا کرده گفت بی آفت براه خواهی رفت و بخدمت مشغول خواهی شد و تو مرا با برادران
خود از گناه خلاصی دادی زیراکه مرا و عورت خود را گذاشته همراه رامچندر قدم نهادی
او مر شد و برادر کلان و گرو یعنی پیر تست رامچندر را بجای دشرتهه خواهی دید و سیتا را
بجای من خواهی فهمید و صحرا بجای اجودهیا خواهی پسندید بعد از ان برامچندر گفت
که محافظت لچهمن خواهی کرد که این خادم تست رامچندر گفت همچنان خواهد شد درین اثنا
سومنتر گفت رتهه طیار است سوار شو هر جا که فرمایی ببرم تا چهارده سال ترا در صحرا باید بود
نخست سیتا بخرمی پیرایه و پارچه پوشیده با شوهر سوار گردید و مقدار ایام بودن صحرا
ثوب و پارچه نزدیک نهاد و همچنان اسلحها و ترکشها و کوچه یعنی جوشنها بار کردند بعده
رامچندر و لچهمن هر دو برادر سوار گشتند و سومنتر اسپان را راند و مردم شهر تمام همراه رامچندر
دویدند پیش و پس یمین و یسار از دهام کسان بود و میگفتند ای سارتهی اندکی آهسته ران
که روی رامچندر را ببینیم این دل مایان مثل قمر میبرد و باز کی از صحرا خواهد آمد و کی این را خواهیم دید
تنها سیتا نیکو کار است که مثل سایه رام با رام میرود و با لچهمن نیک کردار است که بخدمت
برادر کلان مستعد گشته این نوع مردم میگفتند ناگاه راجه دشرتهه خود با هجوم عورات

सर्ग-४५

सुमंत्र की वार्ता

उसके बाद राम, लक्ष्मण और सीता ने राजा के निकट जाकर उनके चारों ओर चक्कर लगाया। उसके बाद लक्ष्मण ने अपनी माता सुमित्रा के पांव छुए। उसने प्रेम से उनका सर पकड़कर आशीर्वाद देते हुए कहा "तुम बिना किसी विपदा के मार्ग पर जाओ और सेवा में व्यस्त रहो, तुमने मुझे अपने भाइयों के साथ पाप से मुक्ति दी। क्योंकि तुमने मुझे और अपनी पत्नी को छोड़कर रामचन्द्र का साथ दिया। वह तुम्हारे मुनि, बड़े भाई और गुरू हैं तुम रामचन्द्र को दशरथ के स्थान पर मानोगे और मेरा स्थान सीता को दोगे तथा अयोध्या के स्थान पर वन को प्रिय रखोगे। इसके बाद उन्होंने रामचन्द्र से कहा कि तुम लक्ष्मण की रक्षा करोगे कि वह तुम्हारा सेवक है। रामचन्द्र ने कहा कि ऐसा ही होगा इसी मध्य सुमंत्र ने कहा रथ तैयार है सवार हो जाइये। जहाँ आप कहेंगे ले जाऊँगा। चौदह वर्ष तक आपको वन में रहना होगा। सबसे पहले सीता प्रसन्नतापूर्वक पैराया व पारचा (भिक्षुकों का वस्त्र) धारण कर पति के साथ सवार हुईं और वन में रहने के दिनों के सामान, कपड़े और पारचे निकट रख लिये। इसी प्रकार हथियार, बाण और कवच रख लिये। फिर रामचन्द्र और लक्ष्मण दोनों भाई सवार हुए, सुमन्त्र ने घोड़ों को बढ़ाया और शहर के सारे लोग रामचन्द्र के साथ दौड़े, आगे, पीछे, दाएँ, बाएँ लोगों का समूह था वे सब कह रहे थे "हे सारथी ! तनिक धीरे-धीरे रथ चलाओ ताकि हम रामचन्द्र का मुख देखें। यह हम लोगों का हृदय जो चन्द्रमा के समान है, ले जा रहे हैं और भगवान जाने फिर कब वन से वापस आयेंगे तथा कब हम उन्हें देखेंगे। अकेले सीता भाग्यशाली हैं कि राम की छाया के समान राम के साथ जा रही हैं, या लक्ष्मण सज्जन हैं कि बड़े भाई की सेवा पर तैनात हो गये हैं। लोग इस प्रकार की बातें कर रहे थे अचानक राजा दशरथ स्वयं स्त्रियों के समूह में अपने पुत्र को देखने के लिये ऐसे बाहर निकले।

برائی دیدن پسر برآمد چنانچه ماه کلف گرفته نماید آوازه خلایق می شنید کسی میگفت
یا رام کسی میگفت یا سیتا کسی میخواند یا لچهمن رامچندر ببارتهی گفت تا مادران و راجه را
مرا از دیدن من تصدیع نشود رتهه را زود بران راجه عقب می آید بشست وغیره برهمنان
گفتند اگر میخواهید که رام بار دیگر شتاب ببینید همراه او تا دور روید راجه گفته آنها
شنیده باگریه تمام بر مکان بایستاد درینجا صورت رتهه مع اسپان خوب و رام و لچهمن و سیتا
بر سوار اند و سومنتر رتهبان و صورت زنان که گریه کنان عقب میروند و راجه و بشست ایستاده رام را می بینند

و مینالد

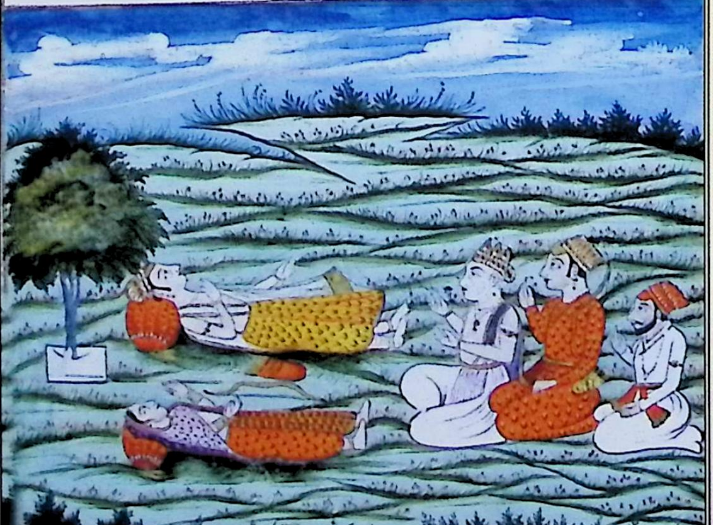

जैसे कि चन्द्रमा पर ग्रहण लगा हुआ दिखता है। वह लोगों की आवाज़े सुन रहे थे कोई कह रहा था हे राम ! कोई कह रहा था। हे सीता ! कोई कहता था हे लक्ष्मण ! रामचन्द्र ने सारथी से कहा ! रथ को शीघ्र ले चलो ताकि मेरी माताओं और मेरे पिता राजा को मेरे देखने से कष्ट और दुख न हो, राजा पीछे आ रहे हैं। वशिष्ट आदि ब्राह्मणों ने कहा यदि आप चाहते हैं कि राम को पुनः शीघ्र देखें तो उनके साथ दूर तक न जायें। राजा उनकी बात सुनकर रोते हुए अपने स्थान पर खड़े रह गये।

रथ का चित्र श्रेष्ठ घोड़ों के साथ, राम, लक्ष्मण और सीता उस पर सवार हैं और रथवान सुमंत्र भी तथा स्त्रियों का चित्र जो रोती हुई पीछे-पीछे चल रही हैं। राजा और वशिष्ठ खड़े राम को देख रहे हैं एवं रो रहे हैं।

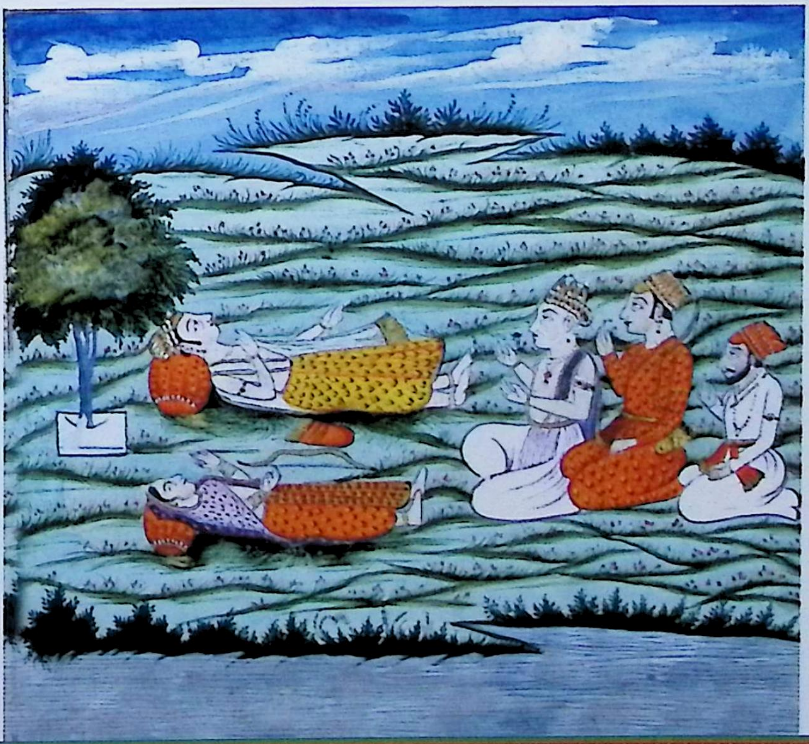

۲۹

مرگ شوهر زنان بعد روان شدن رامچندر زنان محل شور گریه کردند و گفتند

رامچندر رامچندر

که رامچندر تکیه و پناه ماست کجا میرود و شجاع و راست رو عالم و دهرم دان و رزم کو و به تسلیم سخن پدر آن

کجا میرود بدینگونه مادران رامچندر با یکدیگر دست برداشته بشور فریاد میکردند و مردم شهر اکن

ها با بچه

هوتر نمیکردند با وجودیکه آفتاب بغروب رسیده بود و افیال پوشش خود انداخته و گاو با وجه

نمودند

در ساخته و سکر یعنی زهره سرخ بنظر می آمد و برسپت یعنی مشتری و سنیچر یعنی زحل غمناک مینما

آمد

و سوم یعنی ماه بتصدیع بود و همه کواکب را ضیا به تنزل بود و بساکها نچهتر ظلمات آلوده بر فلک نظر می

بود

و کسان شهر بخوردن و بازی کردن دل نمیکردند گویا هم شهر برهم شده بود و اطراف به تیرگی اندوده

محبت

و باد سرد بود و نماه خالی از گردونه آفتاب از برودت فرد زنان را بشوهران رغبت و نه شوهر از زنان

صورت خانه راجه و صورت سیاه و

آشنایان رامچندر خود دیوانه شده بودند همه کس کیکئی را زشت میگفتند و راجه را نیز

مادران رام و دیگر زنان محل دست برداشته موی پریشان کرده و صورت شب ستاره سکر سرخ و ماه

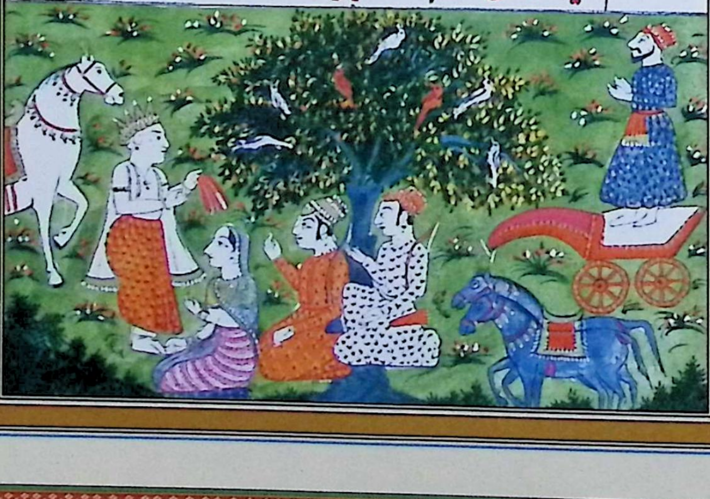

सर्ग-४६

स्त्रियों का कोलाहल

रामचन्द्र के चले जाने के बाद महल की स्त्रियों ने रोना आरम्भ किया और कहा कि रामचन्द्र हमारा सहारा हैं। कहा जाता है जो वीर संसार में सीधे मार्ग पर चलने वाला, धर्म जानने वाला, नम्रतापूर्वक वार्ता करने वाला और मुस्कुराते हुए बातें करने वाला है, वह रामचन्द्र कहा जाता है। इस प्रकार रामचन्द्र की माताएँ एक दूसरे से हाथ उठाकर चीख पुकार और फ़रियाद कर रही थीं तथा शहर के लोग सो नहीं रहे थे जबकि सूर्य अस्त हो चुका था। हाथी अपना परिधान उतार चुके थे और गायें अपने बच्चों से चिपट चुकी थीं। शुक्र ग्रह लाल दिखाई देने लगा था। समस्त ग्रह दुखी दिखाई दे रहे थे, चन्द्रमा दुखी था, सारे सितारों का प्रकाश धीमा पड़ चुका था और विशाखा नक्षत्र आकाश पर अंधेरे के समान लग रहा था। शहर के लोगों का दिल खाने, खेलने-कूदने में नहीं लग रहा था, सारा शहर शोक में डूबा था और चारों ओर दुख छाया हुआ था। हवा ठण्डी थी न स्त्रियों को पतियों की इच्छा थी न पतियों को पत्नियों का प्रेम। रामचन्द्र के परिचित दीवाने हो चुके थे सबके सब कैकेयी को बुरा कह रहे थे और राजा को भी।

राजा के महल का चित्र और राम की माताओं तथा महल की दूसरी स्त्रियों का चित्र। हाथ उठाए हुए बाल बिखराये हुए और रात, लाल शुक्र और काले ग्रह का चित्र।

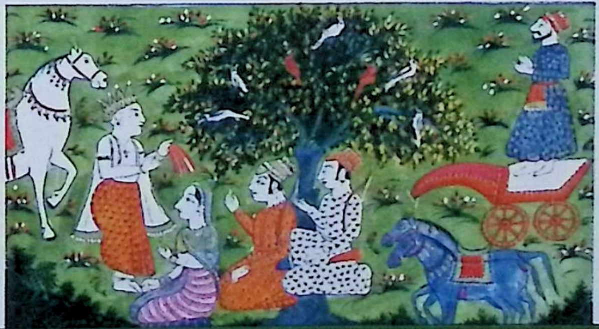

سر کی اضطراب راجه دشرتهه تا که رتهه رامچندر را میدید پلک باهم نزد نگاه کرد او
بنظر نیامد بیهوش شده بر افتاد سمت دست راست او کوشلا رسید و سمت دست چپ او
کیکئی کردید راجه بکیکئی گفت روی تو نمی بینم تو فقط حریص و طامع هستی و دبرم گذاشته
بگذار راجه خاک آلوده از زمین برخاسته بگفت مردم پیاده ها بنظر می آیند و رامچندر
دیده نمیشود آن نوجوان و غریب نما و سرخ حدقه چشم ماه رو و کشاده سینه و دراز دست
و اسد خرام و مثل کوهه کاو کتف او و دارنده سیاه اجن گویا دیوتا از آسمان فرود آمده
اینچنین رامچندر بنظر نمی آید کیکئی تو خرم شو که راجه از جهان میرود بدینگونه راجه گریه کرده
در قلعه ارک داخل شد و فرمود که مرا در خانه کوشلا ببرید القصه داخل خانه کوشلا
خالی از رام و لچهمن و سیتا دیده دست برداشته بشور گریه نمود چون نیم شب بگذشت
راجه بکوشلا گفت ای کوشلا من ترا نمی بینم دست خود بر من بگذار که نظر از روی
دل در رام رفته است و بر نمیگردد این را شنیده کوشلا زیاده تر گریه کردن گرفت

سر کی اضطراب کوشلا ۴۸ کوشلا براجه گفت رام را بصحرا فرستاده کیکئی را آرزوی دلخواه
بر آمده است و مرا خواهد ترسانید رام اگر درین شهر بودی کلاکری کردی اینطور برهم
چرخ آرزو بود نواز گفته او رام و لچهمن و سیتا را بصحرا فرستادی کی ایام بودن ب
صحرا آخر خواهد شد و هر دو پسر و سیتا را کی خواهم دید و کی دختران شهر او شانرا

सर्ग-४७

राजा दशरथ की व्याकुलता

राजा दशरथ ने जब तक रामचन्द्र का रथ दिखाई देता रहा पलक नहीं झपकाई। जैसे ही वह आँखों से ओझल हुआ बेहोश होकर गिर पड़े उनके दाहिनी ओर कौशल्या पहुँची और बाईं ओर कैकेयी गईं। राजा ने कैकेयी से कहा मैं तेरा मुख नहीं देखूँगा। तू केवल लालची, ईर्ष्या से पूर्ण है। तूने धर्म छोड़ दिया है। राजा मिट्टी से भरे हुए भूमि से उठकर कह रहे थे मुझे पैदल लोग दिखाई दे रहे हैं परन्तु रामचन्द्र दिखाई नहीं दे रहे हैं। वह युवक, गरीबों का पालक, लाल आंखों वाला, चन्द्रमा के समान, चौड़े सीने वाला, लम्बे हाथों वाला, शेर की चाल चलने वाला, उसके कन्धे पहाड़ के समान ऊँचे, काले केश वाला जैसे आकाश से देवता नीचे उतर आये हैं ऐसे रामचन्द्र मुझे दिखाई नहीं दे रहे हैं। कैकेयी तू प्रसन्न हो जा कि राजा संसार से जा रहा है। इसी प्रकार राजा रोते हुए अरक किले में प्रविष्ट हुए और कहा मुझे कौशल्या के महल में ले चलो। कौशल्या के महल में प्रविष्ठ होकर उसे राम, लक्ष्मण और सीता से खाली देखकर हाथ उठाकर विलाप करने लगे तथा मन चंचल होने लगा। जब आधी रात बीत गई तो राजा ने कौशल्या से कहा हे कौशल्या ! मैं तुझे देख नहीं पा रहा हूँ तू मुझ पर अपना हाथ रख, क्योंकि दृष्टि हृदय की ओर से राम के साथ जा चुकी है और वापस नहीं आ रही है। यह सुनकर कौशल्या ने और अधिक रोना आरंभ कर दिया।

सर्ग-४८

कौशल्या की व्याकुलता

कौशल्या ने राजा से कहा, राम को वन में भेजकर कैकेयी के मन की इच्छा पूरी हो गयी है। अब वह मुझे भयभीत करेगी। यदि राम इसी शहर में होते और भिक्षाटन करते इस निर्दयी आकाश की यही इच्छा थी। आपने उसके कहने से राम लक्ष्मण और सीता को वन में भेज दिया। वन में रहने की अवधि कब पूरी होगी और मैं दोनों पुत्रों और सीता को कब देखूँगी और कब वह शुभ अवसर प्राप्त होगा।

دیده شرم خواهند نمود و رام را دیده کی به برهمنان بخشش خواهم نمود بیشک من
کم طالعم که پسر من بصحرا رفت سرگ ۴۹ احوال رام بلچهمن خاموش میرفت و برهمنان
وغیره مردم از عقب میگفتند که باز گردد و بهکت هستیم و بازگشتن تو میخواهیم و گذاشتن
گفته بهگتان تو خود میدانی که چطور هست همین نوع کلمات میگفتند و رام ساکت بود
و میرفت چون قدری راه نوشتند برکنار دریائی تمسا رسیدند رامچندر دریا را دیده
به لچهمن چنان گفت اول شب است در صحرا باید بود و یاد خانه نباید نمود و ببین تمام جنگل
غم انگیز که بهایم و طیور همه بیدل اند حالا اجودهیا مکان سلطنت پدر من با تمام مرد و زن
در فکرت خواهد بود مردم با من و تو و بهرت و شترگهن متعلق اند و مرا فکر مادر و پدر راست
که از گریه نابینا نشوند بهرت دهرماتما هر آئینه مادر و پدر را بگفتار تسلی خواهد نمود ازین باره
خاطر من اطمینان می یابد فی الجمله امشب همین جا منزل کنیم اینچنین بخاطر من میگذرد و لچهمن را
چنین گفته بسومنتر سارتهی گفت اسپان را از رتهه بکشا القصه منزل کردند رامچندر سندهیا
یعنی پرستش شام نمود و سومنتر و لچهمن برائی خواب رامچندر از گیاه وغیره خوابگاه ساختند
رامچندر از مصلحت لچهمن با سیتا در انجا بنشست لچهمن خود آب آورده پائی رامچندر را
بشست و بعده پائی سیتا را بشست بعده لچهمن با سومنتر خوبی و خوبیهای رام بیان
کردن گرفت و رام با جمیع مردم شهر و هجوم بر ساحل تمسا بر خوابگاه خود خواب کرد و لچهمن

शहर की कन्याएं उन्हें देखकर लजाएँगी और कब मैं राम को देखकर ब्राह्मणों को दान दूंगी। निःसन्देह मैं दुखी हूँ कि मेरा पुत्र वन चला गया।

सर्ग-४६

परिस्थितियाँ

राम लक्ष्मण के साथ शान्ति से चल रहे थे और ब्राह्मण आदि लोग पीछे से कह रहे थे कि फिर लौट कर आयें हम तो भगत हैं, तथा आपकी वापसी के इच्छुक हैं। भक्तों की कही हुई बात को न मानना, आप स्वयं जानते हैं कि, कैसा है। इसी प्रकार की बातें कर रहे थे और राम शान्ति से चले जा रहे थे। जब अधिक मार्ग तय हो गया तब तसमा नदी के किनारे पर पहुँचे। वहाँ रामचन्द्र ने नदी को देखकर लक्ष्मण से कहा ''वन में रहने की पहली रात्रि है और अपना घर याद नहीं करना चाहिए। देखो सारा वन दुखी है, पशु-पक्षी सब दुखी हैं। अब मेरे पिता की राज्य अयोध्या समस्त स्त्री पुरुष के साथ चिन्तित होंगे और लोग मुझसे, तुमसे, भरत और शत्रुघन से जुड़े हैं। मुझे माता-पिता की चिन्ता है कि रो-रोकर अन्धे न हो जायें। भरत धर्मात्मा निःसन्देह माता पिता को सान्त्वना देंगे इसी कारण मुझे पूर्ण सन्तुष्टि है। हम आज की रात यहीं रुकेंगे। मेरे हृदय में यही बात आ रही है। लक्ष्मण से यह कहकर सुमन्त्र सारथी से कहा ''घोड़ों को रथ से अलग कर दो'' सबने वहीं पड़ाव किया। रामचन्द्र ने शाम की पूजा (संध्या) की और सुमंत्र और लक्ष्मण ने रामचन्द्र के सोने के लिए घास-फूस से शयनकक्ष तैयार किया। रामचन्द्र लक्ष्मण का मन रखने के लिए सीता के साथ वहाँ बैठे। लक्ष्मण ने स्वयं जल लाकर रामचन्द्र के पांव धोए, फिर सीता के पाँव धोए और उसके बाद लक्ष्मण ने सुमंत्र से रामचन्द्र का गुणगान करना आरंभ किया। फिर राम शहर के समस्त लोगों और समूह के साथ तसमा के तट पर अपने खेमे में सोये।

و سار بنتی را تمام شب به بیداری و گفتن خوبیهائی رآم و هنرهایش بگذشت

درینجا صورت تمسا دریا و صورت رام و سیتا بر بستر کاه نشسته و رام با پیرایه برهمن
چرح و سیتا با پیرایه خوب و صورت لچهمن که پای رام و سیتا میشوند و صورت سومنتر رتهبا
و صورت رتهه که بر بسته پایه ایستاده و صورت اسپان که جدا کرده ایستاده گیاه میخورند

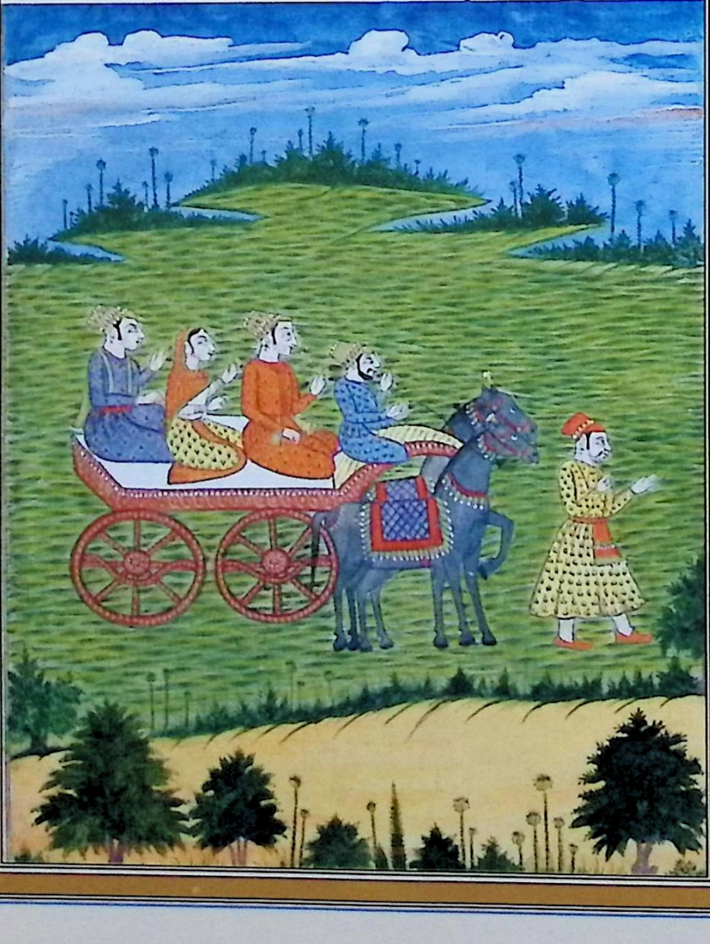

लक्ष्मण और सारथी की पूरी रात जागकर तथा रामचन्द्र का गुणगान करने में व्यतीत हुई।

तसमा नदी का चित्र और राम व सीता का चित्र जो घास के बिस्तर पर बैठे हुए हैं। राम फटे पुराने वस्त्र में और सीता सुन्दर वस्त्र में हैं और लक्ष्मण का चित्र जो राम व सीता के पाँव धो रहे हैं। सुमंत्र रथवान का चित्र और रथ का चित्र जो तीन पाए पर खड़ा है। घोड़ों का चित्र जो अलग कर दिये हैं और घास चर रहे हैं।

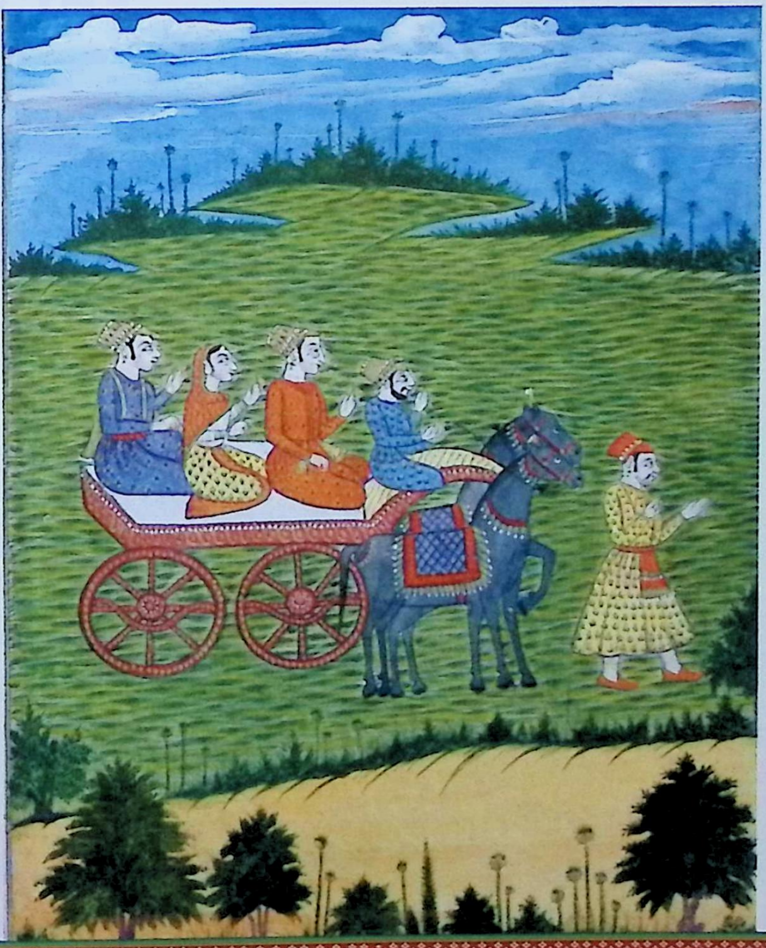

سرگ طیاری رتهه رامچندر بر خاسته غربت و کربت شهریان دیده سخن
نیک لچهمن بلچهمن گفت که ازینجا اراده رفتن بسمت خانه باید کرد تا که این مردم خفته اند
ما بر رتهه سوار شده برویم و بار بصحرا برویم تا مردم بگذارند و نوع دیگر بخاطر نمی آید لچهمن گفت
در خاطر من هم همین می آمد زود بر رتهه سوار شوند سومنتر رتهه را طیار کرده دست بسته
پیش آورد رام سوار شده برائی برگردانیدن مردم بسارتهی گفت رتهه را سمت اجودهیا ببر
بعد از دو گهری رتهه را باز گردان سومنتر همچنان بعمل آورد صبحی چون مردم برخاستند
دانستند که رامچندر برگشته بشهر رفت همه برگشته آمدند **سرگ رفتن رامچندر**
مردم بعد از رفتن رامچندر بخانه خود ها آمدند و با زنان و پسران خود ملاقات کردند دیدند
که گریه و زاری میگذارند کسی بر خوابگاه خواب نمیکرد و کسی را گویا متاع گمشده کسی از زائیده
شدن براور خوشحال نمیشود و میگفتند آن دریا نیکوکار و نیلوفر خوب است که آنجا رام است
کوهها و اشجارها و گلها گوناگون نیک اند که آنجا رام اقامت کند و بوقت هم بر درختان گل
و ثمر خواهند آمد چون رام خواهد رفت صحرا و کوهها هر جا که رامچندر خواهد بود بطریق ضیافت
پیش خواهند آمد او والی ماست و او پناه ماست هرآئینه عقب او خواهیم رفت بدینگونه زنان
بشوهران خود میگفتند کیکئی درینجا راج کند هرگاه ما زنده نخواهیم ماند پس پسر وزیر بچه کار
خواهد آمد و از رفتن رام راجه بسیار نخواهد زیست و از مردن او ادهرم خواهد شد آن کیکئی

सर्ग-५०

रामचन्द्र ने उठकर शहरवासियों के कष्ट और निर्धनता देखकर लक्ष्मण के साथ अच्छी-अच्छी बातें कीं, कि यहाँ से घर की ओर जाने का निश्चय करना चाहिए जब तक यह लोग सो रहे हैं हम रथ पर सवार होकर चलें और फिर वन की ओर चले ताकि लोग छोड़ दें दूसरी कोई बात मेरे मन में नहीं आ रही है। लक्ष्मण ने कहा मेरे मन में भी यही बात आ रही थी। शीघ्रता से रथ पर सवार हो सुमंत्र रथ को तैयार करके सामने लाया और राम ने सवार होकर लोगों को वापस करने के लिए सारथी से कहा। रथ को अयोध्या की ओर ले चलो उसके थोड़ी देर बाद रथ को फिर लौटा लेना। सुमंत्र ने यही किया जब सुबह लोग उठे तो यही समझा कि रामचन्द्र वापस शहर चले गये हैं, सब वापस आ गये।

सर्ग-५१

रामचन्द्र का जाना

लोग रामचन्द्र के जाने के बाद अपने-अपने घर आ गये और अपने पुत्रों तथा पत्नियों से भेंट की। देखा कि वह सब विलाप करना नहीं छोड़ रहे हैं कोई शयनकक्ष में नहीं सो रहा था। जैसे किसी का कोई सामान खो गया है। कोई अपने भाई के पैदा होने से प्रसन्न नहीं हो रहा है, लोग कह रहे थे कि वह नदी और नीलोफर अच्छे हैं जहाँ राम हैं। असमय भी वृक्षों पर फल फूल आयेंगे जब राम जायेंगे तो वन और पहाड़ जहां भी रामचन्द्र होंगे सब आवभगत करेंगे। वह हमारे मालिक हैं वह हमारा आश्रय हैं वास्तव में हम उनके पीछे जायेंगे स्त्रियाँ अपने पतियों से इस प्रकार कह रही थीं कैकेयी यहाँ राज करे जब हम जीवित नहीं रहेंगे तो फिर पुत्र और धन किस काम आयेगा?राम के जाने से राजा अधिक दिन जीवित नहीं रहेगें ।और उसके मरने से अधर्म होगा। वह कैकेयी

له پسر و شوهر را از حرص گذاشت ما را چگونه محافظت خواهد کرد و ما در راج کیکئی نخواهیم بود و
سوگند پسران خود میخوریم که از رفتن رام نخواهیم زیست بدینگونه زنان میگفتند و
گریه میکردند صورت رام با لباس مذکور و سیتا با لباس خوب و لچهمن که هر سه بر رتهه
اسپان سوار اند و سومنتر رتهه بان و صورت رتهه طرف منعکس یابد یعنی اگر روی مشرق باشد

طرف مغرب چرا که سمت اجودهیا میرود

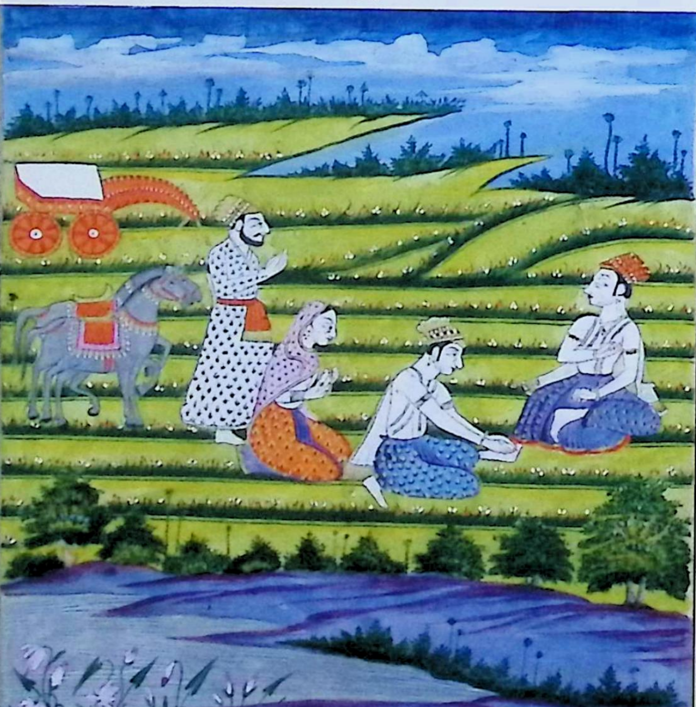

जिसने लालच के कारण पुत्र और पति को छोड़ दिया वह कैसे हमारी रक्षा करेगी। हम कैकेयी के राज्य में नहीं रहेंगे और हम अपने पुत्रों की सौगन्ध खाते हैं कि हम राम के जाने से जीवित नहीं रहेंगे। इस प्रकार स्त्रियाँ वार्ता कर रही थीं और रो रही थीं।

राम का चित्र, बताये गये वस्त्र में और सीता सुन्दर वस्त्र में, लक्ष्मण तीनों घोड़ों वाले रथ पर सवार हैं। सुमंत्र रथवान और एक ओर रथ का चित्र है अर्थात् यदि पूरब की ओर क्योंकि वह लोग अयोध्या की ओर जा रहे हैं।

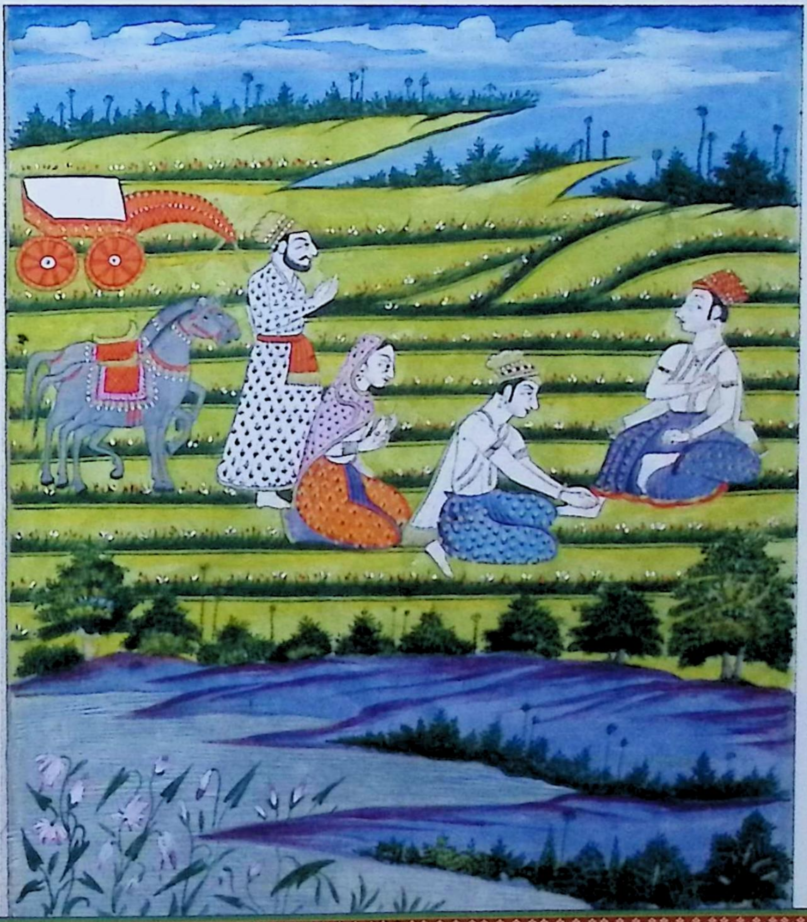

سرگ ملاقات گوهه رامچندر چون بموجب فرموده پدر خود از منزلی که فرود آمده بود
راه نوشت در اثنائی راه صبح گشت سندهیا صبح یعنی پرستش پگاه نموده و باز بر رتهه
سوار شده کوچ فرموده رفته رفته بر دریای گومتی عبور کرده دیهات و کلهای و صحراها را
تماشا کنان میرفت و سخنان مردم چنان می شنید که لعنت بر دشرته هست که مغلوب شهوت شد
و بمشکل کیکئی عذاب کار هست که در امور خطا رغبت کرد بدین آئین گفتار مردم اطراف
و جوانب میشنید و راه می نوردید بعد از ان بید سمرتی نام دریا را عبور نمود و بسمت دکهن
رتهه روان فرمود بعده باز گومتی گوکلا را که بدریائی شور می پیوندد گذر کرده دریای سرجو را
که طاوس و کبک یعنی هنس بر و بسیار اند دید و آن زمین راجه من با چهواکو بخشیده بود
سیتا را نمود و بسیار تهی گفت کی اینجا باز آمده شکار بازی خواهم نمود مرا این آرزو هست
القصه قریب هنگام شام براه شهر تمرنک پر از سرجو عبور کرد رامچندر دست بسته بسمت اجودهیا
رو کرده گفت من با سیتا و لچهمن از تو مرخص میشوم بعد انقضائی ایام بودن صحرا باز
ترا خواهم دید و بعده رامچندر که از گریه چشم سرخ داشت دست راست برداشته کشید
به بعضی مردم که تا آنجا همراه بودند گفت من از شما مهربانی و محبت دیدم شما تصدیع
حالا بروید آنها پردچهنا کرده برگشتند بعده رامچندر راه دیهات و کوهها طی نموده بر کنار دریای
گنگا رسید چطور دریا که آبش پاکست و از کوه هماچل بر آمده و برائی رفتن سرگ نردبانست

सर्ग-५२

गुह की भेंट

रामचन्द्र अपने पिता की आज्ञानुसार जिस स्थान से आये थे तो रास्ते में सुबह हो गई उन्होंने सुबह की पूजा (प्रातः संध्या) की और फिर रथ पर सवार होकर प्रस्थान किया। धीरे-धीरे गोमती नदी को पार किया देहात, फूलों और वनों की सैर करते जा रहे थे तथा लोगों की इस प्रकार की बातें सुनते जा रहे थे कि धिक्कार है दशरथ पर, कि कामवासना में लीन हो गये, प्रेम में अंधे हो गये और सबसे अधिक कैकेयी पापी है क्योंकि उसने गलत कार्य किया। इसी प्रकार चारों ओर से लोगों की बातें सुनते हुए मार्ग पर जा रहे थे उसके बाद वेद स्मृति को पार किया और रथ को दक्षिण की ओर मोड़ दिया। उसके बाद फिर गोमती नदी को पार किया जो समुन्द्र में जाकर मिलती है और सरयू नदी को देखा जिस पर हंस और मोर अधिक हैं। वह भूमि जो राजा मनु ने इक्ष्वाकु को दी थी सीता को दिखाई और सारथी से कहा मैं यहाँ फिर कभी आकर शिकार खेलूँगा मेरी यह इच्छा है। अतः सायंकाल के निकट श्रृंगवेरपुर शहर के मार्ग से सरजू नदी को पार किया। रामचन्द्र ने हाथ जोड़कर अयोध्या की ओर मुंह करके कहा "मैं सीता और लक्ष्मण के साथ तुझसे विदा हो रहा हूँ। वन में रहने की अवधि समाप्त होने के बाद फिर तेरे दर्शन करूंगा। उसके बाद रामचन्द्र ने जिनके नेत्र रोने के कारण लाल हो गये थे दाहिना हाथ उठाकर कुछ लोगों से, जो वहाँ तक उनके साथ थे कहा, मैंने आप लोगों की ओर दया और प्रेम से देखा आप लोगों ने कष्ट उठाया अब आप लोग जाइये।" वह लोग फेरा लगाकर वापस चले गये उसके बाद रामचन्द्र देहात और पहाड़ों को पार करते हुए गंगा नदी के किनारे पहुँचे। इस रूप से कि नदी का पानी पवित्र है, यह हिमालय पहाड़ से निकला है और नदी स्वर्ग में जाने के लिए तेजी से बह रही है।

سرگ ملاقات گوهه رامچندر چون بموجب فرموده پدر خود از منزلی که فرود آمده بود
راه نوشت در اثنائی راه صبح گشت سندهیا صبح یعنی پرستش پگاه نمود و باز بر رتهه
سوار شده کوچ فرموده رفته رفته بدریای گومتی عبور کرده دیهات و کلهای و صحراها را
تماشا کنان میرفت و سخنان مردم چنان می شنید که لعنت بر دشرتهه است که مغلوب شهوت شد
و بسکن کیکئی عذاب کار است که در امور خطا رغبت کرد بدین آئین گفتار مردم اطراف
و جوانب میشنید و راه می نوردید بعد ازان بید سمرتی نام دریا را عبور نمود و بسمت دکهین
رتهه روان فرمود بعده باز گومتی کوکلا را که بدریای شور می پیوندد گذر کرده دریای سرجو را
که طاؤس و کبک یعنی هنس بر وی بسیار اند دید و آن زمین راجه منّ با چهواکو بخشیده بود
سیتا را نمود و بسارتهی گفت کی اینجا باز آمده شکار بازی خواهم نمود مرا این آرزوست
القصه قریب هنگام شام براه شهر شرنگ پیر از سرجو عبور کرد رامچندر دست بسته بسمت اجودهیا
رو کرده گفت من با سیتا و لچهمن از تو مرخص میشوم بعد انقضائی ایام بودن صحرا باز
ترا خواهم دید و بعده رامچندر که از گریه چشم سرخ داشت دست راست برداشته
به بعضی مردم که تا آنجا همراه بودند گفت من از شما مهربانی و محبت دیدم شما تصدیع کشیدید
حالا بروید آنها پردچهنا کرده برگشتند بعده رامچندر راه دیهات و کوهها طی نموده بر کنار دریای
کنگا رسید چطور دریا که آبش پاکست و از کوه هماچل بر آمده و برائی رفتن سرگ زد بانشست

सर्ग-५२

गुह की भेंट

रामचन्द्र अपने पिता की आज्ञानुसार जिस स्थान से आये थे तो रास्ते में सुबह हो गई उन्होंने सुबह की पूजा (प्रातः संध्या) की और फिर रथ पर सवार होकर प्रस्थान किया। धीरे-धीरे गोमती नदी को पार किया देहात, फूलों और वनों की सैर करते जा रहे थे तथा लोगों की इस प्रकार की बातें सुनते जा रहे थे कि धिक्कार है दशरथ पर, कि कामवासना में लीन हो गये, प्रेम में अंधे हो गये और सबसे अधिक कैकेयी पापी है क्योंकि उसने गलत कार्य किया। इसी प्रकार चारों ओर से लोगों की बातें सुनते हुए मार्ग पर जा रहे थे उसके बाद वेद स्मृति को पार किया और रथ को दक्षिण की ओर मोड़ दिया। उसके बाद फिर गोमती नदी को पार किया जो समुन्द्र में जाकर मिलती है और सरयू नदी को देखा जिस पर हंस और मोर अधिक हैं। वह भूमि जो राजा मनु ने इक्ष्वाकु को दी थी सीता को दिखाई और सारथी से कहा मैं यहाँ फिर कभी आकर शिकार खेलूँगा मेरी यह इच्छा है। अतः सायंकाल के निकट श्रृंगवेरपुर शहर के मार्ग से सरजू नदी को पार किया। रामचन्द्र ने हाथ जोड़कर अयोध्या की ओर मुंह करके कहा ''मैं सीता और लक्ष्मण के साथ तुझसे विदा हो रहा हूँ। वन में रहने की अवधि समाप्त होने के बाद फिर तेरे दर्शन करूंगा। उसके बाद रामचन्द्र ने जिनके नेत्र रोने के कारण लाल हो गये थे दाहिना हाथ उठाकर कुछ लोगों से, जो वहाँ तक उनके साथ थे कहा, मैंने आप लोगों की ओर दया और प्रेम से देखा आप लोगों ने कष्ट उठाया अब आप लोग जाइये।'' वह लोग फेरा लगाकर वापस चले गये उसके बाद रामचन्द्र देहात और पहाड़ों को पार करते हुए गंगा नदी के किनारे पहुँचे। इस रूप से कि नदी का पानी पवित्र है, यह हिमालय पहाड़ से निकला है और नदी स्वर्ग में जाने के लिए तेजी से बह रही है।

و مهر کبه ها پرستش او میکنند و سمد را مهکبی است یعنی پت رانی اعنی عورتی که سردار
صاحب خانه باشد و بر و سارس و کرونج آواز میکنند در و سوسمار و مکر و افعی هستند و آهوان
و چارن میباشند رام کنگارا دیده بسومنتر گفت امشب همین جا منزل کنیم و این درخت
انگودی نیز نزدیکست سومنتر و لچهمن هر دو قبول کردند سومنتر اسپا را واگذاشت
رام با سیتا و لچهمن از آن رته فرود آمد و زیر درخت بنشست سومنتر دست بسته
ایستاد و والی آنجا که قوم نکهاد است آنکه گوهه نام داشت و دیر با تا مادر است کود دوست
رامچندر بود آمدن رام شنیده با بزرگان و اقربای ذات خود پیشوا آمد رام او را
از دور دیده با لچهمن از جای خود برخاسته نزدیک او آمد با یکدیگر ملاقات کردند گوهه گفت
چنانچه اجودهیا تراست اینمکان هم از آن تست هر چه فرمایید بعمل آریم و ارگهه و پادو و اطعمه
و اشربه و لبه و بستر و اسپان وغیره پیشکش آورد و گفت خوب کردی که آمدی
این تمام زمین از آن تست ما همه چاکران تو ایم تو خداوند مایی رامچندر گفت تو همیشه
اعز و محب هستی ترا و برادران ترا دیدم در خانه خیریت و عافیت هست انچه بمن گفتی
و برای پیشکش من طیار کردی وقت گرفتن این نیست چون رامچندر چنین گفت گوهه آنچه
آورده بود واپس فرستاد و خود همانجا ماند چون شام شد رامچندر آب را که لچهمن خود
آورده بود گرفت و پرستش کرد و بر زمین از کاه بستر کرده سیتا و رامچندر بخواب رفتند

सारे ऋषिगण उसकी पूजा करते हैं और समुद्र की महकबी है अर्थात् पटरानी अर्थात् एक ऐसी स्त्री जो सरदार और गृहणी होती है। उस पर सारस और करूंज आवाज लगाते हैं उसमें सोसमार, मकर और अजदहे होते हैं और हिरन और नीलगायें होती हैं। राम ने गंगा को देखकर सुमंत्र से कहा, आज की रात हम यहाँ पड़ाव डालेंगे और यह अगूंदी का वृक्ष भी निकट है। सुमंत्र और लक्ष्मण दोनों ने इसे स्वीकार किया सुमंत्र ने घोड़ों को छोड़ दिया। राम सीता और लक्ष्मण के साथ उस रथ से नीचे उतरे और वृक्ष के नीचे बैठ गये। सुमंत्र हाथ बाँधकर खड़ा रहा और वहाँ का शासक जो नकहाद कौम से सम्बन्ध रखता था जिसका नाम गुह था और जो धर्मात्मा, सत्य वादी और रामचन्द्र का मित्र था राम के आगमन का समाचार सुनकर अपनी जाति के सम्मानित लोगों के साथ स्वयं अगुवाई और स्वागत के लिये आया। राम उसको दूर से आता देखकर लक्ष्मण के साथ अपने स्थान से उठे और उसके निकट गये आपस में भेंट हुई। गुह ने कहा, जिस प्रकार अयोध्या आपकी है उसी प्रकार यह स्थान भी आपका है। जो आप कहें मैं उसका पालन करूँगा और पद, भोजन, वस्त्र, बिस्तर और घोड़ों आदि का प्रस्ताव रखा और कहा, आपने अच्छा किया कि यहाँ आए यह सम्पूर्ण भूमि चूँकि आपकी है इसलिये हम सब आपके सेवक हैं। आप हमारे मालिक हैं रामचन्द्र ने कहा ‘‘तुम सदा से मुझे प्रिय हो मैंने तुम्हें और तुम्हारे भाईयों को देखा। घर में कुशल मंगल है ?जो कुछ तुमने कहा और मुझे भेंट देने के लिए लाए यह समय उनके लेने का नहीं है। जब रामचन्द्र ने यह कहा तो गुह ने जो कुछ लाया था सब वापस भेज दिया और पूजा की तथा भूमि पर घास का बिस्तर लगाकर सीता और रामचन्द्र सो गये।

وگوهه و سومنتر و لچهمن بیدار بوده بایکدیگر برای گذرانیدن شب سخنها میگفتند:

دراینجا صورت رام و لچهمن بطور سابق و سیتا با پیرایه سابق در زیر درختی بر بستر گیاه نشسته
و سومنتر رتهبان ولرتهه و اسپان را جدا کرده و خود استاده و صورت راجه گوهه که چیزی خوردنی
و نوشیدنی را پیشکش میگذارد

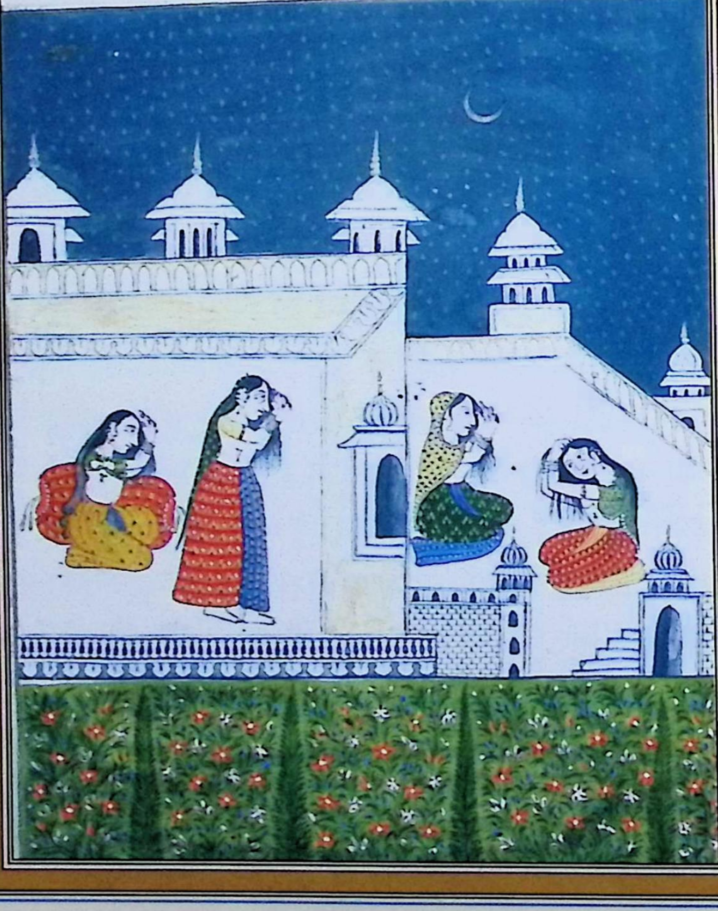

गुह, सुमंत्र और लक्ष्मण जागकर रात बिताने के लिये एक दूसरे से बातें करते रहे।

राम और लक्ष्मण का चित्र यथावत् और सीता का चित्र पहले के समान। एक वृक्ष के नीचे घास के बिस्तर पर बैठे हुए हैं और सुमन्त्र रथवान, रथ से घोड़ों को अलग करके खड़ा है तथा राजा गुह का चित्र जो कुछ खाने-पीने की सामग्री और घोड़ा प्रस्तुत कर रहा है।

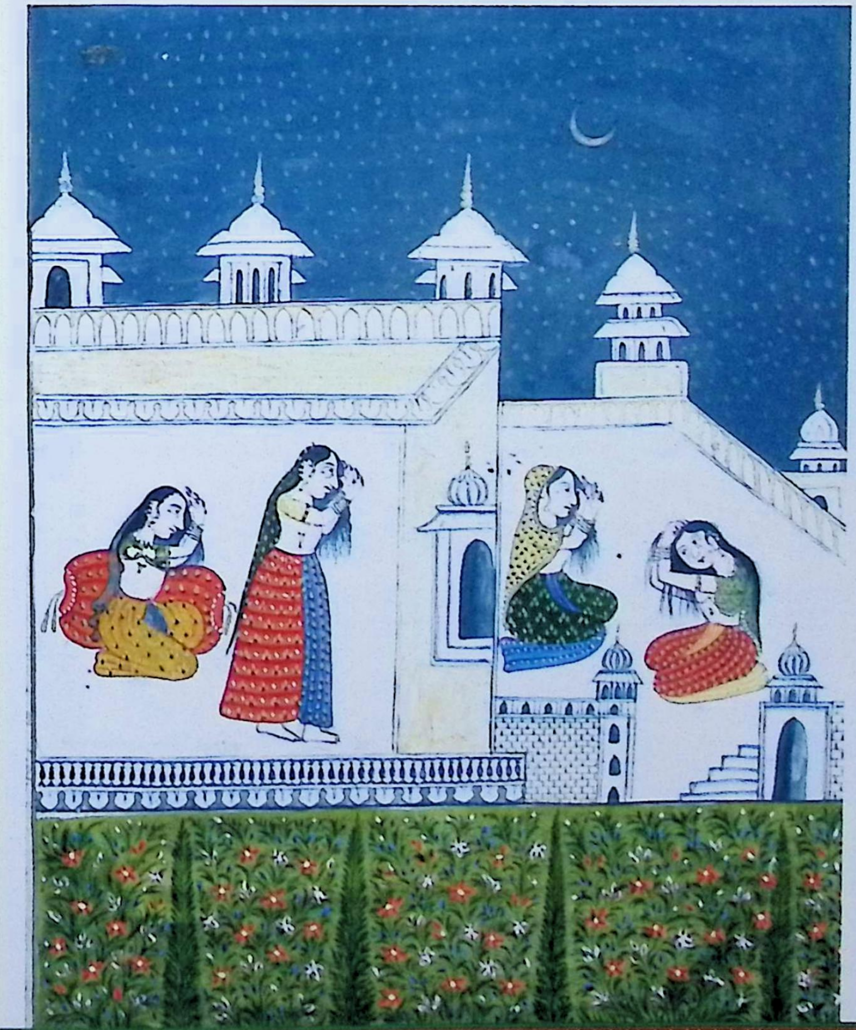

سرگ گفتار گوهه لچهمن را بیدار دیده گوهه گفت برائی تو بستری طیار کرده ام بران
آسایش کن اینهمه مردم برائی خدمت توانند و تو آسودگی را نزاواری من برائی محافظت
بیدار خواهم بود سوگند براستی تست که مرا هیچ چیز در دنیا از رامچندر عزیزتر نیست از دولت او
در عالم جشن و کیرت می یابم لچهمن گفت من چگونه رام و سیتا بر زمین خفته گذاشته
خواب هم کرد و آسایش زندگی خواهم نمود این رامچندر که دیوتا و دیت همه با او
بجنگ طاقت ندارند از رفتن این بصحرا دشرته هم بسیار نخواهد زیست و شتاب
این زمین بیوه خواهد شد کوشلا و والدهٔ من بیشک نخواهد زیست اگر والدهٔ من
ستر گهن را دیده خواهد زیست اما کوشلا از تصدیع تمام خواهد مرد بلکه از رفتن رام تمام اجودهیا
خراب خواهد شد کسی در کوچه ها و بازارها آنجا بآرام نخواهد بود والقصه درهمین گفت و شنود لچهمن بیدار
وایستاده ماند و آن شب بگذشت رامچندر را هم از خواب چشم چندان بهم زد در فکر گذاشتن راج و خانه
وغیره و رفتن صحرا خواب او رفت

सर्ग-५३

गुह की वार्ता

लक्ष्मण को जागता देखकर गुह ने कहा, आपके लिये मैंने एक बिस्तर तैयार कर दिया है उस पर आराम कीजिये। यह सारे लोग आपकी सेवा के लिये हैं आपको विश्राम करना चाहिये। आपकी रक्षा के लिये मैं जागूँगा। आपकी सत्यता व सज्जनता की सौगन्ध कि मुझे संसार में कोई चीज रामचन्द्र से अधिक प्रिय नहीं है। उनके प्रताप से मैं संसार में ख्याति और प्रसिद्धि व वरीयता पाऊँगा। लक्ष्मण ने कहा मैं सीता और राम को भूमि पर सोया हुआ छोड़कर कैसे सोऊँगा तथा जीवन का सुख कैसे प्राप्त करूंगा ?यह रामचन्द्र जिनसे युद्ध करने की शक्ति देवताओं और दैत्य में भी नहीं है उनके वन जाने से दशरथ भी अधिक जीवित नहीं रहेंगे और शीघ्र ही यह भूमि विधवा हो जायेगी। कौशल्या और मेरी माता भी अधिक जीवित नहीं रहेंगी। मेरी माता तो शत्रुघ्न को देखकर जी लेगी लेकिन कौशल्या तो दुःख के कारण मर जायेंगी। अपितु राम के चले जाने से सम्पूर्ण अयोध्या नष्ट हो जायेगी। वहाँ की गलियों और बाजारों में कोई शान्ति से नहीं रहेगा। अतः लक्ष्मण इसी कहने सुनने में खड़े जागते रहे और वह रात्रि बीत गयी। रामचन्द्र को भी नींद नहीं आई। राज्य और महल छोड़ने की चिन्ता एवं दुःख में उनकी नींद भी भाग गई।

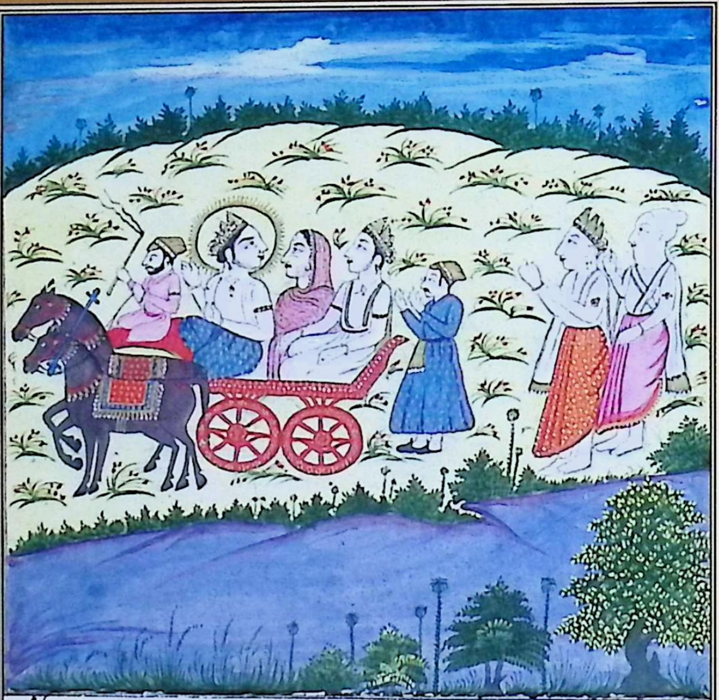

سرگ عبور گنگا بگاه رامچندر که دست دراز و سینه گشاده دار و لچهمن را بآواز گفت
رفت و آفتاب برآمد آواز کوکلا یعنی غراب هندی وطا و بگوش میرسد حالا دریا گنگا را
عبور باید نمود لچهمن آواز را شنیده با گوهه و سومنتر نزد رام رفت رامچندر گفت
کشتی که بادبان داشته باشد زود بیارید این را شنیده گوهه کشتی و ملاح را حاضر
آورده دست بسته عرض نمود که کشتی موجود است هر دو برادر کهرگ یعنی شمشیر را بستند
و بر کنار گنگا رفتند سومنتر گفت مرا چه امر است رام گفت برو و رتهه را ببر پیاده بصحرا

सर्ग-५४

गंगा को पार करना

प्रातः रामचन्द्र ने, जिनके हाथ लम्बे और छाती चौड़ी थी, लक्ष्मण से ज़ोर से कहा कि रात बीत गई और सूरज निकल आया, कोयल और मोर की अवाज कानों में आ रही है। अब गंगा नदी को पार करना चाहिए। लक्ष्मण आवाज सुनकर गुह और सुमन्त्र के साथ राम के पास गये। रामचन्द्र ने कहा कोई नाव केवट सहित शीघ्र लाओ। यह सुनकर गुह ने नाव और केवट को प्रस्तुत करके हाथ जोड़कर निवेदन किया कि नाव उपस्थित है। दोनों भाइयों ने कहरक अर्थात् तलवार बाँधी और गंगा के किनारे गये। सुमंत्र ने पूछा, मेरे लिये क्या आज्ञा है ?राम ने कहा "जाओ और रथ भी ले जाओ मैं पैदल ही वन में जाऊँगा, और

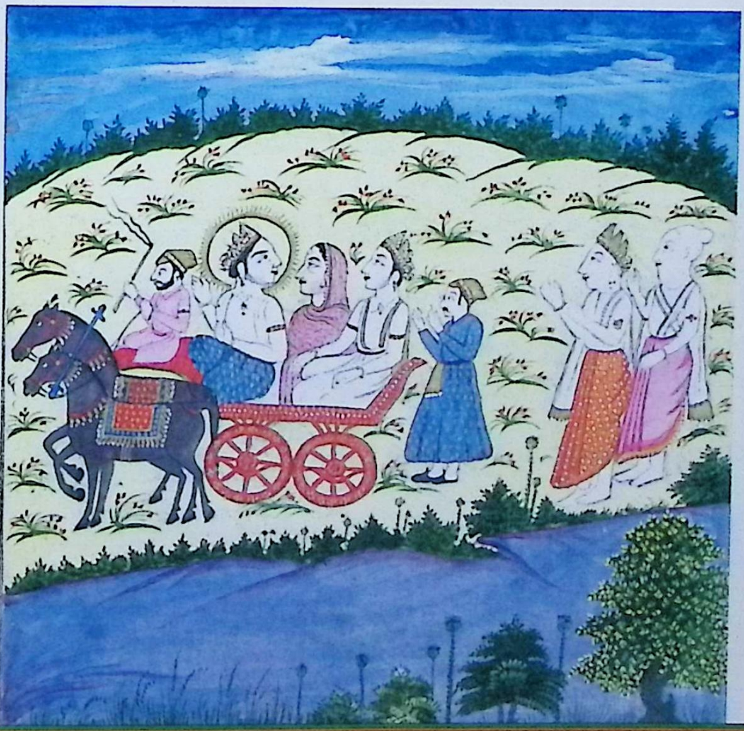

خواهم رفت و سومنتر بطریق مصلحت گفت ترا الحال ظاهر نباید نمود که رامچندر
با اهلیه و برادر چون مردم غربا در صحرا است سومنتر گفت ثمرات خوردن و برهم چرخ
کردن هم جایز نباید داشت زیرا که نازک بدن هستی و تو با سیتا و لچهمن در صحرا بوده
از تپ هر سه لوک را مسخر خواهی نمود و لعنت مراست که محکوم کیکئی خواهم بود و این بگفت و
از گریه آب از دیده او رفت چون رو را از آب بشست رامچندر بعد و بت بیانی باد گفت
چنان کنی که راجه پیر فرتوت است از هجر من تصدیع نیابد و آنچه برائی خاطر داشت کیکئی نماید
همان کنی و راجه را برائی این نربشتر یعنی والی مردم گویند که فرمودهٔ ایشان در هر کار رد
نگردد و والدهٔ من کوشلا کم مطالع و قبل ازین تصدیع ندیده اگر پی من زنده خواهد بود
از من نمسکار کرده خواهی گفت که غصه و غم و رنج برائی من و سیتا و لچهمن نباید کرد
از گفته پدر هزار سال در صحرا باشم چنانچه دیوتا بسرگ لوک و علاج غم پدر خواه
بیش باشد خواه اندک و هنوز که طبیبی هست کامل نخواهد کرد و سوائی پسر و هر فرزند
که گفته پدر را از کاهلی نکند او خود را بسرگ انداز و مثل دولتمند که ترک آچار نماید
من در آتش افتم لیکن چنان نکنم که رضائی پدر نباشد و تو بعد انقضای ایام چهارده
سال باز مایان را خواهی دید و کیکئی و غیره مادران مرا نمسکار خواهی کرد و برائی
خاطر من بهرت را طلب داشته زود جوراج خواهی داد و با او از من خواهی گفت

सुमंत्र से, कुछ सोचकर, कहा कि तुम्हें किसी को यह बात नहीं बतानी चाहिए कि रामचन्द्र अपनी पत्नी और भाई के साथ विदेशियों के समान वन में हैं। सुमंत्र ने कहा फल खाने और कष्ट उठाने को भी उचित नहीं मानना चाहिए। क्योंकि आपका शरीर कोमल है, आप सीता और लक्ष्मण के साथ वन में रहकर तपस्या से तीनों लोकों को विजय करेंगे, और मुझ पर धिक्कार है कि मैं कैकेयी का पालन करूँगा। उसने यह कहा और रोने से उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। जब आँसुओं से मुख धुल लिया तो राम ने मीठी व मधुर वाणी से उससे कहा "तुम ऐसा करना कि राजा वृद्ध हैं, मेरे वियोग से उनको कष्ट न हो, और जो कुछ वह कैकेयी के लिए कहें तुम वैसा ही करना राजा को राज्य के लोगों का मालिक होने के कारण कहते हैं उनकी आज्ञा की अवहेलना नहीं होती है। मेरी माता कौशल्या चन्द्रमा के समान हैं उन्होंने इससे पहले कोई कष्ट नहीं देखा है। यदि वह मेरे बाद जीवित रहें तो मेरी ओर से नमस्कार करके कहना कि वह मेरे लिये और सीता व लक्ष्मण के लिये क्रोध, दुख व चिन्ता न करें। पिता के कहने से मैं हज़ार वर्ष वन में रह सकता हूँ जैसे कि देवता स्वर्गलोक में रहते हैं और पिता के दुख का इलाज चाहे अधिक हो या कम वैद्य भी पूरा नहीं कर सकता। केवल पुत्र के और जो पुत्र आलस के कारण पिता की आज्ञा पालन न करे वह स्वयं को नरक में डालता है। और धनाऽय की तरह जो आचार छोड़ता है। मैं अग्नि में गिरूँगा लेकिन ऐसा नहीं करूँगा कि पिता की अनुमति न हो और तुम चौदह वर्ष की अवधि बीतने के बाद हमको फिर देखोगे और कैकेयी आदि हमारी माताओं को नमस्कार करना और मेरे लिए भरत को बुलाकर शीघ्र उसे उत्तराधिकारी अर्थात् राजा बना देना तथा मेरी ओर से उससे कहना कि

که همه مادرانرا برابر دانند و من برای خاطر داشت پدر هر دو لوک را بچشم نیاورم
چه جائی جوراج دهن برائی خاطر دختر راجه کیکه بصحرا میروم راقم ترجمه گوید کیکه اسم ولایت است
و نام کیکی اهنکا و نام مادر او انبا است درینجا صورت دریای گنگا و کشتی معه ملاح در کنار دریا
رام و لچهمن و سیتا ایستاده و سومنتر را با رته رخصت میکند و رام با سومنتر سخن میگوید و لچهمن
چشم سرخ کرده و ابرو کشیده بغصه سخن میگوید

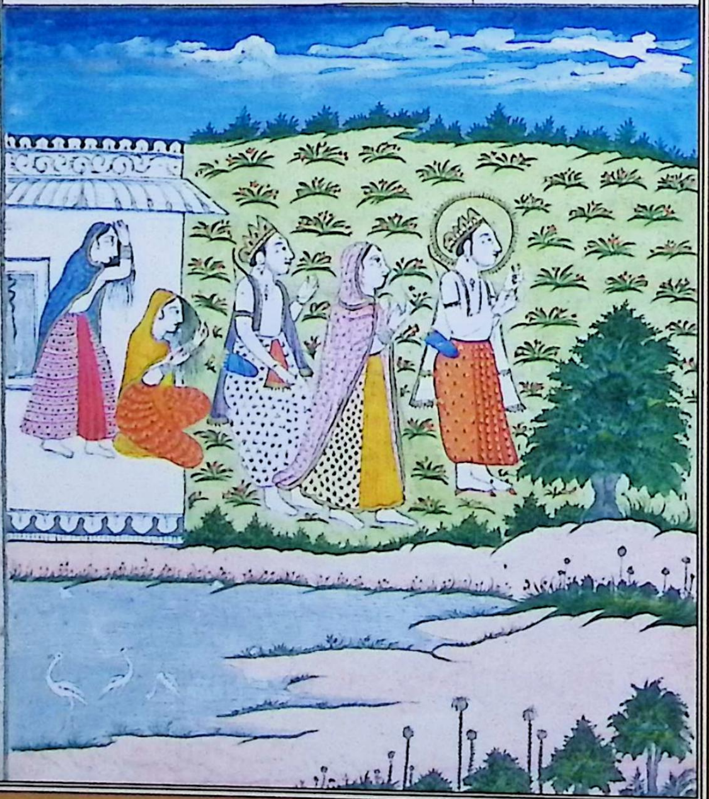

सारी माताओं को समान जानें। मैंने पिता के लिए दोनों लोक को भी तुच्छ जाना। जबकि उत्तराधिकारी ओर मैं राजा कैकेयी के पुत्र के लिये जंगल को जा रहा हूँ। अनुवादकर्ता कहता है कि कैक्य असवीत है और कैकेयी का नाम अहंगा है और उसकी माता का नाम अम्बा है।

गंगा नदी और नाव केवट सहित का चित्र, नदी के किनारे राम, लक्ष्मण और सीता खड़े सुमंत्र को रथ सहित विदा कर रहे हैं और राम सुमंत्र से बातें कर रहे हैं और लक्ष्मण आँखें लाल किये तथा माथे पर बल डाले क्रोध में बात वार्तालाप रहे हैं।

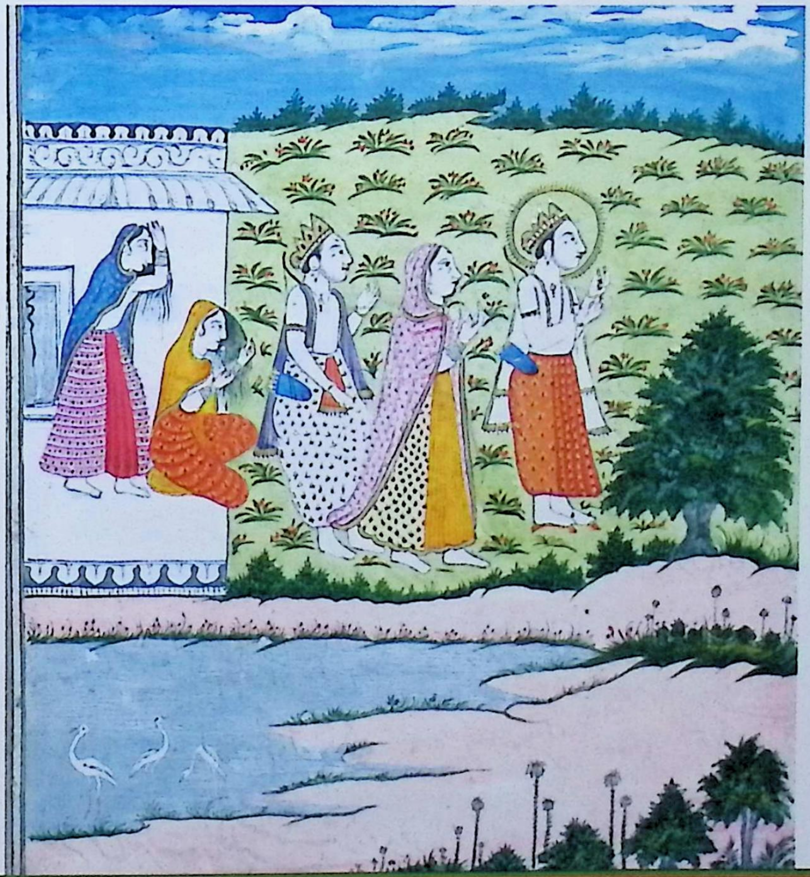

سرکشیده چون رامچندر چنین فرمود لچهمن از طرف دست چپ بسومنتر از غصه ابرو کشیده
بزمین دیده پیغام نمود که از جانب من هم راجه را بعد نمسکار بار بار بگوئی از چه گنه
پسر کلان و دهرماتما را ابدر کردید هر آئینه خاطر کیکئی عزیز داشتید و راج از آبا و اجداد
با و میرسید ندادید شما کامکار باشید کشتن عورت زبون است اما اگر پسر برای محافظت
دهرم بکشد جایز باشد و غم و الم از هجر رامچندر نباید نمود زیرا که بصحرا ابدر کردید چنانکه کسی
خود شراب خورد و خود تصدیع کشد لچهمن چون چنین بیان نمود رامچندر منع کرد
که لچهمن از غصه گفته را نباید گفت شاید از شنیدن چنین سخنان پدر من بمیرد در مهربانی
او قصوری نیست اما از رسن راستی بسته است که از گفته کیکئی مرا بصحرا فرستاد
اینهمه را شنیده سومنتر گفت گفتار تو همه مقرون به بهکت یعنی خادمیت است اما من
بی تو در آن شهر چگونه خواهم رفت مردم از دور رتهه را دیده چنانچه لشکر بی والی باند
مضطرب خواهند شد من بکوشلا چه خواهم گفت که پسر ترا بصحرا گذاشتم آرزو
دارم که با تو در صحرا باشم خدمت تو کرده بسرک خواهم رفت با تو چهار سال مرا مانند لمحه
خواهد گذشت اگر این گفته مرا نخواهید کرد با رتهه خویش را در آتش خواهم سوخت رامچندر
گفت بشنو برای این ترا میفرستم که از رفتن تو با رتهه خالی اگر کیکئی خوشوقت خواهد شد
و راجه را دروغ گو نخواهد دانست این تمام مقصود نیست برای خاطر من ترا البته بشهر باید رفت

सर्ग-५५

जब रामचन्द्र ने यह कहा तो लक्ष्मण ने सुमंत्र के बायीं ओर से क्रोध से भौं चढ़ाकर भूमि की ओर देखते हुए यह संदेश दिया कि मेरी ओर से भी राजा को नमस्कार करने के बाद उनसे बार-बार यह कहना कि आपने किस अपराध में अपने बड़े और धर्मात्मा पुत्र को महल से निकाल दिया। निःसन्देह आपने कैकेयी को प्रिय रखा और बाप दादा का राज्य उसे दे दिया आप सफल रहें। स्त्री की हत्या करना बुरा है यदि धर्म की रक्षा के लिये पुत्र की हत्या करता है तो उचित होता है। आप रामचन्द्र के वियोग का दुख बिल्कुल न करें क्योंकि आपने उनको ऐसे वन में भेज दिया जैसे कोई स्वयं शराब पियें और कष्ट उठायें। लक्ष्मण ने जब यह कहा तो रामचन्द्र ने रोका कि लक्ष्मण तुम्हारे क्रोध में कही हुई बातें, कहने की नहीं हैं। संभवतः ऐसी बातें सुनकर मेरे पिता का देहान्त हो जाएगा, उनकी दया में कोई कमी नहीं है अपितु वह सत्यता की रस्सी से बँधे हुए हैं इसलिए कैकेयी के कहने से मुझे वन में भेज दिया। यह सब बातें सुनकर सुमंत्र ने कहा आपकी सारी बातें भक्ति अर्थात् सेवा भाव से परिपूर्ण हैं लेकिन मैं उस शहर में आपके बिना कैसे जाऊँगा ?लोग दूर से रथ देखकर ऐसे दुखी होंगे जैसे कि बिना सेनापति के सेना होती है। मैं कौशल्या से क्या कहूँगा कि आपके पुत्र को मैं वन में छोड़ आया हूं और आपकी सेवा करके मैं स्वर्ग में जाऊँगा। आपके साथ मेरे चौदह वर्ष एक क्षण के समान बीत जायेगा। यदि आप मेरा कहा हुआ यह नहीं करेंगे तो मैं रथ सहित स्वयं को अग्नि में जला डालूँगा। रामचन्द्र ने कहा सुनो, मैं तुम्हें इसलिये भेज रहा हूँ कि तुम्हारे खाली रथ के साथ जाने से कैकेयी प्रसन्न होगी और वह राजा को झूठा नहीं समझेगी। यह मेरा उद्देश्य है मेरे लिये तुम्हें अवश्य शहर जाना चाहिए।

اینقدر بسومنتر گفت بازیه بگوہہ گفت جٹا نموده خواهم رفت بنابران شیر درخت بگرود
یعنی بت عرف بر باید آورد واین درختی است در هندوستان بسیار کلان که بارا و
مثل انجیر باشد القصه گوہہ بموجب فرموده رامچندر شیر بر آورد و رامچندر آن را در سر
انداخته خود را ولچهمن را جٹا نموده لباس رکهان کرده بگوہہ فرمود تو نخوت را گذاشته
در حفظ لشکر و خزانه و قلعه خواهی کوشید بدینگونه گوہہ را مرخص کرد سیتا
ولچهمن بر کنار گنگا رفت آنجا کشتی دید بلچهمن فرمود زود سوار شو سیتا را سوار کن
او بموجب فرموده برادر سیتا را اول سوار کرد بعده خود سوار شد پس از آن رامچندر
سوار گردید و ملاحان کشتی براندند و سومنتر و گوہہ بر همین کنار ماندند چون کشتی در میان دریا
رسید سیتا رخ بگنگا کرده بدین سخن گرائید این پسر دشرتهه بموجب فرموده پدر بصحرا میرود
تو حافظ این باشی بعد چهارده سال با من ولچهمن بشهر خود خواهد آمد ترا خواهد دید
تو هی که بسته راه میروی واهلیه سمدر هستی ترا نمسکار است پسند خاطر شو صد هزار گاو داده
و سوپ ها و غیره اشیاء مذکوره نذر تو برهمنان را خواهم داد و در همین گفتار بود که کشتی
باینطرف رسید هر دو برادر گنگا را نمسکار کردند و رامچندر که لباس بان بسته کرده است
بلچهمن گفت پیش پیش تو برو و عقب تو سیتا پس نگهبان هر دو میرود
سیتا تصدیع صحرا معلوم خواهد کرد غرض که بدین طریق معهود هر دو دران صحرا رفتند

सुमंत्र से यह कहकर फिर गुह से कहा, मैं जटा रखकर जाऊँगा इस कारण बरगद के वृक्ष का दूध लाना चाहिये यह भारत में एक बहुत बड़ा वृक्ष होता है जिसका फल अंजीर के समान होता है। अतः गुह रामचन्द्र की आज्ञानुसार बरगद का दूध लाये रामचन्द्र ने उसे सर में डालकर अपनी और लक्ष्मण की जटा बनायी और ऋषियों का वस्त्र पहनकर गुह से कहा कि "घमण्ड को छोड़कर, सेना, कोष और किले की सुरक्षा का पूरा प्रयास करना।" इस प्रकार गुह को विदा करके सीता और लक्ष्मण के साथ गंगा के किनारे गये। वहां नांव देखी। लक्ष्मण से कहा शीघ्र सवार [illegible] जाओ और सीता को सवार करो। उन्होंने भाई के कथनानुसार पहले [illegible] को सवार कराया उसके बाद स्वयं सवार हुए। फिर रामचन्द्र सवार [illegible] केवट ने नाव चला दी। सुमंत्र और गुह उसी किनारे पर रह गये। जब नाव नदी के बीच में पहुँची सीता ने गंगा की ओर मुख करके यह कहा हे गंगा ! दशरथ के पुत्र पिता की आज्ञानुसार वन को जाते हैं तू उसकी रक्षा करना। चौदह वर्ष बाद वह मेरे और लक्ष्मण के साथ अपने शहर आयेंगे। तुझे देखेंगे कि तू तीन मार्गों पर चलती है और समुन्द्र की पत्नी है, तुझे नमस्कार स्वीकार हो। एक लाख गायें और सोप आदि उपरोक्त सामग्री तेरे लिये ब्राह्मणों को दूंगी। इसी वार्ता में व्यस्त थी कि नाव उस ओर पहुँच गयी दोनों भाइयों ने गंगा को नमस्कार किया। रामचन्द्र ने जिन्होंने बान का वस्त्र पहन रखा था लक्ष्मण से कहा : "आगे आगे तुम चलो और तुम्हारे पीछे सीता। फिर मैं दोनों का रक्षक बनकर चलूँगा आज सीता को वन की कठिनाई का पता चलेगा"। अतः इस अपरिचित मार्ग से दोनों उस वन में गये तथा

و سومنتر و گوهه برگشته آمدند چون رام و لچهمن و سیتا راه دور طی کردند و رخت بر
دیدند آنجا دو پهکرنی یعنی تالاب خورد دیدند پر از آب بسیار و نیلوفر و هنس ها و کارندواها و چکواها
بیشمار رامچندر بلچهمن گفت آب صاف چه خوشنما است گویا دریای مندا کنی که در سرگ باشد امروز همین جا
اقامت خواهیم کرد زیرا که سیتا مانده شده است چون در انجا منزل گزید لچهمن نیلوفرهای خوشبو
برائی خاطر سیتا آورد و او شل لچهمن هم آرنده شد و سومنتر بعد رفتن رامچندر با گوهه گریه نموده
برگشت در انجا چهار آهو و خوک و کاو جنگلی را کشته گوشت آنها را بابرگ و ثمرات اشجار

تناول نمودند درینجا صورت دریا و کشتی و رام و لچهمن و سیتا سوارند و هر سه نمسکار گنگا
میکنند و صورت ملاح و ازینجا بسر رام و لچهمن جٹا باید کرد و سیتا بطور سابق است

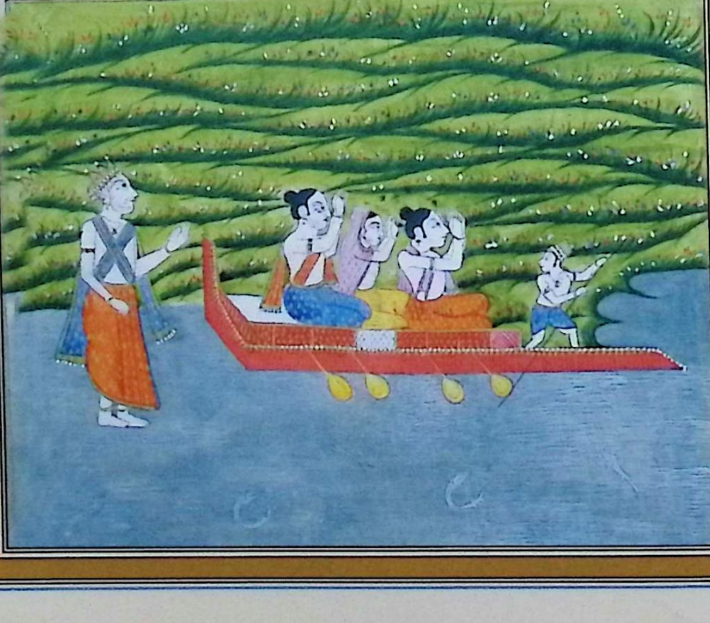

सुमंत्र और गुह वापस आ गये। जब राम लक्ष्मण और सीता ने अधिक मार्ग तय कर लिया तो उन्हें बरगद का एक पेड़ दिखा। वहाँ उन्होंने छोटा सा तालाब भी देखा जो पानी से भरा था और जहाँ नीलोफर, हंस चकोर अधिकांश थे। रामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा, स्वच्छ जल ऐसा आकर्षक लग रहा है जैसे मंदाकिनी नदी स्वर्ग में होती है आज हम यही पड़ाव करेंगे क्योंकि सीता थक गई है। जब वहाँ पड़ाव किया तो लक्ष्मण सुगन्धित नीलोफर सीता के लिये लाए और वह लक्ष्मी के समान खिल गयी। सुमंत्र, रामचन्द्र के जाने के बाद गुह के साथ रोता हुआ वापस चला गया। वहाँ उन्होंने चार हिरन, खूक और जंगली गाय को मारकर उनका मांस वृक्षों के पत्तों तथा फूलों के साथ खाया।

नदी और नाव का चित्र, राम, लक्ष्मण और सीता सवार हैं तथा तीनों गंगा को नमस्कार कर रहे हैं एवं केवट का चित्र। यहीं से राम और लक्ष्मण के सर पर जटा है और सीता यथावत् हैं।

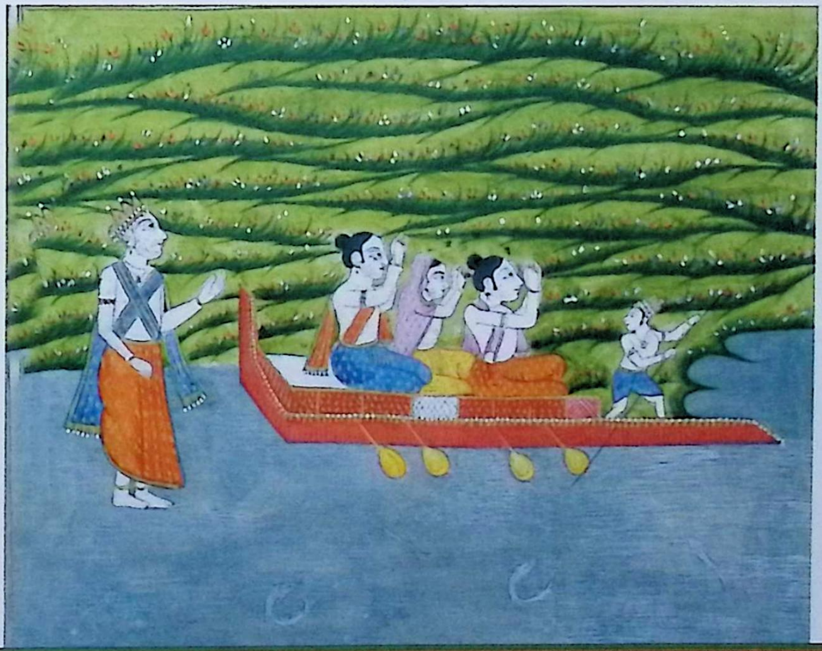

سرگ ۵۶ گفت رام زیر درخت برفرو دآمده سند هیا آخر روز نموده رام بلچهمن گفت
گویا امشب شب اول در جدائی مردمانست سونمتر هم رفت صحرا ترسناک با بلاها
پرشغب است امشب بیدار هم باید بود و با سیتا از جوک و چهیم یعنی تسخیر حواس و تحمل باید
گذرانید به بیند که بر زمین خار و خاشاک چگونه شب آخر خواهیم کرد درین شب راجه با بش
خواهد خسپید و کام کیکئی حاصل خواهد شد امارا چه چکنند مغلوب شهوت و مسخر کیکئی است
در دانست من کام یعنی غلبه شیطان از دهرم وارتهه بالاتر است بهرت بسیار شته
نیکو کار است که تنها با خوشوقتی جوراج خواهد کرد که من بصحرا رفتم و هر که دهرم و ارتهه را گذا
مغلوب کام شود او تصدیع یابد چنانچه راجه دشرتهه من میدانم که کیکئی برای کشتن رانجه ودید
کردن من و راج دادن بهرت پیدا شده حالا کیکئی کوشلا و سومترا را از غرور دولت و حشمت
تصدیع خواهد رسانید بنابران لچهمن تو باز کنگا را عبور کن و با جودهیا باش من تنها با سیتا
در صحرا دندکارن خواهم رفت اگرچه بهرت خدمت والدهٔ من خواهد کرد اما آخر زنان دیگر
معلوم والدهٔ من مرا پرورده کلان نمود حالا که وقت ثمرهٔ آن آمد بدر میروم لعنت مراست
هیچ زن مانند من پسری نزاید از من شارک خوب است که آواز خوش میشنواند بنوعی که نیکو بود
چنان بعمل آرد والدهٔ من کم طالع است و من تنها هر گاه از غضب تیر و کمان بدست گیرم تمام اجودهیا
بلکه تمام زمین را خراب کنم و بسوزم اما از خوف دهرم و سرگ خود را راجه نمیکنم بدینگونه بسیار

सर्ग–५६

राम की वार्ता

बरगद के पेड़ के नीचे उतरकर और पूजा करके राम ने लक्ष्मण से कहाः ''आज की रात्रि लोगों के वियोग में पहली रात्रि है। सुमंत्र भी चला गया भयानक वन भूत प्रेत सहित कोलाहलमय है। आज की रात मुझे जागना है और सीता की ओर से इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करना है। यह मत समझो कि कांटे और धूल वाली भूमि पर कैसे रात बिताऊँगा ?इससे राजा शान्ति से सोयेंगे और कैकेयी की इच्छा पूर्ण होगी लेकिन राजा क्या करे वह कामवासना, में मेरे विचार में काम अर्थात् शैतान का प्रभुत्व धर्म व अर्थ से परे है। भरत बहुत अच्छा है कि अकेले प्रसन्नता से उत्तराधिकारी बनेगा क्योंकि मैं तो वन चला गया और जो धर्म व अर्थ को छोड़कर कामभावना में लीन हो जाये तो उसे कष्ट होता है जैसे कि राजा दशरथ। मैं जानता हूँ कि कैकेयी राजा को मारने, मुझे देश निकाला देने और भरत को राज्य देने के लिये उत्पन्न हुई है। अब कैकेयी कौशल्या और सुमित्रा को धन दौलत व राज्य के घमण्ड में सतायेगी इस कारण लक्ष्मण ! तुम पुनः गंगा को पार करो और अयोध्या में रहो। मैं अकेला सीता के साथ वन में वनवास के लिये जाऊँगा। यद्यपि भरत मेरी माता की सेवा करेगा लेकिन दूसरी स्त्रियों के बारे में मालूम है मेरी माता ने मुझे पाल पोसकर बड़ा किया है। अब जबकि उसके फल का समय आया तो मैं बाहर जा रहा हूँ। धिक्कार है मुझ पर कोई स्त्री मुझ जैसे पुत्र को जन्म न दे। मुझसे तो शार्क अच्छा है कि मधुर आवाज़ सुनाता है जो अच्छी लगती है, इस प्रकार कार्य करो और मेरी माता दुखी हैं और मैं अकेला। जिस समय हाथ में धनुष बाण लूंगा सम्पूर्ण अयोध्या ही नहीं अपितु सारी पृथ्वी को नष्ट कर दूंगा और जला डालूँगा । लेकिन मैं अधर्म और स्वर्ग के डर से स्वयं को राजा नहीं बनाऊँगा। इस कारण दुख से राम बहुत रोये।

از غم والم رام گریه نمود و لچهمن او را که از غضب چون سمندر در موج است بدینسان تسلی نمود
از برآمدن تمام اجودهیا بیرونق است چنانچه شب بی ماه چرا فکر میکنی و مرا و سیتا را در غم اندازی
نه سیتا بتو خواهد بود و نه من بتو نه پدر را نسومنترا اما و در انشتر کهن برادر را دیدن آرزو دارم
گفته لچهمن را شنیده رام دل برقرار نمود و درینجا صورت رام و لچهمن جتبار بسر و سیتا بطور سابق
و درخت برگه شاخهای دراز دارد زیر او هر سه نشسته و رام سندهیا میکند و یک طرف تالاب خورد

و بر و نیلوفر و هنس و چکوه نشسته

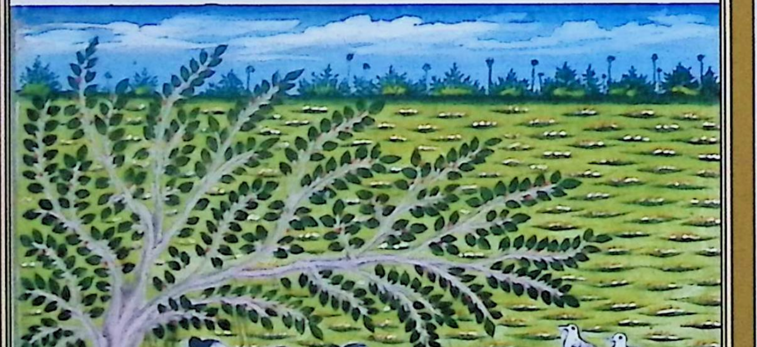

लक्ष्मण ने उनको क्रोध में देख जैसे कि समुद्र लहर में से, इस प्रकार सांत्वना दी आपके बाहर होने से अपने से पूर्ण अयोध्या जैसे कि बिना चन्द्रमा के रात्रि की होती है। आप क्यों चिन्ता करते हैं और मुझे और सीता को दुखी करते हैं। आपके बिना न सीता रह पायेंगी और न मैं, न पिता, न सुमित्रा और न शत्रुघ्न मुझे भाई को देखने की इच्छा है, लक्ष्मण की बात को सुनकर राम को शान्ति मिल गयी।

राम और लक्ष्मण का चित्र, जटा सर पर रखे हुए और सीता पहले जैसी। और बरगद का पेड़ जिसकी लम्बी-लम्बी शाखें हैं उसके नीचे तीनों बैठे हुए हैं राम शाम की पूजा कर रहे हैं। एक ओर छोटा तालाब है और उस पर नीलोफर, हंस और चकोर बैठे हुए हैं।

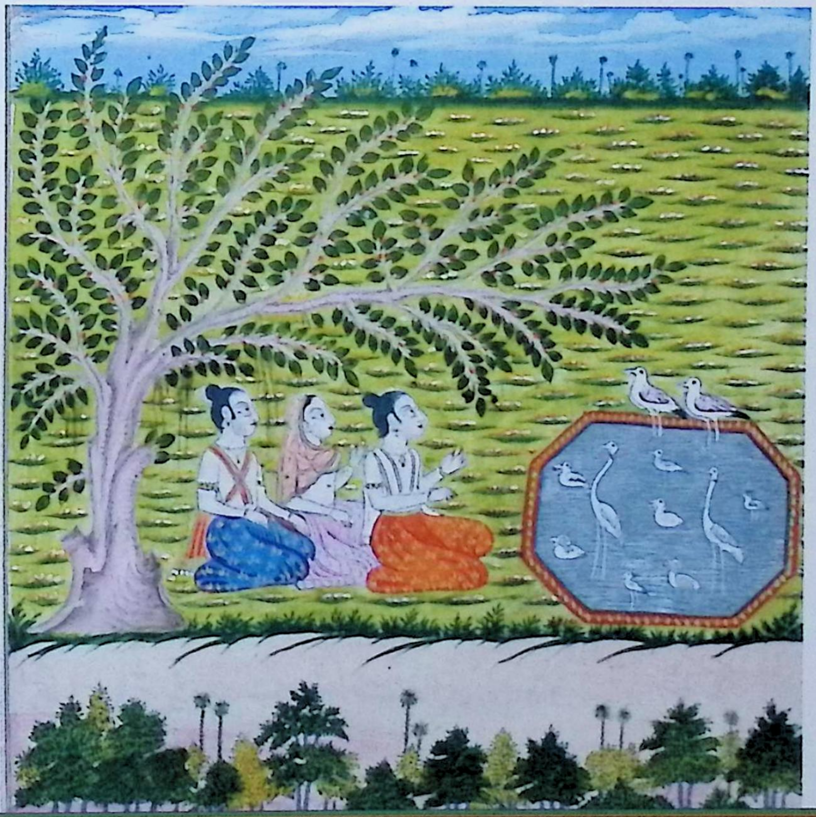

سرگ عبور جمنا آنشب هرسه زیر درخت بر منزل نمودند پگاه · چون آفتاب برآمد کوچ
کردند بسمتی که گنگا و جمنا با یکدیگر سنگم کرده اند یعنی جمع شده اند راه صحرا طی ساختند
انواع اقطاع زمین و ملکها که پیشتر ندیده بودند دیدند چون روز آخر شد رامچندر بلچهمن
گفت ببینید که طرف پراگ دود برخاسته شاید منیی آتش روشن کرده باشد
و شور آب شنیده میشود شاید سنگم گنگا و جمنا همین جا باشد و درختانِ مکانِ بهردواج
رکهیه بنظر می آید غرض که چون آفتاب قریب بغروب رسید هردو برادر نزدیک سنگم
گنگا و جمنا که مکان بهردواج بود رسیدند نزدیک آن رکهیه که از ریاضت چشم همه بین داشت
و اگن هوتر میکرد رامچندر با سیتا و لچهمن رفته چنان ظاهر کرد ما هردو پسران راجه دسرته
ایم و این عورت زنِ منست پدر مرا بصحرا فرستاده است و این برادر و عورت از خود همراه
شده اند مرا برگ و ثمرات خورده گذران باید کرد و دهرم بجا باید آورد و این را شنیده
آن رکهیه ارگهه و آسن برای نشستن داد و مول و اثمار برای خوردن پیش نهاد و رام
بر آسن بنشست و آنهمه بگرفت بعد ازان بهردواج گفت دیرست که در انتظار آمدن تو
بودم و این بدر کردنِ تو بصحرا بیگناه میشنودم این مکان پاکست و سنگم گنگا و جمناست
اینجا با من باش رام دست بسته گفت مهربانی شماست مردم خبر آمدن من شنیده
برائی دیدن خواهند آمد سیتا همراه است مکانی علیحده میخواهم که سیتا آنجا باسایش ماند

सर्ग-५७

यमुना पार करना

उस रात्रि तीनों ने वृक्ष के नीचे बिताया। सुबह जब सूर्य निकल आया तो उस दिशा की ओर चले, जिधर गंगा और यमुना एक दूसरे से मिलते हैं। उन्होंने वन का मार्ग तय किया। विभिन्न प्रकार की भूमि और देश जो पहले नहीं देखे थे देखे। जब दिन समाप्त हुआ तो रामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा कि देखो आग का धुआँ उठ रहा है निःसन्देह किसी मुनिवर ने आग जला रखी है और पानी का शोर भी सुनायी दे रहा है सम्भवतः गंगा, यमुना का संगम यहीं होगा और भरद्वाज ऋषि के घर के वृक्ष दिखाई दे रहे हैं। अतः जब सूर्य अस्त होने वाला था दोनों भाई गंगा यमुना के संगम के निकट वहाँ पहुँचे जहाँ भरद्वाज का घर था। उसके निकट ऋषि जिसकी आँखें तपस्या के कारण सदा बोलती हुई थीं तथा तीनों कालों की सारी बात जानने वाले भरद्वाज ऋषि का दर्शन कर रामचन्द्र ने सीता व लक्ष्मण के साथ जाकर इस प्रकार परिचय दिया ''हम दोनों राजा दशरथ के पुत्र हैं और यह मेरी पत्नी हैं। पिता ने मुझे वन भेजा है और यह भाई और पत्नी स्वयं साथ हो गये हैं। मुझे पत्ते और फल खाकर जीवन यापन करना है और धर्म का पालन करना है''। यह सुनकर उस ऋषि ने बैठने के लिये अरघ और आसन दिया और खाने के लिए फल फूल रखा। राम आसन पर विराजे और वह सब ले लिया। उसके पश्चात् भारद्वाज ने कहा कि ''लम्बे समय से मैं आपके आगमन की प्रतीक्षा में था और मैंने अकारण आपके वनवास का समाचार सुना था। यह पवित्र स्थान है और गंगा और यमुना का संगम है यहाँ मेरे संग रहिये''। राम ने हाथ जोड़कर कहा ''आपकी कृपा है लोग मेरे आगमन की बात सुनकर देखने के लिए आयेंगे। सीता साथ में हैं मैं कोई अलग स्थान चाहता हूँ जहाँ सीता आराम से रहें।

بهردواج گفت کوه چترکوت که ثانی کند همان دن کوه هست و درانجا رکهه ها می باشند
ای رام انجا بودن تو با آرام خواهد بود آنجا کپال آشرشا بسیار مانده است تو خواه انجا
باش خواه با من باش غرض رامچند در شب همانجا بود انواع افسانه ها یار که میکفت و ازو
میشنود شب بآسودگی مانده صبحی مُن را نمسکار نموده غرض که عزم رفتن کرد بهردواج
بدینکونه بطریق نشان دادن گفت گنگا و جمنا جائی که جمع شده بطرف عقب جمنا بسمت
مغرب پاک دریائی انجا و درخت سیام نکروده یعنی بَر کلانست و دیگر درختان سبز
نزدیک او بینید از انجا یک کروه خیابانی سبز چون زمردست و اشجار و پلاس و بدری
و بانس درانجاست من باین راه بسیار رفته ام چون چنین گفت رامچند با سیتا
و لچهمن رفت و در راه میگفت ای برادر این بسیار نیکو کارم که مُن بر من مهربان است
قدری راه طی کردند نزدیک جمنا رسیدند دیدند که دریا تیز میرود و موج بر موج میزند
برائی عبور دریا متردد گشتند رامچند به لچهمن گفت اینجا آدمی نیست پس سنگهات یعنی آلت
عبور دریا بکن که بشتاب بگذریم او بموجب فرموده برادر شمشیر برآورد و شاخها
و چوبها و برگهائی اشجار قطع نموده از رسنها استوار بسته و پیوند داده سنگهات
کلان ربست و برامچند رعرض کرد رامچند سیتا را با شرم بر و سوار ساخته و عقب او
بنگاهداشتن اسلحه و پارچه و پیرایه خود پرداخت رسن سنگهات را گرفته هردو برادر

तब भरद्वाज ने कहा ''चित्रकूट पर्वत जो नन्दन पर्वत के समान है और वहाँ ऋषि रहते हैं, हे राम ! वहाँ आप सुविधापूर्वक रह सकते हैं वहाँ कपाल सरशा बहुत रहे हैं, आप चाहे वहाँ रहिये या मेरे साथ रहिये''। अन्ततः राम उस रात्रि वही रहे। कई प्रकार की कहानियाँ ऋषि को सुनाते रहे और उनसे सुनते रहे। रात आराम से रहकर प्रातः मुनि को नमस्कार किया और जाने का निश्चय किया। फिर भारद्वाज ने, इस प्रकार सीख देने के रूप में, कहा ''गंगा यमुना जहाँ पर मिले हैं यमुना के पीछे पश्चिम की ओर पवित्र नदी है वहाँ वट का एक बड़ा वृक्ष है और दूसरे सदाबहार वृक्ष भी उसके निकट हैं वहाँ से एक कोस की दूरी पर मूँगे की भाँति हरा मैदान है, वहाँ वृक्ष, पलाश (ढाक), वदरी (बेर) और बाँस हैं, मैं उस मार्ग से कई बार गया हूँ। जब उन्होंने यह कहा तो रामचन्द्र सीता और लक्ष्मण के साथ वहाँ गये। रास्ते में कहते जा रहे थे कि मेरे भाई मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि मन मुझ पर दयावान है। थोड़ा रास्ता उन्होंने तय किया। यमुना के निकट पहुँचे। देखा कि नदी तीव्रता से बह रही है, लहर पर लहर उठ रही है, नदी पार करने में संकोच हुआ। रामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहाः यहाँ मनुष्य नहीं है अतः नदी पार करने की व्यवस्था करो ताकि हम शीघ्र जायें वह भाई के कहने के अनुसार तलवार लाए और उन्होंने वृक्षों की शाखें, लकड़ियाँ और पत्ते काटे। रस्सियों से कसकर बाँधा और मिलाकर बड़ा सिंहासन बाँधा और रामचन्द्र से बताया। रामचन्द्र ने लज्जापूर्वक सीता को सवार किया और उनके पीछे हथियार, कपड़े और अपने सामान की रक्षा करने में व्यस्त हुए। सिंघास्त की रस्सी पकड़कर दोनों भाईयों ने तैरते हुए नदी पार किया।

بطریق شنا بعبور دریا درآمدند چون مابین دریا رسیدند سیتا گفت
که ای دیبی جمنا نیکوی پیش خواهی آورد و بخوبی عبور خواهی کنانید هنگام
برگشتن از صحرا باز ترا خواهیم دید چون از دریا گذشتند جمنا بن نام صحرا دیدند
ازانجا گذشته بدم کنبهیر نام تالاب دیدند آنجا قدری آرام کرده گونا گون افسانه
گویان عزم رفتن کردند نزدیک سیام برگ رکهه گفته بود رسیدند آنجا سیتا گفت
ای درخت بر ترا نمسکار است بعد چهارده سال باز باجودهیا داخل شویم کوشلا
وغیره اقربایان و برادران را به ببینیم اینقدر دست بسته گفت و پیش رفت
چون یک کروه راه طی کردند رامچندر بلچهمن گفت تو پیش پیش سیتا را
گرفته برو عقب من می آیم اقسام اقسام اشجار دیده سیتا
احوال از رامچندر می پرسید و بیان او میشنید چون یک کروه راه طی
کردند سیتا را مانده دانسته بر کنار جمنا اقامت کردند و آهوان بسیار

برای آب آمده بودند یکی را کشتند و تناول نمودند درینجا صورت
دریای سنگم بطوریکه آب هر دو دریا نمودار باشد و برکنار آن چند آهو ایستاده
ازانجمله یکی را رام به تیر کشته و صورت رام و لچهمن جتا بر سر و کمان در دست ایستاده
و سیتا بطور سابق و مکان بهردواج و صورت او بطور رکهان در اشرم نشسته

जब नदी के बीच में पहुँचे तो सीता ने कहाः हे यमुना देवी ! तू भली प्रकार से व्यवहार करना और भली प्रकार से पार कराना। वन से वापसी में हम फिर तेरे दर्शन करेंगे। जब वह नदी से पार हो गये तो 'यमुना वन' नामक वन देखा। वहाँ से आगे चलकर पद्म कुम्भीर नामक तालाब देखा। वहाँ थोड़ा विश्राम करके विभिन्न प्रकार की बातें करते हुए जाने का निश्चय किया फिर श्याम वट के निकट जो ऋषि ने बताया था पहुँचे। वहाँ सीता ने कहा हे वृक्ष! हम तुमको नमस्कार करते हैं। चौदह वर्ष बाद हम फिर अयोध्या में प्रवेश करेंगे। कौशल्या आदि सम्बन्धियों और भाईयों को देखेंगे। इतना उन्होंने हाथ जोड़कर कहा और आगे गयीं जब एक कोस रास्ता गुजर गया तो रामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा "तुम सीता को लेकर आगे-आगे चलो। मैं पीछे-पीछे आ रहा हूँ"। भाँति-भाँति के वृक्ष देखकर सीता रामचन्द्र से उसके बारे में पूछती थीं और उनका वर्णन सुनती थीं। जब एक कोस तय हो गया तो सीता को थका हुआ जानकर यमुना के किनारे वे रुके वहाँ पानी पीने के लिये बहुत से हिरन आये हुये थे उनमें से एक का शिकार किया और खाया।

दोनों नदियों के संगम का चित्र जिससे दोनों का पानी प्रकट होता है। उसके तट पर कुछ हिरन बैठे हुए हैं। उनमें से एक को राम ने तीर से मारा और राम व लक्ष्मण का चित्र, सर पर जटा रखे हुए तथा हाथ में धनुष लिये हुए खड़े हैं एवं सीता यथावत् हैं और भरद्वाज के आश्रम और ऋषियों के चित्र जो आश्रम में बैठे हैं।

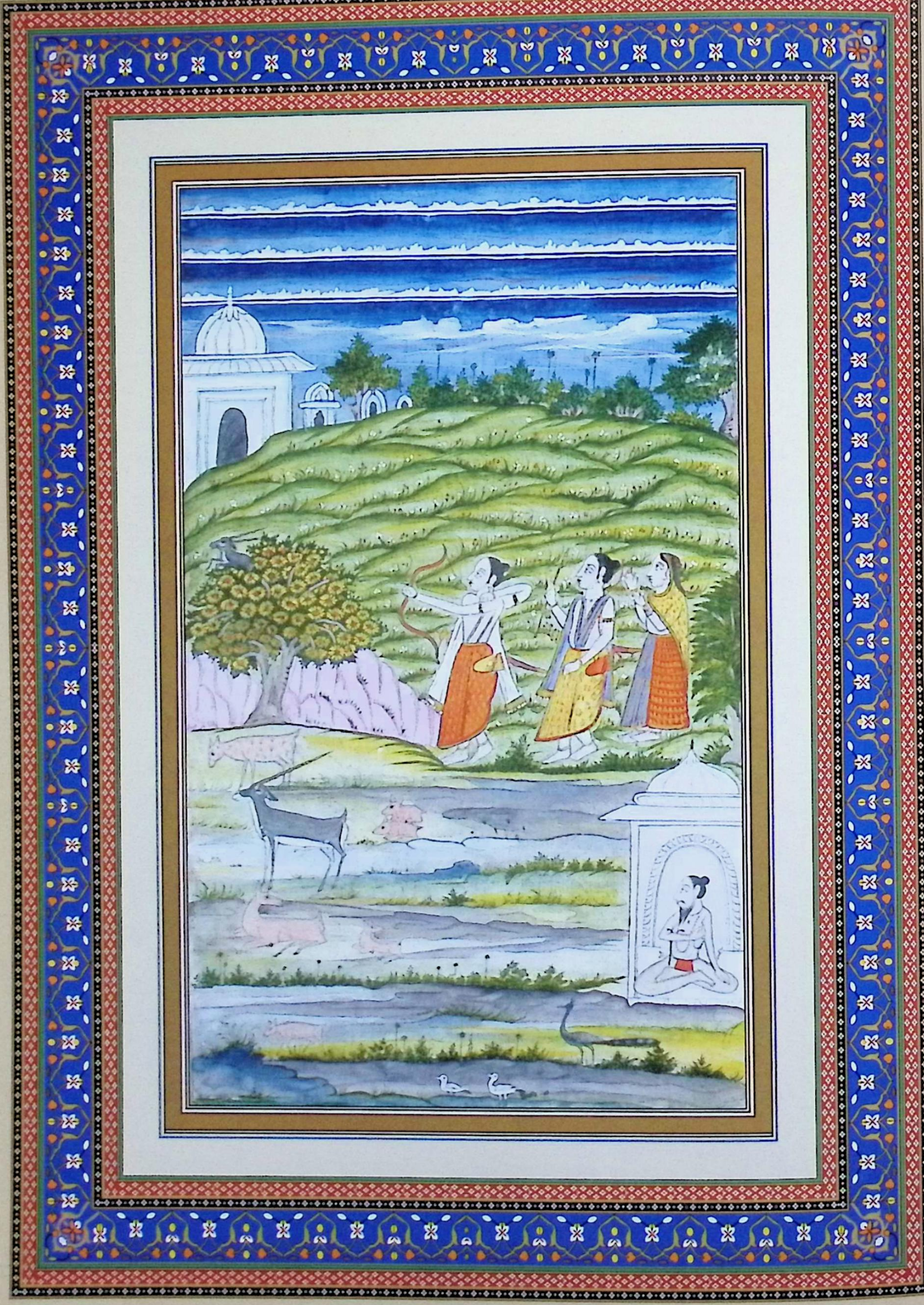

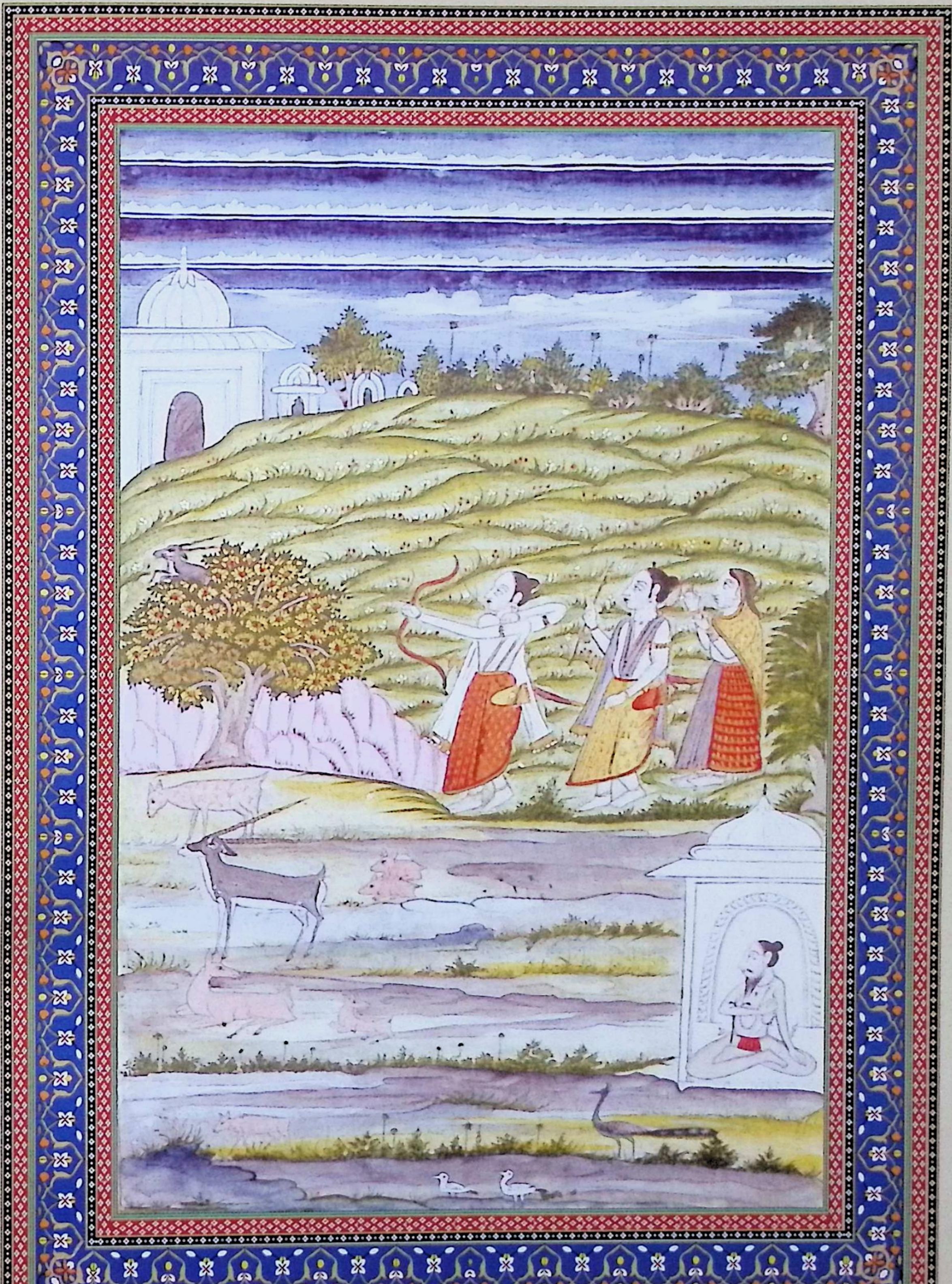

سرگ اشرم رام چون شب بگذشت رامچندر لچهمن را از خواب بیدار کرد و گفت ای
لچهمن آواز جانوران بشنو که خوش آینده است این وقت رفتن است سفر باید کرد از این گفتار
برادر لچهمن را خواب ماندگی رفت هر دو برادر در آب غسل کردند و سندهیا نمودند و روان شدند
و راه چترکوت گرفتند به نیت اقامت آنجا شتابا رفتند چون در انجا رسیدند رامچندر به سیتا و لچهمن گفت
کناره دریای مالنی گلها را به بین و کنشوک یعنی گلهار پلاس شعل چراغ مانند و عقب دریای مندا کنی
جنگل کریخا به بین که درختان آنجا مانند زر روشن اند و درختان بهلاتک و بلو و پنس و نندوک
از بار ثمرات فروتر شده و بوزنه ها از آنها بار آرنده اند این بارها را خورده خواهیم زیست مایان از کوها
چترکوت سرگ ید شد و در هر کوه مانند درون لانه ها یعنی چهته های عسل به بینید این کوکلا آواز میکنند
و طاوس در شور است هر گاه مرغابی آواز میکند با دبر و بنجند و اینجا بآرام خواهیم بود و بدبکونه دریای مندا کنی را
تماشا کنان بر کوه چترکوت رفتند هر دو برادر آنجا برای ساختن اشرم یعنی مکان بودن مشغول شدند از
جنگل هیزم ها که فیلان شکسته بودند و شاخها آورده مکان ساختند و از برگهای درختان پوشش
آن پرداختند لچهمن آن پرن شالا یعنی خانه برگ را صاف کرد و سیتا نازک بدن آن را لیپن نمود یعنی
آب انداخته بطریق کچ صاف ساخت بعده رامچندر به لچهمن گفت آهوی شکار کرده بیار که از دیوتای
اینمکان یعنی والی اینجا را پشت بکنم یعنی سیر نمایم لچهمن آهوی سیاه را کشته و آن را پخته دست بسته
برامچندر گفت بموجب امر آهوی سیاه را با میدی و پوتا طیار کرده ام رامچندر غسل کرد و جپ نمود

یعنی نام

सर्ग-५८

राम का आश्रम

जब रात बीत गयी तो रामचन्द्र ने लक्ष्मण को जगाया और कहा, लक्ष्मण ! पशुओं की आवाज सुनो जो अच्छी लग रही है। यह चलने का समय है यात्रा करना चाहिये। इस बात से भाई लक्ष्मण की नींद टूट गयी दोनों भाईयों ने स्नान किया और पूजा की तथा चल दिये। चित्रकूट की ओर वहाँ निवास करने के विचार से शीघ्र गये। जब वहाँ पहुँचे तो रामचन्द्र ने सीता और लक्ष्मण से कहा' ''मन्दाकिनी नदी के किनारे पुष्पों को देखो। पुष्प दियों के समान है और मन्दाकिनी नदी के पीछे करंगा का वन देखो जहाँ वृक्ष प्रकाशमयी दिन के समान हैं। भिलावे, बेल, पिन्स और तन्दूक के वृक्ष फलों के बोझ से झुक गये हैं और उन पर वानर बैठे हुए हैं। हम यही फल खाकर जीवन व्यतीत करेंगे। हम लोगों को चित्रकूट के रूप में मानों स्वर्ग मिल गया है। देखो प्रत्येक पर्वत में भीतर की ओर शहद के छत्ते हैं। यहॉ कोयल कूक रही है, मोर नाच रहा है और शोर मचा रहा है। जब मुर्गाबी आवाज़ निकालती है तो वायु उस पर हँसती है। यहाँ हम आराम से रहेंगे'' इस प्रकार वह लोग मन्दाकिनी नदी की सैर करते हुए चित्रकूट पहाड़ पर गये। दोनों भाई वहाँ आश्रम अर्थात् रहने का स्थान बनाने में व्यस्त हुए। जंगल से लकड़ियाँ, जो हाथियों ने तोड़ा था, और शाखें लाकर घर बनाया और वृक्षों के पत्तों से उनको ढक दिया। लक्ष्मण ने पत्तों का वह घर साफ किया और कोमल शरीर सीता ने उसे पानी डालकर लीपा। उसके बाद रामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा कोई हिरन शिकार करके लाओ ताकि उसके द्वारा उस स्थान के देवता को पुष्ट अर्थात् तृप्त करूँ। लक्ष्मण ने एक काला हिरन मारकर उसे पकाकर करबद्ध रामचन्द्र से कहा आज्ञानुसार एक काला हिरन देवता के स्वीकार करने की आशा में तैयार है। रामचन्द्र ने स्नान किया और जप किया

یعنی نامهائی ازدی می خواند وآتش روشن ساخت ودر وگوشت را بطریق هوم بنام دیوتاها و پترها انداخت
بعده بدادن انجلی هائی آب پاک پرداخت بعده دیگر بهوت یعنی ذیحیات را داد چون بدینطریق ازبل
دادن فارغ شد باقیمانده را خود ولچهمن بخورد بعد ازان سیتا تنها نشسته باقی ازان هردو بخورد
همه ها دران پرن شالا نشستند چنانچه دیوتاها در سود هرمان که مکان نشستن دیوتاهاست بر آن کوه
که مجمع انواع بهایم وطیور و بار و کلها بود با آرام بازی نمود واز تماشا آن دریاها وکوهها تصدیع گذاشتن
راج ورفتن صحرا فراموش کردند صورت کوه چترکوت ودران پرن شالا رام یعنی خانه شاخ وبرگ درخت ساخته
ودران سیتا نشسته ورام بطور سابق پیش خانه جب مینماید ولچهمن آهوی کشته بریان مینماید وبر کوه انواع کلها

و جانور مثل طاوس وکوکلا وآهو سیر میکردند

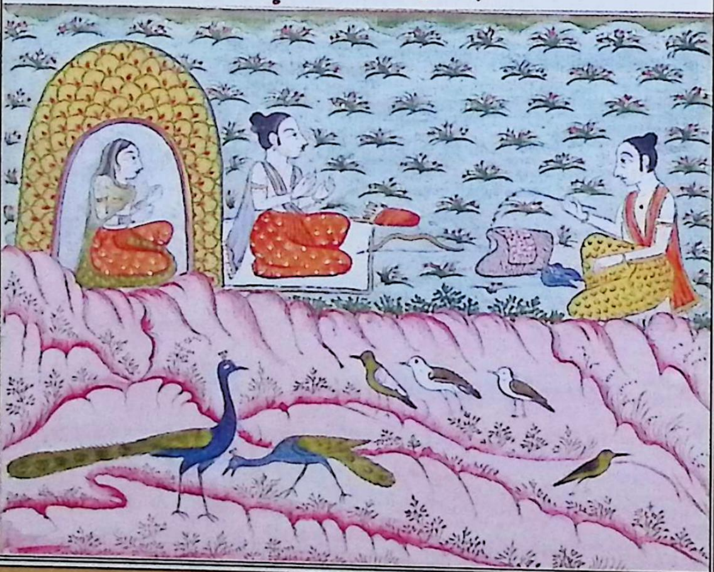

अर्थात् ईश्वर के नाम के लिये और अग्नि प्रज्वलित की, माँस को उसमें हवन के रूप में देवताओं और पितरों के नाम पर डाला। उसके बाद वह पवित्र जल लिया फिर दूसरे भूत अर्थात् जीवित को दिया। जब विधि पूर्ण हो गयी शेष स्वयं और लक्ष्मण ने दोनों ने खा लिया। उसके बाद सीता ने अकेले बैठकर उन दोनों का बचा हुआ खा लिया। सब वृक्षों के पत्ते और शाखों से बने हुए उस घर में बैठे जैसे कि देवता सुधर्मा में जो देवताओं के बैठने का स्थान है, उस पर्वत पर जहाँ भाँति-भाँति के पशु, पक्षी, फल-फूल थे आराम से खेले। उन नदियों, पहाड़ों का दृश्य देखने से राज्य को छोड़ने और वन जाने का दुःख समाप्त हो गया।

चित्रकूट पर्वत का चित्र जिस पर राम ने पर्णशाला अर्थात् वृक्ष के पत्तों और शाखों का घर बनाया है और उसमें सीता बैठी हुई हैं, राम यथावत् घर के सामने जाप कर रहे हैं, और लक्ष्मण हिरण मारकर उसे भून रहे हैं। पर्वत पर विभिन्न प्रकार के फूल, पशु जैसे मोर, कोयल और हिरन घूम रहे हैं।

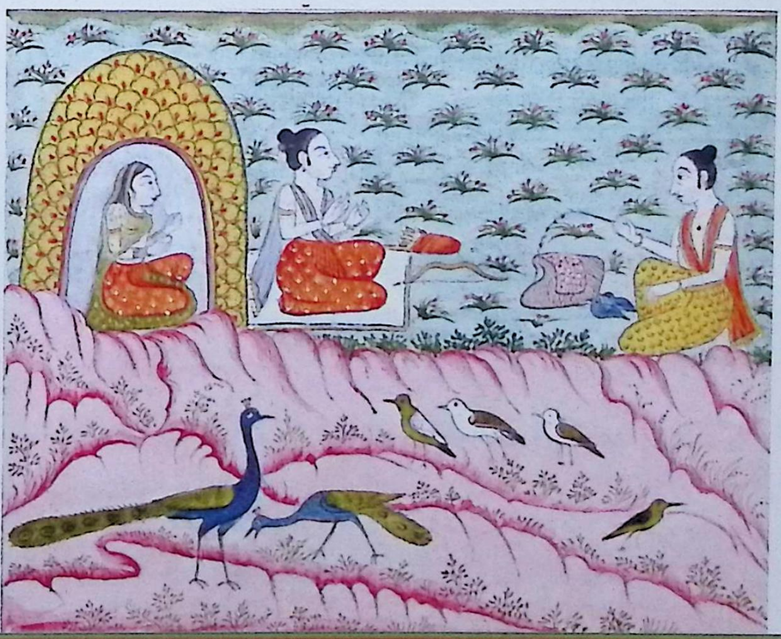

سبب آمدن سومنتر بعد رفتن رامچندر از طرف گنگا سومنتر و گوهه بمکان گوهه آمدند رفتن
رام زو بهر دو راج و از انجا بچترکوت رفته اقامت کردن را شنیدند بعده سومنتر از گوهه
رخصت شده باجودها رفت و بسیار بلا در راه و دریا و نالابها بسرعت طی نموده هنگام
شام در اجودهیا رسید آواز اضطراب مرد و زن نشنید خالی طور ولی سرور چنانچه نیلوفر بی آب
باشد شهر بدید دلگیروار در شهر داخل شد و فکر میکرد چه از غم رامچندر تمام شهر نمیسوزد شهریان
آواز رتهه شنیدند همه ها سومنتر را تنها بر رتهه دیده اضطرابانه دویدند و پرسیدند که رامچندر
کجاست جواب داد که من از گنگا رخصت شده آمده ام آنها از دریا عبور کردند مردم از غم گفتند
لعنت بر تو که ما را کشتی رامچندر این شهر را از مثل پدر محافظت میکرد ای بیحیا چرا گذاشته ای
بدینسان انواع گفتار بسیار تهی میکنند القصه از رتهه فرود آمده نزد راجه رفت درینوقت زنان
راجه وغیره از بام و دریچه و غرفه ها شور کردند که این بار رامچندر رفت بوده دوبی او چرا آمد سومنتر راجه را
در غم پسر دید ناچار نمسکار کرد و انچه از رامچندر شنیده بود به بیان آورد راجه این را شنیده
بیهوش شد از سنگهاسن بر زمین افتاد عورات اندرون دست بر داشته شور نمودند
کوشلا و سومنتر راجه را بر داشتند کوشلا گریه کرده گفت این سارتهی از صحرا
آمده چرا خبر نمی پرسی چیزی بیگی خود نیاموخته است راجه بیهوش نیامد همه زنان راجه
که درینحالت بشور زاری نمودند مردم شهر شنیده پیران و جوانان عورت و مرد جمع گشتند

सर्ग-५६

सुमंत्र का आगमन

रामचन्द्र के गंगा के उस ओर जाने के पश्चात् सुमंत्र, गुह के महल में आए उन्होंने भारद्वाज के पास जाने और वहाँ से चित्रकूट जाकर निवास करने का समाचार सुना। इसके पश्चात सुमंत्र गुह से विदा होकर अयोध्या गया और मार्ग में बहुत से नगर नदी और तालाब शीघ्रता से पार करते हुए संध्या के समय अयोध्या पहुँचा। पुरुषों और स्त्रियों के कोलाहल और व्याकुलता की ध्वनि सुनी जो सुख और प्रसन्नता से ऐसे खाली थी जैसे बिना जल के नीलमणि होती है नगर देखा और दुखी होकर नगर में प्रविष्ठ हुए और विचार कर रहे थे कि क्या रामचन्द्र के शोक से पूरा नगर जल नहीं जायेगा। नगर के लोगों ने रथ की ध्वनि सुनी। सब सुमंत्र को रथ पर अकेला देखकर चिन्तित रूप से उसकी ओर दौड़े और पूछा कि रामचन्द्र कहाँ हैं ?उत्तर दिया कि मैं गंगा से विदा होकर आया और वह नदी के उस पार गये। लोगों ने दुख के कारण कहा धिक्कार है तुझ पर कि हमें मारा ! रामचन्द्र हमारे इस नगर की पिता की भाँति रक्षा करते थे। ऐ निर्लज्ज ! तू छोड़कर क्यों चला आया?इस प्रकार की उन्होंने बहुत सी बातें सारथी से कहीं। अन्ततः सुमंत्र रथ से उतरकर राजा के पास गया इस समय राजा आदि की स्त्रियाँ कोठे, परकोठे आदि से शोर कर रही थीं कि यह रामचन्द्र के साथ गया था उनके बिना क्यों आया ?सुमंत्र ने राजा को पुत्र के दुख में ग्रसित देखा, विवशता से नमस्कार किया और जो कुछ राम से सुना था वर्णन किया। राजा यह सुनते ही मूर्छित होकर सिंहासन से भूमि पर गिर पड़े। अन्दर की स्त्रियों ने हाथ उठाकर शोर मचाया। कौशल्या और सुमित्रा ने मिलकर राजा को उठाया। कौशल्या ने रोते हुए कहा यह सारथी वन से आया है आप इसका कुशल क्षेम क्यों नहीं पूछते ?कैकेयी ने स्वयं कुछ नहीं सिखाया है। राजा होश में नहीं आये। समस्त स्त्रियों ने इस दशा में जो शोर मचाया तो शहर के समस्त लोग वृद्ध, युवक, पुरुष, स्त्री सब एकत्र हो गये।

درینجا صورت راجه دشرته بر تخت بیهوش افتاده و سومنتر سارتهی
پیش ایستاده و راجه را کوشلا و سومنترا ربیدارند و سومنتر نمسکار میکند

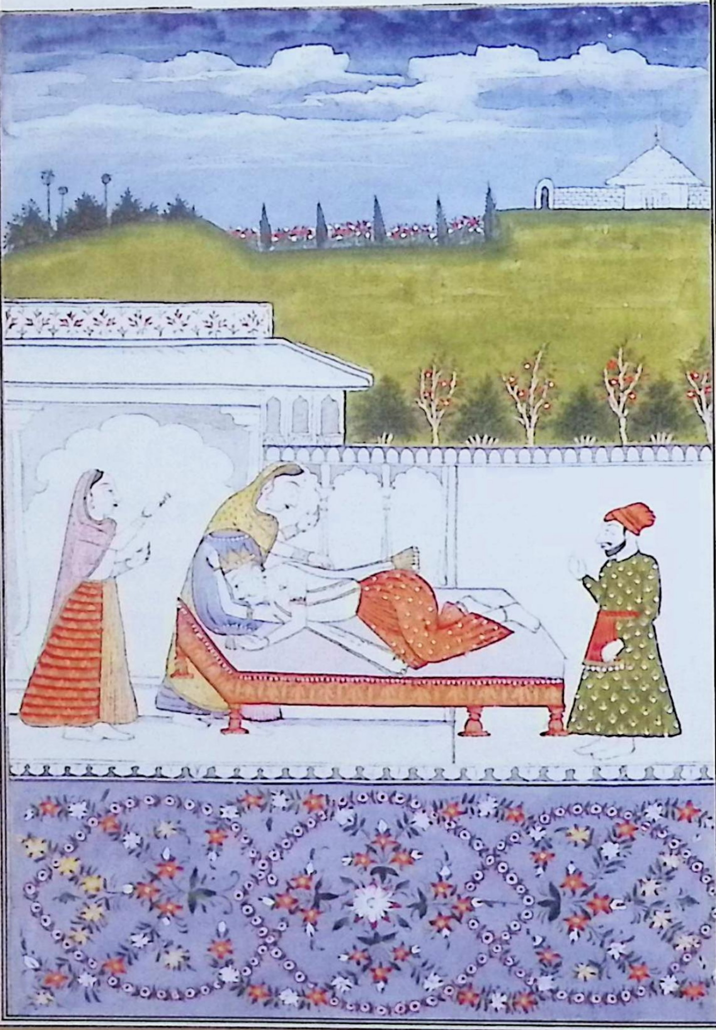

राजा दशरथ का चित्र जो तख्त पर बेहोश पड़े हुए हैं और सुमंत्र सारथी सामने खड़े हैं और राजा को कौशल्या और सुमित्रा उठा रही हैं सुमंत्र नमस्कार कर रहा है।

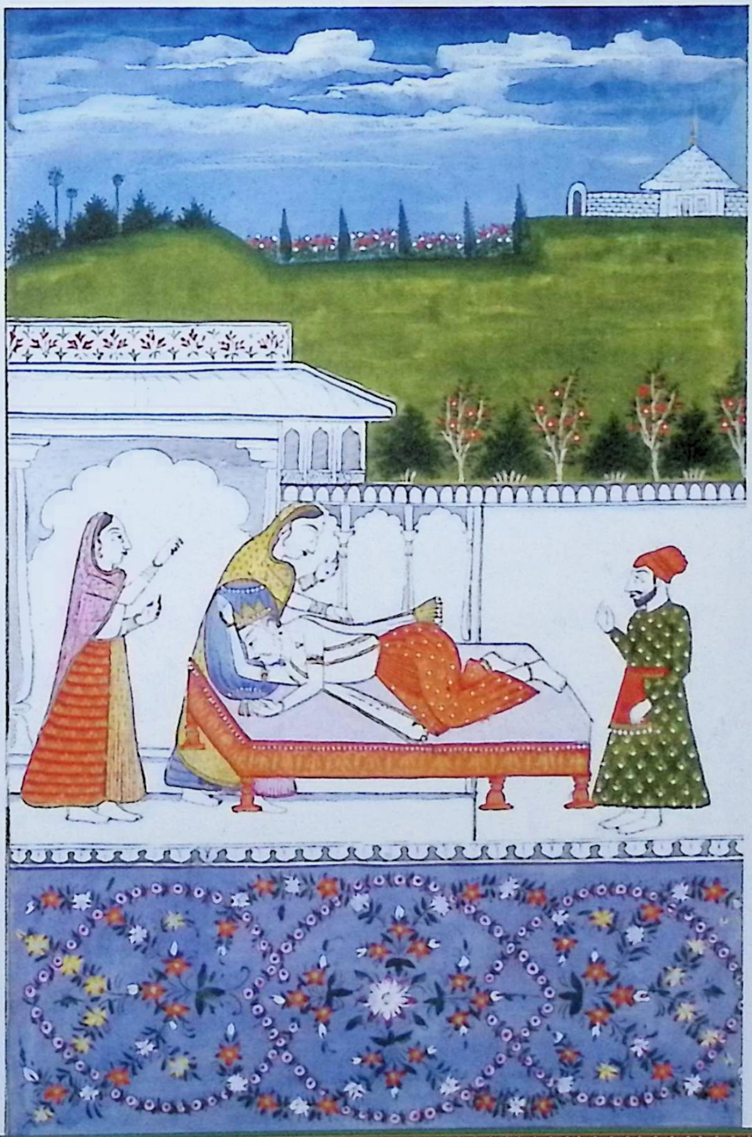

سرگ گفتار دسرته باز راجه بهوش آمده بر سنگهاسن نشست وگریه از سر مانند فیل نو گرفته دهها کشیده سومنتر را که از گرد راه آلوده دست بسته پیش ایستاده بود بدینسان پرسید رامچندر کجا رفت و کجا اقامت گرفت و تو کجا گذاشتی و مرا چه گفت آنکه بر رتهه و اسپ و فیل میرفت چسان پیاده در صحرا رفت و در جنگل شیران و ماران آن نازک بدن چسان اقامت نمود و سیتا نازک بدن چسان عقب رفت تو کامگار هستی که هردو پسران مرا چون نرونارآین دیده و مرا چه گفته است به تفصیل بگو سومنتر در گریه شده گفت که رام از سر نمسکار کرده گفته است اول خیریت راجه پرسی والده‌ها را خیریت پرسی و کوشلا را بگوی غم من نکند انتظار آمدن من نماید و راجه را چون خداوند پرستند و بهرت را گفته است که چو راج یافته را پرستش کنی و همه مادران را برابر بینی و از غضب لچهمن گفته است این پسر کلانتر از کدام گناه بدر کردی یا از شوخی چیزی بد کرده اگر برای خاطر کیکئی بدر کردی خوب نکردی از عقل تو خلاف دهرم است و مرا با تو هیچ محبت نیست پدر و مادر و آشنا و برادر من و اوستاد من رام است و از بهرت چه میخواهی و نیز بهرت را گفته از غصه کاری خلاف معمول نکند همه مادران را برابر داند و سیتا دهها کشیده روی شوهر میدید و مرا هیچ نگفت عاقبت دست بسته قدمبوس گفته همچنان سیتا نیز چون سومنتر اینقدر بیان کرد راجه فرمود دیگر بگو سومنتر گفت آن هردو برادر که چیر و پوست درخت پوشیده بودند جتا کردند و از گنگا عبور کرده بسمت پراگ رفتند پیش پیش لچهمن بود عقب او سیتا و پس خود رامچندر میرفت بدینسان من دیده برگشته آمدم

सर्ग-६९

दशरथ की वार्ता

फिर राजा होश में आकर सिंहासन पर बैठे और नये बन्दी बनाये गये हाथी के समान रोये और ठण्डी साँस खींचकर सुमंत्र से, जो मार्ग की धूल से ढका हुआ हाथ जोड़े सामने खड़ा था, इस प्रकार पूछा ''रामचन्द्र कहाँ गये ?और कहाँ निवास किया ?तूने कहाँ छोड़ा और उन्होंने मुझको क्या कहा, वह जो रथ, घोड़े और हाथी पर चलता था पैदल कैसे वन में गया ?बाघों और सर्पों के वन में उस कोमल शरीर वाले ने कैसे निवास किया और कोमलांगिनी सीता कैसे पीछे-पीछे गयी ?तू भाग्यशाली है कि तूने मेरे दोनों पुत्रों को नर और नारायण की भाँति देखा। उन्होंने मुझको क्या कहा है विस्तार से वर्णन करो। सुमंत्र ने रोते हुए कहा कि ''राम ने शीश से नमस्कार करते हुए कहा है कि पहले राजा की कुशल क्षेम पूछना, माताओं का कुशलक्षेम पूछना और कौशल्या से कहना कि दुख न करें। मेरे आने की प्रतीक्षा करें और राजा की ईश्वर की भाँति पूजा करें। और भरत से कहा है कि राजगद्दी पाकर पूजा करें, सारी माताओं को समान समझे। लक्ष्मण ने क्रोध से कहा है आपने इस बड़े पुत्र को किस अपराध में देश निकाला दिया है या उद्दण्डता से बुरा किया है। यदि आपने कैकेयी को प्रसन्न करने के लिये देश निकाला दिया है तो अच्छा नहीं किया है। आपकी बुद्धि से परे धर्म के विपरीत है और मुझे आपसे कोई प्रेम नहीं है। मेरे माता-पिता, मित्र, परिचित, भ्राता और गुरु सब राम हैं। भरत से आप क्या चाहते हैं ?भरत से भी कहा है कि क्रोध से कोई असामान्य कार्य न करें। सारी माताओं को समान जानें और सीता का हाल यह है कि वह ठण्डी साँस खींचकर पति का मुखड़ा ताकती रहती थीं उन्होंने मुझ से कुछ नहीं कहा अन्त में हाथ जोड़कर घुटनों के बल बैठकर ऐसे ही सीता ने भी कहा''। जब सुमंत्र इतना वर्णन कर चुका तो राजा ने कहा कि पुनः कहो। सुमंत्र ने कहा, उन दोनों भाईयों ने भिक्षुकों वाला वस्त्र और पेड़ की छाल पहन रखे थे जटा बना ली थी और गंगा पार करके प्रयाग की ओर चले गये थे। आगे-आगे लक्ष्मण थे उनके पीछे सीता और उनके बाद स्वयं रामचन्द्र चलते थे। इसी प्रकार मैं उन्हें देखकर वापस आया हूँ

باکوهه تمام روز بوده امروز اینجا آمدم ای راجه از رفتن رامچندر تالابها خشکند و آهوان و بهایم و طیور
حیران و ذی حیات آب نالان و در شهر و بازار و بارگاه تمام پریشانی هست من که گذاشته آمده ام مرا
دیده شهریان بنکوهش میکنند و دوست و دشمن و غیره همه بیدل اند شادی و خرمی و عشرت و بهجت
هیچ جا نیست بدینسان سخنان سومنتر شنیده گفت من احمق این دروغ و دغا کیکئی را ندانسته
با او ستادان و مرشدان مصلحتی نکردم که از ان بیوقوفی عذابی نمودم همین طور بر رامچندر بدی نبود
و بر من بدنامی آمدنی حالا باز برو و رام را بیار که بی او نمیتوانم زیست و الا ازا در رفتن و آمدن
دیر خواهد شد مرا بر رتهه سوار کرده ببر و رام را بنما اگر زنده ام آن شیر کتف و راز دست را با سیتا
می بینم من در دریای ژرف فراق رام غرق هستم از من غمناک تر کیست که هنگام مردن هم رام نمی بینم
بدینسان گفتار شورش انگیز و غم آمیز راجه را شنیده والده رام دو چندان در غم شد در اینجا راجه دشرتهه
برتخت نشسته و سومنتر روبرو استاده سخن میگوید و کوشلا و سومترا هم پریشان گریه میکنند و چشم از اشک پاک میکنند

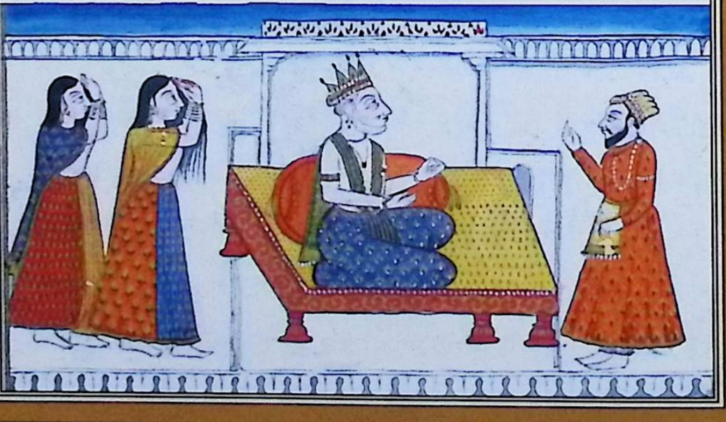

मैं गुह के साथ पूरे दिन रहा आज यहाँ आया। महाराज रामचन्द्र के जाने से तालाब सूख गये है। हिरन, पशु, पक्षी सब चिन्तित हैं और पानी के रहने वाले जीव दुखी हैं और नगर, हाअ और बारगाह सब हर स्थान पर परेशान हैं मैं जो उन्हें छोड़कर आया हूँ मुझे देखकर नगर वाले मुझे धिक्कार रहे हैं और शत्रु मित्र आदि सब दुखी हैं। प्रसन्नता और सम्पन्नता किसी स्थान पर नहीं हैं। सुमंत्र की इस प्रकार की बातें सुनकर राजा ने कहा मैं मूर्ख हूँ, कैकेयी का छल कपट और धूर्तता न जानते हुए गुरुओं और मुनियों से परामर्श नहीं किया कि इस मूर्खता से मैंने एक कष्ट ले लिया। इस प्रकार रामचन्द्र पर दुख आया और मुझ पर बदनामी। अब पुनः जाओ और राम को लेकर आओ कि राम के बिना मैं जीवित नहीं रह सकता। यदि तुझे जाने-आने में विलम्ब होगा तो मुझे रथ पर सवार करके ले चलो और राम को दिखाओ। यदि मैं जीवित रहा तो उस बाघ जैसे कंधों वाले और लम्बे हाथों वाले राम को सीता के साथ देखूँगा। मैं राम के वियोग में दुख के सागर में डूबा हूँ मुझसे अधिक दुःखी और कौन होगा कि मैं मरते समय राम को नहीं देख सकूँगा। राजा की इस प्रकार की व्याकुलता भरी और दुखमयी बातें सुनकर राम की माता दुगने दुख में ग्रस्त हो गयीं।

राजा दशरथ सिंहासन पर बैठे हैं और सुमंत्र सामने खड़ा बात कर रहा है कौशल्या और सुमित्रा केश खोले रो रही हैं और आँखों से आँसू पोछ रही हैं।

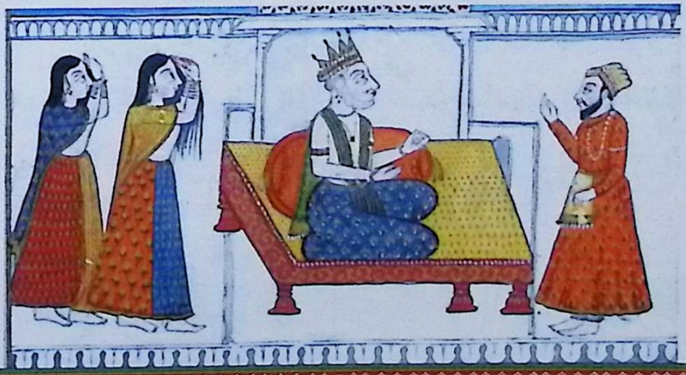

سرک کفتار کوشلا در کریه شده بسومنتر کفت مرا زود آنجا ببر که رامچندر و لچهمن هست بی او زندکی
نمیخواهم رتهه مهیا کن والا پیش جم میروم سومنتر بطور تسلی کفت غم و بیهوشی و نادانی بکذار
رامچندر به بیغمی اقامت کرده و لچهمن در خدمت اوست و سیتا در جنگل چون خانه خود اقامت دارد
رامچندر و لچهمن را دیده صحرا را اجودهیا میدانند سیتا که روی او چون چندرمان هست با رامچندر چنان نسبت
که روشنی با چندر کیفیت مواضع و بلاد از رامچندر میپرسد و جواب میشنود همین یکسخن رامچندر کفت حالا
کفتار کیکئی هیچ بخاطر من برنمی تابد از اخلاص و خوبی سیتا و روی چون ماه او که از شعاع ماه زیاده
میتابد و هیچ تصدیع برو نیست سیتا با رامچندر کویا لچهمی در سینه بشن ست یا دختر همانچل
پاربتی با مهادیو هست یا از خوبی و حسن رتی با کامدیو است حالاهم سیتا که
پیرایه و اسباب کذاشته زیاده تر در جنگل خوشنماست در پناه هر دو برادر سیتا
از باشندکان جنگل و شیرها و افیال و پلنک نمی ترسد با یکدیکر خاطرداشت باهم میکنند
و مادر و پدر و غیره کسی را یاد نمیکنند در جنگل ثمرات و غیره خورده میکذرانند
اینقدر احوال آنها کفتم بدینسان کفتار سومنتر را شنیده کوشلا
اهلیه راجه هیچ خوشحال تر نشد و غم پسر از دل بدر نکشت

در اینجا صورت راجه بدستور سابق بر تخت نشسته در برابر تخت سومنتر و
پیش تخت کوشلا با سومنتر سارتهی سخن میکوید

सर्ग–६९

कौशल्या की वार्ता

कौशल्या ने रोते हुए सुमंत्र से कहा मुझे शीघ्र वहाँ ले चलो जहाँ रामचन्द्र और लक्ष्मण है मैं उनके बिना जीवन नहीं चाहती हूँ। रथ की व्यवस्था करो अन्यथा मैं यम के पास जाती हूँ। सुमंत्र ने सान्त्वना देते हुए कहा, दुख, मूर्छा और अबोधता छोड़िये, रामचन्द्र निश्चिन्त होकर वहाँ रह रहे हैं और लक्ष्मण उनकी सेवा के लिये हैं। सीता यद्यपि वन में छप्पर में हैं लेकिन रामचन्द्र और लक्ष्मण को देखकर वन को अयोध्या समझती है सीता जिनका मुख चन्द्रमा जैसा है रामचन्द्र के साथ ऐसे हैं जैसे प्रकाश चन्द्रमा के साथ होता है। वह रामचन्द्र से उधर के जिला और नगर के विषय में पूछती है और उत्तर सुनती है। रामचन्द्र ने केवल यही एक बात कही है कि अब किसी कैकयी की बात मेरे मन में नहीं आती। सीता के सद्भाव व आदर्श और उनके चन्द्रमा के समान मुख के कारण, जो किरणों से अधिक चमकदार है उन्हें कोई दुख नहीं है। रामचन्द्र के साथ सीता ऐसी हैं जैसे विष्णु की छाती में लक्ष्मी, या हिमांचल की पुत्री पार्वती महादेव के साथ, या सौन्दर्य व सुन्दरता में रति कामदेव के साथ। अब सीता भी जो साज शृंगार छोड़कर सुन्दर जंगल में है दोनों भाईयों के संरक्षण में सीता आदिवासियों, शेरों, हाथियों और चीतों से नहीं डरती हैं, और सब एक दूसरे का ध्यान रखते हैं माता – पिता आदि किसी को याद नहीं करते। वन में फल आदि खाकर रहते हैं। मैंने उनके विषय में वर्णन किया। सुमंत्र की यह बात सुनकर राजा की पत्नी कौशल्या कुछ अधिक प्रसन्न नहीं हुई और पुत्र का दुःख उनके हृदय से गया नहीं।

राजा का चित्र जो यथावत् तख्त पर बैठे हुए हैं, तख्त के बराबर सुमंत्र है और तख्त के सामने कौशल्या सुमंत्र सारथी से बातें कर रही हैं।

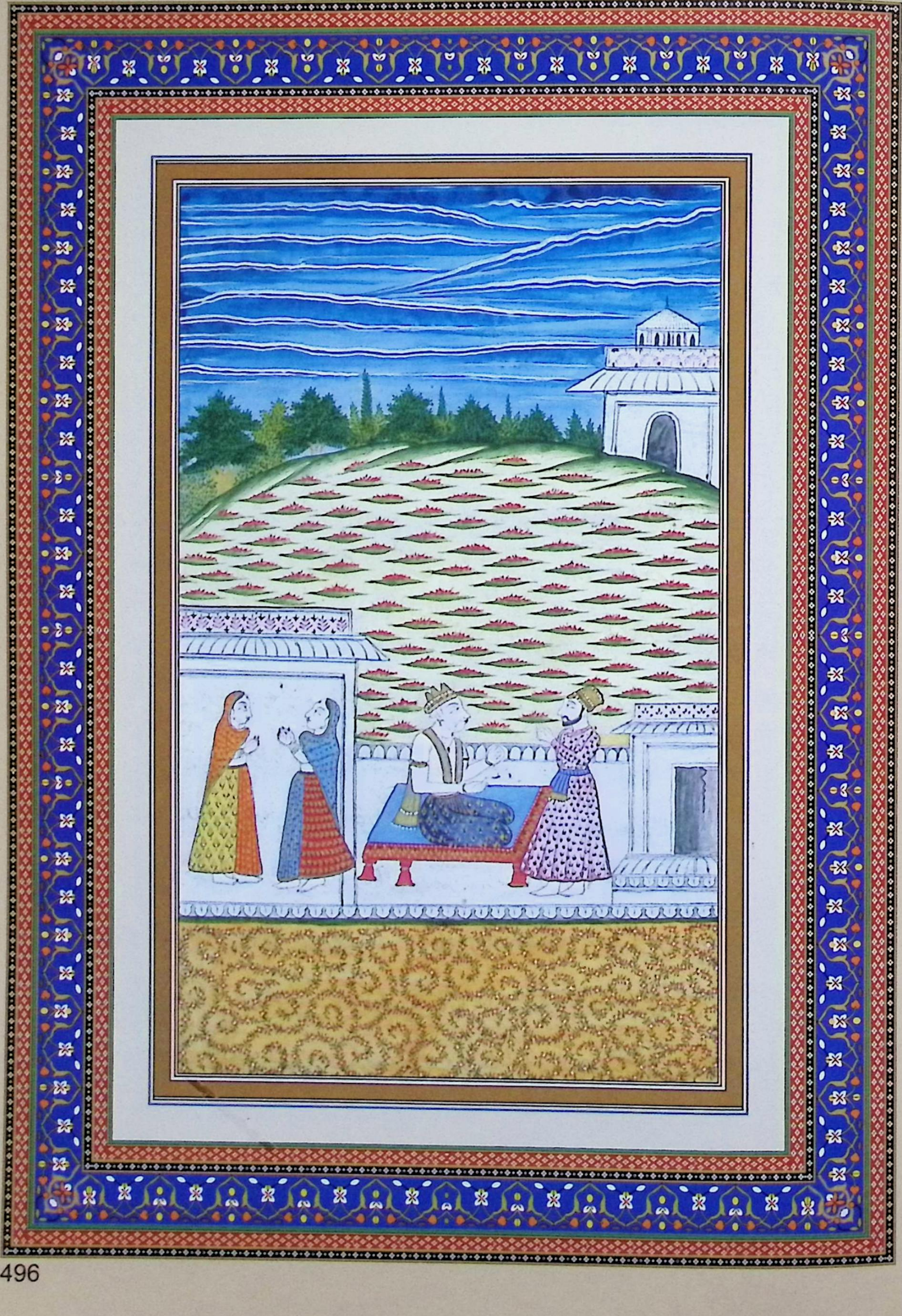

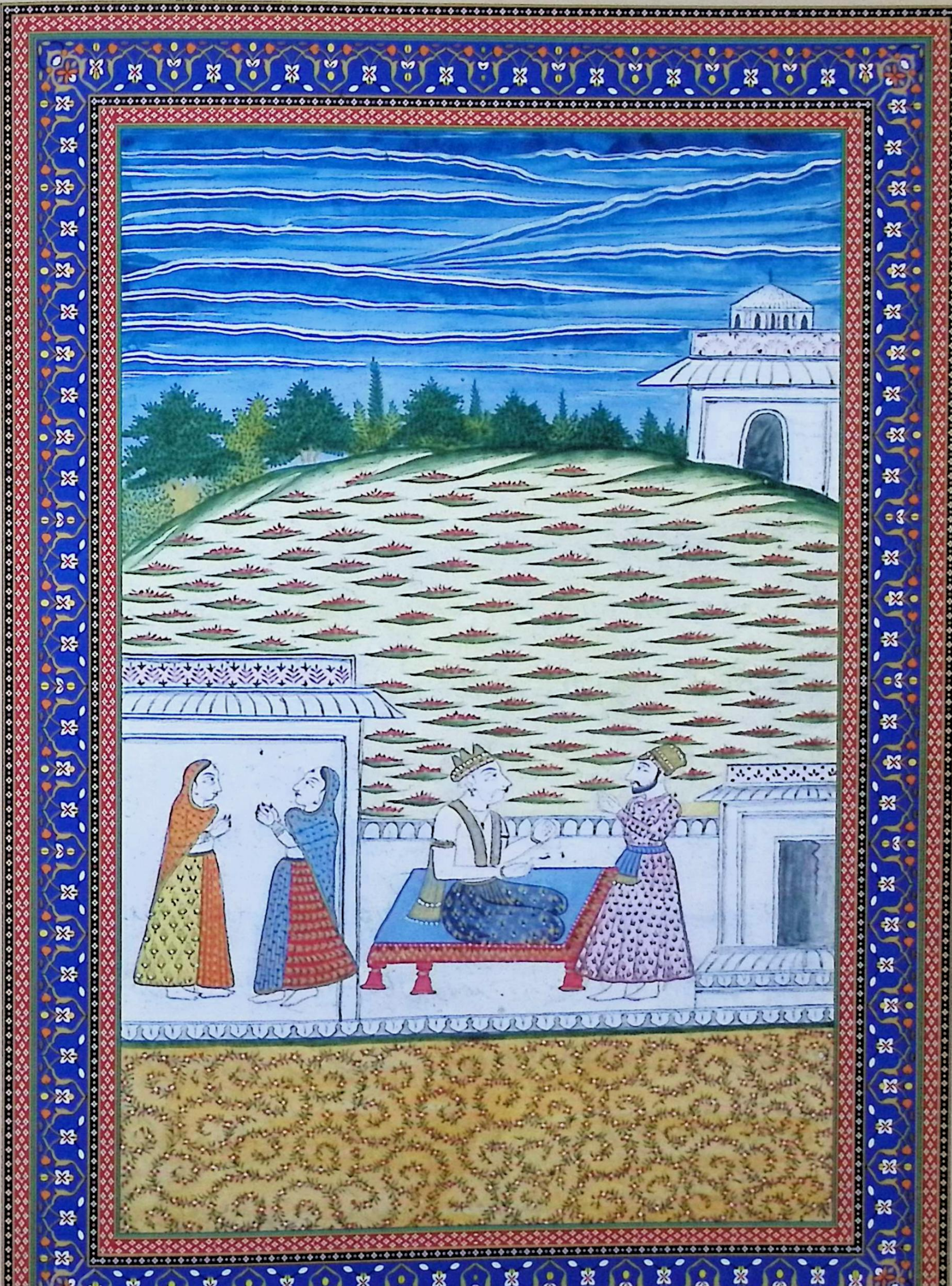

سرک گفتار کوشلا چون سومتر از خانه راجه رفت کوشلا براجه گفت این حسن و خوبی تو
که در هرسه لوک بود حالا از پدر کردن پسر رفت از غلبه شهوت بسبب عورت پسر را بدر کردی
پیشتر مردم شنیده بودند که رامچند جو راج میشود حالا از بر دادن عورت بدر کردی
اگر از دروغ در خوف بودی چرا اول امیدوار کردی این را بفهم دروغ گو شدی بانه بزرگان تو
که گذشته اند همه ها راستی را مقدم میداشتند از زندگی هم راستی را ترجیح میدادند از راستی
هیچ بالا نیست راستی تمام خلاصی است و خواهان سرک را هم راستی مقدم است از راستی اکشر است
و برهما د جگ است در سه لوک به از راستی دهرم نیست از راستی ماه روشن میشود از ماه غله
و از آب و آتش بر زمین و بحیات میشوند و از انها کندکی و از و باز بدستور باز گشت است
بدینگونه تمام پیدایش از راستی است و از راستی خورشید میطپید و قمر باز میکردد و از راستی
حیاتست و از راستی همه جهان قایم است آسمان و انترچه یعنی خلا و زمین از راستی است
و راست روان از راستی بلوکها میروند و عذاب دروغ از صد جگ هم زودای را است کو
و راست رو را جه چرا راه بزرگان خود نمیروی راست روان دو راه گفته اند یکی راستی
دوم آهنسا یعنی نکشتن ذیحیات را از ینها دهرم قایم است تو این را دور کردی بوی صندل
و اگر چندان دیر نپاید که بوی گیرت این کار نامعقول است گویا بهرون هتیا یعنی کشتن طفل
کردی اما این عجب نیست که خداوند زور آور است کسان از مثل بهایم رسن کشان میبرد

सर्ग-७०

कौशल्या की वार्ता

जब सुमंत्र राजा के महल से चला गया तो कौशल्या ने राजा से कहा ''यह श्रेष्ठता जो तीनों लोक में आपको प्राप्त थी अब पुत्र को पिता बना देने से वह जाती रही। एक स्त्री के कारण प्रभुत्व, काम में आपने पुत्र को देश निकाला दे दिया। पहले लोगों ने सुना था कि रामचन्द्र उत्तराधिकारी बनेंगे अब आपने पत्नी को वचन देने के कारण उन्हें देश से निष्कासित कर दिया। यदि आपको झूठ का भय था तो पहले उम्मीदवार क्यों बनाया। जिनकी मृत्यु हो चुकी है सब ही सत्य को महत्व देते थे। जीवन पर भी सत्य को वरीयता देते थे। सत्य से ऊपर कोई चीज नहीं है। सत्यता ही मोक्ष है और स्वर्ग चाहने वालों के लिये सत्य ही सब कुछ है सत्य से विष्णु है, ब्रह्मा और जग है। तीनों लोक में सत्य से अच्छा कोई धर्म नहीं है। सत्यता से चन्द्रमा प्रकाशित होता है चन्द्रमा से अनाज उत्पन्न होता है और पानी तथा अग्नि से पृथ्वी पर जीवधारी रहते हैं और उनसे दूसरी वस्तुएं होती हैं। इस प्रकार समस्त जन्म सत्य से है। आकाश, अंतरिक्ष और पृथ्वी सब सत्य से हैं तथा सत्य और सत्य मार्ग के कारण लोक में पहुँच जाते हैं और झूठ का कष्ट सौ यज्ञ से भी नहीं दूर होता। हे सत्यवादी ! और सत्यमार्ग पर चलने वाले राजा आप अपने पूर्वजों के मार्ग पर क्यों नहीं चलते हैं ?दो मार्गों पर चलने वालों ने कहा है एक सत्य और दूसरा अहिंसा अर्थात् किसी जीवधारी को न मारना। उन्हीं से धर्म स्थापित है आपने. यह सब समाप्त कर दिया और अपनी इस मूर्खतापूर्ण कार्य से जैसे बालक की हत्या कर दी परन्तु यह आश्चर्य नहीं कि ईश्वर शक्तिमान है। वह लोगों को पशुओं की भांति रस्सी से बांधकर खींचते हुए ले जाता है

وغصه را هم نمیتوان مسخر کرد از غصه مردم چون مار می افتد من اینقدر که کفتم جسارت
و ابرام نمودم حکیم بمحبت پسر کرفتارم سرک کفتار کوشلا بدینکونه کوشلا غم کرده و زاری نمود
کفت رامچندر بموجب فرموده تو رفت لچهمن که عقب او رفت فکر او میکنم زیرا که او هر کاه
خبر منع کردن جوراج شنید کمان و تیر کرفته از غصه برخاست و کفت راجه نمید اند که این آتش
از خانه خود روشن شده و برای جنک مستعد شد از رامچندر فکر لچهمن بیشتر میکنم و دختر
راجه جنک که مثل اندرست نوجوان بسیار نازک در خانه پدر در سایه پرورده همه راحت
کذاشته عقب شوهر رفت چه حالتست و بروچه خواهد کذشت سردی و کرمی و بارش را
چکونه برداشت خواهد کرد آنکه در خانه بتصدیع روان میشد در صحرا حیران خواهد رفت
آنکه اطعمه لذیذ میخورد ثمرات تلخ صحرا چکونه تناول خواهد کرد او که بر بسترهای قیمتی خواب
میکرد چطور بر برکهائی زمین خواهد خسپید آنکه پارچه نرم و خوش آینده می پوشید
چسان کاو پوست را بر چیر خواهد داشت خوش پیشانی و خوش موی و خوش رنک
و خوش بینی و مثل بدر روی او ست از تاب آفتاب بیرنک و افسرده خواهد کشت کی آن
رامچندر دراز دست را خواهم دید جکر من از آهن است که در دیده نمیشود ای راجه تو بدکردار
اکر پانزده هم سال رامچندر خواهد آمد راج کرده بهرت را نخواهد کرفت چنانچه کسانی که شراد
میکنند یعنی بنام بزرکان کذشته چیزی میدهند و اقربا را میخورانند و بعده برهمنان را

इसके क्रोध का भी सामना नही किया जा सकता । क्रोंध के कारण लोग भ्रमित हो गिर जाते हैं और मैने यह बात बड़े साहस जुटाकर कही है कि मैं बेटे के प्रेम में जकड़ी हुई हूँ।

सर्ग–७१

कौशल्या की वार्ता

इस प्रकार कौशल्या ने दुख प्रकट करते हुए और विलाप करते हुए कहा रामचन्द्र अपने आदेश दे गये हैं लक्ष्मण जो उसके पीछे गया है मुझे उसकी भी चिन्ता है क्योंकि जब उसने उत्तराधिकार के रोक दिये जाने का समाचार सुना तो क्रोध में खड़ा हो गया और कहा कि ''राजा नहीं जानता कि यह अग्नि अपने घर से प्रज्वलित हुई है और वह युद्ध के लिये तैयार हो गया है। मुझे रामचन्द्र से अधिक लक्ष्मण की चिन्ता है और राजा जनक की पुत्री जो इन्द्र के समान युवा है बहुत कोमल है उसका अपने पिता के महल में सुख सुविधा के साथ पालन हुआ है समस्त सुख सुविधा और आराम छोड़कर वह पति के साथ गयी है। उसकी क्या दशा होगी और उस पर क्या बीतेगी ?वह ठंडक, गर्मी और वर्षा को कैसे सहन करेगी वह जो घर में चलने से चिन्तित हो जाती थी, वह वन में कैसे चलेगी, वह जो स्वादिष्ट भोजन खाती थी, वह वन के कड़वे फल कैसे खायेगी ? जो मूल्यवान शय्या पर सोती थी वह भूमि पर पत्तों पर कैसे सोयेगी ?और जो कोमल और अच्छे वस्त्र पहनती थी वह चीर पर गऊ की खाल कैसे रखेगी। उसका मुखड़ा सुन्दर केश सुन्दर रंग सुन्दर नाक, उसका मुखड़ा पूर्णिमा के चन्द्रमा की भाँति है। वह सूर्य की गर्मी से बेरंग एवं दुखी हो जायेगा। मैं कब उस लम्बी भुजाओं वाले रामचन्द्र को देख सकूँगी ?मेरा हृदय लोहे का है कि फट नहीं जाता। राजा आपने बहुत अनर्थ किया। यदि पन्द्रहवें वर्ष रामचन्द्र आयेंगे तो भरत के राज्य को नहीं लेंगे। जैसा कि वह लोग जो श्राद्ध करते हैं अर्थात् पूर्वजों के नाम पर छोड़ी हुई कोई वस्तु देते हैं और नाते रिश्तेदारों को खिलाते हैं। उसके पश्चात् ब्राह्मणों को

برای خوردن میطلبند آنها که دانایند و صاحب هنر آن را قبول نمیکنند همچنین آن راج که برادر خورد
کرده باشد برادر کلان چرا قبول کند آنکه از غصه آسمان را با ماه و کواکب و زمین را با کوهها
از جا بجنباند از اینها کی مثل کند و برهمنان بموجب شاستر این را دهرم میگویند که امر مرشد
که پدر باشد بجا آوردن از همه ترجیح دارد و گفته گرو و پدر و مادر هر که بکند او پسر نیست بنابران
تو اگرچه بد کردی رامچندر بد نخواهد کرد بدین آئین کوشلا گریه و زاری کرده باز گفت اول
گت یعنی راه رفتن سرگ از خود است و دوم گت پسر و سیوم گت همراهی نیکوکاران چهارم
گت دهرم و هر که از اینها بفتد هیچ گت ندارد تو برای خاطر کیکئی راحت راه راستی و گیت
و مرا ترک کردی و کیکئی مرا و راجه را و تمام شهریان را کشت اینقدر سخنان سخت کوشلا را شنیده
راجه از غم متشتت و متوزع گردید دینجا صورت راجه بدستور دریشان وضع در گریه و زاری
و ناله و اشکبار و صورت مکان و خدمتکار دکنران

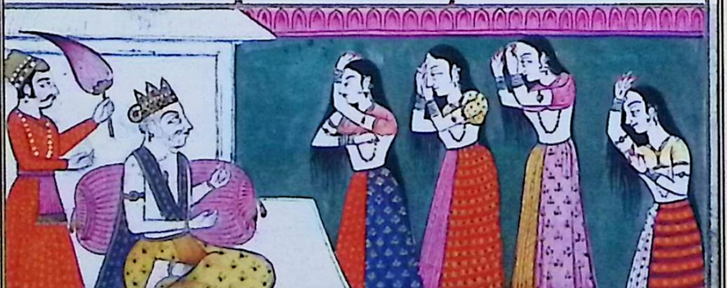

खाने के लिए बुलाते हैं जो लोग बुद्धिमान और कलाकार हैं वह उसको स्वीकार नहीं करते। इसी प्रकार जो राज्य छोटे भाई ने किया होगा बड़ा भाई उसे क्यों स्वीकार करेगा ?जो क्रोध से आकाश को चन्द्रमा को तारों सहित और पृथ्वी को पहाड़ सहित अपने स्थान से हिला देता है वह उनसे कब डरेगा। ब्रह्मशास्त्र के अनुसार उसको धर्म कहते हैं कि बड़े आदेश जो पिता का होता है पालन करना सबसे प्रथम वरीयता रखता है और जो गुरू एवं माता पिता का आदेश पालन न करे वह पुत्र नहीं है। इस आधार पर यद्यपि आपने अनिष्ट किया है परन्तु रामचन्द्र अनिष्ट नहीं करेंगे इसी प्रकार कौशल्या ने विलाप करते हुए पुनः कहा। प्रथम गति अर्थात् स्वर्ग का मार्ग चलना अपने से होता है, द्वितीय गति पुत्र, तृतीय गति सज्जनों की संगत, चतुर्थ गति धर्म जो इनसे विचलित हो जाये वह कोई गति नहीं रखता। आपने कैकेयी के आग्रह पर आराम, सुख व सत्य का मार्ग कीरत और मुझे सब त्याग दिया और कैकेयी ने मुझे राजा को और समस्त नगरवासियों को मार डाला। कौशल्या की इतनी कठोर बातें सुनकर राजा दुख से चिन्तित हो गये।

राजा का चित्र जो यथावत है और चिन्ता में ग्रसित विलाप तथा आँसू बहाने में व्यस्त हैं एवं घर और सेवकों तथा दासियों का चित्र।

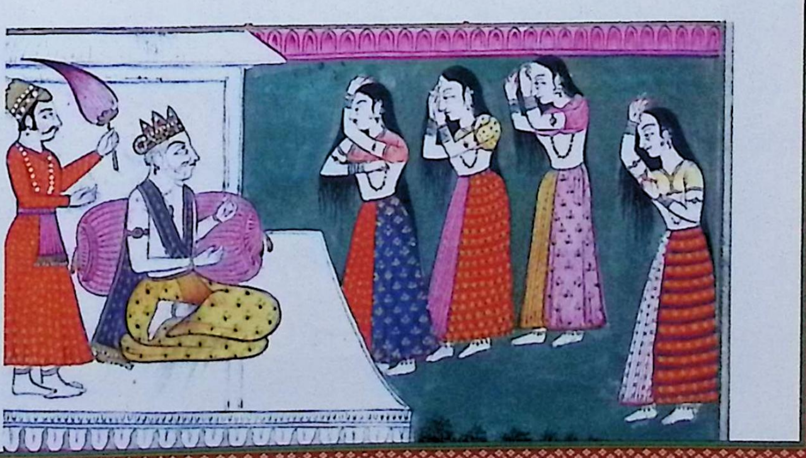

سرگ حال راجه دسرته از ینطور سخنان سخت کوشلا راجه بر بستر از هوش رفت چون
بهوش آمد گفت من دست بسته ترا مهربان میکنانم بدینگونه سخنان با من مگو کوشلا این نوع
سخنان غربت انگیز راجه را شنیده غم پسر گذاشته سر در پای راجه نهاد و گفت من گستاخی
نمودم مرا عفو فرمای تو خداوند و والی منی من ترا دهرم میدانم اما چکنم از غم پسر ترا اینقدر گفتم
غم عقل و علم و شنیده و تحمل را نابود میکند و مثل این هیچ سیاه کننده دل نیست
در آتش بودن میتوان و در غم بودن نتوان دهرم دانان و متحملان و مرتاضان
از غم بی شعور کردند امروز از جدای پسر مرا پنجروز گذشته اما از غم مثل صد گذشته
دل من از غم چنان برهم میشود گویا آب گنگا از باد که بعد رت سمیت آید از این
گفتار ها کوشلا آفتاب بغروب رسید و راجه غمگین شده بخسپید بعده
سومنترا کوشلا را که مضطرب و غمگین بود چنان گفت پسر تو که داناتر است و هنرمند
وامر پدر بجا می آورده برای او غم مکن آنها که حکم دیوتا و بزرگان و دانایان بجا نمی آرند یکی
نمی بینند پسر تو از حکم پدر آسایش راج گذاشته است بسیار نیکی خواهد دید پسر تو دهرماتما
و راه راست روان و مستقیم است برای او غم مکن و پیرو او لچهمن است برای او هم غم مکن
و تصدیعات جنگل را دانسته آسایش را گذاشته سیتا با او رفته است او هم کیرت
خواهد یافت برای او هم فکر مکن و پسر ترا سردی و گرمی چنان تصدیع نخواهد داد زیرا که

सर्ग-७२

राजा दशरथ की दशा

कौशल्या की इस प्रकार की कठोर बातें सुनकर राजा बिस्तर पर मूर्छित पड़े रहे जब उनकी मूर्छा टूटी तो कहा मैं हाथ जोड़कर तुम से दया की विनती करता हूँ तुम मुझसे ऐसी बातें न करो। कौशल्या ने राजा की विवशता वाली बातें सुनकर पुत्र का दुख छोड़कर और शिर राजा के चरणों में रखकर कहा मुझे क्षमा कर दें। आप मेरे मालिक और भगवान हैं। आपको ही मैं अपना धर्म समझती हूँ लेकिन मैं क्या करूँ मैंने पुत्र के दुख में आपको इतनी बातें कहीं। दुख, बुद्धि व ज्ञान, सुनी हुई बातों और धैर्य सबको समाप्त कर देता है तथा उसके समान दिल को काला करने वाली और कोई चीज नहीं। अग्नि में रहा जा सकता है लेकिन दुख में रहना संभव नहीं है। धर्म के जानने वाले, धैर्य वाले और तपस्या वाले सब दुख के कारण बुद्धिहीन हो गये। आज पुत्र के वियोग में पाँच दिन बीत गये लेकिन दुख के कारण मैं, मेरा हृदय इतना विचलित है जैसे नदियों के वेग से समुद्र का पानी। कौशल्या की इन्हीं बातों में सूर्य अस्त हो गया और राजा दुखी होकर सो गये। उसके बाद सुमित्रा ने कौशल्या से जो व्याकुल और दुखी थीं, यह कहा! आपका पुत्र बुद्धिमान, निपुण और पिता का आज्ञाकारी है आप उसकी चिन्ता न करें। जो लोग देवताओं, पूर्वजों और ज्ञानियों के आदेशों का पालन करते हैं वह नहीं देखते हैं। आपके पुत्र ने पिता के आदेश से राज्य की सुख सुविधा छोड़ी है। आपका पुत्र धर्मात्मा, सत्य मार्ग पर स्थिर और आज्ञाकारी है। उसके लिये आप चिन्ता न करें और उन्हीं का अनुयायी लक्ष्मण है आप उसकी भी चिन्ता न करें। वन की कठिनाईयों को जानते हुए सुख सुविधा को छोड़कर सीता उनके साथ गयी है। वह भी कीर्ति पायेंगी उनकी भी चिन्ता आप न करें । आपके पुत्र को सर्दी, गर्मी अधिक कष्ट नहीं पहुँचायेगी क्योंकि

استر هادب اور ابشواآمتر داده ست و پسر تو بعد چهارده سال راج خواهد کرد برای او
غم مکن بدینسان کفته والده لچهمن را شنیده والده رامچندر پاره غم کرد چنانکه از بارش
آتش منطفی میشود در اینجا صورت راجه خفته معه خدمتکار چوری دار و صورت سومترا

که با کوشلا سخن میگوید و صورت وقت شب و کواکب و مکان

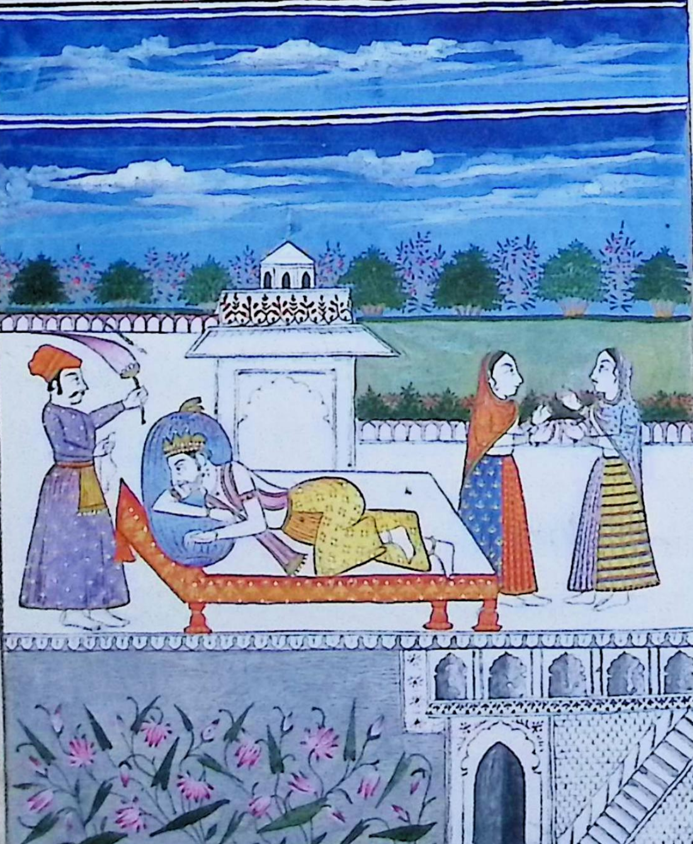

विश्वामित्र ने उसे हादब अस्त्र दिया है, और आपका पुत्र चौदह वर्ष बाद राज्य करेगा उसका दुख न करें। लक्ष्मण की माता की ऐसी बातें सुनकर रामचन्द्र की माता का दुख ऐसा कम हो गया जैसे वर्षा से अग्नि बुझ जाती है।

राजा का चित्र जो तख्त पर सेवकों के साथ सोये है और सुमित्रा का चित्र जो कौशल्या से बातों में व्यस्त हैं। रात्रि के समय के सितारों और महल का चित्र है।

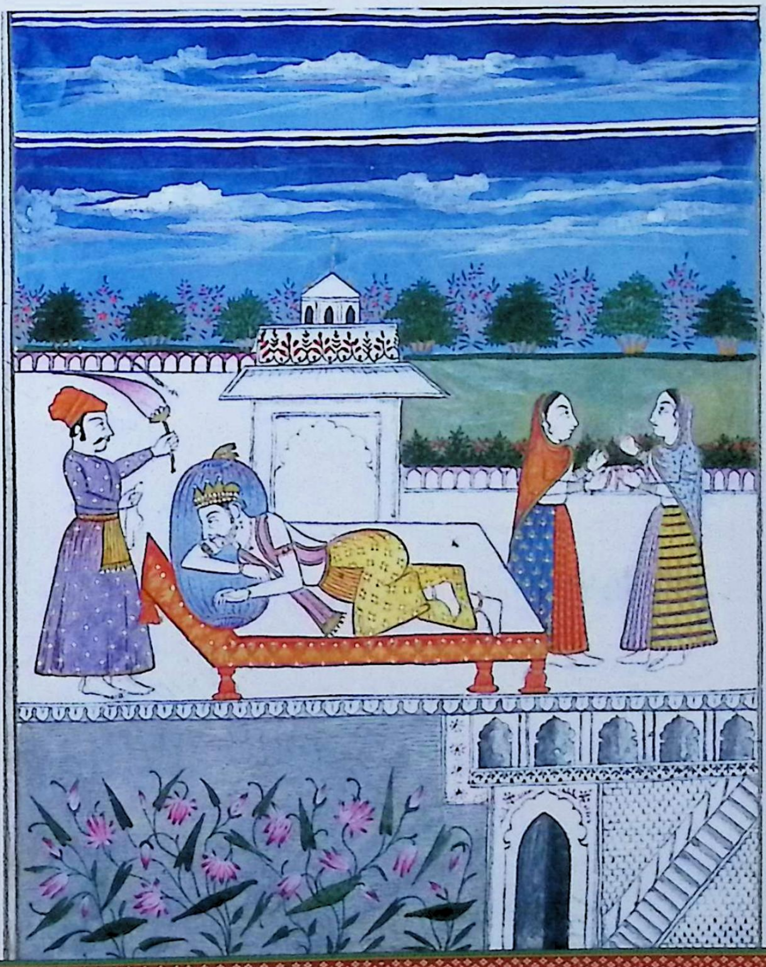

سرگ بیان شد بعد رفتن رامچندر و لچهمن راجه دشرتهه از تصدیع و الم مثل آفتاب که خالی از
روشنی هنگام شام باشد تا شصت روز که دو ماه باشد زیست روز شصتم وقت
نیم شب گناه خود را یاد کرده به کوشلا گفت ای نیکو کار اگر بیدار هستی گفته من بشنو
هر چه کسی میکند نیک یا بد البته ثمرهٔ آن می یابد اما هر گاه وقت می آید کسیکه باغ انبه را از
بیخ برکند و باغ پلاس را پناه گیرد و گل را بشکند و امید ثمر دارد حرمان و یاس یار اوست
همین طور من گناه خود را یاد نمیکنم و غم رفتن رامچندر مینمایم آنکه من در هنگام نوجوانی سبد بهید
یعنی زننده بر آواز بودم و کمان در دست گرفته گناهی نمودم این ثمرهٔ آن گناه مرا میرسد
که هنگام غروب آفتاب وقتی نسبت دکن رفتم از بارش آب تالاب و حفرات هر جا لبالب بود
و طاؤسان و آهوان وغیره را زمان مستی بود در انوقت من ترکش بسته و کمان بدست
گرفته بکنار دریا سرجو رفتم هنگام شب تیر را در زه آورده نهان بر کنار دریا ایستادم بامید آنکه اگر
جاموس یا فیل یا آهو وغیره برائی آب خواهد آمد آواز آنرا شنیده خواهم زد آوازی شنیدم
چنانچه کسی سبو را پر کند اما بچشم ندیدم من از خرمی بطرف آواز تیر را پرتاپ دادم بعد زدن
آوازی شنیدم دریغ آمیز که بد بیکونه من برائی آب آمده بودم مرا تیر که زد من تپسیر که به همه
پیدا ایشان گناه نداشته در هامون زندگی میکنم از سلاح کشتن چه سزاوار است پدر و مادر من پیر و
نابینا و غریب [illegible] پوست درخت اجن پوشیده اند پسر چنین کسان را کشتن چه سود دهد ادهرم کار را

सर्ग-७३

अभिशाप का वर्णन

रामचन्द्र और लक्ष्मण के जाने के बाद राजा दशरथ ने प्रकाशहीन सूर्य के समान दुख के साथ साठ दिन (दो महीना) बिताया। साठवें दिन आधी रात के समय उन्होंने अपना पाप याद करते हुए कौशल्या से कहा : हे कौशल्या ! यदि जाग रही हो तो मेरी बात सुनो। जो कुछ कोई करता है उसका बदला पाता है। निःसन्देह उसका फल पाता है लेकिन जब उसका समय आता है तब। जो व्यक्ति आम का बाग़ जड़ से उखाड़ दे और पलाश (ढाक) के बाग को शेष रखे। फूलों को तोड़ दे और फल की आशा रखे तो निराशा ही उसके हाथ लगती है। इसी प्रकार मैं अपना पाप याद नहीं करता हूँ और रामचन्द्र के जाने का दुख करता हूँ। क्योंकि मैं युवावस्था में आवाज़ पर निशाना लगाने वाला था मैंने धनुष हाथ में लेकर एक पाप किया था । यह उसी पाप का फल मुझे मिल रहा है क्योंकि किसी समय में सूर्य के अस्त होने के समय दक्षिण की ओर गया वर्षा के कारण प्रत्येक स्थान पर तालाब और गड्ढे भरे हुए थे। वह मोरों और हिरन आदि के लिये मस्ती का समय था। उस समय मैं धनुष में बाण लगाकर सरयू नदी के किनारे गया रात के समय बाण के चिल्ले पर चढ़ाकर अकेला नदी के किनारे खड़ा हो गया। इस आशा में कि यदि कोई भैंस या हाथी या हिरन आदि पानी पीने आयेगा तो उसकी आवाज़ सुनकर तीर चलाऊँगा। मैंने एक आवाज सुनी जैसे कोई मटका या घड़ा भरता है लेकिन मैंने आँख से नहीं देखा। मैंने प्रसन्नता में आवाज की ओर तीर चला दिया मैंने तीर चलाने के बाद एक दुखभरी आवाज़ सुनी कि "मैं पानी पीने के लिये आया था मुझे तीर किसने मारा। मैं ऋषि का पुत्र सम्पूर्ण संसार को छोड़कर वन में जीवन बिताता हूँ मुझे हथियार से मारना क्या उचित है ?मेरे माता पिता वृद्ध, अंधे और निर्धन हैं, वृक्ष, अजिन की छाल पहनते हैं, ऐसे लोगों के पुत्र को मारने से क्या लाभ और अधर्मी कार्य को

کدام دانا رنیک پسند د من برای زندگی خود فکر نمیکنم بلکه در غم مادر و پدر فرتوت میمیرم که بعد دوست

چه حال خواهد شد و درینوقت پدر من گرا گوید که دیر آمدی پسر من و مادر من بیقین داند که پسر من

بازی میکند و کی خواهد دانست که بر کنار دریا مرده ام و پدر من هم کجا داند که برای من کودک کدام جیتر آید

من که دشمن کسی نیستم و با کسی تعلق ندارم و ریاضت میکنم مثل منی را در شب که گشت امامرا خود خبر

نشد نفی بود خواه بد خواه نیک هر کس اجر کردهٔ خویش می یابد پدر من سر گرا خواهد بوسید هنگام اکنون هوز

گرا کیا خواهد داد واز محبت بآب سرد کردار ز کالبد کدام کس خواهد شست بدین آیین آن پسر که جگدت

نام داشت باخکر تیر خلیده بار بار آه کشیده بیهوش گردیده درینجا صورت راجه دشرته تیر و کمان در دست گرفته

و تیر در دکرده د صورت دریای سرجو و جگدت برکنار گشته افتاده و صورت سبو هم پیش نهاده و تیر

در پهلو خلیده

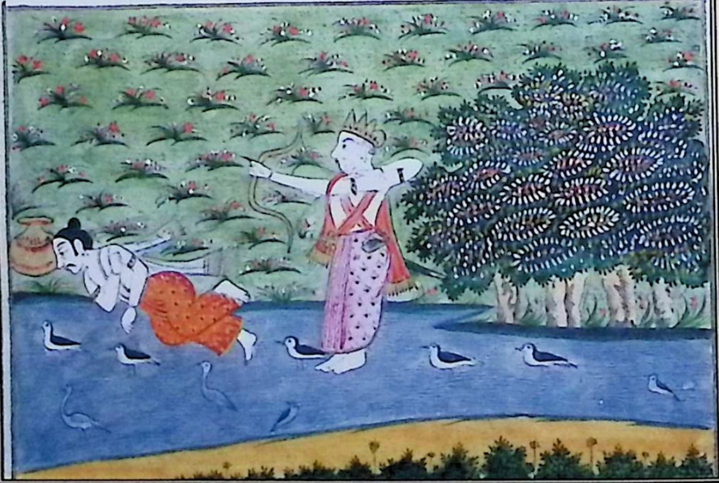

कौन बुद्धिमान व्यक्ति उचित कहेगा। मुझे अपने जीवन की चिन्ता नहीं है अपितु मैं अपने वृद्ध माता-पिता के दुख में मरा जा रहा हूँ कि मेरे मरने के बाद उनकी क्या दशा होगी। अब मेरे पिता किससे कहेंगे कि पुत्र देर मत करना और मेरी माँ को विश्वास है कि मेरा पुत्र खेल रहा होगा। कब उसे पता होगा कि मैं नदी के किनारे मरा हुआ हूँ। मेरे पिता को भी कहाँ मालूम होगा कि मुझ जैसे बच्चे के लिये कौन क्षत्रिय आयेगा। मैं जो किसी का शत्रु नहीं हूँ और किसी से कोई मतलब नहीं रखता हूँ तथा तपस्या करता हूँ। मुझ जैसे की रात में किसने हत्या कर दी। मेरे लिये ऐसा होना भाग्य में लिखा था।

प्रत्येक व्यक्ति अपने किये का फल पाता है मेरे पिता अब किसके सर का चुम्बन लेंगे और अग्निहोत्र के समय किसको अग्नि देंगे तथा प्रेम के ठण्डे पानी से किसके शरीर को धुलेंगे ?" इस प्रकार वह ऋषि का पुत्र जिसका नाम जगदत्त था और जिसके तीर लगा था बार-बार साँस खींचकर मूर्छित हो जाता था।

राजा दशरथ का चित्र जिनके हाथ में धनुष बाण है और तीर को चिल्ले पर चढ़ा रखा है। सरयू नदी का चित्र जिसके किनारे जगदत्त पड़ा है और एक सुनहरा मटका सामने रखा है तथा उसकी छाती में तीर लगा है।

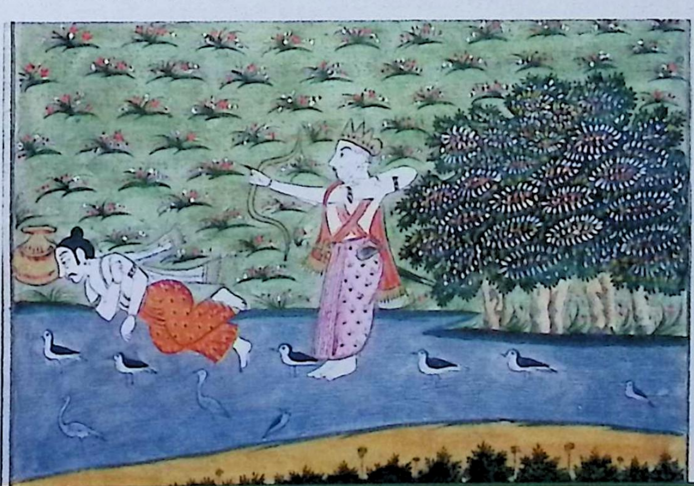

سر کرد حال جکب دت بعد ساعتی بهوش آمده باز بدینسان زاری نمود که من نوجوان مرتاض
پدر نمی بیند که در جنگل کشته افتاده ام حالا آب و ثمرات پدر و مادر من که خواهد آورد
و لیکن من هیچدان که در اینجا کشته افتاده ام پدر و مادر من کتاهی کرده باشند
که از کشتن من کشته شدند من یک پسر بودم بعد کشتن آنان چه خواهند کرد بدینطریق
گفتار او بلکنت زبانی شنیدم اما بر کنار دریا سر جو تاریکی بسیار بود هیچ بنظر نمی آمد
و جکب دت آنطرف دریا گریه میکرد و من ازینطرف میشنودم بعد از ساعتی چون
قمر طلوع نمود و تیرگی جهان زدود بسمت روی او دریا را آشنا کردم دیدم که برهمن زاده
نوجوان خوش شکل مرتاض را از تیر کشتم بار جتا بر سر دارد و کلس یعنی سبوی مسی پر آب
نزدیکیست و از خاک تمام وجود آلوده هست فی الفور موبده یعنی انجلی دست از آب دریا پر کرده
بدهن او چکانده بارام دادن او پرداختم و آنحالت او دیده جگر من هم غم آلوده گشت پسر که
چشم وا کرده از برهمی مرا گفت ای راجه من جهته پدر برای آب آمده بودم ترا چه گنه کردم که
بکشتی بیک تیر مرا و مادر و پدر مرا که هر دو نابینا اند هلاک کردی و آنها از دیر تشنه اند و تحقیق
ثمره ریاضت و جوگ هیچست که اگر پدر من اینحالت مرا دانند و اگر دانند چه خواهد کرد طاقت
آمد و رفت ندارند ای راجه زود برو و پدر مرا بگو شاید از غصه ترا سوخته خاکستر بکنند چنانچه آتش
چوب را همین نزدیک هست مکان پدر من او را پسند خاطر کن تا نزا هم تنها نشود اینقدر

सर्ग-७४

जगदत्त की दशा

एक क्षण बाद जगदत्त को होश आया और उसने फिर रोना आरम्भ कर दिया कि मुझ नवयुवक का पिता नहीं जानता कि मैं वन में मृत पड़ा हूँ अब मेरे माता-पिता के लिये जल और फल कौन लायेगा लेकिन मैं जो यहाँ मृत पड़ा हूँ कुछ नहीं जानता कि मेरे माता-पिता ने कोई पाप किया होगा । मेरी हत्या किये जाने से वह भी न मर जायें मैं उनका एकमात्र पुत्र था। मेरी हत्या के बाद वह क्या करेंगे ?इस प्रकार मैंने (दशरथ) अटकते हुए उसकी बातें सुनीं। इधर सरयू नदी के किनारे अंधेरा बहुत था कुछ दिखाई नहीं दे रहा था और जगदत्त नदी के उस पार रो रहा था और मैं इस पार सुन रहा था। एक क्षण बाद जब चन्द्रमा निकला और संसार का अंधकार दूर हुआ तो मैं नदी में तैरकर उस ओर गया । देखा कि मैंने एक सुन्दर नवयुवक ब्राह्मण पुत्र की तीर से हत्या कर दी है जिसके सर पर जटा है और जल से भरा हुआ सुनहरा मटका उसके निकट है। उसका सम्पूर्ण शरीर मिट्टी से भरा हुआ है। तुरन्त मैंने नदी से एक चुल्लू पानी भरकर उसके मुँह में टपकाया ताकि उसे कुछ आराम मिले उसकी दशा देखकर मेरा हृदय भी दुखी हो गया। ऋषि के पुत्र ने आँख खोलकर क्रोध से मुझसे कहाः हे राजा ! मैं पिता के लिये पानी लेने आया था। मैंने आपका क्या बिगाड़ा था कि आपने मुझे मारा। आपने एक ही बाण से मुझे और मेरे माता-पिता को जो सूर है मार डाला। वह दोनों देर से प्यासे हैं और तपस्या तथा जोग का फल निष्फल है कि मेरे पिता मेरी यह स्थिति नहीं जानते और यदि जान भी लेंगे तो क्या करेंगे। उनमें चलने फिरने की शक्ति नहीं है, हे राजा ! शीघ्र जाइये और मेरे पिता को बताइये अन्यथा वह संभवतः आपको क्रोध में जलाकर भस्म कर देंगे। जैसे कि आग लकड़ी को कर देती है। मेरे पिता का घर यहीं निकट है उनको सान्त्वना दीजिये कि आपको कोई हानि न पहुँचे।

پسر رکهه مرا گفت من بامید زیستن او تیر را از زور کشیدم او هک هک نموده چشم را
بر گردانیده بیجان گشت و من از مردن او غمگین تر شدم درینجا صورت راجه دشرتهه که آب در دهن
جک دت میریزد و تیر بر می آرد و سبوی مسی پر آب نهاده و صورت دریای سرجو

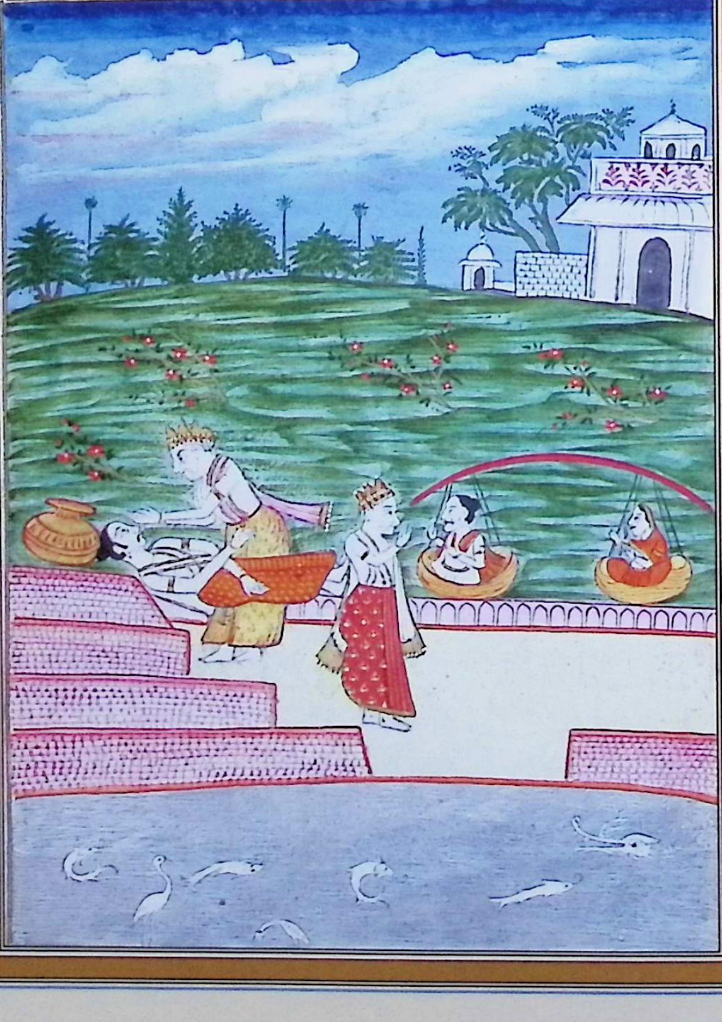

ऋषि के पुत्र ने मुझसे इतना कहा मैंने उसके जीने की इच्छा में बाण को पूरे बल से खींचा। वह हकहक करके और आँख फिराकर निर्जीव हो गया मैं उसकी मृत्यु से बहुत अधिक दुखी हो गया।

राजा दशरथ का चित्र जो जगदत्त के मुख में पानी टपका रहे हैं और बाण निकाल रहे है तथा पानी से भरा हुआ सुनहरा मटका और सरयू नदी का चित्र।

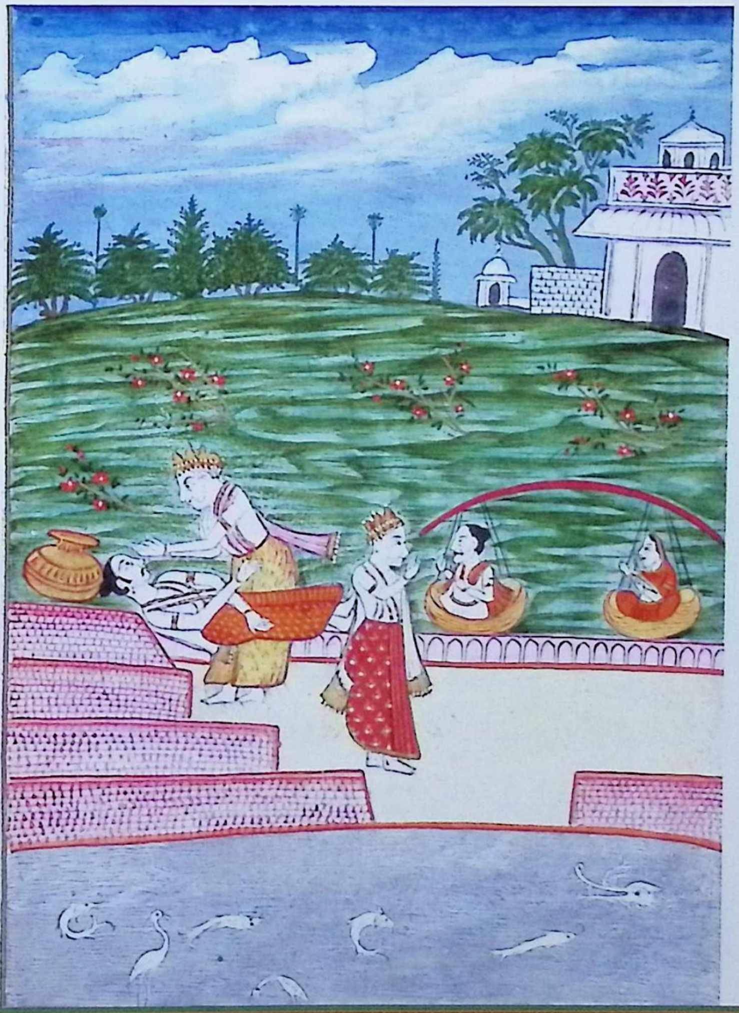

سر مردن راجه دشرتهه راجه از گریه بکوشلا میگوید که من آن کلس پر آب را گرفته بمکان
پدر و مادر او رفتم و آن هر دو نابینا را در انجا چون طیور بال شکسته دیدم که هر دو انتظار
آمدن پسر میکنند هر گاه آواز پای من شنیدند پدر گفت ای پسر اینقدر دیر چرا کردی آب را
زود بیار ای جگ دت چرا در آب بسیار بازی نمودی و من منتظر تو بودم اگر من با
مادر تو نارضامندی کرده باشم رنجیده نشوی زیرا که ما بی پناهان را پناه تونی ای پسر چرا
جواب نمیدهی راجه دشرتهه گوید که از گریه دست بسته ترسان گفتم که من پسر تو نیستم دشرتهه نام
چهتری ام من بامید کشتن فیل وغیره بر کنار سر جو آمده بودم پسر ترا تیر زدم چون بر آوردم
بیجان گشت ندانسته کشته ام بر من غصه کردن روا ندارید ریکهه از طیش گفت تو بیخ نسب
کندی از نسل شما کسی چنین نکرده مرا هم آنجا ببر که او را ببینم شاید از تلمیس من دست گذاشتن
زنده شود من تنها آن هر دو را در انمکان بردم مادر او را از زبان لیسید و گریه کرد چنانچه
گاو ماده به بچه خود و گفت ای پسر چرا با من سخن نمیگوئی بر داشت من که خواهد کرد بعد از آن
پدر وجود او را تلمیس نموده گفت برخیز ای پسر در کنار من آ شب آخر که را تعلیم خواهم کرد و از
زبان که شاستر خواهم شنید و شاک و مول و ثمر از جنگل که خواهد آورد این والده تو ریاضت
کش هست احوال ما نابینایان چسان خواهد بود تو تنها ازین عالم مرو صبح من و والده تو
همراه میروم چکنم جرم گشت و رفت و گرنه از و گدائی جان تو کردمی و سند مهیا نموده غسل کرده

सर्ग-७५

राजा दशरथ की मृत्यु

राजा रोते हुए कौशल्या से कहते हैं कि मैं पानी से भरा हुआ वह मटका लेकर उसके माता-पिता के घर गया और उन दोनों नेत्रहीनों को वहाँ पक्षियों की भाँति फड़फड़ाते हुए देखा कि दोनों बेटे के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। जिस समय उन्होंने मेरी पदचाप सुनी, पिता ने कहा इतनी देर क्यों किया शीघ्र जल लाओ जगदत्त! तुम पानी में देर तक क्यों खेले और मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करता रहा। यदि मैंने तेरी माता के साथ कोई अप्रसन्नता वाली बात की हो तो तू दुखी मत हो क्योंकि हम बेसहारों का तू ही सहारा है। पुत्र तू उत्तर क्यों नहीं दे रहा है ?राजा दशरथ कहते हैं कि मैंने रोते हुए और डरते हुए हाथ जोड़कर कहा कि ‘‘मैं आपका पुत्र नहीं हूँ। दशरथ नाम का एक क्षत्रिय हूँ। मैं हाथी आदि के शिकार की आशा में सरयू नदी के किनारे आया था मैंने आपके पुत्र को बाण मार दिया। जब बाण निकाला तो वह निर्जीव हो गया। मैंने अनजाने में मारा है मुझ पर क्रोध करना उचित नहीं है। ऋषि ने क्रोध में कहा तुमने मेरे पाँच वंशज नष्ट कर दिये तुम्हारे परिवार में ऐसा किसी ने नहीं किया। मुझे भी वहाँ ले चलो कि उसे छूकर देखूँ। संभवतः छूने और हाथ फेरने से जीवित हो जाये। मैं अकेला उन दोनों को उस स्थान पर ले गया। माता उसे ऐसे जीभ से चाट रही थी और विलाप कर रही थी जैसे कि गाय अपने बछड़े के साथ करती है और कह रही थी बेटे मुझसे बात क्यों नहीं कर रहे हो मेरा भार कौन उठायेगा ?फिर उसके पिता ने उसका शरीर छूकर कहा बेटे उठ मेरे निकट आओ रात्रि के अन्तिम प्रहर में किसे शिक्षा दूँगा ?किसके मुख से शास्त्र सुनूँगा ?और शाक, मूल और फल वन से कौन लायेगा ?यह तेरी माता तपस्विनी है हम नेत्रहीनों का क्या हाल होगा। तू अकेला इस संसार से मत जा। प्रातः मैं और तेरी माता साथ चलेंगे मैं क्या करूँ ?यम ने मारा और चला गया, अन्यथा उससे तेरे जीवन की भिक्षा माँगता, पूजा करता, स्नान करता और होम करता।

وهوم ساخته کالبد مرا که بار صاص خواهد پرداخت همچو تو بیگناه را کشته بنابران تو
بمکانیکه شوران یعنی شهیدان میرسند برو و آنها که از مرگ خوف نمیکنند و آنها که
ریاضت میکنند و آنها که تحمل میکنند و آنانکه خدمت گرو و آنانکه جگ میکنند
بجائی که ایشان میرسند تو برو و بمکانیکه بید و بیدانگ دانان رفته و بجایی
راج رکهه حجاتی ناهک و غیره رفته و بخشندگان خانه و آنانکه بغیر اهلیه خود با کسی صحبت
نام پدر حجاتی
نمیکنند و آنانکه گاو ماده و زر می بخشند و زمین میدهند و آنانکه انهنو کبی گاو میدهند
یعنی گاوی که هنگام تولد بچه می بخشند و آنانکه راست میگویند بجائی که ایشان رفته اند
تو برو و بدینگونه برهمن با عورت بگریه و زاری سنسکار آخرت او کرد و بغرف
سونتی
اب داد پسر من بعد از ین کشته شده بود بوجود منور ربّان خوب سوار شده
با پدر گفت از خدمت کردنِ شما من بملوک نیک کرداران رسیدم و شما هم زود
درجه
بمکانِ مطابق خواهش خود خواهید رسید و شما رانی من هم غم مکنید و تقصیر راجه
دشرتهه هم نیست شدنی بود که من بدین آئین هلاک شدم این بگفت و بر آسمان رفت
مادر و پدر او کریا آخرت کرده مرا که دست بسته ایستاده بودم گفت تو که در نسل
اچهواکو مشهوری و با من هیچ دشمنی بابت عورت یا زمین نبود چرا پسر مرا به تیر
زدی من شاپ میدهم که چنانچه حالا از غم پسر من جان خواهم داد همچنین تو هم از غم پ

मेरा शरीर छलनी हो जाता चूँकि तू निर्दोष मारा गया इसलिये जहाँ शहीद जाते हैं वहाँ जा। जो मृत्यु से नहीं डरते, जो तपस्या करते हैं, जो धैर्य एवं संतोष से काम लेते हैं, जो अपने गुरू की सेवा करते हैं, और जो यज्ञ करते हैं, जहाँ यह लोग जाते हैं तू भी वहाँ जा। जिस स्थान पर वेद जानने वाले जाते हैं जहाँ राजर्षि ययाति, नहुष जाते हैं, जो स्थान उन्हें प्राप्त होता है वही तुम्हें भी मिले। वह लोग जो अपनी पत्नी के अतिरिक्त किसी से संग (रति) नहीं कहते हैं, जो गाए, धन सम्पत्ति दान देते हैं, भूमि देते हैं, एक सहस्र गौओ का दान देते है अर्थात् वह गाये जिसे बच्चा देते ही किसी और को दे देते हैं तथा जो लोग सत्य बोलते हैं जहाँ ये लोग गये हैं तू भी वहाँ जा। इस प्रकार उस ब्राह्मण ने अपनी पत्नी के साथ मिलकर उसका अन्तिम संस्कार किया और चुल्लुओं में पानी भरकर दिया। उसके बाद मनु का लड़का जो मारा गया था उसने अपने प्रकाशमान अस्तित्व के साथ विमान पर सवार होकर पिता से कहा आपकी सेवा करने से मैं सज्जन लोगों की श्रेणी में पहुँच गया हूँ। आप लोग भी शीघ्र ही अपनी इच्छानुसार स्थान पर पहुँचेंगे और आप लोग मेरा दुख भी न करें। राजा दशरथ का भी दोष नहीं है यह तो होने वाली बात थी कि इस प्रकार मेरी हत्या हुई। यह कहकर वह आकाश पर चला गया। उसके माता पिता ने उसकी अन्तिम क्रियाकर्म करके मुझसे जो कि मैं हाथ जोड़कर खड़ा था कहाः तुम इक्ष्वाकु के वंश में प्रसिद्ध हो और मेरे साथ पृथ्वी या स्त्री के सम्बन्ध में तुमसे कोई शत्रुता नहीं थी। इसके अतिरिक्त तुमने मेरे पुत्र को तीर मारा। मैं तुम्हें अभिशाप देता हूँ कि जैसे कि मैं अभी अपने पुत्र के दुख में प्राण त्याग दूँगा उसी प्रकार तुम भी अपने पुत्र के दुख

خواهی مرد من این شاپ یافته در شهر خود آمدم و آن رکهه از غم پسر جان داد
بر آسمان رفت هنگام آن شاپ برهمن حالا مرا رسیده به بین که جان من میرود
چشم من میکرود و حافظه فراموش میشود و این دوت ها یعنی قاصدان جم میرسند
اگر رامچندر بر من دست نهد یا کسی گوید که رامچندر آمد شاید زنده مانم آن نیک
کروارند که رامچندر را باز آمده و راجو هیا خواهند دید مثل ماه سرت کال رو و چون
کل چشم نیک و دندان نیک زنگ را به بنیند راجه بدینگونه رام هائی رام یاد کرده پران
گذاشت یعنی جان داد نصف شب گذشته بود که بر بستر پلنگ مقرری خود خفته
بیجان گشت درینجا صورت خانه و راجه دشرتهه بر چارپائی خفته و کوشلا و سومترا نشسته و نمودار

وقت شب ستاره و ماه کردند

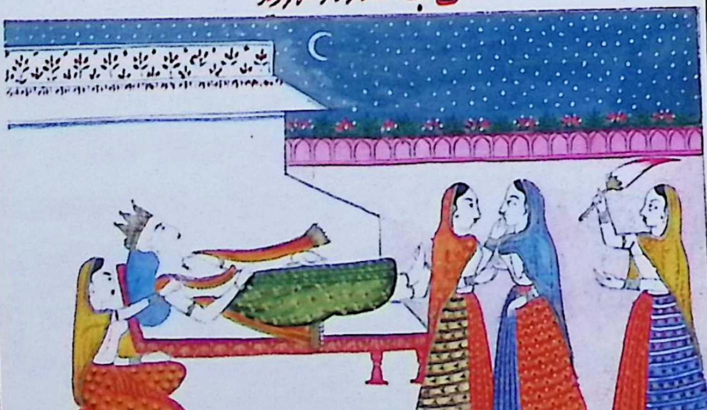

में मरोगे। मैं यह अभिशाप लेकर शहर में आया और वह ऋषि पुत्र के दुख में प्राण देकर आकाश पर चला गया। उस ब्राह्मण के अभिशाप के पूरा होने का समय अब जाकर आया है। देखो कि मेरे प्राण निकल रहे हैं मेरी आँखें फिरी जा रही हैं और स्मरण शक्ति काम नहीं कर रही है। यहाँ मौत के दूत अब पहुँचना ही चाहते हैं यदि रामचन्द्र मुझ पर हाथ रखें या कोई कहे कि रामचन्द्र आ गये, तो संभवतः मैं जीवित रहूँ। वह लोग भाग्यशाली हैं जो रामचन्द्र को वापस आकर अयोध्या में देखेंगे, जो उसका चौदहवीं के चाँद के समान मुख, फूल के समान आँखें, सुन्दर सफेद दाँत को देखेंगे। राजा को इसी प्रकार हाय राम! हाय राम! याद करते हुए मृत्यु हो गयी उन्होंने उसने प्राण त्याग दिये। आधी रात बीती थी कि अपनी निर्धारित मसहरी (पलंग) पर सोये हुए निर्जीव हो गये।

महल का चित्र, राजा दशरथ मसहरी (पलंग) पर सोये हुए हैं और कौशल्या और सुमित्रा बैठी हुई हैं रात के समय का आना और चन्द्रमा व तारों का निकलना।

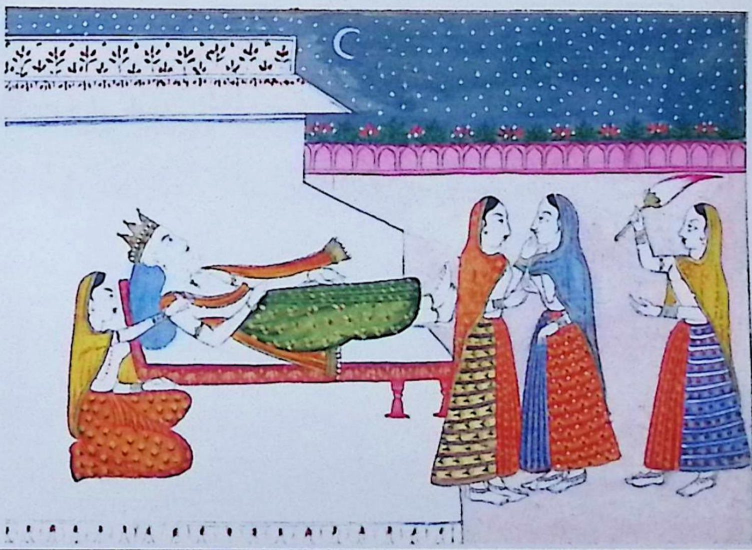

سرک مردن راجه وماتم زنان بدینسان راجه چون غم و اضطراب کرده خاموش شد کوشلا دانست
که خفته است و هیچ نفهمید و با غم پسر خود هم نخسپید چون شب گذشت بندیان یعنی
باد فروشان رائی بیدار کردن راجه رسیدند و سوتها قصه خوان و سرائیدکان وغیره جمع شده
تعریف راجه اغاز کردند از اواز ایشان جانوران درخت و باشندگان پنجره
و طاوسان وغیره بصوت آمدند و برهمنان هونکار بید سر کردند و آنانکه لباس
یعنی داربازان
عورات میکنند رسیدند و سبوهای طلا با آب و چندن آوردند تا راجه غسل کند
و دیگر اشربه و اطعمه مهیا گشت و زنان نوجوان هنرمند حاضر شدند اما هیچ
از حقیقت آگاه نگشتند چون آفتاب برآمد عورتانی که آنان را عزیز میداشت
برائی خبردار کردن راجه بخوابگاه رفتند طاقت دست انداختن ندانسته حیران شده
در لرزه آمدند و کوشلا و سومترا از غم پسران بخواب رفته هیچ نفهمیدند زنان دیگر
وجود راجه را سردتر یافته زاری کردن گرفتند از شور ایشان کوشلا و سومترا بیدار شدند
کوشلا دست بر راجه گذاشته مرده دانسته گریه نمود و کیکئی وغیره عورات هم زاری
آغاز کردند سومترا این شور را شنیده در خانه رفت و دست راجه مرده بگرفت

درینجا صورت خانهٔ راجه بر پلنگ بصورت مردگان افتاده و کوشلا و کیکئی و سومترا
زاری میکنند یکی موی پریشان و دیگر دست بر سر زنان و یکی عورت شرکیال انیان و سومترا دست راجه گرفته

सर्ग-७६

राजा की मृत्यु और स्त्रियों का शोक मनाना

इस प्रकार जब राजा दुख व व्याकुलता प्रकट करते हुए शान्त हो गये तो कौशल्या ने जाना कि वे सोये हुए हैं और वह कुछ नहीं समझीं तथा अपने पुत्र का दुख लिये हुये वह भी सो गयीं। जब रात्रि बीत गयी तो दासी उन्हें जगाने के लिये पहुँची, और गाने वाले आदि एकत्र हुए। उन्होंने राजा की प्रशंसा आरंभ की वृक्षों के पशु, पिंजड़े के रहने वाले पक्षी और मोर आदि सब बोलने लगे तथा ब्राह्मणों ने वेद के छन्द गाना आरम्भ किया। जो स्त्रियों के वस्त्र तैयार करते हैं वह भी सब पहुँचे और सोने के मटके में पानी चन्दन सहित लाए ताकि राजा स्नान कर सकें। खाने-पीने की दूसरी चीजें एकत्र हुईं और सुव्यवस्थित नवयुवतियाँ उपस्थित हुईं लेकिन वास्तविकता का किसी को आभास भी नहीं हुआ। जब सूर्य निकल आया तो वह स्त्रियाँ जो राजा को प्रिय थीं राजा को सूचना देने शयनकक्ष में गयीं। कौशल्या और सुमित्रा पुत्रों के दुख में सोई हुई कुछ न समझ सकीं। दूसरी स्त्रियाँ राजा के शरीर को ठण्डा पाकर रोने लगीं। उनके शोर से कौशल्या और सुमित्रा जाग गईं। कौशल्या ने राजा पर हाथ रखा और उन्हें निर्जीव जानकर रोने लगीं। कैकेयी आदि स्त्रियों ने भी रोना आरंभ कर दिया। सुमंत्र यह शोर सुनकर महल के अन्दर गया और निर्जीव राजा का हाथ पकड़ा।

राजा के महल का चित्र जो पलंग पर शव की भाँति पड़े हुए हैं और कौशल्या कैकेयी एवं सुमित्रा रो रही हैं। एक बाल बिखराये दूसरी स्त्रियों के सर पर हाथ मारती हुई। एक दो स्त्रियाँ उनके दुख में सम्मिलित हैं और सुमंत्र राजा का हाथ पकड़े हुए हैं।

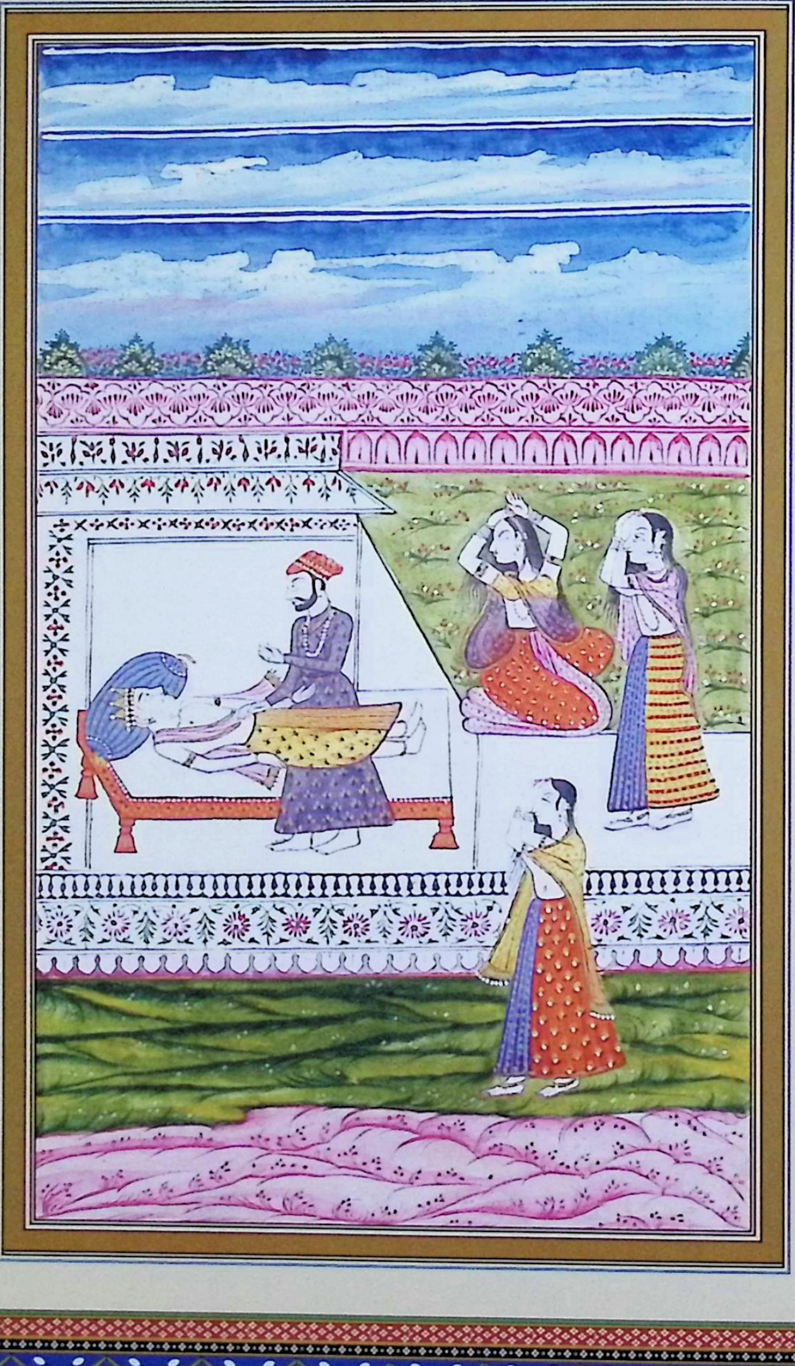

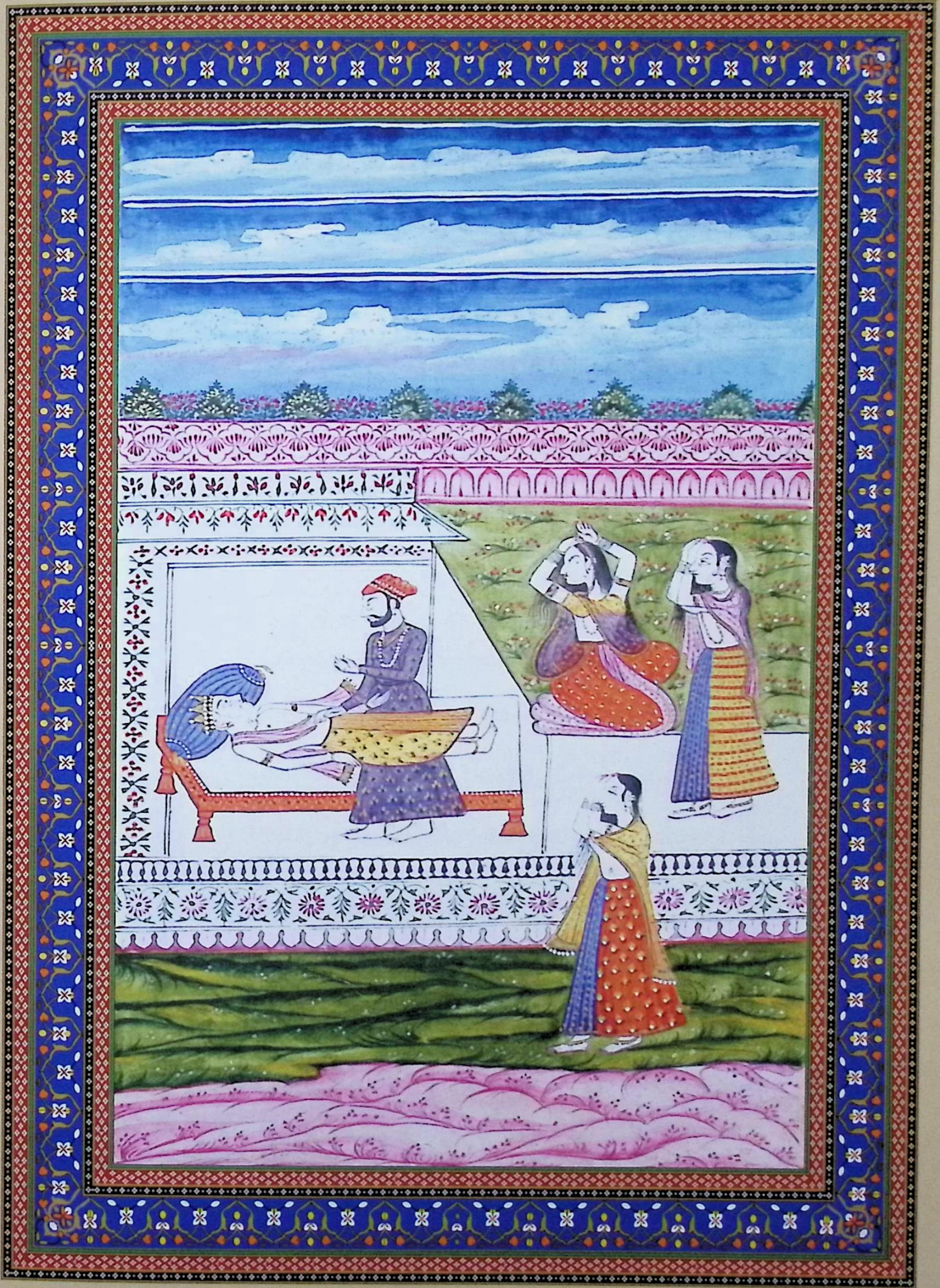

مرگ زاری کوشلا راجه را چون آتش بی شعله و ابر بی آب و آفتاب بی شعاع دیده گریه
و زاری آغاز کرد ای راجه تو نیک هستی که از غم پسر جان دادی و مرگ جان مرا نگرفت
و من سفله ام که از کمینه طوری زنده ام و من مردن را لایقم کیکئی تو بعافیت باش
و راج بی خار کن بعد فوت شوهر کدام زن زندگی خود میخواهد بغیر از کیکئی که بیوه شدن
و کیرت رفتن ازین کار یافته است از سبب منتهرا کوز پشت تمام نسل را کشت رامچندر را
تا چهارده سال بصحرا فرستادی و دختر راجه بدیه را که نوجوان و ریاضت کش است
این حقیقت را شنیده راجه جنک پدر او خواهد طپید چنانچه من میطپم و تو که برای بهرت
پسر خود این کار کرده او هرگز راضی نخواهد شد او دهرماتما و بی غصه و بر کار برت مستقیم است
بلکه عقب رام خواهد رفت مهاراجه در از دست بسیار عاقل مرد و مرا به سمندر غم غرق کرد
من که با تو نزدم بسیار سفله ام و دهرم که با تو سوختن است بامید دیدن رام نمیتوانم
بعمل آورد و چنان کسی نیست که از مرگ خود بقوت برآید مطابق عمر خود هر کس زنده میماند
بعد رفتن دشرته بسرگ و رفتن رام بصحرا من نتوانم مرد که زندگی زورآور تر است
رام کجاست و لچهمن کجا و سیتا کجا که مرا چون نگرود ده یعنی پر شکسته نمی بیند
سیتا که با شوهر رفت و از وام او خلاص شد آفرین باد برو او به پت لوک
خواهد رفت شوهر عورات را بجای پدر محافظ است و شوهر مرشد است و شوهر حاکم است

وشوهر

सर्ग-७७

कौशल्या का विलाप करना

कौशल्या ने जब राजा को बिना ज्वाला के अग्नि, बिना जल के बादल और बिना किरणों का सूर्य बना देखा तो रोना विलाप करना आरंभ कर दिया। "हे राजा ! आप भाग्यशाली है कि पुत्र के दुख में प्राण त्याग दिये। मौत ने मेरे प्राण नहीं लिये, मैं निर्लज्ज हूँ और अपनी निर्लज्जता से जीवित हूँ। यद्यपि मैं मरने के योग्य हूँ। कैकेयी तू शान्ति से रह और बिना काँटों के राज्य कर। अपने पति के मरने के बाद कैकेयी के अतिरिक्त कौन सी पत्नी अपना जीवन चाहती है ?कैकेयी जिसे विधवा होना और कीर्ति जाना, उसके इस कार्य से तय हुआ कि उसने कुबड़ी मन्थरा के कारण सारे परिवार को मार डाला। तूने रामचन्द्र को चौदह वर्ष के लिये वनवास भेज दिया और राजा की सुन्दर पुत्री को भी वनवास भेज दिया जो युवा और तपस्विनी है। यह वास्तविकता सुनकर उसका पिता राजा जनक तड़पेगा जैसे कि मैं तड़प रही हूँ। तूने अपने पुत्र भरत के लिये यह कार्य किया है वह कदापि यह नहीं मानेगा। वह धर्मात्मा है, क्रोधहीन है, वह राम के पीछे जायेगा, वह महाराजा है, बहुत बुद्धिमान व्यक्ति है। मुझे दुख के सागर में डुबो दिया। मैं तेरे साथ नहीं जाऊँगी तू बहुत धूर्त है। और धर्म कि तेरे साथ जलना है, मैं राम को देखने की आशा में उसका पालन नहीं कर सकती। ऐसा कोई नहीं है कि, अपनी मृत्यु से, शक्ति के बल से छूट जाये। अपनी आयु के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति जीवित रहता है दशरथ के स्वर्ग में और राम के वन में जाने के बाद मैं मर नहीं सकती, क्योंकि जीवन अधिक शक्तिशाली है। राम कहाँ हैं ?लक्ष्मण कहाँ हैं ?और सीता कहाँ है ?वह मुझे टूटे हुए वट के समान नहीं देख रहे हैं। सीता जो अपने पति के साथ गयी उसके जाल से आज़ादी पा गयीं। धन्य है वह कि पति लोक में जायेगी। पति स्त्रियों के लिये पिता के स्थान पर संरक्षक होता है। और पति, पति है और पति जग है और पति सुख है"।

وشوهر آرام است بدین آئین کوشلا گریه وزاری میکرد که بشسٹ گرو از در آمد
وتسلی ودلاسا او کرد کوشلا وغیره را ازانجا بیرون کرده مکان را خالی ساخت
وازروغن کنجد وغیره بمحافظت وجود راجه پرداخت بعده وزرا راجه دشرته و بشسٹ
وغیره مشورت نمودند تمام کریا وسوختن راجه بغیر پسر سزاوار نیست بنابران نگاه باید داشت
همچنان کردند وعورات راجه دست برداشته گریه وماتم میکردند تا که شب شد درینجا صورت حال
وراجه بر پلنگ بطور اول وصورت بشسٹ وسومنتر ودیگر وزرا یکطرف بمشورت اند وراجه

درحوض روغن کنجد افتاده

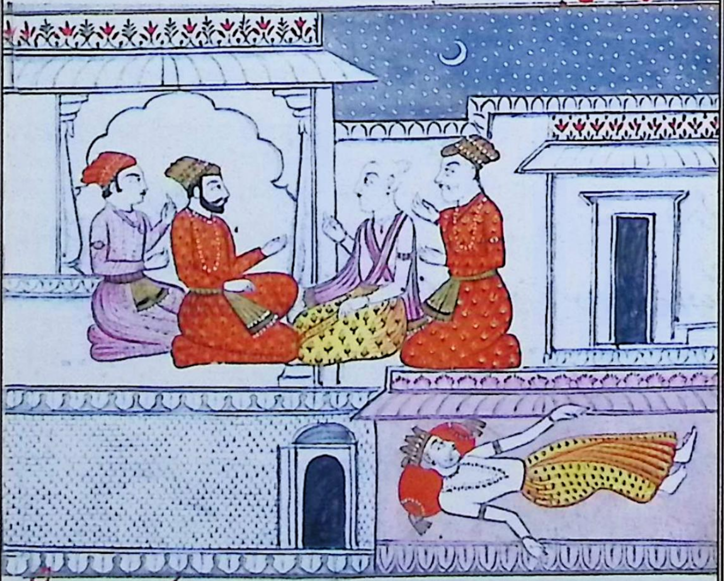

کس آمدن متصدیان

कौशल्या इसी प्रकार विलाप कर रही थी कि वशिष्ठ गुरू द्वार से प्रविष्ट हुए और उसको सान्त्वना दिया। कौशल्या आदि को वहाँ से बाहर करके घर को खाली किया और तिल आदि के तेल से राजा के शरीर की रक्षा की। उसके बाद राजा दशरथ के मन्त्री और वशिष्ठ आदि से परामर्श किया कि अन्तिम संस्कार करना और राजा को जलाना बिना पुत्र के उचित नहीं है इस कारण शरीर को सुरक्षित रखना चाहिये। सबने ऐसा ही किया और राजा की पत्नियों ने हाथ उठा-उठाकर शोक व विलाप किया। यहाँ तक कि रात हो गयी।

महल का चित्र राजा पहले की भाँति पलंग पर हैं और वशिष्ठ, सुमंत्र तथा दूसरे मन्त्री का चित्र जो एक ओर परामर्श में व्यस्त हैं एवं राजा तिल के तेल के हौज़ में पड़े हुए हैं।

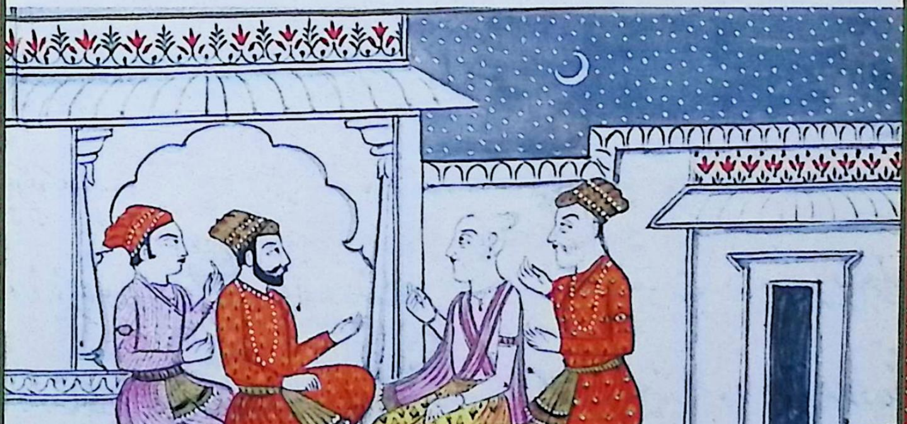

راجه دشرته چون شب رفت و شفق صبح برآمد همه تصدیان و کارگذاران راجه در سبها
یعنی در دیوان رسیدند مثل مارکندی و موتگل و بام دیو و کشب و کاتاین و جاوالی
و گوتم وغیره برهمنان و وزرا و امیران راجه به نشست گفتند شب فوت راجه
که از غم چون صد سال بود بگذشت و بهرت و شتر گهن بنجانه راجه کیکه هستند
کسی را از نسب اچهواکو راج باید داد زیرا که بی راجه شهر و ملک خراب میشود و در شهر
بی راجه باران نبارد و تخم افشانده نشود و زن گفته شوهر نکند و در شهر زر نماند
و برهمنان جگ نتوانند نمود و مردم همیشه باغ و خانه تعمیر نمینمایند و سرایندگان
و رقاصان سرور و شادی نتوانند کرد و کودکان با گوندل یعنی گوشواره و میکهلا یعنی
پوشش میان که از طلا باشد نتوانند نمود و افسانه گویان با فسانه شغل نمایند و زرداران
وغیره دروازه بسته نتوانند خفت و فیلان مست شصت روز با گهنتا یعنی جرس
و پتاکا یعنی نشان در شاه نتوانند رفت و آواز کمان شنیده نشود و مردم دور روان
دور تر زوند و جوک و جهیم یعنی تحمل نتوانند بود و دشمن کشته نشود چنانکه گاوهای بی چرانندهٔ
و صحرای بی گاه و دریای بی آب همچنان بی راجه شهر باشد گویا از ظلمات و تاریکی شهر
پر است آنکه دهو جار مایان بود آن راجه هلاک شد بنا بر آن کسی را از نسب اچهواکو راج بده

درینجا صورت دیوان عام راجه دشرته و نشست و مارکندی و موتگل و بام دیو و کشب

सर्ग-६६

जब रात बीत गयी और सुबह की किरण निकली तो राजा के सारे कार्यकर्ता दीवान में पहुँचे जैसे मार्कण्डेय, मौदगल्य, वामदेव, कश्यप, कात्यायन जाबालि और गौतम आदि। राजा के मन्त्रियों, अमीरों और ब्राह्मणों ने वशिष्ठ से कहाः ''राजा की मृत्यु होने पर रात्रि जो दुख में सौ वर्ष के बराबर थी बीत गयी और भरत एवं शत्रुघ्न राजा केकय के महल में हैं। इक्ष्वाकु के परिवार में से किसी को राज्य देना चाहिए। क्योंकि बिना राजा के शहर तथा देश खराब होता है और बिना राजा के शहर में वर्षा नहीं होती है, बीज नहीं डाला जाता है। पत्नी पति की बात नहीं मानती है, शहर में धन नहीं होता है। ब्राह्मण यज्ञ नहीं कर सकते हैं, लोग सदा बाग़ और घर का निर्माण नहीं करते हैं और गाने वाले, और नाचने वाले प्रसन्नता प्रकट नहीं कर सकते हैं, बच्चे कान में बाली और सोने का टपका नहीं पहन सकते हैं, कथाकार कथा नहीं सुना सकते और धनवान आदि दरवाजा बन्द करके सो नहीं सकते हैं। मस्त हाथी साठ दिन तक कंठा अर्थात् घण्टी के साथ नहीं चल सकते हैं, धनुष की ध्वनि नहीं सुनी जाती है, दूर जाने वाले लोग अधिक दूर नहीं जाते हैं, तथा जोग व जहीम अर्थात् धैर्य व सन्तोष नहीं कर सकते हैं और शत्रु मारा नहीं जा सकता है। जैसे कि गायें बिना चारागाह के, वन बिना घास के और नदी बिना पानी के होती है इसी प्रकार बिना राजा के शहर होता है। अन्यथा अंधकार से शहर भरा हुआ होता है जो हमारा आश्रय था उस राजा का देहान्त हो गया। अतः इक्ष्वाकु के परिवार में से किसी को राज्य दे दीजिये।

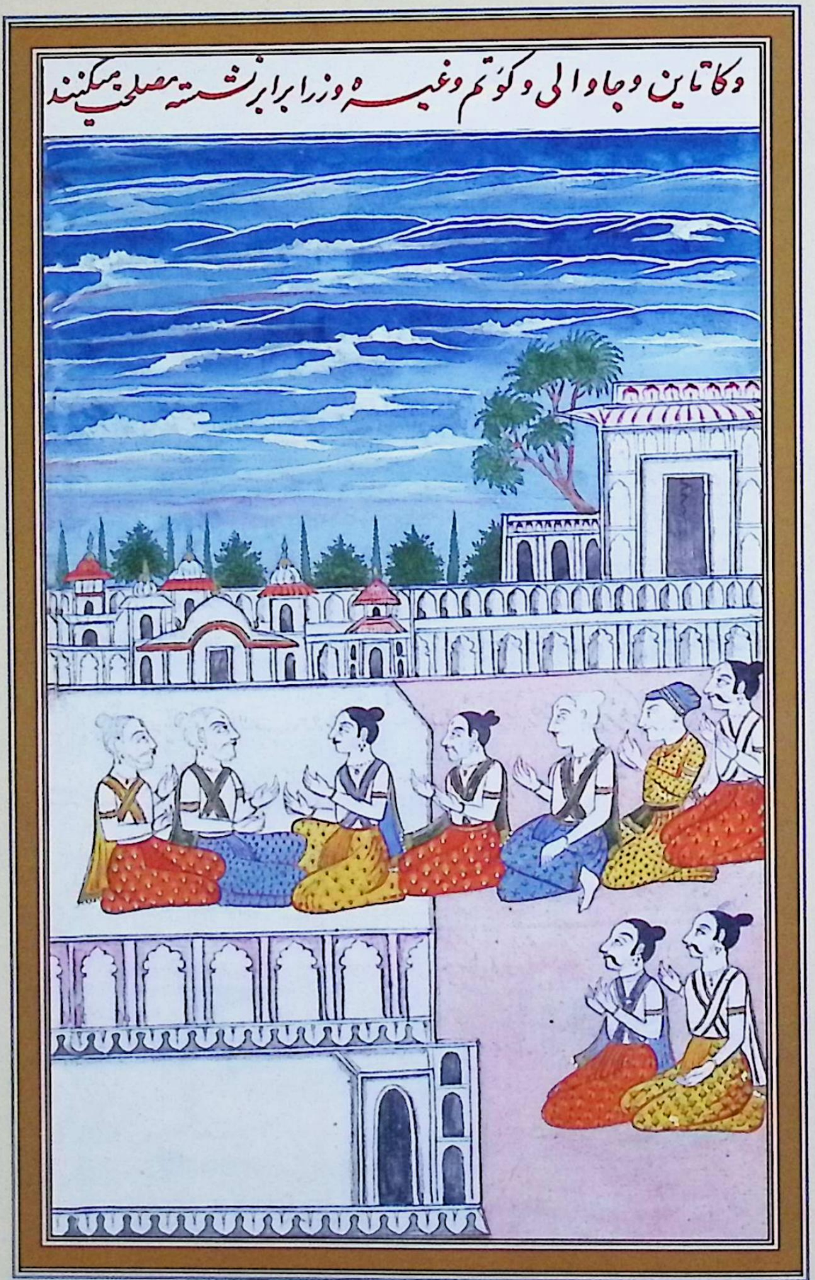

وکاتاین و جاوالی و گوتم وغیره وزرا برابر نشسته مصلحت میکنند

राजा दशरथ के दीवाने आम का चित्र और वशिष्ठ, मार्कण्डेय, मौदगल्य, वामदेव, कश्यप, कात्यायन, जाबालि और गौतम आदि तथा मन्त्री बराबर बैठे परामर्श कर रहे हैं।

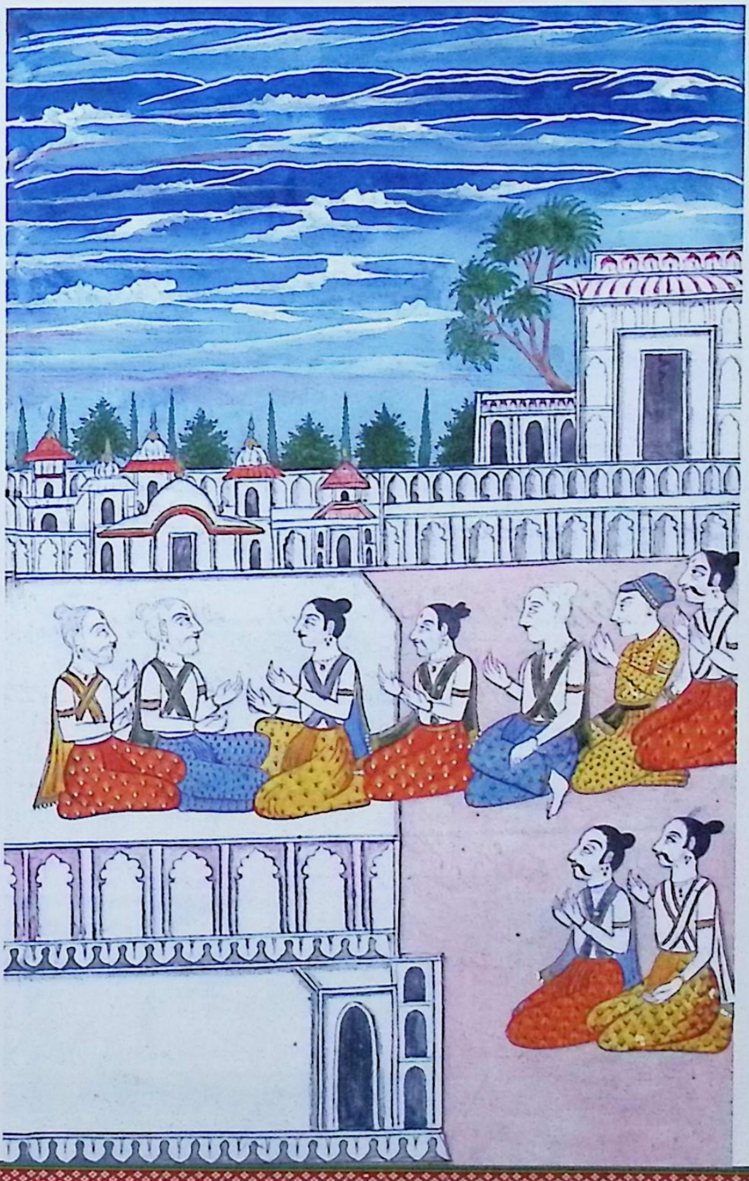

مرک **طلبیدن بهرت** بشست گفته آنهارا شنیده گفت باوجود بهرت کرا راجه کنیم اگرچه کیکئی از بی شعوری خواسته امامرا به بهرت راج باید داد بعد از آن بشست باستصواب وزرا و امرا دوت یعنی رسولان تیز رو را فرمود که شما را نزد بهرت باید رفت و اورا رفتن برادران بصحرا و مردن پدر هیچ نباید گفت همین باید گفت که پروهت بسرعت تمام طلبداشته است و پارچه های و پیرایه های لطیف بارتهه باید برد و بتدبیر اورا باید آورد و از فرموده بشست رسولان تیز گام هنگام نیم شب روان شدند و براه هستناپور از گنگا عبور کردند در میان پانچال و پس رسیدند و از کوه و جنگل گذشته نزدیک مکونج درخت آمدند در شهر بهولنگان داخل شدند و راجی کال و مجهومتی دریا وغیره تالاب و دریا را تماشا کنان زودتر رفتند نزدیک دریای ستدر رسیدو از ملک بالنکان گذشتند و قدم آتشن را و دریای بپاشا را دیدند از سرعت ما بین هفت شب نزد بهرت رسیدند و داخل شهر گردیدند

درینجا صورت مکان راجه کیکیه و درانجا بهرت
و شترگهن برابر نشسته و یاران بهرت هم نشسته
روبرو سخن میگویند و یکه و طنبورچی
و سازندگان بسرود سرای مشغول اند

सर्ग-७८

भरत का बुलाया जाना

वशिष्ठ ने उनकी बात सुनकर कहा, मैं भरत के रहते हुए किसको राजा बनाऊँ ?यद्यपि कैकेयी ने अपनी मूर्खता से ऐसा चाहा है परन्तु मुझे भरत को राज्य देना चाहिए। उसके पश्चात् वशिष्ठ ने मन्त्रियों, गणमान्य व्यक्तियों से परामर्श करके तीव्र गति वाले संदेशवाहक से कहा कि तुमको भरत के पास जाना है। परन्तु उससे भाईयों के वन जाने और पिता के स्वर्गवास के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहना है। केवल इतना कहना है कि पुरोहित जी ने आपको तुरन्त बुलाया है। रथ के साथ उत्तम वस्त्र और अन्य सामान भी ले जाना चाहिए और उसे किसी प्रकार यहाँ लाना है। वशिष्ठ के आदेश से तीव्र गति वाले संदेशवाहक अर्ध रात्रि के समय चले और हस्तिनापुर के मार्ग से गंगा को पार किया। पंजाब के देश में पहुँचे और पर्वत, वन से गुजरते हुए कोज वृक्ष के निकट पहुँचे। कुलिंगा नगर में प्रविष्ट हुए और राजीकाल मधुमति नदियों, तालाब और अन्य नदियों को देखते हुए शीघ्र आगे बढ़ गये और सतलज नदी के निकट पहुँचे तथा मालंगों के देश से होते हुए आगे बढ़े। विष्णु के चरण और विपाषा नदी देखा और सात दिन के अन्दर बहुत शीघ्र भरत के पास पहुँच गये और नगर में प्रविष्ट हुए।

राजा केकय के महल का चित्र जहाँ भरत व शत्रुघ्न साथ बैठे हुए है। भरत के मित्र भी सामने बैठे बातें कर रहे हैं और एक दो तंबूरे वाले गायक गाने में व्यस्त हैं।

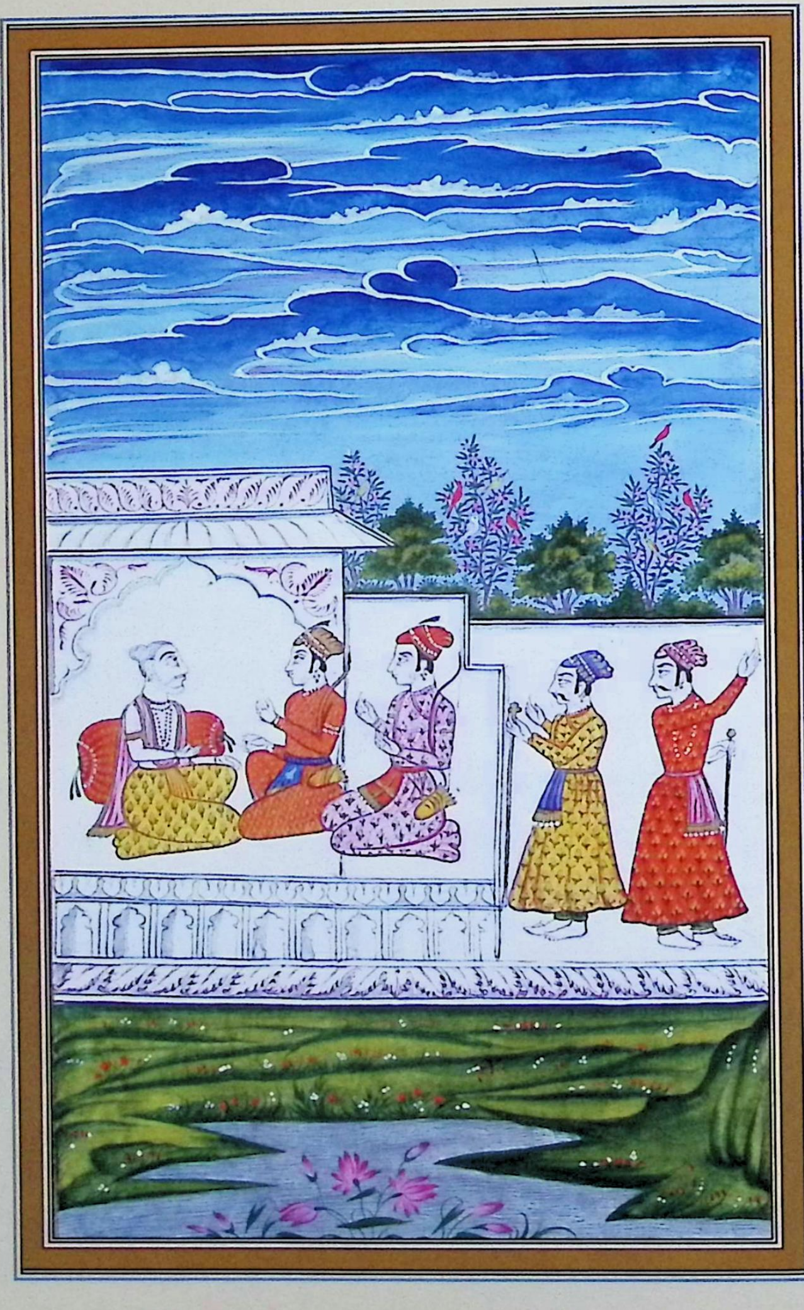

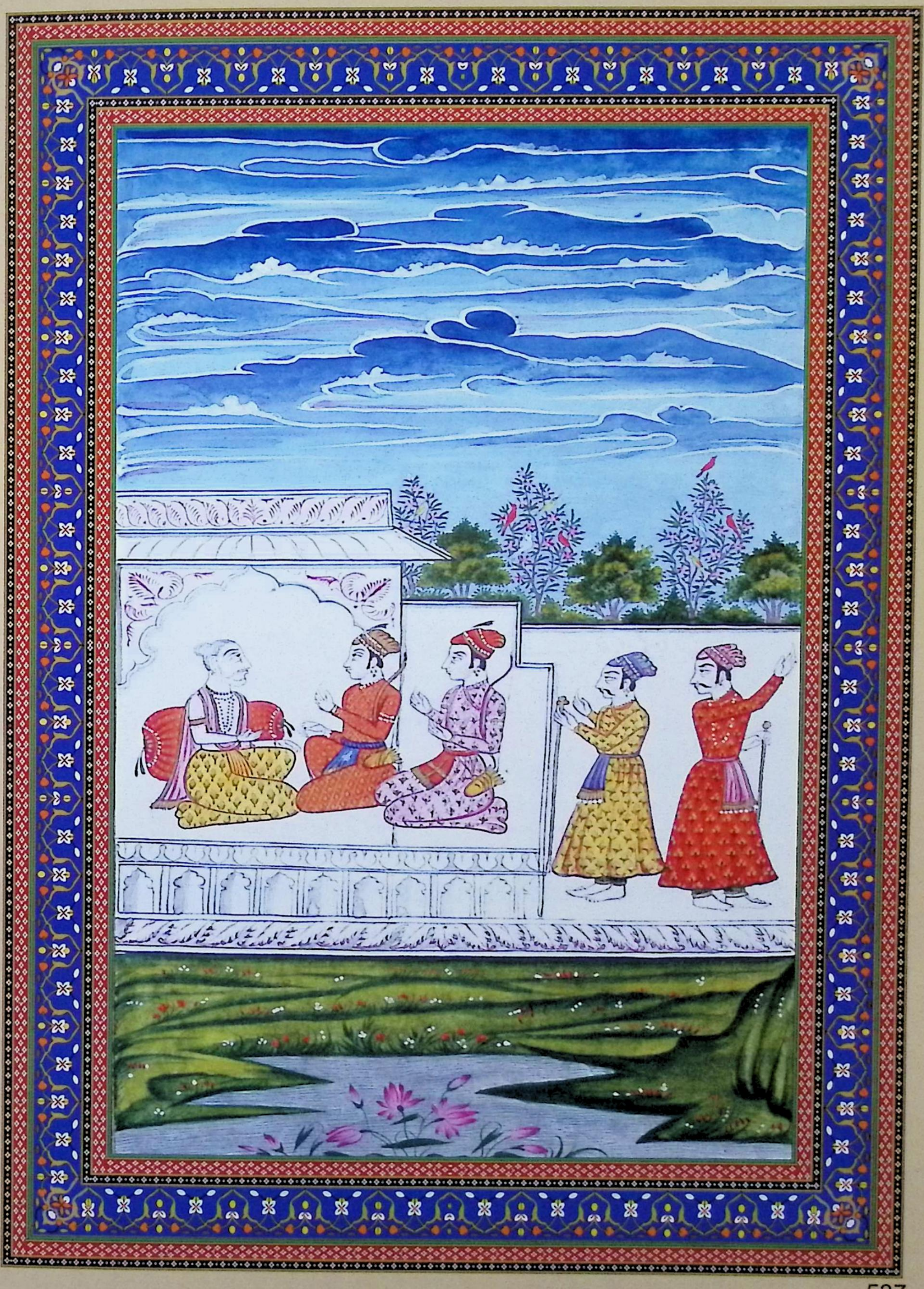

سرگ جواب و سوال هنگام یک پاس شب گذشته در شهر در آمدند و بهرت را هم در آن شب
خوابهای خوفناک نمودار شده بود یعنی خود را در گند کی آلوده و بدیگر وضعهای
زبون دید صبح از آن غم میطپید و از الم میکپید یاران همجنس و دوستان اینحالت
دریافته چند سخنان فرحت آمیز میکردند و سرود میسرائیدند و رقص مینمودند
او بآن دل نهاده خوشوقت نمیشد دوستی همجنس از بهرت پرسید چرا خورم و خندان
نمیشوي بهرت در جواب گفت من خواب پریشان دیده ام و آنچنان است که سمندر
خشک شد و قمر بر زمین افتاد و از ابر تاریک تمام جهان اندوده است و پدر من با جامه
چرکین ملوث و موی سر پراکنده از قله کوه در تالاب سرگین مي افتد و بار بار خنده
کرده روغن کنجد مینوشد و آنرا نوشیده سر فرو کرده تمام وجود را در روغن
کنجد آلوده در روغن امیگردد و پدیده که چارپائی خورد و تکیه دار در هندي می باشد
بر و نشسته جامه سیاه پوشیده و پدیده هم سیاه است و عورات سیاه و زرد رنگ
بر راجه میخندند و میدوند و رنگ سرخ می آلایند و بر رتهه خران سمت دکن میرود و گویند
بدینحالت برد داوزود درچیار رود یعنی بمیرد اینقدر من خواب ترسناک دیده ام یا من
یا رام یا راجه یا لچهمن ازینجا یکی بمیرد این خواب را دیده خاطر من خوف را نمیگذارد

درینجا صورت بششت و یکدو وزراء دیگر که در دیوانخانه راجه نشسته دو کس را برای آوردن

सर्ग-७६

प्रश्न व उत्तर

एक प्रहर रात व्यतीत होने पर नगर में आये भरत को भी उस रात भयानक स्वप्न दिखाई दिये अर्थात् उसने स्वयं को गन्दगी में लिप्त और अन्य बुरी स्थिति में देखा। प्रातः को उसकी स्थिति दयनीय थी। दुख के मारे तड़प रहा था और दुख से पीड़ित था। मित्र आदि यह स्थिति देखकर यथासंभव उसके मन को प्रसन्न करने का प्रयास कर रहे थे। गाने ग़ा रहे थे, नृत्य कर रहे थे परन्तु भरत का मन उसी में लगा था वह किसी प्रकार प्रसन्न नहीं हो रहा था। एक अभिन्न मित्र ने भरत से पूछा आप प्रसन्न क्यों नहीं हो रहे हैं?भरत ने उत्तर में कहा, "मैंने एक भयानक सपना देखा है और वह यह है कि समुद्र सूख गया है। चन्द्रमा पृथ्वी पर गिर पड़ा और काले बादलों से समस्त पृथ्वी ढक गयी है। मेरे पिता पुराने कपड़े पहने हुए हैं सर के बाल उलझे हुए हैं, पर्वत की चोटी से तालाब में गिरते हैं। बार-बार हँसते हुए सरसों का तेल पीते हैं और उसको पीकर शीश झुकाकर अपने पूरे शरीर में तेल लगाते हैं एवं तेल कुंड में गिर जाते हैं। एक घाट पर काले वस्त्र पहने हुए बैठे हैं, घाट भी काला है और काले तथा पीले रंग वाली स्त्रियाँ राजा पर हँस रही हैं। भभूत मल रही हैं और वह गधों के रथ पर दक्षिण की ओर जा रहे हैं। कहते हैं कि जो इस स्थिति में जाता है वह अतिशीघ्र चिता में जाता है अर्थात् मर जाता है। मैंने यह भयानक स्वप्न देखा है इसके अनुरूप या तो मैं या राम या राजा या लक्ष्मण इनमें से कोई एक मरेगा। यह स्वप्न देखकर मेरे हृदय से भय नहीं निकल रहा है।"

वशिष्ठ और एक दूसरे मन्त्रियों का चित्र जो राजा के दीवान खाने में बैठे हुए हैं और दो व्यक्तियों को, भरत को लाने के लिए विदा कर रहे हैं।

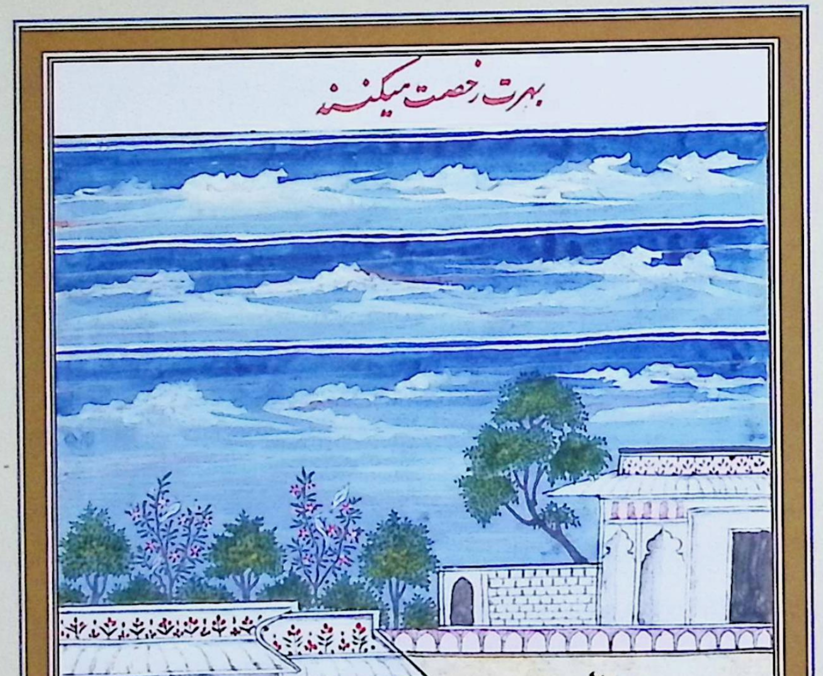

بهرت رخصت میکنند

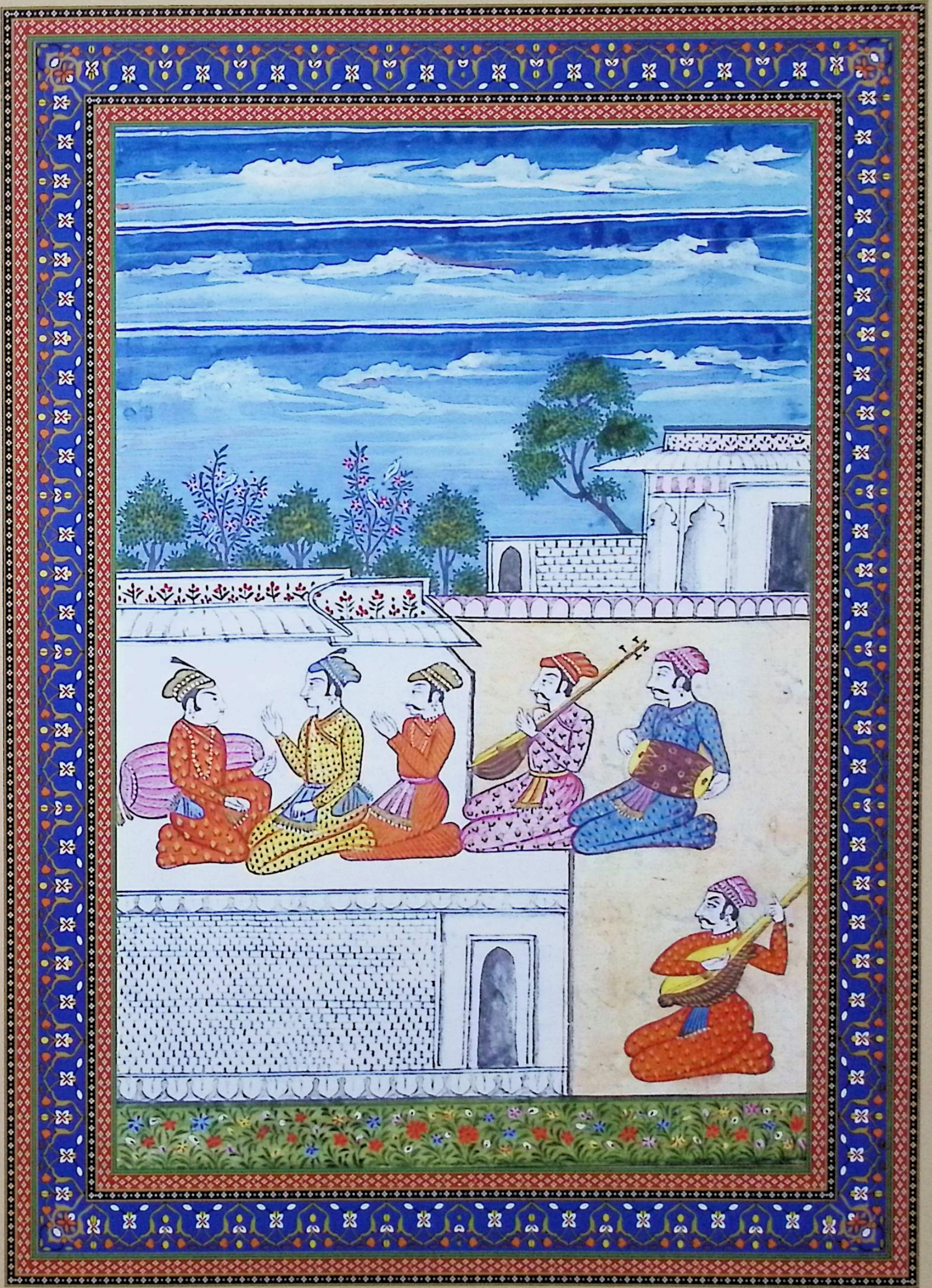

مرک روان شدن بهرت آن دوست گفته بهرت را شنید و گفت بسیار خوابهاست
که راست و دروغ هم میباشد تو همه کار بر تقدیر بگذار که بی آن پناهی نیست بهرت در
همین فکر بود که رسولان رسیدند در بارگاه راجه آمده قدمبوسی کرده به بهرت
گفتند که بششت پروهت و دیگر وزرا و مشورتیان خیر و عافیت گفته اند و ترا
بزودی طلب داشته اند و این سوبهای قیمتی قریب چهل کرور زر بگیرید بهرت
همه را گرفته پرسید چه راجه دشرته بعافیت است و رامچندر و لچهمن بی تصدیع اند
و کوشلا و دهرماتما بی آزار است و سومترا والده لچهمن و شترکهن را خود آزار نیست
و خود فروش و غصه دار کیکئی والده من نیکو هست رسولان مجمل گفتند خیر است
و خیریت تو میخواهند گفته ایشان را شنیده بهرت به پدر مادر خود گفت من بخانه
پدر خود میروم هرگاه یاد خواهی کرد باز خواهم آمد راجه کیکه فیل و شال باف و اجن و دیگر پوستین
پارچه های قیمتی داد و سه هزار و ششصد نشک داد و اسپان داد و ماهون دینار
اشترهای قوی هیکل همراه داد و مردم شهر اسپان بسیار نذر آوردند
و صدها رتهه مندل دار طیار کردند و بر اشتر و گاو و خرها سوار شده مردم همراه شدند
بهرت با شترکهن بر رتهه سوار شده بخانه پدرش روان شد چنانچه سده پور که باندرلوک

برود و درینجا صورت راجه کیکه بر تخت نشسته و بهرت و شترکهن رو برو استاده

सर्ग-८०

भरत का प्रस्थान

उस मित्र ने भरत की बात सुनकर कहा- बहुत से स्वप्न होते हैं जो सच्चे भी होते हैं और झूठे भी। आप सारा कार्य भाग्य पर छोड़ दीजिये क्योंकि इसके बिना कोई उपाय नहीं।'' भरत इसी चिन्ता में थे कि दूत पहुँच गये और राजा के दरबार में आकर चरण स्पर्श करके भरत से कहा कि ''वशिष्ठ पुरोहित और दूसरे मन्त्रियों व परामर्शदाताओं ने कहा है कि सब कुशल है, और आपको अति शीघ्र बुलाया है, और यह लगभग चालीस करोड़ लागत की वस्तुएँ लीजिए।'' भरत ने सब लेकर पूछा कि राजा दशरथ कुशलपूर्वक हैं?और रामचन्द्र व लक्ष्मण स्वस्थ हैं ?कौशल्या और धर्मात्मा कुशल से हैं? लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माता सुमित्रा को कोई कष्ट तो नहीं है ?और मेरी क्रोधी तथा स्वावलम्बी माता अच्छी हैं ?संदेशवाहक ने संक्षिप्त में बताया कि सब कुशलपूर्वक है और आपका कुशल मंगल चाहते हैं। उनकी बात सुनकर भरत ने अपने नाना से कहा, मैं अपने पिता के घर जा रहा हूँ। जिस समय आप याद करेंगे मैं पुनः आ जाऊँगा। राजा कैकय ने उसे हाथी, शाल बाफ, पोस्तीन और दूसरे मूल्यवान वस्त्र दिये और तीन हजार छः सौ दीनार रुपये और घोड़े दिये। मामा ने भीमकाय ऊँट साथ कर दिये, शहर के लोगों ने घोड़े भेंट किये और मण्डलदार सैकड़ों रथ तैयार किये तथा ऊँटों, गायों और गधों पर सवार होकर लोग साथ हो गये। भरत शत्रुघ्न के साथ रथ पर सवार होकर अपने पिता के घर के लिये चले। जैसे कि सिद्धपुरुष इन्द्र लोक में जाते हैं।

دست بسته عرض میکنند و وزیران عقب ایشان استاده و یکدو اسپ

باساز طلا موجود استاده

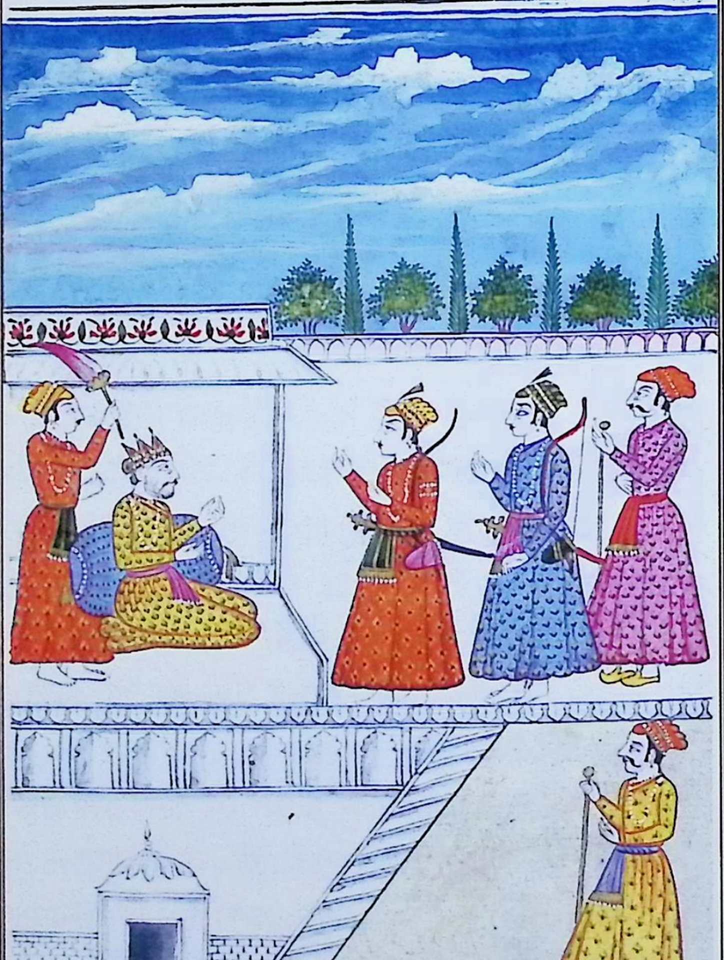

राजा कैकय का चित्र तख्त पर बैठे हुए हैं और भरत एवं शत्रुघन सामने खड़े हाथ जोड़कर निवेदन कर रहे हैं मन्त्रीगण उनके पीछे खड़े हैं।

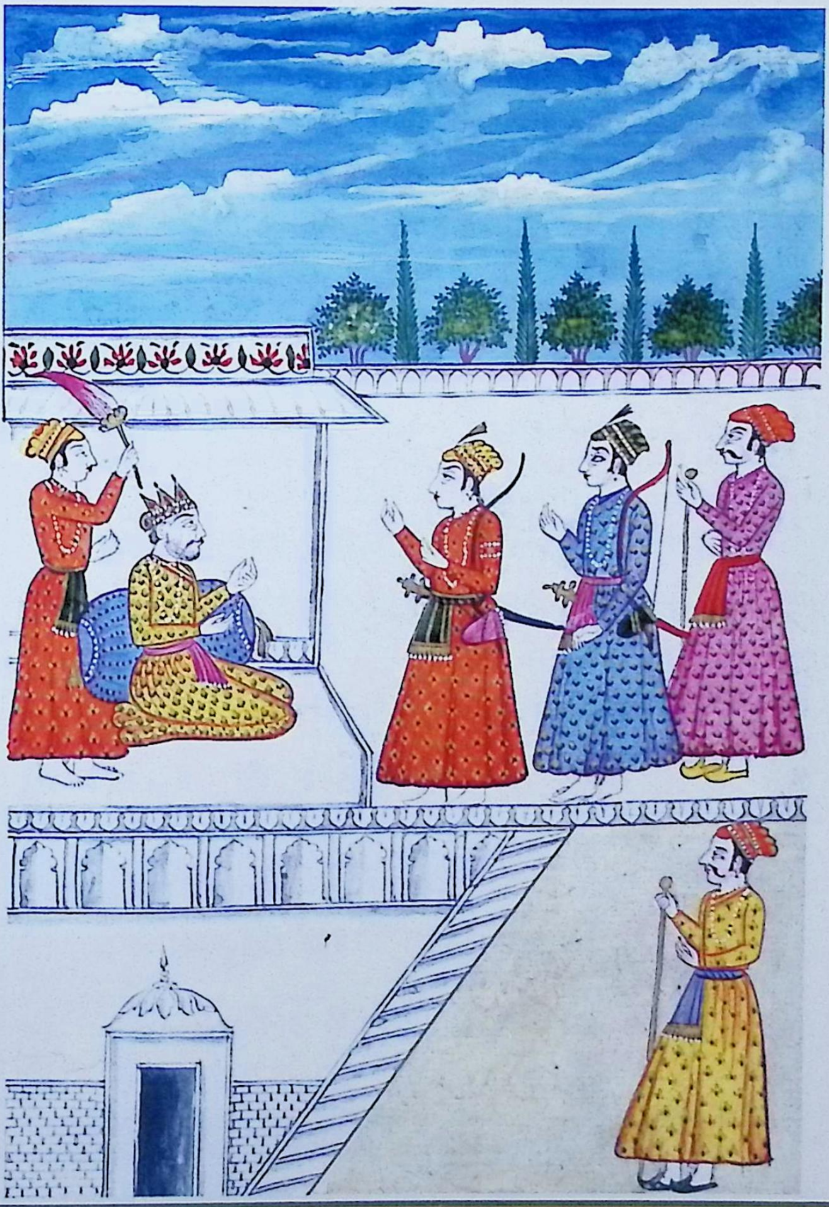

برگشت آمدن بهرت طی راه کرده از دریای سوتمان عبور کرد و بعده از دریای
شتدر کا گذشته از دریای بتنستا عبور کرده در ام کنتک رسید و سوستمان
۶۷ گرتی عبور نموده در جنگل چیتر رتهه آمد و از جمنا عبور کرده آنجا قدری طرح اقامت انداخت
و غسل نموده آب نوشیده به آب دادن زرکان پرداخت بعده بر رتهه تیز رو نشسته راه صحراها
و باغها و کوه ها طی نموده بر دریای گنگا رسید راه ساحل بر وتهه آمده بعده از گنگا عبور فرموده
و در دریای کومتی غسل نموده و عبور کرده هنگام صبح شدن بعد هفت شب شهر اجودهیا را دیده
بارتهی گفت بیشتر در شهر شور و غل برهمنان و آواز طنبوران و آراج رکهان و غیره شنیده میشد
حالا بگوش نمیرسد و آواز شادی زنان و مردان هم نمیشنوم و باغها و بازیگاه غم آلوده مینماید
و افیال و اسپان مانند سابق بنظر نمی آیند این بگفت و به بیدلی داخل شهر شد در آن شهر خالی
از اراستگی دکاکین و خانها و کوچه های ویرزن و توزن و دروازه بود سر فرو کرده بخانه اندر آمد

درینجا صورت رتهه چتر دار و بر آن
بهرت و سترگهن سوار و پیش ایشان اسپان
و فیلان و مردمان سواران و شتران
که بر و مردمان سوارند و بان ها
و مردم پیاده میروند

सर्ग–८१

भरत का आगमन

मार्ग तय करते हुए भरत ने सुदामा नदी को पार किया। उसके बाद शतुद्र (सतलज) नदी से चलते हुए वितस्ता नदी को पार करके अपर पर्वत पहुँचे और शल्यकर्षण, कुर्वती को पार करते हुए चैत्ररथ के वन में आये और यमुना को पार करके थोड़ा विश्राम किया। स्नान करके, पानी पीकर पूर्वजों को जल दिया। उसके बाद तीव्र गति वाले रथ पर सवार होकर वनों, बागों और पर्वतों को पार करते गंगा नदी के किनारे पहुँचे। तट के रास्ते बाहर आकर गंगा को पार करके गोमती में स्नान किया और फिर उसे भी पार करके प्रातःकाल सात रातों के बाद अयोध्या शहर में प्रविष्ट हुए। सारथी से कहा पहले तो नगर में ब्राह्मणों का कोलाहल, पक्षियों की चहचहाहट और राजरक्षकों आदि की आवाजें सुनायी देती थीं, अब यह सब आवाजें कानों में नहीं आ रही हैं। स्त्रियों और पुरुषों की प्रसन्नतापूर्ण आवाज़ भी नहीं सुन रहा हूँ, और बाग़ तथा क्रीड़ा के मैदान में सब दुखी और उदास दिखाई दे रहे हैं, और पहले के समान हाथी, घोड़े भी नहीं दिखाई दे रहे हैं, यह कहते हुए वह अनमने मन से नगर में प्रविष्ट हुए। इस नगर में जो दुकानों, घरों, गली-कूचों, खिड़कियों और द्वार आदि सज्जाहीन थे, सर झुकाए हुए महल के अन्दर गये।

छत्रदार रथ का चित्र जिस पर भरत शत्रुघ्न सवार हैं और उनके आगे घोड़े, हाथी पर सवार लोग और ऊँट जिन पर लोग सवार हैं तथा कुछ लोग पैदल चल रहे हैं।

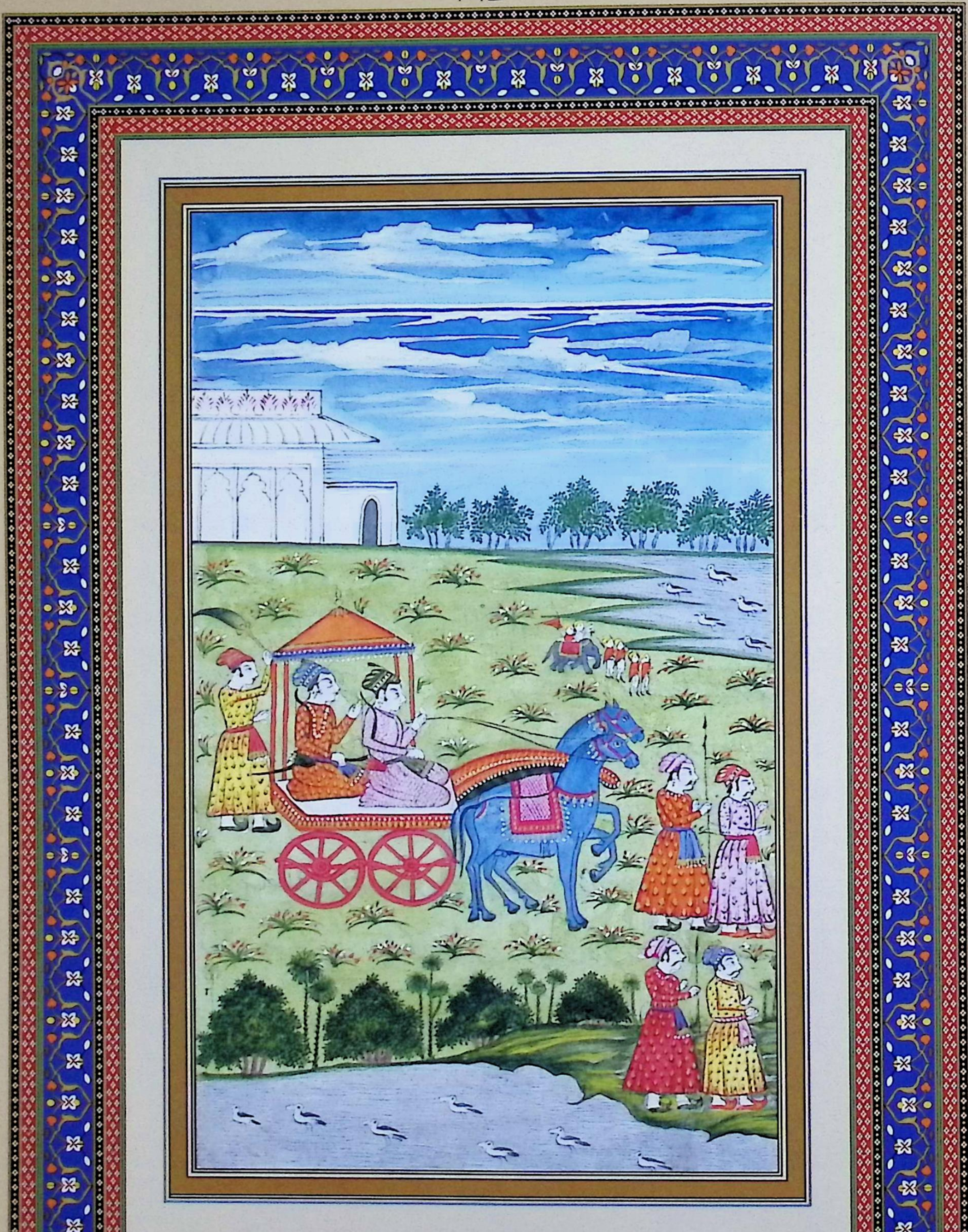

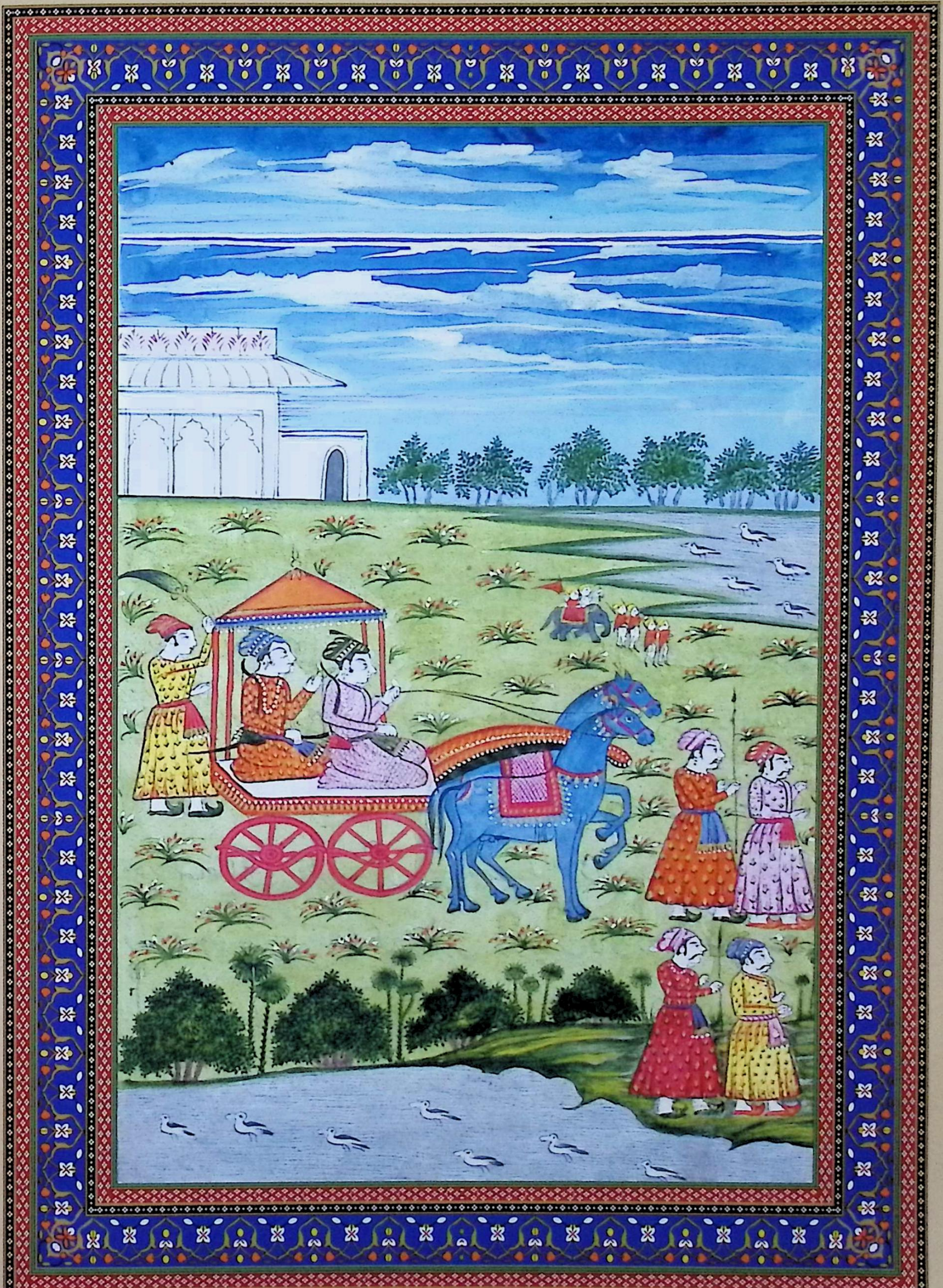

سرکردیدن کیکئی پسر را بعد مدت بسیار آمده دیده کیکئی که بر کرسی زر نشسته بود برخاست
و سر او بوسیده در بغل گرفته خیریت پرسید و گفت پدر من بعافیت است وجود حن
ماموں تو بخیریت است این را شنیده بهرت گفت همین چند روز مرا میشود که گذاشته ام
همه بخیریت اند و آنچه جواهر وغیره مرا داده بودند بسبب سرعت در راه ماند و من از نموده
بشتت زودتر آمدم حالا آنچه من میپرسم جواب بگو مدت است که پدر خود دشرته را
ندیده ام که خوشوقت شوم کیکئی سخن نادلخواه را دلخواه او دانسته چنان گفت که پدر تو
بسرگ رفت چنانچه طریق نیکمردان است بهرت این را شنیده مثل درخت بیخ برکنده بیهوش
بر زمین افتاد و روی از پارچه پوشیده از غم اشکها بارید و زاری و اضطراب نمود
کیکئی گفت ای پسر برخیز مثل تو درین کار متردد و مضطر نمیشود دانشی که دانایان جگ
کنان و بید خوانان راست نصیب تو باد و دیری گریه کرده گفت راجه که رامچندر را راج داد
میخواست حالا بی او ده طرف مرا خالی مینماید راجه بکدام آزار مرد که من نتوانستم رسید
و رامچندر وغیره که بار آخرت او کردند آفرین باد بر ایشان و آن راحت من کجاست که
دشرته از دست خود گرد رخ من دور میکرد خوب شد آنچه شد حالا بگو آنکه بجای پدر برادر من است
آن رامچندر کجاست او را بجای پدر دانسته قدم او بگیرم که او ملجای منست و پدر من وقت
مردن چه گفت این را شنیدن آرزو دارم کیکئی آنچه مغز سخن بود تحقیق گفت که راجه رام رام کرده

सर्ग-८२

कैकेयी का अपने पुत्र को देखना

एक लम्बी अवधि के बाद पुत्र को आता हुआ देखकर कैकेयी जो रत्नजड़ित कुर्सी पर बैठी हुई थी, उठ खड़ी हुई और उसने भरत के शीश का चुम्बन लेकर अपनी बाँहों में भरकर कुशल क्षेम पूछ और कहा कि मेरे पिता कुशल से हैं ?और तेरे मामा जोधन कुशल से हैं ?यह सुनकर भरत ने कहा अभी कुछ दिन पहले मैं उन सबको कुशल छोड़कर आया हूँ। रत्न आदि जो कुछ मुझे वहाँ लोगों ने दिया था शीघ्रता के कारण मार्ग में रह गया और मैं वशिष्ठ के आदेश से तुरन्त शीघ्रता से आया हूँ। जो कुछ मैं पूँछू उसका उत्तर दीजिए। दीर्घकाल से मैंने अपने पिता दशरथ को नहीं देखा कि मुझे प्रसन्नता हो। कैकेयी ने इस अप्रिय बात को प्रिय जानकर कहा कि तुम्हारे पिता स्वर्ग को सिधार गये जैसा कि सज्जन लोगों का विधान है। भरत इतना सुनते ही कटे हुए वृक्ष की भाँति मूर्छित होकर गिर पड़े और वस्त्र से मुँह ढककर दुख से आँसू बहाने लगे और व्याकुल हुए तथा विलाप किया। कैकेयी ने कहा उठ तुझ जैसा व्यक्ति इस कार्य में चिन्तित और व्याकुल नहीं होता। वह बुद्धि जो यज्ञ करने वालों और वेद पढ़ने वालों को प्राप्त होती है, वह तुम्हें प्राप्त हो, उसने देर तक रोने के बाद कहा ''राजा जो रामचन्द्र को राज्य देना चाह रहे थे वह उनके बाद मुझे दस ओर से खाली दिखाई देता है। राजा की किस रोग में मृत्यु हुई कि मैं नहीं पहुँच सका और रामचन्द्र आदि ने उनका अन्तिम संस्कार किया धन्य है वह ! और मेरी वह प्रसन्नता कहाँ है जो दशरथ ने अपने हाथ से किया, मेरा मुखड़ा दूर कर दिया, ठीक हुआ। अब बताइये कि जो पिता के स्थान पर मेरा भाई है वह रामचन्द्र कहाँ हैं ?मैं उसे पिता के स्थान पर समझकर उसका पाँव पकड़ूँगा कि वही मेरा आश्रय है। मेरे पिता ने मरते समय क्या कहा ?मुझे उसे सुनने की इच्छा है। कैकेयी ने जो बात का तत्व था वह उसने सच-सच बता दिया कि राजा ने राम-राम करते हुए दुख से पीड़ित होकर प्राण त्याग दिया।

از غم رام بی آرام شده جان داد و آخر وقت چنان گفت آنهانیکو کارند که رام
و سیتا و لچهمن و بهرت را باز خواهند دید این سخن دیگر غم انگیز را شنیده دلگیر تر
شده باز پرسید آن پسر کوشلا دهرماتما با سیتا و لچهمن کجاست حالا این را
چنانچه هست راست بگو کیکئی گفت او چیره و پارچه بسته با سیتا و لچهمن بصحرا رفت
بهرت گفت چه آن رام برهمن را کشته بود یا زر برهمن بزور گرفته بود یا غریبی مفلسی را
هلاک کرده یا با عورت غیری صحبت کرده یا از زور و قوت بی زوری را کشته یا دهرم
گذاشته خلاف حکم پدر کرده آن رام چه بد کرده بود که از ان بصحرا بدر رفت
مانند کسی که بهرون هتیا کرده باشد یعنی طفلی که در شکم مادر باشد آنرا کشد والده بهرت
کار کرده خویش را عورتانه بناقص عقلی آنچه بود بیان نمود که آن رام چند نه زر کسی بزور گرفته
دارند نه مفلسی را کشته نه با عورت غیری صحبت کرده و دیگر هم هیچ بد نکرده او دهرماتما مسخر
حواس هست هر گاه راجه خواست که او را جوراج دهد من این را شنیده برای تو جوراج خواستم
و برائی رام تا چهارده سال بودن صحرا خواستم آن دهرماتما با سیتا و لچهمن بصحرا
رفت و راجه چون آن پسر را ندید از غم هجر او جان داده بسرگ رفت برای خاطر تو
این کار بد نامی جهان اختیار کردم این راج خود را بگیر و محنت مرا لا ینفع مکن و بسرعت
هرچه تمامتر با بششٹ و غیره برهمنان ملاقی شده خود را بجائی راجه بنشان

अन्तिम समय यह कहा कि यह लोग भाग्यशाली हैं कि राम, सीता, लक्ष्मण और भरत को पुनः देखेंगे। यह दूसरी दुखदायी बात सुनकर और अधिक दुखी होकर उसने फिर पूछा कि कौशल्या का वह पुत्र और धर्मात्मा सीता और लक्ष्मण के साथ कहाँ है ?अब जो कुछ वास्तविकता है, वह सत्य सत्य बता दो। कैकेयी ने कहा वह भिक्षुओं का वस्त्र धारण कर सीता और लक्ष्मण के साथ वन चले गये। भरत ने कहा क्या! इस राम ने किसी ब्राह्मण का वध कर दिया या किसी ब्राह्मण की सम्पत्ति बलपूर्वक ले लिया था, या किसी निर्धन की हत्या कर दी या किसी स्त्री के साथ बलात्कार किया था, या अपने बल से किसी निर्बल को मारा था या धर्म छोड़कर पिता की आज्ञा के विरुद्ध कुछ किया था ?उस राम ने क्या बुरा किया था कि जिसके कारण उसे वन जाना पड़ा। उस व्यक्ति की भाँति जिसने मरूनजटा (भ्रूणहत्या) किया हो अर्थात् माँ के गर्भ में किसी बच्चे की हत्या कर दी हो। भरत की माता ने अपना किया हुआ कारनामा स्त्रियों की कम बुद्धि के कारण जो कुछ घटा था वर्णन कर दिया कि रामचन्द्र ने न बलपूर्वक किसी का धन लिया था, न किसी निर्धन की हत्या की थी, न किसी स्त्री के साथ बलात्कार किया था ?इसके अतिरिक्त भी उन्होंने और कोई बुरा काम नहीं किया था, वह धर्मात्मा और अपने ऊपर नियन्त्रण रखने वाला है। हाँ! यह हुआ कि जिस समय राजा ने यह इच्छा प्रकट की कि उसे उत्तराधिकारी बनायें मैंने यह सुनकर तुम्हारे लिये राज्य की माँग की और राम के लिये चौदह वर्ष तक वन में रहने की माँग की। वह धर्मात्मा सीता व लक्ष्मण के साथ वन में चले गये और जब राजा ने उस लड़के को नहीं देखा तो दुःख के कारण प्राण त्याग दिये और स्वर्गवासी हो गये। मैंने तुम्हारे लिये संसार में कलंकित कार्य किया। अब तुम यह राज्य संभालो और मेरे प्रयास पर पानी मत फेरो और जितना शीघ्र हो सके वशिष्ठ आदि ब्राह्मणों से मिलकर अपने को राजा के स्थान पर सिंहासन पर बैठो।

دید بخبا صورت خانه کیکئی و در انجا کیکئی بر کرسی مطلا نشسته و
چوری بردار عقب استاده و بهرت سر فرو کرده استاده و شترگهن و تبک
پاک میکند

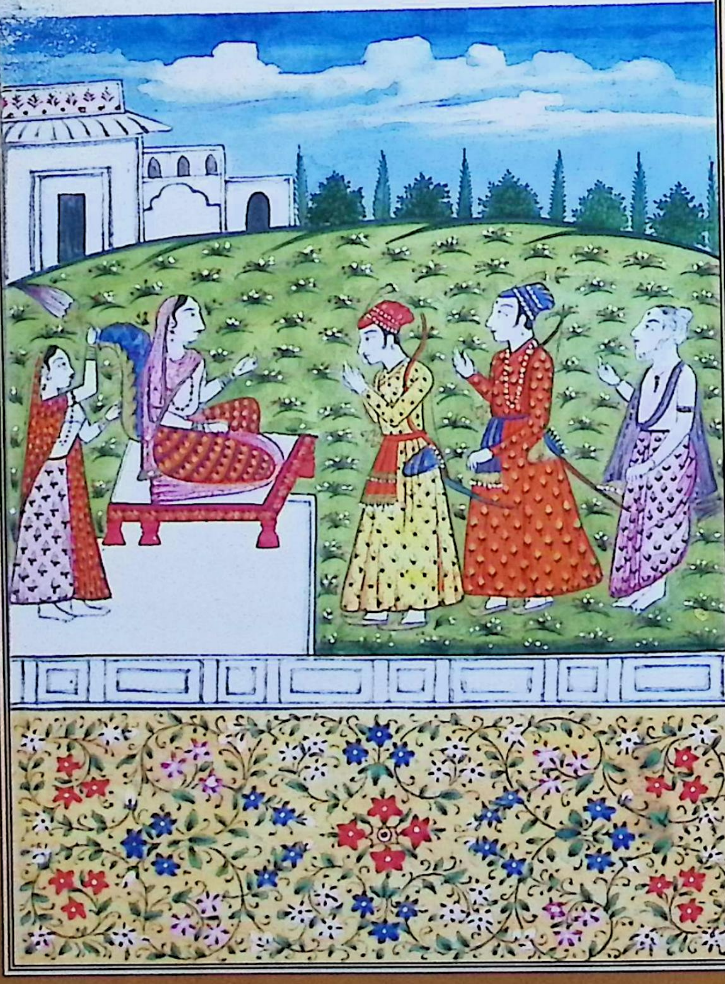

कैकेयी के महल का चित्र जहाँ कैकेयी सोने की एक कुर्सी पर बैठी हुई है। उसके पीछे मुरछल लिये स्त्रियाँ खड़ी हैं भरत सर झुकाये खड़े हैं और शत्रुघ्न उनके आँसू पोंछ रहे हैं।

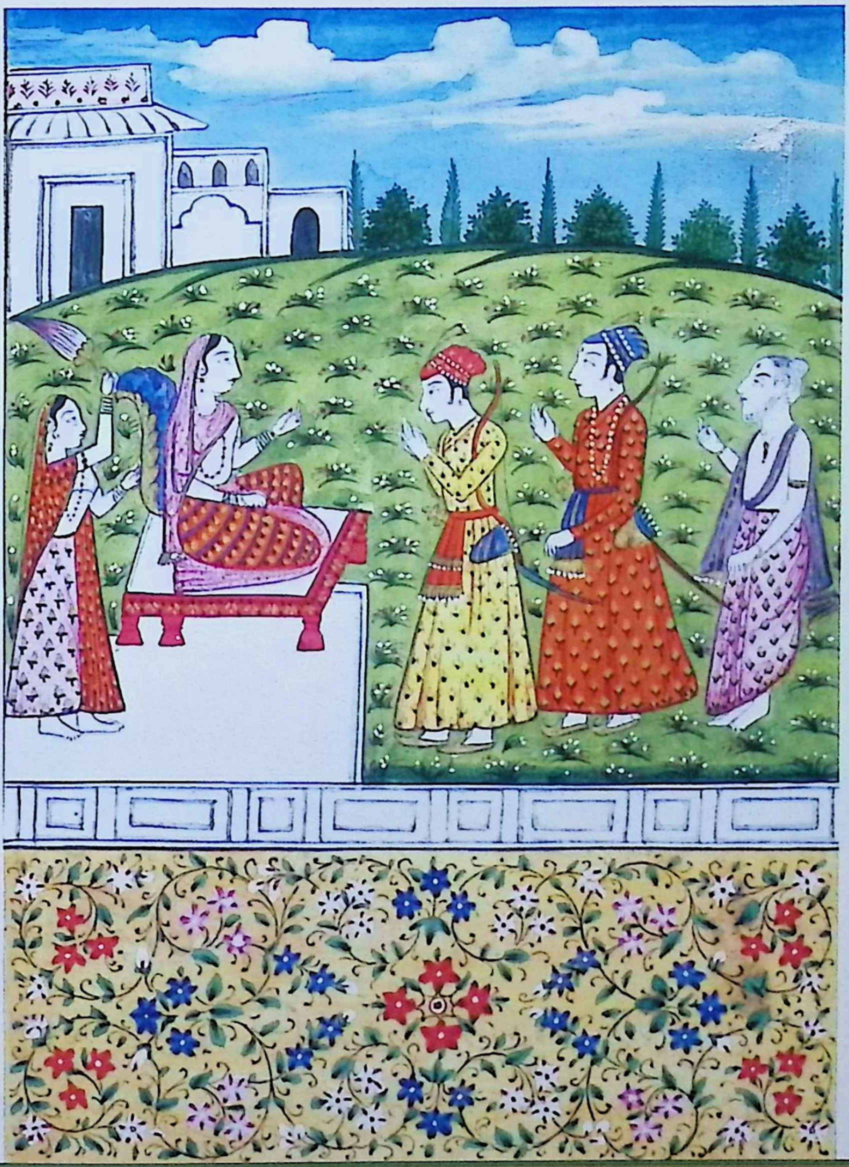

سرکس غم کردن بهرت حقیقت مردن پدر و ماجرای رفتن هر دو برادر شنیده از غصه
طپسیده بکیکیی گفت ای ناکرده کار بواسطه این گناه که بدنامی هست دهرم را گذاشته
و رامچندر را از راج یافتن دور داشتی از طمع به نرک یعنی بدوزخ میروی دهرکار
یعنی لعنت بر تست اگر تو کار رفتن نرک ساختی مرا چرا عقب خود انداختی من هم
جان خود میدهم تو از مردن من سلامت باش رام ترا چه گنه کرده بود که از سبب تو
این تصدیع همچو مرگ او وا روئی نمود ازین کار تو بهر دون بیتا و بر هم بیتا کردی ای کشنده
شوهر ترا عاقبت نیکی مباد و از پت لوک بنرک بروی مرا چه از راج و چه از زندگی که پدر مرد
و برادر مانند پدر بصحرا اقامت کرد من بچه طاقت حراست ملک خواهم نمود و برداشت
بار عالم از من چسان خواهد بود تو ازین کار تمام نسل ما را کشتی تو ناگ ماده زهردار هستی
که پدرم ندانست تو راست زن نیستی و بیگناه پدر مرا دغا دادی که پسران او و جان او
هر دو بباد دادی کوشلا و سومترا و دیگر مادران من دشوار است که ازین عذاب زنده
مانند رامچندر ترا بجائی مادر نیستند او را چرا بدر کنانیدی اگر از ترک تو رامچندر مرا
ترک نکند فی الحال ترا بکشم در نسل ما برادر کلان از راج سزاوار است و برادران خورد او را
بجائی پدر دانند من خود رفته او را از صحرا باز در شهر می آرم و خود تا نه و پنج سال
که چهارده باشد در صحرا میمانم مادر بیگو نه مادر خود را نکوهش کرده از غم گفت

सर्ग-८३

भरत का शोक मनाना

भरत ने पिता की मृत्यु की सत्यता और दोनों भाईयों के जाने की घटना सुनकर क्रोध से काँपते हुए कैकेयी से कहा, “ऐ कुलक्षणी ! इस पाप के कारण जो कलंक है तूने धर्म छोड़कर रामचन्द्र को राज्य पाने से दूर रखा। तू लालच के कारण नरक में जायेगी। धिक्कार है तुझ पर कि तूने नरक में जाने का यह कार्य किया। तूने अपने साथ मुझे भी सम्मिलित कर लिया। मैं भी प्राण त्याग दूँगा। तू मेरे मरने से प्रसन्न हो। राम ने तेरा क्या बिगाड़ा था कि तेरे कारण मृत्यु जैसा यह कष्ट उन्हें मिला। इस कार्य से तो तूने गर्भपात और ब्राह्मण की हत्या कर दी। ऐ पति को मारने वाली ! तुझे पुण्य न मिले और तू पृथ्वी लोक से नरक में जाये। मुझे राज्य और जीवन से क्या लाभ?जबकि मेरा पिता मर गया और पिता समान भाई रहने के लिये वन चला गया। मैं किस शक्ति के आधार पर देश की रक्षा करूँगा और संसार का भार मुझसे कैसे सहन होगा ?तूने इस कृत्य से मेरे पूरे परिवार को मार डाला। तू एक विषैला पदार्थ है। मेरे पिता को ज्ञात नहीं था कि तू अच्छे चाल-चलन की नहीं है। और तुमने निर्दोष पिता को धोखा दिया, उनके पुत्रों और उनके जीवन (प्राण) को नष्ट कर डाला। कौशल्या, सुमित्रा और मेरी अन्य माताओं के लिये कठिन है कि वह रामचन्द्र की भाँति इस कष्ट को सहन कर जीवित रहें। वह तुझे अपनी माता के स्थान पर समझते थे क्यों तूने उन्हें देश निकाला करवा दिया ?यदि तुझे छोड़ने से रामचन्द्र मुझे न छोड़ें तो मैं अभी तेरा वध कर डालूं। हमारे परिवार में राज्य बड़े भाई को शोभा देता है और छोटे भाई सब उसे पिता के स्थान पर समझते हैं। मैं स्वयं जाकर उन्हें वन से नगर में वापस लाता हूँ और स्वयं चौदह वर्ष तक वन में रहूंगा।” इस प्रकार भरत ने माता को डाँटते हुए दुख से कहा और वह जोर जोर से ऐसे विलाप कर रहे थे जैसे कि पहाड़ की गुफा में शेर दहाड़ता है।

وبشور گریه وزاری میکرد چنانچه شیر در غار کوه سرگ ندمت باردیگر والده
ملامت کرده از غم گفت چرا پدر من که اوتار رگهه بود ترا از شاپ نسوخت از سبب تو
چه رشتی بمن رسیده چرا سوخته نمیشوم ازین عذاب نجات خود نمی بینم بیشک تو
بصورت مادر دشمن من هستی کوشلا و سومترا و غیره مادران من باعث تو
تصدیع و آزار یافتند تو دختر راجه کیکه نیستی و از کیکه هرگز پیدا نشده میدانم راچهسی
تو خود آمده و بیحیا هستی تو راست طور کوشلا را غم هجر پسر دادی تو الم هجر پسر
مگر نمیدانی وجود فرزند از وجود جگر مادر میشود لهذا هیچ چیز مادر را از پسر عزیزتر نیست
آورده اند پیش ازین سوربهی که نام کامدهین گاو ماده است او دو گاو پسران
خود را از قلبه بسته و در گردش دیده بگریه آمد هنگام رفتن او بر آسمان اشک او
بر زمین افتادن گرفت این حالت دیده اندر راجه دیوتا دست بسته گفت ترا
بهیچ وجه خوفی نمی بینم که برای آن این غم میکنی کامدهین گفت هیچ غم نیست اما این
پسران که لاغر و غریب شب و روز بر زمین میکرند آزا دیده بار بار مضطرب میشوم
آن هر دو گاو از وجود جگر من پیدا شده اند و بدین تصدیع گرفتار اند اندر گفت برای
این اضطراب مکن اینجا و امادا میکنند گاوها بسیار ریاضت کردند و از برهما خواهش
نمودند که ما یا نزآزدی رفتن لوکان پرم یعنی بزرگ تر هست برهما گفت شما در منیش

सर्ग-८४

माता को पुनः डाँटना

भरत ने माता को डाँटते हुए पुनः कहा ''मेरे पिता ने जो रघु या ऋषि अर्थात धर्मात्मा के अवतार थे तुझे अपने श्राप से भस्म क्यों नहीं कर दिया?और तेरे कारण मुझे कितना दुख पहुँचा मैं जल क्यों नहीं गया?इस कष्ट से मैं अपनी मुक्ति नहीं देखता हूँ। निःसन्देह तू मेरी माता के रूप में शत्रु है। कौशल्या सुमित्रा आदि मेरी माताओं को तेरे कारण कष्ट और दुख पहुँचा। तू राजा केकय की पुत्री नहीं है और तू केकय के वंश से कदापि उत्पन्न नहीं हुई है। मैं जानता हूँ तू राक्षस बनकर स्वयं आयी है और तू निर्लज्ज है। तूने सीधे कौशल्या को पुत्र के वियोग का दुख दिया। परन्तु तू पुत्र के वियोग के कष्ट को नहीं जानती। पुत्र का अस्तित्व माता के हृदय से होता है। अतः माता को कोई भी वस्तु पुत्र से अधिक प्रिय नहीं होती है। लोगों ने वर्णन किया है कि इससे पूर्व सुरभि जो कामधेनु गाय का नाम है वह अपने दो बच्चों (बैलों) को कोल्हू से बँधा हुआ और घूमता हुआ देखकर रोने लगी। उसके आकाश पर जाते हुए आँसू पृथ्वी पर गिरे। उसकी यह स्थिति देखकर राजा इन्द्र देवता ने करबद्ध कहा कि ''तेरे अन्दर मैं किसी वस्तु का भय नहीं देखता हूँ कि तू उसके लिए दुख करे।'' कामधेनु ने कहा ''कोई दुख नहीं है परन्तु इन बच्चों को जो दुर्बल और दीन हैं। रात दिन पृथ्वी पर फिरते रहते हैं उनको देखकर मैं प्रायः व्याकुल हो जाती हूँ। वह दोनों बैल मेरे हृदय से पैदा हुए हैं और ऐसे कष्ट में फँसे हैं।'' इन्द्र ने कहा उसके लिये तू दुखी न हो। यह भी ऋण उतारेगी। बैलों ने बहुत तपस्या की और ब्रह्मा से इस बात की इच्छा की कि हम सबको परमलोक अर्थात् श्रेष्ठ लोक में जाने की इच्छा है।

اوک یعنی ور دنیا رفته تپ یعنی ریاضت که دور کننده خوف و گناه است بکنید هر گاه شما را
بقلبه و غیره بسته اشیا پیدا خواهند نمود آن ریاضت شما عجیب خواهد شد و هر که کاو لاغر یا مانده
یا خورد پیر را در قلبه و غیره خواهد راند او را عذاب کشتن کاو خواهد شد و هر که بطریق خدمت کاو
قوی و فربه را خواهد راند گو گراس یعنی لقمه کاو خواهد داد او از عذاب رهائی خواهد یافت
و شما را غصه نباید کرد که پرم لوک خواهید یافت اندر گوید ای کام دهین چنانچه قبل
ازین بعمل آمده بنا بر آن تو غصه مکن و گفته برهما یاد کن بهرت گوید او را هزاران پسر است
و کوشلا را یک رام است که بدر کردی بنا بر آن تو در نرک خواهی رفت بدین آئین بهرت
گریه و زاری کرده بیهوش بر زمین افتاد دریچا بهرت درخانه کیکئی بیهوش بر زمین افتاده و شترگهن

او را بر میدارد و کیکئی نشسته

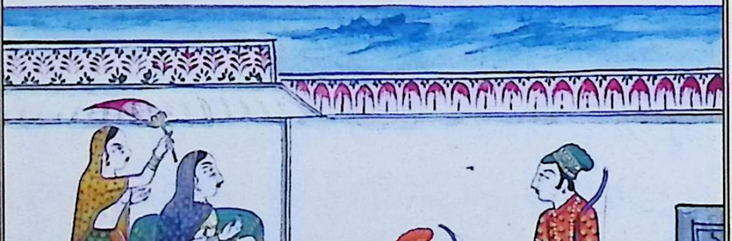

ब्रह्मा ने कहा तुम लोग मनुष्य लोक अर्थात् संसार में जाकर तप अर्थात् तपस्या करो जो भय और पाप को दूर करने वाला है, और जब तुमको लोग कोल्हू आदि में बाँधकर वस्तुएँ पैदा करेंगे तो वह तुम्हारी तपस्या काम आयेगी। जो व्यक्ति गाय को निर्बल करेगा या बच्चे को कोल्हू आदि में जोतेगा तो उसे गाय का वध करने का पाप होगा। जो व्यक्ति गाय की सेवा के रूप में शक्तिशाली और मोटी का प्रयोग करेगा तथा गाय को चारा देगा वह पाप से मुक्ति पायेगा। इन्द्र कहते हैं ''हे कामधेनु चूँकि इससे पूर्व ऐसा होता आया है इसलिये इस आधार पर तू क्रोध मत कर और ब्रह्मा का कथन याद कर। भरत कहते हैं कि इसके हजारों पुत्र हैं और कौशल्या का तो बस एक राम है जिसे तूने बाहर कर दिया। इस कारण तू नरक में जायेगी इसी प्रकार भरत शोक विलाप करते हुए मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े।

भरत कैकेयी के महल में पृथ्वी पर मूर्छित पड़े हैं। शत्रुघ्न उसे उठा रहे हैं और कैकेयी बैठी हुई है।

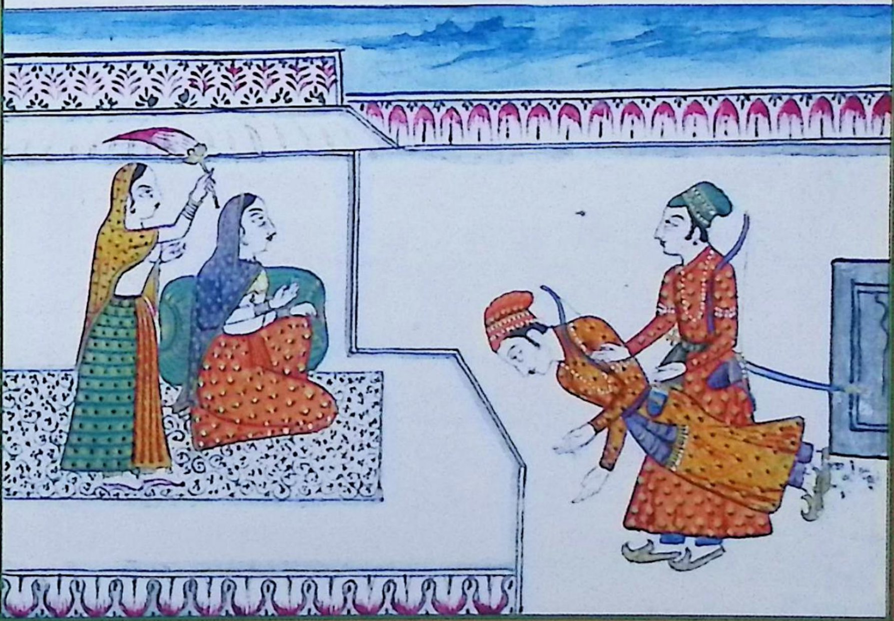

سر گفتار شترگهن برادر خورد لچهمن انحالت دیده از زمین برداشت و نیز شنید که از
مصلحت منتهرا کوزپشت که باکیکئی کرده رام بصحرا رفت اینهمه را معلوم کرده چنان بزبان
آورد چرا رامچندر از سبب عورت بصحرا رو آورده و لچهمن زورمند دانندهٔ استرها
راجه را قید نکرده رامچندر راجه نکردانید پدر من که بیوقوف شده مغلوب شهوت بود
بطریق راج دهرم پیش از انکه انحالت بوقوع آید چرا بند نمود بدینگونه لچهمن شترگهن میگفت
که ناگاه بر دروازه پیش رو منتهرا را دید که چندان واکر و غیره خوشبو و پیرایه‌های اقسام
آسوده و رشته میکهلا که پیرایه ایست بسته مثل فیل ماده باندرون خانه می‌آید شترگهن
گفت این کوزپشت همان است که باعث او رام صحرا گزید و راجه هلاک گردید این را بیشک
میکشم بدین اراده پای او گرفته بر زمین کشیدن گرفت و او شور مینمود و تمام وجود نجاست
آلوده شترگهن او را غلطان غلطان و کشان کشان میکشید همچنان منتهرا دیدند
غم میکردند اما از غصه و خوف شترگهن خلاص دادن نمیتوانستند میگفتند اگر این بسیار
غصه خواهد کرد ما در پناه کوشلا خواهیم رفت که او نگاهدارندهٔ ماست القصه شترگهن
از خشم چشم سرخ کرده میکشید و پیرایه‌ها و پارچه‌های او شکسته و دریده می‌افتاد
و آنچنان نمودار میگشتند که در شرت رت کواکب بر آسمان می‌تابند و او را کشان کشان
نزد کیکئی برده گفت انکه ناکردنی کرده و نسل ما را هلاک نموده انیست که عزیز میدارید بمنتهرا گفت

सर्ग-८५

शत्रुघ्न की वार्ता

शत्रुघ्न ने अपने बड़े भाई भरत की यह दशा देखकर उसे पृथ्वी से उठाया। उसने यह भी सुना कि मन्थरा कुबड़ी के षडयन्त्र के कारण जो उसने कैकेयी के साथ मिलकर की है, राम को वन जाना पड़ा है। उसने यह सब मालूम करके कहा रामचन्द्र एक स्त्री के कारण वन क्यों चले गये?और शक्तिशाली, अस्त्र का ज्ञान रखने वाले लक्ष्मण ने राजा को कैद करके रामचन्द्र को राजा क्यों नहीं बना दिया। मेरे पिता ने जो मूर्खता में प्रेम के वश में हो गये थे। राजधर्म के आधार पर इस स्थिति के उत्पन्न होने से पहले ही रोक क्यों नहीं लगा दी। शत्रुघ्न अभी यही बातें कर रहा था कि अचानक उसने सामने वाले द्वार पर मन्थरा को देखा कि वह चन्दन, अगर आदि सुगन्ध लगाये और शृंगार किये मेखला जो एक परिधान है उसकी रस्सी पकड़े हाथी के समान महल के अन्दर आ रही है। शत्रुघ्न ने कहा, यह कुबड़ी वही है जिसके कारण राम को वन जाना पड़ा और राजा के प्राण गये। मैं निःसन्देह उसकी हत्या कर दूँ। इस विचार से उसका पैर पकड़कर पृथ्वी पर घसीटना आरंभ किया और वह शोर मचाने लगी। उसका पूरा शरीर मिट्टी से भरा था और शत्रुघ्न उसे घसीट रहे थे। लेकिन शत्रुघ्न के क्रोध और भय से उसे कोई छुड़ा नहीं सकता था। लोग कहते थे यदि उसे अधिक क्रोध आयेगा तो हम कौशल्या की शरण में चले जायेंगे कि वही हमारी रक्षा करने वाली है। संक्षेप में शत्रुघ्न क्रोध से आँखें लाल किये उसे घसीट रहे थे और उसके वस्त्र फटते जा रहे थे। लोग उसे देखने के लिये इस प्रकार बाहर आ रहे थे जैसे शरद ऋतु में आकाश पर तारे चमकते हैं। उसको कैकेयी के पास ले जाकर उसने कहा ‘‘जिसने न करने वाला कार्य किया है और मेरे परिवार की हत्या की है वह यही है जिसे तुम प्रिय रखती हो। फिर उसने मन्थरा से कहा;

حالا ترا انجانه جم میفرستم انتقام غم رامچندر و مردن پدر از تو میگیرم چون شترکهن
چنان بر زبان راند بهرت گفت عورت همه جا سزاوار کشتن نیست بنا بران بگذار
شترکهن این را شنیده رها کرد و او بسرعت برخاسته در پناه کیکئی آمد و او با آهستگی
دلاسا نمود چنانچه ماده کرونج از خوف شاهین یا باز نگاهدارد درینجا صورت خانه کیکئی
او و بهرت در انجا نشسته و شترکهن پای کُبجا گرفته میکشد و تمام بدن او بخاک آلوده
و مو پریشان کرده و پارچه پاره پاره شده و زیور او جداگانه بر زمین افتاده چونها میدرخشید

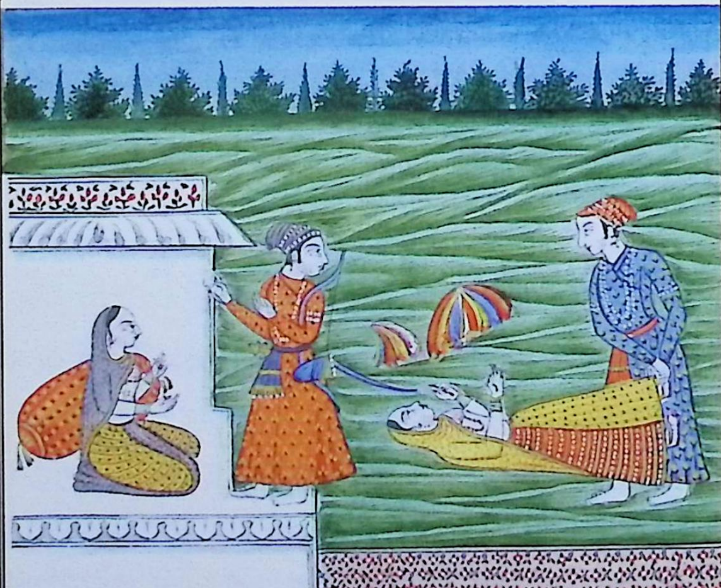

अब मैं तुझे मौत के घर भेजता हूँ और मौत के घाट उतारता हूँ। रामचन्द्र के दुख और पिता की मृत्यु का बदला तुझसे लूँगा। जब शत्रुघ्न ने यह कहा; तो भरत ने कहा; स्त्री प्रत्येक स्थान पर हत्या किये जाने योग्य नहीं है अतः उसे छोड़ दो। शत्रुघ्न ने यह सुनकर उसे आजाद कर दिया और वह शीघ्रता से उठकर कैकेयी की शरण में आ गयी तथा उसने धीरे से उसे सान्त्वना दी जैसे कि ममूला शाहीन या बाज़ के भय से अपने बच्चे की रक्षा करती है।

कैकेयी के महल का चित्र। भरत वहाँ बैठे हुए है और शत्रुघ्न कुबड़ी स्त्री का पाँव पकड़कर उसे घसीट रहे हैं। उसका पूरा शरीर मिट्टी से भरा है केश बिखरे हुए हैं। कपड़े फटे हुए हैं और आभूषण अलग होकर पृथ्वी पर पड़े हुए हैं जैसे कि चाँद चमकता है।

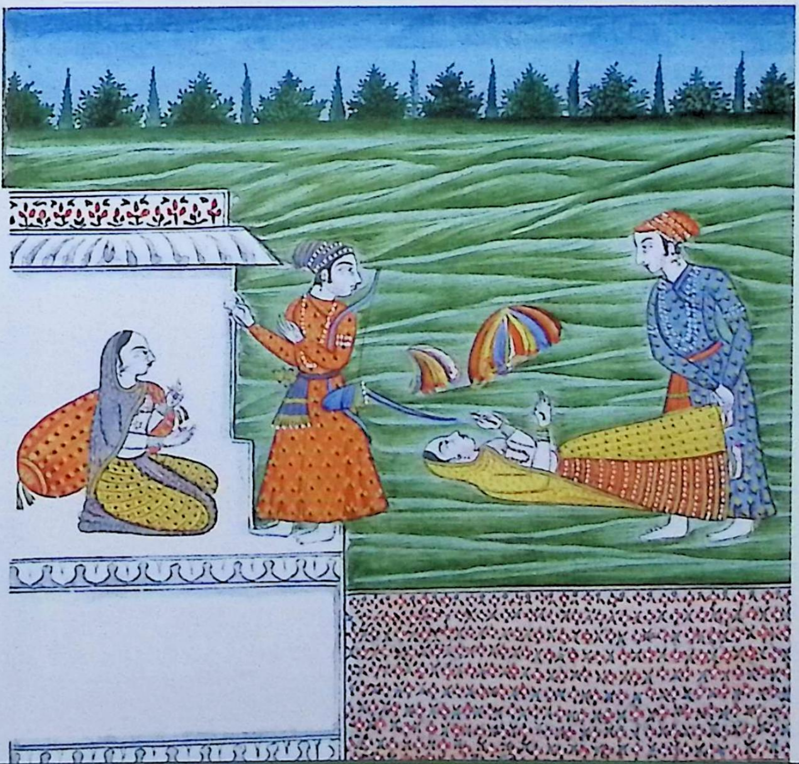

پسر گفت ای بهرت مادر را نکوهش کرده بشترگهن گفت که بنی آدم بدست من
دریافتن رنج وراحت بی اختیار است راحت ورنج البته بخود میکشد کردکار زورآوراست
که همچو رامچندر سزاوار راحت را برنج انداخت واز غم پسر والم شوهر کوشلا دررنج
مبتلاست بد ویا نیک کاری که مادر من کرده است اگر راست می بینم اینهمه کرده
کردکار است زن ومرد همه از زور کردکار بیوقوف اند دانائی بزرگ هم یافتن نیک وبد خود
نمیفهمد از بیوقوفی مادر من این کار که کرد بکوشلا چه خواهم گفت این بگفت و باشترگهن
در گریه شد آواز او را شنیده کوشلا بسومترا گفت بهرت پسر کیکئی آمده است آرزوی دیدن او
دارم این بگفت واز خانه خود روان شد قضا را بهرت وشترگهن هم بدیدن کوشلا
از مکان خود روان گشتند با بین راه هردو کوشلا را دیده از دور نمسکار کردند کوشلا
هم مهربانی کرده مضطربانه گفت ویدم کیکئی شوهر را بخاطر نیاورده خود ترا راج بنجار بخشید
و پسر مرا بگناه با چیر واجن بدر کردانید زود مرا هم آنجا فرست یا من از خود باسومترا
میروم آنجا که هردو پسر با سیتا ریاضت میکنند این راج چتر تک لشکر که پدر تو گذاشته است
بگیر بهرت دست بسته گفت ای معظمه من چرا نکوهش من میکنی مرا با رامچندر بسیار محبت هست
سوای شاسته عقل هرگز مباد و هرکه تابع عقل مادر من که کیکئی است شود او را دانش وراستی
وطور راه بزرگان هرگز نشود و عذاب صحبت کنیز و پای زدن بگاو نشود و هرکه بگفته او ود

सर्ग–८६

भरत की वार्ता

भरत ने माँ की निन्दा करते हुए शत्रुघ्न से कहा कि ‘‘मेरे विचार में दुख व सुख पाने में मनु के वंशज विवश हैं। दुख और सुख स्वयं से खींचता है। होनी बलवान है कि रामचन्द्र जैसे सुख पाने वाले व्यक्ति को दुख में डाल दिया और पुत्र के शोक और पति के कष्ट से कौशल्या दुख में ग्रसित हैं। अच्छा या बुरा जो भी कार्य मेरी माता ने किया। यदि मैं उचित समझता हूँ तो यह सब होनी का किया हुआ है। पुरुष और स्त्री सब होनी की शक्ति के सामने विवश हैं। वृद्ध बुद्धिमान भी अपने अच्छे बुरे को प्राप्त करना स्वयं नहीं समझ पाता। मेरी माता मूर्खता से यह जो कार्य कर बैठी हैं, मैं कौशल्या से क्या कहूँगा ?यह कहकर वह शत्रुघ्न के साथ मिलकर रोने लगे। उसकी आवाज सुनकर कौशल्या ने सुमित्रा से कहा ‘‘कैकेयी का पुत्र भरत आया है, मैं उसे देखना चाहती हूँ’’ यह कहा और अपने महल से चलीं। संयोग से भरत और शत्रुघन भी कौशल्या को देखने के लिये अपने स्थान से चल चुके थे। रास्ते में कौशल्या को दूर से देखकर नमस्कार किया। कौशल्या ने भी प्रेम का प्रदर्शन करते हुए व्याकुलता से कहा ‘‘देखो कैकेयी ने अपने पति की इच्छा के विरुद्ध तुमको राज्य दिलवाया और मेरे निर्दोष पुत्र को भिक्षुओं के वस्त्र में वन भेज दिया। अतः तुम शीघ्रता से मुझे भी वहाँ भिजवा दो या मैं स्वयं ही सुमित्रा के साथ वहीं चली जाती हूँ जहाँ दो बच्चे सीता के साथ तपस्या कर रहे हैं। यह राज्य और यह भव्य सेना जो तुम्हारे पिता ने छोड़ी है, सब ले लो। भरत ने करबद्ध निवेदन किया। माताश्री आप मुझे क्यों अपमानित कर रही हैं ? मुझे रामचन्द्र से बहुत प्रेम है। शास्त्र के अतिरिक्त मेरी और कोई बुद्धि कदापि न हो। जो मेरी माता कैकेयी की बुद्धि क अधीन हो, उसको सत्य, बुद्धि और पूर्वजों का मार्ग कदापि प्राप्त न होगा और उसे दासी के साथ संभोग और गाय को ठोकर

او را گناه صحبت کردن با عورتِ دوست و عورت فرتوت شود و عذابی که به زور گرفتن
حاصل از رعایا بود و گناهی که از غیبتِ بادشاهِ عادل رعایا را بود و گناهی که از خراب کردن
کارهای بزرگان خادمان و نوکران را بود و گناهی که دانای معانی شاستر را که دانسته
فراموش کند و گناهی که ریاضت کشان و حکیم دانان دچنا داده واپس گیرد و گناهی
که در بسید گفتار نگاهداشتِ سخن خود بود و گناه لاینفع گوشت و شراب خوردن و اعزاز نکردن مرشد بود
و گناهی که از نکردنِ اکرام مادر و پدر و بزرگ و استاد و درویش بود و عذابی که از کشتن
طفل و عورت و راجه و بزرگان و ترک مرید و خادم گفته اند و عذابی که از کشتن برهمن
بی خانه و ارث ضعیف جنبش بی
و گیلا کا و گفته اند و عذابی که از خلاف کردن عهد و گشتن مرشد و بیرون رفتن از
فرموده پیر بود و عذابی که از پای کشتن آتش شود و گناهی که از سوختنِ خانه کسان بود
و گناهی که از کشتن عورت خود شود و گناهی که از مذمت دوست بود و گناهی که از خفتن
مابین وقت سندهیا بود و عذابی که از شاپ دادن شود و عذابی که از دروغ گفتن بود
[illegible]
و عذابی که از بزرگ مصلحت پرسیدن و عمل نکردن بر و شود و عذابی که از دور کردنِ وظیفه
پسرانِ خود و خوردن شیرینی تنها خود و ندادن بغیر شود او را شود هر که بگفته او رود
بدین آئین بهرت سوگندها خورد و تسلی و دلاسای گوشلا کرد گوشلا بهرت را گفت
دیدم من که ترا با رام‌چند در محبت هست بدینگونه سوگندها خوردی با رام‌چندر بوده عمر دراز

मारने का पाप होगा। जो उसके कहने पर चलेगा उसे मित्र की पत्नी या किसी वृद्ध स्त्री के साथ संभोग करने का पाप होगा। जो पाप प्रजा की सम्पत्ति को शक्ति बल से लेने और प्रजा को न्यायी राजा की बुराई करने से होता है, जो पाप पूर्वजों का कार्य बिगाड़ने से सेवकों और नौकरों को होता है, जो पाप शास्त्र के अर्थ को जानने वालों को जानबूझ कर भूल जाने से होता है, जो पाप कि तपस्या करने वालों, यज्ञ करने वालों को दक्षिणा देकर वापस लेने से होता है, जो पाप कि वेद के कथन में अपना कथन मिलाने से होता है, जो पाप कि अलाभकारी माँस खाने से, मदिरा पीने से और पुरोहित का सम्मान न करने से होता है, जो पाप माता, पिता, पूर्वज, गुरू और साधु का सम्मान न करने से होता है, जो पाप कि किसी बच्चे, स्त्री, राजा, वृद्ध का वध करने और अनुयायी एवं सेवक को छोड़ देने से होता है, जो पाप कि किसी ब्राह्मण का वध करने का बताया है, जो पाप प्रण तोड़ने वाले, गुरू को मारने या उसकी आज्ञा का उल्लंघन करने को होता है, जो पाप कि पाँव से अग्नि को बुझाने से होता है, जो पाप लोगों का घर जलाने से होता है, जो पाप अपनी पत्नी की हत्या करने से होता है, व जो पाप जो मित्र की भर्त्सना करने से होता है, जो पाप कि सायंकाल की पूजा के समय पर सोने से होता है, जो पाप श्राप देने से होता है, जो पाप झूठ बोलने से और किसी वृद्ध से परमर्श लेने और उसका पालन न करने से होता है, जो पाप कि अपने पुत्रों का माल खाने और अकेले मिठाई खाने तथा दूसरों को न देने से होता है, यह सब पाप और आपदा उसी की होगी जो उसके कहे पर चलेगा। इस प्रकार भरत ने सौगन्ध खाई और कौशल्या को सान्त्वना दी। कौशल्या ने भरत से कहा ''मैंने देख लिया कि तुम्हें रामचन्द्र से प्रेम है।'' इस प्रकार वह सौगन्ध खाता है कि वह रामचन्द्र के साथ रहकर लम्बी आयु पायेगा।

خواهی یافت و رامچندر پرتگیا پدر کرده بدر رفت بازآمده را با تو خواهم دید و ترا عمر
دراز مانند بزرگان سلف که راج رکهه بودند خواهی یافت رامچندر را با لچهمن و سیتا
بعد چهارده سال خواهی دید حالا وجود پدر تو که در روغن کنجد نهاست سنسکار او کن
و رعایا را بنوعیکه حراست لازم باشد همچنان نما و این غم را دور کن از چنین گفتار کوشلا بهرت
پارهٔ بخویش آمد بعد از ساعتی کوشلا را بدان حالت دیده باز در رنج و غم مبتلا شد تا آفتاب
بغروب رسید و آن شب او را مانند صد سال گذشت چون صبح شد مشورتیان و وزیران
رسیدند و در خانه بهرت جمع گردیدند و بهرت را بیهوش بر زمین دیدند صورت خانه کوشلا و کوشلا
و سومترا که ایستاده و صورت بهرت بیهوش بر زمین افتاده و شترگهن عقب بهرت استاده

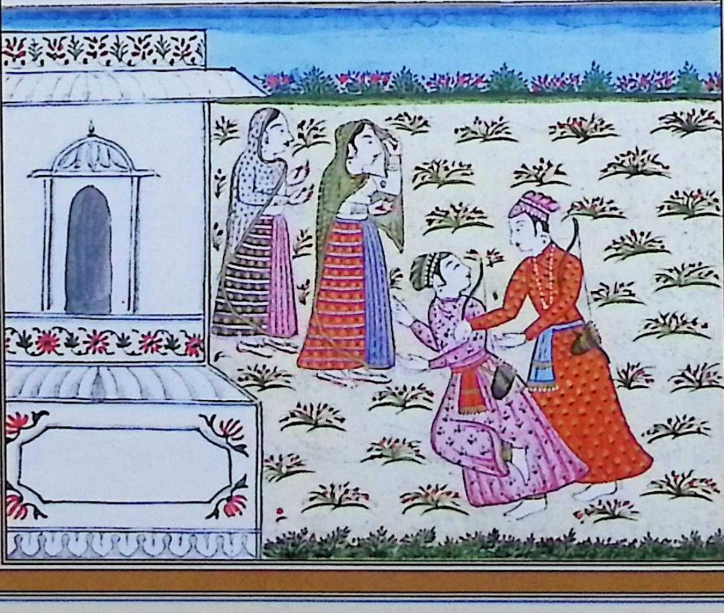

रामचन्द्र जब पिता के प्रण एवं वचन को पूरा करते हुए देश से निष्कासित होकर पुनः वापस आयेंगे तो उन्हें तुम्हारे साथ देखूँगी और पूर्वजों की भाँति जो राजर्षि थे, लम्बी आयु पायेगा और रामचन्द्र को सीता और लक्ष्मण के साथ चौदह वर्ष बाद देखेगा। अभी तुम अपने पिता के शव को जो तिल के तेल में है उसका अन्तिम संस्कार करो। प्रजा की रक्षा करो और उस दुख को दूर करो।'' कौशल्या की यह बातें सुनकर भरत को कुछ शान्ति मिली। थोड़ी देर बाद कौशल्या को इस दशा में देखकर वह फिर दुख से ग्रसित हो गये यहाँ तक कि सूर्य अस्त हो गया। उसकी वह रात सौ वर्ष जैसी भारी गुज़री जब प्रातः हुई, परामर्शदाता और मंत्री उपस्थित हुए और भरत के महल में एकत्र हुए उस समय भरत को पृथ्वी पर मूर्छित पड़ा हुआ देखा।

कौशल्या के महल का चित्र- कौशल्या और सुमित्रा खड़ी हैं, और भरत का चित्र जो पृथ्वी पर मूर्च्छित पड़े हैं तथा शत्रुघ्न भरत के पीछे खड़े हैं।

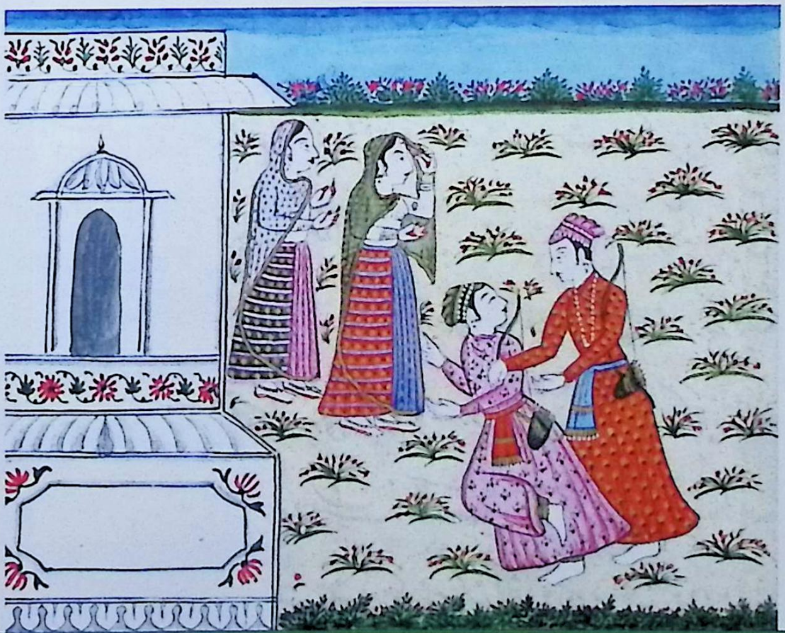

مرگ ماتم بهرت بدینگونه زاری میکرد چنانچه در زندگی براجه میگفت ای راجه برخیز چه خفته
من بهرت آمده ام واز حکم تو شترگهن آمده است جودهاجن مامون نمسکار کرده چنانچه در بغل
مرا میگرفتی بگیر وسر من ببوس چرا با من سخن نمیگوئی آفرین بر رامچند راست که گفته تو کرد و تحسین
بر لچهمن که عقب او رفت و نفرین بر من که بدینجا ماندم بهرت را بدین آئین در غم دیده بششت
وجاوالی چنان گفتند که این وقت ماتم نیست راجه شجاع و سخی و معزز جهان و عاقل بود
کار آخرت این بکن واگر او بار مرده واز غم اشک بریزند مرده واز سرگ بیفتد و شنیده شد
که بهورمن دیو راجه از یون خود بسرگ رفت بعده که پس ماندگان او غم کردند از سرگ
بیفتاد بنابران غم پدر نباید کرد اگر از غم پدر تو سوخته از سرگ افتد ترا شاپ خواهد داو
داو در اصل نمرده است که پسران او مثل رامچند رو تو هستند بهرت این را
شنیده چنان گفت انچه شما میفرمایید مرا همچنین یقین است حالا کریا پدر خود میکنیم
همه وزرای راجه انچه باید موجود آرند قریب خرج یک بهار که در شمار وزن است
همه ها در سر برای کار مشغول شدند درین اثنا شب در آمد وآن شب از غم مثل صد سال
معلوم میشد درینجا صورت خانه راجه و حوضی که در ان راجه افتاده و بالای
حوض بهرت و شترگهن نشسته و بششت وجاوالی
و سومنتر و دیگر وزرا استاده تسلی بهرت میکنند

सर्ग-८७

भरत का शोक

भरत इस प्रकार विलाप कर रहे थे जैसे कि राजा के जीवन में उनसे कहते थे कि राजा सलामत (महाराज) उठिये क्या सोये हुए हैं। मैं भरत आया हुआ हूँ और आपके आदेश से शत्रुघ्न भी आया है। युधाजित मामा ने नमस्कार कहा है। जिस प्रकार आप मुझे अपने हृदय लगाते थे, लगाइये और मेरे सर का चुम्बन लीजिये। आप मुझसे बातें क्यों नहीं कर रहे हैं ?धन्य है रामचन्द्र कि उन्होनें आपका कहा हुआ किया और भाग्यशाली है लक्ष्मण कि वह उनके पीछे गये और धिक्कार है मुझ पर कि मैं यहाँ पड़ा रहा। भरत को इस प्रकार दुख में देखकर वशिष्ठ और जाबालि ने कहा कि यह शोक का समय नहीं है। राजा- वीर, दानी, संसार में सम्मानित और बुद्धिमान थे, उनका अन्तिम संस्कार करो। यदि शव के सम्बन्धी दुख से आँसू बहाते हैं तो मरने वाला स्वर्ग से गिर जाता है। और सुना गया है कि ब्रह्मण देव राजा अपने अच्छे कार्यों के कारण स्वर्ग में गये लेकिन उसके बाद पीछे रह गये सम्बन्धियों ने दुख दिया तो वह स्वर्ग से गिर गये। अतः पिता का दुख नहीं करना चाहिए। यदि तुम्हारे दुख करने से तुम्हारे पिता जलकर स्वर्ग से गिरते हैं तो वह तुम्हें शाप देंगे। वह वास्तव में मरे नहीं हैं। जबकि उनके पुत्र रामचन्द्र और तुम जैसे हैं। भरत ने यह सुनकर कहा ''जैसा आप कह रहे हैं मुझे विश्वास है, अब मैं अपने पिता का क्रियाकर्म करता हूँ। राजा के सारे मंत्री, जो कुछ चाहिए, उसकी व्यवस्था करें।'' एक भार खरज के समीप जो कि गणना में भार है सब व्यक्ति कार्यों को सम्पादित करने में व्यस्त हुए। इसी बीच रात्रि हो गयी। वह रात्रि, दुख के कारण, सौ वर्ष के समान विदित होती थी।

राजा के भवन का चित्र और वह कुण्ड जिस पर राजा पड़े हुए हैं तथा कुण्ड के ऊपर भरत और शत्रुघ्न बैठे हुए हैं। वशिष्ठ जाबालि सुमंत्र और अन्य मंत्रीगण खड़े हैं तथा भरत को सान्त्वना दे रहे हैं।

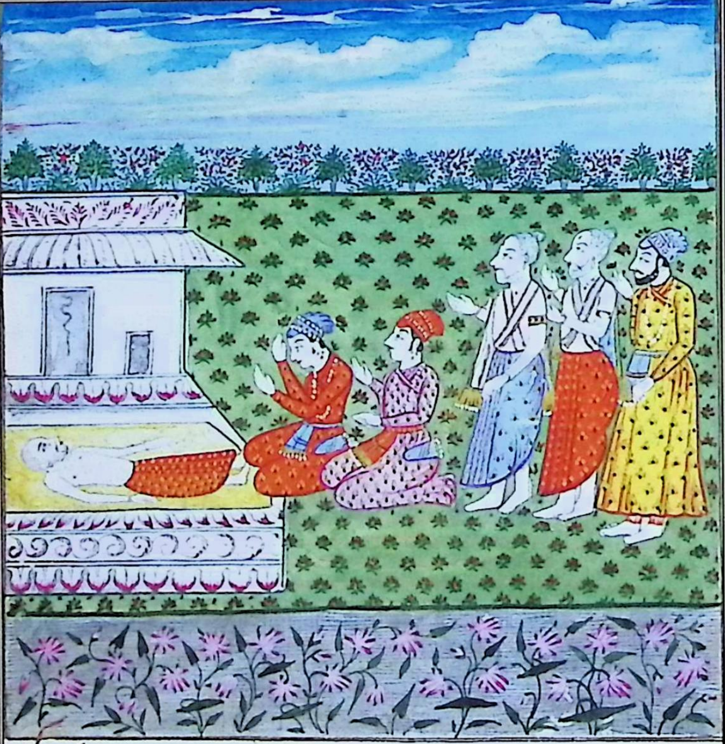

بعد گذشتن شب سوت و باد فروشان رسیده تعریف بهرت سر کردند و نقارچیان
نقارها نواختند و سنکهه یعنی خرمهره و بین وغیره بآواز آمدند از اواز کرناسی وغیره
تمام شهر پر شد بهرت این را شنیده بشترگهن گفت من خود راجه نیستم به بین که کیکئی
از حرص راج چه کرد و چه ذم بر خود پسندید پدرم را کشت و دولت و راج همچو مکردند
که چنانچه کشتی بی ملاح در دریا بعد از ان بششت بهرت را گفت که در مشورت خانه راجه

रात्रि व्यतीत होने के पश्चात् प्रशंसागीत गाने वालों ने पहुँचकर भरत की प्रशंसा आरंभ की। नक्कारचियों ने नक्कारे बजाये और शंख और बीन बजायी और करनाई आदि की ध्वनि से सारा नगर भर गया। भरत ने यह सुनकर शत्रुघ्न से कहा मैं राजा नहीं हूँ। देखो कैकेयी ने लालच के कारण राज्य की क्या दशा की है और अपने लिये कैसा कलंक पसंद किया। उसने मेरे पिता को मारा और राज्य तथा सम्पत्ति ऐसे हो गये जैसे मांझी के बिना नदी में नाव होती है। उसके पश्चात् वशिष्ठ ने भरत से कहा कि परामर्श कर राजा के महल में

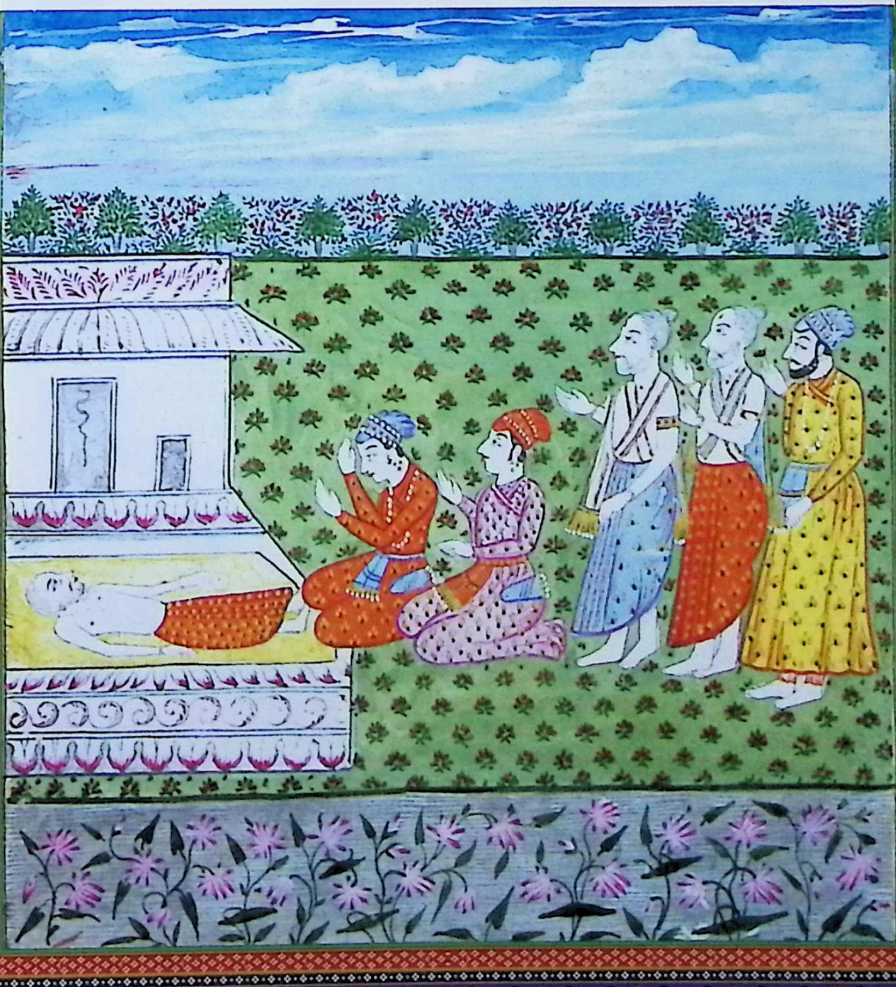

کہ از صد ستون طلای کہ مرصع بلعل وغیره ست داخل شو بهرت بآشتٹ و دیگر
مشورتیان رفته بر آسن مرصع بنشست چنانچه اند و برسپت در دیوان نشینند و
سومنتر و چهمن و بام دیو و جی و دیگر سرداران لشکر و شهر جمع گشتند چنانچه مردم
و دشرتهه را دیده خوشوقت میشدند همچنان از خرمی آوازی کردند بهرت بر آسن طلای
مرصع مانند دشرتهه برآزنده ست درینجا صورت دیوان عام چهل ستون و دران بر تخته مرصع
بهرت با لباس طلای نشسته و سومنتر و بامدیو و جاوالی و دیگر سرداران لشکر استاده و شترگهن
نزدیک بهرت استاده و نقارچیان با نقاره و کرناچیان و بین کاران و خرمهره نوازان اسباب جلوس

مینوازند و سوت و باد و روش نیز کردست

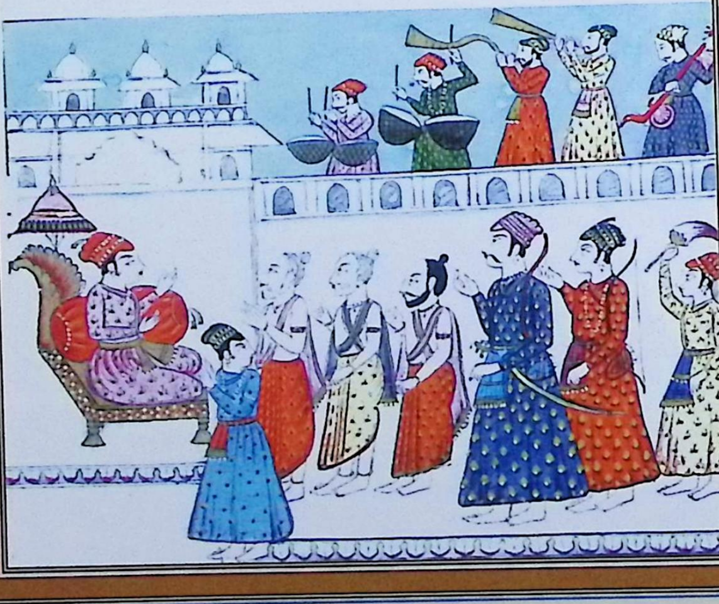

जो एक सौ सोने के स्तम्भों और लाल आदि से सुसज्जित हैं प्रवेश करो, भरत, वशिष्ठ और दूसरे परामर्शदाताओं के साथ जाकर सुसज्जित कुर्सी पर बैठे। जैसे कि इन्द्र और बृहस्पति दीवान में बैठते हैं। और सुमंत्र, छमन, वामदेव जी और सेना तथा नगर के दूसरे नेतागण एकत्र हुए। जिस प्रकार लोग दशरथ को देखकर प्रसन्न होते थे उसी प्रकार लोग प्रसन्नता से चिल्ला रहे थे कि भरत सोने की कुर्सी पर दशरथ के समान लग रहे हैं।

चालीस स्तम्भों वाले दीवाने आम का चित्र, वहाँ सुसज्जित तख्त पर भरत सोने का वस्त्र पहने बैठे हैं और सुमंत्र, वामदेव, जाबालि और सेना के दूसरे नेता खड़े हैं। शत्रुघ्न भरत के निकट खड़े हैं और नक्कारची, ढोलची और बीन बजाने वाले जुलूस की व्यवस्था में व्यस्त हैं, तथा गुणगान करने वाले हाथ में कागज़ लिये है।

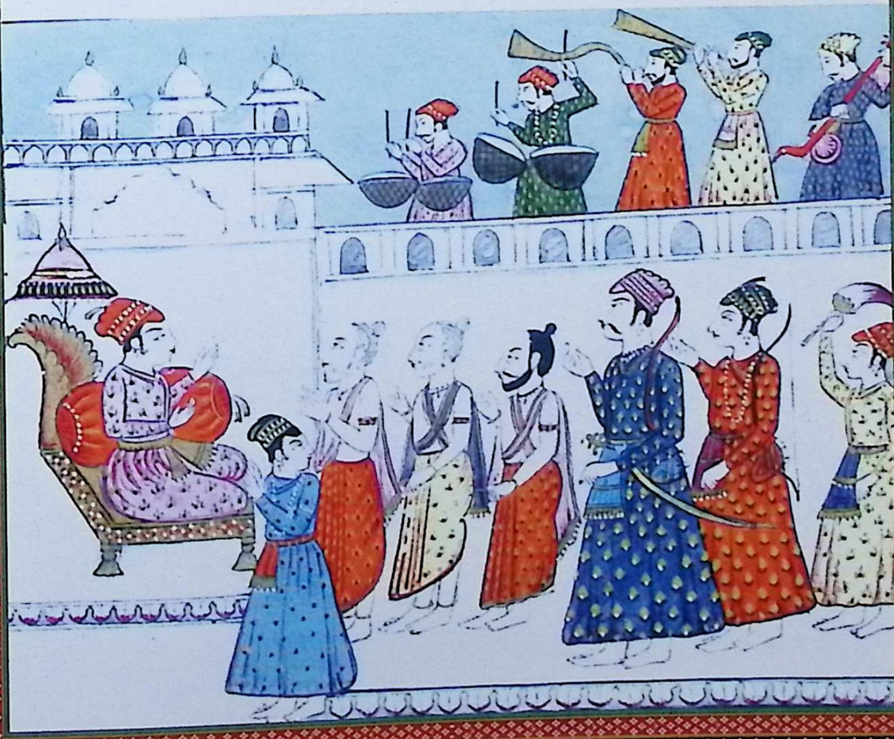

مرک کفتار بششت چون شب گذشت بششٹ بهرت را و وزرا را فرمود اینهمه مردم
شهریان و دیگران برای سنسکار راجه همه اشیا موجود کرده اند مالا خوشبو
و پهلیل و دهوپ و اگر و شیکا مرصع برای بردن راجه ای بهرت بر شیکا ببنداز
و برودی بیرون ببر بهرت گفت بششت را پدر من معزز میداشت انچه ایشان فرمایند
مرا کردن لازم ست القصه بهرت از فرموده بششت با شترگهن رفته کالبد راجه را در شیکا
نهاد و برو جامهای قیمتی انداختند و مالای کلها برو نهاده خوشبوها همراه ساختند
و بهرت و شترگهن شیکا را بر دوش برداشته بردند و چتر سفید و چامر موئین بلند
کردند و آواز گریه و نوحه بر آوردند بسبب کوتاه شدن عمر بششت فرمود که شیکا را
شتاب ببرید و پیش ازین جا و آلی وغیره برهمنان رفته آتش روشن کردند و ارابها
پر از جواهر و زر همراه برده بودند که بر راجه مرده خیرات نمودند بعده زن و مرد و پیر
و جوان با کالبد راجه از شهر بدر آمدند و کوشلا و سومترا و کیکئی و دیگر سیصد و پنجاه
بانوئی راجه موئی سیاه سر پراکنده و شور نوحه کنان عقب رفتند همگنان بر کنار دریای
سرجو رفته مکانی که درانجا زم زم گیاه بود معین کردند و نوکران از چوبهای چندن
و اگر چتا بر آوردند و کالیک و مرنال یعنی ... که از میان نیلوفر آیند و بال وغیره برو نهادند
و برهمنان بر ظروف جک کردند و مطابق بید سه گونه آتش بر مکان داشتند و منترها

सर्ग–८८

वशिष्ठ की वार्ता

जब रात्रि बीत गयी तो वशिष्ठ ने भरत और मंत्रियों से कहा कि शहर के सारे लोगों और दूसरों ने राजा की सलामी के लिये सारी सामग्री एकत्र कर दी है। राजा को ले जाने के लिये माला, सुगन्ध, पहलील, धूप, अगरबत्ती और सुसज्जित अरथी सब एकत्र है। ''ऐ भरत ! अरथी उठाओ और शीघ्रता से ले जाओ।'' भरत ने कहा' ''वशिष्ठ को मेरे पिता प्रिय रखते थे जैसा यह कहें मुझे वैसा करना आवश्यक है।'' भरत ने वशिष्ठ के कहने से शत्रुघ्न के साथ जाकर राजा का शव अरथी पर रखा और उस पर मूल्यवान वस्त्र डाले। फूलों के हार रखे और सुगन्ध साथ में रख दी तथा भरत व शत्रुघ्न अरथी को कन्धे पर उठाकर ले गये। सफ़ेद छत्र और बालों को ऊपर किया तथा रोना और विलाप करने की आवाजें आयीं। और दुख कम करने के लिये वशिष्ठ ने कहा शव शीघ्र ले जाओ। उससे पहले जाबालि आदि ब्राह्मणों ने जाकर आग जला दी थी और धन व रत्नों से भरी थैलियाँ साथ ले गये थे कि राजा के शव पर दान करेंगे। उसके बाद स्त्री-पुरुष-वृद्ध और नवयुवक सभी राजा के शव के साथ शहर से बाहर निकले। कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी राजा की दूसरी तीस हजार पचास पत्नियाँ शिर के काले केश गन्दा किये हुए, शोक व विलाप का शोर करती हुई पीछे-पीछे गयीं। सबने सरयू नदी के किनारे जाकर एक स्थान निर्धारित किया जहाँ कोमल घास थी। नौकरों ने चन्दन और अगर से चिता बनायी और काल्बक और मृणाल अर्थात् वह रेशे और बाल जो नीलोफर के मध्य से निकलते हैं और दूसरे बाल आदि उस पर रखा। ब्राह्मणों ने बर्तनों पर यज्ञ किया और वेद के अनुसार तीन गुना आग उस स्थान पर रखी और मंत्रों का

جب نمودند وهوتا یعنی هوم کننده وظروف جگ پاک ساختند وشرک پازو چگیک

وموشل یعنی دسته واوکهل یعنی هاون وآرنی که از و روغن بر می آرند اینهمه پاک صاف و

کردند واز منتر پنشو میدیعنی بهایم در آتش انداختند و پیش ازین بنو که قلبه زمین درست

کرده بودند انجا چتا شد وبعده گاو ماده بابچه اش موافق دستور دادند واز روغن گاو و روغن کنجد

چتا پر کردند بعده بهرت با دیگر وزرا چتا روشن کرد آتش شعله زدن گرفت وکالبد راجه بسوخت

برهمنان وغیره با حسن وجوه استکار راجه کردند بعده همه شهرهان وغیره گریه کردند وگفتند ای راجه

میروی ومارا چرا میگذاری درینجا صورت ارتهی راجه با پیرایه خوب وهار و گل انداخته وبهرت

موی تراشیده و برهم چرچا شده بردوش گرفته میبرند وچوری بردار وشست دسونتر وعقب ارتهی کوشلا

وکیکی ماتم کنان میروند و بر کنار سرجو چتا روشن کرده جا داد۔

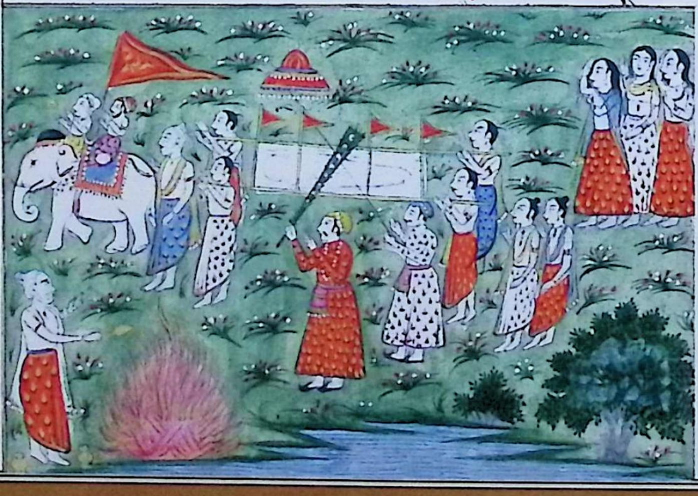

जप किया और होम करते हुए यज्ञ के बर्तन पवित्र किये और लकड़ी के पंजे के आकार का चमचा और पारह, चकह्क और मूसल अर्थात् दस्ता और ओखली अथवा हावन और अरनी जिससे तेल निकालते हैं उन सबको पवित्र किया और मन्त्र से भेड़ बकरी अर्थात् पशु आग में डाले और इससे पहले जहाँ की भूमि ठीक की थी वहाँ चिता बनायी। उसके बाद परम्परानुसार बछड़े सहित गाय दी और गाय का घी और तिल के तेल से चिता को भिगा दिया। उसके बाद भरत ने दूसरे मन्त्रियों के साथ चिता जलाई और आग जलने लगी राजा का शव जला डाला। ब्राह्मणों आदि ने भली प्रकार राजा का अन्तिम संस्कार किया। सारे नगरवासी रोते थे और कहते थे कि हे राजा ! आप कहाँ जा रहे हैं और हमें क्यों छोड़ रहे हैं।

राजा की अरथी का चित्र उचित रूप में, जिस पर हार और फूल पड़े हुए हैं। उसे भरत और शत्रुघ्न सर के बाल कटवाये हुए कन्धे पर उठाकर ले जा रहे हैं और चूड़ीबरदार और वशिष्ठ और सुमंत्र अरथी के पीछे हैं और कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी विलाप करती हुई जा रही हैं तथा सरयू नदी के किनारे चिता को जलाता हुआ जावालि।

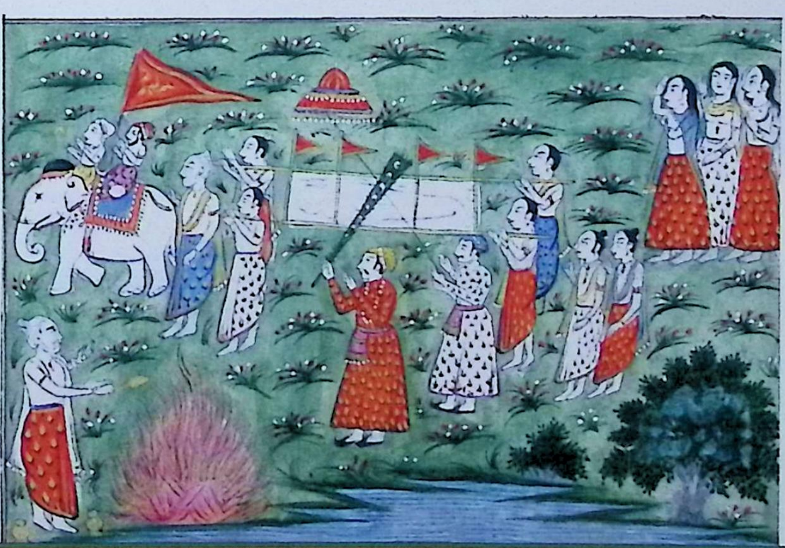

پس سگار راجه آن چتا را دیده بهرت با مردمان خویش بیهوش شده بر زمین می فتاد
و آشنایان بر میداشتند گفتار منتهرا گویا آب روان بود و بر دادن راجه سمندر و کیکئی
نهنگ در چنین دریای غم بهرت غرق بود و گریه میکرد و میگفت گوشلا که پسرش بصحرا رفته
مراجه خواهد گفت بدین آیین گریه کنان بر زمین افتاد چنانکه دهو جا را اندر بر افتد
یا راجه ججاتی از سرگ بر افتد چنانچه در آدپرب مهابهارت مذکور است و شترگهن
هم بیهوش افتاد بعد از ساعتی خوبیهای پدر را بیان کرد و میگفت مرا و بهرت را کجا
گذاشته میروی بیشتر در کودک در کودکی خبر اطعمه و اسواب تو میگرفتی و مایان را
کلان کردی حالا که خواهد کرد و از رفتن تو بسرگ و از روان شدن رامچندر بجنگل زندگی
نمیخواهم در آتش می افتم از گریه هردو برادر شهریان گریه و غم کردند بعد نوحه و اضطراب
هردو برادر دل کباب حیران چون گنگ ماندند و در مراقبه رفتند بعده بششت بهرت را
برداشته گفت رنج و راحت هردو در جهان توام اند البته تو غم نکردن را سزاواری
و هر که پیدا آمده است او را مرگ در پیش است و هر که مرده است او را پیدا شدن بنابران
تو غم مکن سوهنتر و شترگهن را از زمین برداشت بدینگونه هردو را برداشته و زرا
و گنگا بشیان برای آب دادن راجه روان گشتند درینجا صورت چتا شعله زنان
و راجه در و سوزان و بهرت و شترگهن بر زمین غلطان و بششت و سوهنتر تسکین دهان و عالی

सर्ग-८६

राजा का सत्कार

उस चिता को देखकर भरत अपने लोगों के साथ मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिरे पड़ते थे और परिचित उन्हें उठाते थे। मंथरा की बात बहता हुआ जल थी और राजा का वचन देना समुन्द्र और कैकेयी मगरमच्छ। ऐसे ही दुख के सागर में भरत डूबते थे रोते थे और कहते थे कि कौशल्या का पुत्र जो वन गया है वह मुझे क्या कहेगा। इसी प्रकार रोते हुए पृथ्वी पर गिर पड़े जैसे कि इन्द्र का यन्त्र बद्ध ऊँचा ध्वज गिरता है या राजा ययाति स्वर्ग से गिरता है जैसा कि महाभारत के आदिपर्व में लिखा है। शत्रुघ्न भी मूर्छित हो गये। एक क्षण बाद अपने पिता का गुणगान करते हुए वह कह रहे थे कि आप मुझे और भरत को छोड़कर कहाँ जा रहे हैं ?हमारे बचपन में आप हमारे खाने पहनने का ध्यान रखते थे और हम सबका पालन-पोषण करके बड़ा किया। अब यह सब कौन करेगा ?आपके स्वर्ग सिधारने और रामचन्द्र के वन चले जाने से मैं जीवित नहीं रहूँगा। मैं आग में गिर जाऊँगा। रोते-रोते दोनों भाइयों ने पूरे शहरवासियों को रुला दिया और दुखी कर दिया। शोक व व्याकुलता के बाद दोनों भाई दुखी दिल से आश्चर्यचकित रह गये और उसके बाद वशिष्ठ ने भरत को उठाकर कहा, संसार में सुख-दुख दोनों साथ-साथ हैं तुम्हें कदापि दुख नहीं करना चाहिए। जिसने जन्म लिया है उसे मरना है और जो मरता है उसे जन्म लेना है। इस कारण तुम दुख न करो। कहकर ऐसा सुमंत्र और शत्रुघ्न को पृथ्वी से उठाया। इस प्रकार दोनों भाइयों को उठाकर मन्त्री और गणमान्य व्यक्ति राजा को जल देने के लिये चले।

دفعه آن روغن بر آتش رزان

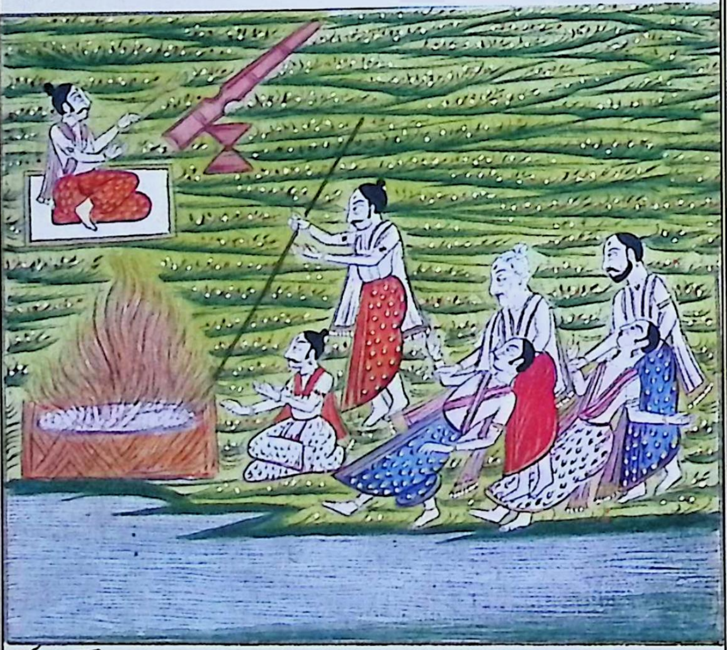

سرگفتار دهرم پال بدین آئین بهرت ستکار راجه نموده برای آب دادن بر دریای سرجو رسید با شهریان و مردمان در دریا غسل کرد و بدین طریق انجلی آب داد از آپ بپاشا و شستندرکا و چندربهاکا و گنگا و جمنا و سرستی وغیره دریاها، نوید رهن سیر شده در سرگ برود و بدینگونه جل کریا نموده جمیع وزرا و امرا و شهریان و رعایا را دلاسا فرموده برگردید چون اجودها را از دور دید با مردم گفت بعد رفتن رام و مردن راجه شهر چون مکان مردگان بی رونق مینماید چنانچه عورت بی شوهر و شب بی ماه باشد مرا دیدن شهر

सर्ग-९०

धर्मपाल की वार्ता

भरत राजा का सत्कार करते हुए जल देने के लिये, सरयू नदी पर पहुँचे और नगरवासियों और दूसरे लोगों के साथ नदी में स्नान किया। इस प्रकार जल की अंजलि दी।

''मेरा पिता तृप्त होकर स्वर्ग में जाये'' और इस प्रकार जल क्रिया करके और सारे मंत्रियों, गणमान्य व्यक्तियों, नगरवासियों और प्रजा को सान्त्वना देते हुए वे वापस हुए। जब अयोध्या को दूर से देखा तो लोगों से कहा; राम के जाने और राजा के स्वर्गवास के बाद नगर श्मशान की भाँति सूनसान प्रतीत होता है जैसे कि स्त्री बिना पति के और रात्रि बिना चन्द्रमा के होती है।

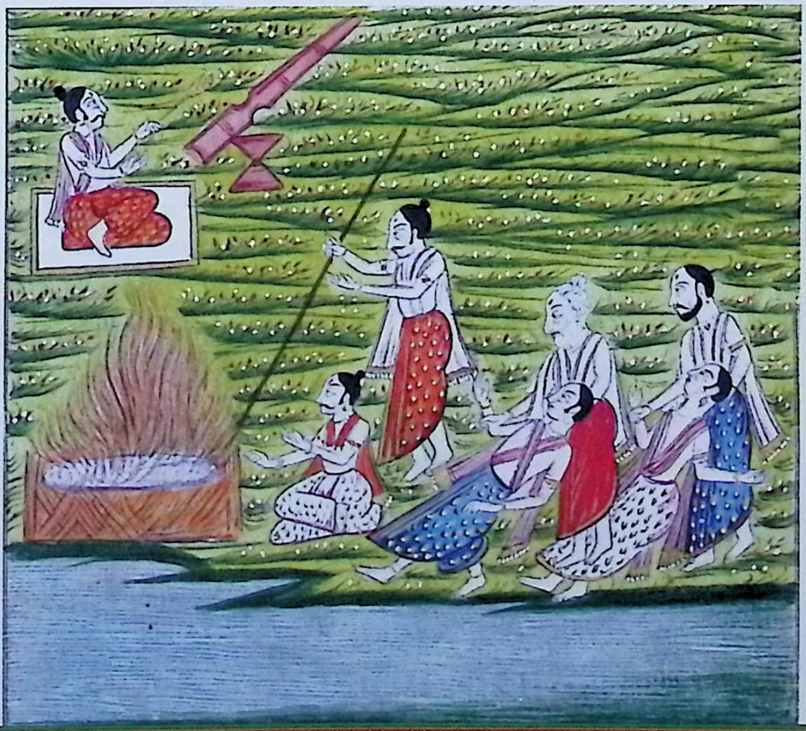

خوش نمی آید چه جای رفتن بی پدر مرا زندگی در کار نیست باز در مکان مردکان مرحم
این کفتار راجه شنیده دهرم پال نام وزیر کفت فکر و تردد توای بهرت همه عبث است
بسیار اضطراب و غم کردن لائق نسب شما نیست اکر تمام اقربا و برادران قبائل
بمیرند پندت یعنی عالم غم نمیکنند اکر از کریه و غم مرده زنده شود ما همه جماعت بکنیم هرکاه
ما همه را که آمده ایم البته باید مرد و پیش مرک یکذره هم طاقت نیست لهذا با ما همکنان
در شهر داخل شو و شهزاده پدر با حسن وجوه بکن چون دهرم پال چنان کفت بهرت
با مردم و متعلقان اندرون شهر رفت و در خانه پدر در آمد شد و بر بستر کیاهی تا ده روز
بر زمین خواب نمود و در غم و الم بود سرک را ده رفتن بهرت چون ده روز کذشت
بهرت با همکنان غسل کرده پاک کشت بعد از ده روز شهزاده دوازدهم کرده روز سیزدهم
به نیت پدر برهمنان را پارچه های کران قیمت و کاو ماده های و دیکر سواریها مانند پالکی
و غیره و کنیزان و غلامان هر ملک و پیرایه های خوب و افیال و غیره هم خیرات کرد چون
روز سیزدهم بکذشت وزرا و امرا جمع آمده به بهرت کفتند راجه خود مرد و رام و لچهمن
بصحرا رفتند اکنون تو بجای آنان بر مسند بنشین و ساز و سامان ابهشیک یعنی راج
دادن موجود کرده کفت همکنان ترا راجه کردن میخواهند این راج بزرکان خود کرفته حراست
مایان کن این را شنیده بهرت کفت همیشه در نسل ما راج بکلان برادر میرسد شما اینچنین

शहर को देखना मुझे अच्छा नहीं लग रहा है। पिता के बिना मुझे तो जीने की इच्छा नहीं है। मैं फिर मुर्दों (शव) के स्थान पर जाता हूँ। राजा की यह बात सुनकर धर्मपाल नामक वज़ीर ने कहा; भरत ! आपके लिये चिन्ता करना उचित नहीं। बहुत अधिक व्याकुलता और दुख प्रकट करना आपके परिवार को शोभा नहीं देता। यदि सारे सम्बन्धी और सारे कबीले वाले मर जायें तब भी पण्डित दुख नहीं करते हैं। यदि रोने और दुख करने से मुर्दा जीवित हो जाय तो हम सब मिलकर करे। निःसन्देह हम सब जो संसार में आए हैं अवश्य मरेंगे। मृत्यु से छुटकारे की किसी को शक्ति नहीं है। अतः आप हम सबके साथ शहर में प्रवेश करें और पिता का श्राद्ध आदि भली प्रकार कीजिये। जब धर्मपाल ने यह कहा तो भरत लोगों और सम्बन्धियों के साथ शहर के अन्दर गये। पिता के महल में प्रवेश किया और दस दिन तक घास के बिस्तर पर पृथ्वी पर सोये और दुख में ग्रसित रहे।

सर्ग–६१

भरत के जाने का निश्चय

जब दस दिन बीत गये तो भरत सबके साथ स्नान करके पवित्र हुए। दस दिन के बाद बारहवीं श्राद्ध करके तेरहवें दिन पिता के विचार से ब्राह्मणों को मूल्यवान वस्त्र, गायें, दूसरी सवारियाँ जैसे पालकी आदि, हर देश की दासियाँ और दास, अच्छे वस्त्र और हाथी आदि दान किये। जब तेरहवाँ दिन बीत गया तो मन्त्री व गणमान्य व्यक्ति एकत्र हुए और भरत से कहा, राजा मर गये, राम और लक्ष्मण वन को चले गये, अब आप उनके स्थान-सिंहासन पर बैठिए। राज्याभिषेक की सामग्री प्रस्तुत करके कहा कि लोग आपको राजा बनायेंगे। अपने पूर्वजों का यह राज्य लेकर हमारी रक्षा कीजिये। यह सुनकर भरत ने कहा; हमारे परिवार में आरंभ से राज्य बड़े भाई के लिये नियत होता आया है

گفتن رانسزاوار ید دانندهٔ دهرم ها که راچندر ست او راجهٔ ماست و دیگری را
شما مدهید و من تا چهارده سال در جنگل خواهم ماند حالا لشکر چترنگ مرا طیار کنید
من آن برادر را از صحرا باز می آرم و این سامان ابهشیک همراه می برم و خواهش
کیکئی نمیکنم و اهل طریق راه را درست کنند و راه شهر دانان و راه فهمان صحرانشین پیش
بروند چون بهرت چنان گفت منتریان همه گفتند تو همچنین گفتن را نسزاواری که برادر را
دولت میدهی بعد ازان از حکم بهرت برائی صاف کردن راه اهلکاران را فرستادند
سرک طلبیدن راجه بعد ازان دانایان ملک و اراضی و شهریان و زمین کنندگان
و بیلداران و راه صاف کنان و جاسوسان و راه دانان و دستاجران و راه
درخت نشانان و سوب کاران بادرچیان و سکها کاران و سنگ کرم کاران اینها
همه پیشتر رفتند و کریوه ها و سنگها را برابر کردند و اشجار بیجا را قطع کردند پیش از همه
سیناپت یعنی هراول برآمد بعدهٔ از شام مردم ودولی برآمدند گویا در شب بدر دریای شور بطغیانی
آمد اقسام مکانات برای بودن لشکر طیار ساختند و راه هموار در جنگل پرخار
پرداختند درختان بیجا بریدند و انجاکه نبودند درختان سایه دار نشانیدند و بعضی لتا
یعنی درخت بیل دار
و گلم و شلا کا و سنگریزها را از گوتهار تبر و داس مستاصل و صاف نمودند و سنگریزه
یعنی خورد
نوک دار و کوهچه و خارهای سخت که در راه بودند هموار ساختند و تیرته درست نمودند

आप लोगों को ऐसा कहना शोभा नहीं देता है। धर्मों को जानने वाला जो रामचन्द्र हैं वह हम सबके राजा हैं। किसी और को आप लोग राज्य मत दीजिये और मैं चौदह वर्ष तक वन में रहूँगा। अब मेरी चतुरंगिणी सेना तैयार कीजिये मैं उस भाई को वन से वापस लाऊँगा। यह राज्याभिषेक की सामग्री मैं साथ ले जाता हूँ कैकेयी की इच्छा का मैं पालन नहीं करूँगा। मार्ग ठीक करवाए और शहर का मार्ग जानने वाले तथा वन का मार्ग समझने वाले आगे-आगे चले। जब भरत ने यह कहा तो समस्त मंत्रियों ने कहा आपको यही कहना शोभा देता है कि आप भाई को राज्य दे दें। इसके बाद भरत के आदेश से मार्ग साफ़ करने के लिये योग्य लोगों को भेजा।

सर्ग-८२

राजा का बुलाया जाना

उसके बाद पृथ्वी के बुद्धिजीवी, नगरवासी, जमींदार कामगार, मार्ग साफ करने वाले, जासूस, मार्ग जानने वाले, मजदूर, वृक्षों का चिन्ह लगाने वाले, सूपकार, सखाकार और पत्थर ढोने वाले यह सब पहले गये और ढेले और पत्थर बराबर किये। बेकार वृक्षों को काटा, सबसे पहले हरावल टुकड़ी सामने आयी उसके बाद प्रसन्नता से लोग आये। ऐसा लगा जैसे चौदहवीं रात में समुन्द्र में तूफान आ जाये। सेना के रहने के लिये विभिन्न प्रकार के घर तैयार किये और कांटेदार वन में समतल मार्ग पर चले बेकार वृक्षों को काटा। जहाँ पेड़ नहीं थे वहाँ छायादार पेड़ लगवाये और कुछ ने बेलदार कलम शलाका और झाड़, काँटे आदि को जड़ से काटकर साफ किया तथा नोकदार काँटों को और कठोर काँटों को जो मार्ग में थे, समतल किया। तीर्थ ठीक करके समुन्द्रों को ठीक करना आरंभ किया।

بهموار کردن کنارهای بجا پرداختند چیز قابل بستن را بستند و شکستنی را شکستند
و در اندک مدت در خشکی تالاب و چاه و باولی برکندیدند و مانند ساگر تیرتهه‌ها پیدا آوردند
و در بلاد و دیهات و شاه دکان و بیدی چبوتره و منڈپ مکان پدید کردند و اشجار کلدار با جانوران
گوناگون و پتاکا یعنی نشانها در نمود داشتند و آب صندل و گلهای دیگر روافزوده
داشتند و توپ و بندوق ها در کوچه ها گذاشتند و غرفه ها بچونه و غیره آراستند و جابجا
نشانها و بامها بیراستند و بر کنار گنگا که آب سرد داشت درختان برپا کردند تا بهرت
با لشکر بیکران فوج گران رفته درانجا اقامت نماید چنانچه راه آسمان از ماه و کواکب
در شب زیبا باشد همچنان این راه زیب آور نمودند درینجا صورت راه صاف نموده
و درختان سایه دار و مکانات بآرام راهروان و دیگر تیرتها که در راه اند

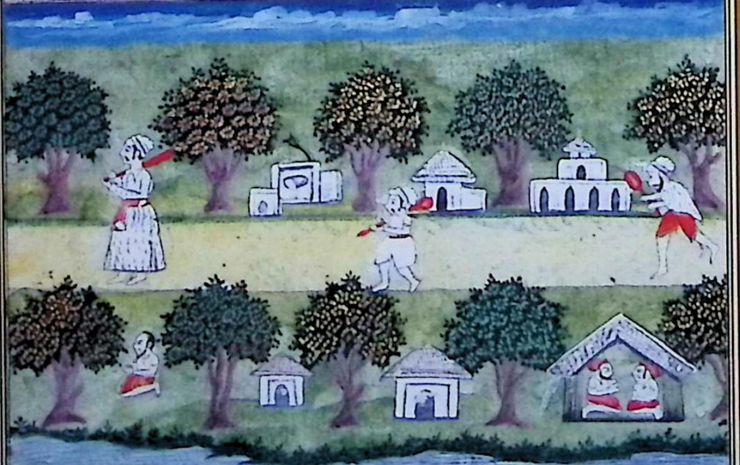

बाँधने योग्य वस्तुओं को बाँधा और तोड़ने योग्य वस्तुओं को तोड़ा तथा अल्प समय में सूखे भाग में तालाब, कुएँ, बावली खोद दी और सारे सागर की भाँति तीर्थ पैदा कर दिये। शहरों में देहातों में दुकान, चबूतरा और मण्डप तैयार कर दिया और फूलदार वृक्ष, भाँति-भाँति के पशुओं के रखने के स्थान बनाये। जल, चन्दन और अन्य फूलों में पैदावार की और गलियों में तोप तथा बन्दूक दागे, कमरों को चूने आदि से सुसज्जित किये और स्थान-स्थान पर चिन्ह व कोठे बनवाये। गंगा नदी के किनारे जिसका पानी शीतल था वृक्ष लगाये। ताकि भरत भारी सेना के साथ वहाँ जाकर निवास करें जिस प्रकार आकाश का मार्ग चाँद और सितारों से सुसज्जित होता है उसी प्रकार मार्ग को सजाया गया। स्वच्छ किये गये मार्ग का चित्र, छायादार वृक्ष यात्रियों के लिये तथा अन्य तीर्थ वालों के लिये आरामदायक भवन मार्ग में है।

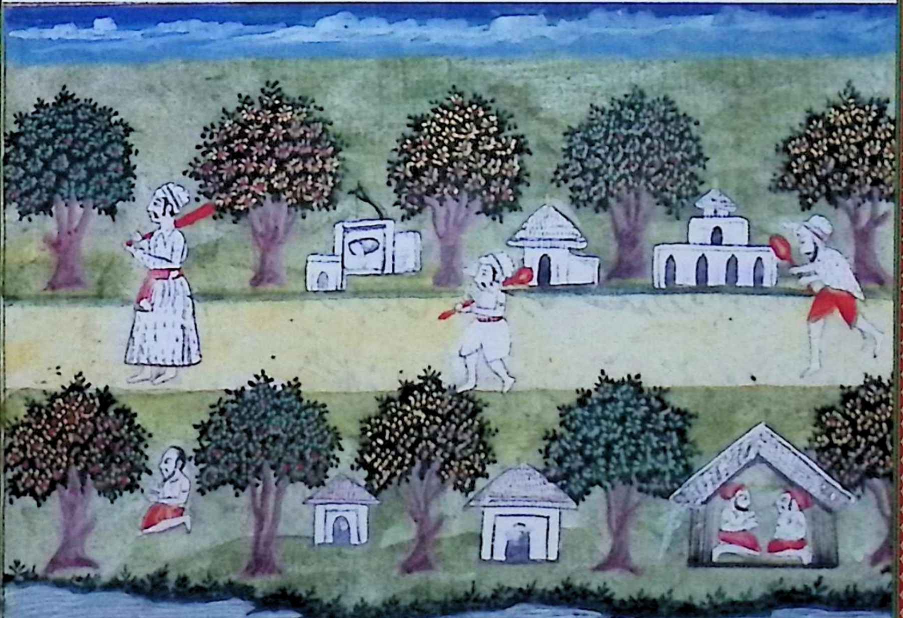

سرگ دیوان چون بهرت سبها نمود یعنی دیوان فرمود بششت گفت مکانات
لشکریان وغیره در راه جمله درست شد وهمه شهریان ورعایا مستعد کشتند وراجه دشرته
بسرگ رفت ودولت واقبال وزمین تو تعلق گرفت رامچندر دایم راست گو و بر طریق
دهرم مستقل است وانحراف از گفته هرگز نخواهد کرد چنانچه روشنی را ماه نگذارد این دو
راج تو براحت بکن وباشندکان مشرق ومغرب وکن وکیرل وچکیرل وکمنت دهارا
بتو خراج آورده اند بهرت در دل رامچندر را یاد کرده از غمناکی گفت آن رام که
برهم چرج میکند و از بید یعنی علم کمال حاصل کرده غسل نموده و دهرما تمام نست راج اینچنین
کس را مثل من کجا گیرد پسر دشرتهه بتعدی راج چگونه متصرف شود چنان ادهرم گفتن را
سزاوار نیستی برادر کلان چون دلیپ نام راجه ونهوکهه نام راجه است ودر راج چون کاکوستهه نام راجه
ودشرتهه است من گناه کنم اگر راج اجهواکو بگیرم من اینجا هستم ورامچندر در صحرا است
من او را نمسکار میکنم وعقب رام خواهم رفت واو براج هر ۳ سه لوک سزاوار است
اگر از صحرا باز بشهر نیاید من هم مانند لچهمن همانجا خواهم ماند ودر اجودهیا لی او نخواهم بود
پدر راج باو داده است من گرفتن را نسزاوارم چنانچه گایتری را شودر دواو بجای پدر هنست
همگنان این سخن دهرم شنیده وعقیده او را دیده خوشوقت شدند واو را یاد بیا و وزرا
گفتند نیک بششت خوشوقت شده گفت این از تو عجب نیست که پسر دشرتهه هستی

सर्ग-६३

दरबार

जब भरत ने सभा अर्थात् दरबार लगाया तो वशिष्ठ ने कहा, सैनिकों आदि के भवन सब मार्ग में ठीक हो गये और सारे नगरवासी तथा प्रजा तैयार है। राजा दशरथ स्वर्ग में चले गये और सम्पत्ति एवं सम्मान पृथ्वी पर आपको प्राप्त हुई। रामचन्द्र सदा से सत्यवादी और धर्म के मार्ग पर चलने वाले हैं, वह अपने वचन से कदापि नहीं हटेंगे जैसे कि प्रकाश चन्द्रमा को नहीं छोड़ता है। आप यह राज्य निर्भय होकर करें। पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, केरल, चकेरल, कंधार के निवासी आपके लिये कर लाये हैं। भरत ने हृदय में रामचन्द्र को याद करते हुए दुख से कहा वह राम जो आकाश को क्रोधित करता है और वेद अर्थात् श्रेष्ठ शिक्षा प्राप्त करके धर्मात्मा है मुझ जैसे व्यक्ति के राज्य को किस प्रकार लेगा ?दशरथ का पुत्र अन्याय और अत्याचार के साथ राज्य पर कैसे अधिकार करेगा ?तुम इस प्रकार की अधार्मिक बातें करने के योग्य नहीं हो। ज्येष्ठ भ्राता दिलीप और रघु की भाँति होता है। राज्य में चूँकि ककुस्थ और दशरथ भी है इसलिये मैं पाप करूँगा यदि इक्ष्वाकु का राज्य लूँगा। मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ तथा राम के पीछे जाऊँगा और तीनों लोकों में राज्य उन्हीं को शोभा देता है। अगर वह वन से नगर में वापस नहीं आते हैं तो मैं भी लक्ष्मण की भाँति वहाँ रहूँगा और उनके बिना अयोध्या में नहीं रहूँगा। पिता ने राज्य मुझको दिया है मुझे उसे लेने का अधिकार नहीं है जैसे कि क्षत्रिय के लिये शूद्र। वह मेरे लिये पिता के स्थान पर हैं। सब लोग उसकी यह धार्मिक बात सुनकर और उसके विचार सुनकर प्रसन्न हो गये। उससे अमीरों और मंत्रियों ने कहा ''बहुत अच्छा, बहुत अच्छा''। वशिष्ठ ने प्रसन्न होकर कहा मुझे तुम्हारी ओर से यह आश्चर्य नही है क्योंकि तुम दशरथ के पुत्र हो

زیرا که برادر کلان را راج دادن میخواهی تو قابل آفرین هستی و او هم قابل تحسین است
که تو برادر او هستی کدام جا ست باید دید از سبب دهرم تو راجه بسرک رفت و مردم
خوشوقت شدند که تو برای آوردن رام بدان مقام میروی

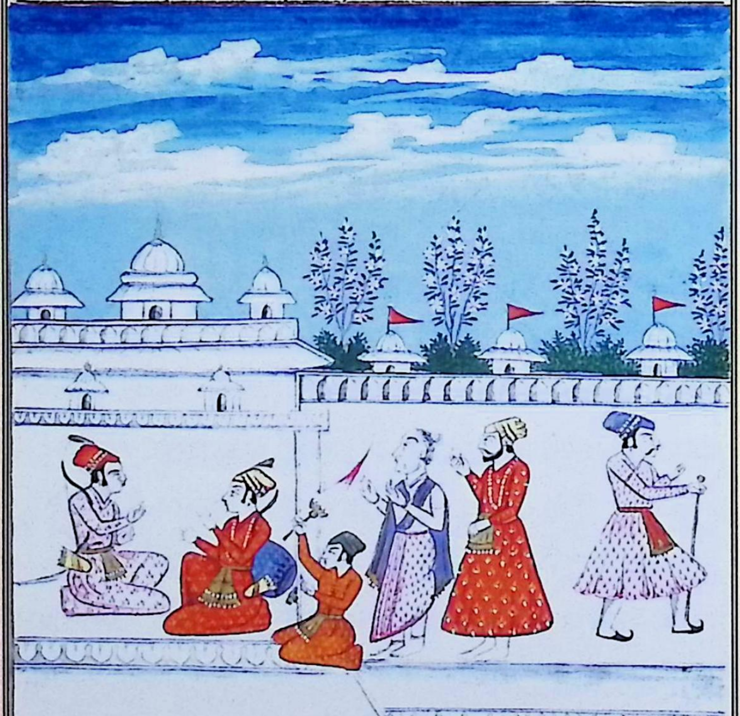

سرکا راده رفتن بهرت بسوت سومنتر گفت که زود برو و بموجب حکم ما خبر رسان
تا لشکریان مستعد شوند سومنتر این را شنیده حکم را بخوشوقتی همگنان رسانید
شهریان آوازهٔ آوردن رام شنیده به بهجت مستعد گردیدند و سپاهیان

انمارت

चूँकि तुम बड़े भाई को राज्य देना चाहते हो इसलिये तुम प्रशंसा के योग्य हो और वह भी प्रशंसनीय है कि तुम उसके भाई हो। कौन सा स्थान है यह जानना चाहिये। तुम्हारे धर्म के कारणवश राजा स्वर्ग में गये और लोग प्रसन्न हुए कि तुम राम को लाने के लिये वहाँ जा रहे हो।

सर्ग- ६४

भरत के जाने का निश्चय

भरत ने सुमंत्र से कहा कि शीघ्र जाओ और हमारे आदेश के अनुसार समाचार पहुँचाओ ताकि सेना तैयार हो जाए। सुमंत्र ने यह आदेश सुनकर प्रसन्नतापूर्वक सबको समाचार पहुँचाया नगरवासी राम को लाये जाने का समाचार सुनकर प्रसन्नता से तैयार हुए और सैनिक

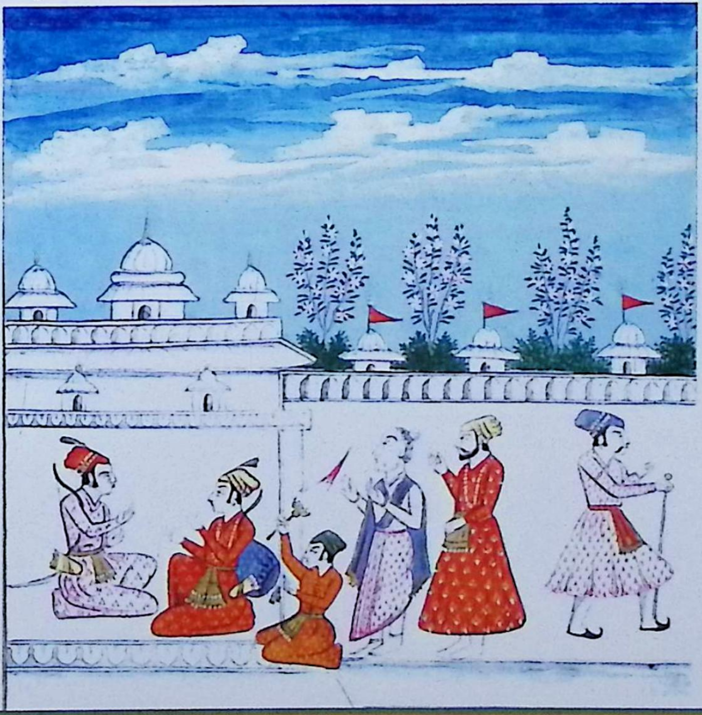

از مکانات خود ها بخوشوقتی تمام برآمدند مردم بسواری اسپ و رتهه های گاوی و اسپی
که بسرعت دل در رفتن برابر بودند طیار شده لشکر موجود نمودند بعد از ان بهرت
رو بروی لشبشت فرمود رتهه سواری خاص بیار سو نتر رتهه تیار کرده حاضر ساخت
پس آن راست رو برای آوردن برادر کلان به تبیه رفتن پرداخت برگاه بهرت از مکان
خاص راجه بیرون آمد اشتر و خر و افیال بسیار از بسیار بهر سو پر بار کردند درینجا
صورت سواری بهرت که معه شترگهن بر رتهه سوار است و دد دوله معه کهار عقب رتهه و فیل سفید
معه نشان پیش رو و عقب او بر رتهه گاوی لشبشت وغیره و مردم سپاه سوار و پیاده و نقارچیان وغیرآن

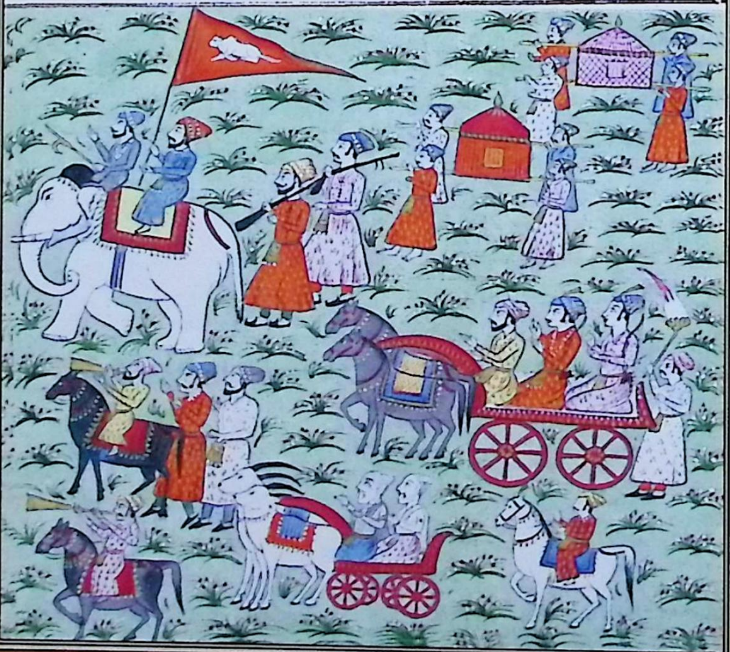

अपने घरों से पूरी प्रसन्नता से बाहर निकले। लोगों ने घोड़ों और गायों तथा घोड़ों वाले रथ पर सवार, जो चलने में दल की गति के बराबर थी, तैयार होकर सेना को उपस्थित किया। उसके पश्चात् भरत ने वशिष्ठ के सम्मुख कहा ''विशेष सवारी वाला रथ लाओ।'' सुमंत्र ने रथ तैयार करके प्रस्तुत किया उसके पश्चात् इस सत्यवादी ने ज्येष्ठ भ्राता को लाने की तैयारी आरंभ की। जिस समय भरत राजा के विशेष महल से बाहर आये चारों ओर अधिक से अधिक ऊँटों, गधों और हाथियों पर लोगों ने बोझ लादा।

भरत की सवारी का चित्र जो शत्रुघ्न के साथ रथ पर सवार हैं और दो तीन डोले कहारों सहित रथ के पीछे हैं और ध्वज वाला सफ़ेद हाथी आगे चल रहा है उसके पीछे बैल के रथ पर वशिष्ठ आदि तथा सिपाही और पैदल सैनिक एवं नक़्क़ारची आदि हैं।

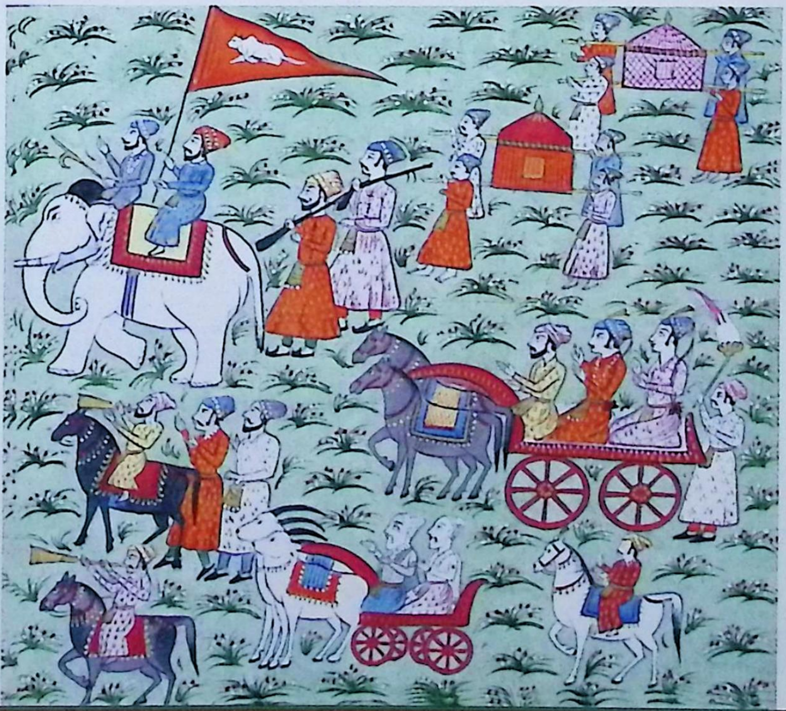

بعد از آن بهرت بر رتهه اسپان سفید سوار شده باراده
دیدن رامچندر روان شد و پس پیش او وزرا و پروهتان بر رتهه‌ها، آفتاب مانند
سوار گشته روانه گردیدند و ده هزار زنجیر فیل با برگستوان وغیره آراسته عقب بهرت
روان شدند و شصت هزار رتهه در پس آن شدند و صد هزار سوار هم روان شدند
و کیکئی و سومترا و کوشلا بخوشوقتی بر بانهها یعنی چونڈول‌ها سوار گشته روانه شدند
و در اثنای راه خوبی‌های رام گویان و ترانه او سرایان قطع راه میکردند و میگفتند آن رامچندر
که برنگ چون میغ و دراز دست و رفتار چون فیل دارد کی خواهیم دید که دیدن او تمام
غم ببرد اید چون خورشید که تیرگی دور کند بدین آئین سخن کنان شهریان و دیگران
بامید دیدن رام گام زدند و آنها که کار جواهر میکردند و آنها که چتر میسازند و توپ ساز
و سوب ساز و باروت ساز و سوداگران و صرافان و پانوڑک و تیلی و نجار و سوراخ ساز
و سازندگان کار عاج و معمار و عاج فروشان و زرگران و طلاکدازان و باد فروشان
و ماکدهان و اشمار فروش و مالیان و غله فروشان و سلاح ساز و طریق و بهات شناس و طیور
پروران و آرکار و رس کار و بهوج کار و گند کار و تنبولیان لوزدبان پرداز و قربات بین
و کوه روان با عورات خود‌ها از همه شور و شغب از شهر برآمدند و آزارمندان و پیران
و کودکان همه بیرون شدند تمام شهر خالی ماند همگنان با نواع سواریها روان گشتند

उसके बाद भरत सफेद घोड़ों वाले रथ पर सवार होकर रामचन्द्र को देखने के विचार से चले। उसके आगे-आगे मंत्रियों और पुरोहित रथों पर सवार होकर चले और दस हजार हाथी झालर आदि से सुसज्जित होकर भरत के पीछे चले। उनके पीछे साठ हजार रथ थे और एक लाख सवार भी चले। कैकेयी, सुमित्रा और कौशल्या प्रसन्नतापूर्वक विमानों पर अर्थात् चन्डोलों पर सवार होकर चलीं। मार्ग में राम की प्रशंसा करने वाले और उनका गुणगान करने वाले मार्ग तय कर रहे थे। वह रामचन्द्र जो रंग में अद्वितीय और दानी हैं हाथी जैसी इनकी चाल है, हम उन्हें कब देखेंगे कि उनका देखना सारे दुखों को समाप्त कर देगा, जैसे सूर्य अंधकार को समाप्त कर देता है। इसी प्रकार नगरवासी और दूसरे लोग राम को देखने की आशा में अपने पग बढ़ा रहे थे। जो लोग कि रत्नों का कार्य करते हैं जो चित्र बनाते हैं, तोप बनाने वाले, साबुन बनाने वाले, बारूद बनाने वाले, व्यापारी, सुनार, तेली, बढ़ई, छेद करने वाले, जरगर सुनार, सोना माली, अनाज बेचने वाले, अस्त्र शस्त्र बनाने वाले, देहात का मार्ग जानने वाले, पक्षी पालने वाले, अन्तार तम्बोली और दूसरे अन्य लोग सब अपनी स्त्रियों सहित कोलाहल करते हुए बाहर निकल आये। बीमार, बूढ़े और बच्चे सब बाहर निकल आये। पूरा नगर खाली हो गया सब विभिन्न सवारियों पर सवार होकर चले

و هزاران برهمنان باقسام سواریها عقب پسر گنگی رفتند و در طریق تماستر متل
برسپت یعنی برجیس همه برهمنان با صدها سپاهیان عازم گشتند با وزرا و دانایان
و بشسٹ و غیره برهمنان با صدها سپاهیان عازم گشتند و با وزرا و لشکر کنار
دریائی گنگا رسیدند آن بحر مواج را که آب ۳ لوک میرود دیده بهرت گفت لشکر من
همین جا اقامت کنند زیرا که کریا بدر میکنیم و آب میدهیم بموجب فرموده بهرت وزرا
و امرا و غیره علیحده علیحده بمکان خودها فرود آمدند مطابق دستوری که داشتند در اینجا صورت
لشکر که بر کنار گنگا فرود آمده و دکاکین و خیمهها و اسپ و فیل و شتر و رتهه و علم و بیرقها استاده

که در تصویر کاده است

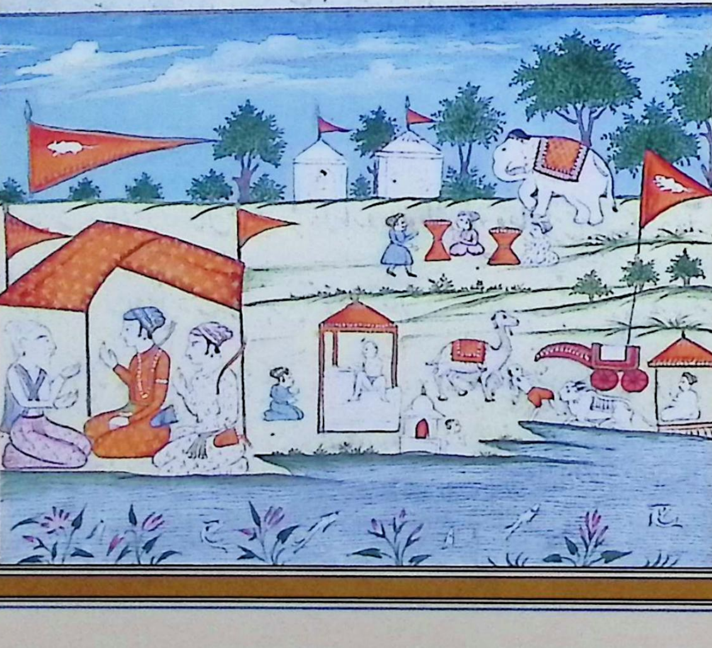

और हजारों ब्राह्मण विभिन्न प्रकार की सवारियों पर सवार होकर कैकेयी के पीछे गये। शास्त्र के अनुसार वृहस्पति की भाँति सारे ब्राह्मण सैकड़ों सिपाहियों के साथ चले और मन्त्रियों तथा सेना के साथ गंगा नदी के किनारे पहुँचे। इस बहते जल को जो तीनों लोक में जाता है देखकर भरत ने कहा कि मेरी सेना यहीं रुके। मैं अपने पिता की क्रिया करूँगा और जल दूँगा। फिर भरत के आदेश के अनुसार मन्त्री और धनवान आदि अलग-अलग अपने पड़ाव पर उतरे, जैसी कि इनकी परम्परा थी।

सेना का चित्र जो गंगा किनारे उतरा हुआ है और दुकानें, घोड़े, हाथी, ऊँट, रथ अलम और झण्डे आदि।

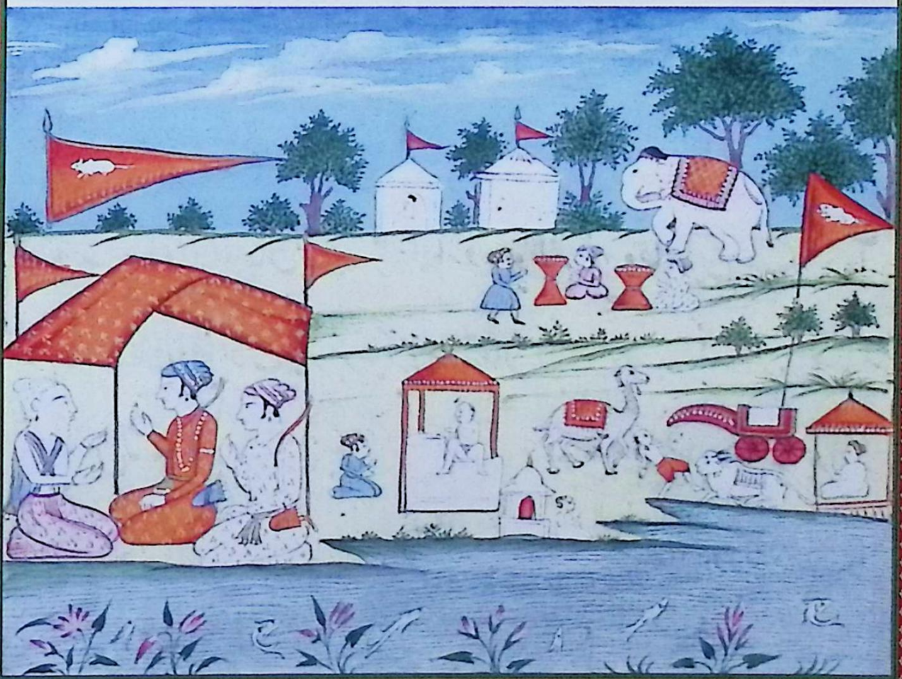

و هزاران برهمنان باقسام سواریها عقب پسر گنگی رفتند و در طریق تماستر متل
برسپت یعنی رجبیس همه برهمنان با صدها سپاهیان عازم گشتند با وزرا و دانایان
و بشسٹ و غیره برهمنان با صدها سپاهیان عازم گشتند و با وزرا و لشکر کنار
دریای گنگا رسیدند آن بحر مواج را که ب۳ لوک میرود دیده بهرت گفت لشکر من
همین جا اقامت کنند زیرا که کریا پدر میکنیم و آب میدهیم بموجب فرموده بهرت وزرا
و امرا و غیره علیحده علیحده بمکان خودها فرود آمدند مطابق دستوری که داشتند در اینجا صورت
لشکر که بر کنار گنگا فرود آمده و دکاکین و خیمهها و اسپ و فیل و شتر و رتهه و علم و بیرقها استاده
که در تصویر کاداده است

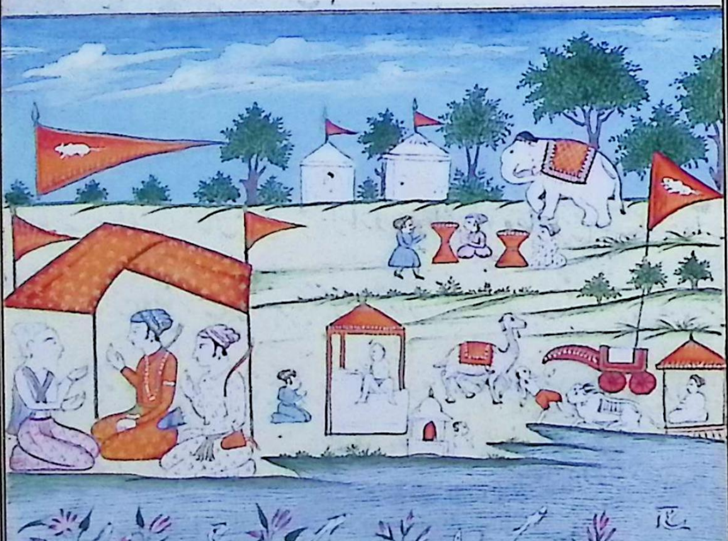

और हजारों ब्राह्मण विभिन्न प्रकार की सवारियों पर सवार होकर कैकेयी के पीछे गये। शास्त्र के अनुसार वृहस्पति की भाँति सारे ब्राह्मण सैकड़ों सिपाहियों के साथ चले और मन्त्रियों तथा सेना के साथ गंगा नदी के किनारे पहुँचे। इस बहते जल को जो तीनों लोक में जाता है देखकर भरत ने कहा कि मेरी सेना यहीं रुके। मैं अपने पिता की क्रिया करूँगा और जल दूँगा। फिर भरत के आदेश के अनुसार मन्त्री और धनवान आदि अलग-अलग अपने पड़ाव पर उतरे, जैसी कि इनकी परम्परा थी।

सेना का चित्र जो गंगा किनारे उतरा हुआ है और दुकानें, घोड़े, हाथी, ऊँट, रथ अलम और झण्डे आदि।

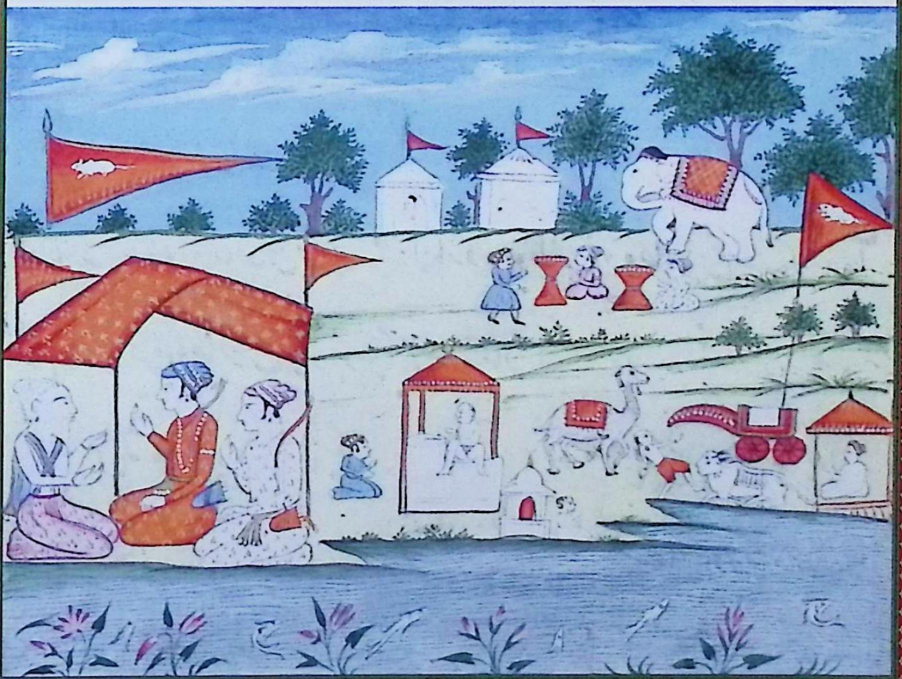

سکر دیدن گنگا چون دهوجا یعنی بیرقها و نشانها لشکر بهرت را کوهیه راجه نگهباد
که قوم بهیل باشد با اقربای خود گفت این لشکر که بر کنار گنگا فرود آمده چندان فراوان است
که حد او معلوم نمیشود و اراده عبور دریا دارد و درین شبهه نیست که این فوج از اولاد
آچهوا کو هست این رتهها با دهوجا کوودار نظر می آید معلوم نیست که باراده گرفتن
فیلان برآمده یا بطریق شکار یا تحقیق چنانست که رامچندر ولد دشرته که پدر او را از شهر
بدر کرده و حالا بهرت بطمع راج برای کشتن او مستعد گشته و از طمع دولت محبت برادری
برطرف میکند و مرا رامچندر محب و دوست عزیز است ازینجهت این لشکر را از عبور دریا باز دارم
باز بهمه اقربا و همراهیان گفت مسلح و مستعد باشند و کمانها بدست بگیرند و تیرها بایستند
و پانصد جهاز خورد که بغراب و کشتی موسوم اند در تصرف خودها نگاهدارند و اگر بکشتن
رام میروند هرگز رفتن ندهیم و اگر بر صلح میروند بگذاریم و اگر نوع دیگرش فی الفور تیرهای پیکان
در کالبد افواج مخالفان چنان خزند که مار در سوراخ خود و حالا این لشکر را خوراک
کرم و جانوران و طایران میکنم هر جا که اسپیان و پیلان و رتهها فرود آمده اند
آن زمین را تالاب خون میکنم ما برای خاطر رام همین لشکر بسیار نمیترسیم درینجا
صورت دریای گنگ و بر کنار آن پنج کشتی با لنگر استاده و راجه کوهیه با سپاه
فوج خود مسلح بر کنار استاده و راجه مذکور بصورتی که سابق نوشته بر اسپ سوار

सर्ग-९४

निषाद का देखना

जब भरत की सेना के चिह्न ध्वज और पताका भील वंश के राजा निषाद ने, देखा तो उसने अपने सम्बन्धियों से कहा कि यह सेना जो गंगा के किनारे उतरी है उसकी सीमा मालूम नहीं होती। वह नदी पार करना चाहते हैं और इसमें कोई संदेह नहीं कि यह सेना इक्ष्वाकु की संतान से सम्बन्ध रखती है। यह रथ ध्वज सहित दिखाई पड़ रहा है। मालूम नहीं कि यह हाथी पकड़ने के विचार से आया है या शिकार खेलने के लिये, या खोज के लिए या कि रामचन्द्र पुत्र दशरथ जिसे उसके पिता ने शहर से निकाल दिया है। और कहा कि अब भरत ने राज्य के लोभ में उसी हत्या करने के लिये निश्चय किया है और धन के लालच में भाई का प्रेम छोड़ रहा है। मेरे लिये रामचन्द्र एक प्रिय मित्र हैं इसलिये मैं इस सेना को नदी पार करने से रोकूँगा। फिर उसने अपने सम्बन्धियों और साथियों से कहा कि हथियार सहित तैयार रहें, कमान हाथ में ले लें, और पंक्ति में बैठ जायें। पाँच सौ छोटे जहाज जो नाव के नाम से जाने जाते हैं अपने प्रयोग में रखें और यदि यह राम की हत्या करने के लिये जाते हैं तो मैं कदापि नहीं जाने दूँगा। यदि सन्धि के विचार से जा रहे हैं तो जाने दूँगा। यदि दूसरी बात है तो तुरन्त हमारे बाण विरोधी सेना के शरीर को ऐसे छेदेंगे, जैसे हरनी अपने छेद में। मैं अभी इस सेना को कीड़े मकोड़ों, पशुओं और पक्षियों का भोजन बना दूँगा। जहाँ घोड़े, हाथी और रथ उतरे हुए हैं मैं उस पृथ्वी को रक्त के तालाब में परिवर्तित कर दूँगा हम राम के लिये इस भारी सेना से नहीं डरते।

गंगा नदी का चित्र, उसके किनारे पाँच नाव लंगर डाले हैं और राजा गुह अपने हथियार सहित सिपाहियों के साथ किनारे पर खड़ा है तथा राजा पहले के समान घोड़े पर सवार है।

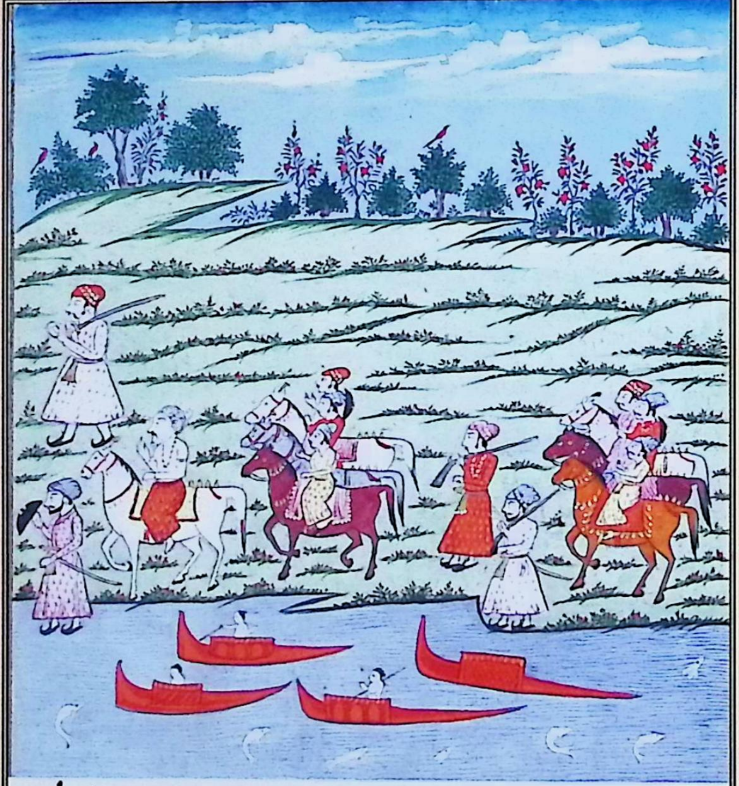

سرکن ملاقات کوهه با اقربای خود و برانسان نصیحت کرده خود بطریق پیشکش شهد

وجزات وروغن وگوشت وماهی همراه گرفته باستقبال بهرت آمد او از دور دیده

در خاطر کرد که این را البته مسکن رام ولچهمن وسیتا معلوم خواهد بود واز زبان سومنتر هم

شنیده بود القصه کوهه رسیده عرض نمود که اینمکان را خانه خود دانسته اقامت فرمایند

وثمرات ومأکول که از مان میسر آید تناول سازند امشب در خانهٔ ما منزل کرده علی الصباح کوچ نمایند

सर्ग-६५

गुह का अपने परिवार वालों से भेंट करना

इस प्रकार दीक्षा देकर भेंट के रूप में शहद नजूरात, रोगन, माँस और मछली साथ लेकर भरत के स्वागत के लिये आये और दूर से देखकर हृदय में सोचा कि निःसन्देह उसे राम, लक्ष्मण और सीता का निवास स्थान ज्ञात होगा। उसने सुमित्रा के मुख से भी सुना था। अतः गुह ने पहुँचकर निवेदन किया कि इस स्थान को अपना घर समझते हुए निवास करें और फल आदि जो हमारी ओर से प्रस्तुत किया जाये उसे ग्रहण करें। आज की रात्रि हमारे घर में निवास करें और प्रातःकाल प्रस्थान करें।

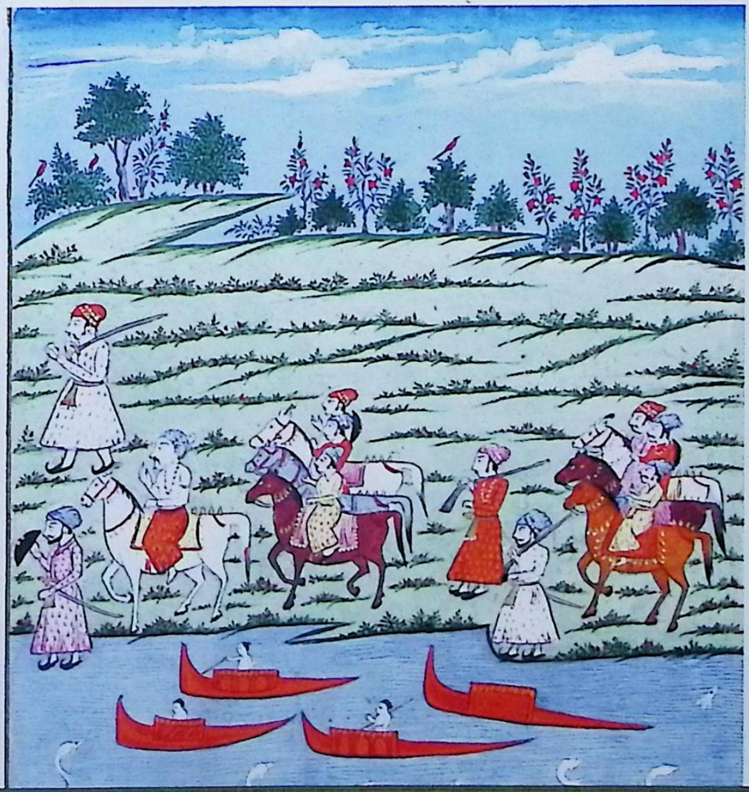

بهرت گفت تو که این سخن گفتی گویا تمام لشکر ما را مهمانی کردی اما این را بگو که بکدام راه بمکان
بهردواج رکهه باید رفت چرا که راه پر خار و خس و افیال سرکش اند گوهه دست بسته گفت
من هم عقب لشکر میروم چه بداندیشی رامچندر در خاطر کرده کوچ میکنید این لشکر بیم افزاست
بهرت گفته گوهه را شنیده گفت اینچنین وقت مرا هرگز مباد و لعنت مرا که تو مرا چنین
دانسته میگوئی رامچندر برادر کلان من بجائی پدر منست برائی باز آوردن ام بصحرا
میروم و دیگر گون مدان این راست میگویم گوهه از گفته بهرت خوشحال شده بطریق اعزاز
به بهرت گفت تحسین و آفرین بر تو و مانند تو بر زمین نمی بینم که بی تصدیع راج بدست آمده را
میگذاری کیرت جاودانی در لوکها خواهی یافت در گفت و شنود آفتاب بمغرب رفت
بتیج جبس
لشکریان بتدابیر گوهه بمکان خودها اقامت کردند و بهرت با شترگهن بمکان استراحت رفت
اما در فکر باز گردانیدن رامچندر خوابش نیامد مانند آتش جنگل در غم بود و از تن او عرق میرفت
و از گفتار دغا آمیز کیکئی زمان زمان دلش میگرفت باز بیرون آمده با گوهه بنشست و با او
بسخنان در پیوست سرگ گفتار گوهه گوهه بهرت را با چشم اشک ریز دیده دست بسته
بدین آئین سخن سر کرد که ای بهرت تو سزاوار اولاد اچهواکو سخن میگوئی و این
ترا میزیبد که دولت و راج را گذاشته چنانکه کسی زن نامعقول را طلاق دهد برای
آوردن برادر دانا میروی و آن رامچندر قابل آفرین است که تو برادر او هستی اینچنین

भरत ने कहा आपने यह बात कहकर हमारी सम्पूर्ण सेना को अपना अतिथि बना लिया। लेकिन यह बताइये कि भरद्वाज ऋषि के घर किस मार्ग से जाना होगा। क्योंकि मार्ग काँटों से भरा है और सरकश हाथी है। गुह ने हाथ जोड़कर कहा ''मैं भी सेना के पीछे चलूँगा। रामचन्द्र के प्रति क्या आप बुरा विचार हृदय में सोचकर कूच कर रहे हैं ?यह सेना भय बढ़ाने वाली है। भरत ने गुह का कथन सुनकर कहा ''मेरा ऐसा बुरा समय कदापि न हो, और मुझ पर धिक्कार हो कि आप मुझे ऐसा समझकर कह रहे हैं। रामचन्द्र मेरे ज्येष्ठ भ्राता हैं, मेरे पिता के स्थान पर हैं, मैं तो राम को वापस लाने के लिये वन जा रहा हूँ।'' गुह भरत की बात सुनकर प्रसन्न होकर सम्मान के रूप में भरत से कहा आप धन्य हैं। आप जैसा मुझे समस्त संसार में कोई दिखाई नहीं देता कि बिना किसी कष्ट हाथ आये हुए राज्य को आप छोड़ रहे हैं। आप संसार में कभी न समाप्त होने वाला सम्मान प्राप्त करेंगे। इस वार्तालाप में सूर्य पश्चिम में जाकर अस्त हो गया। सैनिकों ने गुह की व्यवस्था से अपने खेमों में पड़ाव किया। भरत शत्रुघ्न के साथ विश्राम घर में गये लेकिन रामचन्द्र को वापस लाने की चिन्ता में निद्रा नहीं आयी। वह वन की अग्नि के समान दुखी थे उनके शरीर से पसीना बह रहा था और कैकेयी के धोखे वाली बातों से पल-पल उनका हृदय बैठा जाता था। फिर वह बाहर निकलकर गुह के साथ बैठे और उनसे बातें करने लगे।

सर्ग-९६

गुह की वार्ता

गुह ने भरत को अश्रु भरी आँखों के साथ देखकर हाथ जोड़कर इस प्रकार ठण्डी बातें कीं कि ''हे भरत ! आप इक्ष्वाकु की सन्तान के योग्य वार्ता कर रहे हैं। आपको यही शोभा देता है कि धन व राज्य को छोड़ दें जैसे कि कोई अपनी विवेकहीन पत्नी को तलाक़ देता है। आप बुद्धिमान भाई को लाने जा रहे हैं। रामचन्द्र धन्य है कि आप उसके भाई हैं।

اخلاص در زمانه کمیاب است آن رامچندر که دهرم وان است و براستی مستقیم و از گفته پدر
و والده تو با عورت خود بصحرا رفته آن زورمند و متحمل را همچو تو برادر سزاوار است
بهرت این را شنید گفت از محبت تو و از گفتار و خدمت تو بسیار خوشوقت شدم اکنون
راست بگو و هرآئنه دروغ مگو که برادران من و سیتا کجا هستند و چگونه میگذرانند و در بن
منزل کجا رام بر زمین نشست و کجا خفت و کجا ایستاد و کدام افسانه گفتند و چه خوردند و بیخ
کدام درخت انگدی خفتند که پیشتر گاهی نخفته بودند و لچهمن و سوت کمان در دست گرفته
نخچیر
در شب چسان بیدار بودند از من بگو گوهه دست بسته گفتن آغاز کرد سرگ گفتار گوهه
از روی راستی آنچه رام کرده بود بیان نمود که لچهمن تمام شب کمان چون اندر در دست
گرفته بیدار بود گفتمش این برای تو خوابگاه آراسته ام باری آسایشی بکن من بیدار خواهم بود
و از رفتن
گفت مرا از رام هیچ عزیز نیست من چگونه رام را با سیتا خفته گذاشته بخواب روم
اگرچه پادرم از دیده
رام دشرتهه هم بسیار نخواهد زیست و زمین زود بیوه خواهد شد کوشلا از غم خواهد مرد
شترگهن کهی زنده ماند
و فیل ها
و کوچه و برزن و شاهراه و غرفه ها و شبکه ها پرشور و شغب است با وجود رتهه و اسپ
و جواهرها تمام شهر چون جنگل مینماید و کی از راستی رتهنکیا همه بخیر و عافیت باز در شهر
وعده
خواهیم آمد و آسایش در سلطنت خواهیم نمود بدین آئین در گفت و گوی غم و الم شب در
گذشت و صبحگاه هر دو برادر جٹا نمودند و از ین دریائی بهاگیرتهی عبور فرمودند

ऐसा प्रेम संसार में कम मिलता है वह रामचन्द्र जो धर्म जानने वाले हैं और सत्य के मार्ग पर चलते हैं तथा अपने पिता और आपकी माता के कहने से अपनी पत्नी के साथ वन चले गये उस बलशाली, योग्य व्यक्ति के लिये आप जैसा भाई ही उचित है। भरत ने यह सुनकर कहा, मैं आपका प्रेम, आपकी वार्ता और सेवा से बहुत प्रसन्न हुआ। अब सत्य कहिये तनिक भी झूठ न बोलिये कि मेरे भाई और सीता कहाँ हैं ?किस प्रकार जीवन बिता रहे हैं ?और इस मार्ग में राम कहाँ पृथ्वी पर बैठे और कहाँ सोएँ, कहाँ खड़े हुए और कौन सी कथा का उन लोगों ने वर्णन किया। क्या खाया ?और इडगुदी के किस वृक्ष के नीचे सोये कि इससे पहले कभी नहीं सोये थे। लक्ष्मण और सूत हाथ में धनुष लेकर रात में कैसे जागते रहे। यह सब मुझको बताइये। गुह ने हाथ जोड़कर कहना आरम्भ किया।

सर्ग-८७

गुह की वार्ता

गुह ने जो कुछ कि राम ने किया था सच सच वर्णन किया कि ''लक्ष्मण सारी रात्रि भीतर हाथ में धनुष लेकर जागते रहे। मैंने उनसे कहा कि तुम्हारे लिये मैंने शयनकक्ष की व्यवस्था की है, कुछ विश्राम कर लो, मैं जागता रहूँगा। उन्होंने कहा; ''मुझे राम से अधिक कोई चीज़ प्रिय नहीं है। मैं किस प्रकार राम को सीता के साथ सोता हुआ छोड़कर सो जाऊँ और राम के जाने के बाद दशरथ भी अधिक जीवित नहीं रहेंगे। पृथ्वी शीघ्र ही विधवा हो जायेगी। कौशल्या दुःख से मर जायेंगी, यद्यपि मेरी माँ शत्रुघ्न को देखने से जीवित रहेगी और गली, खिड़कियाँ, पगडण्डी, कमरे और झरोखे सब कोलाहल से भरे हैं। रथ, घोड़े, हाथी, रत्नों के होने के अतिरिक्त पूरा शहर वन प्रतीत होता है और कौन सत्यता से अपना प्रण पूरा करता है। हम सब कुशलपूर्वक पुनः शहर में आयेंगे और राज्य में विश्राम करेंगे। इसी प्रकार दुःखभरी बातों में रात्रि बीत गयी और प्रातः हो गयी। दोनों भाईयों ने जटा बाँधी और भागीरथी नदी को पार किया।

هرد وجتا و کش یعنی کاه و چیر داشته مانند دو فیل کلان دو کمان گرفته با ستیا
راه نوردیدند درینجا صورت نموداری وقت شب و ماه و کواکب و دریای گنگا و درخت و بهرت
و شترکهن و راجه گوهه بر مسند خود ها نشسته اند و بنجن اند و یک خدمتگار با چور ایستاده
دآوند شیر و شهد و روغن و ماهی یکطرف نهاده

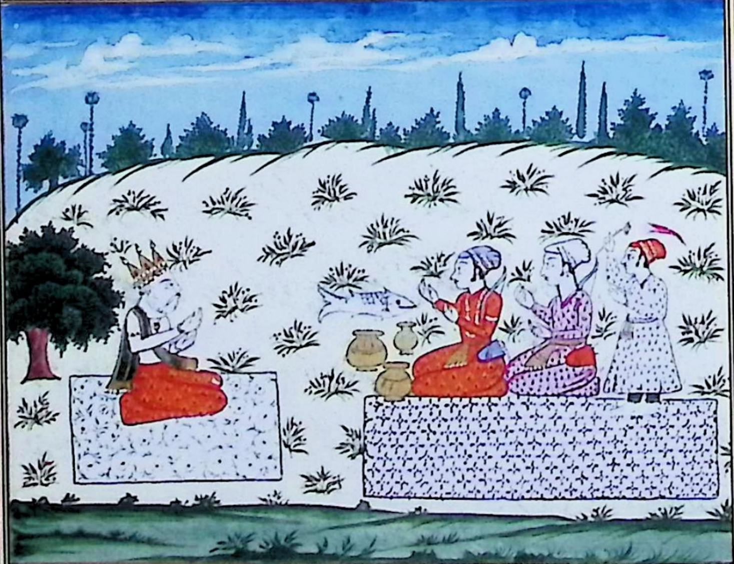

سرک گفتار بهرت گفت گوهه را شنیده بهرت غمگین گردیده مانند درخت از بیخ برکنده
بزمین افتاد گوهه بهرت را که نوجوان و زورمند و مانند شیر کتف داشت و دراز دست
و چون برگ نیلوفر چشم خوشنماست بدانحالت دیده متوزع و متشتت گشت
و شترکهن این وضع او دیده بگریه آمد و همه مادران او که از و پاس یعنی روزه که بعد فوت شوهر

दोनों जटा बाँधे हुए अर्थात् घास और चीर रखे हुए दो बड़े हाथियों के मान दो धनुष लिये हुए सीता के साथ मार्ग तय कर रहे थे।

रात का समय और चाँद तारों के निकलने का चित्र गंगा नदी, वृक्ष का चित्र, भरत, शत्रुघ्न और राजा गुह अपने-अपने आसन पर बैठे हुए हैं और वार्ता कर रहे हैं एक सेवक खड़ा है और दूध, शहद, रोग़न और मछली की परात एक ओर रखी है।

सर्ग-६८

भरत की वार्ता

गुह की बात सुनकर भरत दुखी हो गये और जड़ से उखड़े हुए वृक्ष के समान पृथ्वी पर गिर पड़े। गुह भरत को, जो नवयुवक शक्तिशाली, जिसका कन्धा शेर के समान था और लम्बे हाथों वाला था नीलोफर के समान उसके नेत्र सुन्दर थे, इस दशा में देखकर चिन्तित हो गये। और शत्रुघ्न यह दे खकर रोने लगा। उसकी सारी माताएँ व्रत के कारण जो वह अपने पति की मृत्यु के बाद रख रही थी।

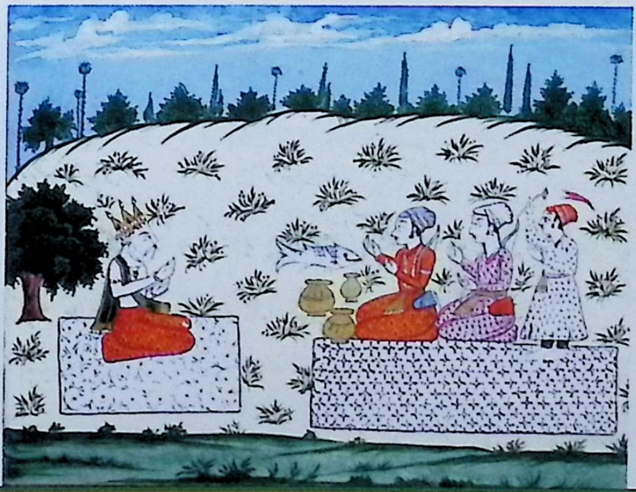

میدارند لاغر گشته بودند بیهوش تر شدند گوشلا دست بر بهرت گذاشته بطریق
مضطربانه پرسید چه کالبد تو بی آزار است که ما ترا دیده بمیریم و محکوم تو ایم یا چیزی
لچهمن را خبر بد شنیده یا پسر مرا که یک پسر است خیریت است چون گوشلا چنان گفت
او بعد از ساعتی بخویش آمده گفت از گوهه ماجرا پرسیدم آن بنوعی بیان نمود
که مرا بیهوشی و رقت از کار در ربود گوهه بمن گفت که من برای رامچند بسیار اشیا
آوردم او هیچ نگرفت و لچهمن خود آب آورد رام با سیتا دست و پا شسته سندهیا
کرد و آن آب باقی را لچهمن خود بکار برد بعده لچهمن خود دربه یعنی قسمی از کاه آورده
مکان خواب مهیا ساخت و رام و سیتا بر وا استراحت گزیدند و لچهمن پابانی بشست
و در زیر بیخ این درخت انگدی این ماجرا گذشت و من و لچهمن و سوبت کمان در دست
گرفته بیدار ماندیم **سر گفتار بهرت** بعد از آن بهرت رفته آن مکان خوابگاه
رامچندر را دیده غمگین تر شده آمده با مادران خود گفت رام را که از دشرته پیدا شده
چسان بر زمین شب گذرانیده باشد و اجن ہوا و تر داشته بر گاه چسان خفته باشد آنانکه
در گلها و خوشبوئیها و چندن و اگر و سفید ابر و آواز کوکلا و مناظرها همیشه نشسته باشد
و بر بستر زرین و سیمین خفته باشد و از سرود و رباب و غیره نفیرها و مردنگ و شنکه
بیدار شده باشد و از اوصاف سوت و بیدیان و افسانه ها خصلت پذیر باشد

निर्बल हो गयी थीं, मूर्छित हो गयीं। कौशल्या ने भरत पर हाथ रखकर व्याकुलता से पूछा कि ''तेरा शरीर निःरोग है हम तुझे देखकर जीते हैं, और तेरे आधीन है। क्या तुमने लक्ष्मण के सम्बन्ध में कोई बुरा समाचार सुना है, या मेरा पुत्र जो एक ही पुत्र है सकुशल है।'' जब कौशल्या ने यह कहा तो उसने एक पल के पश्चात् होश में आकर कहा, मैंने गुह से घटना पूछी उसने इस प्रकार वर्णन किया कि मुझे मूर्छा और दुख ने अचेत कर दिया। गुह ने मुझसे कहा मैं रामचन्द्र के लिये बहुत सी वस्तुएँ लाया उन्होंने कुछ नहीं लिया। लक्ष्मण स्वयं पानी लाये और राम ने सीता के साथ हाथ पैर धोकर सायंकाल की पूजा की तथा शेष पानी को लक्ष्मण ने प्रयोग किया। उसके पश्चात् लक्ष्मण ने स्वयं ही एक प्रकार की घास लेकर सोने का स्थान बनाया और राम एवं सीता सोने चले गये। लक्ष्मण ने पाँव धोया और इनजीर के किसी वृक्ष की जड़ में यह घटना घटित हुई और मैं और लक्ष्मण और सूत हाथ में धनुष लेकर जागते रहे।

सर्ग-८८

भरत की वार्ता

इसके पश्चात् भरत ने जाकर रामचन्द्र के सोने का वह स्थान देखा और पहले से अधिक दुखी होकर आये तथा अपनी माताओं से कहा; ''राम ने जो दशरथ की सन्तान हैं कैसे पृथ्वी पर रात्रि व्यतीत की होगी, जटा रखकर घास पर कैसे सोये होंगे ?जो लोग कि पुष्पों, सुगन्धों, चन्दन, अगर, सफेदाबर और कोयल की आवाजों तथा सुन्दर दृश्यों पर सदा-सदा बैठे होंगे सोने चाँदी के आसन पर सोये होंगे, रबाव व चंग और बांसुरी की ध्वनि सुनकर जागे होंगे, सूत वेद जानने वाले और कहानी के गुणों से सुसज्जित हैं वह महान वंशजों व समस्त लोगों के प्रिय हैं। राज्य और धन छोड़कर कैसे तपस्या कर रहे हैं।

آن بزرگ نسب عزیز جمیع مردم راج و دولت را بگذاشته چگونه ریاضت میکنند
بنابران دنیا مرا چون خواب مینماید و برین دل بسته نمیشود و البته تدبیر هیچ نفعی ندارد
بواسطه آنکه تقدیر غالب است اینک خوابگاه برادر منست که از گاه سخت و پر خار ساخته
و دختر راجه جنک و سنه (بنو) راجه دسرته همین جا بر زمین خفته و ریگ و خار ریزهای زر که از او شی او
ریخته بنظر می آید آن نیکوکاری ستی (ناز ک بدن) مانند سایه همراه شوهر است و آفرین برد
که عقب شوهر میرود و ما همه بی آرام (نیکبخت) خفته ایم تمام روی زمین مرا خالی مینماید از مردن دسرته
(من هم) و رفتن رامچندر در دل هیچ از زمین نمیخواهم و تمام شب مرا چون بلابل مینماید و از امروز
بر بستر کاه خوابم پهل و مول خورم و جتا اجن دارم و عوض او بصحرا مانم و این کذب نباشد و بستر کهن با من باشد
(کفتا) و رام با لچهمن آمده راج نماید و من در سایه برکها باشم و در سایه راج رامچندر بود و این امید دیوتا راست آنقدر این
شب آخر شد طیوران از آشیانها آواز کردند و برآمدند و گوهه هم با همراهیان خود عزم رفتن خانه خود کرده

در اینجا صورت درخت یکطرف و در زیر آن
کوهه نشسته و یکطرف در آنجا صورت بهرت غمگین
سر فرو کرده نشسته و نزدیک او شترگهن
نشسته و کوشلا مادر رام دست بر سر بهرت
گذاشته و کیکئی و سومترا عقب او استاده

इस आधार पर संसार मुझे स्वप्न की भांति लग रहा है और हृदय इसमें लगता नहीं है। निःसंदेह लाभ की कोई संभावना नहीं है। क्योंकि भाग्य प्रभावी है। यह मेरे भाई का शयनकक्ष है जो कठोर और कांटेदार घास से बना है, राजा जनक की पुत्री और राजा दशरथ का पुत्र इसी स्थान पर धरती पर सोये हैं। यहाँ पर स्वर्ण के कण उसके लिये बिखरे हुए दिखाई देते हैं और वह भाग्यशाली है जो परछाई की भाँति पति के साथ है, धन्य है जो कि पति के पीछे जा रही हैं। हम सब व्याकुल सोये हैं मुझे समस्त पृथ्वी खाली लग रही है। दशरथ की मृत्यु और रामचन्द्र के वन जाने से मैं इस पृथ्वी से अब कुछ नहीं चाहता, पूरी रात्रि मुझे विष की भांति लगती है। आज से मैं भी घास की शैय्या पर सोऊँगा, कंद मूल खाऊँगा और अजन की जटा रखूँगा। उनके बदले में मैं वन में रहूँगा। यह असत्य नहीं होगा शत्रुघ्न मेरे साथ होगा। राम लक्ष्मण के साथ आकर राज्य करेंगे और मैं पत्तों की छाया में रहूँगा यह आकाश देवता पूर्ण करेंगे, इसी वार्तालाप में रात्रि हो गयी। पक्षियों ने अपने घोंसलों से चहचहाना आरंभ कर दिया और घोंसलों से बाहर निकल आये और गुह ने भी अपने साथियों के साथ अपने महल में वापस जाने का निश्चय किया।

एक ओर वृक्ष का चित्र उसके नीचे गुह बैठा हुआ है, उसके एक ओर भरत का चित्र जो दुखी सर नीचे किये बैठे हैं उसके निकट शत्रुघ्न बैठे हैं और राम की माता कौशल्या भरत के सर पर हाथ फेर रही है तथा कैकेयी और सुमित्रा उसके पीछे खड़ी हैं।

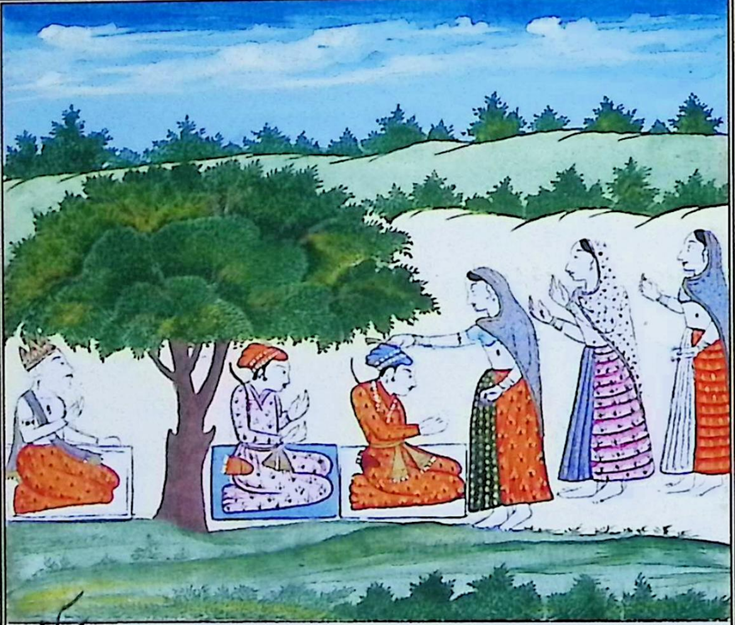

پس کوچ آلی شب را بهرت بر کنار گنگا گذرانده صبحی برخاسته نشتر گهن گفت
شب رفت و آفتاب بر آمد و نیلوفر شگفتن گرفت گوهه سردار بلنده شرنگبیر را بیا
تا لشکر مرا از گنگا عبور کنانند نشتر گهن گفت مرا در اضطراب هموم خواب نیامده
بیدارم نخفته ام در فکر خوشوقت ساختن و بخدمت پرداختن رامچند هستم
اینقدر به بهرت گفته نوکران از فرموده ما گوهه را بیارند درین اثنا گوهه حاضر گشت
و دست بسته عرض نمود که بر کنار دریا لشکر شب را آسودگی گذرانده و تصدیعی
بکسی نرسید اما میدانم ترا کجا راحت است که پدر مرده و برادر بصحرا سفر کرده بهرت

सर्ग-१००

भरत ने वह रात गंगा के किनारे बिताई और सुबह उठकर शत्रुघ्न से कहा ''रात बीत गई और सूर्य उग आया तथा नीलोफर के फूल खिलने लगे श्रृंगवेर शहर के सरदार गुह को बुलाओ ताकि वह मेरी सेना को गंगा पार कराये।'' शत्रुघ्न ने कहा ''गहरी सोच और चिन्ता के कारण मुझे नींद नही आयी। मैं जाग रहा हूँ सोया नहीं हूँ। मैं समय को आनन्दमयी बनाने और रामचन्द्र की सेवा में व्यस्त होने की चिन्ता में हूँ।'' उसने भरत से यह कहते हुए नौकरों को आदेश दिया कि गुह को बुलाकर लायें। इसी मध्य गुह ने उपस्थित होकर हाथ जोड़कर निवेदन किया कि सेना ने नदी के किनारे रात भली प्रकार व्यतीत की और किसी को कोई कष्ट नहीं हुआ। लेकिन मैं जानता हूँ कि आपको सुख कहाँ हैं ?क्योंकि पिता का देहान्त हो चुका है और भाई वन में यात्रा पर गये हैं।

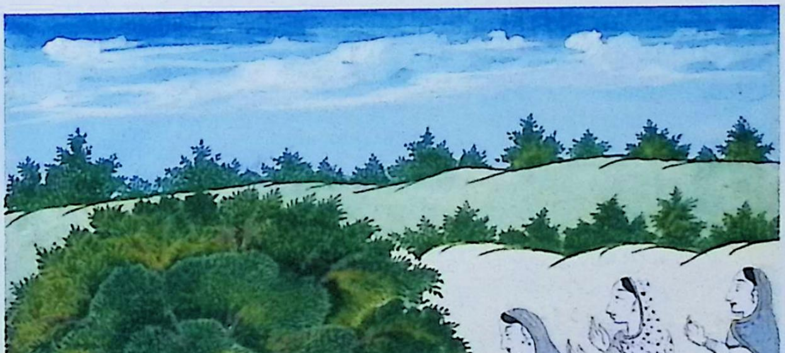

در جواب گفت که از خدمت و پرستش تو شب گذشت اکنون کشتی ها آورده لشکر را
از گنگا بگذران گوهه اندر بلده رفت و بهم اهیان گفت که کشتی ها برائی عبور جمیع لشکر
جمع سازید همگنان بکار پرداختند و پانصد کشتی کلان که بغراب یعنی مانند جهاز خورد
بودند موجود ساختند همه بانت نهانی و کهنٹا ها و پتاکا ها و دیگر پارچه ها زیب آور
بودند و یک کشتی خوب که پوشش سفید شال داشت و با جرس وغیره آراسته بود
گوهه پیش آورد بر و بهرت و شترگهن سوار شدند و کوشلا و سومترا وغیره همه زنان راجه
دشرتهه که سیصد و پنجاه بودند و پروهت بششت با برهمنان بسیار سوار گشتند
و اعرابها و پارچه ها و ظروف بها نهادند همه بخیریت عبور کرده آنطرف دریا رسیدند
کسی بسرعت عوارت گذراند و کسی اسپان راند کسی کشتیها زود روان کرد القصه
همه لشکر عبور نمود بهرت باستصواب بششت بگوهه گفت آنجا را که رام است
راه بنما که تو راه میدانی گوهه بدین آئین نشان داد اینک سمت پراگ جنگل خوب است
انجا بسیار طیور ند و تالاب وغیره اند از انجا یکروه آشرم یعنی مکان بهردواج نام رکهیشی
رکهه است که سومتر سارتهی تو هم میدانی بهرت تو آنجا رفته آن رکهیش مشهور
هر سه لوک را نمسکار کرده بموجب گفته او آنجا یک شب اقامت فرما که او خواه مخواه
ضیافت خواهد کرد و از و نشان برادران خود بپرس گوهه چون اینقدر گفت بهرت

भरत ने उत्तर में कहा कि ''तुम्हारी सेवा के प्रतिफल में रात्रि अच्छी व्यतीत हो गयी। अब नाव लाकर सेना को गंगा पार कराओ। गुह ने नगर जाकर साथियों से कहा कि ''पूरी सेना को नदी पार कराने के लिये नाव एकत्र करो।'' सब इसी कार्य में व्यस्त हो गये और बड़ी-बड़ी पांच सौं नावें जो छोटे जलपोतों के समान थीं एकत्र कर दीं। समस्त नावें प्रतीक, कंठमाला और अन्य वस्त्रों से सुसज्जित थीं और एक अच्छी नाव जिस पर सफेद शाल पड़ी हुई थी और जरी आदि से सुसज्जित थी गुह ने प्रस्तुत की। इस पर भरत और शत्रुघ्न बैठे, राजा दशरथ की पटरानियां कौशल्या और सुमित्रा आदि जो संख्या में तीन हजार पचास थीं, वह और पुरोहित, वशिष्ठ तथा ब्राह्मणों के साथ बैठे एवं पारचे और बर्तन रख दिये। सभी कुशलपूर्वक पार होकर नदी के दूसरी ओर पहुँचे। किसी ने शीघ्रता से स्त्रियों को उतारा। कोई घोड़े लाया और किसी ने नावें शीघ्रता से भेजी। संक्षेप यह कि पूरी सेना पार उतर गयी भरत ने वशिष्ठ के परामर्श से गुह से कहा ''जहाँ राम हैं वहाँ का मार्ग बताओ, क्योंकि तुम वहाँ का मार्ग जानते हो।'' गुह ने इस प्रकार पता बताया ''उस ओर थोड़ी दूरी तक प्रयाग नामक एक अच्छा वन है वहाँ अनगिनत पक्षी और तालाब आदि हैं वहाँ से एक कोस की दूरी पर आश्रम अर्थात् भरद्वाज ऋषि का घर है जिसे आपका सारथी सुमन्त्र भी जानता है। भरत आप वहाँ जाकर तीनों लोक के इस प्रसिद्ध तपस्वी को नमस्कार करके उनके कथनानुसार वहाँ पर एक रात्रि निवास कीजिए। क्योंकि वह अवश्य आतिथ्य सत्कार करेगा और फिर उससे अपने भाईयों का पता पूछिये। गुह ने जब यह कहा तो भरत ने उससे नम्रता व प्रेम से कहा कि मैं तुम्हारे आतिथ्य सत्कार से प्रसन्न हूँ।

اورا از مهربانی فرمود از مهمانی و اکرام تو خرسند هستم اکنون مرخص شو که تو بهلت م

هستی و خدمت او کرده چنانچه هنگام برگشتن گو هه رخصت گشته با اقربا باز

بمکان خود آمد و بهرت با لشکر خود سمت پراک رفت و سومنتر دیهات فهم را پیشتر فوج

نمود ثمرات و گلها را شکنان و خوش الحانی طیور گوش کنان و خوبیها و فنون

رامچندر و لچهمن و سیتا سرایان و مذمت کیکئی گویان تا دو کروه راه طی کرده به پراک

رسید آنجا را چون باغ چترتهه بنت رت دید که درختان آنجا پیوسته بارآور باشند و نیلوفر و تیرتهها

بسیار موجود اند بهرت به پراک رفت نمسکار و پردچهنان کرده همه مادران او و شترگهن

نمسکار و پردچهنا بجا آوردند از آنجا برآمده یک کروه از آنجا آشرم بهردواج دید خوشوقت گشته

لشکر را همانجا گذاشت صورت مکان بهردواج و بهرت و شترگهن و بشست و سومنتر پیاده به ملاقات او بیرونا

و بمکان او درخت کدلی بر دروازه

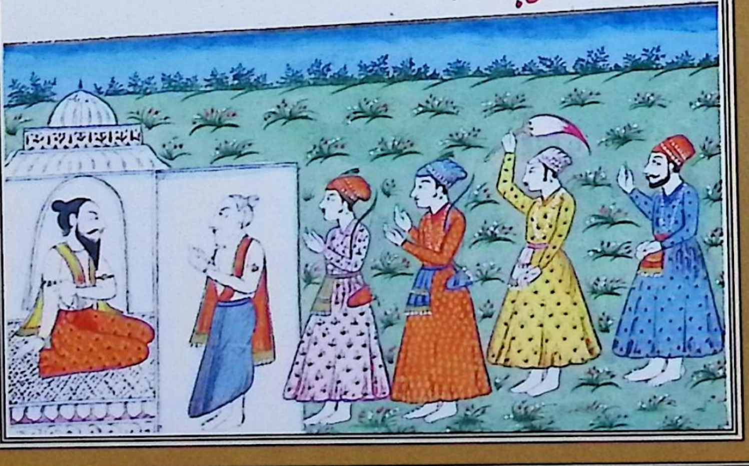

अब तुम विदा हो जाओ क्योंकि तुम राम के भक्त हो और तुमने उनकी सेवा की है। अतः वापसी के समय गुह अपने संबंधियों के साथ विदा होकर अपने घर चला आया और भरत अपनी सेना सहित पराग की ओर चले गये और गाँव को जानने वाले सुमंत्र को सेना के आगे भेजा तथा फल फूल तोड़ते पक्षियों की चहचहाहट सुनते, रामचन्द्र, लक्ष्मण और सीता के गुणों का बखान करते और कैकेयी की निन्दा करते हुए दो कोस का मार्ग तय करके प्रयाग पहुँचे। वहाँ जब उन्होंने चित्ररथ का उपवन देखा जिसके वृक्ष सदा सदाबहार और फलों से लदे रहते हैं, वहाँ नीलोफर और तीर्थ असंख्य उपस्थित हैं। भरत प्रयाग गये, नमस्कार और आदर सम्मान किया, उनकी समस्त माताओं ने और शत्रुघ्न ने भी नमस्कार किया तथा सम्मान दिया और वहाँ से निकलकर एक कोस की दूरी पर भरद्वाज का आश्रम देखा प्रसन्न होकर सेना को वहीं छोड़ा।

भरद्वाज के भवन का चित्र। भरत शत्रुघ्न वशिष्ठ और सुमंत्र उनसे भेंट करने के लिये पैदल जा रहे हैं और उनके भवन में द्वार पर कदली का पेड़ है।

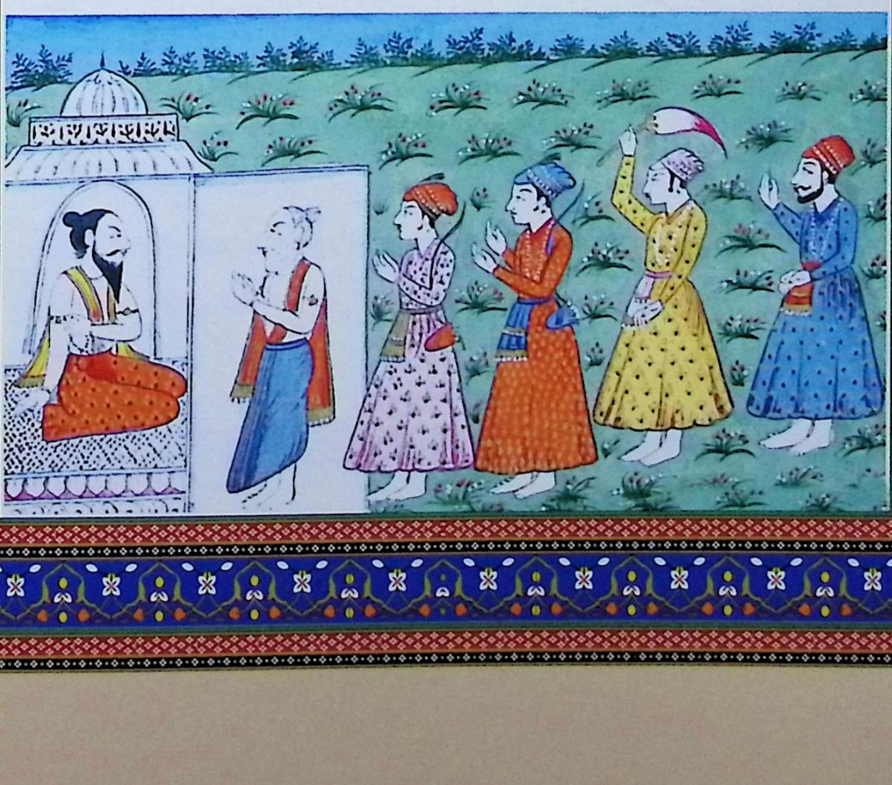

رسیدن بهردواج القصه بهرت بمجرد دیدن مکان بهردواج یک کروه لشکر را گذاشته
اسلحه وغیره را رها کرده پارچه خاکی پوشیده پا پیاده با منتریان و پروهت وشترگهن
روان گردید بر دروازه او نهالان کدلی دید و جماعه منیشران نظر کرد و جانوران
آنجا چنانکه تصدیع بکسی نرسانند گویا که دروازه سرگ است درانجا با پروهت بششٹ
وغیره داخل شد بمجرد دیدن رکهه منتریان را هم گذاشته با پروهت وشترگهن نزدیک
رفت بهردواج بششٹ را دیده از آسن خود برخاسته پیشوا آمد با یکدیگر ملاقی
شدند و بهرت نمسکار کرد بهردواج آن هردو را پسر راجه دشرته دانسته اکرام
ایشان بجا آورد و موافق ضابطه دیگر همراهیان را نیز بعد ازان خیریت ملک و خزانه
و راج پرسید جواب عافیت شنید بهرت و بششٹ هم خیریت وجود واگنهوتر
وشاگردان او و جانوران ازو پرسیدند جواب عافیت شنیدند بعده بهردواج گفت
که ای بهرت آمدن خود بیان کن در دل شک است رامچندر پسر را با برادر و عورت
بموجب گفته مادر تو پدر تو بصحرا فرستاد که تا چهارده سال درانجا گذراند چه مگر محبت
برادری ترک کرده بکشتن او آمده تا راج بیخار کنی البته این ناکردنی مکن چون بهردواج
چنان بر زبان راند بهرت با گریه گفت من سزاوار الغتم که مرا چنان فهمیدی من در دریای
این گناه که مادر من از طمع راج کرد غرق شده ام مرا آرزو آنست که رام را از صحرا بیارم

ولی

सर्ग-१०१

भरद्वाज का दर्शन

संक्षेप में भरद्वाज का घर देखते ही एक कोस पहले ही सेना छोड़कर अस्त्र आदि उतारकर, घरेलू वस्त्र पहनकर पैदल मंत्रियों और पुरोहित एवं शत्रुघ्न के साथ चले। उसके द्वार पर कदली के पेड़ दिखे और मुनीश्वरो का समूह देखा, वहां के पशु ऐसे थे जो किसी को हानि नहीं पहुँचाते थे जैसे कि स्वर्ग का द्वार है। वहाँ पर पुरोहित वशिष्ठ आदि प्रविष्ट हुए। ऋषि को देखते ही मंत्रियों को छोड़कर पुरोहित और शत्रुघ्न के साथ निकट गये फिर भरद्वाज वशिष्ठ को देखकर अपने आसन से उठकर आगे बढ़े और एक दूसरे से भेंट की। भरत ने नमस्कार किया, फिर भरद्वाज ने इन दोनों को राजा दशरथ का पुत्र समझकर सत्कार किया तथा नियमानुसार अन्य साथियों का भी सत्कार किया तथा उसके पश्चात् देश, खजाने और राज्य का कुशल पूछा। सब कुशल जानकर भरत और वशिष्ठ ने भी अग्निहोत्री के अस्तित्व, उसके शिष्यों और पशुओं की कुशल पूछी और सब कुशल जानकर भरत से भरद्वाज ने कहा ! ''ऐ भरत अपने आने का उद्देश्य बताइये, हृदय में सन्देह है। पुत्र रामचन्द्र को भाई और पत्नी सहित आपकी माता के कथनानुसार आपके पिता ने वन में भेज दिया कि चौदह वर्ष वहाँ व्यतीत करें। क्या आप प्रेम जताते हुए भ्रातृत्व को समाप्त करके उनके वध के लिये आये हैं। ताकि बिना किसी चिन्ता के आप शासन करें। आप यह कुकृत्य न कीजिये। जब भरद्वाज ने यह बात कही तो भरत ने रोते हुए कहा : मैं अपमानित होने का अधिकारी हूँ कि आपने मुझे ऐसा समझा मैं इस पाप के कुण्ड में जो मेरी माता ने राज्य के लालच में किया डूब चुका है। मुझे इस बात की इच्छा है कि राम को वन से वापस लाऊँ।

وراج باو بسپارم شما برمن خورسند شوید بهردواج خوشوقت شده تبسم کرده
گفت همچنین لایق تست و ورونه تو چون ماه روشن است و کیرت وجس خواهد شد
و من میدانم رام برادر تو با سیتا و لچهمن بر کوه چترکوٹ بعافیت اقامت دارد امشب
همین جا باش صبح خواهی رفت بهرت قبول کرده اراده منزل نمودن همانجا نمود
در اینجا نیز مکان بهردواج رکهه و در انجا درخت کیله بر دروازه و جاهای نشست منیشران
و جانوران آهو و طاوس وغیره و در جای آسن بهردواج گسترده و در همان مکان
و در همانجا بهرت و شترکهن و بششٹ و بهردواج نشسته

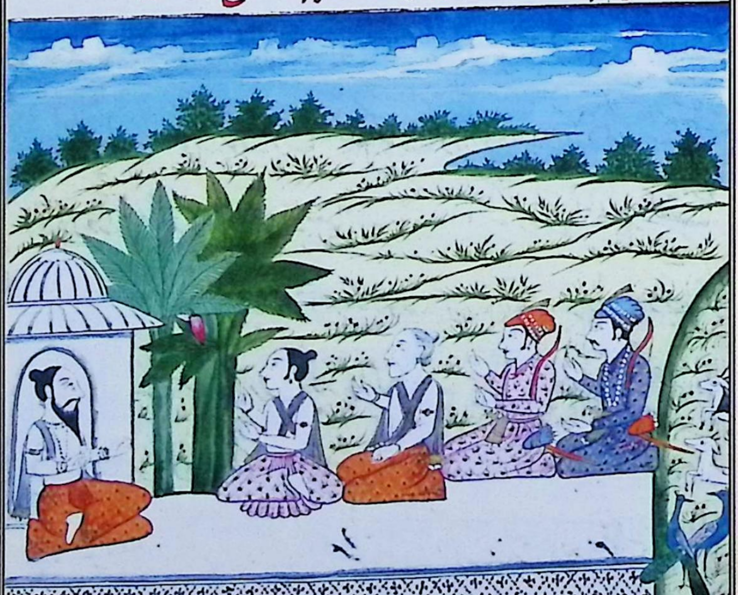

और राज्य उनको सौंप दूँ। आप मुझ पर प्रसन्न होंगे फिर भरद्वाज ने प्रसन्न होकर मुस्कुराते हुए कहा आपके सम्मान के लिये यही उचित है। आपका भविष्य चन्द्रमा के समान उज्जवल है और आपको महानता एवं सम्मान प्राप्त होगा। मैं जानता हूँ कि आपके भाई, सीता और लक्ष्मण के साथ चित्रकूट के पर्वत पर सकुशल हैं। आज रात्रि यहीं पर निवास कीजिये। प्रातः प्रस्थान कीजिएगा। भरत ने स्वीकार करते हुए वहीं निवास का विचार किया और रुक गये।

यहाँ भी भरद्वाज ऋषि का भवन है। जहाँ द्वार पर केले के वृक्ष हैं मुनीश्वरों और हिरण व मोर आदि पशुओं के बैठने का स्थान है। आसन के स्थान पर भरद्वाज विराजमान हैं। उसी स्थान पर भरत वशिष्ठ और भरद्वाज बैठे हुए हैं।

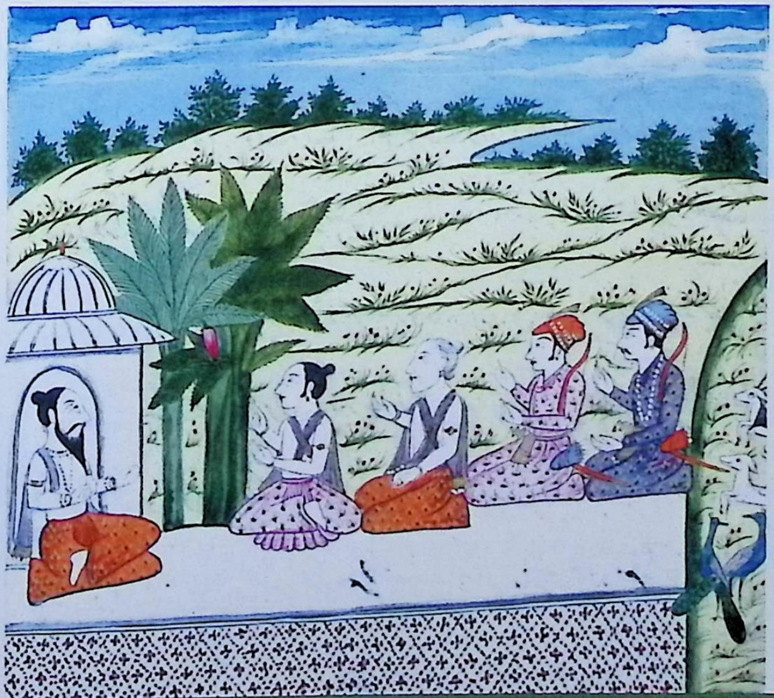

کر ضیافت چون بهرت اراده منزل نمودن در آشرم رکهه کرد او در تهیه
مهمانی شد بهرت گفت انچه ار کهه و پادو ثمرات جنگلی آورده دید همین کافیست زیاده تم
تکلیف مکنید بهردواج رکهه تبسم نموده گفت من میدانم که برای خاطر من انچه
ترا میکذرانم بهمان سیر میشوی اما میخواهم که تمام لشکر ترا طعامی بخورانم و برای خواهش
دل من امر من بجا آر لشکر را چرا دور گذاشته تنها آمدی بهرت دست بسته
به تبسم گفت از خوف شما که اسپان زمین را خراب کنند و درختان و مکانها بر کنند
لهذا با کرو چند مردم آمده ام حالا بامر شما خواهم طلبید این بگفت و تمام لشکر را نزدیک
خود طلب داشت و بهردواج از آب غسل کرده در پرستش گاه آتش خود آمد و دل را یکجا
کرده بطریق سماده و جوک دهیان مشغول گشت و اراده چنان کرد که بهرت و بششت
نظر باطن
وغیره که در آشرم آمده اند ایشان را ضیافت باید کرد و بشوکرمان را طلبید و گفت اراده
ستارن که بیکنظر عمارت طیار میکنند
ضیافت دارم انچه فرمایم مهیا ساز و هر چهار لوک پال یعنی اندر و جم و برن و کبیر را طلب کن
مانند آب
و دریاها که بسمت مشرق میروند و دریاها که بمغرب میروند بیار و انچه بر زمین و هوا
نیک است موجود نما و دیگر اطعمه و اشربه جمله طیار کن و گندهربها را برای سرود بطلب
و بشواسو و هاها و هوهو وغیرهم را و اپسران را حاضر کن گهرتاجی و مشرکسی و النبوکها
و ناگ دنتا و هیمان و هیمیندرا و کرت ستهلی ایشان را طلب دار و در اینجا باغی

सर्ग-१०२

आतिथ्य सत्कार

जब भरत ने ऋषि के आश्रम में निवास का निश्चय कर लिया तो वह आतिथ्य की तैयारी में लग गये। भरत ने कहा जंगली फल फूलों में से जो कुछ आप लायें हैं, वही पर्याप्त है ज्यादा चिन्ता मत कीजिए। भरद्वाज ऋषि ने मुस्कान के साथ कहा कि मैं जानता हूँ कि जो कुछ मैं प्रस्तुत करूँगा, तेरे लिये, आप उसी से सन्तुष्ट हो जायेंगे परन्तु मैं चाहता हूँ कि आपकी पूरी सेना को भोजन कराऊँ और मेरी हार्दिक इच्छा के लिये आप यह मेरा आदेश मानिये। सेना को दूर छोड़कर आप अकेले क्यों आये हैं ?भरत ने हाथ जोड़कर मुस्कान के साथ कहा, आपके भय से, कि वे धरती को खराब कर देंगे और वृक्षों तथा मकानों को उखाड़ देंगे। अतः मैं केवल अपने गुरु और कुछ लोगों के साथ आया हूँ। अब मैं आपकी आज्ञा से उन्हें बुलाता हूँ। यह कहा और समस्त सेना को अपने पास बुलाया। फिर भरद्वाज जल से स्नान करके अपनी अग्नि पूजा के घर में आये और एकाग्रचित्त के साथ निश्चित किया कि भरत व वशिष्ठ आदि, जो आश्रम में आये हैं उनके भोजन की व्यवस्था करनी चाहिए। विश्वकर्मा को बुलाकर कहा कि मैं आतिथ्य सत्कार का विचार रखता हूँ। जो कुछ मैं कहूँ उपस्थित करो और चारों लोकपालों अर्थात् इन्द्र, यम, वरुण और कुबेर को बुलाओ, पूर्व व पश्चिम में बहने वाली समस्त नदियों को लाओ, पृथ्वी और वायु पर जो अच्छी वस्तुएँ हैं सब

घृताची, विश्वाची, मिश्रकेशी, अलम्बुषा, नागदत्ता, हेमा, सोमा, उपस्थित करो तथा खाने-पीने की समस्त वस्तुएँ तैयार करो। गाने वालियों को नाच गाने के लिये बुलाओ, और विश्वावसु हाहा, और हूहू आदि गन्धर्वों को भी तथा अप्सराओं को प्रस्तुत करो।

پیدا کن که گل و اثمار او پر بهار و خوشبو باشند و سوم یعنی ماه را طلب کن تا طعام لذیذ
و انواع خوردنی و ذوق گرفتنی و نوشیدنی و چشیدنی موجود نماید و اقسام
مالاها و اشجار و شیرینی ها و شراب ها و گوشت ها و غیر اینها همه حاضر بیار را اینقدر آن
رکهه در سماده بخاطر کرد از قوت ریاضت او دست بسته بشوکرمان آمد و موافق اراده
جمیع مطلوبه موجود آورد و کوه ملی و کوه مندر و شدن بن آندر و نسیم خوشتر و ابر گلبار
که گوناگون گل میبارید و سرود و دیوتا و گندهرب بوقوع آمد و اپسران رقص سر کردند
و دیوتا و گندهرب می نواختند آسمان و زمین و گوش اهل ذیحیات پر سرود شد آنجا لشکر
بهرت بشوکرمان را دید که تمام سطح زمین تا پنج جوجن که بست کروه باشد برابر کرد و آنجا
درختان مانند نیلم از بلو و کیتهه و گریگا و آمله و چنپو و انب وغیره و دو دست چپ دریا
سرستی رسید و دیگر دریاها چون دریای شیر و دریای جغرات و دریای شهد و غیرهم
از امر رکهه پدید گشتند و عمارات بوقوع آمد چهار دریها و اصطبل و فیلخانه با دریچه ها
و مناظرها و تورن ها به تعمیر رسید برای هر شخص بسیار از بسیار و مکان بودن راجه مانند ابر
سفید مهیا شد که بالائی او بالائی سفید بود و بلند و پر از خوشبوها بود و چهار گوشه
پلنگ با اپسران برائی خواب طیار گشت و نشسته و صاف ظروف پر از گوناگون
طعام و شراب حاضر گردید و آسنها برائی نشستن مانند دیوتا موجود شد بعد از آن

अद्रिकृतस्थली उन सबको बुलाओ और यहाँ एक ऐसा उपवन उत्पन्न करो जिसके फल-फूल सदाबहार और सुगंधित हों । सोम अर्थात् चन्द्रमा को बुलाओ ताकि स्वादिष्ट भोजन, भांति-भांति के भोजन, स्वाद लेने, पीने और चखने के योग्य सारी वस्तुएँ एकत्र करें। विभिन्न प्रकार की मालायें, वृक्ष, मिठाई, शराब और मांस आदि सबकी व्यवस्था करो। ऋषि ने अपनी तपस्या के बल पर यह सब सोचा। विश्वकर्मा करबद्ध प्रस्तुत हुए और इच्छानुसार सारी वस्तुएँ उपस्थित कर दीं। कोहमली, कोह मन्दिर और नन्दन वन अन्दर आये, फूल बरसाते बादल एवं ठंडी हवायें आईं, जो भांति-भांति के फूल बरसा रहे थे और मधुर गीत गा रहे थे और देवता और कन्दहरण आये। अप्सराओं ने नृत्य किया। देवता और कन्दहरपों ने मधुर गीत गाये और आकाश व पृथ्वी और प्रत्येक प्राणी के कान गाने से भर गये। वहाँ भरत की सेना ने विश्वकर्मा को देखा जिसने सारी पृथ्वी, पांच योजन तक (चौबीस कोस के बराबर) होगी, समतल किया और वहाँ नीलम की भांति बेल, कैथ, कटहल, ऑवला, जम्बू (जामुन) और आम आदि के वृक्ष उगे हुए हैं। दायें बाये सरस्वती नदी और दूसरी नदी, ऋषि के आदेशानुसार प्रकट हुई जैसे दूध की नदी, जगरात नदी, शहद की नदी और चहारदीवारी सहित भवन प्रकट हुए और अस्तबल हाथी खाने दरीचों, दृश्य आदि सहित निर्मित हुए। यह सारी वस्तुएँ हर व्यक्ति के लिये अधिक से अधिक थीं। राजा के रहने का स्थान सफेद बादलों के समान तैयार हुआ जिसके ऊपर सफेद कोठा था जो ऊँचा और सुगन्ध से भरा था। चारों कोनों में सोने के लिये तख्त, अप्सराओं सहित तैयार हुए और साफ, धुले हुए बर्तन विभिन्न प्रकार की खाद्य, वस्तुओं से भरे हुए उपस्थित हुए तथा बैठने के लिये आसन देवता की भाँति उपस्थित हुए।

از حکم مهارکهه با بهرت پسر کیکئی در انخانه که مرصع از جواهر بود داخل شد و عقب
منتری ها و پروهت در آمدند آنجا مسند نشستن راجه با چتر و چامر یعنی قسطاس و پنکهه
یعنی بادکش دیدند و یکایکا مطابق مراتب منتریان و غیرهم نیز ملاحظه کردند بهرت
آسن را پرستش کرد و رامچند را نمسکار نمود و بادبیزن موئینه گرفته بران مسند از دست خود
راند و بعد پرستش آن و منتریان و غیرهم بر مکانات خود بنشستند مبتهج و خوشحال
گشتند و بعد از آن از امر بهردواج رکهه نهرهای شیر و بحرهای جغرات و غیرها
در انجا روان شدند که در ساحل آنها سفید خاک بجای ریگ بود و عورات و اپسران
آمدند بیست هزار زن با کنیز رسیدند مثل قمر و ستاره چنانکه مرد از صحبتشان
نوجوان شود و بیست و سه هزار از زنان بن آمدند و نارد و تونبر و کوپا و غیرهم
از منڈل آفتاب آمدند همه پیش بهرت حاضر گشتند و النبوکها و شرکیشی
و پوندریکا و باهنا از امر رکهه رقص آغاز کردند و بلوه و مار و نکرا و شیاما و کراما
و بهنا تکا و آشو بستهها و تکت مالا و تالکو و نجولا و سرتبالا و تلکا و تکت مالکا
نام ساز
و امرتا همه از امر بهردواج رسیدند و شنشپا و تلکا و جنبو و دیگر درختان بیل جنگل
بصورت عورات در انجا آمدند مردمان شراب مینوشیدند و شیر و لحم مینخوردند
و گوشت مینخوردند و از عورات یک مرد را پنج عورت بر میداشتند و غسل

उसके पश्चात् महर्षि के आदेश से कैकेयी के पुत्र भरत इस महल में जो रत्नों से जड़ित था प्रविष्ट हुए। उनके पीछे मंत्री और पुरोहित आये। वहाँ राजा के बैठने का स्थान चित्र व चँवर के साथ देखा और मंत्रियों आदि के लिए उनके पद के अनुरूप भवन भी देखे। भरत ने आसन को सम्मान दिया और रामचन्द्र को नमस्कार किया, पंखा करने वाले के हाथ से पंखा लेकर इस आसन पर स्वयं पंखा किया। सम्मान देने के पश्चात् वह और मंत्रीगण अपने स्थानों पर बैठ गये तथा प्रसन्न एवं आनन्दित हुए। उसके पश्चात् भरद्वाज ऋषि के आदेश से वहाँ दूध की नहरें और जुग़रात की नदी बहने लगी जिनके किनारों पर रंग के स्थान पर श्वेत मिट्टी थी। महिलाएँ एवं अप्सरायें आयीं और बीस हजार महिलाएँ सेविकाओं सहित पहुँची जो चाँद तारों की भाँति थी। ऐसी की इनकी संगति में पुरुष नवयुवक आए और तेईस हजार नंदन वन से आयी और नारद व तुम्बुरु और गोप आदि भी सूर्य मंडल से आये। सब भरत के सम्मुख उपस्थित हुए और अलम्बुषा, मिश्रकेशी, पुण्डरीका और वामना ऋषि के आदेश से नृत्य प्रारंभ किया। बेल, बहेड़े, पीपल, देवदारू, ताल, तिलक, तमाल यह सब भी भरद्वाज के आदेश से पहुँचे और शिंशपा तलका और जम्बू और जंगल के दूसरे वृक्ष मालती, मल्लिका जाति आदि वन लताएँ स्त्रियों के रूप में आयी। लोग शराब पी रहे थे, दूध और मांस खा रहे थे। स्त्रियों में से एक-एक पुरुष को पांच स्त्रियां उठाती थीं,

میکنانیدند و بازی میکنانیدند و پرستش و خدمت میکردند و شراب دیوتا ها نیجورا میبودند
و اسپان و فیلان و اشتران و گاوان بغیر لجام و بغیر کجک و بغیر مهار و بغیر بند
میگردیدند و آزار نمیدادند و شیر میخوردند تمام لشکر بخوشوقتی سیر شد و از خدمات
اسیران بسیار محظوظ شد مردم میگفتند که نه ما با وجود هیما میرویم نه بصحرا بهرت
هم محظوظ باشد و رام هم که بسبب بهرت گویا ببرگ رسیدایم کنیزان و رهروان
و جاسوسان و پیران همه سیر گشتند و فیلان و خران و اشتران و گاوان و آهوان
و غیر هم سیر خوردند هیچ ذیحیات گرسنه و تشنه نماند و نه هیچکس شوخگین جامه و چرکین
پوش ماند زیرا که گاوان کام دهین همبودند یعنی هر طعام که خواهند سوجود کنند
و درختان چنان که هر نوع که ثمره خواهند بار آورند و بچوک دیر و غیره هما طعام لذیذ
رسید و مردم ظروفها هزاران و تهالی ایت دیدند و ظروف طلائی اربدها
ده هزار سوکرور
ملاحظه کردند و سبوها و کوندها هزاران هزار در روغن و شیر و خجرات تالابها و دریاها
شد و شیر و شکر از گفتن بیرون بود و سفید خوردنی و دندان شستنی بسیار
و چندن و غیره بیشتر از بیشتر و آئینه ها و حمائلها رنگارنگ و کمانها و آسنها
هم برائی پوشیدن افیال و اسپان و شتران و غیر هم تالابها و دریاها
و از نیلم جواهر و پارچه هائی خوب جاها برائی جانوران مقرر شد چه جائی آدمیان

स्नान कराती थीं, खिलाती थीं पूजा और सेवा करती थीं। मदिरा देवता भी पी रहे थे और घोड़े हाथी, ऊँट तथा गायें बिना लगाम के बिना कजावह के, बिना महार व बिना बन्द के घूम रहे थे। वे किसी को कष्ट नहीं देते थे और दूध पीते थे। समस्त सेना आनन्दित हो गयी और अप्सराओं की सेवा से प्रभावित हुए। लोग कहते थे कि हम न अयोध्या जा रहे हैं और न वन में। भरत भी आनंदित हुए और राम भी कि भरत के कारण हम मानों स्वर्ग में पहुँचे हुए हैं। दासियां, राह चलने वाले जासूस और वृद्ध सभी सन्तुष्ट हुए। हाथियों, घोड़ों, ऊँटों, गायों और हिरणों आदि ने भी भरपेट खाया। कोई जीव भूखा या प्यासा नहीं रहा और न कोई व्यक्ति फटे पुराने वस्त्र पहनने वाला रहा क्योंकि, गायें, जो भोजन लोग चाहते थे, उपस्थित कर देती थी और वृक्ष ऐसे थे कि लोग जो फल चाहते थे वह फल लाते थे। और जोक और बरो आदि भी स्वादिष्ट व्यंजनों के साथ पहुँचे। लोगों ने हजारों बर्तन, दासियां हजार थालियां देखीं और सोने के सौ करोड़ बर्तन देखे, हजारों हजार मटके और जिनमें तेल, दूध और तालाबों और नदियों के जागेरात थे, दूध और शक्कर वर्णन से परे थे, और दाँत साफ करने की वस्तुएँ अनगिनत थीं, चन्दन आदि अधिक से अधिक मात्रा में थे, रंग बिरंगे शीशे और कमाने और आसन भी हाथियों, घोड़ों और ऊँटों आदि को ढाँकने के लिये थीं। नील और जवाहर और सुन्दर से भरे स्थान पशुओं के लिये नियुक्त थे। अतः मनुष्यों के लिये,

همگنان این ضیافت را مانند خواب دیده متحیر و متعجب ماندند القصه بدین آیین ضیافت کرده زنان و گندهربان و دیگران همه از امر رکهه بهردواج غایب شدند لشکریان شراب خوردند و خوشبوها شمیدند و مالاها پوشیدند و ست تر نشستند

درینجا صورت ضیافت بهرت و شترگهن که در خانه مرصع برآسن نشسته اند و جام میشود و رقاصان رقص میکنند و چیزی میخورند و می آشامند

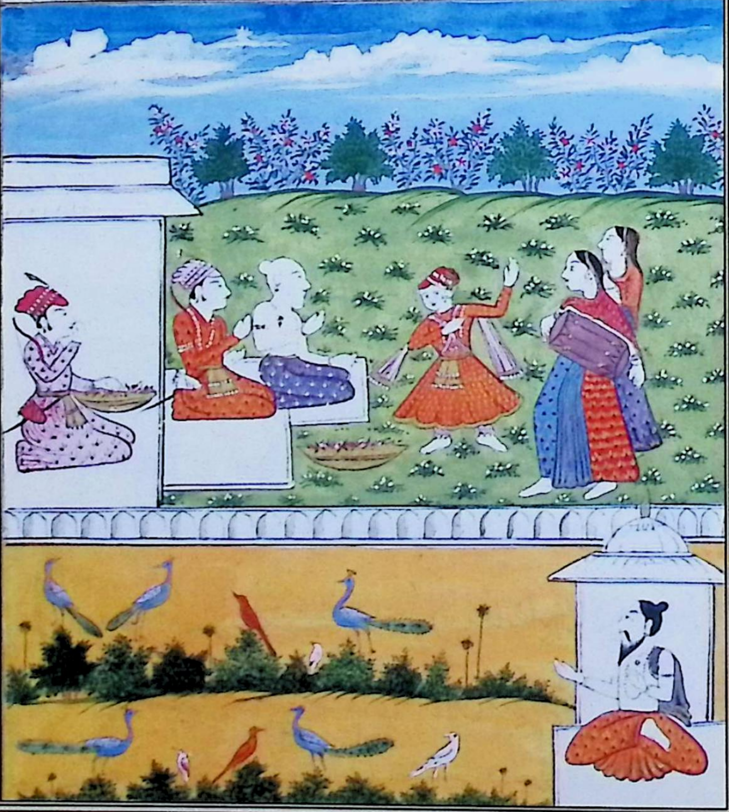

सब लोग इस सत्कार को स्वप्न की भांति देखकर चकित रह गये। संक्षेप में इस प्रकार सत्कार करके स्त्रियाँ, गाने बजाने वाले और दूसरे लोग ऋषि भरद्वाज के आदेश से लुप्त हो गये। सेनानियों ने शराब पी, सुगन्ध का प्रयोग किया, हार और मालाएँ पहनीं और मस्त होकर बैठे।

भरत और शत्रुघ्न के सत्कार का चित्र जो सुसज्जित महल में आसन पर बैठे हुए हैं, नाचने वाले नाच रहे हैं और कुछ खा पी रहे हैं।

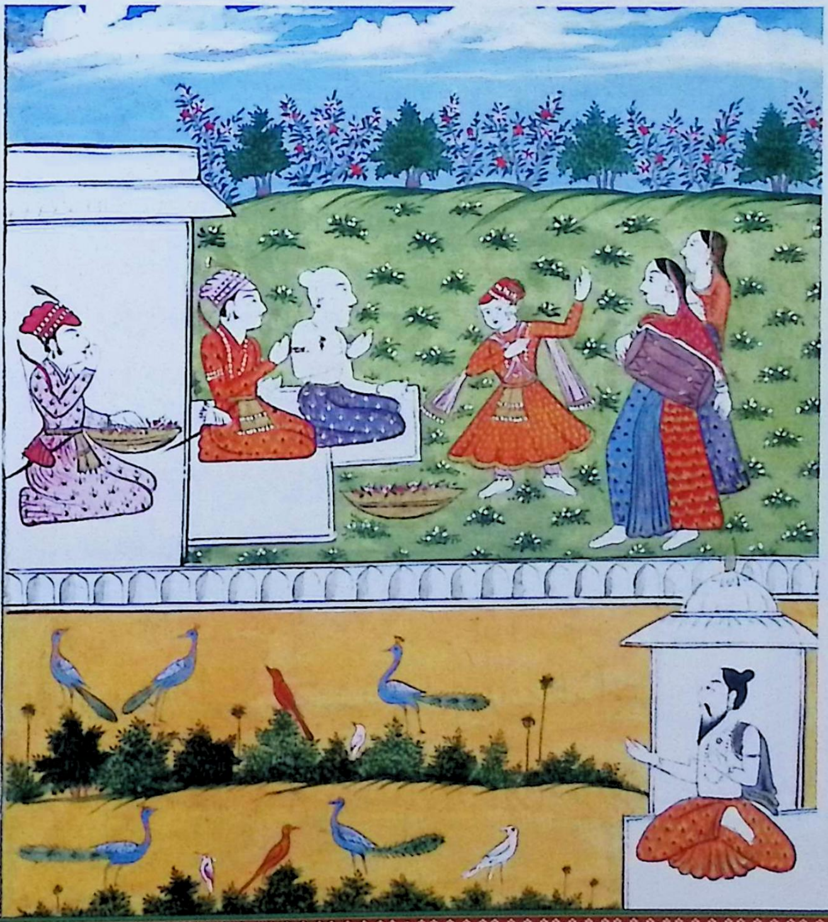

.بهرت شب را در مکان رکهه گذرانیده صبحی نمستکار کرده گفت از شفقت شما گویا سرگ را دیدم و با آسایش تمام با لشکریان شب گذرانیدم و بهمه خواهش سیر شدم و با سواریها و سارتهی ها و غیر آن آسوده ماندم اکنون اجازت ده که نزد برادر میروم و مکان او را نشان ده که بکدام راه بروم هر گاه بهرت چنان پرسید رکهه گفت ازینجا بمقدار ثلث نصف جوجن کوه چترکوت هست و پس پشت او بسمت شمال مندا کنی نام دریاست آنجا درختان گلدار و جانوران طیار بسیار اند و نزدیک تر آن آشرم یعنی مکان بالمیک دهار رکهه هست من شنیده ام که آنجا رامچندر با سیتا و لچهمن بگوشه میباشد براه جنوب رویه خواهی رفت که لشکر تو هم بدان راه خواهد رسید تا افیال و اسپان و عورات راجه دسرتهه و غیر هم نیز برسند هنگام رخصت زنان راجه دسرتهه نزد رکهه رفتند کوشلا و سومترا پای او بوسیدند و کیکئی مذموم عالم قدم او را بوسه داد و پردچهنا کردند رکهه با بهرت گفت در هر سه مادران تر اتفاوت معلوم نمیشود بهرت گفت اینکه مسکین تر و از غم دلگرفته و اشک ریزان ایستاده است این کوشلا زاینده رام ست مثل آدت که دهاتا را زاید و اینکه نزدیک کوشلا استاده و از دریغ دمها میکشد و غم خود پنهان میدارد این سومترا والده لچهمن و ستر گهن ست و این که بد اصلست و از کرده خود خوشحال نیست و از سبب او هر دو برادر

भरत ने रात्रि ऋषि के मकान में बिताकर प्रातः नमस्कार करते हुए कहा। आपकी दया से मानों मैंने स्वर्ग देख लिया और चिन्ता मुक्त होकर सिपाहियों सहित रात बिताई तथा अपनी सारी इच्छाएं पूर्ण कीं और सवारियों, शतरबानों आदि के साथ सुख से रहा। अब आज्ञा दीजिये कि मैं भाई के पास जाऊँ। उनका पता बताइये कि मैं किस मार्ग से जाऊँ ?भरत के पूछने पर ऋषि ने कहा, ''यहाँ से चार कोस की दूरी पर चित्रकूट का पहाड़ है और उसके पीछे दक्षिण की ओर मन्दाकिनी नाम की नदी है जहाँ फूल वाले वृक्ष और उड़ने वाले पशु बहुत हैं उससे बहुत निकट आश्रम अर्थात् वाल्मीकि महाऋषि का घर है। मैंने सुना है कि वहाँ रामचन्द्र, सीता और लक्ष्मण के साथ एक कोने में रहते हैं। दक्षिण की ओर मार्ग से जाना कि तुम्हारी सेना भी इसी मार्ग से जायेगी, ताकि हाथी, घोड़े और राजा दशरथ की रानियां भी पहुँच जायें।'' विदा के समय राजा दशरथ की रानियाँ ऋषि के पास गयीं। कौशल्या और सुमित्रा ने उनके पांव छुए और कैकेयी ने भी उसके पांव को छुआ और सबने उपहार दिये। ऋषि ने भरत से कहा, तीनों माताओं में आपको अन्तर मालूम नहीं होता। भरत ने कहा, यह जो सबसे अधिक दुखी मन और आँसू बहा रही हैं। यह राम को जन्म देने वाली कौशल्या हैं। सूर्य की माँ के समान जो देवताओं को जन्म देती हैं। यह जो कौशल्या के निकट खड़ी हैं और दुख के कारण आहें भर रही हैं और अपना दुख छिपाये हुए हैं यह लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माँ सुमित्रा हैं। और यह जो किये से प्रसन्न नहीं हैं और जिसके कारण से दोनों वन में चले गये।

راه صحرا گرفتند و دشرتهه بزرگ رفت این کیکئی والده منست این رانج تمام عمر خود
میدانم رکهه گفت تقصیر این نباید دانست تقدیر غالب است بعد از ان از رکهه رخصت شده
کوچ کرد مردم بر فیل و اسپ و رتهه سوار گشته روان شدند و تپا کا ها یعنی نشان خورد
با دندی طلائی روان گشتند کوشلا وغیره عورات راجه دشرتهه بر چودولها سوار شده
بامید دیدن رامچندر براه نوردیدن درآمدند و بهرت که چون آفتاب صبح سرخ رنگ است
بر شبکا که قسمی از سنگهاسن باشد سوار گردیده با همراهیان روانه شد و شترگهن هم بر سواری
سوار شده بالشکر وغیره از عقب رفت هامون را که پر از بهایم و طیور بود در نوشتند و از
دریای جمنا که آب ژرف و از ماهی و نهنگ پر بود گذشتند جنگل انطرف کنار دریا از مردم لشکر و فیل
و اسپ و رتهه زیب آور شد و بهائم و طیور از خوف بگریختند و پریدند درینجا تصاد و برترخیص ازرکه

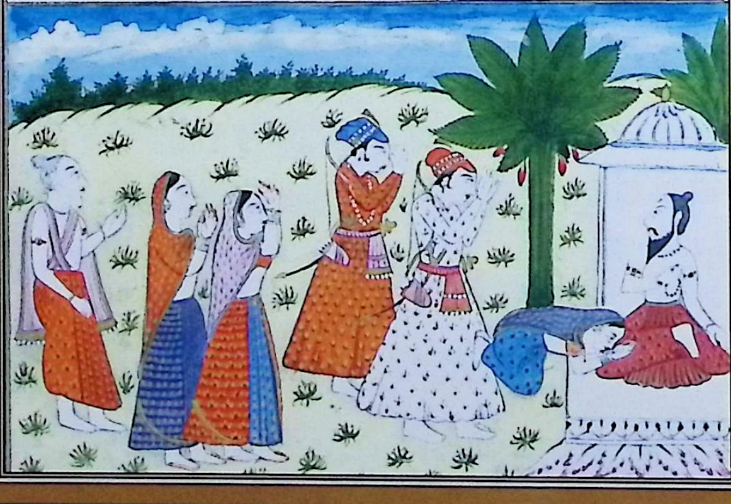

مرکن

और दशरथ स्वर्ग सिधारे यह मेरी माँ कैकेयी हैं उसे मैं अपने सारे जीवन का रोड़ा समझता हूँ। ऋषि ने कहा, उसकी गलती नहीं समझनी चाहिए, भाग्य का लिखा है। उसके बाद ऋषि से विदा होकर प्रस्थान किया लोग हाथी घोड़े और रथ पर सवार होकर चले तथा छोटी-छोटी टुकड़ियों के रूप में सुनहरे झण्डे के साथ चले। राजा दशरथ की रानियां हौदज पर सवार होकर रामचन्द्र को देखने की इच्छा में चलने लगे और भरत जो सुबह के सूर्य के समान लाल रंग वाले थे शिविका (एक प्रकार का सिंहासन) पर सवार होकर अपने साथियों के साथ चल दिये। शत्रुघ्न भी सवारी पर सवार होकर सेना आदि के साथ पीछे गये और पशुओं एवं पक्षियों से भरे जंगल पार किये और यमुना से जो ठण्डे पानी, मछली और मगरमच्छ से भरा हुआ था, उसे पार किया, नदी के उस ओर का वन सेना के आदमियों, हाथी, घोड़ों और रथ से सुसज्जित था, जो नूर और पक्षी डर कर भाग गये और उड़ गये

ऋषि से विदा होने के समय का चित्र।

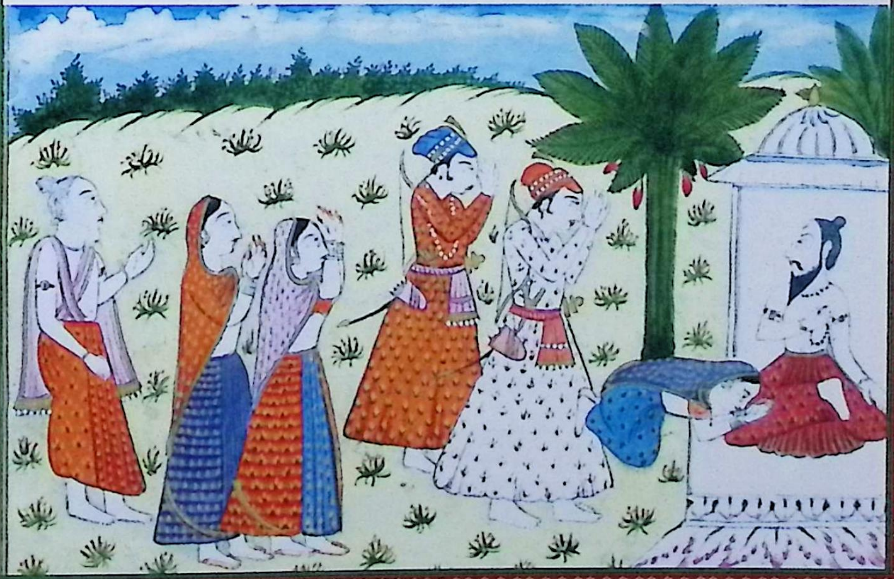

سرک دیدن چترکوت بهرت دهرماتما با لشکریان وغیره چون راه دور نوردید و دریا
و فیافی جنگل فیها طی کرده علامتی که از کسان ورکهه شنید همچنان دید باشترکهن گفت انجا من
از بهردواج رکهه شنیده بودم همچنان دیدم اینک کوه چترکوت هست واین مندا کنی
نام دریاست این کوه از دور مانند ابر کبود مینماید وگلهائی از درختان می بارد کنیزها
بنظر می آیند و آهوان میدوند باد سرد می وزد و بوی خوش می آید از آواز لشکریان این
تمام صحرا و کوه خوش صداست و مانند اجودها مرا خوش مینماید و گردی که از نعل و حوافر
اسپان برخاسته بآسمان رفته و باد درهم میکند مرا اینک می آید و چون بر اسپان رتهه
و برونی سارتهی که می آید زیباتر مینماید و اینک طاوسان با دم کلان رقص کنان هستند
کسان را امر کن تا آن هر دو شیر کرداران را به بنید این را شنیده فی الفور جماعتی
مردم پراکنده گشته تفحص در آمدند ناگاه دخانی بلند شده دیدند با بهرت گفتند
که بغیر از مردم آتش روشن نمیشود و بی آتش دود نباشد البته آن هر دو برادر تو
باشند یا دیگر ایشان بهرت این را شنیده بجمیع لشکریان فرمود شما باحتیاط همین جا باشید
من و سومنتر میرویم این بگفت وهمه لشکر را گذاشته بطرفی که نمود دود بود
بامید دیدن رام بخوشوقتی روان شد درینجا صورت کوه چترکوت و بران آهوان وطاوس
و خرگوش سیر میکنند و از یکطرف کوه دود میخیزد و بهرت و شترکهن و سومنتر بدان طرف پیاده میروند

सर्ग-१०३

चित्रकूट का देखना

भरत धर्मात्मा ने जब सेनानियों सहित दूर तक मार्ग पूरा कर लिया और नदी, वन पार करते हुए, जो प्रतीक, लोगों से और ऋषि से, सुन रखा था वैसा ही देखा। यही चित्रकूट का पहाड़ है और यही मन्दाकिनी नामक नदी है। यह पहाड़ दूर से नीले बादल के समान दिखाई देता है और वृक्षों से फूल बरसाता है। दासियाँ दिखाई दे रही हैं, हिरन दौड़ रहे हैं, ठण्डी वायु चल रही है और मनभावन सुगन्ध आ रही है। मेरे सेनानियों की ध्वनि से पूरा वन और पहाड़ गूंज रहा है। यह मुझे अयोध्या के समान अच्छा लग रहा है। जो मिट्टी के घोड़ों की नाल और खुरों से उठकर आकाश में जाकर वायु में बिखर रही है वह मुझे बहुत अच्छी लग रही है, और जब वह मिट्टी रथ के घोड़ों पर तथा रथवान के मुंह पर आती है तो और अधिक अच्छी मालूम होती है। और यह देखो, मोर अपनी लम्बी दुमों के साथ नाच रहे हैं लोगों से कहो शेर के समान चरित्र वाले उन दोनों को देखें। यह सुनते ही एक समूह बिखरकर खोज में लग गया। अचानक उन्होंने धुआँ उठता हुआ देखा तो भरत से कहा कि लोगों के बिना आग नहीं जलती है और बिना आग के धुआँ नहीं होता है। निःसन्देह वह आपके दोनों भाई ही होंगे या दूसरे लोग। भरत ने यह सुनकर सारे सेनानियों से कहा कि तुम लोग सावधानी से यहीं रहो मैं और सुमंत्र जाते हैं। यह कहकर और सेनानियों को छोड़कर उस ओर, जिधर धुआँ दिखाई दे रहा था, राम को देखने की आशा में प्रसन्नतापूर्वक चले।

चित्रकूट पर्वत का चित्र। जिस पर हिरण, मोर और खरगोश भ्रमण कर रहे हैं और पहाड़ के एक ओर से धुआँ उठ रहा है तथा भरत सुमंत्र और शत्रुघ्न उस ओर पैदल जा रहे हैं।

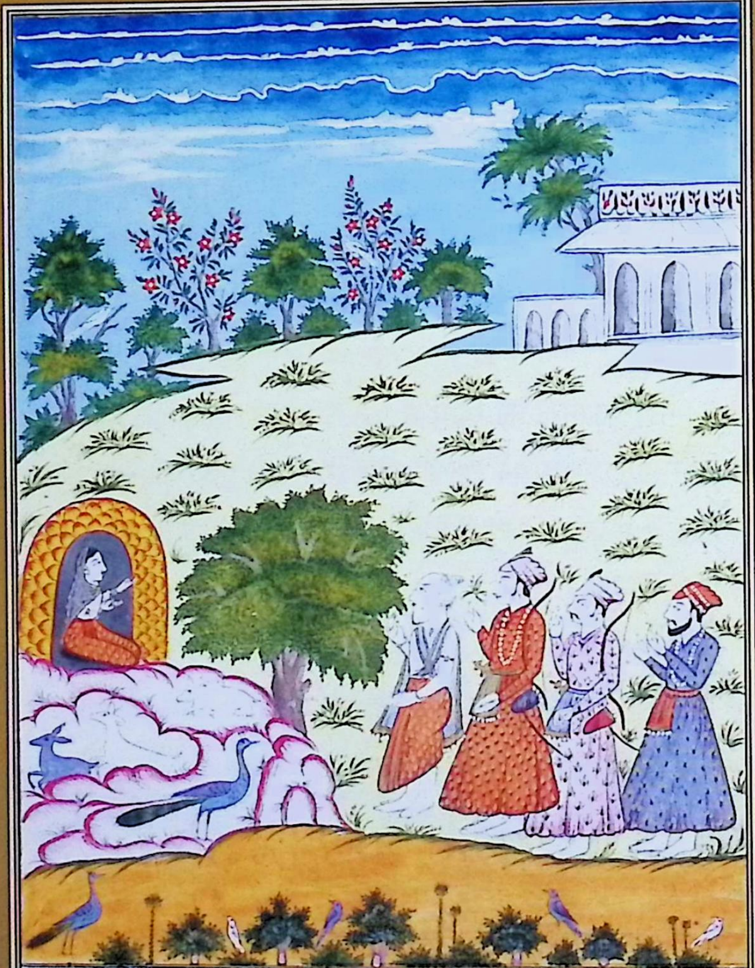

سرک حال رامچندر رامچندر راچون دران کوه بسیار روز بگذشت برای
خاطر سیتا و تفرج دل خود با او متوجه صحرا گشت مانند آندر که با اندرانی گوید
می گفت گذاشتن راج و دور ماندن از قبائل و دوستان هیچ یاد نمی آید بواسطهٔ آنکه

सर्ग-१०४

रामचन्द्र की दशा

रामचन्द्र को जब उस पर्वत पर कई दिन बीत गये तो सीता का मन बहलाने और अपने मनोरंजन के लिये वे उनके साथ वन की ओर गये। इन्द्र के समान जो इन्द्राणी से कहते थे कि राज्य छोड़ने और कबीलों और मित्रों से दूर होने में किसी की याद नहीं आती।

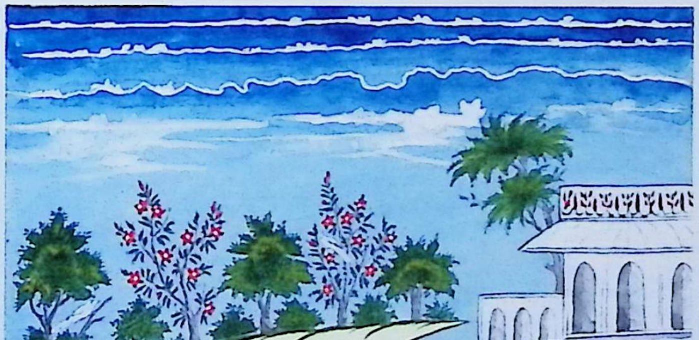

این کوه جائی مانند نقره و مانند طلا و مانند گل زیب آور مینماید و گوناگون اشجار با گلهای
بوقلمون میزیبد مثل انب و لودهر و پیال و کوکوبهه و پنس و بلو [بلاغنشه] و تهندک و مدهک [مهوا] و تلک
و بدری [عناب] و املک [آنوله] و نیپ [قدم] و غیره هم با گلهائی و سایه ها دلخواه هستند و عقب کوه بر شاخهای
که کنشوک یعنی گل پلاس بسیار اند کنبرها [بوزنه] بازی میکنند و زنان بیدادهران بلهو آمده اند
و بعضی جا که آب از بالا می افتد کوه را پنداری که فیل مست است که مستی از وی میچکد
و از باد خوش بو شامه را سیری حاصل می آید اگر من یک دو ماه با تو و لچهمن درینجا
خواهم ماند هیچ غم را راه نخواهد بود ازین بودن صحرا مرا نفع عظیم شد خلاص شدن
از وام پدر و خوشوقت کردن دل بهرت برادر و تفرج صحرا با تو و دل و گفتار
و تن را مسخر ساختن و بزرگان ما برای همین بودن صحرا مانند ابحیات گفته اند
این سینک ها [قله کوه] نیله و زرد و سفید و سرخ و اقسام رنگ مینزیبد و چوب
و دواهای اینجا چون آتش شب و روز روشن اند این زمین ازین کوه خوشنما هست
مانند هماچل که دیها و دیو و گهکارو میباشند و درینجا شهوت پرستان زن و مرد
با یکدیگر نظر میکنند و ثمرات اینجا موافق خواهش دل اند درین صحرا من با تو و لچهمن
اقامت خواهم نمود ترا رت یعنی شهوت که افزایش کننده دهرم و نسل است
خواهد شد و به نیم برهم چرج از حکم پدر نیستم سیر گشت تفرج از کوه بر آمده سیتا را

इस कारण कि यह पहाड़ी का स्थान चाँदी, सोने और फूलों के समान प्रतीत होता है। भाँति-भांति के वृक्ष विभिन्न प्रकार के फूलों से सज रहे हैं, जैसे आम, कटहल, महुवा, उनाब, आलू आदि। यह सब फूलों और छाया के साथ मनमोहक है पहाड़ के पीछे शाखों पर पलास के फूल बहुत हैं। बन्दर खेल रहे हैं और स्त्रियां मस्ती में अटखेलियाँ कर रही हैं। किसी स्थान पर जहाँ जल ऊपर से गिरता है, पहाड़ को तुम ऐसे मस्त हाथी के समान अनुभव करोगे, जिससे मस्ती टपक रही है। वायु सुगन्ध से सगुंधित होती है। यदि मैं एक, दो महीने तुम्हारे और लक्ष्मण के साथ रहूँगा तो राज्य का कोई दुख नहीं होगा। इन वन में रहने से मुझे बहुत लाभ हुआ अर्थात् पिता के जल से स्वतंत्रता, भरत भाई का मन प्रसन्न करना, तुम्हारे साथ वन का भ्रमण और मन, वार्ता तथा शरीर को नियंत्रण में रखना। हमारे वयोवृद्धों ने इसी कारण वन में होने को अमृत जैसा कहा है। यह पहाड़ की चोटी नीली, पीली सफेद और लाल रंगों से सुन्दर लग रही है, यहां की लकड़ियाँ अग्नि की भांति दिन रात चमकती हैं यह पृथ्वी इसी पर्वत के कारण सुन्दर हैं, हिमांचल पर्वत के समान, कि जिस पर महादेव और कहगार रहते हैं यहाँ स्त्री पुरुष एक दूसरे को देखते हैं। यहां के फल मन की इच्छानुसार है। इस वन में मैं तुम्हारे और लक्ष्मण के साथ रहूंगा। यहाँ काम भावना जो धर्म और वंश को बढ़ाने वाली है यहाँ अधिक होगी और मैं तनिक भी पिता की आज्ञा के विपरीत नहीं हूँ।

دریای مندا کنی نموده گفت ای سیتا و تو چون ماه هست باری دریای مندا کنی
به بین که از رستن اقسام درختان زیب آور است و جوق جوق آهوان آب میخورند
تیر تهه محبت افزاست و رکهه های و سده ها دارنده جتا و اجن و پوست درخت شناسن
میکنند و بعضی تپسویان بسمت آفتاب دست برداشته نشسته اند و اینک از درختان
گلها در دریا میریزند و طیوران آواز خوش میکنند دیدن چترکوت و دریای مندا کنی را
از بودن شهر ترجیح میدهم این دریا را تو هم شنا کن کوه مانند اجودهیا و دریا مثل سرجو است لچهمن
دور تر است و با تو مرا محبت در تنهائی فزون میشود و رکهه هر روز درینجا غسل میکنند و اینک
به بین فیلان آب را خورده مستی میکنند القصه کسی نیست که درینجا آسوده نیست بدین نوع
رامچند بسیار سخن با سیتا گفته تفرج چترکوت که مثل سرمه نمودار است نمود رام چطور که از آینده
نسب آفتاب است درینجا بر چترکوت پرن شالا رام و لچهمن درانجا نشسته و بعضی تپسویان دست بجانب آفتاب
پرستش میکنند و صورت دریا و رام و سیتا ایستاده اند و فیلان و آهوان آب دریا میخورند

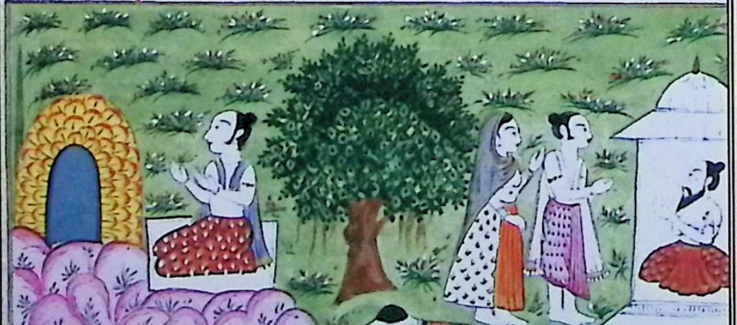

सर्ग-१०५

मनोरंजन

पहाड़ से उतरकर और सीता को मन्दाकिनी नदी दिखाकर कहाः सीता ! तुम्हारा मुख सूर्य के समान है। मन्दाकिनी नदी को देखो जो विभिन्न प्रकार के उगने से सुसज्जित हैं। हिरन झुण्ड के झुण्ड पानी पी रहे हैं। तीर्थ प्रेम बढ़ाने वाली है और ऋषि, सिद्ध जटा रखने वाले, वृक्ष की छाल पहनने वाले तैर रहे हैं। कुछ तपस्या करने वाले सूर्य की ओर हाथ उठाकर बैठे हुए हैं। फूल वृक्षों से नदी में गिर रहे हैं। मधुर वाणी वाले पक्षी चहचहा रहे हैं। चित्रकूट और मन्दाकिनी नदी देखने को मैं शहर देखने से वरीयता देता हूँ। इस नदी में तुम भी तैरो, पर्वत अयोध्या के समान और नदी सरयू के समान हैं। लक्ष्मण दूर हैं और तुम्हारे साथ एकान्त में मुझे प्रेम अधिक होता है। ऋषि प्रतिदिन यहाँ स्नान करते हैं यह देखो हाथी पानी पीकर मस्ती कर रहे हैं। अतः यहां कोई ऐसा नहीं है जो सुखी न हो। इसी प्रकार रामचन्द्र सीता से बहुत सी बातें करते हुए चित्रकूट की सैर कर रहे थे राम चित्रकूट और कुटिया का चित्र, जहाँ राम और लक्ष्मण बैठे हुए हैं और कुछ तपस्या करने वाले सूर्य की ओर हाथ उठाकर पूजा कर रहे हैं तथा नदी का चित्र। राम और सीता खड़े हैं, हाथी एवं हिरन नदी का पानी पी रहे हैं।

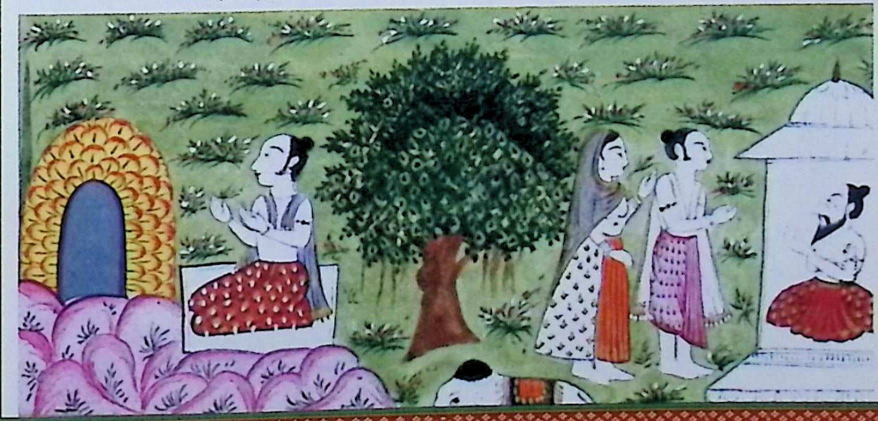

سرک آمدن بهرت و کور شدن زاغ رامچندر بدین آئین تماشا کنان برگشت ناگاه سمت
شمال در آن کوه غاری دید که باقسام جواهر و دهات پر بود واز درختان گلدار
وطیور بسیار خوشنما گفت ای سیتا تماشا کن این مکان را تا ماندگی کروش رفع شود
گویا برائی تو این مکان ساخته اند سیتا از محبت رام گفت البته خاطر من نیز چنان
میخواهد اینقدر گفته تماشائی آنجا نمود باز رامچندر گفت ای سیتا بر دوش من سوار
شده این اشجار را که مانند عاج سفیداند به بین و آواز جهلکارا بشنو و کوکلا را به بین
که برائی بچه کان خود شور میکنند و دیگر ذی بال کوکلا را طفل فهمیده دلرا باو داده
مطابق خواهش او آواز میکنند واین درختان چوت یعنی انبه که از بار گلها سر فرود
نهاده اند گویی تعظیم من داده اند سیتا بر دوش رامچندر سوار شده تماشا کردن
گرفت رامچندر انگشت بر سنگی سوده از رنگ او بر پیشانی سیتا تیکه کشید
در وی آفتاب نو برآمده او از رنگ تلک آن سنگ زیباتر شد و کیسر یعنی هونی
که از میان گل نیلوفر وغیره برآید در سر سیتا از عشق بجائی نغوله تاب داد بدین طور
رام با سیتا آنجا سیر کرده در مکان دیگر رفت سیتا در انجا بوزنه ها را دیده
از خوف بر رامچندر پیچید او بوزنه ها را دور کرده سیتا را امنی بخشید چون بوزنه ها رفتند
سیتا از بغل شوهر برآمده تبسم کرد بعده نزدیک تر مجموعه درختان اشوک که گل آده بودند

सर्ग-१०६

भरत का आना और कौए का अंधा होना

रामचन्द्र इसी प्रकार भ्रमण करते हुए लौटे। अचानक उत्तर की ओर उस पहाड़ में एक खोह देखी जो विभिन्न प्रकार के रत्नों एवं धातुओं से भरी हुई थी और फूलदार वृक्षों तथा पक्षियों के कारण बहुत सुन्दर थी। उन्होंने कहा ''सीता ! यह स्थान देखो ! ताकि चलने की थकान समाप्त हो। ऐसा लगता है कि तुम्हारे लिये ही घर बनाया है।'' सीता ने राम से प्रेमपूर्वक कहा मेरा मन भी यही चाहता है यह कहते हुए वहां का दृश्य देखने लगे। फिर रामचन्द्र ने कहा ऐ ! सीता मेरे कंधे पर चढ़कर उन वृक्षों को जो सफेद हाथी दांत के समान हैं देखो और चहचहाहट को सुनो तथा कोयल को देखो जो अपने बच्चों के लिये कोलाहल कर रही है। अन्य पक्षी कोयल को बच्चा समझकर और हृदय उसे देकर उसकी इच्छानुसार ध्वनि निकाल रहे हैं। आम के ये वृक्ष जो कि फलों के बोझ से ऐसा मस्तक झुकाए हैं जैसे मुझे सम्मान दे रहे हैं। सीता रामचन्द्र के कंधे पर चढ़कर तमाशा देखने लगीं। रामचन्द्र ने एक पत्थर पर उंगली रगड़कर उसके रंग से सीता के माथे पर टीका लगाया और सूर्योदय के समय, सूर्य की भांति, मुखड़ा इस पत्थर के तिलक के रंग से और सुन्दर हो गया। नीलोफर के फूल के तन्तु सीता के सर में लगाये। इस प्रकार रामचन्द्र सीता के साथ भ्रमण करते हुए दूसरे स्थान पर गये। सीता वहां वानरों को देखकर भय के कारण रामचन्द्र से लिपट गयीं तत्पश्चात् उन्होंने वानरों को दूर करके सीता को भयमुक्त किया। जब वानर चले गये तो सीता पति के आलिंगन से निकलकर मुस्कुराने लगीं। उसके पश्चात् अशोक के वृक्षों के झुण्ड को निकट ही देखकर, जो फलदार थे,

دیده برام گفت درین درختان باید رفت رآم برائی خاطر او درانجا رسید و بتماشا
مشغول گردید بنوعیکه مهادیو با پاربتی در کوه هماچل میگردید هر دو با یکدگر از گلهای
درختان هارها در گلو انداختند و پیرایه گوشها ساختند بدین نوع مکانهاء دیگر را تماشا کرده
بمکان خود آمدند لچهمن پیش دوید و کارهای که در غیبت ایشان کرده بیان کردانید و آهوی
سیاه که از تیر شکار کرده بود پیشکش گذرانید رامچندر ازین کار خوشوقت شده
گفت پل کن یعنی پخته ساز لچهمن به پخت اول ازان حصه برائی گدایان و جانوران
و غیر آنها برآورده هر دو برادر تناول نمودند بعده سیتا قدری سد رمق خورد
باقیمانده را سیتا بموجب امر رای دادن زاغان برد زاغان جمع شده سیتا را
حیران کردند او بار بار میراند و آنها منقار و ناخن و بال بر پستان و روی او میزدند
رآم اینحالت را دید زاغان را دور نمود بار دیگر جمع شده بر سیتا افتادند رامچندر
در غضب شده سینخ جنگلی را که قسمی از گیاه می باشد منتر برو خواند و بسمت زاغ راند
آن زاغ یکبخت در زیر زمین و بالای آسمان و در پنهان غرض در هر سه لوک گردید
و هر جا که رسید آن سینخ عقب خود دید باز آمده در پای رآم افتاد و بحضور
سیتا بزبان آدمی گفت ای رآم رحمن مهربان شو ازین سینخ که از استر افسون
مرا نگاهدار رآم گفت من برائی خاطر داشت سیتا این استر برای کشتن تو روان

राम ने कहा कि इन वृक्षों के समूहों में चलना चाहिये। राम उनके अनुरोध पर वहाँ गये और तमाशा देखने लगे जैसे कि महादेव पार्वती के साथ हिमाचल पर्वत पर करते हैं। दोनों ने एक दूसरे के गले में वृक्षों के फूलों के हार डाले और कानों की बालियां बनाईं। इस प्रकार दूसरे स्थानों का दृश्यालोकन करते हुए अपने स्थान पर आये। लक्ष्मण दौड़कर आगे गये और इनकी अनुपस्थिति में जो कार्य किये वह बताये और एक काला हिरन जिसका बाणों से शिकार किया था उनकी सेवा में प्रेषित किया। रामचन्द्र ने इस कार्य से प्रसन्न होकर कहा उसे पकाओ। लक्ष्मण ने पकाया। पहले इसमें से भिक्षुओं और पशुओं आदि का हिस्सा निकाला और फिर दोनों भाईयों ने खाया उसके बाद सीता ने अपनी भूख के अनुसार खाया। शेष सीता आदेशानुसार कौओं को देने के लिये ले गयीं। कौओं ने एकत्र होकर सीता को परेशान कर दिया। वह बार-बार हांकती थीं और वह मुख, छाती पर नाखून, चोंच व पर मारते थे। राम ने यह दशा देखकर कौओं को भगाया। पुनः एकत्र होकर कौए सीता पर गिर पड़े। रामचन्द्र ने क्रोध में आकर एक सींक नामक जंगली घास पर मंत्र पढ़ा और कौए की ओर फेंक दिया। वह कौआ भाग गया। पृथ्वी के नीचे आसमान के ऊपर और इस संसार में अर्थात् तीनों लोकों में वह भागा फिरा, जहां पहुंचा इस सींक को अपने पीछे देख वापस आकर राम के चरणों में गिर पड़ा और सीता से मनुष्य की भाषा में कहा। हे राम ! मुझ पर दया कीजिये और इस सींक से जो मंत्रों का अस्त्र है मुझे मुक्ति दिलाइये। राम ने कहा मैंने सीता के लिये यह अस्त्र तेरा वध करने के लिये छोड़ा है।

کرده ام دروغ نخواهد شد وچون تو در پناه من آمدی امان میدهم لیکن یک عضو تو
بگذار و زنده باش زاغ در دل کرد که بغیر یک عضو هم زندگانی از مردن بهتر است
خیر چشم دو دارم یک نشد نشد بدین اراده برامچندر گفت یک چشم میگذارم و از
دیگر زندگانی کنم رام منتر استر را حکم کرد تا در چشم زاغ در آمد سیتا متعجب ماند زاغ
با یک چشم در پای رامچندر افتاده هر جا که خواست برفت و لچهمن بخدمت مشغول شد
درین اثنا شور لشکر شنیده رام از لچهمن پرسید این چه شور است باری به بین لچهمن برخاسته
نظر گماشت درینجا صورت چترکوٹ و مجموعه درختان آشوک و بران بوزنه ها و زیر او رام و سیتا
ایستاده و بر پیشانی سیتا تیکه نیله خوشنما و در گلوی هر دو هار گلها و در پای رام زاغ افتاده که یک چشم دارد

و لچهمن بر قله کوه لشکر بهرت را می بیند

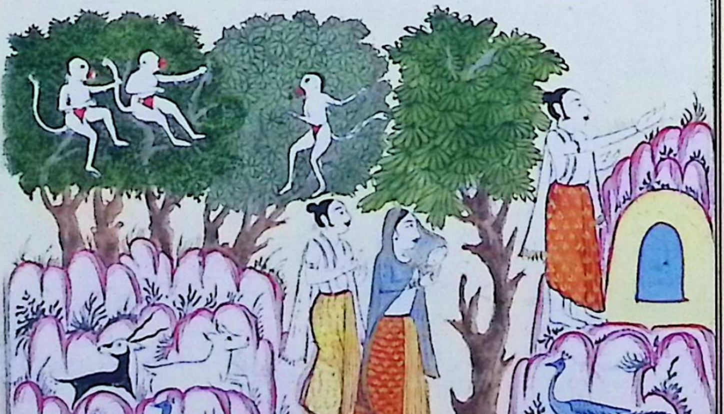

यह झूठ नहीं होगा और चूंकि मेरे शरण में आ गया है इसलिये अब मैंने तुझे शरण दी। परन्तु तुझे अब अपना एक अंग छोड़ना होगा और उसके बिना जीवित रहना होगा। कौए ने सोचा कि एक अंग के बिना भी जीवन मृत्यु से बेहतर उचित है। मेरी दो आंखें हैं यदि एक न रहे तो क्या हुआ इस निश्चय से उसने रामचन्द्र से कहा मैं आपकी आज्ञानुसार एक आंख छोड़ता हूं और दूसरी आंख से जी लूंगा। राम ने मंत्र अस्त्र को आदेश दिया और वह कौए की आंख में आया। सीता आश्चर्यचकित हुईं। कौआ एक आंख के साथ राम के चरण छूकर जहां चाहता था, चला गया और लक्ष्मण सेवा में व्यस्त हो गये। इसी मध्य सेना का कोलाहल सुनकर राम ने लक्ष्मण से पूछा कैसा कोलाहल है। ज़रा देखो! लक्ष्मण ने उठकर चारों ओर देखा।

चित्रकूट और अशोक के वृक्ष के समूह का चित्र जिन पर वानर हैं उनके नीचे सीता और राम खड़े है। सीता के माथे पर तिलक अच्छा लग रहा है दोनों के गले में हार है, राम के चरणों में कौआ पड़ा हुआ है। जिसकी आंख में सींक है और लक्ष्मण पहाड़ की चोटी पर भरत की सेना को देख रहे हैं।

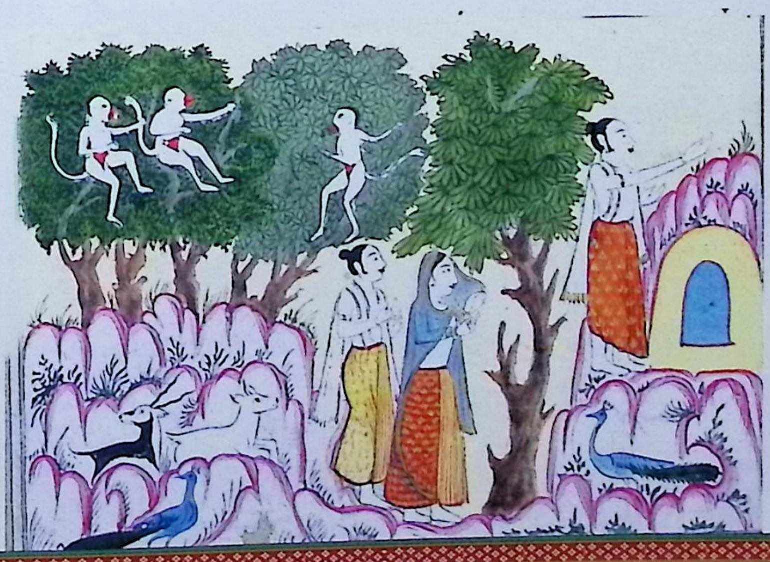

بر غصه لچهمن رامچندر بر مکان خود نشسته بود و لچهمن بلشکر نظر میکیاست
که غلغله لشکر بسیار شد شیران و خرسان مکانهای خود گذاشته گریختند و بوزنه ها خود را
از درختان بر زمین فرو ریختند مار و غیره سوراخیان در سوراخها خزیدند و طیور بفلک
پریدند و آهوان رمیدند و فیلان بیرون دویدند و جاموس جنگلی کناره کشیدند بیدبا دران
و کنّران گوشه گزیدند لچهمن اینحالت را دیده برامچندر گفت لشکری می آید رام گفت شغب
و شور بسیار است نیک ملاحظه کن لچهمن بسرعت بالائی درخت شال برآمد و هر طرف
نظر گماشت ناگاه از سمت کوه لشکر عظیم دید که می آید رتهه ها و فیلان و اسپان و پیادگان
در و بسیار اند جمله را دیده برامچندر گفت که از کار اگن هوتر یعنی آتش پرستی فارغ شوید و سیتا را
در غاری ببرید و کوچ یعنی جوشن بپوشید و کمان زه نمائید لشکر چتر ملک میرسد رامچندر گفت
این لشکر کسی راجه یا پسر راجه است که برای شکار آمده است مغز سخن بگو لچهمن گفت بهرت
پسر کیکئی مانند چهتریان چون آتش بغضب آمده بکشتن مایان رسیده میخواهد که راج بیخار کند
اینک تُپ درخت میرخشند و کوودار و هوجا بنظر می آید تو هم با اهلیه خود در غاری بنشین
آنچه کاری از دست من می آید تنها میکنم و آنچه واجب است بعمل می آرم حالا تیرهای طلای کار من
از کمان رها شده خون مردم میخورند و همه لشکر را انجاک تیره و ار بر میکنم بهرت مایان را
چه تصدیع داد بسبب دشمنی که راج گذاشتیم همان پیش آمد اما گناه بهرت نیست

सर्ग-१०७

लक्ष्मण का क्रोध

रामचन्द्र अपने स्थान पर बैठे हुए हैं और लक्ष्मण सेना पर दृष्टि दौड़ा रहे थे कि सेना का कोलाहल बहुत बढ़ गया। शेर और भालू अपने स्थान छोड़कर भाग खड़े हुए हैं। वानरों ने अपने को पेड़ों से पृथ्वी पर गिरा दिया और सर्प आदि बिलों में रहने वाले अपनी बिलों में चले गये। पक्षी आकाश पर उड़ गये। हिरन भागे, हाथी बाहर को दौड़े, जंगली भैंसे किनारे हो गये बैलों और गायों ने कोने में शरण ली। लक्ष्मण ने यह स्थिति देखकर रामचन्द्र से कहा ''एक सेना आ रही है।'' राम ने कहा ''कोलाहल बहुत अधिक है भली प्रकार देखो।'' लक्ष्मण शीघ्रता से शाल के वृक्ष पर चढ़ गये और चारों ओर दृष्टि दौड़ाई। अचानक पहाड़ की ओर एक बड़ी सेना देखी जो चली आ रही थी, जिसमें रथ हाथी घोड़े और पैदल बहुत थे। सबको देखकर उन्होंने रामचन्द्र से कहा कि अग्नि की पूजा से निवृत्त होकर सीता को लेकर गुफा में चले जाइये और कवच पहन लीजिये। बाण को धनुष पर चढ़ा लीजिये। राजा की सेना आ रही है। रामचन्द्र ने कहा ''यह सेना किसी राजा या राजपुत्र की है। जो शिकार के लिये आया है। अपने कथन का उद्देश्य बताओ।'' लक्ष्मण ने कहा कैकेयी का पुत्र भरत क्षत्रियों की भांति अग्नि के समान क्रोधित होकर हम सबका वध करने के लिये पहुँच गया है। वह चाहता है कि बेखटके राज्य करे। घोड़े दौड़ रहे हैं आप भी अपनी पत्नी के साथ किसी गुफा में बैठ जाइये। जो कार्य मेरे हाथ से होगा मैं अकेला करूंगा और जो आवश्यक है वह पूर्ण करूंगा। अभी मेरे स्वर्ण बाण कमान से छूटकर लोगों का रक्त पीते हैं और समस्त सेना को मैं धूल में मिलाता हूं। भरत ने हम सबको कितना कष्ट दिया और उसकी जिस शत्रुता के कारण हमने राज्य छोड़ा वही सामने आया परन्तु भरत जैसा कोई भी अपराधी नहीं है।

این دهرم است کە اول دشمن را باید کشت بنابران بهرت را میکشم تو راج بنجار بکن حالا کیکی
مغرور راج در ماتم پسر خواهد گریست و بهرت را چنان میکشم کە فیل درخت را و کیکی را
با برادران و متعلقان میکشم حالا بجنگ میروم و این جنگل چترکوٹ را از خون
دشمنان تالاب میکنم و فیلان و اسپان وغیره را از تیر کشته خوراک جانوران
صحرا میسازم و پیشک فرض تیر و کمان کە بر ذمه منست میگذارم اکنون لشکر بهرت را
ببین کە در صحرا و اشجار و دهان جانوران می افتد صورت چترکوت و رام و سیتا در آشرم نشسته
و لچھمن بر درخت شال برآمده لشکر را می بیند و در لشکر فیل سفید با نشان و درو تصویر بیاده کاو
و عقب او مردم پیاده و سوار و رتهه و بند و قچیان وغیره و چهترها همه میدرخشند

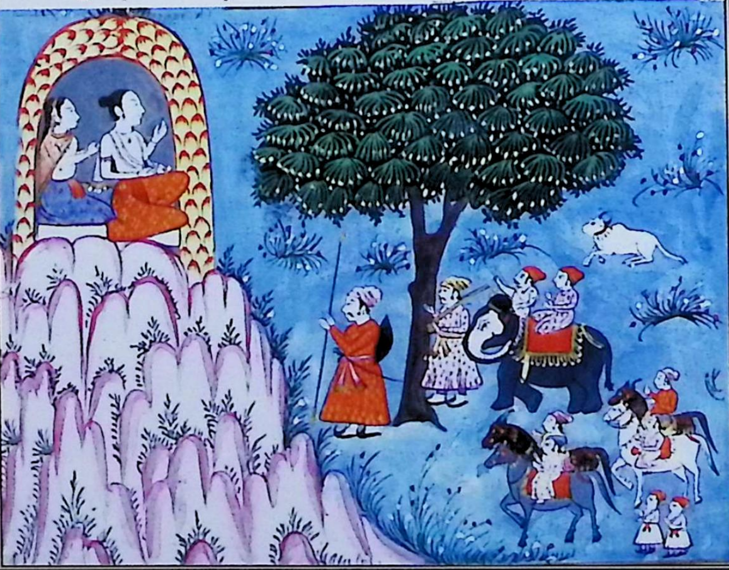

बुद्धिमानी यही है कि पहले शत्रु को मार डालना चाहिये। इसलिए मैं भरत को मार डालता हूँ। आप बेखटके राज्य कीजियेगा। अब राज्य के मद में कैकेयी पुत्र के वियोग में रोयेगी, भरत का मैं ऐसा वध करूंगा कि जैसे वृक्षों के लिए हाथी और कैकेयी के भाईयों और सम्बन्धियों सहित मारुंगा। अब मैं युद्ध के लिये जाता हूँ और चित्रकूट के इस वन को शत्रुओं के रक्त से तालाब बना देता हूँ। हाथियों और घोड़ों को बाण से मारकर वन के पशुओं का भोजन बना देता हूँ। बाण और धनुष का जो उधार मुझ पर है वह चुकाता हूँ। अब भरत की सेना को देखिये कि अब वह वन वृक्ष और पशुओं के मुंह में जाते हैं।

चित्रकूट का चित्र राम और सीता आश्रम में बैठे हुए हैं और लक्ष्मण शाल के वृक्ष पर चढ़कर सेना को देख रहे हैं। सेना में सफेद हाथी झण्डे सहित हैं। इस पर गाय का चित्र बना हुआ है उसके पीछे लोग पैदल सवार रथ और बन्दूकचियाँ आदि हैं सबके मुखड़े चमक रहे हैं।

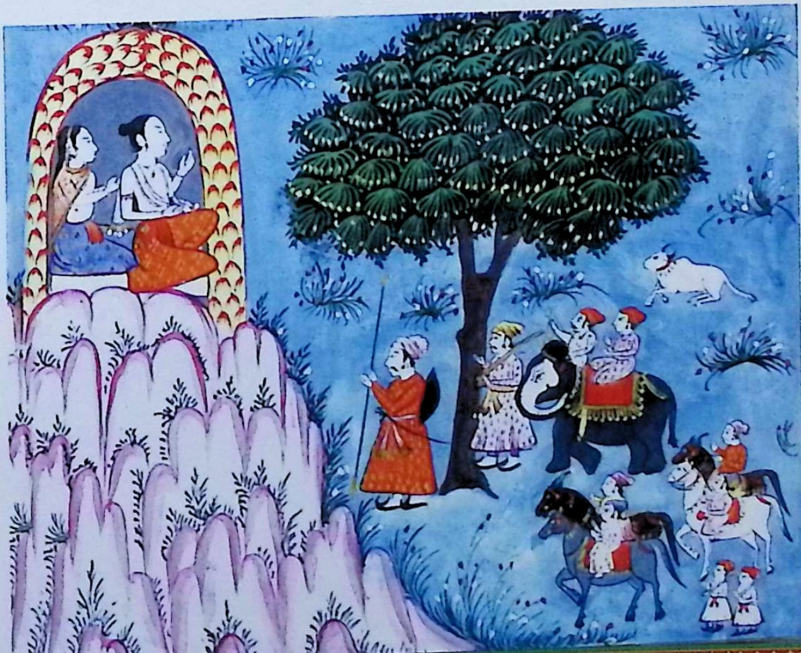

بهرک گفت رام لچهمن از غصه درین گفتار بود که رامچند گفت بهرت کاهی
با من بدی نکرده تو چرا از و میترسی اگر بهرت خود می آید مرا با کمان و شمشیر و سپر
چه کار اگر بهرت برای دیدن می آید آرزوی من نیز چنانست تو بطرف او سخت مگو
از عداوت کردن تو من بیزارم او بجای پسر منست از سبب دولت پسر چگونه پدر را میکشد
یا برادر عزیز را برادر چرا هلاک میکند اگر راج میخواهی من به بهرت خواهم گفت که راج
به لچهمن بده او قبول خواهد کرد چون رامچند چنان گفت لچهمن از انفعال در خود
فرو رفت رامچند او را شرمنده دیده بار دیگر گفت من چنان میدانم که برای
دیدن من آمده است و برای دیدن سیتا به بین که بهرت و شترگهن هردو بهادران
بر اسپان بادرو بنظر می آیند اینک پیش پیش لشکر فیل شترجی بابت پدر من میزیبد
چون رام چنین گفت و آن لشکر را از شادی بلچهمن نمود او از درخت شال فرود آمد
و از شرم سر فرو افکنده پس پشت رام ایستاده شد و بهرت بمفاصله
یک گروه لشکر را استاده کرده در تهنیهٔ مهربان کردن برادر کلان شد

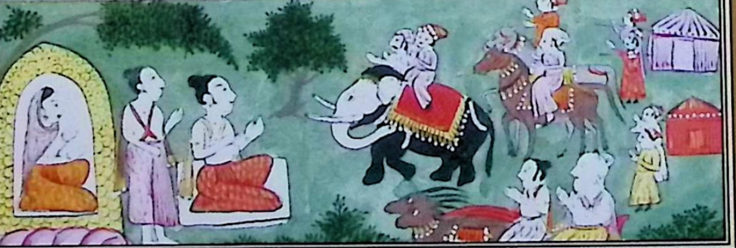

[illegible]

सर्ग-१०८

राम की वार्ता

लक्ष्मण क्रोध के कारण इस वार्ता में थे कि रामचन्द्र ने कहा ''भरत ने मेरे साथ कोई बुराई नहीं की तुम क्यों उससे डरते हो? यदि भरत स्वयं आता है तो मुझे कमान तलवार शस्त्र से क्या काम। यदि भरत मुझे देखने आता है, तो मुझे भी इसकी इच्छा है तुम उसके विषय में कोई कठोर बात मत कहो। तुम्हारे शत्रुतापूर्ण व्यवहार से मैं दुःखी हूँ। वह मेरे पुत्र के समान है। राज्य के लिये एक पुत्र पिता का कैसे वध कर सकता है? या एक प्रिय भाई को कैसे मार सकता है?यदि तुम राजपाट चाहते हो तो मैं भरत से कहूँगा कि राज्य लक्ष्मण को दे दो और वह उसे स्वीकार कर लेगा।'' जब रामचन्द्र ने यह कहा तो लक्ष्मण हृदय में लज्जित हुए। रामचन्द्र ने उनको अधिक लज़्जित देखकर पुनः कहा ''मैं ऐसा समझता हूँ कि वह मुझे देखने और सीता को ले जाने आया है। देखो भरत और शत्रुघ्न दोनों वीर द्रुतगति घोड़ों पर सवार दिखाई पड़ रहे हैं। उनके आगे-आगे मेरे पिता का विशेष हाथी। है।'' जब राम ने यह कहा, और प्रसन्नता से यह सेना लक्ष्मण को दिखाई तो वह शाल वृक्ष से नीचे उतरे और लज्जा के कारण सर झुकाकर राम के पीछे खड़े हो गये और भरत ने एक कोस की दूरी पर सेना को रोककर बड़े भाई को दयालु करने और मनाने का निश्चय किया।

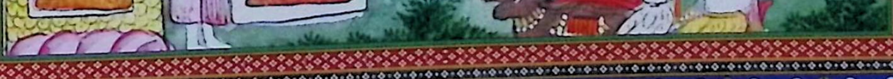

بهرک گفت رام لچهمن از غصه درین گفتار بود که رامچندر گفت بهرت کاهی
با من بدی نکرده تو چرا از و میترسی اگر بهرت خود می آید مرا با کمان و شمشیر و سپر
چه کار اگر بهرت برای دیدن می آید آرزوی من نیز چنانست تو بطرف او سخت مگو
از عداوت کردن تو من بیزارم او بجای پسر منست از سبب دولت پسر چگونه پدر را میکشد
یا برادر عزیز را برادر چرا هلاک میکند اگر راج میخواهی من به بهرت خواهم گفت که راج
به لچهمن بده او قبول خواهد کرد چون رامچندر چنان گفت لچهمن از انفعال در خود
فرو رفت رامچندر او را شرمنده دیده بار دیگر گفت من چنان میدانم که برای
دیدن من آمده است و برای دیدن سیتا بهین که بهرت و شترگهن هردو بهادران
بر اسپان باد رو بنظر می آیند اینک پیش پیش لشکر فیل شترجی بابت پدر من میرسید
چون رام چنین گفت و آن لشکر را از شادی بلچهمن نمود آواز درخت شال فرود آمد
و از شرم سر فرو افکنده پس پشت رام ایستاده شد و بهرت بمفاصله
یک کروه لشکر را استاده کرده در تهیّهٔ مهربان کردن برادر کلان شد

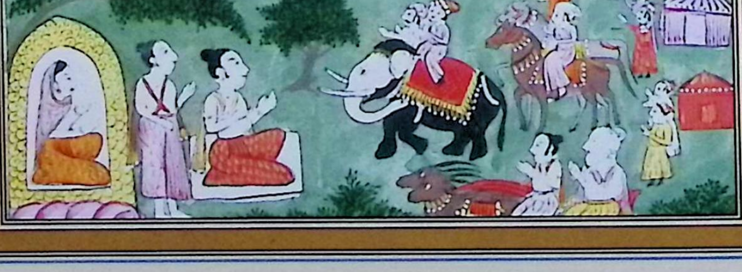

صورت چترکوت
ویران شالا و بشارت [illegible]

सर्ग-१०८

राम की वार्ता

लक्ष्मण क्रोध के कारण इस वार्ता में थे कि रामचन्द्र ने कहा ''भरत ने मेरे साथ कोई बुराई नहीं की तुम क्यों उससे डरते हो? यदि भरत स्वयं आता है तो मुझे कमान तलवार शस्त्र से क्या काम। यदि भरत मुझे देखने आता है, तो मुझे भी इसकी इच्छा है तुम उसके विषय में कोई कठोर बात मत कहो। तुम्हारे शत्रुतापूर्ण व्यवहार से मैं दुःखी हूँ। वह मेरे पुत्र के समान है। राज्य के लिये एक पुत्र पिता का कैसे वध कर सकता है? या एक प्रिय भाई को कैसे मार सकता है?यदि तुम राजपाट चाहते हो तो मैं भरत से कहूँगा कि राज्य लक्ष्मण को दे दो और वह उसे स्वीकार कर लेगा।'' जब रामचन्द्र ने यह कहा तो लक्ष्मण हृदय में लज्जित हुए। रामचन्द्र ने उनको अधिक लज्जित देखकर पुनः कहा ''मैं ऐसा समझता हूँ कि वह मुझे देखने और सीता को ले जाने आया है। देखो भरत और शत्रुघ्न दोनों वीर द्रुतगति घोड़ों पर सवार दिखाई पड़ रहे हैं। उनके आगे-आगे मेरे पिता का विशेष हाथी। है।'' जब राम ने यह कहा, और प्रसन्नता से यह सेना लक्ष्मण को दिखाई तो वह शाल वृक्ष से नीचे उतरे और लज्जा के कारण सर झुकाकर राम के पीछे खड़े हो गये और भरत ने एक कोस की दूरी पर सेना को रोककर बड़े भाई को दयालु करने और मनाने का निश्चय किया।

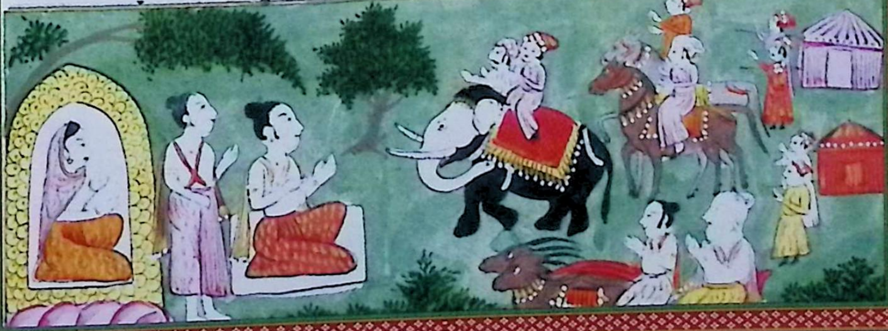

سرگ ملاقات چون بهرت جانب رامچندر روان شد به بشستّ گفت که مادران مرا
دو بیارید و خود بنزدیک رام قدم برداشت و شتر گهن و سومنتر عقب او رفتند
بجایی که دخان بنظر می آمد همان نشان پیش گرفت هر گاه بر چترکوت نزدیک دریای
منداکنی رسید پرن شالا یعنی خانه از برگ درختان دید و پیش و پس او اشجار شال
و تال و نیب بسیار نظر کرد در انجا رامچندر را بر آسن خوب نشسته و بهایم و جانوران
جنگلی بقرب صحبت او چون تیر ترکش دید و پیکانها تیر چون مهر تابان میدرخشید
شمشیر کوفت مطلا و کمان منقش از بندهای زرین خوشنما و شست زرنگار در انگشت
و روبروی او بیدی از آتش است و جتا بر سر بکل در تن و کرشن اجن در بغل است
پوست آهوی سیاه
و دوش چون شیر و دست دراز و چشم چون نیلوفر کلان دل و بخت بلند گویا برهماست
دهرماتمان و حافظ تمام زمین تا دریای شور بهرت پیش دویده برادر را بدانحال
دیده از غم اشک ریزان گردیده بی اختیار گفت کسیکه در دیوانخانه با امرا می نشست
حالا با بهایم جنگلی نشسته آنکه پارچه و پیرایه بیش قیمت می پوشید حالا آن دهرماتما
اجن آهو دارد آنکه اقسام جواهر و مالا میداشت او بار جتا را چسان برداشت
میکند آنکه تن او پیوسته از صندل وغیره آلوده می ماند ازین گرد و خاک چگونه
برمیدارد از سبب من اینقدر تصدیع یافت لعنت بر زندگی من اینقدر گفت

सर्ग-१०६

भेंट

जब भरत रामचन्द्र की ओर चले तो वशिष्ठ ने कहा ''मेरी माताओं को शीघ्र लाइये'' और स्वयं राम की ओर अपने पाँव बढ़ाये। शत्रुघ्न और सुमन्त्र उनके पीछे गये। जिस स्थान पर धुआँ दिखाई पड़ रहा था उसी को लक्ष्य रखा जब चित्रकूट पर मन्दाकिनी नदी के निकट पहुँचे तो एक पर्णशाला अर्थात् वृक्ष के पत्तों का घर देखा और उसके आगे पीछे शाल ताल तथा नीम के अनगिनत वृक्ष देखे। वहाँ रामचन्द्र को एक अच्छे तख़्त पर बैठा देखा उनके निकट वन पशुओं को धनुष में बाण के समान देखा जो तीर के अग्रभार के समान चमक रहे थे। रत्नजड़ित वाली तलवार और सुसज्जित कमान जरी बन्द से सुन्दर लग रही थी। उंगली में रत्न जड़ित अंगूठी थी। उनका मुखड़ा अग्नि की भाँति दमक रहा था। सर पर जटा थी शरीर पर और बगल में वृक्ष की छाल थी। कन्धा शेर जैसा मजबूत और लम्बी, आँखें ऐसी जैसे बड़ा सा नीलोफर का फूल, हृदय और भाग्य दोनों उच्च जैसे ब्रह्मा हैं। धर्मात्मा और शोर नदी तक समस्त पृथ्वी का रक्षक भरत ने आगे दौड़कर भाई को इस स्थिति में देखकर दुख से अश्रु बहाते हुए कहा ''जो राजभवन में धनवानों के साथ बैठता था अब वह वन पशुओं के साथ बैठा हुआ है, और जो मूल्यवान वस्त्र पहनता था वह धर्मात्मा मृग की खाल पहने हुए है, जो विभिन्न प्रकार के रत्न और माला पहनता था वह जटा का बोझ कैसे उठाये हैं ?जिसका शरीर सदैव चन्दन आदि सुगन्धों से महकता रहता था वह यह धूल और मिट्टी कैसे सहन कर रहा है ?मेरे कारण से उनको इतना कष्ट हुआ मेरे जीवन पर धिक्कार है।''

و در پای رامچند افتاد و شترگهن نیز پای رام را بوسه داد رامچند هر دو را در کنار
گرفت و سر آنها بوسید بمثالی که با آفتاب و ماهتاب و زهره و مشتری ملاقات کنند
و سومنتر هم ملازمت نمود و بوزنه‌ها و آهوان و غیره که بهم جمع بودند در صحرا پراکنده شده
گریختند و در اینجا صورت چترکوت و آشرم بدستور و رام بر آسن نشسته و ترکش و کمان و شمشیر
پیش نهاده و جتّهای سر بکل درخت و دست بر سر بهرت می نهد و او پای او را بوسه میدهد و شترگهن و غیره ایستاده

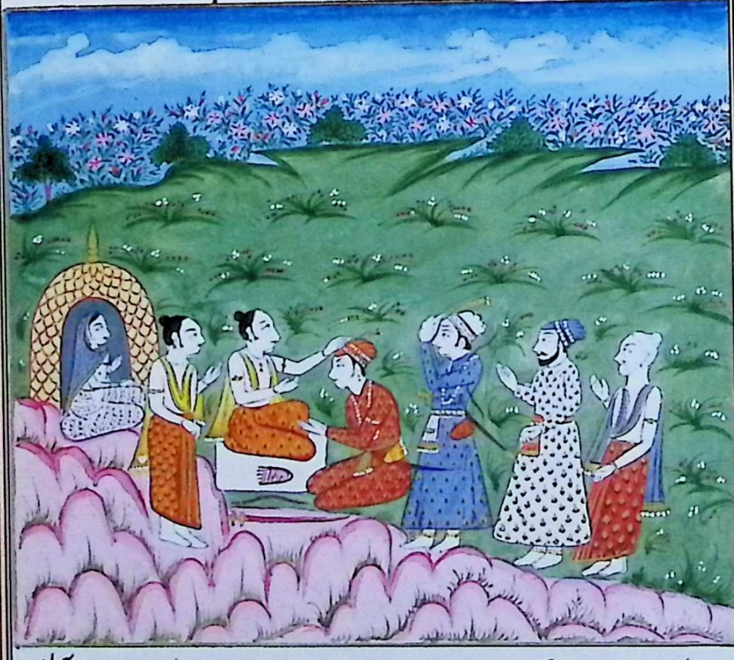

گفتار رام رامچند بهرت را بوسیده و در بغل گرفته بدینگونه باعث آمدن آن
پرسید راجه دشرته کی شد که تو در صحرا آمدی زیرا که در حیات راجه آمدن اینجا نزار دار

यह कहते हुए वह रामचन्द्र के चरणों में गिर पड़े और शत्रुघ्न ने भी राम के पैर चूमे। रामचन्द्र ने दोनों को हृदय से लगाया और उनके मस्तक को चूमा। जैसे कि सूर्य और चन्द्रमा तथा मंगल शुक्र भेंट करते हैं और सुमन्त्र ने भी सम्मान जताया तथा वानर और हिरन आदि जो एकत्र थे वन में भाग गये।

चित्रकूट और आश्रम का चित्र पूर्व की भाँति है। राम आसन पर बैठे हुए हैं। धनुष बाण और तीर सामने रखे हैं शिर पर जटा है हाथ भरत के सर पर रखे हुए हैं और वह उनके पाँव को चूम रहे हैं पास में वशिष्ठ आदि खड़े हैं।

सर्ग–११०

रामचन्द्र की वार्ता

रामचन्द्र ने भरत को चूमा और अपने निकट लेकर इस प्रकार उनके आने का कारण पूछा ''राजा दशरथ कहाँ गये कि तुम वन में आए हो। क्या तुम राजा के जीवन में यहाँ नहीं आ सकते थे।''

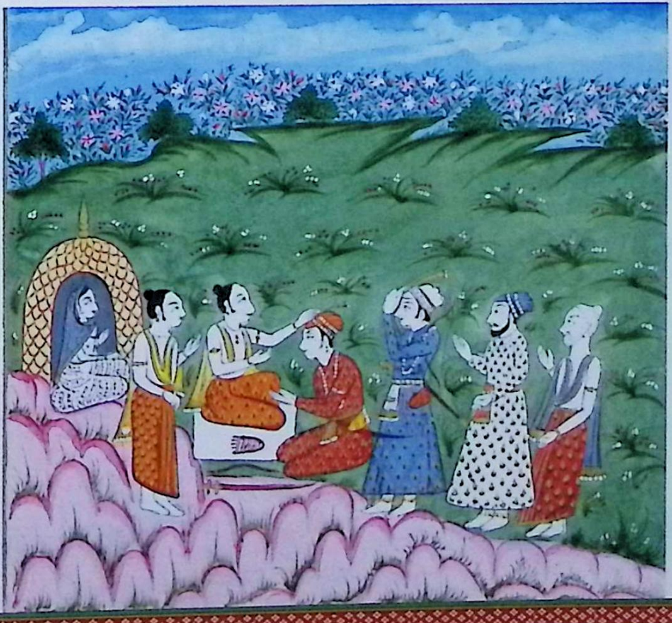

بنودی ویرست که ترا از دور می بینم موجب آمدن تو درین صحرا چه باشد چه مگر راجه
دشرتهه که کننده جک راجسوها و آشومیدها و مستقل بر دهرم است بعافیت است
چه مگر اوپادهیایی اجهواکورا که ریاضت کمال دولت اوست و دهرماتماست از پدر من موافق
معمول او پرستش او میشود چه مگر کوشلا و سومترا بخیریت اند چه مگر کیکئی براحت است
چه مگر مسخر کننده حواس و داننده بیدها پروهت بعافیت است چه مگر هنگام اگن هوتر
هوم در آتش بجمعیت می اندازد چه مگر منتریان یعنی مشورتیان و وزراء تو که شاستر دان
و جهاندیده و طریق فهم هستند بواسطه راجه ها مشورت ایشان بیخ دولت و ظفر است
چه مگر خواب ترا بسیار میشود و بروقت بیدار نمیشوی چه مگر هر معامله را هنگام آخر شب تامل
نمیکنی چه مگر با مردم مصلحت در خلوت نمیکنی و چه مگر کنگاشیان تو دولتخواه نیستند
چه مگر کاری کردن میتوانی و بسرعت نمیشود چه مگر چیزی که قابل گفتن است و چیزی که
قابل نگفتن مصلحتیان تو آنرا نمیفهمند چه مگر ترا نادان بسیار جمعند و دانا کم بواسطه آنکه
گفته اند اگر نادان هزاران و لکها معاون باشند با اینها صحبت نباید کرد و اگر عاقل یکی
باشد از سبب او دولت بسیار حاصل آید چه مگر بشسٹ و بام دیو مطابق شاستر
پند نمیدهند چه مگر وزرائی تو بزرگان را بکارهای بزرگ و خردان را بکار خرد مشغول
نمیدارند چه مگر مقصدیان تو مردم را بسیار تنبیه و تادیب میکنند چه مگر نوکران ترا بخاطر

‘‘मैं बहुत समय से तुम्हें दूर से देख रहा हूँ तुम्हारे वन में आने का क्या कारण है ?क्या राजा दशरथ जो अश्वमेध यज्ञ करने वाले, और सदैव धर्म पर स्थिर रहने वाले हैं, कुशल से हैं ?तथा इक्ष्वाकु के उपाध्याय के लिये तपस्या जिसकी सबसे बड़ी सम्पत्ति है, जो धर्मात्मा हैं, मेरे पिता की ओर से इसकी पूजा पूर्व की भाँति हो रही है ?क्या कौशल्या और सुमित्रा कुशलपूर्वक हैं ?क्या कैकेयी सुखपूर्वक हैं?क्या मन को वश में करने वाले और वेदों को जानने वाले पुरोहित कुशल से हैं?क्या वह अग्नि की पूजा पूर्ण मनोयोग से कर रहे हैं ?क्या मंत्री, परामर्शदाता और मंत्रीगण जो शास्त्र जानने वाले दूरदर्शी और बुद्धिमान हैं राजा के लिए उनके परामर्श धन सम्पत्ति का आधार है?क्या तुम्हें निद्रा बहुत आती है?समय पर उठते नहीं हो क्या?तुम प्रत्येक मामले में रात्रि के अन्तिम पहर में विचार नहीं करते हो क्या?तुम लोगों के साथ एकान्त में संधि नहीं करते हो क्या ?तुम्हारे परामर्शी सम्पत्ति के शुभचिन्तक नहीं हैं क्या ?तुम कोई कार्य कर सकते हो और वह शीघ्र नहीं होता क्या ?ऐसी बात है कि कोई बात कहने की है और कोई बात कहने की नहीं है। उसको तुम्हारे सलाहकार नहीं समझते हैं ?क्या तुम्हारे निकट मूर्ख लोग अधिक एकत्र हैं, बुद्धिजीवी कम ?क्योंकि लोगों ने कहा है कि हजारों मूर्ख भी तुम्हारे सहयोगी हों तब भी उनका संग नहीं करना चाहिए और यदि बुद्धिमान एक ही हों तब भी उसके कारण से बहुत सम्पत्ति प्राप्त होती है। क्या वशिष्ठ और वामदेव शास्त्र के अनुसार शिक्षा नहीं देते हैं ?क्या तुम्हारे मंत्रीगण बड़ों को बड़े कार्यों में और छोटों को छोटे कार्यों में व्यस्त नहीं रखते हैं ?क्या तुम्हारे शत्रु लोगों को बहुत डराते धमकाते हैं ?क्या तुम्हारे नौकर तुम्हारी आज्ञा नहीं मानते हैं, जैसे कि बूढ़े पति को उसकी पत्नी सम्मान नहीं देती है।

نمی آرند چنانکه شوہر پیر ازن او وگفته اند ہر که طبیب کامل و نوکر محکوم و سپاہی
دولتخواه ندارد او ہلاک میشود چه مگر سرداران لشکر تو اصیل وکارگذار و سپاہی
وعاقل ومتحمل و یا کر و نیست چه مگر پہلوانان سرآمد تو بخوشی در جنگ مستعد نمیشوند
چه مگر بل وغیره انچه باید داد آزا پس میگیری چه مگر خراج آوران ترا باج نمیدہند
که آن فساد کلان ہست چه مگر اقربا و ہمجنسان تو در مصاف بجان دادن کوتاہی
میکنند چه مگر جاسوسان وقاصدان تو در کار کاہلی میکنند و پیغام بدانش
[illegible]
نمیگذارند چه مگر تیرتهه کنان تو ہر ده و ده و پنج و سه را درست نمی فہمند
چه مگر ترا از دشمنان خوف رسیده وخود را کم زور دانسته چه مگر این بیوقوفان
که خود را عاقل میدانند چه برہمنان نمی پرستند چه پدر ما بدستور سابق راست رو
نیست واجود ہیا راکه از افیال و اسپان ورتهه و برہمن و چہتری و بیش و شودر
بقول ن
پرہست وزن و مرد بخوشی دران میباشند با حسن وجوه حراست نمیکنند چه مگر پیران
خوردان وبیدانان از دان یعنی بخشش و درستی دل و راستی گفتار آراسته
دولت
ہستند چه مگر ارتهه وکام و دہرم کسان نقصان می یابد چه مگر برہمنان تو سخنان
دہرم وکام ارتهه ہمیشه نمیگویند زیرا که ناستک یعنی آن عالم ہیچ داند و دروغ گو
وغصه دار و دیرکه سوتری یعنی ہر که کار یکروزه تمامی سه انجام کند و نفهمنده شناسته

लोगों ने सत्य ही कहा है कि जो व्यक्ति योग्य चिकित्सक, आदेश का पालन करने वाले नौकर, धन के इच्छुक सिपाही, नहीं रखता उसका नाश हो जाता है। क्या तुम्हारा सेनापति योग्य एवं कार्यकुशल, योद्धा, बुद्धिमान, धैर्यवान और पवित्र विचारों वाला नहीं है ?और क्या तुम्हारे बड़े-बड़े प्रसिद्ध पहलवान प्रसन्नतापूर्वक युद्ध के लिये तैयार नहीं होते हैं ?क्या पुल आदि जितने चाहिये, उनको तुम किनारे डाल देते हो ?और क्या तुम्हारे करदाता तुम्हें कर भुगतान नहीं करते ?क्योंकि यह बहुत बड़ा दोष है। और क्या तुम्हारे संबंधित और पुरुष युद्ध के मैदान में प्राण देने में संकोच करते हैं?और क्या तुम्हारे गुप्तचर और संदेशवाहक अपना कार्य करने में ढिलाई दिखाते हैं और संदेश समझबूझ के साथ नहीं पहुँचाते हैं ?और क्या तुम्हारे तीर्थ करने वाले अटठारह, दो, पांच, तीन और तीन को सही नहीं माने हैं?क्या तुम्हें शत्रुओं की ओर से भय है और तुम अपने को निर्बल समझते हो?और क्या यह मूर्ख जो स्वयं को बुद्धिमान समझते हैं। ब्राह्मणों की पूजा नहीं करते हैं और क्या हमारे पिता पूर्व की भांति सत्यवादी नहीं हैं ?और क्या अयोध्या जो हाथी, घोड़े, रथ और ब्राह्मण, क्षत्रिय, बक्काल और शूद्र से भरी हुई है, उसमें पुरुष और स्त्री प्रसन्नतापूर्वक नहीं रहते हैं ?और भली प्रकार से उसकी सुरक्षा नहीं करते हैं ?और क्या बुद्धिमान बुद्धि और वेद का ज्ञान रखने वाले दान, मन की शुद्धता, वार्ता की सत्यता से सुसज्जित नहीं हैं?और क्या लोगों की सम्पत्ति और धर्म कम हो रहा है ?और क्या तुम्हारे ब्राह्मण धर्म, अर्थ और काम की बातें नहीं कहते हैं क्योंकि जो ज्ञानी कुछ जानता है वह झूठ बोलने वाला और क्रोध रखता है और जो कि जिस समय एक दिन का कार्य सम्पादित करता है और वह शास्त्र को समझने वाला नहीं है उसे उसकी समझ रखनी चाहिए।

اینها زود تمیز باید کرد چه مگر تو از گناه چهارده قسم پاک نیستی چه مگر زا از دوازده
عقوبت چیزی رسیده که ازین دولت کلان از دست برود چه مگروه اندر بیست
برگ و پنج برگ و چهار برگ و هفت برگ و هشت برگ و سه نفر برگ و تسخیر
اربعه عناصر و ملک
حواس شش وجه و بیست برگ و مسافت و سیاست و پیوند دادن دو مجال
اینها موافق ضابطه نمیکنی و آنچه از منتریان بابته و چهار مطلوب ست مطابق معمول
بعمل نمی آرند چه مگر بید ترا نفع نمی بخشد و زر ترا فائده نمیدهد و عورت و علم ترا نفع بخشش
نیست اینها که گفتم موافق دستوربد سوید رمن بطریق اجداد ما مستقل ست و دینار از درهم
محافظت میکند و میدانم که بدرم ببرک [illegible] بیجا عوت چترکوت و پرن شالا درم و لچهمن و بهرت
و شترگهن و سیتا و سومنتر و بشست رام و سیتا نشسته اند و جمیع استاده اند

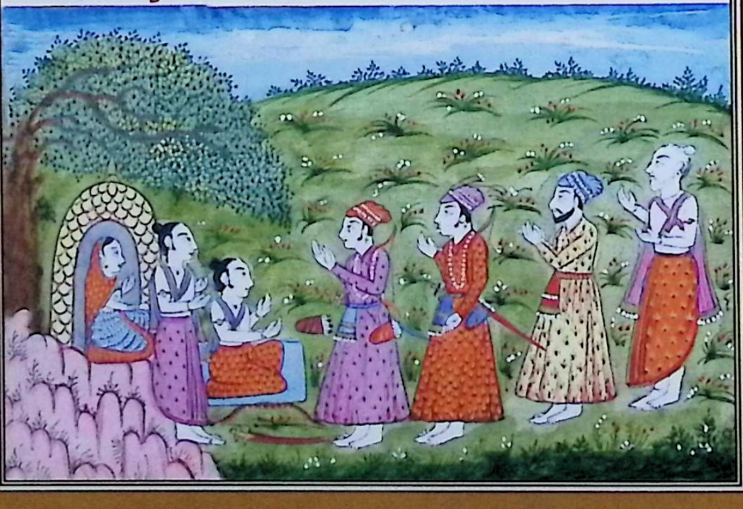

और क्या तुम चौदह पापों से मुक्त नहीं हो ?क्या तुम्हें बारह दण्ड या कष्ट में से कुछ हुई है जिसके कारण से बड़ा राज्य हाथ से निकल जाता है ?और क्या दस इन्द्री वर्ग, पांच वर्ग, सात वर्ग, आठ वर्ग और तीन नफ़र वर्ग और छः इन्द्रियों को वश में करना बीस वर्ग, यात्रा राजनीति यह सारे कार्य तुम नियमानुसार नहीं करते हो ?और जो कुछ कि मंत्रियों से तीन चार बातें वांछित हैं वह उन्हें परम्परानुसार नहीं करते हो ?और जो कुछ कि मंत्रियों से तीन चार बातें वांछित हैं। सब नियमों के अनुरूप हैं। अतः मेरे पिता और पूर्वजों के रास्ते पर सदा स्थापित हैं, और संसार के धर्म के कारण से रक्षा करते हैं और मैं जानता हूँ कि मेरे पिता स्वर्गवासी हो चुके हैं।

चित्रकूट और पर्णशाला का चित्र, राम लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सीता, सुमंत्र व वशिष्ठ के चित्र-राम और सीता बैठे हुए हैं, शेष सब खड़े हैं।

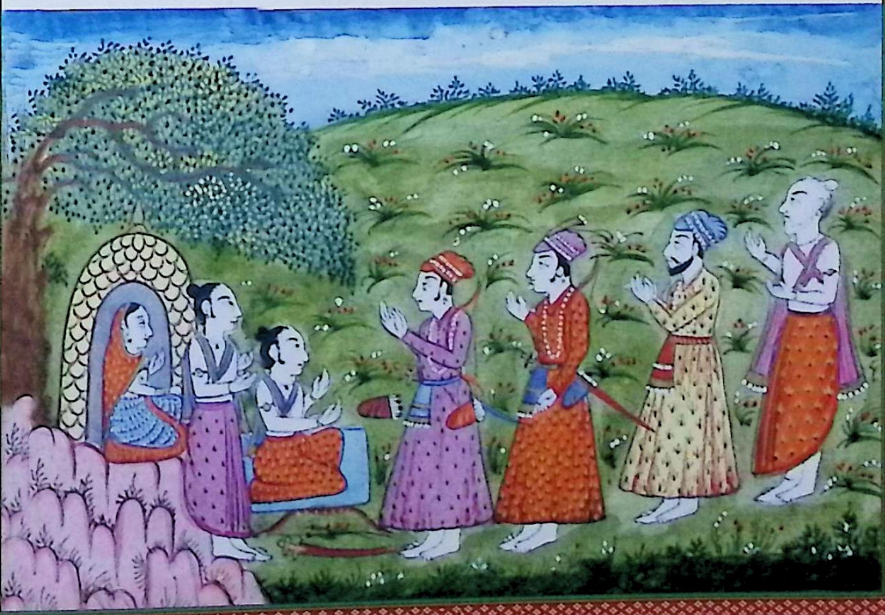

سرک گفت بهرت را آنچه در بدنیان مستفسر بود که بهرت غمگین و مضطربانه
حقیقت مردن پدر بیان کرد و گفت من که از دهرم افتاده ام مرا به راج چه کار باوجود
همچو تو برادر کلان بخوردان چه رسد با بزرگان در اجودهیا در آی و خود را راجه
ذات ما کن تو لایق راج زمین بلکه راج دیوتاها را لایق هستی بواسطه آنکه کارهای تو
از درجهٔ مردم بالاتر است بسبب کیکئی والدهٔ من تو بصحرا آمدی و مهاراجه بسرگ رفت
اکنون برخیز و اودک کریا کن یعنی بنام او آب بده اگرچه من و شترگهن قبل ازین کرده ایم
جل کریا
اما دادهٔ فرزندی که عزیز پدر باشد در پترلوک اچهی میشود یعنی ثمرهٔ او کاهی کم نمیشود
مردگان
و تو فرزند عزیز پدر هستی بواسطه آنکه پدرم در فکر تو و آرزوی دیدار تو بود و دل
و عقل را بتو پیوند کرده و ترا یاد نموده در غم تو مرده است درینجا صورت رام و لچهمن و سیتا و بهرت
و شترگهن و سومنتر و بششت و صورت چترکوت بدستور معمول بهرت روبرو میرسد
و از بنیان نشسته

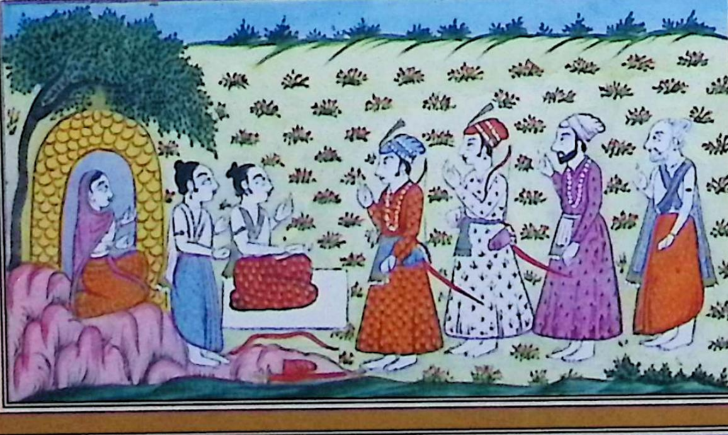

सर्ग–१११

भरत की वार्ता

रामचन्द्र इस प्रकार पूछ रहे थे कि भरत ने दुखी होकर और व्याकुल होकर पिता के स्वर्गवास होने की सत्यता बताई और कहा कि "मैं धर्म से दूर हो चुका हूँ। मुझे राजपाट से क्या लेना देना। आप जैसे बड़े भाई के होते हुए छोटों को इससे क्या काम। बड़े बूढ़ों के साथ अयोध्या चलिये और स्वयं को हमारा राजा बनाइये। आप पृथ्वी पर राज्य करने अपितु देवताओं पर राज्य करने योग्य हैं। क्योंकि आपके कार्य लोगों की पहुँच से ऊपर हैं मेरी माता कैकेयी के कारण आप वन में आए और महाराजा स्वर्ग को चले गये अब उठिये और जल क्रिया कीजिये अर्थात् उसके नाम पर जल दीजिये। यद्यपि मैंने और शत्रुघ्न इससे पूर्व जल दे चुके हैं परन्तु प्रिय पुत्र का दिया हुआ जल मृतक के संसार के लिये अच्छा होता है अर्थात् उसका फल कभी कम नहीं होता। आप पिता के प्रिय पुत्र हैं। क्योंकि मेरे पिता आपकी चिंता और आपको देखने की इच्छा रखते थे उन्होंने अपने मन और हृदय दोनों आपस में जोड़ रखे थे आपको स्मरण करते हुए ही आपके दुख में स्वर्ग सिधार गये।"

राम, लक्ष्मण, सीता, भरत, शत्रुघ्न सुमंत्र, वशिष्ठ का चित्र और चित्रकूट का चित्र। यथावत् व पूर्व के अनुरूप हैं। भरत सामने पहुँचते हैं और वह सब बैठे हुए हैं।

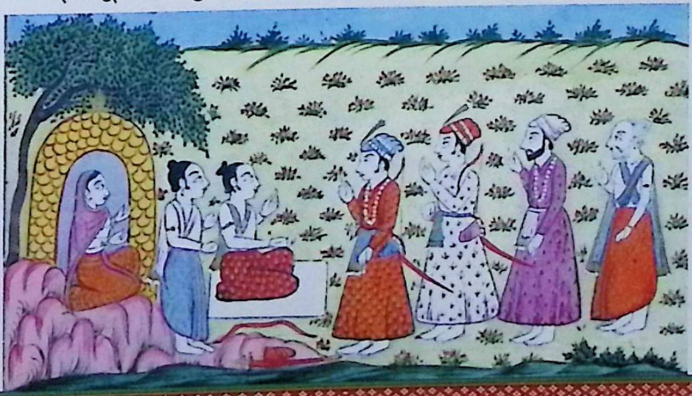

کہ ماتم رامچندر اینچنین گفتار تحیر از بهرت شنیده بنوعیکه درخت از تبر شکسته
افتد بیهوش برزمین افتاد و برادران او با سیتا و چندان غم کردند باز بهوش آمده
با بهرت گفت از من کدام کار لایق آن صاحبدل آمد تو نیک مردی که با شترگهن ستمکار او
کردی اکنون که اجودهیا بی راجه بی رونق مانده بعد انقضای ایام صحرا هم شوق آنجا نیست
و شوق راج هم نمانده گفتارهای پند که پدرم میگفت از کجا خواهم شنید بهرت گفت باری
برخیزید و آب به پدر بدهید اگرچه من ستمکار کرده ام بعد ازان رام سیتا را که میگریست
انجیر کوفته شده [illegible]
تسلی کرده بلچهمن گفت پناک انگدی و چرو او تر من بیارید که جل کریا پدر میکنیم اول سیتا
برود و تو با او برو بعد ازان من میروم که طریق بزرگان چنین است لچهمن همچنان
بعمل آورد بعد ازان رامچندر با سومنتر آنطرف دریای مندا کنی آمد در آنجا بشیو
تیرتهه رسید آنجا همه ها غسل کردند رامچندر انجلی پر آب از آن گرفته رو بسمت جنوب کرده
چنان گفت ای پدر ترا در جم لوک که پتر لوک است این آب همیشه برسا و بعد ازان
عناب و [illegible]
با برادران خود پناک یعنی غلوله از انگدی و بدری کرده بر وریهه یعنی گیاه نهاده گفت
ای پدر این را بخور هر خوردنی که هست همه را دیوتا ئی هست باز رامچندر همان راه
دریا را عبور کرده هر دو دست بهرت و لچهمن گرفته در همان پرن کٹی یعنی خانه برگ
درختان هر چهار برادر و سیتا و غیره گریه آغاز کردند مردم لشکر که ایستاده بودند

सर्ग-११२

रामचन्द्र का शोक

रामचन्द्र ने भरत से ऐसी आश्चर्यजनक बात सुनकर, जिस प्रकार आरी से कटकर वृक्ष गिरता है, उसी प्रकार वह मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े, और सीता सहित उनके भाइयों ने कुछ शोक मनाया। फिर उन्होंने होश में आकर भरत से कहा ''मुझसे उस महान आत्मा के योग्य कौन-सा कार्य हुआ ?तुम सज्जन पुरुष हो कि तुमने शत्रुघ्न के साथ उनका अन्तिम संस्कार किया। अब जबकि अयोध्या उजड़ चुकी है, वनवास की अवधि पूर्ण होने के पश्चात् भी मुझे वहाँ जाने की इच्छा नहीं है, और राज्य की इच्छा भी नहीं रह गयी है। मैं वह शिक्षाप्रद बातें जो मेरे पिता बताते थे अब कहाँ से सुनूँगा।'' भरत ने कहा ''भगवान के लिये उठिये और पिता को जल दीजिये यद्यपि मैं संस्कार कर चुका हूँ। उसके पश्चात् राम ने सीता को, जो रो रही थी, सान्त्वना देते हुए लक्ष्मण से कहा ''इडगुदी और चन्दन आदि लाओ ताकि मैं पिता की जल क्रिया करूँ। पहले सीता जायें और तुम उनके साथ जाओ तथा उसके बाद मैं जाऊँगा कि पूर्वजों का विधान यही है।'' लक्ष्मण ने इसका पालन किया उसके पश्चात् रामचन्द्र, सुमंत्र के साथ मन्दाकिनी नदी के उस ओर आए। वहाँ शिव तीर्थ पर पहुँचे सबने स्नान किया। रामचन्द्र ने घड़ा पानी से भरकर अपना मुँह दक्षिण की ओर करके स्नान किया। ''ऐ पिता ! आपको यमलोक में जो पितृलोक है, यह जल सदैव पहुँचे। उसके पश्चात् भाईयों के साथ पिण्डदान करके और उसे (कुशो) घास पर रखकर कहा ''पूज्य पिता जी! इसे खाइये। खाने के योग्य जो कुछ है वही देवता को अर्पित है। फिर रामचन्द्र उसी मार्ग से नदी पार करते हुए दोनों भुजाओं में लक्ष्मण और भरत को लिये हुए उसी कुटिया में आए। चारों भाई और सीता ने रोना आरंभ कर दिया। सेना के लोग जो खड़े थे,

این شور را شنیده دانستند که با برادران ملاقات شد باز روئی دیدار رام همکنان
با اسپ و فیل و رتهه و غیرهم همانجا جمع شدند دران زمین از حوا فروسم و از تمام رتهه
شغب بسیار شد فیلان آنجا از ترس در صحرا دیگر گریختند و گرازها و آهوان و جوامیس
و خرسها و میمونها و پلنگان و شیران و گاوکوشان و گاوان همه گوشه
گرفتند و کوکلا و غیره طیوران بآسمان پریدند بعد ازان رامچندر همکنان را
مانند پدر تسلی و اطمینان داده مطابق درجات هر کسان سخنی و حکایتی بگفتار آورد و آن
مردم چون از غم گریه سر کردند آن نفیر مانند مرذنگ شده تمام غارهای کوه و هامون پر کرد
درینجا صورت هر چهار برادر جٹا بر سر و سیتا و سومنتر و بشسٹ درمیان دریا

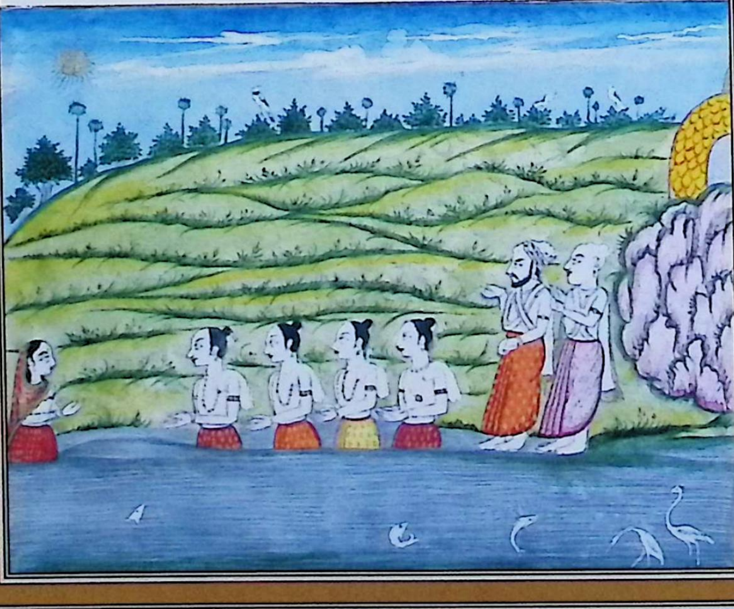

उन्होंने यह शोर सुनकर यह जाना कि भाईयों से भेंट हो गयी राम को देखने की इच्छा में सब के सब घोड़े, हाथी, रथ सहित वहाँ एकत्र हो गये। इस धरती पर सुम, खुर और रथ से बहुत शोर हुआ। वहाँ के हाथी भयभीत होकर दूसरे वन में भाग गये और हिरन, भैंस, चीते, शेर, गाय सब कोने में छुप गये, कोयल आदि पक्षी आकाश में उड़ गये। उसके बाद रामचन्द्र ने सबको पिता के समान सान्त्वना दिलाते हुए प्रत्येक व्यक्ति से, उसके पद के अनुसार वार्ता की। चूँकि दुख से रो रहे थे उसकी घोर ध्वनि ने गुफा और जंगल को भर दिया।

चारों भाईयों का चित्र-सर पर जटा है। सुमंत्र वशिष्ठ नदी के बीच में हैं।

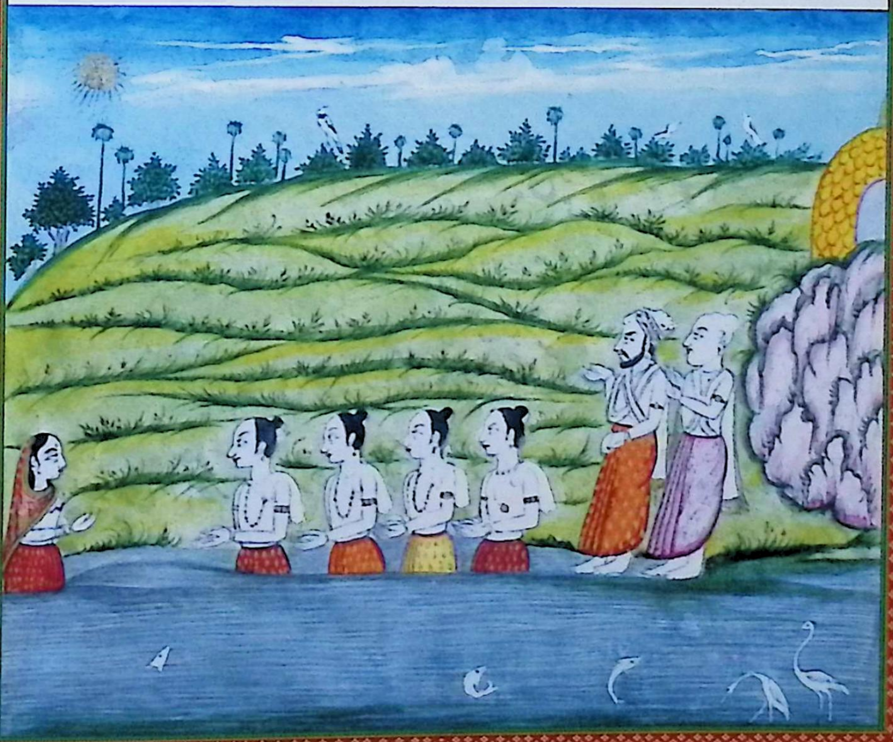

سرک کفت رکوشلا پس ازان بشست را پیشوا کرده مادران رامچندر نزدیک او
روان شد کوشلا چون نزدیک دریای منداکنی رسید بسومنترا کفت اینک مکان آن بی سامان است
ازینجا لچهمن پسر تو برای پسر من آب میبرد از حکم این کیکئی پسر تو بما بکار غربا مشتغل است
بعد ازان بسمت دچهن یعنی جنوب برد ربهه پنداکدی دید کفت اینک پدر خود
که والی اچهواکوان بود رامچندر برای خوردن داده است آنکس که تمام زمین را
تا چهار سمدر راج کرده باشد این انکدی را چهسان خواهد خورد ازین زیاده تر تصدیع
نیست طعامی که کسی نخورده باشد بخورد بدینکونه کریه کنان تا رامچندر رسیدند
دیدند که کویا دیوتا از آسمان فرود آمده و رام فی الحال اینان را دیده برخاسته
قدم همه مادران بوسید همکنان دست را بر فرق او کذاشته کرد چهره او پاک
نمودند بعده لچهمن در اقدام شان افتاد بدستور رام با او هم سلوک کردند
سیتا اقدام آنان بوسید همچنان با او هم بعمل آوردند پس ازان کوشلا کفت
دختر راجه بدیهه و سنه راجه دشرته و اهلیه رام چسان تصدیع بودن صحرا می کشد
روی مانند نیلوفر خشک شده است یا طلائی کرد آلوده است یا ماه در میغ پوشیده والده رام
همچنین کلمات میکفت درین اثنا رام در پای بشسٹ افتاد مثل اندر که در پای برهسپت
افتد بعده دیکران همچنان بعمل آورده نشستند و لشکریان مطابق درجه خود ها نشستند

सर्ग–११३

कौशल्या की वार्ता

उसके बाद वशिष्ठ के नेतृत्व में रामचन्द्र की माताएँ उनकी ओर आयीं। कौशल्या जब मन्दाकिनी नदी के निकट पहुँची तो सुमित्रा ने कहा यही उसका घर है। यहीं से तेरा पुत्र लक्ष्मण मेरे पुत्र के लिये पानी ले जाता है। कैकेयी के कारण तुम्हारा साधारण कार्यों में व्यस्त है। उसके बाद उत्तर की ओर घास देखी तो कहा यह अपने पिता को, जो इक्ष्वाकुओं का शासक था, रामचन्द्र ने खाने के लिये दिया है। जिसने सम्पूर्ण संसार में चारों ओर राज्य किया होगा वह यह कैसे खायेगा। इससे अधिक कष्टदायक और कोई बात नहीं है जो खाना किसी ने न खाया होगा, वह खायेगा। इसी प्रकार रोती हुई वह रामचन्द्र तक पहुँची। देखा कि मानों देवता आकाश से नीचे उतर आये हैं और राम ने तुरन्त उनको देखते ही उठकर अपनी सारी माताओं के पाँव छुए। सबने उनके सर पर हाथ फेरकर उनके मुख से मिट्टी साफ की। उसके बाद लक्ष्मण उनके चरणों में बैठ गये। राम के समान उन्होंने उनके साथ भी वही व्यवहार किया। सीता ने उनके चरण स्पर्श किये। वैसा ही सबने उनके साथ किया। फिर कौशल्या ने कहा ''राजा विदेह की पुत्री, राजा दशरथ की वधू और राम की पत्नी वन में रहने का कष्ट कैसे उठा रही है, नीलोफर के समान मुखड़ा मुरझा गया है। जैसे मिट्टी भरा सोना है या चन्द्रमा आकाश में छुपा हुआ है।'' राम की माता यही बातें कह रही थीं इसी मध्य राम वशिष्ठ के चरणों में गिर पड़े जैसे कि इन्द्र जो बृहस्पति के पाँव में पड़ते हैं। फिर सबने यही क्रिया दोहरायी और फिर बैठ गये तथा सैनिक भी अपने-अपने पदानुसार बैठे और कुछ खड़े

وایستادند بهرت دست بسته بخدمت رام ایستاده مانند اندر که بخدمت برهما
باشد درین اثنا شب شد بهرت و رام و لچهمن هر سه مانند سه آتش با جمیع لشکریان
نشسته زینت بخش آسمان بودند دریجا صورت چترکوٹ و برن شالا رام و سیتا و سیتا در
کوشلا و لچهمن در پای سومنتر افتاده و بهرت و شترگهن و سومنتر و بشست اده و سیتا کیکئی

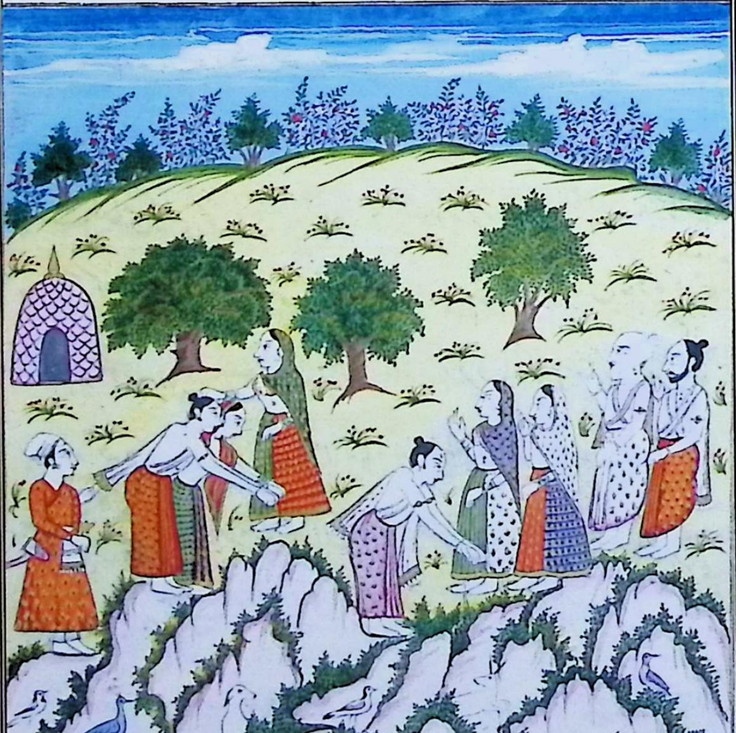

سرگفتار بهرت آن همه شب همه را در غم بگذشت چون صبح گشت آنهمه برادران

بردیا

रहे। भरत करबद्ध राम की सेवा में खड़े रहे जैसे कि इन्द्र ब्रह्मा की सेवा में तत्पर रहते हैं। इसी मध्य रात हो गयी। भरत, राम और लक्ष्मण तीनों तीन अग्नि की भांति सारे सैनिकों सहित बैठे हुए उस स्थान को सुन्दर बनाते रहे।

चित्रकूट और पर्णशाला का चित्र-राम और सीता कौशल्या के चरणों में और लक्ष्मण सुमित्रा के चरणों में पड़े हुए हैं। भरत, शत्रुघ्न, सुमित्रा और वशिष्ठ खड़े हैं कैकेयी सर झुकाए हुए हैं।

सर्ग-११४

भरत की वार्ता

सबकी वह रात्रि दुख में बीत गयी। जब सुबह हुई सारे भाईयों ने

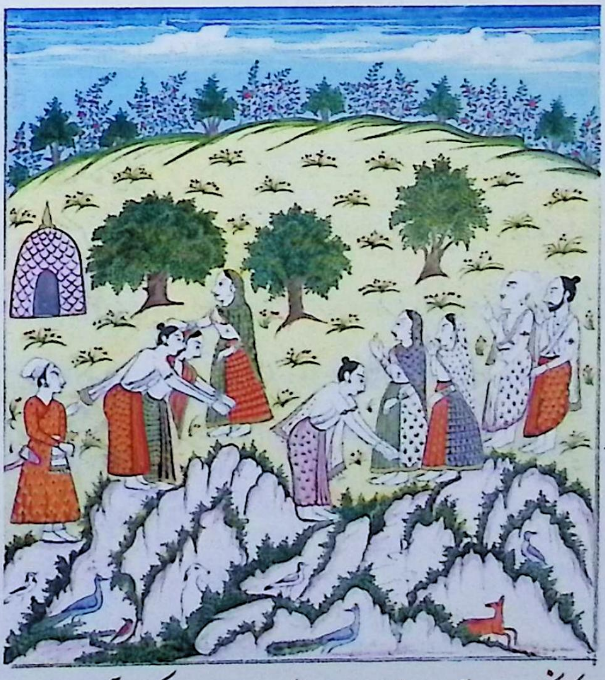

سرگفتار بهرت آن همه شب همه را در غم بگذشت چون صبح گشت آنهمه برادران

بر دریای هند اکنی رفته غسل نموده جپ کرده باز آمده بر مکان خود نشسته طریقه
خاموشی پیش گرفتند کسی حرف نمیزد تا که بهرت بدین آئین بسخن گو شد که راجه راست گو
مرا راج داده من بعیش و عشرت شما میدهم زیرا که بردارنده بار غیر تو کسی نیست من طریق تو
نتوانم رفت چنانچه خر طریق اسپ و هر جانور طریق گرگ چنانچه درخت بلی بیخ را کسی پایه کند
ونشو و نما ننماید و ثمره ندهد همچنان مثال من است بنا بر آن تو پرورش ما را در آن بکن
اینقدر گفته بهرت را از آنچندر شنیده در جواب گفت همه را مرگ نهایت است خواه
غریب خواه تونکر چنانچه بار پخته را ترس افتادن باشد همچنان هر پیدا شده را خوف مرگ است
خانه محکم و کلان چنانچه بعد مدتی خراب شود همچنان هر بسته رسن مرگ خراب شود
آدمی پیوسته با مرگ میرود و با مرگ میباشد اگرچه راه دور رود مرگ جدا نشود
راجه دشرته از افعال نیک و جگ های خود بسرگ رفت از حکم او مرا تا چهارده سال
ازو برم بصحرا باید بود و ازین وام گذاردن پدر مرا پیتر لوک خواهد شد تو خود بطور راجه
دشرته باش اینقدر سخن متضمن تابع داری حکم پدر از بهرت گفته خاموش شد
سرگ گفتار بهرت بار دیگر بهرت تامل نموده بحضور جمیع امرا و وزرا چنین گفت و بر من
خطائی که برای من کرده آنرا نخواستم تو عفو نموده بر من مهربان شو و من اندرین ادهرم
بسته ام والا این مادر عذاب کار را کشتمی من پسر دشرته شده چسان اینکار گناه را آمیز کنم

मन्दाकिनी नदी पर जाकर स्नान करके जाप किया और वापस आकर अपने स्थान पर बैठ गये। सब शान्त रहे, कोई बोल नहीं रहा था। फिर भरत इस प्रकार बोले कि सत्यवादी राजा ने मुझे राज्य दिया है। मैं वह आपको देता हूँ क्योंकि उसका बोझ उठाने वाला आपके अतिरिक्त और कोई नहीं है। मैं आपके मार्ग पर नहीं चल सकता हूँ। प्रत्येक प्राणी का जीवन बिताने का भिन्न रूप है। जिस प्रकार बिना जड़ के किसी वृक्ष को उखाड़ दें तो उसकी बाढ़ नहीं होती है और वह फल नहीं देता है वैसा ही मैं हूँ। अतः आप हम भाईयों का पालन कीजिये। भरत की यह बात सुनकर रामचन्द्र ने उत्तर में कहा कि ''अन्त में सबको मरना है चाहे निर्धन हो या धनवान। जिस पकार प्रत्येक वस्तु गिरती है उसी प्रकार प्रत्येक जन्म लेने वाला मृत्यु से डरता है और जिस प्रकार बड़ा और मजबूत महल कुछ समय बाद खराब हो जाता है। मनुष्य सदा मृत्यु के साथ जाता है और मृत्यु के साथ रहता है। यद्यपि मार्ग दूर जाता है लेकिन मृत्यु अलग नहीं होती है। राजा दशरथ अपने अच्छे कार्यों और संसार के कारण स्वर्ग में गये उनकी आज्ञा से मुझे चौदह वर्ष तक ईमानदारी के साथ वन में रहना होगा। पिता का यह ऋण चुकाने से मुझे पुत्र लोक प्राप्त होगा। तुम स्वयं राजा दशरथ के रूप में रहो। पिता के आज्ञा पालन के आधार पर इतनी बात भरत से कहकर चुप हो गये।

सर्ग-११५

भरत की वार्ता

भरत ने पुनः सोचकर समस्त धनवान व मंत्रियों की उपस्थिति में कहा ''मेरी माता ने मेरे लिये जो गलती की है वह मैं नहीं चाहता। आप क्षमा करके मुझ पर दयावान हो जाइये मैं धर्म की रस्सी से बंधा हुआ हूँ।'' अन्यथा मैं इस अपराधी माँ की हत्या कर देता। मैं दशरथ का पुत्र होकर यह पाप का कार्य कैसे कर सकता हूँ ?

و بجهتِ پاسِ خاطر عورت چگونه خلافِ دهرم تمام مردم از طمع نادان میشوند و طمع
و بیوقوفی بیخ گناهانست این گناه را ببخش اگر پدر و مادر بد کنند پسران نیک نمایند
لیکن مادر مرا و جمیع برادران و شهریان و نوکران همه را تو از گناه محافظت کن ازین کار
زشت والدهٔ من شهرت خواهد یافت تو چنان مکن نخست دهرم چهتریان این است
که بر مسند راج نشستن بعد از آن جگ کردن و محافظت رعایا کردن تو میخواهی
که تصدیع تمام دهرم کنی چرا هر چهار برن یعنی برهمن و چهتری و بیش و شودر را بدهرم
محافظت نموده بسرک رسی در هر چهار آشرم برهم چرج و گرهست و بان پرستهه و سنیاس
باشد گرهست یعنی قبیله داری بهتر است دهرم شاستر دانان چنین گویند تو این را
چرا میگذاری اگرچه از دانش و مکان و عمر از تو کم هستم اما بی تو زندگانی خود نمیخواهم
این راج بنجار را نگاهداشتن سزاواری مردم شهر و رعایا همین جا ترا راجتیک دهند
بنشست و غیره رتجان و منتریان ترا ابهشیک میکنند به اجودهیا برو و محافظت شهر کن
از گذاردن فرض پدر محافظت دوستان و خلایق نیکوست لهذا تو حراست اینها کن
فی الفور از راج دادن تو دوستان خوشوقت میشوند و دشمنان دور میگریزند
همین زمان اشک مادران بشو و پدر را از عذاب نگاهدار از سر ترا نمسکار میکنم
بر من مهربانی کن و اگر گفتهٔ مرا بخاطر نیاورده بصحرا خواهی رفت من هم پس پشت تو

और एक स्त्री के लिये मैं धर्म के विरुद्ध कोई काम कैसे करूँ ?लोग लालच में आकर मूर्खता कर बैठते हैं यही लालच व मूर्खता पाप की जड़ है। आप यह पाप क्षमा कर दीजिये यदि माता-पिता बुरा करते हैं तो लड़के भले रहते हैं। मेरी माता कैकेयी समस्त भाईयों, नगरवासियों और सेवकों सबको आप पाप से बचा लीजिये। इस बुरे कार्य से मेरी माता की प्रसिद्धि नष्ट होगी। आप ऐसा न कीजिये पहले क्षत्रियों का धर्म यह है कि सिंहासन पर बैठना। उसके बाद यज्ञ करना और प्रजा की रक्षा करना क्या आप चाह रहे हैं कि सबको कष्ट देकर धर्म करें क्योंकि आप चारों वर्ण अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के धर्म की रक्षा करके ही स्वर्ग में पहुँचेंगे। चारों आश्रम में ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास होता है। गृहस्थ अर्थात् घरदारी धर्म से श्रेष्ठ है। शास्त्र के ज्ञाता यही कहते हैं आप उसे क्यों छोड़ते हैं ?यद्यपि मैं बुद्धि कौशल स्थान पद और आयु में आपसे कम हूँ परन्तु मैं आपके बिना जीवित रहना नहीं चाहता। इस राज्य की रक्षा के योग्य आप ही हैं नगर के लोग और प्रजा इसी कारण से आपको राज्य दे रहे हैं। वशिष्ठ आदि रतजान और मंत्री आपको अभिषेक करते हैं। अयोध्या चलिये और नगर की रक्षा करिये। पिता का कर्तव्य पूरा करने से मित्रों और जीवधारियों की रक्षा उचित है। अतः आप उनकी रक्षा कीजिये। आपको राज्य देने से तत्काल मित्र प्रसन्न हो जायेंगे और शत्रु दूर भागेंगे। इसी समय माताओं के आँसू पोछिये और पिता के पाप से मुक्ति दिलाइये।

خواهم رفت ازین گفتار بهرت مردم جمع شدگان و مادران و غیرهم همه خوشنود
گشتند درینجا صورت چترکوت در پرگوتی رام و لچهمن و بهرت و ستر گهن و سومتر و بششت
و کوشلا و سومترا و کیکئی و سیتا بدفع خود نشسته و سه چهار مردم ایستاده و بهرت دست بر داشته

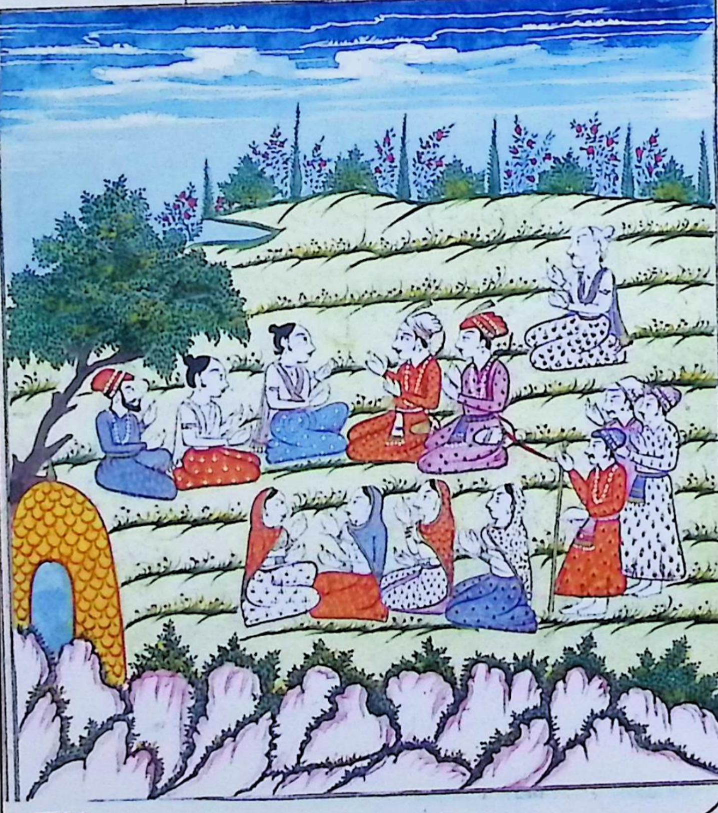

سر گفت رام بار دیگر رام به بهرت گفت تو بهمین کار لایق هستی که از تو شر تبه و کیکئی
پیدا آمده پیشتر هنگام از دواج پدرم با پدر والده تو گفته که پسران من محکوم کیکئی خواهند شد

मैं आपको नमस्कार करता हूँ मुझ पर दया कीजिये। यदि आप मेरी बात को न मानते हुए वन को जायेंगे, तो मैं भी आप के पीछे चलूंगा। भरत की इस बात से वहाँ पर एकत्र समस्त लोग और उनकी माताएं आदि बहुत प्रसन्न हुईं।

चित्रकूट और पर्णकुटी का चित्र- राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सुमंत्र, वशिष्ठ, कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी और सीता अपने बचाव में बैठी हैं, तीन चार लोग खड़े हैं। और भरत हाथ उठाकर वार्ता कर रहे हैं।

सर्ग-११६

राम की वार्ता

राम ने भरत से पुनः कहा तुम इसी कार्य के योग्य हो कि तुम दशरथ और कैकेयी से उत्पन्न हुए हो। बहुत समय पूर्व, विवाह के समय, मेरे पिता ने तुम्हारे नाना से कहा था कि मेरे पुत्र, युद्ध, सुर व असुर के युद्ध में कैकेयी के आधीन होंगे।

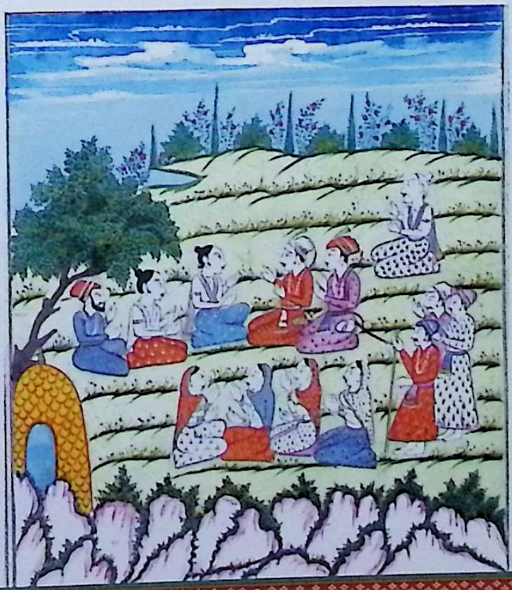

در جنگ سُروائُسُر راجه بوالده تو دو بر داده بود آنرا انجا طر آورده مادر تو که ریاضت کش است راج دادن بتو و رفتن من بصحرا درخواست نمود بنابران پدر مرا تا چهارده سال بصحرا فرستاده است لهذا من با لچهمن و سیتا در صحرا خواهم بود تو هم بموجب فرموده پدر راج کردن را سزاواری تو هم وام پدر گزار و محافظت مادر و پدر کن از تپسویان شنیده شد که پو نام نرک است پسر از ان محافظت پدر میکند بنابران پسر را پوتر گویند یعنی پونرک و تر محافظ و نگاهدارنده باشد باینقدر برهما گفته است او سعی در پیدا آوردن پسران بسیار باید کرد شاید که یکی هم از انها قابل و هنرمند باشد بنا برآن تو پاشتر کهن و لشکریان و شهریان و رعایا و غیرهم باجود بیار و راج کن من خود با لچهمن و سیتا با بهایم و جانوران در صحرا خواهم گذراند تو بشهر برو و من بدندک میروم تن ترا از شعاع آفتاب چتر سفید سایه نماید و مرا در صحرا سایه درختان خواهد نمود شترگهن رفیق تو و لچهمن یار من ما هر چهار پسر حکم پدر بجا می آریم

صورت چترکوت و مردمان ده نفر و در ینجا رام با بهرت دست برداشته سخن میگوید

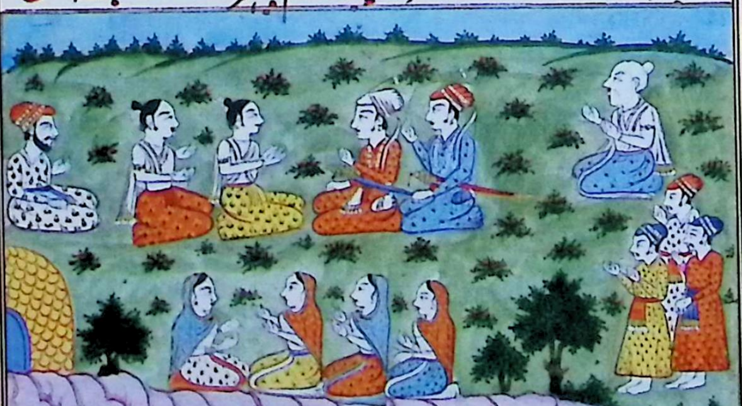

राजा ने तुम्हारी माता को दो वचन दिये थे उसी का विचार करते हुए तुम्हारी माता ने, जो तपस्वनी हैं, तुम्हें राज्य देने और मेरे वन जाने की प्रार्थना की है इसीलिये मेरे पिता ने मुझे चौदह वर्ष के लिये वन में भेजा है। अतः मैं लक्ष्मण और सीता के साथ वन में रहूंगा। तुम भी पिता के आदेशानुसार राज्य करने के योग्य हो तुम भी पिता का ऋण चुकाओ और माता-पिता की रक्षा करो। तपस्या करने वालों से सुना गया है कि पुन्नाम नरक है। लड़का उससे पिता की रक्षा करता है। इसीलिये लड़के को पुत्र कहते हैं अर्थात् पुत्र नाम नरक से रक्षा करने वाला होता है यही ब्रह्मा ने कहा है। इसलिए अधिक पुत्र उत्पन्न करने का प्रयास करना चाहिये। संभव है कि उनमें कोई योग्य और धर्मात्मा हो जाए। इस आधार पर तुम शत्रुघ्न, सेना-सेनानियों, नगरवासियों और प्रजा के साथ अयोध्या जाओ तथा राज्य करो। और मैं लक्ष्मण, सीता और वन के पशुओं के साथ रहूंगा। तुम नगर जाओ मैं डण्डक वन जा रहा हूँ। सफेद छत्र तुम्हारे शरीर पर सूर्य की किरणों से छाया करेगा और मेरे लिये वन में वृक्षों की छाया होगी। शत्रुघ्न तुम्हारा साथी है और लक्ष्मण मेरा मित्र हम चारों पुत्र पिता के आदेशों का पालन करेंगे।

चित्रकूट और दस व्यक्तियों के चित्र यहाँ राम भरत के साथ हाथ उठाकर वार्ता कर रहे हैं।

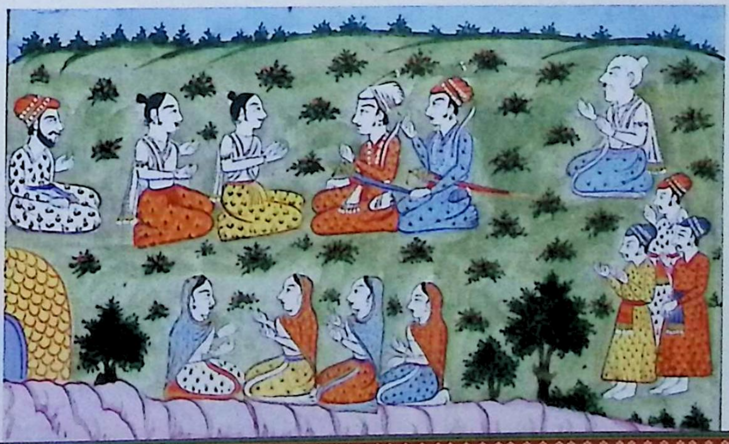

سرگ گفتار جاوالی جاوالی بطریق خاطر بهرت به رامچندر گفت ای راگهو اینچنین دانش
بیفایده مکن و مانند نادان اندیشه دیگر منما کدام کس کسی را برادر ست و کسی را با کسی چکار
یکی همیرود و دیگری همی آید مادر و پدر برای نفع خود اند چنانچه کسی رفته در دیهی منزل کند
و صبحی آنرا گذاشته برود همچنین مردم پدر و مادر و خانه و زر را میگذارند عاقلان
با اینها محبت نکنند خانهٔ آسایش را بواسطه گذاشتن لایق تو نیست و این
دولت اجودهیا که مانند راج اندرست مگذار نه ترا با دسرته نسبت بود نه او را
بتو او جدا تو جدا حالا آنچه لایق باشد بکن جائی که او رفته است ترا هم باید رفت
که طریق همین است عبث غم مخور چندین کسان که مرده اند غم آنان که
میخورد به بین که در دیوتا و پتر و این مردم غربا بعد مردن کدام ترجیح دارد
و هیچکس نی اگر یکی طعام خورد و در شکم دیگری برسد پس باید که خورده
برهمنان مرده بگیرد و با اینها سیر نشود پس این را دانایان برای افزایش
دان یعنی بخشش مقرر کرده اند جگ کن و دان کن و تپ را بگذار عقل
ناستکان در پیش کن معنی ناستک آنست که دنیا و عقبا را هیچ گوید لهذا آنچه
حاضر و نقد است این را بگیر و غایب گشته را ترک نما این راج و دولت که بی عارض
و مانع بتو رسیده بگیر این را رامچندر شنیده از لفظ ناستک قدری غضه بر جاوالی

सर्ग-११७

जाबालि की वार्ता

जाबालि ने भरत के लिये रामचन्द्र से कहाः हे ऋषियों ! इस प्रकार अहितकर बुद्धिमानी न कीजिये और अज्ञानी के समान किसी दूसरी बात की आशंका न कीजिये। कौन किसका भाई है और किसी को किसी से क्या काम है ?एक जाता है दूसरा आता है। माता-पिता अपने लाभ के लिये हैं, जैसे कि कोई जाकर किसी गांव में घर बनाता है और प्रातः उसको छोड़कर चला जाता है। इसी प्रकार माता- पिता घरबार छोड़ देते हैं। बुद्धिमान लोग उनसे प्रेम नहीं करते हैं। आराम वाला घर बिना कारण छोड़ना आपके सम्मान के अनुरूप नहीं है और अयोध्या की यह सम्पत्ति जो इन्द्र के राज्य के समान है मत छोड़िये। न आपको दशरथ से लगाव था और न उनको आपसे। वह अलग, आप अलग, अब जो उचित है वह कीजिये जहां वह गये हैं वहीं आपको भी जाना है, क्योंकि मार्ग वही है। शोक न कीजिये। इतने लोगों का दुख जो मृत्यु लोक जा चुके हैं, कौन डरता है और देखिये कि देवता और पितरों में उन निर्धन लोगों के मरने के बाद कौन वरीयता देता है, कोई नहीं है। यदि कोई खाना खाए और किसी दूसरे के पेट में पहुंचे तो चाहिये कि शव ब्राह्मणों का भोजन ले ले और उन लोगों से तृप्ति न हो बस उन दाताओं को दान अर्थात् दान दक्षिणा की वृद्धि के लिये नियुक्त किया गया है। यज्ञ कीजिये और दान कीजिये चिन्ता छोड़िये। नास्तिकों की बुद्धि को समक्ष रखिये और नास्तिक के अर्थ यह है कि दुनिया और परलोक को महत्वहीन कहें। अतः जो कुछ वर्तमान में उपलब्ध है उसे ले लीजिये और गायब और अनुपस्थित को छोड़ दीजिये। यह राज्य और सम्पत्ति बिना किसी बाधा के आप तक पहुँची है, ले लीजिये। रामचन्द्र ने यह सुनकर नास्तिक के शब्द से जाबालि पर थोड़ा क्रोधित होकर

کرده مذمت گفتار او نموده گفت بزرگان اسلاف و گذشتگان بسیار کار نیک کرده
به پرلوک سرگ رفته اند بنابران از تپ و هوم هیچ بهتر نیست این را دانسته دهرم میکنند
بی شعوری باشد که بسبب حرص بگذارد کرده پدر را چگونه مذمت نمایم و دهرم ناستکان
چگونه کنم چنانچه دزد و طامع زر همچنان ناستک که از و نیکوی بجا کسی بظهور نیاید و هم راحت نیاید
جاوالی را چندر از غصه سرخ چشم دیده بار دیگر بنرم زبانی گفت من گفتار ناستک نمیگویم
این را معاف کن این هم گو دکست که رائی برگردانیدن تو آمده پسند خاطر شو صورت چترکوت
و برن شالا رام و یازده نفر و رام با جاوالی دست بر داشته بنخی آمده و رام و جاوالی مقابل نشسته اند

و باقی بدستور

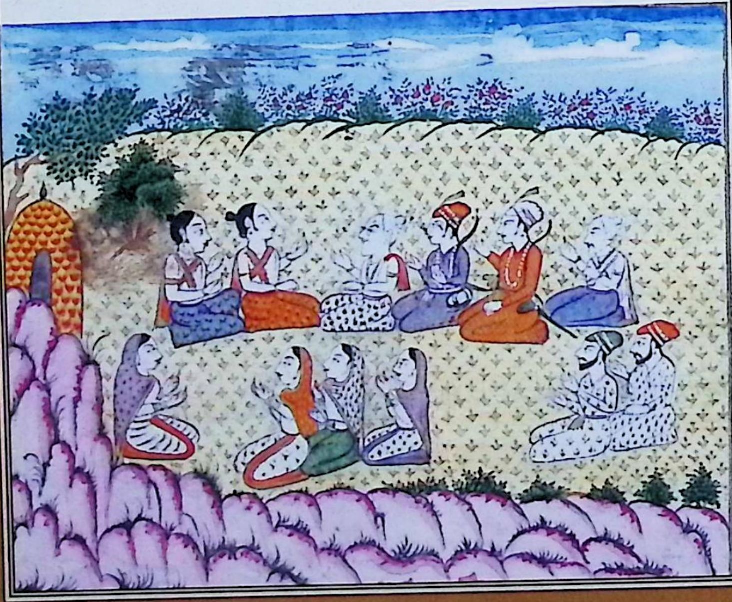

उसकी बात की निन्दा करते हुए कहा कि पूर्वज और पुरखे तथा अन्य बीते हुए लोग बहुत से अच्छे कार्य करके स्वर्ग लोक में गये हैं। इस आधार पर तपस्या और होम से श्रेष्ठ कोई वस्तु नहीं। इसको जानते हुए धर्म का पालन करते हैं। बुद्धिहीनता की बात होगी कि लालच के कारण उसे छोड़ दें तो मैं पिता के कर्मों की निन्दा कैसे कर सकता हूँ और नास्तिकों का धर्म कैसे अपनाऊँ जैसे चोर और सम्पत्ति का लालची होता है वैसे ही नास्तिक होता है कि उससे किसी का भला नहीं होता है और वह सुख भी नहीं पाता। जाबालि ने रामचन्द्र को क्रोध से आंखे लाल किये हुए देखकर नम्र भाव से पुनः कहा कि ''मैं नास्तिक की बात नहीं करता उसे क्षमा कर दीजिये। यह अभी बालक है जो आपको वापस ले चलने के लिये आया है आप अपनी इच्छानुसार कार्य कीजिये।''

चित्रकूट और पर्णशाला राम और ग्यारह व्यक्तियों का चित्र राम हाथ उठाकर जाबालि से वार्ता कर रहे हैं। राम और जाबालि आमने सामने बैठे हैं और शेष पूर्ववत् है।

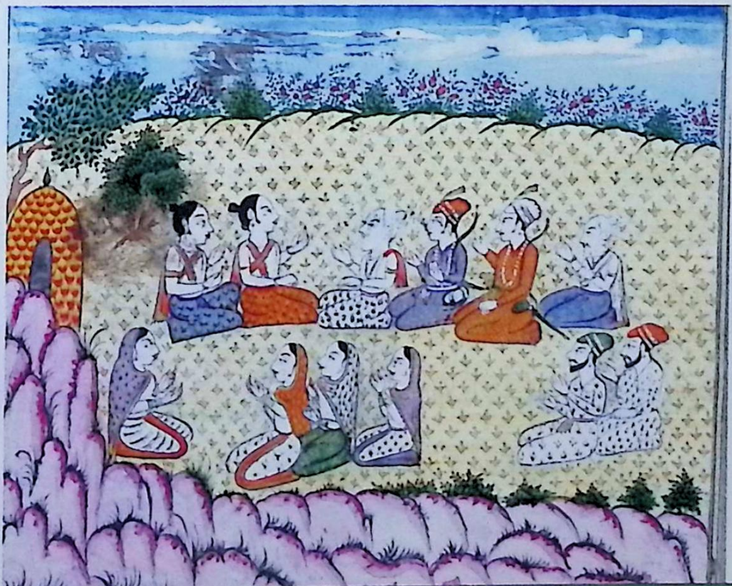

بسر غصه رام گفتهٔ جاوآلی را شنیده برآمخند راستی را مقدم داشته گفت تو
برائی خوشوقتی من میکوئی ناکردنی را مانند کردنی و بی نو وا را مانند و وازشت طریقان
و برگشتگان این را به پسندند کم اصل خواه اصیل هر که مغرور باشد و نیک و بد را نافهمیده
کند هر که راه و طور بزرگان خود گذاشته باشد او ناشایسته را شایسته میداند
و ناپاک را پاک و بی شعوری و بد خوئی را خوئی نیک و ادهرم را دهرم می بیند
اگر ناکردنی را چون کردنی بعمل آرم مردم مرا سفله قبائل گویند من چگونه دریا را گذاشته
آب در کف گیرم یعنی گفتهٔ پدر را گذاشته گفتهٔ بهرت چسان کنم مطابق طریقهٔ او
تمام رعایا او بعمل آرد راست یا دروغ هر طور که راجه پیش گیرد همان طور رعایا او
بگیرند در کبه ها و بیدها همه تا راستی اند راستی در ینجهان برادر ست و در انجهان
نیکی ده ست دهرم خوب ست اما بیخ دهرم صدق ست راستی خداوند جهانست
و در راستی همیشه دولت ست و دیوتا از راستی بزرگ اند بنا بران بر صدق مستقیم
باید شد و بخشش و هوم و تپ و جک همه از صدق ست یکی بود که تمام جهان را
پاک کند و یکی بود که تمام قبیله ناپاک سازد یکی بود که به نرک غرق کند یکی بود که
بسرگ رساند چرا از گفتهٔ پدر برگردم منکه محکوم راستی ام از طمع و بی شعوری پل
راستی شکنم و شنیده ام هر که کاذب بود او را دیوتا و پتر عزیز ندارند بنوعی

सर्ग-११८

राम का क्रोध

जाबालि की बात सुनकर रामचन्द्र ने सच्चाई को सर्वोपरि रखते हुए कहाः "तुम मुझे प्रसन्न करने के लिये यह कह रहे हो। तुम न करने वाले कार्य को करने योग्य बनाना चाहते हो। गलत मार्ग पर चलने वाले और भटके हुए लोग इसको अच्छा समझते हैं। नीच चाहे वह ऊंचे परिवार से ही हो, वह है जो अभिमानी हो और भले व बुरे की पहचान न रखता हो। जो व्यक्ति अपने पूर्वजों का ढंग छोड़ देता है वह अच्छी बात को बुरा जानता है। अपवित्र को पवित्र अज्ञानता और बुरे विचार को अच्छा और अधर्म को धर्म मानता है। यदि मैं न किये जाने वाले कार्य को करूं तो लोग मुझे नीच परिवार वाला कहेंगे। मैं कैसे नदी को छोड़कर जल अंजुली में लूं अर्थात् पिता का कहा हुआ छोड़कर भरत का कहा हुआ करूँ। उनके कथन के अनुसार उनकी समस्त प्रजा उसके अनुसार कार्य करे। सत्य या असत्य जो तरीका राजा अपनाता है प्रजा उसी के अनुसार करती है। ऋषि और शुद्ध सब सत्यता तक हैं सत्य इस संसार में भाई है। इस संसार में भलाई देने वाला है। धर्म अच्छा है परन्तु धर्म की जड़ सत्य है। सत्य संसार का राजा है और सत्य में सदैव धर्म और सम्मान है, सत्य के कारण ही देवता श्रेष्ठ हैं। इस आधार पर सत्य और सत्य मार्ग पर डटे रहना चाहिये और दान, होम, तपस्या व यज्ञ सब सत्य से ही सम्बन्ध रखते है। एक ऐसा होता है कि पूरे संसार को पवित्र करता है और एक ऐसा होता है कि पूरे परिवार को अपवित्र करता है और एक नरक में डूब जाता है और दूसरा स्वर्ग में पहुँचाता है। मैं पिता के आदेश से क्यों विरत होऊँ। मैं जो कि सत्य के अधीन हूँ। लालच अज्ञानता के कारण सत्य का पुल नहीं तोडूंगा। मैंने सुना है कि जो अत्याचारी व झूठा होता है।

درینجهان دولت میخواهند کسانیکه سرگ میخواهند میرسند آنچه تو گفتی این نادا نرا
خوب است من بودن جنگل از فرمان پدر که گرو بود نگذارم گفته بهرت کنم ازین عمل من کیکئی
خوشوقت میشود بنابران درصحرا بنج اشجار و ثمرات کلبار اخورده پترو دیوتا را سیر خواهم نمود
درینعالم که کرم هوم یعنی زمین کار کردن نست رسیده کردار نیک یا بد کرد آتش و باد و آفتاب از کردار نیک
بزرگ شده اند و راجه اندر دیوتا گشته بدیولوک رفته از تپ کلان هر طرف مهر که بستقیم اند و دهرم کنندگان درارت روان
ومطیع مرشدان واهسکان یعنی آزارندهگان دریحیا و پاک روان اینها همه ازمن ها لایق تعلیم اند و را سستی بخشنند
وکار ریاضت و مهربانی برجانداران و نیکو گفتن و پرستش برهمنان و دیوتا و اهنته یعنی گدایان اینها را
بید دانان راه سرگ گویند صورت چترکوت وآهو وغیره ومجموعه درختان شال و رام و جانکی و امقابل اند وده نفر دیگر

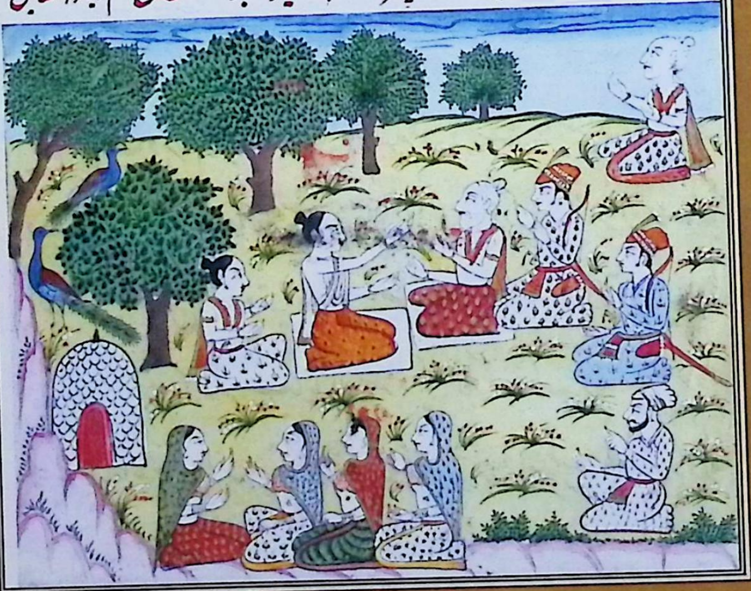

उसे देवता और सन्तान प्रिय नहीं रखते हैं। जिस प्रकार कि व्यक्ति इस संसार में सम्पत्ति चाहता है, जो लोग स्वर्ग चाहते हैं वहां पहुंच जाते हैं। जो कुछ तुमने कहा यह अज्ञानी के लिये बहुत अच्छा है। मैं वन में रहना और पिता का आदेश, जो गुरू थे, नहीं छोडूंगा। मैं भरत का कहा हुआ करूँ, मेरे इस कार्य से कैकेयी प्रसन्न होंगी। इस आधार पर मैं वन में वृक्षों की जड़ (कंद) और फल - फूल खाकर पित्रों व देवता को सन्तुष्ट करूँगा। इस संसार में जो कार्य करने के स्थान हैं, पहुँचकर अच्छे कार्य करने चाहियें। वायु, सूर्य अपने अच्छे कार्यों के कारण श्रेष्ठ या महान हुए हैं। और राजा इन्द्र देवता बनकर देव लोक में चले गये हैं, कठिन तपस्या से दिव्य लोक में महर्षि बसते हैं। धर्म का पालन करने वाले सत्यवादी बड़ों की बात मानने वाले और किसी जीवधारी को कष्ट न देने वाले तथा पवित्र रहने वाले यह सब मनु की ओर से सम्मान के योग्य हैं और दान करना, तपस्या करना, जीवधारियों पर कृपा करना, भली बात कहना, ब्राह्मणों और देवताओं की पूजा करना उन सबको वेद जानने वाले स्वर्ग का मार्ग कहते हैं

चित्रकूट और हिरन, शाल वृक्ष के समूह आदि का चित्र-राम और जाबालि आमने सामने बैठे हैं और अन्य दस व्यक्तियों का चित्र।

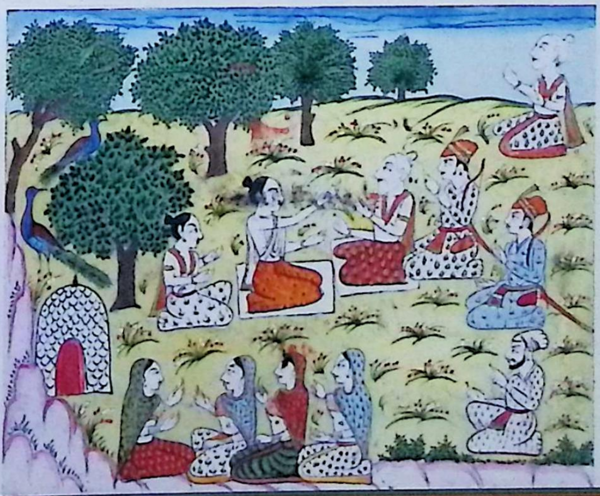

سرک گفتار بششت را مجید او در غصه دانسته بششت گفت جاوالی هم نیک و بد زمانه میدهد
برائی یا زبر و بن تو اینقدر گفته است طریق پیدایش اینجهان بشنو چون زمین در آب
غرق شد غیر از آب هیچ نماند بشن خود را بصورت خوک کرده زمین را بر دندان نهاده
برآورد برهما که از اکاس پیدا شده و همیشه و بیزوال است تمام جهان با مهر کبه پسرا
خود پیدا نمود و بشنو از برهما مریچ پیدا شد و از و کشب و از و افتاب و از برهما پری
دیگر شد که انگرا و از و برجیتا و از نسل افتاب و برجیتا منو پیدا شد و از منو اچهواکو که اول
راج اجودهیا نمود و پدرش دولت زمین باو بخشید و از و کچهی پسر شش و از و
کچهی و از و بان و لد گشت و از و ازن و پسرش پرتهو و پسر او ترشنکو که با کالبد خود
بر رفت و پسرش دهوندهمار و پسر او جوانشو و پسر او ماندهاتا و از و
سوسندهی و او را دو پسر شد دهرو سندهی و پرسین جیت و از کلان که دهرو سندهی نام داشت
بهرت پیدا شد و از و اسیت [illegible] ها هی تال جنگیده و شکست یافته بتهمنی
پیش آمده از ملک پدر بدر گردید با دو عورت خود به هماچل رفت چندی
مانده هلاک شد و عورت او پیش چمن بهارگو رکهه که بر کوه هماچل اقامت داشت
رجوع آورد از دعائی او سگر نام پسر او را شد لهمه را کنده ساگر نام گذاشته
است او را اسمنج پسر شد پدرش در زندگی خود او را به سبب بد کاری از شهر

सर्ग-११६

वशिष्ठ की वार्ता

रामचन्द्र को क्रोध में देखकर वशिष्ठ ने कहा ''जाबालि भी संसार का अच्छा बुरा जानता है। आपको वापस ले जाने के लिये उसने यह सब कहा है। इस संसार की उत्पत्ति की स्थिति सुनिये। जब पृथ्वी जल में डूब गयी तो जल के अतिरिक्त कुछ शेष नहीं बचा। विष्णु स्वयं को सुअर (वराह) का रूप धारण कर पृथ्वी को दांतों पर उठा लाये। ब्रह्मा जो आकाश से पैदा हुए हैं और सदा रहने वाले और कभी न मरने वाले हैं। सम्पूर्ण संसार अपने पुत्रों महर्षि के साथ उत्पन्न की। सुनों ब्रह्मा से एक दूसरा पुत्र उत्पन्न हुआ कि अनकराद व परचिन्ता से वपरचिन्ता वंश सूर्य से मनु उत्पन्न हुआ। और मनु से इक्ष्वाकु कि जिसने पहले अयोध्या पर शासन किया उनके पिता ने उन्हें धरती की सम्पत्ति दी और उनसे उनका पुत्र कुक्षि, उससे विकुक्षि और उससे बाज उत्पन्न हुआ। और उससे अनरण्य उसका पुत्र पृथु है। उसका पुत्र त्रिशंकु जो अपने शरीर के साथ स्वर्ग में चला गया है। उसका पुत्र धुंधुमार, उसका पुत्र युवनाश्व और उसका पुत्र मांधाता उससे सुसंधि उसके पुत्र उत्पन्न हुए। ध्रुवसंधि और प्रसेनजित और बड़े पुत्र से जिसका नाम धुर संधि था भरत उत्पन्न हुआ। और उससे आहस्य उससे राही तालजंध उससे शत्रुता करके उसको पिता के देश से बाहर कर दिया और अपनी पत्नी को लेकर हिमांचल पर चला गया और वहीं रहते हुए मर गया। उसकी पत्नी ने दून बहार गोरख की ओर जो हिमाचल पर्वत पर रहता था सम्पर्क किया उसके आशीर्वाद से सगर नामक उसके पुत्र हुआ जिसने समुद्र को खोदकर सागर नाम छोड़ा। उसके असमंज नामक पुत्र हुआ उसके पिता ने अपने जीवन में ही उसे उसके बुरे कार्यों के लिये नगर से बाहर निकाल दिया।

بدر کرد و پسر او انشومان و از و دلیپ و از و بهگیرتهه که گنگا را او از آسمان فرود ور
و پسر او کوکوستهه و از و رکهو و از و سودرس که بکلما کهه باو شهرت یافت و از و
کهنک و از و سودرشن و از و اگن برن و از و شیگهر و از و بنی و از و پرسوسرک و از و
انبریکهه و از و بهوکهه و از و جیاتی و از و نباهاک و پسرش اج و پسر او دشرتهه فرزند کلان او
ای رام تو هستی بنابران راج بزرگان خود بکن و گذاشتن را لایق نه سرگ گفتار
بشنت راچند اینقدر گفته بار دیگر بزبان راند که آدمی را سه گرو یعنی پیر میشوند
اچارج یعنی پروهت علم آموز و پدر و مادر لهذا از گفتهٔ من بیرون شدن لایق نه
پیر فرتوت و دهرماتما والده را به پرستش کردن سزاوار هستی گفته دیگران کرد
راه دیگر مرو چون گرو اینقدر گفت رام جواب داد انچه مادر و پدر فرمایند آنرا دایم
مردم بعمل می آرند و باید که ازان انحراف نکنند از روی تپ یعنی ریاضت و دان
یعنی بخشش و سنان یعنی [illegible]ن یعنی پارچه پوشانیدن و نیک گفتن
و پرورش کردن راجه دشرتهه که والد من است و پدر من انچه از و شنیده ام دروغ نخواهد شد
چون رامچند چنین گفت بهرت دلگیر شده بزبان راند که بسرعت تمام همین جا از گیاه
برائی من بستر بکنید نزدیک برادر بزرگ خود خواهم بود تا بر من مهربان شود
بیخورش و بی پناه و بی ننگ و دو ال مثل برهمن همین جا خواهم خفت تا بر من

सका पुत्र अंशुमान हुआ उससे दिलीप और उससे सौदास जिसने कल्मषपाद से प्रसिद्ध पाई। उससे शंखण उससे सुदर्शन, उससे अग्निवर्ण, उससे शीघ्रग उससे मरु, उससे प्रशुश्रुव, उससे अम्बरीष, उससे नहुष, उससे ययाति, उससे नाभाग, उसका पुत्र अज, उसका पुत्र दशरथ और उनके बड़े पुत्र ये राम तुम हो। इस आधार पर अपने पूर्वजों का राज्य कीजिये, उसे छोड़ना आपके लिए उचित नहीं।

सर्ग-१२०

रामचन्द्र से वशिष्ठ की वार्ता

इतना कहकर दोबारा जिभ्या पर यह बात लाए कि मनुष्य के तीन गुरू अर्थात् मार्गदर्शक होते हैं। आचार्य अर्थात् ज्ञान देने वाला, दूसरा पुरोहित और माता पिता। अतः मेरी बात से बाहर होना आपको शोभा नहीं देता। तुम इस मार्गदर्शक और धर्मात्मा की बात मानने के लिये बाध्य हो दूसरों की बात पर कार्य न करो, और दूसरों के मार्ग पर न चलो, जब गुरू ने कहा तो राम ने यह उत्तर दिया कि जो कुछ माता पिता कहते हैं, लोग सदा उसका पालन करते हैं। और चाहिए कि उसके विपरीत न करें। तपस्या, दान, नंगों को कपड़ा पहनाने और भली बात कहने तथा दूसरों का ध्यान रखने के कारण राजा दशरथ मेरे गुरू हैं और मेरे पिता भी, मैंने उनसे जो सुना है वह झूठ नहीं होगा। जब रामचन्द्र ने यह कहा भरत दुखी होकर अपने मुख पर यह शब्द लाए कि तुरन्त मेरे लिये यहीं पर घास फूस का बिछावन लगवाइये मैं आपके निकट रहूंगा ताकि मुझ पर कृपालु हों। मैं ब्राह्मण की भाँति बिना खाए पिये बिना शरण लिये और बिना फूटी कौड़ी के यहीं सोऊँगा ताकि वह

مهربان شود سومنتر بموجب فرموده بهرت کشن یعنی قسمی از گیاه آورده بحضور
رامچندر بر زمین بکسترد رام اینحال را دیده گفت برای چه اینجا تهیه بودن میکنی
این رت بگذار بالشکریان باجودهیا برو و باز رو بلشکریان کرده فرموده چرا نمیروید
لشکریان و شهریان و دیگران گفتند ما میدانیم که تو بموجب حکم پدر در صحرا اقامت میکنی
بنابران ترا ازینجا نتوانیم برد پس این را شنیده رام به بهرت گفت بشنو گفتار همه دهر ما نمایان
خوب باری تو برخیز و غسل کن بهرت برخاست و غسل کرد و گفت اینهمه نوکران و پیروان
و وزرا و جمله کسان میشنوند که من نه راج را دانم نه مادر را نه هیچکس را اگر تو خواه مخواه
از حکم پدر بصحرا میروی من تا چهارده سال با تو در جنگل خواهم بود رام این را شنیده
رو بجمیع مردم کرده گفت پدر من انچه در زندگی خود فرموده من و بهرت هر دو ازان
نتوانیم برگشت در بن فساد مکنید و منع منمائید انچه کیکئی گفت پدر من
آنرا باحسن وجوه بعمل آورد اما من میدانم که بهرت صاف دل است۔
بنابران شرط میکنم بعد انقضای ایام از صحرا باز آمده باین دهر ما تمام راجه زمین
خواهم شد حکم کیکئی بجا آورده دوام پدر را ادا کرده باز خواهم آمد نوعدیگر نخواهد شد

در اینجا صورت چترکوت و پربت لا و رام با بشست سخن میگوید
ونزدیک بشست بهرت نشسته و سومنتر بستر گیاه برای بهرت تیار میکند

मुझ पर कृपालु हों।

सुमंत्र भरत के कथन के अनुसार, घास की एक प्रकार, अर्थात कुश लाया और रामचन्द्र के सामने फैला दिया। यह स्थिति देखकर राम ने कहा किसलिये यहाँ रहने का प्रण कर रहे हो?यह प्रण छोड़ दो। सेना के साथ अयोध्या जाओ। फिर उन्होंने सेना की ओर मुँह करके कहा तुम लोग क्यों नहीं जाते हो?सैनिकों, नागरिकों और दूसरे लोगों ने कहा हम जानते हैं कि आप पिता के आदेशानुसार वन में रह रहे हैं। इस कारण हम आपको यहाँ से नहीं ले जा सकते। यह सुनकर राम ने भरत से कहा ''सुनो। सारे धर्मात्माओं की बात अच्छी है, अब उठो और स्नान करो। भरत उठे और स्नान किया और कहा ''यह नौकर चाकर वृद्ध और मंत्री सारे लोग सुन रहे हैं कि मैं न राज्य को जानता हूँ न मां को और न किसी अन्य को। यदि आप बेकार ही पिता के आदेश से वन में रहेंगे तो मैं भी चौदह वर्ष वन में रहूंगा।'' राम ने यह सुनकर अपना मुख सारे लोगों की ओर करके कहा, मेरे पिता ने अपने जीवन में जो कुछ कहा है मैं और भरत दोनों इससे नकार नहीं सकते। इसमें झगड़ा न करो और मना न करो। जो कुछ कैकेयी ने कहा मेरे पिता ने भली प्रकार उसका पालन किया। परन्तु मैं जानता हूँ कि भरत स्वच्छ हृदय का मनुष्य है इस आधार पर मैं आश्वासन देता हूँ कि वनवास काल पूर्ण हो जाने के पश्चात् मैं वन से वापस आकर इस धर्मात्मा के साथ पृथ्वी का राजा बनूंगा। मैं कैकेयी का आदेश पालन करके और पिता का ऋण चुकाकर वापस आऊँगा उसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है।''

चित्रकूट और पर्णशाला का चित्र- राम वशिष्ठ से बात कर रहे हैं वशिष्ठ के निकट भरत बैठे हैं और सुमंत्र भरत के लिये घास का बिछौना तैयार कर रहा है। इसी मध्य में वहाँ संयोगवश ब्राह्मण ऋषि और गन्धर्व आ गये।

درین اثنا اتفاقاً درانجا برهمنان ورکهه ها وکندهرپ ها

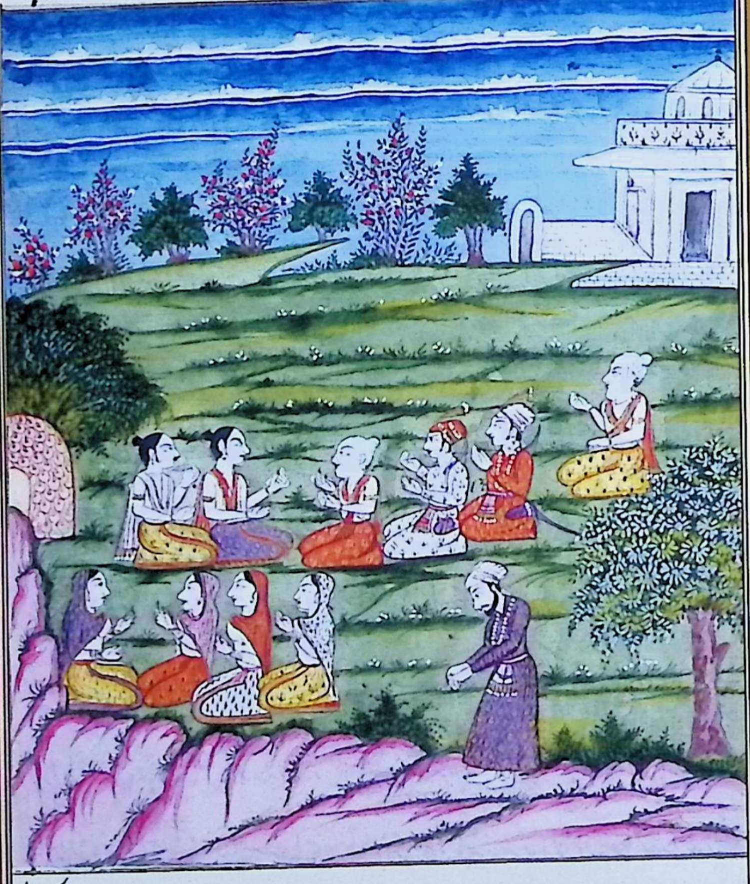

سرک آمدن دیوتا ورکهه ها درین اثنا اتفاقاً درانجا برهمنان ورکهه ها وکندهرپ ها وارد گردید
وگفت وشنود ایشان شنیده گفتند آفرین بر هر دو شما ای دهرماتمان گفتار شمایان
شنیده خوشوقت میشویم بعد ازان آنهمه که در دل آرزوی کهر دوکهن وراون

ودم

सर्ग-१२१

देवता और ऋषियों का आगमन

इसी मध्य में वहाँ संयोगवश ब्राह्मण ऋषि और गंधर्व आ गये। उन लोगों की वार्ता सुनी और कहा 'धन्य है आप दोनों पर ! ऐ धर्मात्माओं। हम आपकी बातें सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और उसके पश्चात् उन सबने जो हृदय में खर व दूषण और दस सरों वाले रावण की इच्छा रखते थे। भरत से कहा

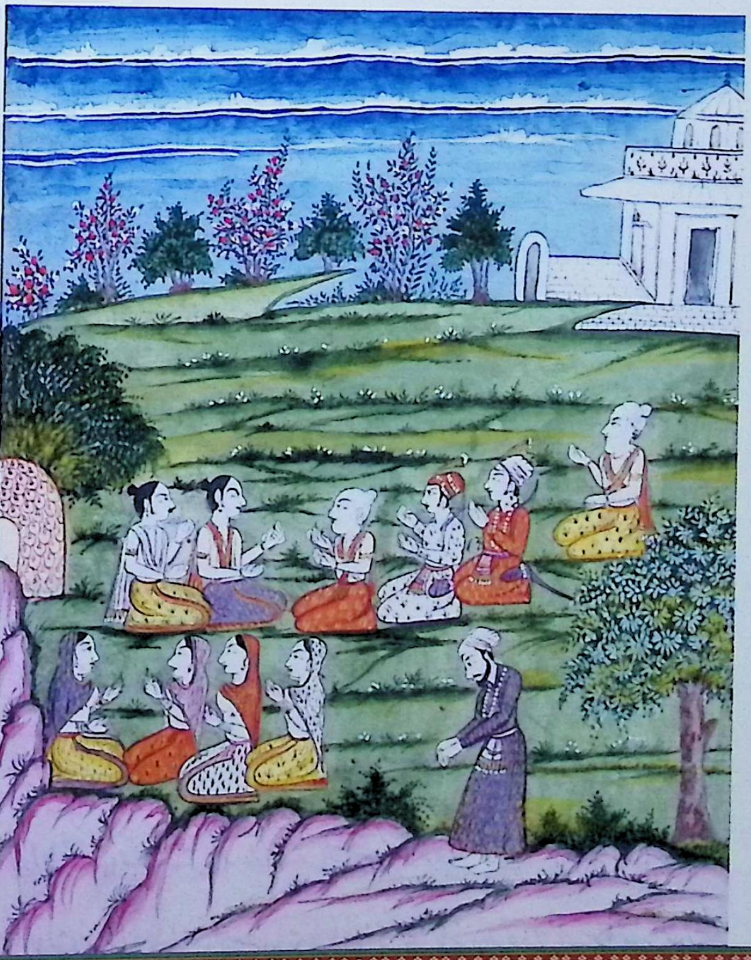

ده سر واشتند با بهرت گفتند البته رام را برگردان که این را کارهای دیویا
کردن است رام و لچهمن و سیتا بارکه ها با سودکی خواهند گذرانید اینقدر گفتند
و بمکانات خود رفتند و مردم این سخن را باحسن وجوه از خوشوقتی در خاطر گرفتند و بهرت
و دهرم بزرگان
این سخن را نیک فهمیده به رامچند گفت اگر راج دهرم و کل دهرم را نگاهداشت کرده
برکه خواسته با درین است میکنی من تنها این راج نتوانم کرد و شهریان و سپر وارثان را
راضی نتوانم داشت اقربا و سپاهیان و یاران و دوستان همه امید تو دارند چنانچه
خشک زمین امید ابر و تو طاقت محافظت داری این راج را حراست بکن بعد از آن
بهرت در پای برادر افتاد و رامچند بشیرین زبانی به بهرت گفت اینچنین عقل ترا دایم
مستقیم باد بالفعل هر آینه با وزرا و منتریان و امیران محافظت را نیزاوار هستی
اگر ماه روشنی بگذارد و هماچل کوه در زمین فرو رود و سمیر بهت خوبی خود ترک کند
من پرتگیا نگذارم تو محافظت آنجا بکن و از حرص و بیوقوفی که والدهٔ تو کرده بخاطر
نیاوری و مانند مادران با او بسر بری درین اثنا بششٹ گفت ای پسر یک پادوک یعنی
کهڑاون که نعلین چوبین باشد بهرت را بده که آن تمام لوک را حراست خواهد کرد
رام قبول کرده پادوک به بهرت داد و آن را بر فرق فیل خود رام را پردچهنا نمود
و گرو بششٹ وغیره را مطابق درجه پرستش کرده از یکدیگر جدا شدند و مادران او

''राम को अवश्य वापस ले जाओ क्योंकि यह देवताओं के करने के कार्य हैं। राम, लक्ष्मण और सीता ऋषि के साथ आराम से रहेंगे यह कहकर वह अपने-अपने स्थानों पर चले गये। लोगों ने इस बात को भली प्रकार सुनकर हृदय में प्रसन्नता का आभास किया। भरत ने यह बात अच्छी प्रकार समझकर रामचन्द्र से कहा कि यदि राज्य धर्म और कुल धर्म का विचार करते हुए उठिये कि आप वही कर रहे हैं जो मेरी माता चाहती थी। मैं अकेला यह शासन और राजपाट नहीं चला सकता और नागरिकों तथा सरदारों को प्रसन्न और सन्तुष्ट नहीं रख सकते। सम्बन्धी, सैनिक, चाहने वाले मित्र सब आपकी आस लगाये बैठे हैं, जैसे कि सूखी धरती बादल की आस लगाये होती है। आप राज्य करने की शक्ति रखते हैं इस राज्य की रक्षा कीजिये। उसके बाद भरत भाई के चरणों में पड़ गये रामचन्द्र ने नम्रता से भरत से कहा ''तुम्हारी बुद्धि हमेशा इसी प्रकार ठीक व स्थाई रहे अवश्य तुम सलाहकारों, अमीरों, मंत्रियों के साथ मिलकर रक्षा करने योग्य हो। यदि चन्द्रमा अपना प्रकाश छोड़ दे, हिमांचल पर्वत पृथ्वी पर उतर आये, और सुमेर पर्वत अपने गुण छोड़ दें तब भी मैं अपना प्रण नहीं छोड़ूँगा। तुम वहाँ की रक्षा करों और लालच व मूर्खता का कोई विचार जो तुम्हारी माता ने किया मन में न लाओ तथा माताओं के समान, उसके साथ व्यवहार करो।'' इस मध्य वशिष्ठ ने कहा ''ऐ पुत्र ! अपनी खड़ाऊँ भरत को दे दो कि वह समस्त लोक की रक्षा करेगी। राम ने स्वीकार करते हुए अपनी खड़ाऊँ भरत को दे दी और उसने अपने हाथों के सर पर रखते हुए राम को सम्मान दिया । गुरू वशिष्ठ आदि का उनके पद के अनुसार सम्मान किया और फिर एक दूसरे से विदा हुए उनकी माताएँ दुख के कारण कोई बात नहीं कह सकीं।

از غم هیچ حرف زدن نتوانستند رامچند همه را نمسکار کرده داخل پرن شالا شد

درینجا صورت چترکوت کوه و رام و سیتا در پرن شالا نشسته بطوریکه نمایند و لچهمن بر دروازه نشسته و بهرت و شترگهن بر فیل رخصت شده میروند و بر سر فیل پادوکا نهاده بسمت رام اجودهیا میروند و دیگر پروهتان و امیران بر اسپ و رتهه سوارند و دوله ها دران عقب ایشان

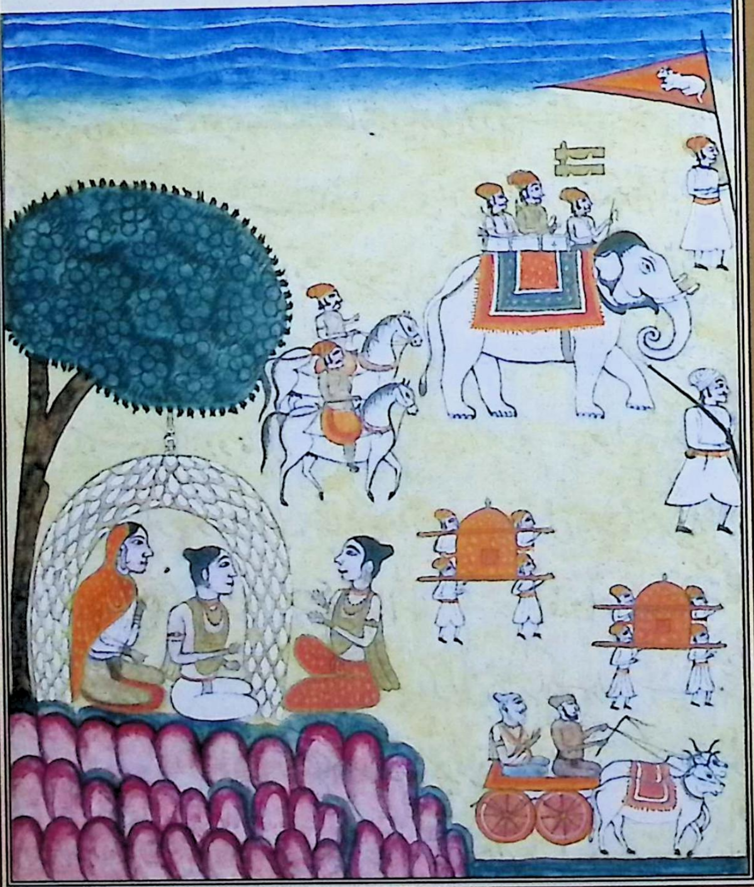

रामचन्द्र सबको नमस्कार करके अपनी पर्णशाला अर्थात् घास की कुटिया में प्रविष्ट हो गये।

चित्रकूट पर्वत का चित्र- राम और सीता पर्णशाला में बैठे दिखाई दे रहे हैं। लक्ष्मण द्वार पर बैठे हैं और भरत तथा शत्रुघ्न हाथी पर सवार विदा होकर जा रहे हैं, हाथी के सर पर राम की खड़ाऊ रखकर अयोध्या की ओर जा रहे हैं। दूसरे पुरोहित और अमीर घोड़ों पर सवार हैं तथा माताओं का डोला उनके पीछे है।

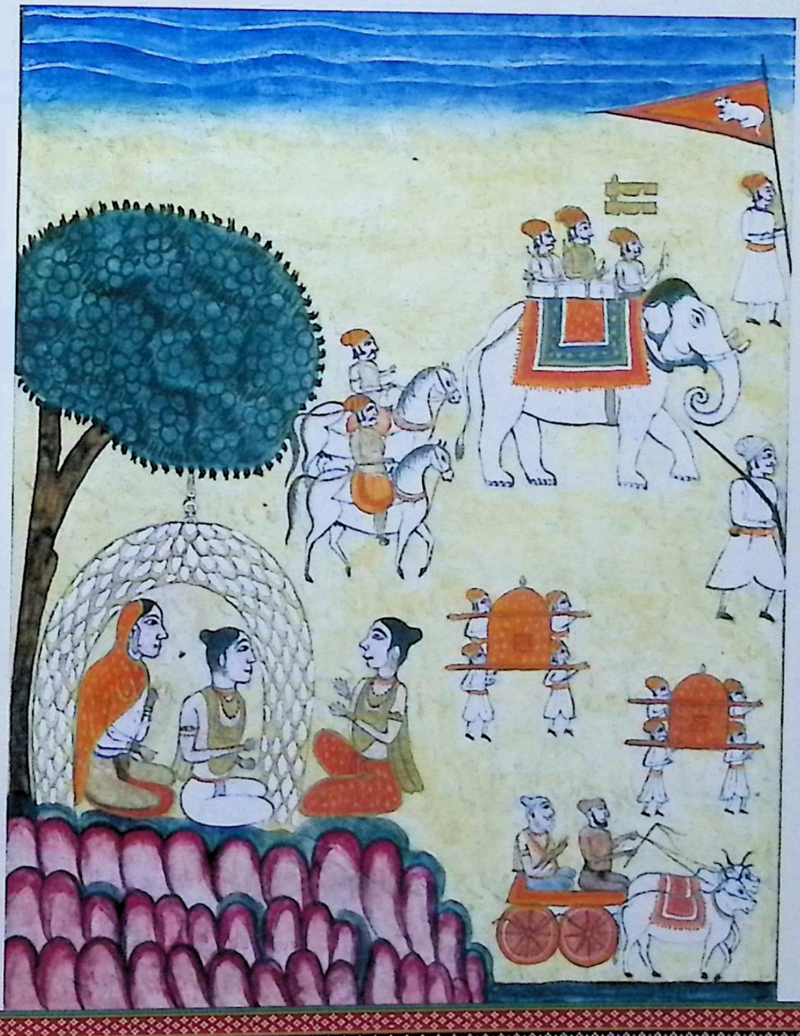

برگشتن بهرت با پادوکا یعنی نعلین چوبین رام را بر بسته با شترگهن بخرمی سوار
شده روانه گشت بشسٹ و بامدیو و جاوالی پیش پیش روان گشتند بر دریای
منداکنی رسیده چترکوٹ را پردچهنا کرد یعنی گرد او گشت سنکها و دهاتها در
او را تماشا کنان طی راه کرده نزدیک اشرم بهردواج رکهه رسید نزدیک آن مکان
از رتهه فرود آمد رکهه از بهجت پرسید با رام ملاقات کردید بهرت گفت ملازمت
نمودم و آمدن شهر درخواست کردم رام فرمود تا چهارده سال مرا حکم پدر بجا
باید آورد درین اثنا بشسٹ به رام گفت که پادوک منقش طلائی باین بدهید
که باجودهیا برود از گفت گرو واینک کهراون بمن داده باجودهیا میروم رکهه گفت
از همچو تو خوش خلق و دهرماتما اینچنین عجب نیست دشرتهه خود زنده است که مثل تو
پسر اوست بهرت دست بسته اجازت از رکهه گرفته قدمبوس گشته پردچهنا کرده
قد اکهنه
با شتربان و دیگران باجودهیا روان شد و بسواری افیال و فروس و اعرابها
و پالکیها لشکر عقب او روان گشت بعد طی راه بر کنار گنگا که آب پاک موج زن است رسید
از انهم عبور فرموده بسرنگ پور رسیده آنجا هم اقامت نکرده باجودهیا رسید
شهر را دیده از غم بسیار تهی گفت که شهر خالی و بیرونق و حسن رفته کاسد مینماید
زیرا که راجه دشرتهه بسرگ رفت و رامچندر راه صحرا گرفته در ینجا صورت سواری راجه بهرت

सर्ग-१२२

भरत की खड़ाऊँ के साथ वापसी

भरत राम की खड़ाऊँ सर पर रखकर शत्रुघ्न के साथ प्रसन्नतापूर्वक सवार होकर चल दिये। वशिष्ठ, वामदेव और जाबालि आगे-आगे चले। मन्दाकिनी नदी पर पहुँचकर चित्रकूट को सम्मान दिया अर्थात् उसके चारों ओर फेरे लगाये। वहाँ के पत्थरों और धातुओं को देखते हुए मार्ग तय करके भरद्वाज ऋषि के आश्रम के निकट पहुँचे, उस भवन के निकट रथ से नीचे उतरे। ऋषि ने प्रसन्नता से पूछा, राम से भेंट हुई। भरत ने कहा, हम उनके साथ रहे और नगर आने की विनती की। राम ने कहा चौदह वर्ष तक मुझे पिता की आज्ञा का पालन करना है। इसी मध्य वशिष्ठ ने राम से कहा, अपनी सोने की खड़ाऊँ उसे दे दो कि उसे अयोध्या ले जाए। गुरु के कहने से उन्होंने खड़ाऊँ मुझे दे दी जो मैं अयोध्या को ले जा रहा हूँ। भरत करबद्ध ऋषि से आज्ञा लेकर उनके चरण स्पर्श कर और उनकी परिक्रमा करके मंत्रियों तथा दूसरे लोगों के साथ अयोध्या की ओर चल दिये और हाथियों, घोड़ों एवं गधों और पालकी की सवारी पर उनकी सेना उनके पीछे चल दी। मार्ग तय करके गंगा नदी के किनारे पहुँचे जो पवित्र जल के साथ बह रही है। उसको पार कर श्रृंगवेरपुर पहुँचे लेकिन वहाँ भी न रुकते हुए अयोध्या पहुँच गये। नगर को देखकर दुख से रथवान से कहा, नगर खाली उदास और तेजहीन प्रतीत होता है क्योंकि राजा दशरथ स्वर्ग सिधार चुके हैं और रामचन्द्र वन चले गये हैं।

فیل سفید بانشان و عقب او با نهاو پیاده بندوقچی و نقارچی و پروهتان و امیران سوار اسپان
و ڈوله های مادران و بهرت و شترگهن بر رتهه سوارند بر سر بهرت نعلین طلائی رام نهاده

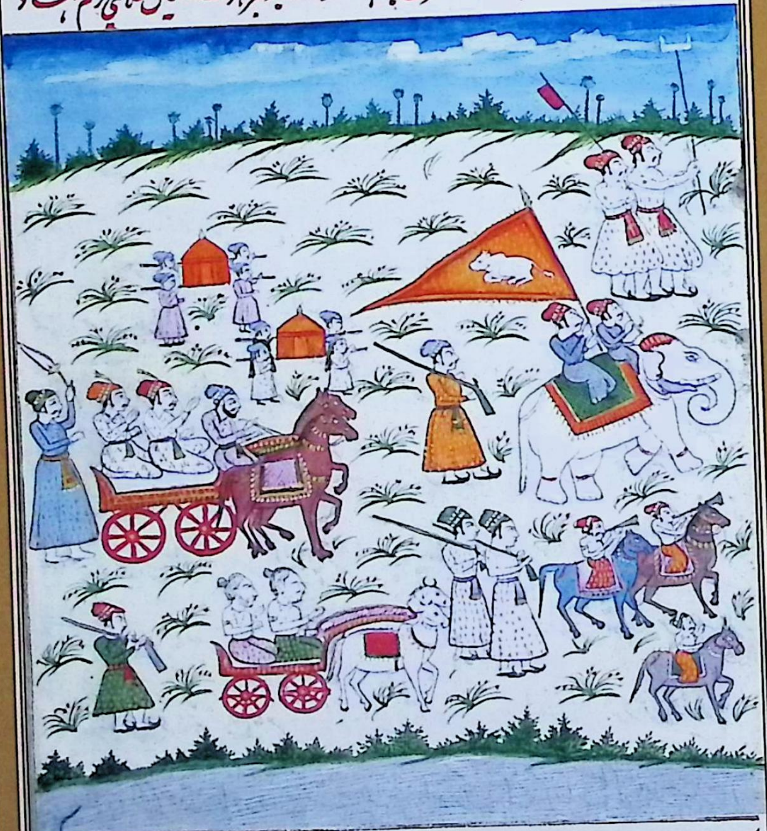

کسر آمدن بهرت بسواری رتهه از سرعت داخل شهر اجودهیا کردید شهر از تاریکی
مانند شب دیجور دید از گریه ها و بوم ها گرد آمیز است گویا راس قمر را الکلف گرفته [illegible]
و از آن روهنی در محاق شده گویا از سیلاب طیور بفلک همی رند گویا والی شکر گشته شده

राजा भरत की सवारी का चित्र- जो सफेद हाथी चिह्न के साथ है उसके पीछे पैदल, बन्दूकधारी, नक्कारची, पुरोहित, अमीर और घुड़सवार तथा माताओं की पालकी है। भरत और शत्रुघ्न रथ पर सवार हैं और भरत ने सर पर राम की सोने की खड़ाऊँ रख रखी है।

सर्ग-१२३

भरत का आगमन

भरत की सवारी से शीघ्रतापूर्वक नगर में प्रविष्ट हुए। नगर को अंधेरे के कारण अंधेरी रात्रि के समान देखा जो बिल्लियों और उल्लुओं के कारण धूलयुक्त हैं जैसे चन्द्रमा में ग्रहण लगा हो, उसके कारण नगर अंधेरे में डूब गया है। बाढ़ के कारण पक्षी आकाश पर ऐसे उड़ रहे हैं जैसे नगर का मालिक व हाकिम मार दिया गया है।

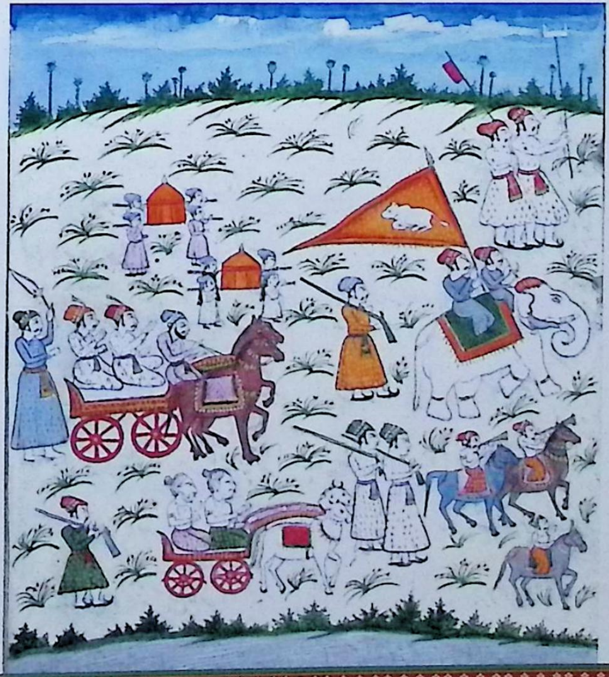

گویا دزبانی شور بشور آمده و گویا سوم پا و جنگ کنان جنگ را گذاشته اند و بیدی

نام بیرم گلدو که در میان جنگ استاده کنند

ازمیان رفته و کاوارا گویا دختر کاو چرانید کان رها کرده گویا آتش مشتعل شده

گویا یکایک بعد آخر شدن پون کوکب از آسمان افتاده گویا بهر مرکه برکلب آنشسته

واز دا و اکن یعنی آتش صحرا سوز دو گویا برهمنان از رکم شده و گویا ماه و انجم زیر ابر آمده

گویا فیلان را خرطوم شکسته گویا سلاحها از چرخ می بارد و گویا آب باوری چاه

که دران ماهی و کشف و نیلوفرها بودند خشک گشته گویا مردم شادی ترک کرده از غم

میطپند گویا از میغ نیلگون خورشید ناپدید شده این را بهرت دیده بسیار تهی گفت

چرا خورمی و شادی از اجودهیا رفته بیشتر که سرود میشنیدم نمیشنوم و مردم مست شراب نمینیند و در شاهراه

نمیکردند واز شراب برنج فیلان از بوی اگرو دهوپ بجوش آمده چرا نمیدوند واسپان که بابانگ بیرمیدند چرا

نمیجهند عرض که بعد این گفتار داخل محل پدر شد آنرا مانند غار کوه خالی از شیر دید دریجا صورت شهر اجودهیا و بهرت وغیره

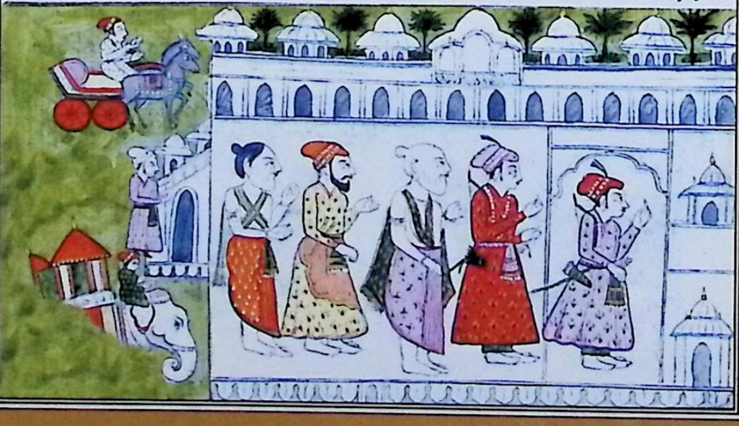

जैसे सरयू नदी में हलचल मची है और तूफान आया हुआ है और जैसे सोम पाव ने यज्ञ करते हुए यज्ञ को छोड़ दिया है और कोई वेद बीच में से निकल गया है। गायों को जैसे गायें चराने वालों की पुत्री ने छोड़ दिया है, जैसे आग भड़क रही है। जैसे रात्रि समाप्त हो जाने के पश्चात् अचानक कोई तारा आकाश से गिर पड़ा है, जैसे कि बरक नहर पुष्प पर बैठ गयी है और इसके कारण से वन में आग लगी हुई है, जैसे ब्राह्मणों की सम्पत्ति कम हो गयी है, और जैसे चन्द्रमा तारे बादलों के नीचे आ गये हैं। जैसे हाथियों की सूंड टूट गयी है जैसे आकाश से हथियारों की वर्षा हो रही है, जैसे बावली कुएँ का पानी जिसमें मछलियां और नीलोफर थे सूख गया है। जैसे लोग प्रसन्नता व उल्लास छोड़कर दुख से तड़प रहे हैं, जैसे आकाश से सूर्य खो गया है। उसको भरत ने देखकर रथवान से कहा ''प्रसन्नता और उल्लास क्यों अयोध्या से समाप्त हो गया है ?पहले मैं जो गायन सुनता था अब नहीं सुनूंगा?लोग अब मदिरा से मस्त नहीं है और सड़कों पर नहीं घूम रहे हैं। सुगन्धित मदिरा से हाथी इनकी गंध से क्यों नहीं उत्साह में आकर दौड़ते हैं और घोड़े जो ध्वनि के साथ छलांगें मारा करते थे, अब क्यों नहीं मारते हैं। अन्ततः इस वार्तालाप के पश्चात् वह पिता के महल में प्रविष्ट हुए। उसको सिंह की खाली गुफा के समान देखा।

अयोध्या शहर और भरत आदि का चित्र।

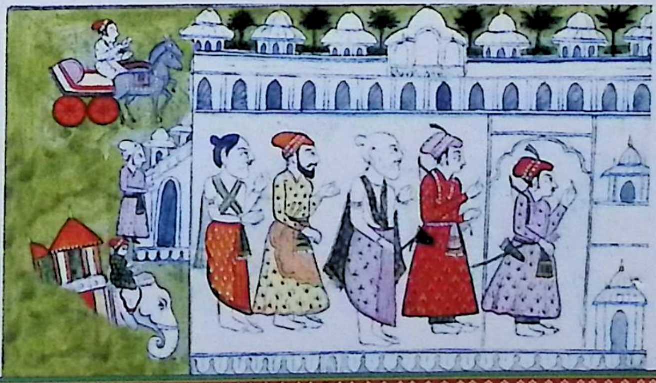

سرگ اقامت به نندگرام بهرت با والده خود ها چون داخل اجودهیا شد
مادران از در انجا بغم گذاشته واز غم طپیده با بششٹ و غیره مرشدان و گروها
گفت به نندگرام دیه با منتریان خواهم رفت وآنجا بفراق رام خواهم گذراند با امید آمدن
برادر کلان خود خواهم بود این را شنیده بششٹ و دیگر منتریان گفتند ای عاشق
برادر کلان همین سزاوار تست واین طریق بزرگانه کدام کس نخواهد پسندید بهرت این جواب
از همگنان شنیده بسیار تهی فرمود که رتهه را مهیا ساخته بیا چون آمد خود با شترگهن سوار گردیده
با برهمنان و دیگران روان شده به نندگرام رسید وانجا از رتهه فرود آمده با پیران
و مرشدان و دیگران گفت این راج را برادرم بطریق امانت داده است و به سبب این
پادوک منقش طلای رام همه خوب خواهد شد تا آمدن آن رگهوناتهه حراست خواهم کرد
باز گفت کی آن پا را درین پادوک خواهم دید و کی این بار از دوش خود بدوش رام نهاد
محکوم او شوم و بحضور مردم رام را ابهشیک راج نموده هر چهار برادران خوشوقت خواهم کرد
بدینگونه سخنان غم انگیز گفته در نندگرام اقامت نمود و پیوسته اوصاف رام بزبان داشته
و بطریق منیشران جتا و بکل پوشید با لشکریان و رعایا با امید آمدن رام میگذرانید و آن
پادوک را مجند ر نگاهداشته همیشه چتر بر آن داشته چامر میراند و خلایق را به بهگت رام
و هر روز پرستش پادوک نموده اقسام تزک و تجمل برآنها نمایش می آورد

تمام شد اجودهیا کاند بخط بنده درگاه سید میر شاه :

सर्ग-१२४

नन्दि ग्राम में निवास

भरत अब अपनी माताओं के साथ अयोध्या में प्रविष्ठ हुए तो माताओं को वहां शोक में छोड़कर और शोकाकुल होकर वशिष्ठ आदि वरिष्ठों तथा गुरुओं आदि से कहा ''मैं मंत्रियों के साथ नन्दि ग्राम देहात में जाऊँगा और वहां राम के वियोग में जीवन के दिन व्यतीत करूंगा। बड़े भाई के आने की आशा में वहाँ रहूँगा। यह सुनकर वशिष्ठ और दूसरे मंत्रियों ने कहा ''ऐ अपने बड़े भाई के प्रेमी। आपको यही उचित है और पूर्वजों की यह रीति कोई नहीं अपनाता है। भरत ने यह उत्तर सुनकर रथवान से कहा, कि रथ तैयार करके लाओ जब रथ आ गया तो शत्रुघ्न के साथ सवार होकर ब्राह्मण और अन्य व्यक्तियों के समूह में चले और नन्दि ग्राम पहुँचे। वहां रथ से उतरकर पीरों, मुरशिदों और अन्य से कहा ''भाई ने यह राज्य मुझे धरोहर के रूप में दिया है, और राम की इस रत्न जड़ित सोने की खड़ाऊँ के कारण सब अच्छा होगा। उस रघुनाथ के आगमन तक मैं उसकी रक्षा करूंगा फिर उन्होंने कहा कि कब मैं उस चरणों को इस खड़ाऊँ में देखूंगा। और कब मैं यह बोझ अपने कंधे से उतारकर राम के कंधे पर रखकर उनके अधीन बनूंगा। और कब मैं लोगों के सामने राम को राज्य का मालिक व उत्तराधिकारी बनाकर चारों वर्ण को प्रसन्न करूंगा। इस प्रकार की दुख भरी बातें करते हुए नन्दिग्राम में निवास किया और सदैव राम के गुण उनकी जिह्वा पर रहते थे। मुनीश्वरों की भांति जटा रखकर सेना और प्रजा सहित राम के आगमन की आशा में जीवन व्यतीत करते थे। राम की इस खड़ाऊँ को सुरक्षित करके सदैव इस पर छत्र की छाया रखते थे और पंखा झलते थे और प्रजा जनों को सदा राम का भक्त बनाते और प्रतिदिन इस खड़ाऊँ की पूजा करके उसकी साज सज्जा के साथ प्रचार करते।

अयोध्याकांड सैय्यद अमीर शाह की लेखनी द्वारा सम्पूर्ण हुई।

درینجا صورت دیوان عام چهل ستون و راجه بهرت بر سنگهاسن طلای نعلین چوبی رام نهاده و
و بر آن چتر نهاده چامر میکند و نزدیک بطرف دوم شترگهن نشسته و پروهتان هم ایران
ایستاده و گرد بگرد دهوجا نهاده و صورت نقار خانه و نقارچیان

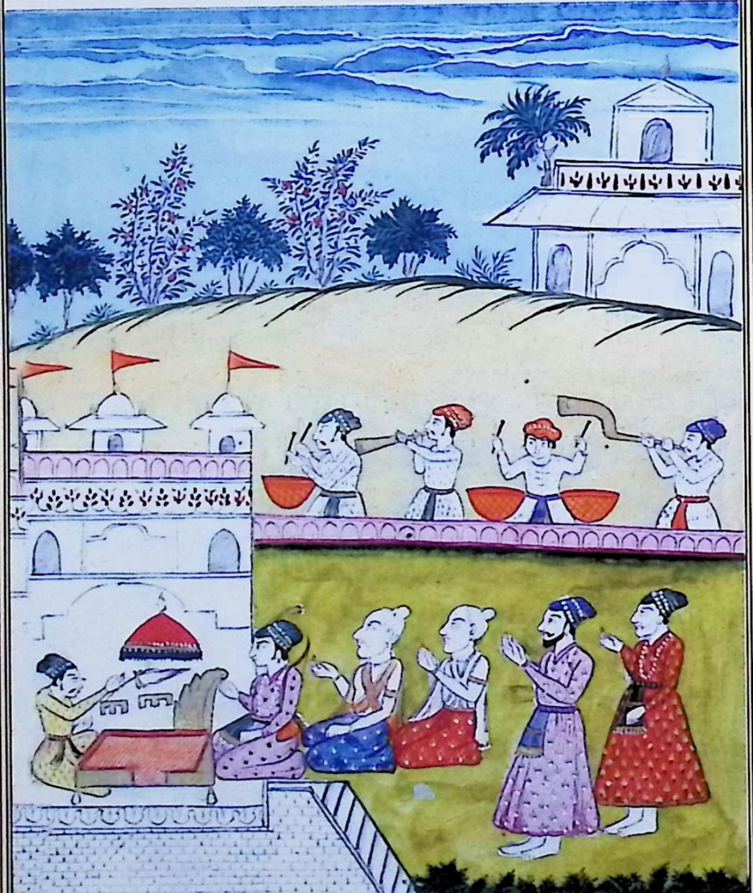

चालीस खंभों वाले राज्य भवन का चित्र भरत ने राम की सोने की खड़ाऊँ सिंहासन पर रखी है और उस पर छत्र है। तथा चामर कर रहे हैं और दूसरी ओर निकट ही शत्रुघ्न बैठे हुए हैं पुरोहित व अमीर खड़े हैं। नक्कार खाना और नक्कारचियों का चित्र।

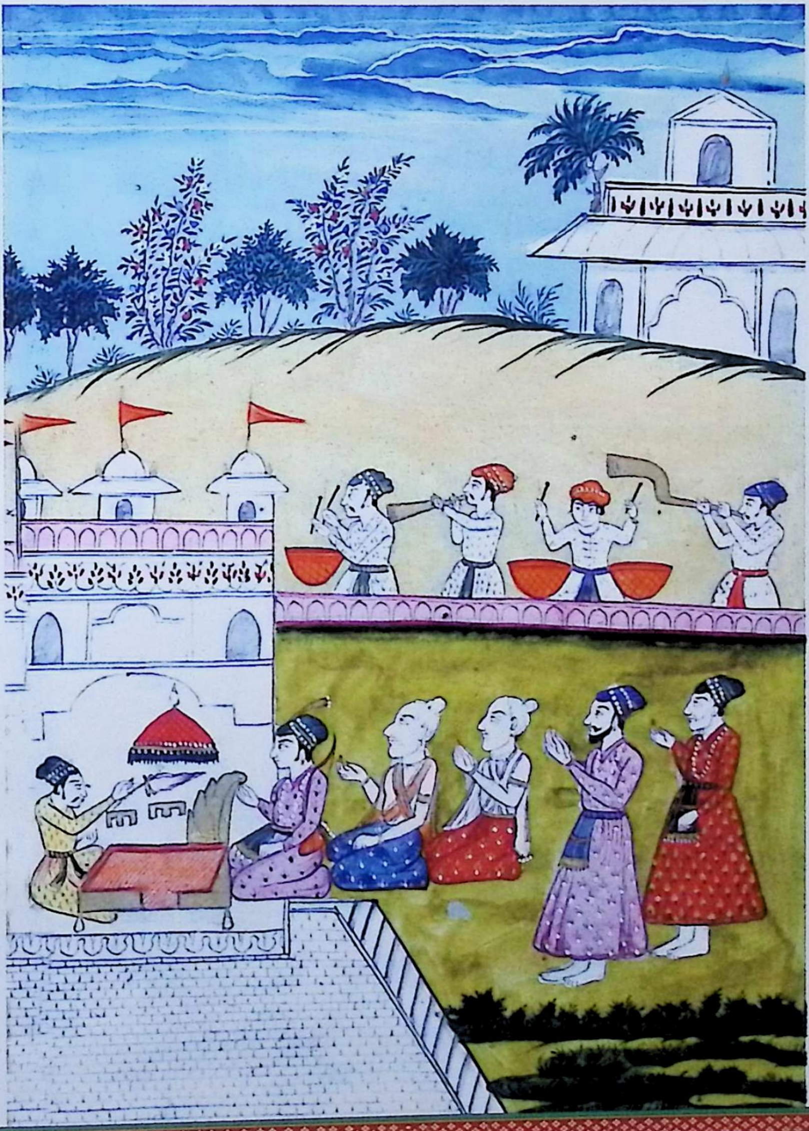

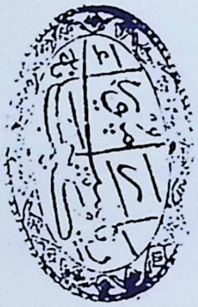

मूल पाण्डुलिपि में यह पृष्ठ (३५२) सादा है।

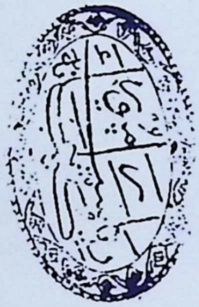

मूल पाण्डुलिपि में यह पृष्ठ (३५२) सादा है।

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

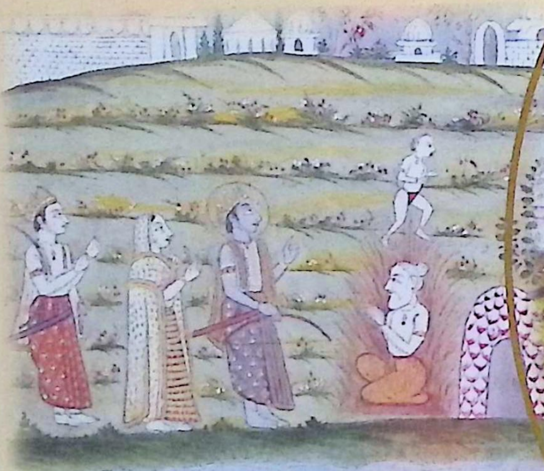

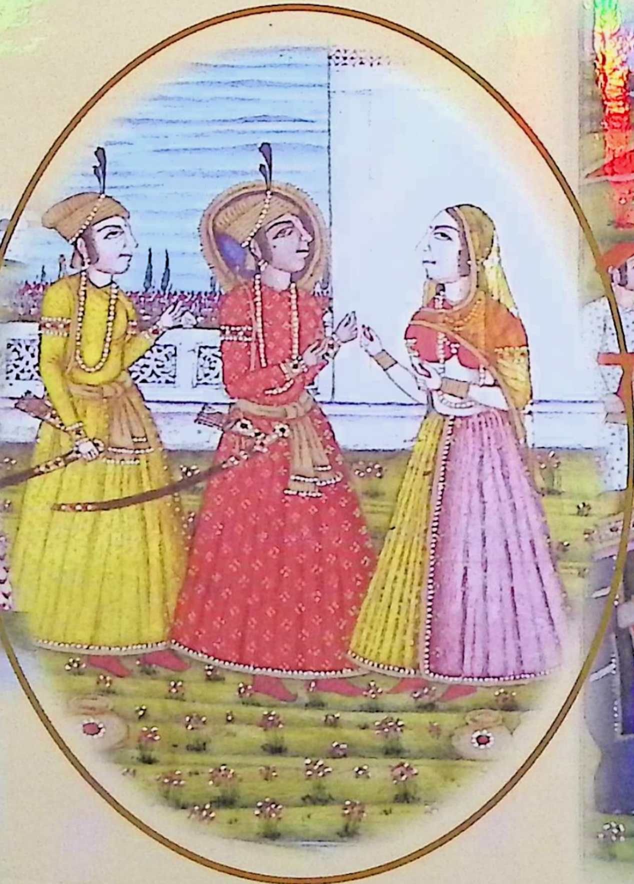

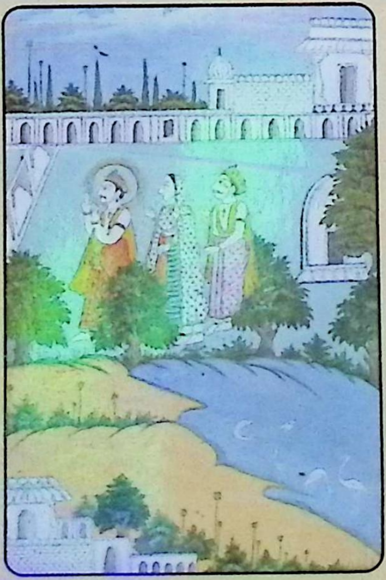

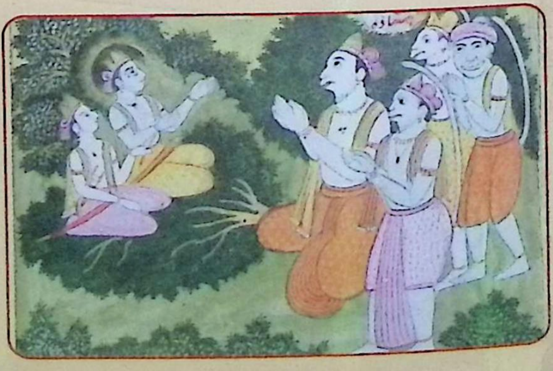

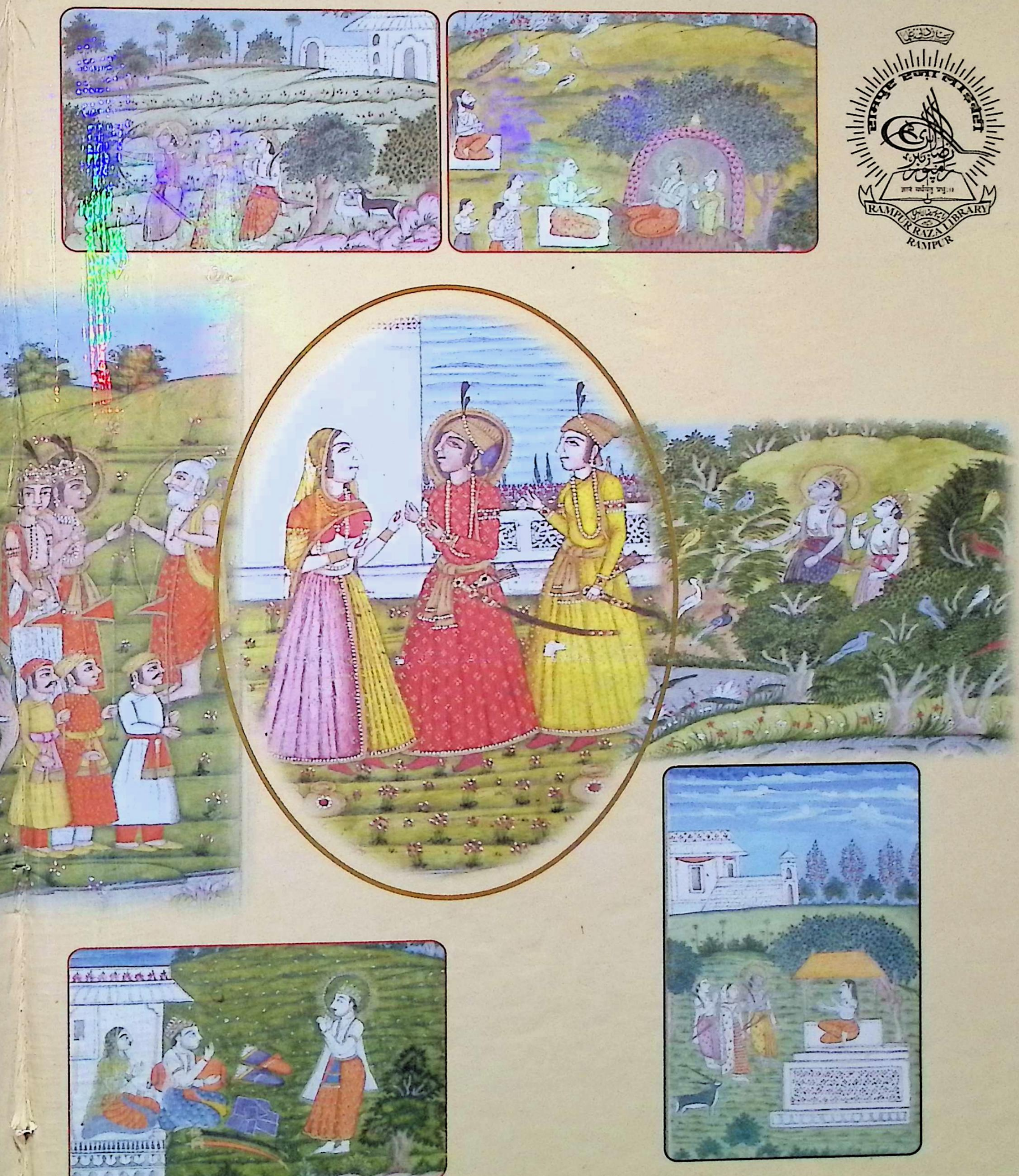

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

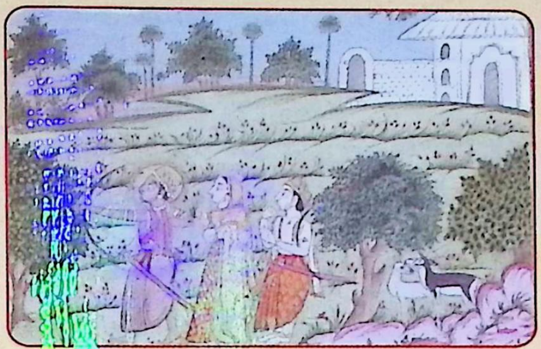

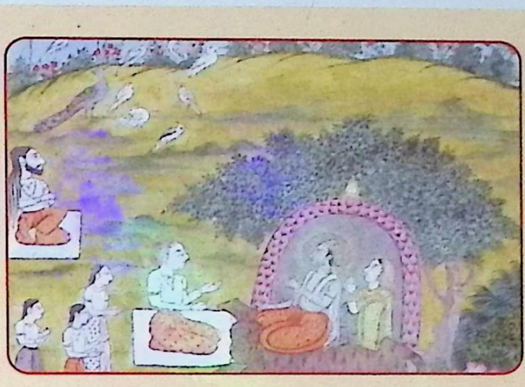

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी

RAMPUR RAZA LIBRARY

RAMPUR

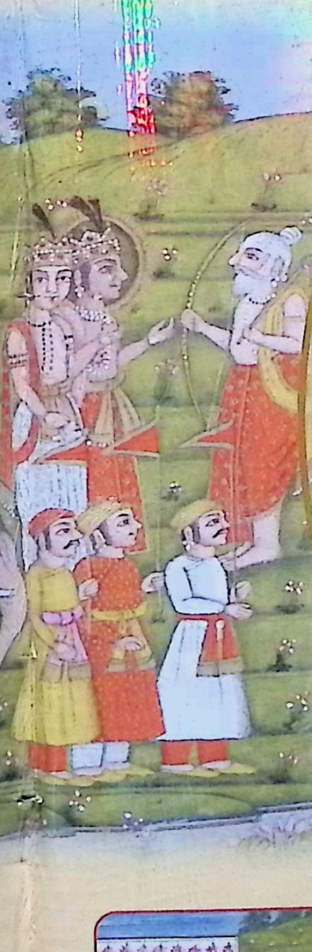

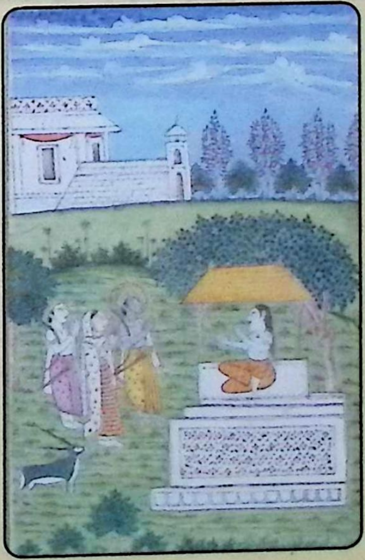

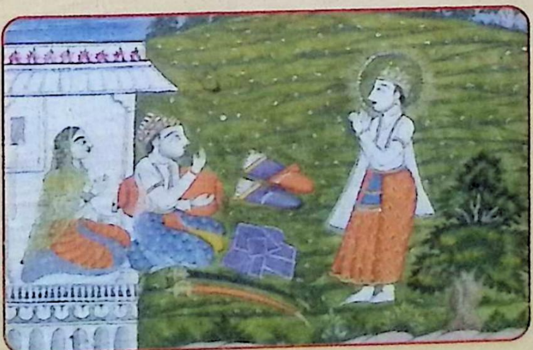

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

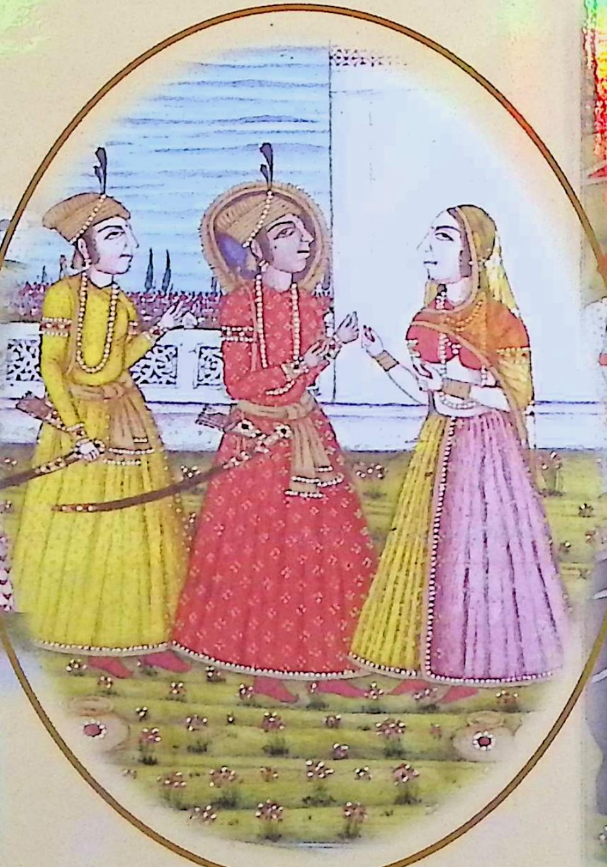

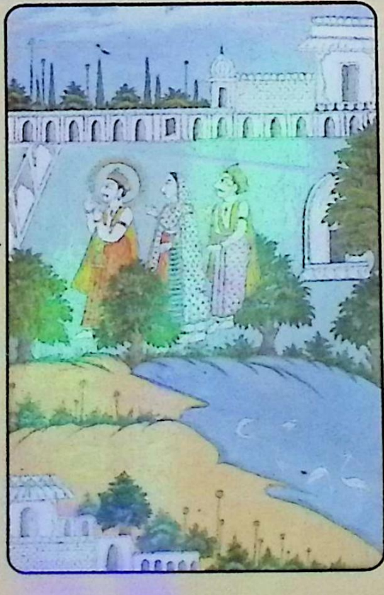

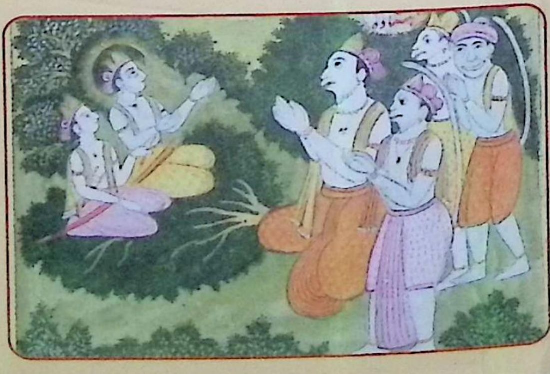

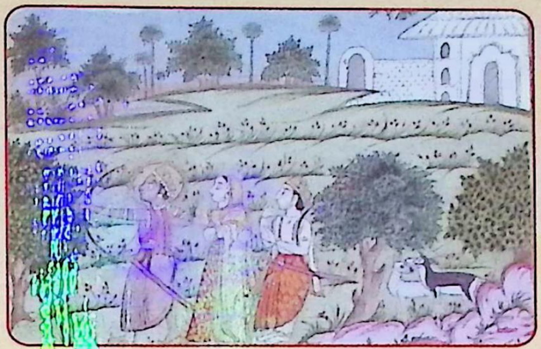

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

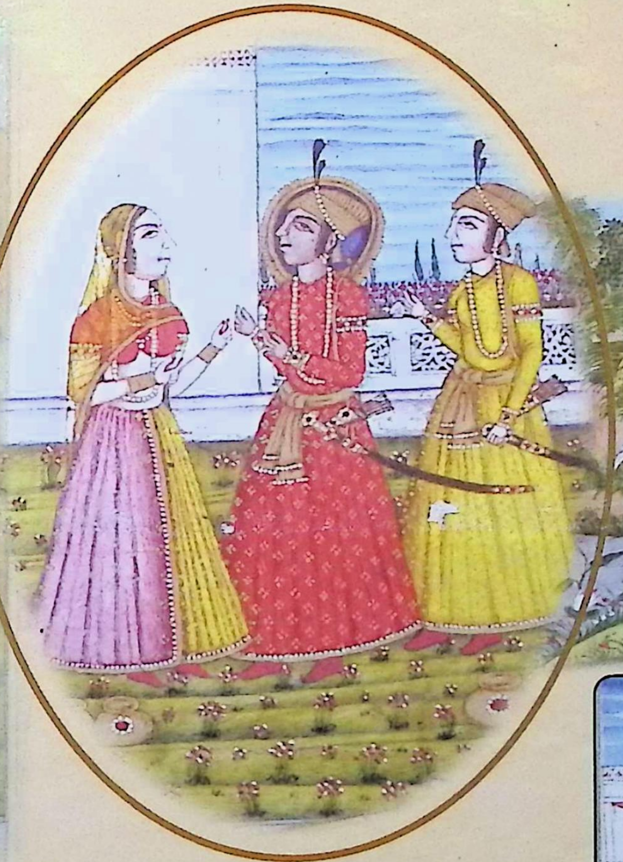

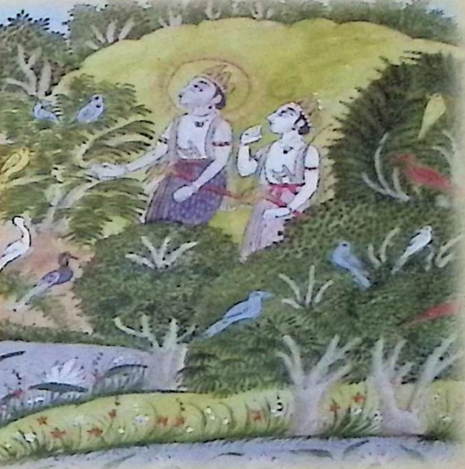

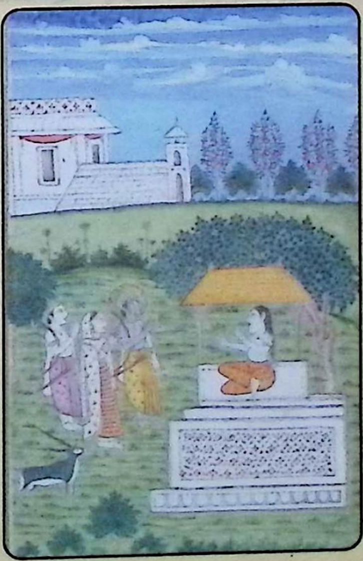

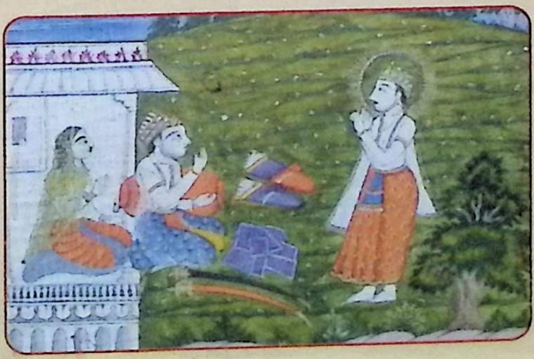

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

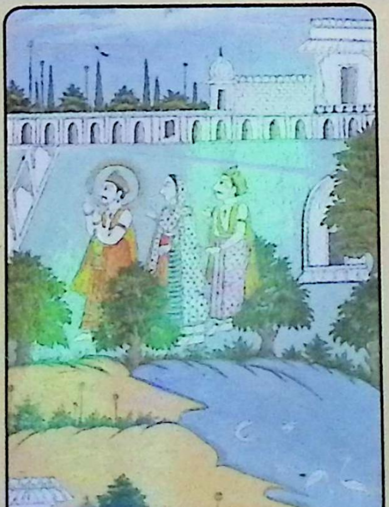

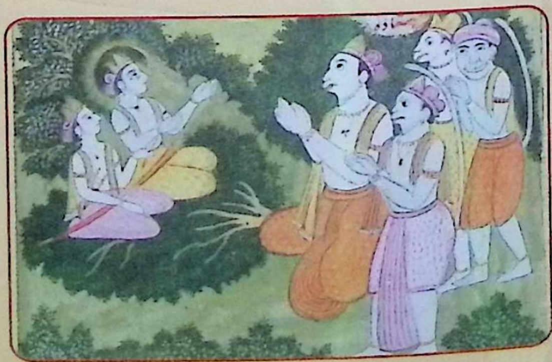

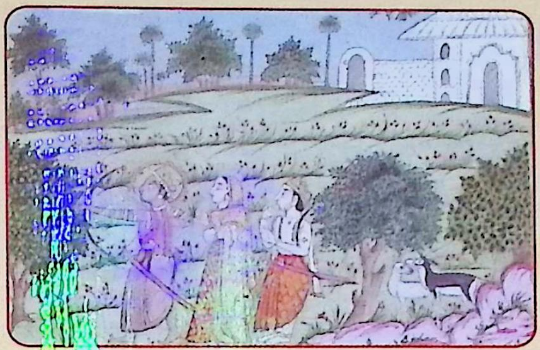

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

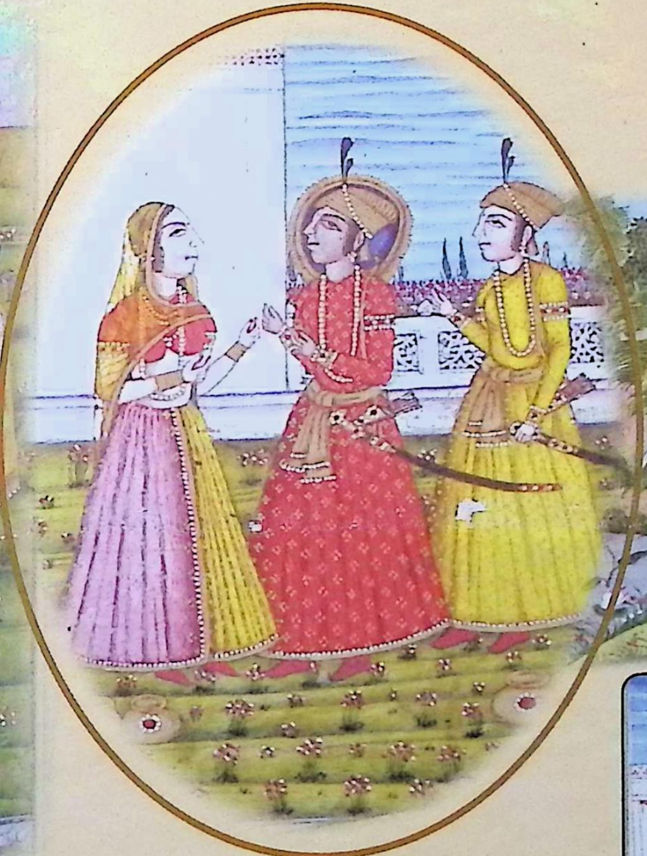

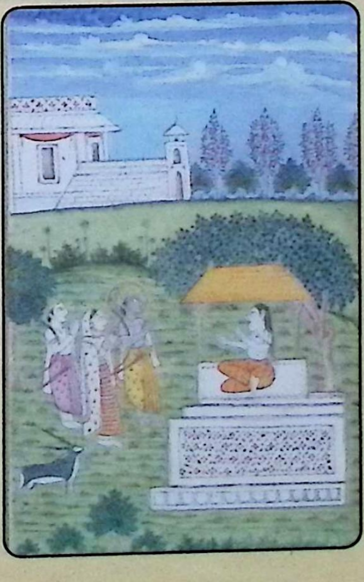

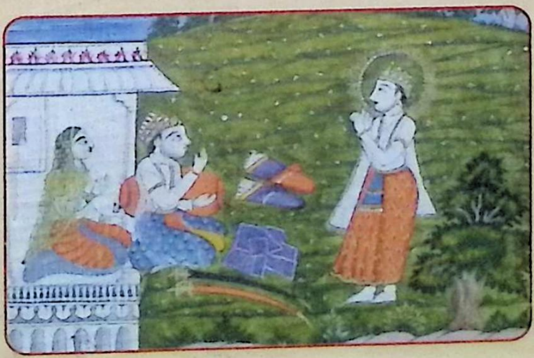

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

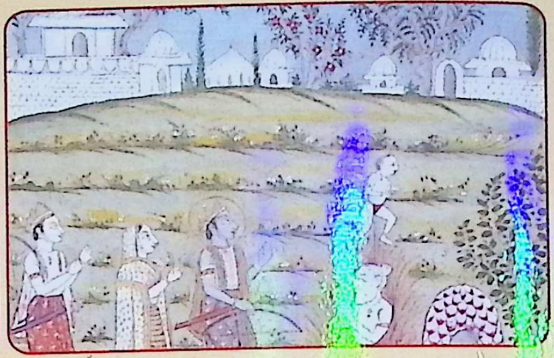

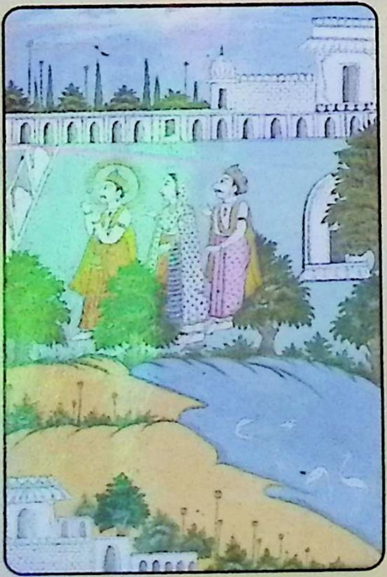

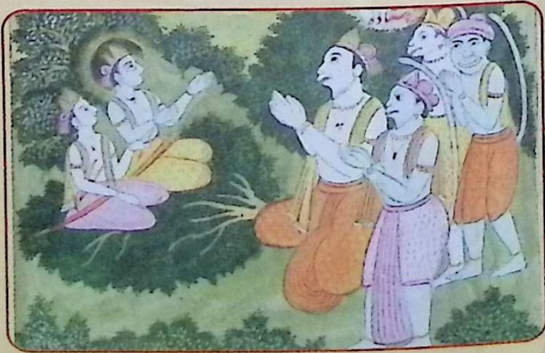

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

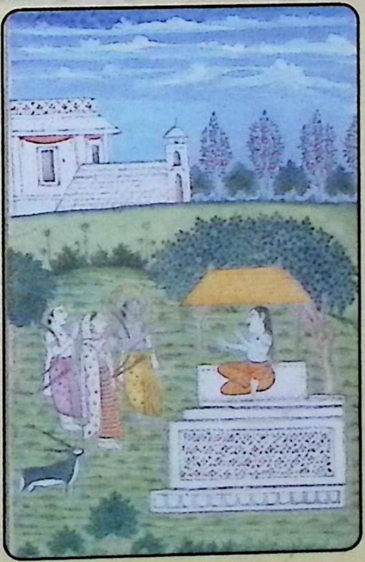

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

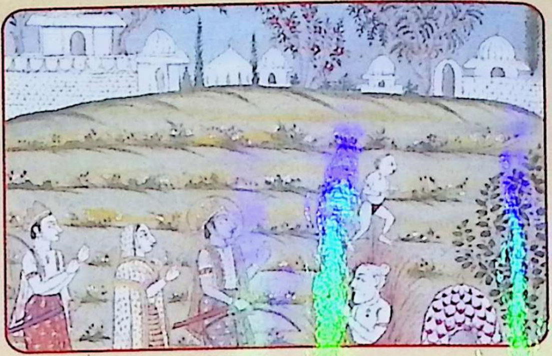

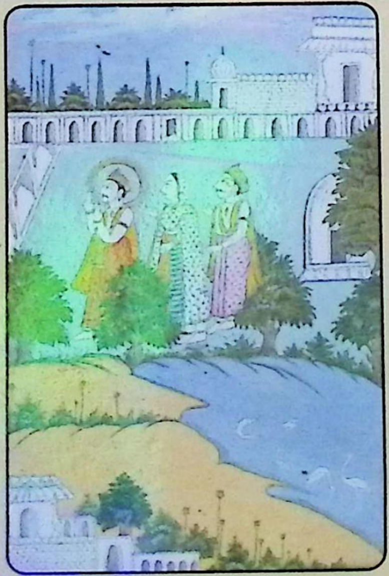

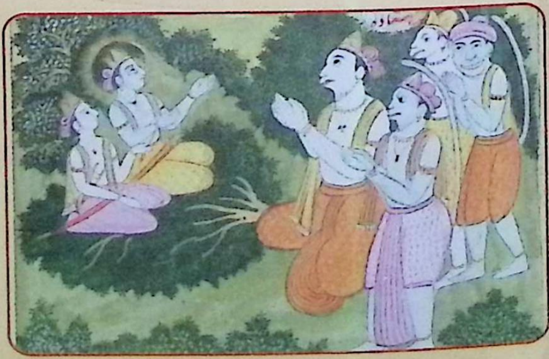

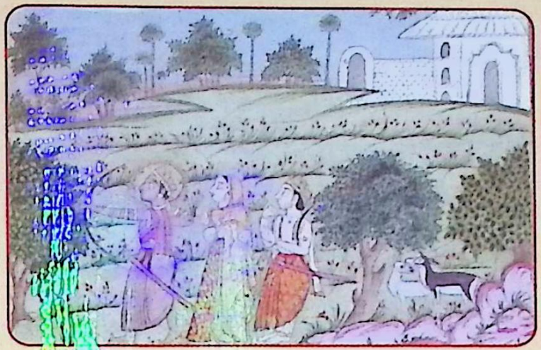

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

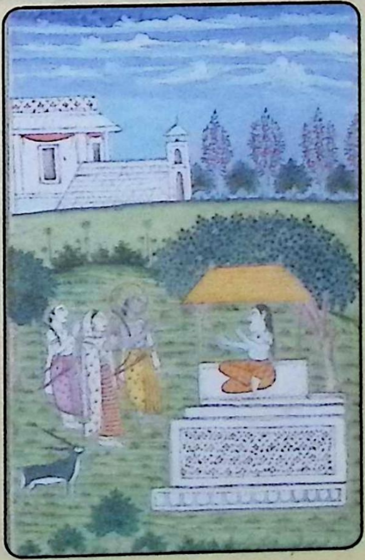

रामायण

(वाल्मीकि)

RAMPUR RAZA LIBRARY

RAMPUR -244 901 (U.P.) INDIA

रामायण

(वाल्मीकि)

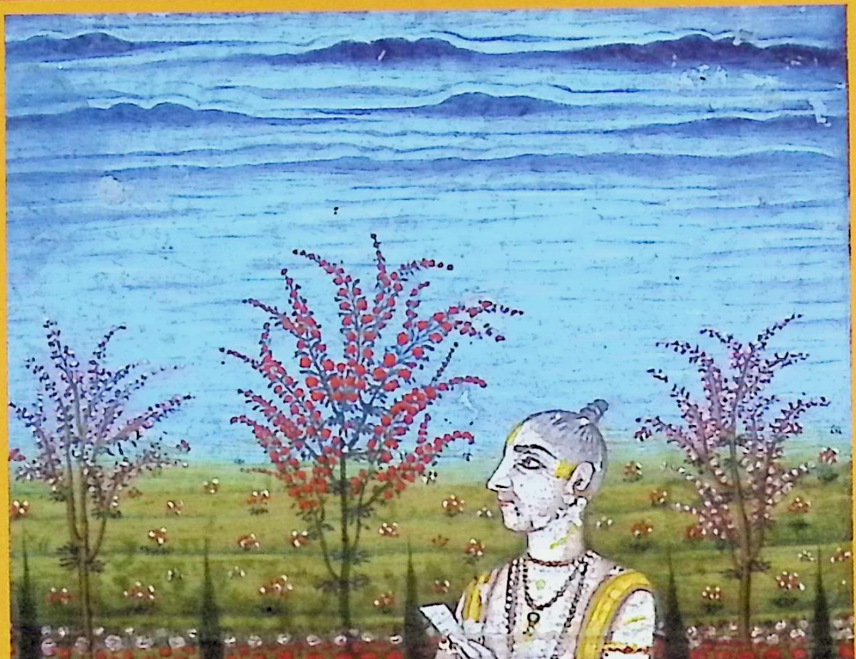

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR -244 901 (U.P.) INDIA